राजस्थानी-हिन्दी शब्द कोश

तृतीय खण्ड

[व से ह]

सम्पादक :

प्रा० बदरीप्रसाद साकरिया
प्रो० भूपतिराम साकरिया

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन
फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

मूल्य : सौ रुपये

संस्करण : प्रथम, 1984

मुद्रक : शीतल प्रिण्टर्स,
फिल्म कॉलोनी, जयपुर-302003

RAJASTHANI-HINDI SHABDA KOSH, Part III
Edited by : Acharya Badri Prasad Sacariya
Prof. Bhupati Ram Sacariya
Price : Rs. 100.00

प्रकाशकीय

राजस्थानी-हिन्दी शब्द कोश का यह तृतीय भाग भाषाविदो तथा साहित्य प्रेमियों के सम्मुख रखते हुए हमे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। ऐसे बड़े कामो मे सामान्य व्यवधानों का आना स्वाभाविक बात है परन्तु हमें इस बात का बडा संतोष है कि इस कोश के प्रथम दोनो भागो की विद्वानों और पाठकों ने बड़ी सराहना की और शिक्षाविदो ने भी सहर्ष इसे प्रामाणिक कोश मान कर अपनाया। इससे हमारा उत्साह बना रहा और बड़ी राशि खर्च करके भी इस वृहत् कार्य को हम सम्पन्न कर सके।

इस कोश के प्रथम भाग में 'अ' से 'न', द्वितीय भाग में 'प' से 'ल' और तृतीय भाग मे 'व' से 'ह' तक के अक्षर हैं। इस प्रकार तीन भागों मे यह कोश सम्पूर्ण हुआ है। प्रथम व द्वितीय भागों की भूमिका में राजस्थानी भाषाकी विशेषता, कोश निर्माण प्रक्रिया तथा सम्पादकों की सूझबूझ और विद्वतापूर्ण साधना के फल-स्वरूप इस कोश में संजोई गई विशेषताओं आदि पर विद्वान सम्पादक श्री बदरीप्रसाद जी साकरिया द्वारा प्रकाश डाला जा चुका है। अतः यहां इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यह कोश आचार्य बदरीप्रसाद जी साकरिया तथा उनके सुपुत्र भूपतिराम जी साकरिया की सुदीर्घ साधना का प्रतिफल है। विद्वान सम्पादकों ने इसके निर्माण में ऐसी पद्धति को अपनाया है जिससे यह कोश विद्वानों तथा सामान्य पाठकों दोनों ही के लिए उपयोगी बन गया है। राजस्थानी भाषा और साहित्य की इस ग्रंथ के प्रकाशन से यदि कुछ भी सेवा हो सकेगी तो इससे हमें बड़ा सन्तोष होगा।

इस कार्य को सम्पन्न करने में जिन महानुभावो ने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप मे हमें सहयोग दिया है, उनका मैं अपनी ओर से तथा सम्पादको की ओर से आभार प्रकट करता हूं।

मूलचंद गुप्ता

	अनुकरण
	अव्यय
(आ० क्रि०)	आज्ञासूचक क्रिया
(उदा०)	उदाहरण
(उप०)	उपसर्ग
(ए०व०)	एक वचन
(का०)	काव्य
(क्रि०)	क्रिया
(क्रि०भ०)	क्रिया भविष्यत् काल
(क्रि०भ०का०)	क्रिया भविष्यत् काल
(क्रि०भू०)	क्रिया भूतकाल
(क्रि०भू०का०)	क्रिया भूतकाल
(क्रि०वि०)	क्रिया विशेषण
(जैन०)	जैन धर्म सम्बन्धी
(जैस०जैसल०)	जैसलमेरी
(ज्यो०)	ज्योतिष शास्त्र
(तृ० पु०)	तृतीय पुरुष
(दे०)	देखिये
(द्वि० पु०)	द्वितीय पुरुष
(न०)	नर जाति संज्ञा
(न०ब०व०)	नर जाति बहुवचन
(ना०)	नारी जाति संज्ञा
(ना०ब०व०)	नारी जाति बहुवचन
(पद०)	वाक्यपद, वाक्यांश
(प्र० या प्रत्य०)	प्रत्यय
(प्र०पु०)	प्रथम पुरुष
(ब० व०)	बहुवचन
(ब० वा०)	बहुवाची प्रयोग
(भ०क्रि०)	भविष्यत् क्रिया
(भू०)	भूतकाल
(भू०कृ०)	भूतकाल कृदन्त
(भू०क्रि०)	भूतकाल क्रिया
(मुहा०)	मुहावरा

(वव्य०)	वर्ण व्यतिक्रम
(वि०)	विशेषण
(वि०न०)	विशेषण नर जाति
(वि०ना०)	विशेषण नारी जाति
(विभ०)	विभक्ति
(वि०वि०)	विशेष विवरण
(वि०सर्व०)	विशेषण सर्वनाम
(व्या०)	व्याकरण
(शिला०)	शिलालेख
(सर्व०)	सर्वनाम
(सं०)	अर्थ संख्या
(साहि०)	साहित्य

व

व—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण-माला का उनतीसवाँ व्यंजन, जिसका उच्चारण दांत व ओठ की सहायता से किया जाता है।

व—(अव्य०) और।

वइराट—दे० विराट।

वई—(अव्य०) सम्प्रदान कारक की विभक्ति। लिये। वास्ते। निमित्त।

वकटी—(ना०) जिसके सेवन से स्थिति वक्र हो जाय वह भंग। भाँग। (संकेत शब्द)

वकर—(न०) १. रोब। धाक। २. वक्रता।३. निर्दयता। ४. बलि। बलि-दान। ५. क्रोध। (वि०) टेढ़ा। वक्र। आँटीलो।

वकरणो—(क्रि०) १. क्रोध करना। गुस्से होना। २. विकराल होना। ३.कहना। बोलना। ४. प्रगट होना। ५. आपे से बाहर होना। ६. बिगड़ना। ७. टेढ़ा बोलना। ८. अंट-संट बोलना। ९. क्रोध में किसी रहस्य को खोल देना। १०. आवेश में नहीं कहने की बात को कह देना। ११. भूत-प्रेत का (किसी में आवेश द्वारा) अपना परिचय देना।

वकळ—(वि०) १. व्यर्थ की बकवाद करने वाला। प्रलापी। २. विकल।

वकस—(ना०) छाती। वक्ष।

वकार—(न०) 'व' अक्षर।

वकारणो—(क्रि०) १. ललकारना। युद्ध के लिये आह्वान करना। उत्साहित करना। ४. चिताना, चेतावनी देना। ५. सावधान करना। सूचित करना।७. उत्तेजित करना। सक्रोध प्रेरित करना। ९. बुलाना

वकारांत—(वि०) जिसके अन्त मे अक्षर हो।

वकालत—(ना०) वकील का काम। वकीलात।

वकील—(न०) १. धाराशास्त्री। म कायदा शास्त्री। २. प्रतिनिधि।

वक्तव्य—(न०) भाषण। कथन।

वक्ता—(वि०) १. भाषण करने वाला। वक्ता। २. कथा करने वाला।

वक्तीवक्त—(अव्य०) १. ठीक वक्त ठीक समय पर। २. अचानक अकस्मात। ३. आवश्यकता के सम वगतो-वगत।

वक्र—(वि०) टेढ़ा। बाँका। वाँको।

वक्रता—(ना०) बाँकापन। टेढ़ाई। बाँकाई। वळ।

वक्रतुंड—(न०) गणेश। गजानन।

वक्र-दृष्टि—(ना०) १. क्रोध अथवा की नजर। २. टेढ़ी नजर।

वक्रोक्ति—(ना०) १. एक काव्यालकार, जिसमे काकु अथवा श्लेष से वाक्य का भिन्न अर्थ करने मे आता है। २. कटाक्ष वचन।

वक्ष—(न०) छाती।

वक्षस्थल—१ छाती। २ स्त्री-स्तन।

वखरण—(न०) १ बखान। तारीफ। २. निंदा।

वखत—(ना०) १. वक्त। समय। २. मौका। अवसर। ३. भाग्य। ४. फेरा। चक्कर। वार। ५ फुरसत। नवरास।

वखत-बे-वखत—(अव्य०) १. जब जी चाहे। २ जब कभी। ३ समय-असमय। ४. समय-कुसमय।

वखतसर—(अव्य०) १. समय पर। २. योग्य समय।

वखतावर—(वि०) १. धनवान। २. भाग्यशाली।

वखताँ-विलद—(वि०) भाग्यशाली।

वखतो-वखत—दे० वक्तोवक्त।

वखाण—(न०) १. व्याख्यान। २. उपदेश। ३. प्रशंसा। तारीफ। बखान। ४ कीर्ति। यश। ५. वर्णन।

वखाणणो—(क्रि०) १ प्रशंसा करना। तारीफ करना। २. वर्णन करना। ३. यशगान करना। ४. व्याख्यान देना। ५. विस्तार से कहना। ६ गालियाँ देना।

वखाणन—(न०) १. उपदेश। २. प्रशंसा करने की क्रिया या भाव। (वि०) प्रशंसा करने योग्य।

वखाणियोड़ो—(भू०कृ०) १. बखान किया हुआ। प्रशंसित। २. व्याख्यान दिया हुआ। ३. वर्णित।

वखार—(न०) भंडार। कोठार। बखार।

वग—(ना०) १. पहिचान। जान-पहिचान। ओळखाण। २. पक्ष। दल। ३. अवसर। मौका। संयोग। ४. सुविधा। अनुकूलता। ५. ढंग। ६. सिफारिश। लागवग। ६. उपाय। मार्ग। ८. भेद। वर्ग। वग।

वगड़—(न०) १. जंगल। वन। वगड़। २ गली का चौक या मार्ग। ३. बड़ा बाड़ा। वगड़। ४. खुली जगह। मैदान।

वगड़ो—(न०) जंगल। वन। रोही।

वगणो—(क्रि०) १. लूटना। २. मागना। ३. गिरती हुई वस्तु को हाथ मे ग्रहण करना। पकड़ना। झेलणो।

वगत—दे० वखत।

वगत-बे-वगत—दे० वखत-बे-वखत।

वगतर—दे० बगतर।

वगतसर—दे० वखतसर।

वगतावर—दे० वखतावर।

वगतो-वगत—दे० वखतो-वखत।

वग-देणो—(मुहा०) १. मौका देना। २. सुविधा देना।

वग-पड़णो—(मुहा०) मौका हाथ लगना। मौका लगना।

वग-वसीलो—(न०) १. बड़े आदमी की जान पहिचान। २. किसी बड़े आदमी की सहायता। ३. सिफारिश। ४. जान-पहिचान।

वग-वाळो—(वि०) १. सिफारिश वाला। २. पक्ष वाला। ३. किसी बड़े से संबंध रखने वाला।

वगाड़—दे० वगाड़ो।

वगाड़ो—(न०) १. बिगाड़। नाश। २. बरबादी। ३. हानि।

वगीचो—दे० बगीचो।

वगे—*(ग्रव्य०)* लिये । वास्ते । *(वि०)* गायब । ग्रलोप ।
वगेकरणो—*(मुहा०)* १. ठिकाने लगाना । २. गायब करना । छिपा देना ।
वगेची—दे० वगेची ।
वगैरे—*(ग्रव्य०)* १.वगैरा । इत्यादि । २.ग्रौर ३. दूसरे ।
वगोणो—दे० वगोवणो ।
वगोवणा—*(न०ब०व०)* १. निंदा । २. फजीती । ३. वाद-विवाद । ४. लड़ाई । कजियो ।
वगोवणो—*(क्रि०)* १. निन्दा करना । बुराई करना । भांडणो । २. बदनाम । करना । ३. नाश करना ।
वग्ग—दे० वर्ग सं० १. २, ६, ७ ।
वघ—*(न०)* वाघ । शेर ।
वघ-वाव—*(ना०)* व्याघ्र गंध । बाघ के शरीर की गंध । बाघ स्पर्शी वायु ।
वघार—दे० बघार ।
वघारणी—*(ना०)* १. हींग । २. बघारने का काम ।
वघारणो—*(क्रि०)* बघारना । छौंकना ।
वच—*(न०)* १. वचन । २. बीच । मध्य । ३. एक ग्रौषधि । *(ग्रव्य०)* बीच में ।
वच-गाळै—*(ग्रव्य०)* १. बीच में । २, ग्रध-बीच में । ३, मध्य काल में ।
वच-गाळो—*(न०)* १ बीच का समय । २. बीच का भाग । ३. बीच । मध्य ।
वचन—*(न०)* १. मुख से निकलने वाले सार्थक शब्द । २. उक्ति । कथन । ३. वचन । बोल । ४. प्रतिज्ञा । कौल । ५. व्याकरण में वह विधान जिसके द्वारा शब्द के रूप मे एक या ग्रनेक का बोध होता है । शब्द का संख्या-दर्शक भाव । एक वचन । द्विवचन । बहुवचन ।
वचन-तीर—दे० वचन-बाण ।
वचन देणो—*(मुहा०)* प्रतिज्ञा करना । कौल करना ।
वचन-बाण—*(न०)* कटु वचन । वचन रूपी तीर ।
वचन-भंग—*(न०)* कह करके फिर जाना । प्रतिज्ञा-भंग ।
वचन-वीर—*(वि०)* ग्रपनी बात पर ग्रड़ा रहने वाला । जबान का पक्का ।
वचन-सिद्ध—*(वि०)* १. वह जिसका वचन सिद्ध हो जाय । जो कहे सो हो जाय वह (पुरुष) । ऐसा सिद्ध जिसकी वाणी सफल हो जाय । २. सत्यभाषी ।
वचनहारणो—*(मुहा०)* १. कह कर पलट जाना । २. धोखा देना ।
वचनात्—दे० वचनायतं ।
वचनायतं—*(ग्रव्य०)* प्राचीन समय में राजा-महाराजाग्रों की ग्रोर से लिखाये जाने वाले पत्र या परवानों इत्यादि का एक पारिभाषिक शब्द, जिसका ग्रर्थ वचनानुसार, या ग्राज्ञानुसार होता है ।
वचनामृत—*(न०)* १. ग्रमृत के समान वचन । २ उपदेशामृत ।
वचनिका—*(ना०)* १. राजस्थानी भाषा का एक काव्य प्रकार जिसमें गद्य-पद्य दोनों का समावेश होता है । २ राजस्थान का गद्य-पद्यमय काव्य-ग्रन्थ । ३. राजस्थानी का ग्रनुप्रास युक्त गद्य-काव्य । ४. ग्रवतरणिका । ५. छोटा इतिहास प्रसंग ।
वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी-री—*(न०)* जगा खिड़िया कृत रतलाम के राजा राठौड़ रतनसिंह का ग्रौरंगजेब के साथ युद्ध वर्णन का गद्य-पद्य मय डिंगल ग्रंथ ।

वचाडणो—(क्रि०) १. पढवाना। २. पढना। पाठ करना। ३. बचाना। उबारना।
वचावणो—दे० वचाडणो।
वचीजणो—(क्रि०) पढा जाना।
वचेट—(वि०) १. विचला। बीच का। २. तीन में से बीच का। ३. वह जो पहले और तीसरे के बीच में जन्मा हुआ हो।
वचेटियो—दे० वचेट।
वच्छ—(ना०) १. छाती। वक्ष। २. बच्चा। ३. बछड़ा।
वच्छळ—दे० वत्सल।
वछ—(ना०) १. बछड़ा। २ बच्चा। वत्स।
वछनाग—(ना०) एक विषैला कंद। वत्सनाभ।
वछ-वारस—(ना०) भादो शुक्ला १२ को मनाया जाने वाला स्त्रियों का एक उत्सव तथा व्रत, जिस दिन गोवत्स की पूजा की जाती है और दान आदि दिये जाते है। वत्सद्वादशी।
वछळ—दे० वत्सळ।
वछूटणो—(क्रि०) १. गर्भपात होना। २. अलग होना। ३. प्रसव होना।
वछेरी—(ना०) १. छोटी घोडी। बछेरी। जवान घोड़ी। २. घोडी का बच्चा।
वछेरो—(ना०) १. छोटा घोड़ा। २. घोड़े का बछड़ा। घोडी का बछड़ा। बछेरा।
वछोड़णो—(क्रि०) १. नाश करना। २. मार डालना। ३. त्यागना। छोड़ना। ४. अलग होना। ५ अलग करना। ६. छोड़ देना।
वज—(ना०) एक वनस्पति।
वजणो—(क्रि०) १. लड़ना। युद्ध करना। २. बाजे का बजना। बजना।

वजन—(ना०) १. तौल। तोल। २. बाट। बटखरा। ३. भार। बोझ। ४. परिमाण। ५. प्रभाव। ६. प्रमाण। ७. प्रावम्य। प्रतिष्ठा।
वजनदार—(वि०) १. भारी। बोझिल। २. प्रामाणिक। ३. प्रभाव डालने वाला। ४. प्राबरूदार। प्रतिष्ठित।
वजर—(ना०) १. इंद्र का शस्त्र। वज्र। २. बिजली। ३. लोहा। ४. हीरा। ५. तम्बाकू। (वि०) १. मूर्ख। २. कठिन। ३. विकट। घोर।
वजर-किंवाड़—(ना०) १. बहुत मजबूत किवाड़। वजरकिंवाड़। २. लोहे का किवाड़।
वजरटीक—(ना०) स्त्रियों का एक गहना। वजरटी।
वजर-ठोट—(वि०) १. महामूर्ख। २. वह जिसको खूब मेहनत करने पर भी पढना लिखना न आवे। वजरठोठ।
वजर-तुंड—(ना०) गरुड़। वज्रतुंड।
वजर-धर—(ना०) इंद्र। वज्रधर।
वजर-धुनि—(ना०) १. बादलों की घोर गर्जना। २. बिजली गिरने का शब्द। बिजली की कड़कड़ाहट।
वजराग—(ना०)१. वज्राग्नि। २. बिजली। ३. बादल की भयंकर गर्जना। ४. घोर आपत्ति।
वजरेसरी—दे० वज्रेश्वरी।
वजवजणो—(क्रि०) १. ठसकना। ठमक दिखाना। इतराना। २, गर्व करना। ३. किसी की मान-मर्यादा या लाज-शरम नही रखना। ४. समाज या वातावरण के अनुकूल नही चलना। ५ किसी की नही मानना।

वजह—(न०) कारण । सबब ।
वजंतरी—दे० वजंत्री ।
वजाड़णो—(क्रि०) बजाना । बजाणो । बजावणो ।
वजावणो—(क्रि०) वाद्य आदि का बजाना । बजाना । बजावणो ।
वजीर—(न०) १. राज्य का मुख्य अधिकारी । प्रधान । दीवान । २. शतरंज का एक मोहरा । ३. वजीर जाति । ४. वजीर जाति का मनुष्य । गोलो ।
वजारत—(न०)वजीर का काम । वजीरी । दीवाणगी ।
वजीरण—दे० वजीरणी ।
वजीरणी—(ना०) वजीर की स्त्री ।
वजीरी—दे० वजारत ।
वजू—(ना०) नमाज पढ़ने के पहिले मुँह, हाथ, पाँव धोने की क्रिया ।
वजूद—(ना०) वास्तविकता।
वजे—दे० वजह ।
वजेदार—(वि०) १. भारी नखरे वाला । २. पक्का । खरा ।
वज्र—(न०) १. बिजली । २. हीरा । ३. इंद्र का अस्त्र । ४. लोहा । (वि०) १. दृढ़ । मजबूत । २. कठोर ।
वज्रपात—(न०) १. बिजली का गिरना । २. आफत । संकट ।
वज्राग—(ना०) १. वज्राग्नि । २. घोर विपत्ति । बड़ी आफत ।
वज्रांग—दे० वज्रांगी ।
वज्रांगी—(न०) हनुमान । वज्रांग । बजरंग । बजरंगबली । बजरंगी ।
वज्रेश्वरी—(ना०) १. देवी । २. एक बौद्ध देवी ।
वज्रोली—(ना०) हठ योग की एक मुद्रा ।

वट—(न०) १. ऐंठन । मरोड़ । २. रस्सी का बल । ३. गर्व । अभिमान । ४. क्रोध । ५. टेक । प्रण । ६. आबरू । प्रतिष्ठा । ७. रौब । धाक । ८. प्रताप । तेज । ९. मार्ग । ११. वटवृक्ष । बड़ ।
वट काढणो—(मुहा०) १. मारपीट करके बदला लेना । २. रस्सी आदि की ऐंठन खोलना । ३. गर्व चूर्ण करना ।
वटकियो—(न०) कटोरो । वाटको ।
वटकी—दे० वाटकी ।
वटको—दे० वाटको ।
वट खोलणो—दे० वट काढणो सं० २ ।
वट भरीजणो—(मुहा०) १. गर्व करना । २. गुस्सा करना । ३. बल पड़ना ।
वटणो—(क्रि०) १. माल की बिक्री होना और उसकी कीमत मिलना । २. रोटी-पापड़ आदि का बेला जाना । ३. वटना । वल देना । ४. सधना । पटना । बनना । ५. रौब जमना । ६. अधिकार चलना । ७. माना जाना । ८. पिसना । ९. पीसा जाना ।
वटदार—(वि०) १. घमंडी । अभिमानी । २. रोबवाला । रोबीलो ।
वट-पूनम—(ना०) १. ज्येष्ठ-पूर्णिमा । जेठी-पूनम । २. इस दिन की जाने वाली वट-पूजा । ३. वट पूजा का दिन ।
वटमार—(न०) १. लुटेरा । २. लूटमार ।
वटमारी—(ना०) लूट । लूट-खसोट । बटमारी ।
वटळ—(वि०) भ्रष्ट । दे० विटल ।
वटळणो—(क्रि०) १. अपने से हलकी जाति या विधर्मी के यहाँ भोजन-पानी करने या हाथ का खाने से भ्रष्ट हो जाना ।

२. हलकी जाति या दूसरे धर्म में मिल जाना। ३ शास्त्र वर्जित का सेवन करना। अभक्ष भोजन करना। दे० विटळणो।

वटळावणो—(क्रि०) १. खान-पान आदि से किसी को भ्रष्ट करना। २. धर्म भ्रष्ट करना। ३ बलात् दूसरी जाति या धर्म मे ले आना या लेजाना।

वटळियोड़ो—(वि०) भ्रष्ट। दे० विटळियोड़ो।

वटळीजणो—दे० वटळणो।

वटलोई—(ना०) वटलोई। देगची।

वटवाळ—(न०)१. मारवाड़ राज्य के समय का कस्टम खाते का कर्मचारी। बटवाल। २. लुटेरा।

वटवो—(वि०) १. मूर्ख। २ अविवेकी। दे० वटुम्रो।

वट-सावित्री-व्रत—(न०) जेठ पूर्णिमा को वट वृक्ष और सावित्री के पूजन का सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला एक पर्व। एक व्रत।

वटाऊ—दे० वाटेरू।

वटाळ—(वि०) १. धर्म भ्रष्ट। २. वर्ण-संकर। ३. कलंकित।

वटाळणो—(क्रि०) १. भ्रष्ट करना। २. बट्टा लगाना। कलंक लगाना। ३. धर्म भ्रष्ट करना। दूसरे धर्म में मिलाना। दे० विटाळणो।

वटाळो—(वि०) १. वट्टे वाला। खोट वाला। २. वर्णसंकर। ३. भ्रष्ट। ४. कलंकित।

वटाव—(न०) १. वह छूट या कमी जो किसी वस्तु के क्रय-विक्रय या लेन-देन (परिवर्तन) में की जाती है। बट्टा। वटाव। २. बेचे हुए माल पर ग्राहक को दी जाने वाली छूट। कमीशन। दस्तूरी। आढ़त। ३. आमदनी। ४. नफा। लाभ।

वटाव-खातो—(न०) १. उपज और खर्च का खाता। उपज और खर्च। २. बेचान खाता। ३. नफा खाता। ४. नफो। लाभ।

वटावणो—(क्रि०) १. बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना। २. रुपये, नोट आदि का रेजगारी में बदलवाना। ३. हुंडी, चैक आदि को रोकड़ रुपयों में बदलना। वटाना। ३. गुंथवाना। बटवाना। वटाना।

वटुओ—(न०) १. रुपये-पैसे रखने की कई खानों वाली एक जेबी थैली। २. एक लोकगीत। ३. पोवाई का काम करने वाला। पटवा। (वि०) १. बेसमझ। मूर्ख। २. अविवेकी।

वट्ट—(न०) १. मार्ग। राह। बाट। २. कटोरा। वाटको।

वट्टड़ी—(ना०) १. मार्ग। पगडंडी। बाट। २. रीति। रिवाज। परंपरा।

वट्टो—(वि०) १. कलंक। २. मिलावट। बट्टा। ३.मिलावट की वस्तु। ४ मिलावट की हुई हलकी किस्म की वस्तु। वट्टा। ५. किसी वस्तु की परस्पर अदला-बदली करने-कराने में (वस्तु के गुणावगुण की दृष्टि से) मिलने वाली कम कीमत। परिवर्तन में भोगा जाने वाला नुकसान।

वठी—(क्रि० वि०) वहाँ। उधर। उस ओर। उठै। ओठै।

वठीने—(क्रि०वि०) उधर। वहाँ। उठीने।

वठीलो—(वि०) वहाँ का। उस ओर का। उठीरो। ओठेरो। उठीनलो।

वठै—(क्रि०वि) वहाँ । उधर । उस जगह । श्रोठै । उठे ।

वड—(वि०) १. बड़ा । २. महत् । ३. विस्तृत । विशाल । ४. वयोवृद्ध । ५. ५. उत्तम ।

वड़—(न०) वटवृक्ष । बड़ ।

वड-ग्राच—(वि०) १. आजानबाहु । २. दानी ।

वड़कली—(ना०) मूंज या भाखरखड़ की रस्सी । मूंज । मूंजोड़ो ।

वड-कँवार—(ना०) ज्येष्ठ पुत्री । बड़ी कुंवरी । बड़ी लड़की ।

वड-काग—(न०) बड़ा कौग्रा । डोड-कागलो । हाडो ।

वड-काज—(न०)१. देश, जाति और धर्म के लिये किया जाने वाला बलिदान । २. बड़ा कार्य । ३. वीर मृत्यु । ४. युद्ध । ५. परोपकार । ६. पुण्य काम ।

वड-काम—दे० वड काज ।

वड-कुमार—(न०) १. बड़ा लड़का । २. बड़ी लड़की ।

वड़को—(न०) बडेरा । पूर्वज । बड़को ।

वड़कोळो—(न०) वड का फल ।

वड़कोळियो—दे० बड़कोळो ।

वड-खेत—(न०) १. श्रेष्ठ कुल । उच्च-वंश । २. अच्छी नस्ल । ३. युद्ध-भूमि ।

वड-गमण—(न०) १. मृत्यु । २. वीर मृत्यु ।

वड-गाढ—(न०) महा पराक्रम । (वि०) महापराक्रमी ।

वड-गात—(वि०) १. बड़े कुटुम्ब वाला । २. बड़े शरीर वाला । मोटा । ३. वीर । ४. प्रतिष्ठा वाला । (न०) मोटा शरीर ।

वड-गाळ—(ना०) १. निंदा । अपकीर्ति । २. कलंक । ३. पर्वत श्रेणियों के बीच का बड़ा मार्ग । ४. युद्ध में पीछे पाँव रखने का कलंक । ५. प्रतिज्ञा करके फिर जाने की बदनामी ।

वड-गिर—(न०) १. हिमालय पर्वत । २. आबू पर्वत । अर्बुद गिरि ।

वड-गूजर—(न०) एक जाति ।

वड-गूंदो—(न०) एक वृक्ष और उसका फल । बड़ा लिसोड़ा ।

वड-गोतण—(वि०) १. बडे कुल की । उच्च वंश की । २. बड़े कुटुंब वाली । ३. स्वमानी । (ना०) १. उच्च कुल की समधिन । २. समधिन । (संबोधन या लोकगीतों में) ।

वड-गोती—(वि०) १. उच्च कुलोत्पन्न । बड़े कुल का । २. बडे कुटुंब वाला । ३. प्रतिष्ठित । (न०) समधी ।

वड-गोद—(ना०) १. मृत्यु । २. ईश्वर की शरण । श्रीहरि शरण ।

वड-चाक—(न०) १. विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र । २. बड़ा चक्र ।

वड-चावो— (वि०) १. सुप्रसिद्ध । सुविख्यात । (न०) बड़ा पुत्र । मोभी ।

वड-छळ—(न०) बड़ा युद्ध । महायुद्ध ।

वड-छात—(न०) बड़ा राजा । महाराजा ।

वड-जमाई—(न०) बड़ा दामाद ।

वड-जाग—(न०) १. महा यज्ञ । २. युद्ध । राड़ ।

वड-जाम—(न०) बड़ा पुत्र । मोभो बेटो ।

वड-जोध—(न०) १. बड़ा योद्धा । २. बड़ा पुत्र ।

वड-डाच—(न०) काल । महाकाल ।

वड-ढोल—(न०) १. युद्ध का ढोल । २. बड़ा ढोल । मादळ ।

वड़णी—(ना०) १. मजदूरन। मजूरणी। २ दैनिक मजदूरी वाली। दैनगियाणी। वड़ी करने वाली स्त्री। ३. वड़िया को स्त्री।
वड़णो—(क्रि०) १. घुसना। पैठना। वडना। घुसणो। २. अन्दर जाना।
वड-थोक—(न०) १. बडी सेना। २. बड़ा समूह। ३. बड़ी बात।
वड-दाता—(न०) वड़ा दानी।
वड-दातार—दे० वड दाता।
वड-दानी—(न०) १. महादानी। २. बलिराजा। ३. प्रात. स्मरणीय कर्ण।
वडदावणो—दे० बड़दावणो।
वड-दूत—(न०) यमदूत।
वड-धाम—(न०) १. वड़ा तीर्थ। २. स्वर्ग।
वड-नदी—(ना०) गंगा नदी।
वड-नस—(न०) ऊ ट।
वड-नाग—(न०) शेषनाग।
वड-नाम—(न०) प्रसिद्धि। कीर्त्ति। ख्याति।
वड-नामी—(वि०) बड़ी कीर्ति वाला। विख्यात।
वड-नाळ—(ना०) तोप।
वड-नीर—(न०) समुद्र। सागर।
वड-नेवर—(न०) १. बेड़ी। २. हथकड़ी-बेड़ी।
वडपण—(न०) बड़प्पन। बडापणो। २. उदारता। ३. गंभीरता। ४. गौरव। ५. श्रेष्ठता।
वडपण-चीलो—(न०) १. पुरखों द्वारा निर्देशित मार्ग। बडेरां-रो-मार्ग। बडेरों की परंपरा। बड़ो की रीति-भांति। २. श्रेष्ठ परम्परा।
वड-पंख—(न०) गरुड़।
वड़-पात—(न०) १.वड़ा कवि। २.पठ पत्र।
वड़-पान—(न०) वट पत्र।
वडपुर—(न०) १. दिल्ली। २. बड़ा शहर।
वड-फण—(न०) शेष नाग।
वडफर—(ना०) ढाल। सेटक। फाडण।
वड-फळ—(न०) १.मतीरा। २. कुम्हड़ा। ३. सुफल।
वड-फाग—(न०) युद्ध।
वड-वेड़ो—दे० वरहेड़ो।
वड-वेहड़ो—दे० वरहेड़ो।
वड-वोर—(न०) एक जाति का बड़ा बेर।
वड-वोरड़ी—(ना०) बड़े बेर वाला बेरी वृक्ष।
वड-वोल—(न०) १. आत्मश्लाघा। २. डींग। शेखी। ३. श्रेष्ठ वाणी। ४. ताना। व्यंग। मेणो।
वड-वोलो—(वि०) १. डींग हांकने वाला। २. आत्मश्लाघी। ३. वकवादी।
वड-भाख—(ना०) संस्कृत भाषा। देव-वाणी।
वड-भाग—(न०) बड़ा भाग्य। सौभाग्य। बड़ा भाग।
वड-भागण—(वि०) १. बड़े भाग्यवाली। नसीब वाली। २. सौभाग्यशालिनी। ३. पति, सम्पत्ति और आज्ञाकारी पुत्रो वाली।
वड-भागी—(वि०) भाग्यशाली। प्रारब्ध-वान। बड़े भाग्य वाला।
वड-भात—(न०) बारात को दिया जाने वाला विशेष भोज।
वडम—(वि०) १. बड़ा। वडो। २. श्रेष्ठ। चोखो।

वड-मन—दे० वडमनो ।

वड-मनो—*(वि०)* १. उदार । २. दानी । ३. गंभीर ।

वडम-बोल—दे० वड-बोल ।

वड-मुख—*(न०)* १. राजा । २. सूर्य । *(वि०)* १. दंभी । २. शेखी मारने वाला । ३. बड़े मुंह वाला ।

वड-मेधा—*(न०)* ब्रह्मा । *(वि०)* मेधावी ।

वड-मोल—*(वि०)* बहु-मूल्य ।

वड-याग—दे० वड जाग ।

वड-राग—*(ना०)* सिंधु राग ।

वड-राड़—*(ना०)* बड़ा युद्ध ।

वड-रिख—*(न०)* महर्षि ।

वड-रीत—*(ना०)* श्रेष्ठ परम्परा ।

वड-लीक—दे० वडरीत ।

वड़लो—*(न०)* वड़ । वटवृक्ष । बड़ ।

वड-लोह—*(न०)* १. बड़ा प्रहार । २. शस्त्र । ३. तलवार ।

वड-वहू—*(ना०)* बड़े पुत्र की पत्नी । बड़ी बहू ।

वडवा -*(ना०)* १. घोड़ी । अश्वी । २. वंशावली लिखने वाला । भाट । वाड़व ।

वडवाग—दे० वडवानळ ।

वडवाग्नि—दे० वडवानळ ।

वड-वाट—*(ना०)* १. वीर-गति । मोक्ष । २. बड़ा मार्ग । ३. उदारता ।

वड-वात—*(न०)* १. यश । कीर्ति । २. गुण । ३. महत्व ।

वडवानळ—*(ना०)* समुद्र की अग्नि । वडवाग्नि ।

वड-वार—दे० वडवार ।

वडवाळ—*(ना०)* वड़ की शाखा । बड़ की जटा ।

वड-वीर—*(वि०)* १. शूरवीर । बड़ा बहादुर । २. बड़ा भाई ।

वड-संख—*(न०)* १. श्रीकृष्ण का पांचजन्य शंख । २. ढपोर शख । डफोळ संख ।

वड़साळो—*(न०)* १. समाधान का प्रयत्न । २. समाधान की बातचीत । विस्टाळो ('विष्टि' से उत्पन्न 'विस्टाळो' का व्यतिक्रम । विस्टाळो>वस्टाळो>वसटाळो>वटसाळो>वडसाळो) । यथा—'श्रंगद वड़साळो' नामक सांया झूला रचित एक काव्य-ग्रंथ ।

वड-सासु—*(ना०)* १ ससुर की माता । २. सास की जिठानी ।

वड-सुसरो—*(न०)* १. ससुर का पिता । २. ससुर का बड़ा भाई ।

वडहड़ो—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल का । ऊंचे कुल वाला । दे० वरहेड़ो ।

वड-हथ—*(वि०)* १. श्राजानुबाहु । २. शूरवीर । ३. बलवान । ४. दृढ़ । मजबूत ।

वडाई—*(ना०)* १. वड़प्पन । बड़ाई । २. प्रशंसा । ३. कीर्ति । ४. शेखी । डींग । ५. अभिमान । घमंड । गरब ।

वडाउडि—दे० वडा-वडी ।

वडाऊ—दे० वडेरो ।

वडापणो—*(न०)* १. बड़प्पन । २. श्रेष्ठता ।

वडार—*(न०)* कन्या पक्ष की ओर से बारातियों को दिया जाने वाला एक विशेष भोज । बृहदाहार । बडो भात । बड़हार । बढ़ार ।

वडारण—*(ना०)* १. सम्मानित दासी । २. रानी की दासी । ३. खवास । दासी । ४. गोली । खवासण ।

वडाळ—(वि०) १. बड़ा। बडो। बड़ो। २. श्रेष्ठ। उत्तम। वडाळो।

वडाळ-भुजाळ—(न०) १. बड़ी भुजाओं वाला। २. अनेक भुजाओं वाला। ३. सर्वशक्तिमान। ईश्वर। (वि०) आजानबाहु। बहहृय।

वडा-लूघड़िया—(न०ब०व०) मंगेतर के लिये दूसरी बार ले जाये जाने वाले वस्त्राभूषण।

वडाळो—(वि०) १. प्रसिद्ध। प्रख्यात। २. बड़ा (पद, आयु आदि में)। ३. बुजुर्ग। वडील। वडेरो। ४. बड़ा। ५. श्रेष्ठ। वडाळ।

वडा-वडी—(अव्य०) बड़े से बड़ा। बड़े से बड़ा और उससे भी बड़ा, इस प्रकार एक-दूसरे से बड़ा होने का क्रम। वड़ा-वडी।

वडिया—(ना०) १. घर की सबसे बड़ी वडेरी। बाप की माँ। दादी। २. ताई।

वडियाजी—दे० वडिया।

वड़ियो—(न०) १. मजदूर। मजूर। २. दैंणगियो। दैनिक पारिश्रमिक पर काम करने वाला व्यक्ति।

वडी—(ना०) १. पुरुष की प्रथम विवाहिता पत्नी। २. दूसरी पत्नी के पहले विवाही हुई पत्नी। ३. बड़ी बहू। (वि०) बड़ी। मोटी।

वड़ी—(ना०) १. रस्सी। २. मूंज की रस्सी। ३. रस्सी का बंधन। ४. मजदूरी। ५. मुंगोरी। बड़ी। ६. शरीर का जोड़। संधि। सांध।

वडी-दुलायची—(ना०) बड़ी इलायची।

वडी-जान—(ना०) १. बारात को दिया जाने वाला एक बड़ा भोज। २. बड़ी बारात। ३. दो बारातों में से बड़ी लड़की को विवाहने वाले वर की बारात।

वडी-जेळ—(ना०) १. सख्त सजा। २. बड़ा जेलखाना।

वडी-ड्योढ़—(ना०) १. देव मंदिर। २. राजा या बादशाह का दरबार।

वडी-तीज—दे०(ना०) १. भाद्रपद कृष्ण पक्ष की तृतीया। २. इस दिन सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रत-उपवास। (इस व्रत में चंद्रोदय के बाद सत्तू का अल्पाहार करने का महात्म्य कहा जाता है।)

वड़ी-पापड़—(न०) मुंगोरी और पापड़।

वड़ी-मजूरी—(ना०) मजदूर का काम। मजदूरी। मजूरी।

वडील—(वि०) १. पूज्य। २. बडेरा। गुरुजन। वडेरो।

वड़ी-वड़ी—(अव्य०) १. अंग-प्रत्यंग। जोड़ प्रति जोड़ (अंग की)।

वड़े—(अव्य०) १. के द्वारा। से। २. लिये। वास्ते। भणी। भणा।

वडेर—(न०) १. आईजी द्वारा प्रवर्तित आईपंथ का मूल स्थान बिलाड़ा (मारवाड़) में बने इस पंथ के महलात। २. बिलाड़े की आईजी का स्थान। ३. वह घर जिसमें बडेरा रहता था या रहता हो। ४. (बँटवारे आया हुआ) वह घर जिसमें कुटुंब का बड़ा रहता हो। वड़ेर।

वडेरी—(ना०) १. वंश की सबसे बड़ी स्त्री। २. वंश की कोई पूर्व स्त्री। ३. बड़ी-बुढ़िया।

वडेरो—(न०) १. वंश का सबसे बड़ा पुरुष। गुरुजन। वडील। बडेरो। २.

वंश का कोई पूर्व पुरुष। पूर्वज। ३. वयोवृद्ध। (वि०) प्रधान।

वडो—(वि०) १. बड़ा। २. बुजुर्ग। वृद्ध। बूढ़ो।

वड़ो—(न०) पकौड़ा। बड़ा। (वि०) 'परत' या 'परतवाला' अर्थ में संख्या वाचक शब्दों के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय। जैसे–एकवड़ो दोवड़ो (बेवड़ो), तेवड़ो इत्यादि।

वडो-करणो—(मुहा०) १. सधवा स्त्रियों का कोहनी के ऊपर के चूड़े (चूड़ियों का सैट) को हाथ में से निकालना। ('चूड़े को उतारना या निकालना' कहना अशुभ समझा जाता है।) २. राजकरणो। सम्मान देना। ३. दीपक बुझाना। ४. किवाड़ बंद करना।

वडो-दिन—दे० बड़ो दिन।

वडो-धाम—दे० वड-धाम।

वडो-प्रव—दे० मोटो प्रव।

वडो-भात—दे० वड-भात।

वड़ोलियो—(न०) वट वृक्ष का फल।

वडो-साथ—(न०) १. किसी समाज में मत-भेदों के कारण बने दो पक्षों में से बड़ा पक्ष। २. बड़ा समाज। ३. बड़ा समूह।

वडो-हुकम—दे० वड़ो हुकम।

वढ—(न०) १. शस्त्र की धार। २. लड़ाई। युद्ध। ३. चोट। प्रहार। ४. रीस। क्रोध। ५. शत्रुता। दुश्मनी। ६. समझाने या मना करने पर और अधिक हठ पकड़ना। ७. करौत से चीरने का निशान। वेढो। ८. करौत से काटा हुआ टुकड़ा (लकड़ी आदि का)। ९. अभिमान। गर्व। १०. हठ। जिद।

वढ-चढणो—(मुहा०) १. मना करने या समझाने पर और अधिक उग्र बनना। २. अधिक रोस में भरना। ३. खूब क्रोध करना। ४. अभिमान करना। ५. हठ पकड़ना। जिद करना।

वढणो—(क्रि०) १. लड़ना। झगड़ना। तकरार करना। २. मारा-मारी करना। ३. उपालंभ देना। ओळमो देणो। ४. धमकाना। ५. कटना। चिरना। कटणो।

वढार—दे० वडार।

वढियार—(न०) साचोर (मारवाड़) की सीमा के निकट आया हुआ उत्तर गुजरात (बनासकांठा) के भूतपूर्व राधनपुर राज्य का प्रदेश।

वढो—(न०) लकड़ी आदि पर करौत या या किसी औजार से बना हुआ लम्बा निशान। निशान।

वढोकणी—दे० लड़ाकण।

वढोकणो—(वि०) झगड़ालू। लड़ाकू। कजियाखोर।

वण—(न०) १. कपास। २. कपास का पौधा। वणोकड़ो। ३. वन। ४. चेचक के फोड़े का निशान। ५. चेचक का फोड़ा। (अव्य०) एक उपसर्ग जो अभाव या विपरीत अर्थ को सूचित करता है। रहित, बिना, बगैर। (सर्व०) उसने। (वि०) उस।

वणकर—(वि०) कपड़ा बुनने का धंधा करने वाला। मेघवाळ।

वणज—दे० विणज।

वणजारण—दे० वणजारी।

वणजारी—(ना०) बनजारे की स्त्री।

वणजारो—(न०) १. बैलों की पीठ पर माल लाद कर देश—परदेश ले जाने

वाला व्यापारी । २. वनजारा जाति का मनुष्य । बनजारा ।

वणणो—(क्रि०) १. बुनना । २. बनना । बणणो ।

वणत—(न०) पारस्परिक संबंध । दे० वणतर ।

वणतर—(ना०) बुनावट । वणावट ।

वण-धाये—(अव्य०) उस ओर । उठीनै । बीनै ।

वणराइ—(ना०) १. वनराजि । वनश्रेणी । २. अनेक भाँति के घने वृक्षों वाला वन । घने वृक्षों वाला जंगल प्रदेश ।

वणराय—दे० वणराइ ।

वणरी—(सर्वंवि०) उसकी । उणरी । बींरी ।

वणरो—(सर्वंवि०) उसका । उणरो ।

वण-लोभी—(वि०) लोभरहित । निर्लोभी ।

वणसणो—(क्रि०) १. विनाश होना । नष्ट होना । २. विनाश करना ।

वणसाणो—(क्रि०) १. विनाश करना । नष्ट करना । २. विनाश होना ।

वणसियोड़ो—(भू०कृ०) विनष्ट । नष्ट ।

वणाई—(ना०) १. बुनाई । २. बुनने का काम या मजदूरी । वणतर । ३. बनावट ।

वणाक—दे० वणाक ।

वणाक-पूजा—दे० वणाक पूजा ।

वणाट—दे० वणावट ।

वणाधिप—दे० वनाधिप ।

वणाव—(न०) १. भेष । बनाव । २. बनावट । ३. शृंगार ।

वणावट—(ना०) १. बुनने का काम । २. बुनने का ढंग । ३. बुनावट । ४. बनाने का ढंग ।

वणास—(न०) विनाश । नाश ।

वणांरी—(सर्वंवि०) उनकी । उणांरी । वांरी ।

वणांरो—(सर्वंवि०) उनका । उणांरो । वांरो ।

वणिआवणो—(मुहा०) १. समझ में आना । २. काम आना । ३. हो जाना । ४. बन जाना । ४. बन सकना । ५. बन आना । हो सकना ।

वणिक—(न०) १. बनिया । वाणियो । २. व्यापारी । बेपारी ।

वणिक-पुत्र—(न०) १. बनिये का लड़का । २. बनिया । वाणियो ।

वणियाणी—दे० विणियाणी ।

वणियाणी-जायो— दे० विणियाणी जायो ।

वणीगो—(वि०) गणी । बात वणीगो । (सर्व०) उसका ।

वणोकड़ी—(ना०) कपास का पौधा । कपाह । वणोखड़ी । वण ।

वणोखड़ी—दे० वणोकड़ी ।

वत—(ना०) १. बात । २. वस्तु । (न०) गाय, भैंस आदि पशु धन । वित । (अव्य०) १. तरह । भाँति । २. 'उत' या 'श्रोत' का एक रूप । पुत्र । जैसे—आसावत(आसा का पुत्र) । ३. वंशज ।

वतकर—(न०) १. धनमाल । २. खास बात ।

वतकाव—(ना०) १. बात । वृत्तान्त । २. प्रसंग । ३. वर्णन । ४. बातचीत ।

वतन—(न०) १. मूल गाँव या देश । २. रहने की जगह । निवास स्थान ।

वतनी—(वि०) निवासी । रहवासी ।

वतरणी—(न०) १. लेखनी । कलम । २. स्लेट पर लिखने की खड़िया लेखनी ।

सलेट-पैंरा । ३. रज-पट्ट (पाटे) पर लिखने की एक लकड़ी की कलम । पाठशाला मे जीखा की पाटी पर लिखने की फरास (झाऊ) आदि वृक्षों की टहनी की लेखनी । वर्तनो । वरतनो । वत्तो ।

वतरो—*(वि०)* उतना । उतरो । उत्तो । *(न०)* १. सामर्थ्य । शक्ति । २. औकात । बिसात । ३. धन-माल । ४. विशेषता ।

वतळ—*(ना०)* १. वार्तालाप । बातचीत । २. संगोष्ठी । ३. मन बहलाने की बातचीत । वंतळ ।

वतळावरण—१. बोलने का ढग । २. वतलाने का ढंग । ३. बातचीत । ४. वतलावन । वतकाव । दे० वतळावरा ।

वतळावरणी—दे० वतळावरा ।

वतियो—*(न०)* १. वस्तु । २. दूम ।

वतूळो—*(न०)* वातचक्र । भतूळियो । भूसेळो ।

वत्तेरो—*(वि०)* १. अनुमान से अधिक । २. तुलना मे अधिक । (वधतेरो का संक्षिप्त रूप) ।

वत्तो—*(वि०)* अधिक । ज्यादा । घणो । (वधतो का संक्षिप्त) ।

वत्स—*(न०)* १. बालक । २. वछड़ा ।

वत्सर—*(न०)* वर्ष । वरस ।

वत्सल—दे० वत्सळ ।

वत्सळ—*(वि०)* छोटों तथा आश्रितो के प्रति स्नेह रखने वाला । वत्सल ।

वत्सळ-भगतां—*(न०)* भक्त-वत्सल ।

वद—न०) कथन । बोल । *(ना०)* १. कृष्णपक्ष । वदि । २. वद । वदगांठ ।

वद-गांठ—*(ना०)* जांघ की जोड़ मे होने वाला एक फोड़ा । वद । वदगांठ ।

वदणो—*(क्रि०)* १. कहना । बोलना । २. वर्णन करना । ३. मानना । आज्ञा पालन करना । ४. स्वीकार करना । मानना । ५. विवाद करना । ६. बढ-बढ कर बोलना । ७. शर्त करना । करार करना । होड़ मारना । बाजी लगाना । ८. जिद करना ।

वदन—*(न०)* १. मुख । मूंढो । मांहडो । २. चेहरा । ३. शरीर । देह । डील । ४. भग ।

वद-पखें—*(न०)* चांद्रमास का कृष्णपक्ष ।

वदळणो—दे० वदळणो ।

वदळाणो—दे० वदलाणो ।

वदळायोड़ो—दे० वदळायोडो ।

वदळावणो—दे० वदळावणो ।

वदळियोड़ो—दे० वदळियोड़ो ।

वदळी—दे० वदळी ।

वदळै—*(अव्य०)* १. वदले में । परिवर्तन मे । २. लिये । खातिर । वास्ते । ३. प्रतिफल स्वरूप ।

वदळो—*(न०)* १. प्रतिकार । वदलो । साटो । २. विरोध । ३. एवज । विनिमय । ४. फेरफार । हेराफेरी । ५. नतीजा । परिणाम । ६. सट्टे के व्यापार का एक नियम जिसमें वायदे के रूप मे खरीदी या बेची हुई वस्तु को कायम रख कर केवल भाव के उतार चढ़ाव के नफे नुकसान का भुगतान होता है ।

वदाण—*(ना०)* चारपाई को कसने के लिये पैताने की ओर लगाई जाने वाली रस्सी । अदवान । वदामण ।

वदामण—दे० वदाण ।

वदा-वदी—*(ना०)* वाद-विवाद । बोल-चाल । झगड़ा । वाग्युद्ध ।

वदि—(ना०) चाँद्र-मास का कृष्ण-पक्ष। वदी। (वि०) कृष्ण-पक्ष का।

वदी—(ना०) १ कृष्ण-पक्ष। वदपख। २. जामा पर पहनने का एक स्वर्ण आभूषण। एक प्रकार की सोने की लंबी माला जो दोनों कंधों पर पहनी जाकर दाहिने कंधे की बाँयी ओर और बाँये कंधे की दाहिनी ओर जामे पर लटकती रहती है। वढी। बदी। (वि०) कृष्ण-पक्ष से संबद्ध। कृष्ण-पक्ष का।

वदीतो—(वि०) १. प्रसिद्ध। विख्यात। २. विदित। प्रगट। जाहिर।

वध—(ना०) १ कत्ल। मारण। खून। २. वृद्धि। बढ़ावा।

वधकर—(वि०) १. श्रेष्ठ। २. सुंदर। ३. तुलना में अधिक या श्रेष्ठ। वधतो।

वधकी—(वि०) १. अच्छी। बढिया। ग्रधकी। इधकी। २ तुलना में श्रेष्ठ। ३.अधिक। ज्यादा। इधक। ४. कीमती।

वधको—(वि०) १. तुलना में बढ़िया या अधिक। २. अच्छा। बढ़िया। इधको। ३. अधिक। ४. मूल्यवान। कीमती। ५. उत्तम। श्रेष्ठ।

वध-घट—(ना०) १. न्यूनाधिक। अधिक और कम। कम-ज्यादा। घणो-थोड़ो। २. वस्तुओं के भावों में बढ़ा-घटी। ३. चढाव-उतार। चढ़-उतर। घट-वध।

वधणी—(ना०) १. हिक्का। हिचकी। २. बढ़ने की क्रिया।

वधणो—(क्रि०) १. बढ़ना। अधिक होना (परिमाण में)। २. फूलना। ३. (मार्ग में) आगे बढना। ४. पद में या धन में बढ़ना। ५. मारना। वध करना। हत्या करना। (वि०) बढ़ने वाला।

वधती वेल—(ना०) १. उन्नत दशा। २ वंश-वृद्धि। ३ श्रेष्ठ कुल।

वधती - (वि०) १ अधिक। ज्यादा। वतो। २. बढ़ता हुआ। ३. श्रेष्ठ। वधको।

वधतो-आंक—दे० तीओ-आंक।

वधरणो(क्रि०) १. वृद्धि पाना। बढ़ना। २. सधवा स्त्री के हाथ की चूड़ी का टूटना। (सौभाग्य का चिन्ह होने के कारण 'चूड़ी का टूटना' कहना अशुभ समझा जाता है।) ३. देवता के आगे (प्रसाद चढ़ाने के लिए) नारियल का तोड़ा जाना।

वधराळ—(ना०) वृषण का एक रोग।

वधाई—(सं०) १. मंगलाचार। २. खुशी के समाचार। मंगल समाचार। शुभ संदेश। बधाई। ३. शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार। ४. किसी शुभ समाचार पर कहा जाने वाला आनंद प्रगट करने वाला वचन। ५ वृद्धि। ६. उत्सव। ७. स्वस्ति वचन। मंगल-वचन।

वधाईदार—(वि०) बधाई देने वाला। वधाउड़ो।

वधाउओ—दे० वधाउड़ो।

वधाउड़ो—(ना०) १. बर्र के जैसा एक पतंगा जो वर्षा आने के पहले दिखाई देता है और वर्षा आने का सूचक माना जाता है। २. बधाई देने वाला। ३. शुभ समाचार कहने वाला। ४. बरात में से भेजा जाने वाला वह व्यक्ति जो बरात के गाँव के निकट आ जाने की सूचना कन्या-पक्ष वालों को देता है। वधाऊ।

वधाउवो—दे० वधाउड़ो।

वधाऊ—दे० वधाउड़ो।

वधाणो—दे० वधावणो।

वधांपो—दे० वाधेपो।

वधामणां—(न०व०व०) १. वधाई का संदेश। २. वधाई संबंधी उत्सव। ३. पुत्र जन्मोत्सव। ४. पुत्र विवाहोत्सव। ५. विवाहोत्सव। ६. गुरु तथा पूज्य जन आदि के आगमन पर मनाया जाने वाला स्वागतोत्सव। ७. किसी मंगल कार्य का आयोजन। ८. मांगलिक पदार्थों की भेंट-पूजा और गाजे बाजों के साथ किया जाने वाला स्वागत। स्वागत। मंगलाचार। ९. प्रशंसा। तारीफ। १०. विजय-समारोह। विज्योत्सव। ११ खुशामद। निहोरा। दे० वधावणा।

वधामणो—(न०) वधाई का गीत। वधावा।

वधारणो—(क्रि०) १. वढाना। २. नारियल का भोग धरने के लिए देवता के सम्मुख उसे तोड़ना। ३. सधवास्त्री के हाथ की चूड़ी को तोड़ना। ४. बचत करना।

वधारो—(न०) १. पद, प्रतिष्ठा, जागीरी आदि में की जाने वाली वृद्धि। वृद्धि। २. पदवृद्धि। ३. उपहार वृद्धि। ४. विशेष उपहार। पुरस्कार में वृद्धि या विशेषता। ५. नफा। लाभ। ६. पोतेबाकी। वेलेन्स। ७. उन्नति। तरक्की।

वधावणा—(न०व०व०) १. शुभ कार्य। मंगल कार्य। २. मंगल कार्य के निमित्त देव-पूजन के लिये की जाने वाली तैयारी। ३. मगल-गीत। ४. वधावणा नामक एक स्वागत-गीत। ५. स्वागत। ६. हर्ष ७. उपहार। ८. भेंट। ९. पुत्र-जन्म और विवाह आदि अवसरों पर जागीरदार की ओर से उसकी प्रजा से लिया जाने वाला एक कर। दे० वधामणा।

वधावणो—(क्रि०) १ किसी के उत्कर्ष के प्रति हर्ष प्रगट करना। २. स्वागत करना। ३. आगंतुक सम्माननीय पुरुष को मांगलिक पदार्थों से विधि-पूर्वक पूजा आदि करके शोभा यात्रा के साथ घर लाना। ४. दूल्हे-दुलहिन, गुरु, तीर्थ-यात्री इत्यादि सम्माननीय व्यक्तियों के गृह प्रवेश के समय द्वार पर सधवा माता, वहिन या पुत्री इत्यादि द्वारा उनके दाएँ-बाँएँ जळ सिंचन करके स्वागत करना। ५. वढ़ाना। उन्नत करना। ६. खींच कर लंबा करना। ७. जोड़ना। ८. फैलाना।

वधा-वधी—(ना०) १. माल को नीलाम करने में एक दूसरे से बढ़कर कीमत लगाने की क्रिया। २, एक दूसरे से बढ़ने की होड़।

वधावो—(न०)१.बढ़ाने की क्रिया। बढ़ावा। २. वढ़ाने की सामग्री। वृद्धि। ४. विवाह, उत्सव आदि पर गाया जाने वाला एक लोक गीत। वधावो। ५. स्वागत-गीत। ६. पुत्र-जन्म, विवाह आदि शुभ कार्य।

वधिक—(वि०) १. माप, तौल, गुण आदि में चढ़ता हुआ। २. अधिक। ज्यादा। ३. तुलना में श्रेष्ठ। ४. वध करने वाला। हिंसक। ५. व्याध। शिकारी।

वधिये-घटिये—(अव्य०) १. घटने पर। २. कम-ज्यादा होने की में।

वधियोड़ो—*(वि०)* १. बढ़ा हुआ। उन्नत। २. शेष रहा हुआ। बचा हुआ। ३. लंबायमान। ४. सम्पन्न। संठियोड़ो।

वधू—*(ना०)* १. बहु। पत्नी। बहु। २ पुत्रवधू। बहु।

वधे-लाभ—*(अव्य०)* नाज आदि किसी वस्तु की राशि को तोलने-मापने के समय पहले तोल या माप को तोलने-मापने वाले के द्वारा दी जाने वाली सज्ञा। प्रारम्भ। लाभ की प्राप्ति हो इस भाव का उद्गार। २. कार्यारंभ के प्रथम चरण का मंगल या लाभ-सूचक नाम। ३. याचक या भिखारी द्वारा भीख माँगते समय या भीख मिलने पर कहा जाने वाला आशीर्वादात्मक पद।

वधैया—*(वि०)* बधाई देने वाला। बधाउड़ो।

वधोतर—*(न०)* १. बढ़ता अंक या संख्या। २. दो चार, छः इत्यादि युगल संख्याओं को गिनने पर शेष मे एक रह जाने का शुभ फल। दे० वधतो आंक। *(वि०)* कुछ अधिक। अधिक।

वधोतरी—*(ना०)* १. उत्तरोत्तर होने वाली बढती या उन्नति। २. वृद्धि। वढोतरी।

वन—*(न०)* १. जंगल। अरण्य। २. दस नामी संन्यासियों का एक भेद।

वन-खंड—*(न०)* वन का कोई भाग। वन। जंगल।

वन-खंडी—*(ना०)* १. एक वैष्णव सम्प्रदाय। २. उक्त सम्प्रदाय के साधुओं की जमात। ३. उक्त जमात का साधु।

वनचर—*(न०)* १. बन्दर। २. वन मे रहने वाला। जंगली। जंगली प्राणी।

वनचारी—दे० वनचर।

वनजी—*(न०)* बनो। दुलहे का आदर सूचक नाम। दुल्हा।

वनड़ी—*(ना०)* दुलहिन। बीनणी। बनी।

वनड़ो—*(न०)* दुलहा। बींद। बीन।

वनणा—दे० वंदणा।

वनता—*(ना०)* १. स्त्री। वनिता। लुगाई। बैर। २. प्रिया।

वनथळी—*(ना०)* १. वनस्थली। २. मरु-प्रदेश। थंथळी। ३. वन प्रदेश।

वन-देवता—*(न०)* वन का अधिष्ठाता देव।

वन-माळ—दे० वन के फूलों की लंबी माला।

वन-माळा—दे० वनमाळ।

वन-माळी—*(न०)* १. श्री कृष्ण। २. बागवान। माली। माळी।

वन-में-जाणो—*(मुहा०)* शौच निवृत्ति के लिए वन में जाना। पाखाना फिरने को जाना। टट्टी जाना। जंगळ जाणो। झाड़े जाणो। (रघूवाड़ी भाषा)।

वनरमाळ—*(ना०)* १. मांगलिक अवसरों पर द्वार पर बांधी जाने वाली फूल-पत्तों आदि की झालर। बंदनवार। वंदन-माल। २. माला-बंधन। ३. वन्द्रमाल।

वन-राइ—दे० वणराइ।

वन-राज—*(न०)* सिंह। व्याघ्र।

वन-राजि—दे० वणराइ।

वन-राव—*(न०)* १. सिंह। २. शेर। बाघ।

वन-रोही—*(न०)* जंगल। वन। सीम। रोही।

वन-वगड़ो—*(न०)* जंगल। वन। वगड़ो।

वन-वास—*(न०)* १. वन मे रहना। अरण्य-वास। २. बस्ती छोड़ कर वन मे रहने का दिया जाने वाला दण्ड।

वन-वासी—*(वि०)* वन मे रहने वाला।

वनवासो—दे० वनवास ।

वन-वेलड़ी—(ना०) जंगली बेल । वन-लता ।

वनश्री—(ना०) १. वन की शोभा । २. वृक्ष, लता, पुष्प इत्यादि से शोभित वन ।

वनस्थली—(ना०) १. अरण्य प्रदेश । वन प्रदेश । २. मरु प्रदेश । ३. जयपुर जिले में प्राया हुआ लड़कियों के लिए एक प्रसिद्ध विद्याधाम । वनस्थली विद्यापीठ ।

वनस्पति—(ना०) वृक्ष लतादि ।

वना—(न०) पुत्र या छोटे बच्चों के लिये दुलार का सबोधन शब्द । बना ।

वनाजी—दे० वनजी ।

वनात—(ना०) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र । बनात ।

वनाधिप—(न०) १. सिंह । वनराज । २. वन देवता ।

वनायुध—(न०) शस्त्र ।

वनारणो—(क्रि०) १. फल, साग, सब्जी आदि को साफ-सूफ करके छीलना-काटना । समारना । २. साफ करके छीलना-काटना । काटना ।

वनामा—दे० वनजी ।

वनिता—(ना०) १. स्त्री । महिला । २. पत्नी । ३. प्रिया ।

वनी—(ना०) १. दुलहिन । बींदणी । बीनणी । २. जंगल । ३. वानप्रस्थी । ४. विवाह का एक लोकगीत ।

वनो—(न०) १. दूल्हा । बींद । बींदराजा । २. विवाह सम्बन्धी एक लोक गीत ।

वनोरो—दे० वंदोळो ।

वनोळो—दे० वंदोळो ।

वनोळो—दे० वंदोळो ।

वनो-वनी—(न०) दुलहा-दुलहिन । बींद-बींदणी ।

वन्नर—(न०) वंदर । बांदरो । वानर ।

वन्नर-माळ—दे० वदरमाळ या वनरमाळ ।

वप—(न०) शरीर । वपु ।

वपण—(न०) १. केश काटना । हजामत । २. बीज बोना । बुवाई ।

वपणी—(ना०) नाई की दूकान । क्षौरी ।

वपता—(न०) १. पिता । बाप । जामी । २. विपदा । विपत्ति ।

वपधर—(न०) शरीर धारण करने वाला । वपुधर । शरीरी । देहधारी ।

वपराण—दे० वपरास ।

वपराणो—दे० वपराणो ।

वपरावणो—दे० वपरावणो ।

वपरास—(ना०) १. उपयोग । २. किसी चीज को काम मे लाने का भाव या रिवाज । ३. माल का उठाव । ४. खर्च या बिकरी ।

वपळ—(वि०) १. अधिक बोलने वाला । लापर । २. वातुल । ३. झूठा । लबाड़ ।

वपळो—दे० वपळ ।

वपु—(न०) शरीर । देह । डील ।

वफादार—(वि०) १. ईमानदार । २. कर्तव्य-पालक । ३. स्वामीभक्त । ४. विश्वासी । ५. आज्ञापालक ।

वफादारी—(ना०) १. ईमानदारी । २. कर्तव्य-पालन । ३. स्वामी-भक्ति । ४. निष्ठा । ५. आज्ञापालन ।

वभो—दे० विभो ।

वमणो—(क्रि०) १. फिरना । चक्कर लगाना । २. वमन करना । करना ।

वमन—*(ना०)* उलटी। कै।

वमळ—*(न०)* १. अकेले में विचारों का उठना या उठने वाले विचार। २. विचारों का घेर, चक्कर या उलझन। ३. विचार-तरंग। विचार-वमळ।

वमेक—*(न०)* १. विवेक। २. शऊर। ३. समझ।

वय—*(ना०)* उम्र। ऊमर। आयु। अवस्था।

वय-खोवरा—*(वि०)* अकर्मण्यता से आयु को व्यर्थ नष्ट करने वाला। *(न०)* आयु का नष्ट करना।

वयरा—*(न०)* १. वचन। बोल। २. विनती। ३. प्रतिज्ञा। कौल। वैण।

वयरा-सगाई—*दे०* वैणसगाई।

वयस्क—*(वि०)* वय प्राप्त। बालिग।

वयंड—*(न०)* हाथी। गज।

वयो-वृद्ध—*(वि०)* १. आयु में वृद्ध। वृद्ध। बूढ़ो। २. बड़ा। बडेरो। *(न०)* बडोल। पुरखा।

वर—*(न०)* १. दुलहा। वर राजा। बींद। २. वरदान। ३. पति। *(वि०)* १. सुन्दर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। *(अव्य०)* जैसा। भाँति।

वर-अंग—*(न०)* १. भग। योनि। २. सिर। मस्तक। माथो।

वरक—*(न०)* १. धातु का पतला पत्तर। बरक। २. पुस्तक का पन्ना।

वरकरणो—*(क्रि०)* १. जोश में बोलना। चिल्लाना। २. नाराज होना। बिगड़ना। ३. रोना।

वर-कन्या—*(न०ब०व०)* १. विवाहने वाले लड़का-लड़की। वर और कन्या। २. दुलहा-दुलहिन।

वरकसी—*(ना०)* १. शत्रुता। २. द्वेष। ३. विरोध। ४. भिड़ंत। ५. मुकाबला। ६. मोरचा। ७. वाद-विवाद। झगड़ा। ८. एक कर।

वरकी—*दे०* वरकी।

वरको—*(न०)* १. आतंक। दबदबा। रोब। धाक। २. वरक। पृष्ठ। पन्ना। पानो। ३. भय।

वरख—*दे०* वरस।

वरखा—*(ना०)* वर्षा। मेह। बरसात।

वरखा-जळ—*(न०)* वर्षा का पानी। पालरपाणी।

वरखावळ—*(ना०)* १. वर्षा की झड़ी। २. कई दिनों तक बरसने वाली वर्षा। वर्षा। वर्षावलि।

वरखिलाफ—*दे०* बरखिलाफ।

वरखे—*(न०)* १. वर्ष। सम्वत। *(अव्य०)* वर्ष में।

वरग—*(न०)* १. वर्ग। समूह। २. श्रेणी ३. जाति। *दे०* वर्ग।

वर-गहली—*(वि०)* पति प्रेम में पागल बनी हुई। वरगेली।

वरगे-वैर—*(न०)* १. जाति-वैर। सहज-वैर। स्वाभाविक शत्रुता। जैसे, बिल्ली की चूहे से। २. फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्यों में परस्पर विरुद्ध वर्गों की शत्रुता।

वर-घोड़ो—*(न०)* दूल्हे की शोभा-यात्रा।

वरजरणो—*(क्रि०)* १. किसी को किसी बात या काम करने के लिये रोक देना। मना करना। २. रोकना। अवरोधना। ३. त्यागना।

वरजनाऊ—*(वि०)* १. वर्ज्य। त्याज्य। निषिद्ध। वर्जनीय। २. वर्जन करने वाला। ३. रोकने वाला। बरजाऊ।

वरजनीक—(वि०) वर्ज्य । अस्वीकार करने योग्य ।

वरजाऊ—दे० वरजनाऊ ।

वरजांग—दे० वज्रांग ।

वरजित—(वि०) १. मना । २. वन्द । ३. छोड़ा हुआ । तजा हुआ । ४. मना किया हुआ । वर्जित ।

वरजियोड़ो—दे० वर्जित ।

वरजोड़—(न0) १. गाँठ । २. गठ-बंधन । गठ-जोड़ा ।

वरड़ो—दे० वरढो ।

वरढणो—(क्रि०) कृपक का बोहरे की लेन-देन का सम्पूर्ण रूप से चुकारा करना ।

वरढो—(न0) १. आसामी (कृपक या कर्ज-दार) से माल-सामान (बैल, गाय, ऊंट, अन्न, गाडी इत्यादि) लेकर बोहरे (ऋणद) की ओर से दिये हुये कर्जे का चुकता हिसाब । बेबाक लेन-देन । २. आगामी के कर्जे में रुपये, अन्न व अन्य माल सामान आदि लेकर बोहरे और आसामी का किया जाने वाला लेन-देन का संबंध-विच्छेद । ३. एक कर । ४. घाव । प्रहार । ५. निशान । घेडो ।

वरण—(न0) १. हिन्दू जाति के चार भेद—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । धर्ण । २. अक्षर । वर्ण । ३. रंग । ४. भेद । प्रकार । ५. जाति । ६. समाज । ७. चारण, भाट, ढाढी आदि कीर्ति वाचक । ८. किसी को किसी काम के लिये चुनना । ९. आवरण । १०. कुल । वंश । ११. ऊंट ।

वरणणो—(क्रि०) १. वर्णन करना । कहना । २. बतलाना ।

वरण-संकर—दे० वर्णसंकर ।

वरणावरणी—दे० वर्णावर्णी ।

वरणी—(ना0) १. कर्मकांड, यज्ञ या अभिषेक आदि धार्मिक अनुष्ठानों में ब्राह्मण के द्वारा मंत्र, जप या पाठ आदि कराने की योजना । २. उक्त धार्मिक कर्म के लिए की जाने वाली ब्राह्मण की नियुक्ति । ३. ब्राह्मण के द्वारा दुर्गा पाठ, रुद्री पाठ वा मंत्र पाठ का आयो-जन ।

वरणो—(क्रि०) १. विवाह करना । वरण करना । २. मन से पति मान लेने का संकल्प करना । पति मानना । ३. पति रूप में किसी एक को पसन्द करना ।

वरत—(ना0) १. पुरवट खींचने की मोटी रस्सी । सूंड वाले चरसे का मोटा रस्सा । नहन । बरत । २. हौदे को कसने की मोटी रस्सी । ३. उपवास । व्रत । ४. प्रतिज्ञा । संकल्प । ५. मृत्यु ।

वरतणी—दे० वर्तनी ।

वरतणो—(क्रि0) १. व्यवहार करना । २. व्यवहार में लाना । काम में लाना । बरतना । ३. वर्तमान होना । ४. प्रगट करना । ५. प्रसिद्ध होना । ६. बनना । ७. होना । ८. रीति का पालन करना । दे० वतरणो ।

वरतन—(न0) १. वेतन । २. नौकरी का खाना-पानी आदि के रूप में मिलने वाला एवजाना । ३. वर्तन । व्यवहार । ४. आचरण । ५. रीति । ६. बरतन । पात्र । वासण ।

वरतमा—(न०) १. मार्ग । वर्त्म । २. रथ के पहियों की लकीर । लीक । ३. किनारा । ४. [illegible] आंख की पलक ।

वरत-वरतोळिया—(न०) १. स्त्रियों के द्वारा किये जाने वाले प्रोत्सव व पार्वण व्रत-उपवास। २. कन्याओं या स्त्रियों के व्रत-उपवास। ३. छोटे-मोटे व्रत इकासने। ४. तीज त्यौहारों के व्रत उपवास।

वरतारो—(न०) १. देवता का प्रावेश। २. भविष्य कथन। ३. वर्ष का भविष्य कथन। ४. घटना। वृत्तान्त। वाकिया।

वरताव—(न०) बर्ताव। व्यवहार।

वरतावणो—(क्रि०) १ काम में लाना। व्यवहार में लाना। बरताना। २. बाँटना। वितरण करना। ३. सबमें बाँट कर किसी वस्तु का उपयोग करना या उसे बिताना। ४. समाप्त करना। ५. प्रवर्त करना।

वरतियो—(न०) १. जैन साधु। जती। २. जादू टोना करने वाला जैन जती। (वि०) व्रत रखने वाला। व्रती।

वरतियोड़ो—(भू०कृ०) काम में लाया हुआ।

वरती—(ना०) स्वभाव। प्रादत। विरती। दे० वृत्ति।

वरतीक—(न०) वर्तमान। विद्यमान।

वरतीजणो—(क्रि०) १. काम में लाया जाना। बरता जाना। २. प्रगट होना। ३. उपयोग होना। ४. वर्तमान होना। ५. प्रवर्त होना। ६. यापन होना। व्यतीत होना। बीतना। ७. बाँटा जाना। ८. खर्च होना।

वरतुल—(न०) १. गोलाकार। वर्तुल। कूंडाळो। २. गोल। वृत्त।

वरतो—दे० वरतो या वरतणो।

वरथ—दे० बरथा।

वरथा—दे० वृथा।

वरद—(वि०) १. वरदान देने वाला। २. मंगलकारी। ३. शुभ। (ना०) १. विवाह में गीत गाती हुई स्त्रियों का कुम्हार के यहाँ मंगल-मृद-कलश लेने को जाना। २. विवाह के पूर्व मंगल-कलश का स्थापन। ३. सम्पूर्ण वैवाहिक कार्य की संज्ञा। ४ शुभ दिन।

वरदराज—(न०) श्रीगणेश।

वरदळ—(न०) १. वर और कन्या की आयु का उतना अन्तर जो पाणिग्रहण करने के योग्य हो। वर और कन्या की आयु का योग्य अन्तर। २. दोनों की विवाह योग्य अवस्था। ३. वर और कन्या की गुण, लक्षण, आयु तथा स्वास्थ्य इत्यादि से योग्य जोड़ी। ४. वर पक्ष और कन्या पक्ष में समधी बनने की समानता। ५. श्रेष्ठ पक्ष।

वरद-वड़ी—(ना०) विवाह के आरम्भ में मूंग की वड़ी (मुंगोरी) बनाकर वैवाहिक कार्य प्रारम्भ करने की एक मांगलिक विधि जो वृद्धि कारक और वरदायक समझी जाती है। वरध-वड़ी।

वरद-विनायक—(न०) १. विवाह में गाया जाने वाला मंगला-चरण लोक-गीत। २. विवाह में स्थापित किये जाने वाले श्रीगणेश।

वरदा—(ना०) सरस्वती। (वि०) वर देने वाली।

वरदाई—(वि०) १. विरुद प्राप्त करने वाला। २. वरदान प्राप्त। ३. विरुद प्राप्त। ४. वर देने वाला। ५. उत्तम। श्रेष्ठ। ६. यशस्वी। वरदाळ।

वरदाता—(वि०) वर देने वाला। वरदायक।

वरदान—(न०) १. देवी, देवता या संत महात्माओं के द्वारा प्रसन्न होकर आशा पूरी करने का दिया हुआ वचन। देवता, महा पुरुष आदि द्वारा मनोरथ-पूर्ति या अभीष्ट-सिद्धि। २. लाभ पहुंचाने वाली बात।

वर-दायक—(वि०) वर देने वाला। वरदेत। वरदाता।

वरदायरण—दे० वरदायणी।

वरदायणी—(वि०) वर देने वाली।

वरदायिनी—(वि०) वर देने वाली। वरदायणी। (ना०) सरस्वती। शारदा।

वरदायी—दे० वरदाई।

वरदाळ—दे० वरदाई।

वरदी—(ना०) १. एक प्रकार का पहिनावा जो किसी विभाग के कार्यकर्त्ताओं के लिए नियत हो। गणवेश। युनिफार्म। वर्दी। २. खबर। ३. आज्ञा। हुक्म।

वरदेत—दे० वरदायक।

वरध-—(वि०) वृद्धि। (ना०) १. विवाह के पूर्व की एक मंगलविधि। २. वृद्धि। ३. दे० वरद (ना०) सं० १, २, ३। ४. विवाह का मांगलिक लोक-गीत।

वरध-वड़ी—दे० वरद-वड़ी।

वरना—(अव्य०) १. नहीं तो। २. अथवा ३. अथवा तो। या तो।

वरपाड़—(न०) १. शत्रु। दुश्मन। २. दैत्य। ३. दुष्ट।

वर-वेड़ो—दे० वरहेड़ो।

वरम—(न०) सूजन। दे० वर्म।

वरमाळ—दे० वरमाळा।

वरमाळणो—(क्रि०) १. वरमाला पहिनाना। २. वर पसंद करके उसे माला पहिनाना।

वर-माळा—(ना०) स्वयंवर में पसन्द किये हुये वर को कन्या द्वारा पहिनाई जाने वाली माला।

वर-राजा—(न०) दुलहा। बींद।

वर-लाछ—(न०) विष्णु। लक्ष्मीपति।

वरवड़ी—(ना०) एक लोक देवी। २. चारणों की एक देवी। (वरुड़ी)। वर-वड़ी।

वरस—(न०) १. वर्ष। साल। ३६० दिन या बारह महीनों का समय। २. जमाना। समय। दे० वर्ष

वरस-गांठ—(ना०) जन्म तिथि। जयंती। वर्षगांठ। जन्म दिन।

वरसणो—(क्रि०) १. बरसना। वर्षा होना। २. दान देना। ३. क्रोध करना।

वरस-दिन—(अव्य०) पूरे वर्ष का समय।

वरस-दिहाड़ो—दे० वरस-दिन।

वरस-फळ—(न०) १. शुभा-शुभ ग्रहों का वर्ष भर का फल। २. उक्त विवरण की पुस्तिका। (ज्यों)

वरस-व्यावणी—(वि०) प्रति वर्ष बच्चे को जन्म देने वाली।

वरसा—(ना०) वर्षा। मेह। वृष्टि। बरखा।

वरसाऊ—(वि०) बरसने वाला। (बादल)। दे० वरसाळू।

वरसाण—दे० वरसासण।

वरसात—(न०) वर्षा। बरसात।

वरसाती—(ना०) १. वर्षा मे पहिनने का कोट आदि वस्त्र। रेन कोट। २. मोटर आदि खड़ा करने का बंगले के आगे का भाग। (वि०) वर्षा सम्बन्धी। वर्षा का।

वरसाद—*(न०)* वर्षा । मेह । विरखा ।

वरसाळू—*(वि०)* १. वर्षा का । वर्षा संबंधी । २. वर्षा से उत्पन्न होने वाला। ३. वर्षा ऋतु संबंधी । वर्षा ऋतु का ।

वरसाळो—*(न०)* वर्षा ऋतु । चौमासा । वराळो ।

वरसासण—दे० वर्षाशन ।

वरसी—*(ना०)* १. किसी संत, महापुरुष आदि की निधन तिथि । पुण्य तिथि । मृत्यु-तिथि । २. मृतक की वार्षिक तिथि पर की जाने वाली क्रिया । ४. वरसी पर किया जाने वाला भोज । वरसी का जीमन ।

वर-सीत—*(न०)* सीतापति श्रीराम ।

वरसीतप—*(न०)* जैनों का एक वार्षिक तप ।

वरसूंद—*(ना०)* १. वर्ष भर की आमदनी का हिसाब करके निकाली जाने वाली धर्मादे की निश्चित धनराशि । वरसबसूंद । २. धर्मादे के रूप में निकाला जाने वाला ब्याज का अमुक भाग । विसूंद । ४. राज्य कर के रूप में लिया जाने वाला आमदनी का दशवां भाग । ५. वर्षाशन ।

वरसोदण—*(न०)* १. वर्ष में आने वाला एक त्योहार । २. इस त्योहार पर किया जाने वाला चावल-भोजन ।

वरसोदियो—*(वि०)* १. वर्ष भर बना रहे या चले जितना । २. एक वर्ष से संबंधित । वर्ष का । ३. वर्षा का । ४. वर्षा के जल से भरा हुआ । ५. वर्षा के पानी का ।

वरसो-वरस—*(क्रिव्य०)* १. प्रत्येक वर्ष । २. प्रति वर्ष ।

वर-हाण—*(ना०)* १. अयोग्य, विवेकहीन तथा रोगी इत्यादि अपलक्षणों वाला कंवारा लड़का जो वर बनने के योग्य न हो । कन्या के पाणिग्रहण के लिये अनुपयुक्त वर । २. हानि वाला वर । अयोग्य तथा पुरुषत्वहीन पति । ३. ३. वर की अप्राप्ति ।

वरहास—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

वरहेड़ो—*(न०)* १. मिट्टी का बना हुआ एक छोटा चित्रित मंगल-कलश । वड़वेड़ो । २. कलश के ऊपर छोटा (मंगल) कलश । ३. वह दोहरा छोटा कलश (कलश के ऊपर छोटा कलश) जिससे वर के स्वागत की एक विधि सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा संपन्न की जाती है । वरवेड़ो । दे० सामेळो ।

वरंग—*(न०)* १. सिर । उत्तमांग । वरांग । उतवंग । उतमंग । माथो । २. भग ।

वरंडी—दे० १. वंडी । २. एक विलायती शराब । ब्रांडी ।

वरंडो—*(न०)* १. बरामदा । २. छाया हुआ खुला भाग । पडाळ । ओसरी ।

वराख—*(न०)* भग । योनि । जननेंद्रिय । (क्रोध में) ।

वराचक—दे० वराधक ।

वराड़ो—*(न०)* रस्सा । मोटी रस्सी । रींढू ।

वरात—*(ना०)* बरात । जान ।

वराधक—*(वि०)* १. बळशाली । जबरदस्त । बलाधिक । २. श्रेष्ठ ।

वरामणी—दे० ब्राह्मणी ।

वरामी—*(ना०)* ब्राह्मी नामक वनस्पति ।

वराळ—*(ना०)* १. भाप । वाष्प । वाफ । २. हृदय का उबाल । मनोवेग । बळार ।

वराळो—दे० वरसाळो ।

वरासण—(न०) श्रेष्ठ आसीन । उच्चासन । उच्चपद ।

वरासत—दे० विरासत ।

वराह—(न०) १. शूकर । सूअर । २. विष्णु का तीसरा अवतार । वाराहावतार । ३. वह कल्प जिसमे वाराह का अवतार हुआ ।

वराह-अवतार—(न०) विष्णु का वराह रूप में तीसरा अवतार । वाराहावतार ।

वराह-कल्प—वह कल्प जिसमें विष्णु का वाराह अवतार हुआ था । वाराह काव्य

वराह-पुराण—(न०) अठारह पुराणों मे से एक पुराण । वाराह पुराण ।

वरांग—(वि०) सुन्दर अवयवों वाला । (न०) १. सिर । माथो । २. योनि । ३. हाथी ।

वरांगना—(ना०) १. सुन्दर अंगों वाली स्त्री । २. वारांगना । वेश्या । पातर ।

वरि—(अव्य०) १. मानो । २. भांति । ३. पर । ४. के । ५. ऊपर । ६. के ऊपर । (वि०) १. सुन्दरी । २. पतिव्रता । (कृ०) १. वर कर के । वरण करके । २. विवाह कर के ।

वरियाम—(वि०) श्रेष्ठ । उत्तम । वरिष्ठ ।

वरियाळी—(ना०) सौंफ ।

वरिष्ठ—(वि०) १. सर्वोत्तम । श्रेष्ठ । २. सबसे बड़ा ।

वरी—(ना०) १. विवाह के समय वर पक्ष की ओर से वधू के लिये दिये जाने वाले (विशेष प्रकार के कीमती) वस्त्राभूषण । २. श्रेष्ठता ।

वरीख—(ना०) १. पांव । पद । २. चाल । ३. ऊँट की एक चाल । वीख । हलकी दौड़ । ४. वर्ष । ५. पदचिह्न ।

वरीस—(न०) १. वर्ष । २ बरसने वाला । ३. दानी । दाता ।

वरीसण—(वि०) १. बरसाने वाला । २. बख्शीश करने वाला । देने वाला । ३. दान देने वाला ।

वरीसणो—(क्रि०) १. देना । दान देना । २. बरसना ।

वरुग्रो—(न०) मिट्टी का जलपात्र । सकोरा । करवो ।

वरुण—(न०) १. जल का अधिष्ठाता देवता । जलेश । प्रचेता । २. पश्चिम दिशा का दिक्पाल ।

वरूथ—(न०) १. सेना । २. ढाल । ३. कवच । ४. पाखर । ५. रथ का कवच । ६. झुंड । समूह ।

वरूथणी—(ना०) सेना । वरूथिनी ।

वरेण्य—(वि०) १. पूजनीय । २. श्रेष्ठ । ३. प्रधान । ४. पसंद करने योग्य ।

वरो—(न०) १. आवश्यकता २. बिसात । हैसियत । सामर्थ्य । ३. श्रेष्ठता । ४. तेज । ओज । ५. उपयोग ।

वरोटी—(ना०) १. वर की ओर से (बरात, संबंधी और मित्रजनों आदि को) दिया जाने वाला बृहद भोज ।

वरोठी—दे० वरोटी ।

वरोळ—(ना०) १. विचार । २. विचारधारा । विचारों का चक्कर । विरोळ । ३. भ्रमर । भौंरा । ४. नाश ।

वरोळणो—(क्रि०) १. विचारना । विरोळणो । २. बरबाद करना ।

वर्ग—(न०) १. बड़े समुदाय का एक २. समान-गुण-धर्म वालों, वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह

कक्षा । ३. शब्द-शास्त्र में एक ही स्थान से उच्चरित होने वाला वर्ण समूह । जैसे क वर्ग । वह समान्तर चतुर्भुज जिसकी चारों भुजाएँ तथा कोण बराबर हों । ५. दो समान अंकों का गुणन-फल । ६ किसी एक जाति के पशुओं का झुंड । ७. झुंड । समूह । टोळो ।

वर्गीकरण—(न०) वर्ग बनाने की क्रिया ।

वर्चस—(न०) १. अधिकार । वर्चस्व । २. श्रेष्ठता । ३. बल । पराक्रम । ४. तेज । दीप्ति । ५. वीर्य ।

वर्चस्व—दे० वर्चस ।

वर्जित—(वि०) १. छोड़ा हुआ । त्यागा हुआ । २ रोका हुआ । ३. कुपथ्य । ४. मना किया हुआ । वरजियोड़ो ।

वर्ण—(न०) १. हिन्दू समाज के चार विभाग (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) । २ हिंदू समाज के चार विभागों में से कोई एक विभाग । ३. लघुतम ध्वनि इकाई तथा इसका लिपि चिन्ह । ४. वह अक्षर जो शब्द के साथ नहीं लगा हुआ हो । अकेला अक्षर । अक्षर । ५. रंग । ६. रूप । ७. प्रकार । भेद ।

वर्णन—(न०) १. सविस्तार कहा जाने वाला वृत्तान्त । बयान । २. प्रशंसा । ३. चित्रण ।

वर्णन करणौ—(मुहा०) १. विस्तार-पूर्वक कहना । वर्णन करना । २. बखान करना । प्रशंसा करना । वखाणणो ।

वर्ण-माला—(ना०) किसी भी भाषा के मूलाक्षरों की क्रमबद्ध अक्षर माला । वर्ण-माला ।

वर्ण-वार्धक्य-विधान—(न०) वर्ण गुण अथवा उसमें वृद्धि करने की विधि । जैसे—'विसर' का 'विमहर' । गुण वृद्धि विधान । (व्या०)

वर्ण-विचार—(न०) वर्णों का आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों वाला व्याकरण विभाग ।

वर्ण-विपर्यय (न०) शब्दों में वर्णों का उलट-पुलट हो जाने की क्रिया, जैसे—'मतलब' का 'मतबळ' ।

वर्ण-वृद्धि-विधान—दे० वर्ण-वार्धक्य-विधान ।

वर्ण-व्यवस्था—(ना०) १. हिन्दू समाज के चार वर्णों की विभाजन रीति । २. चार वर्णों द्वारा हुई समाज व्यवस्था । चार हिन्दू वर्णों की समाज व्यवस्था ।

वर्ण-सगाई—(ना०) १. कविता में सजातीय वर्णों का आवर्तन । २. तुकान्त में सजातीय वर्णों का आवर्तन । वर्ण-संबंध । दे० वैण-सगाई ।

वर्ण-संकर—(वि०) १. भिन्न वर्ण के स्त्री-पुरुष से उत्पन्न । २. व्यभिचार द्वारा उत्पन्न । (न०) इस प्रकार उत्पन्न हुआ पुरुष ।

वर्ण-स्थान—(न०) मुँह में का स्थान जहाँ से वर्ण बोला जाता है ।

वर्णनातीत—(न०) जिसका वर्णन न हो सके ।

वर्णानुक्रम—(न०) वर्णमाला के अक्षर-क्रम के अनुसार बनाया हुआ क्रम । वर्णानुक्रमणिका ।

वर्णानुक्रमणिका—दे० वर्णानुक्रम ।

वर्णानुप्रास—(न०) सजातीय वर्णों का आवर्तन । एक शब्दालंकार । (साहि०) ।

वर्णावर्णी—(ना०) १. अनेक वर्णों के लोगों का शंभु मेला । २. वर्णों की अभेदता । वर्ण व जातियों का मिश्रण ।

३. छोटी-मोटी जातियाँ । वर्णों की प्रतर्जातियाँ । ४. ख्याति-जाति के भेद । ५. जातियाँ और उनकी पेटा-जातियाँ । ६. अनेक जातियाँ ।

वर्णाश्रम—(न०) १. हिन्दू समाज तथा व्यक्ति का वर्ण और आश्रम के अनुसार विभाग और उनके कर्तव्यों की व्यवस्था । २. वर्ण और आश्रम ।

वर्णाश्रम-धर्म—(न०) १. वर्णाश्रम को मानने वालों के लिये तथा वर्णाश्रम को मान्य, ऐसी व्यवस्था पर रचा हुआ धर्म । २. हिन्दू धर्म । हिन्दू आर्य जाति का वर्णाश्रम धर्म ।

वर्तन—(न०) १. आचरण । २. चाल-चलन । ३. व्यवहार ।

वर्तनी—(ना०) १. शब्द के अक्षरों की योजना । शब्द का शुद्ध वर्ण-क्रम । जोड़णी । २. लिखने का ढंग । बरतनी । ३. शब्द का उच्चारण-क्रम । हिज्जे । स्पेलिंग । (व्या.)

वर्तमान—(न०) १. वर्तमान काल । चालू समय । २. समाचार । ३. क्रिया का काल । क्रिया शब्द का प्रवर्तमान (चालू) समय (व्या०) । (वि०) १. आधुनिक । २. चालू ।

वर्ताव—(न०) १. बरताव । चाल-चलन । २. व्यवहार । ३. रीति ।

वर्तु ल—दे० वरतुल ।

वर्धक—(वि०) बढ़ाने वाला । (प्रायः समासान्त में) ।

वर्धमान—(न0) १. विष्णु । २. चौबीसवाँ तीर्थंकर महावीर । (वि0) १. बढ़ने वाला । २. बढ़ता हुआ ।

वर्म—(न0) १. कवच । जिरह-बख्तर । २. घर

वर्मा—(न0) १. क्षत्रिय का उपनाम । २. क्षत्रिय ।

वर्ष—(न0) १. बारह महीने या ३६५ दिनों का समय । बरस । २. पृथ्वी का अमुक सात खंड । जैसे—भारतवर्ष । ३. पृथ्वी का द्वीपों वाला खंड । ४. वर्षा । ५. मेघ । बादल । ६. समय । जमाना ।

वर्ष-गाँठ—दे० बरस-गांठ ।

वर्ष-फल—दे० वरस-फळ ।

वर्षा—(ना0) १. बरसात । मेह । २. वर्षा-ऋतु ।

वर्षाभिनंदन—(न0) नये वर्ष का अभिनंदन ।

वर्षासन—(न0) (राज्य की ओर से) आजीविका के लिये मिलने वाला वार्षिक धन । वर्षाशन ।

वळ—(ना०) १. यात्रा में किया जाने वाला समूह भोजन । २. दूसरे गाँव को जाने वाली बारात का मार्ग की मंजिल (पड़ाव) पर (वर की ओर से) बनाया जाने वाला भोजन । ग्रामान्तर बारात का मार्ग-भोजन । ३. देवता को दी जाने वाली बलि । बलि भोजन । ४. एँठन । आंटो । ५. मुड़न । टेढ़ापन । वक्रता । ६. दिशा । ७. शत्रुता । ८. ओर । तरफ । ९. झुकाव । आग्रह । १०. करामात । युक्ति । ११. व्रण के कारण संधि स्थल में उठने वाली गाँठ ।

वळगण—(ना0) भूत प्रेतादि का आवेश । झपट में आना ।

वळगणो—(क्रि0) १. चिपकना । लगना । २. झपटना । लपकना । ३. भूतप्रेतादि का आवेश होना । ४. भूतप्रेतादि की झपट में आना । ५. आग्रहपूर्वक काम में लगना ।

वळगत—(ना०) १. लौटाई। वापसी। २. आय। प्राप्ति। कमाई। ३. जमा। ४. जमा-पूंजी।

वळ घालणो—(मुहा०) बल डालना।

वळण—(ना०) १. पूनम आदि किसी निश्चित तिथि पर, महीने भर के खरीद-फरोख्त के सौदों के नफे-नुकसान की भुगतान या लेन-देन। २. नफे-नुकसान के चुकाने का काम। नफा-नुकसान की चुकवणी। ३. वलण का निश्चित दिन या समय। ४. लौट आने की क्रिया। लौटाई। बोळामण। ५. फेरा। चक्कर। ६. आचरण। ७. व्यवहार। ८. मन की वृत्ति। ९. टेढ़ाई। मरोड़। १०. याद। स्मृति। ख्याल। ११. उलटी। कै। १२. उत्तर। १३. प्रतिकार।

वळण-करणो—(मुहा०) १. लौटना। २. सुधि लेना। ३. याद करना।

वळण-चुकावणी—(मुहा०) सौदों के नफे-नुकसान की रकम चुकती करना।

वळण चूकणो—(मुहा०) सट्टे के माल की खरीद-फरोख्त में भावों की कमी बेशी के फर्क का लेन-देन होना।

वळणी—(ना०) १. उत्तर। जवाब। २. वापस आने का भाव।

वळणो—(क्रि०) १. झुकना। २. लौटना। ३. किसी वस्तु का टेढ़ा होना। मुड़-जाना। ४. उलटी होना। वमन होना। कै होना।

वळतर—(ना०) १. प्रतिफल। २. लाभ। ३. आमदनी। आय। ४. ब्याज। ५. कमीशन। छूट। (वि०) बदले के रूप में मिलने वाला (रुपया, पैसा, काम, वस्तु आदि)। (अव्य०) बदले के रूप में।

वळता—दे० 'वळतो' का बहु-वचन। दे० वळतो।

वळताऊ—दे० वळतो।

वळती—(ना०) १. उत्तर। जवाब। २. संदेश। समाचार। ३. पहुंच जाने की खबर। ४. लौटने की क्रिया। अवाई। (अव्य०) १. जवाब के रूप में। उत्तर स्वरूप। २. पुनः। फिर।

वळती-छीया—दे० ढळती छीया।

वळतो—(क्रि० वि०) १. लौटता हुआ। वापिस आता हुआ। (अव्य०) जवाब में।

वळदार—(वि०) जिसमें बल पड़ा हुआ हो। बल वाला। मोड़ वाला।

वळ-पड़णो—(मुहा०) टेढ़ा होना।

वलभी—(न०) १. मंडप। २. गुमटी। ३. छप्पर। छत।

वलमीक—(ना०) १. दीमकों की बांबी। २. उनके कारण लगा मिट्टी का ढेर। बिमोटा। ३. आदि कवि वाल्मीकि ऋषि।

वलय—(न०) १. चूड़ी। २. कंकण। कंगन ३. कड़ा। ४. परिधि। घेरा।

वळळाटो—(न०) १. करुणापूर्ण रुदन। २. हायबोय। हाय-तोबा।

वळ-वळ—दे० वळोवळ।

वळ-वळाट—(न०) १. व्यर्थ की बातें। बकवाद। २. दुख की बातें। वेदना-प्रकाशन। ३. रुदन।

वळवळाटो—दे० वळवळाट।

वळा—(न०ब०व०) १. झोपड़े को छाने के लिये छज्जे के नीचे बांधी जाने वाली लकड़ियां। (न०) ओर। तरफ।

वला—(ना०) १. एक प्रियार्थक सम्बोधन जो प्रायः स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है।

(वि०) १. प्यारा। २. प्यारी। ३. वल्लभ। प्रियतम।

वळाकी—*(न०)* १. लौटकर या लौटते हुए आना। २. चक्कर। फेरा। ३. पुन: आना। दूसरी बार आने की क्रिया या भाव।

वलाजी—दे० वला।

वळामण—*(न०)* १. ढंग। तरीका। २. सुप्रवृत्ति। ३. विवेक। ४. विनय-पूर्वक आज्ञा का पालन करना तथा सुरुचि और व्यवस्थित रूप से काम करना। ५. काम करने का सही तरीका या सूझ। *(वि०)* विवेक सम्मत।

वळामणी—*(ना०)* लौटने की क्रिया या भाव। लौटाई। वोळावण।

वळाऊ—*(वि०)* १. पैदल यात्रा में साथ में लिया जाने वाला रक्षक। वोळाऊ। २. लौटने वाला।

वळार—दे० वराळ।

वळावो—*(न०)* १. पुन: आने की क्रिया। वळाको। २. आंटा। फेरा।

वळां—*(न०)* ओर। तरफ।

वळांक—*(न०)* १. मोड़। २. परिवर्तन। ३. ढंग। तरीका।

वळांटो—*(न०)* शरीर के किसी भाग में होने वाली ऐंठन। वांइटो।

वळां-वळां—*(श्रव्य०)* १. चारों ओर को। २. चारों ओर से। ३. चारों ओर। सभी ओर।

वळि—*(श्रव्य०)* १. फिर। और। पुन:। २. चाहे तो।

वळित-पूंछ—*(न०)* कुत्ता। कूतरो।

वळियो—*(न०)* १. भूमि का स्तर। जमीन की सतह। परत। २. जमीन के अन्दर बहने वाले पानी का प्रवाह। ३. पसीने के प्रवाह से शरीर के मैल से बनी हुई रेखा। ४. लोक-प्रवाह। लोक मनोवृत्ति। मन की लहर। ६. आवर्तन। चक्कर। ७. परिवर्तन।

वळियो फिरणो—*(मुहा०)* १. जगत की शाश्वत गति-विधि में अन्तर आना। २. संसृति वातावरण में एक साथ परिवर्तन आना। ३. लोगों के पारंपरिक भावों और विचारों में परिवर्तन आना। ४. चक्र का उलटा फिरना शुरू होना। ५. समूल परिवर्तन होना। ६. पारस्परिक सहानुभूति, आत्मीयता, स्नेह और ममत्व में उलटा या सुलटा परिवर्तन होना।

वली—*(न०)* १. पीर। औलिया। २. पहुँचा हुआ फकीर। ३. साधु। ४. मालिक। ५. अल्लाह का प्यारा। ६. धर्मात्मा। ७. महात्मा।

वळी—*(ना०)* १. छपरे के छत में लगने वाली एक मोटी लंबी लकड़ी। बल्ली। मोभ। *(श्रव्य०)* पुन:। और। उपरांत।

वळीण—दे० वलींड।

वळींड—*(न०)* छप्पर वाली छत के नीचे लगी रहने वाली मोटी लंबी बल्ली।

वळींडो—दे० वळींड।

वळू—*(न०)* १. पक्ष। समर्थन। २. हिमायत। पक्षपात। ३. सहायता। *(श्रव्य०)* पक्ष में। समर्थन में।

वळे—*(श्रव्य०)* पुन:। फिर।

वळेरण—*(न०)* छपरे को छाने के काम में लाई जाने वाली वे पतली लकड़ियाँ जो मोभ (बल्ली) के सहारे टिकी रहती हैं। इन्हीं लकड़ियों के ऊपर खपरैल बिछाये रहते हैं। वळींड। वळींड।

वळै—(न०) वलय। ककरण। (अव्य०) १. पुन:। फिर। २. और। अधिक।

वळो—(न०) १. छप्पर छाने मे काम मे आने वाली लकड़ी। वळेरए (वळा-समूह) की लकड़ी। छप्पर की अनघड़ पीढ। २. पर्वत। ३. आडावळो (अरावली) पर्वत।

वळो-वळ—(क्रि०वि०) १. इधर-उधर। २. चारो ओर।

वल्द—(न०) पुत्र। बेटा।

वल्दीयत—(ना०) १. किसी का बेटा। किसी का बेटा होने का भाव। २. माँ-बाप का नाम।

वल्लभ—(न०) पति। स्वामी। (वि०) प्रियतम। प्यारा।

वल्लभ-सम्प्रदाय—(न०) वल्लभाचार्य द्वारा प्रणीत कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय। पुष्टि मार्ग।

वल्लभा—(ना०) १. प्रिय पत्नी। कान्ता। २. प्रेयसी।

वल्लभाचार्य—(न०) शुद्धाद्वैत-पुष्टिमार्ग (कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय) के आविष्कारक आचार्य।

वल्लरी—(ना०) १. लता। बेलड़ी। २. मंजरी। मौंजर।

वल्लहो—दे० वल्लभ।

वल्ली—(ना०) १. लता। वेलि। २. पृथ्वी।

वव्वो—(न०) 'व' वर्ण का नाम। 'व' वर्ण। वकार।

वश—(वि०) १. विमुग्ध। २. अधीन। ३. आज्ञाकारी। (न०) १. अधिकार। २. अधिकार की सीमा। ३. इच्छा। ४. नियमन। काबू।

वशिष्ठ—(न०) एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो महाराज दशरथ के गुरु थे।

वशीकरण—(न०) १. वश में करने का मंत्र। २. मंत्र-तंत्र द्वारा किसी को वश में करना। ३. छ: प्रकारों के अभिचारों में से एक। (वि०) वश मे करने वाला। वशीकर। दे० वसी-करण।

वशी-भूत—(वि०) दूसरे के वश में आया हुआ। अधीन।

वस—दे० वश।

वसरण—(न०) १. वस्त्र। कपड़ा। वसन। २. घर। मकान। ३. निवास।

वसरणो—(क्रि०) १. बसना। रहना। आबाद होना। २. मुकाम करना। ठहरना।

वसत—दे० वस्तु।

वसती—दे० वस्ती।

वसत्र—दे० वस्त्र।

वसन—दे० वसरण।

वसमो—(वि०) १. कठिन। २. खराब।

वसंत—(न०) १. चैत-वैशाख मास की ऋतु। ऋतुराज। २. एक राग।

वसंत-ऋतु—(ना०) चैत्र और वैशाख महीने की ऋतु। ऋतु-राज।

वसंत-पंचमी—(ना०) १. माघ शुक्ल पंचमी। वसंत पांचम। २. वसंत के स्वागत का दिन।

वसंत-पांचम—दे० वसंत-पंचमी।

वसंत-रुत—दे० वसंत-ऋतु।

वसा—(न०) मेद। चरबी।

वसारणो—(क्रि०) १. बसाना। २. नगर-निर्माण करना। ३. अन्य गाव मे जाकर रहना।

वसावरणो—(क्रि०) १. किसी के लिये रोटी रोजी का प्रबन्ध करना। २. रहने का इन्तजाम करना। ३. नये घर मे बसने के साथ आवश्यक सामग्री बसाना। दे० वसारणो।

वसी—(ना०) १. जागीरदार के आश्रित लोग। २. वे लोग जिनको कम कीमत मे या मुफ्त में जमीन देकर बसाया गया हो। ३. वे लोग जिनसे घर टैक्स नही लिया जाता हो। ४. जागीरदार के कुनबे, रिश्तेदार व नौकर चाकर लोग। ५. प्रजा। ६. बस्ती। आबादी।

वसीकर—(वि०) वश में करने वाला। वशीकर।

वसीकरण—(न०) १. वशीकरण। वश में करने या रखने की क्रिया, स्थिति या भाव। २. तांत्रिक उपचार। ३. निग्रह। दमन। दे० वशीकरण।

वसीठ—(न०) १. दूत। २. शूद्र। ३. वसिष्ठ ऋषि।

वसीभूत—दे० वशीभूत।

वसीयत—(ना०) मरने के पहिले अपनी सम्पत्ति आदि के बारे में किसी को देने के संबंध मे की जाने वाली लिखा-वट या मौखिक इच्छा।

वसीयतनामो—(न०) वह दस्तावेज जिसमें वसीयत की शर्तें लिखी हों। वसीयत-नामा।

वसीलो—(न०) १. किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग। २. किसी बड़े अधिकारी के साथ संबंध। २.संबंध। ३.जरिया।४. लगाव। ५. साधन। लागवग। उसीलो।

वसीवान—(वि०) १.वशवर्ती। वशीभूत। २. बसा हुआ। (न०) १. प्रजा। लोग। २. ऐसी प्रजा व व्यक्ति जो विशेष सेवाओं के कारण कर मुक्त होते हैं।

वसु—(ना०) १. पृथ्वी। २. धन-मान। ३. सुवर्ण। सोना। ४. सूर्य। ५. रश्मि। किरन। ६. जल। ७. वैदिक देवताओं का एक गण। ८. आठ देवताओं के मंडल का कोई देवता। ९. आठ की संख्या। (वि०) आठ।

वसुदेव—(न०) श्रीकृष्ण के पिता का नाम।

वसुधा—(न०) १. पृथ्वी। २. लक्ष्मी।

वसुह—दे० वसुधा।

वसुंधरा—(ना०) पृथ्वी। भूमि। जमी।

वसू—(ना०) पृथ्वी। वसु। (अव्य०) वश में। अधिकार में।

वसूकणो—(क्रि०) गाय-भैंस का दूध देना बंध होना।

वसूल—(न०) उधार पेटे चुकती हुई रकम। (वि०) १. मिला हुआ। प्राप्त। २. लिया हुआ। ३. उगाहा हुआ।

वसूलात—(ना०) १. वसूल करने का मेहनताना। २. वसूली। प्राप्ति।

वसूली—(ना०) १. वह धन जो प्राप्त किया गया हो। २. दूसरे से अपना धन प्राप्त करने की क्रिया। माँगते रुपयों की प्राप्ति। प्राप्ति। (वि०) प्राप्त करने योग्य।

वसूलो—(न०) बढ़ई का एक औजार। बांसोलो।

वसोलो—दे० वसूलो।

वस्त—दे० वस्तु।

वस्ती—(ना०) १. बसे हुये घरों का समूह। गाँव। २. आबादी। जनसंख्या। ३. नगर। ४. मूत्राशय। वस्ति। ५. परिवार।

वस्तु—(ना०) १. वस्तु। चीज। पदार्थ। २. वास्तविकता। ३. सत्य। ४. सार। ५. किसी काव्य या नाटक का कथानक। ६. इतिवृत्त। ७. वर्णन।

वहोरगत—दे० वोहरगत ।

वहोरण—(ना०) १. भीख मागना । भिक्षा । २. भिक्षा मे मिली हुई वस्तु (जैन) ।

वहोरणो—(क्रि०) १. भिक्षा मांगना । २. भिक्षा देना । ३. सहन करना । खमणो। ४. संग्रह करना । संघरणो । ५. जोखिम उठाना । माथै लेणो ।

वहोरावणो—(क्रि०) भिक्षा देना (जैन साधु को) । वहरावणो ।

वहोरो—दे० वोहरो ।

वहोरी—दे० वोहरी ।

वह्नि—(ना०) अग्नि । वाहवै ।

वंक—(वि०) वाका । टेढा । (न०) टेढापन । वांकापन ।

वंकट—दे० बकट ।

वंकड़ो—(वि०) १. वांका । साहसी । २. वीर । (न०) वांकापन ।

वंकनाळ—(ना०) १. हठयोग के अनुसार शरीर की तीन मुख्य नाड़ियों मे से वह जो नासिका से ब्रह्मरंध्र तक गई हुई मानी जाती है । २. सुनारों की एक छोटी नाल जिसका आगे का भाग टेढा होता है और जिससे दीपक की लौ मे फूंक मार कर किसी वस्तु को गरम किया जाता है । वंकनाल ।

वंको—(वि०) १. टेढ़ा । वांका । २. बलशाली । वीर । ३. पुरुषार्थी । वीर । पराक्रमी । ४. साहसी । हिम्मती । बका ।

वंग—(न०) १. ढंग । तरीका । २. सहज आदत । गुरू से पड़ी आदत । ३. अभ्यास । आदत । ४. जान-पहचान । ५. वश । अधिकार । ६. संयोग । अवसर । ७. मार्ग । युक्ति । ८. साधन । ९. अनुकूलता । १०. उपाय । ११. रहस्य ।

वंचक—(न०) ठग । धूर्त ।

वंचणो—(क्रि०) १. ठगना । धोखा देना । २. पढा जाना । ३. बचना ।

वंचाणो—(क्रि०) १. पढ़ाना । २. पढ़ा जाना । ३. बचाना । (क्रि०भू०) पढा गया ।

वंचाड़णो—(क्रि०) १. पढाना । पढवाना । २. बचाना ।

वंचावणो—दे० वंचाड़णो ।

वंचित—(वि०) १. ठगाया हुआ । २. विमुख । ३. हीन । रहित ।

वंछ—(ना०) वाछा । इच्छा ।

वंछणो—(क्रि०) इच्छा करना । चाहना । वांछना ।

वंजणो—(क्रि०) १. भागना । भाग जाना। २. चले जाना ।

वंट—(न०) १. हिस्सा । भाग । २. टुकड़ा । ३. व्यापार आदि में साझा । बंट ।

वंटणो—(क्रि०) १. बांटना । बांटा जाना । ३. पीसना । ४. पीसा जाना । ५. पिसना ।

वंट-वाड़—(न०) १. हिस्सा । भाग । २. बांटने का काम । वंटवाड़ा । ३ विभाजन । तकसीम ।

वंट-वाड़ो—(न०) बाटने की क्रिया या भाव । विभाजन ।

वंठी—(वि०) १. खराब । २. काम मे ली हुई । ३. भोजन बनाने के काम में ली हुई । (बरतन. आदि सामग्री) । खंटी । ४ अनाचारिणी । ५. कुलटा ।

६. ऋतुमती। रजस्वला। ७. बिगड़ी हुई। भ्रष्टा।

वंठो—(वि०) १. खराब। २. काम में लाया हुआ। ३. भोजन बनाने के समय काम मे लिया हुआ (पात्र) खंटो। ४. अनाचारी। ५. अपवित्र। ६. भ्रष्ट। ७. दुश्चरित्र। ८. अयोग्य। ९. दुष्ट। १०. हीन। नीच। ११. झगड़ाखोर।

वंडी—(ना०) खुली छत के चारों ओर की छोटी भीत। मुंडेर। विरंडी।

वंडो—(न०) १. बड़ी वंडी। २. वरंडा। बरामदा। ३. कम्पाउंड। चौभीतो।

वंढळ—(न०) नपुंसक। (वि०) वांढो। अपरणित।

वंतर—(न०) व्यंतर। भूत। प्रेत।

वंतरियो—दे० वांतरियो।

वंतरी—(ना०) व्यंतरी। भूतनी। प्रेतनी। भूतणी।

वंताळ—दे० वताळ।

वंताक—(न०) वृंताक। बैंगन। भंटा। रींगणो।

वंतूळो—(न०) वातचक्र। भतूला। भूतेळो। भतूळियो।

वंथळी—दे० वनथळी।

वंदण—(न०) प्रणाम। वंदन। नमस्कार। धोक। जुहार।

वंदण-माळ—दे० वंदर-माळ।

वंदणा—(न०) जैन साधु को किया जाने वाला नमस्कार। वंदना। वंदन। वनणा।

वंदणीय—दे० वंदनीय।

वंदणो—(क्रि०) वंदन करना। धोक-देणो।

वंदन—दे० वंदण।

वंदनीय—(वि०) वंदन करने योग्य।

वंदरमाळ—(ना०) १. विवाहोत्सव आदि पर पुष्प-पत्तों आदि की घर को सजाने के लिए बनाई हुई माला। २. पुष्प-पत्तों की घर के द्वार पर बाँधी जाने वाली मांगलिक-माला।

वंदावणो—(क्रि०) १. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर भेंट स्वरूप प्राप्त की जाने वाली नारियल आदि मांगलिक वस्तुओं को वंदन करके ग्रहण करना। २ वंदन करवाना। ३. वंदन करके ग्रहण कर-वाना। ४. मांगलिक अवसरों पर किसी विधि को वंदन करके प्रारंभ करना। ५. सगाई आदि का संबंध स्थापित करने के निमित्त नारियल आदि शुभ वस्तुओं को स्वीकृत्यार्थ भेजना। ६. सगाई आदि मांगलिक संबंधों को स्थापित करने के निमित्त कन्या-पक्ष की ओर से भेजे हुए नारियल आदि मांगलिक वस्तु को सम्मान के साथ स्वीकार करना। ७. वंदन करना। ८. गुरु, संत, महात्मा आदि को ससम्मान घर पर लाकर भेंट पूजा करना।

वंदे-मातरम्—(न०) १. भारत के राष्ट्रगीत का नाम। २. एक जय घोष। (अव्य०) १. भारतमाता को वंदन करता हूँ। २. माता को वंदन करता हूँ।

वंदोळी—(ना०) विवाह के पूर्व वर और कन्या का निकाला जाने वाला एक रस्मी जुलूस। विवाह के पहले दिन वर और कन्या का मंदिरों में भेंट धरने व सिलोके बोलने के लिये रात्रि में निकलने वाली एक विशिष्ट शोभा-यात्रा। बानोळी।

वंदोळो—(न०) पाट-मुहूर्त और कंकण-बंधन के बाद विवाह के दिन तक वर तथा कन्या का संबन्धीजनों के यहाँ निमंत्रित होकर भोजनादि करने जाना और सायंकाल भोजन करने के बाद घोड़े पर सवार हो जुलूस के साथ घर लौटाने का उत्सव। बानोळो। बांदोळो।

वंश—(न०) १. पुत्र-पौत्रादिक का क्रम। कुल। २. औलाद। पुत्र-पौत्रादि। ३. बाँस। ४. बांसुरी। मुरली।

वंश-उजाळक—(वि०) वंश को उज्ज्वल करने वाला। कुल-दीपक। (न०) १. पुत्र। २. कुल-वधू।

वंशज—(वि०) वंश में उत्पन्न। (न०) १ पुत्र। २ औलाद। संतान। ३. वारिस। उत्तराधिकारी। वारिसदार।

वंशधर—दे० वंसोधर।

वंश-परंपरा—(ना०) १. वंश-क्रम। २. वंश में चलती आरही रीति। खान-दानी रिवाज।

वंश-भास्कर—(न०) सूर्यमल मिश्रण रचित एक प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ।

वंश-मर्यादा—(ना०) १ वंश के रीति-रिवाज। २. वंश में छोटे-बड़ों के प्रति पालन करने योग्य कर्त्तव्य।

वंशलोचन—दे० वंसलोचन।

वंश-वृक्ष—दे० वंशावळी।

वंश-वृद्धि—(ना०) वंश की वृद्धि।

वंश-वेलि—दे० वंशावळी।

वंशावली—(ना०) वंश के पुरुषों की जन्मानुक्रम से लिखी गई नामावली। वंश-वृक्ष। वंश-तालिका। पीढीनामो। पीढियावळी।

वंशी—(वि०) वंशज। (ना०) बाँसुरी। मुरली। बंसरी।

वंशीधर—(न०) श्रीकृष्ण।

वंशी-वट—(न०) श्रीकृष्ण कालीन वृंदा-वन का वह वट-वृक्ष जहाँ श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।

वंशीवाळो—(न०) श्रीकृष्ण।

वंशोद्धारक—दे० वंस उधारक।

वंस—दे० वंश।

वंश-उजाळक—(वि०) वंश को उज्ज्वल करने वाला। वंश की कीर्ति बढ़ाने वाला। (न०) १. पुत्र। २. पुत्रवधू।

वंस-उजाळण—दे० वंस-उजाळक।

वंस-उधारक—(वि०) वंश का उद्धार करने वाला।

वंस-उधारण—दे० वंस उधारक।

वंसरी—(ना०) बांसुरी। वंसी।

वंसळी—दे० वंसरी।

वंसलोचन—(ना०) वंशलोचन। वंश-कपूर। बाँसकपूर।

वंस-वडाळ—(न०) १. वंश का बडेरा। २. जिसके नाम से वंश विख्यात होता हो। ३. वंश का मूल-पुरुष।

वंस-वधारण—(वि०) वंश को बढ़ाने वाला। (न०) पुत्र-पौत्रादि।

वंस-वधारो—(न०) वंश-वृद्धि।

वंस-विच्छेदक—(वि०) १. वंश का नाश करने वाला। २. वंश को कलंकित करने वाला।

वंस-वेल—(ना०) १. संतान। २. वंशावली।

वंसावळी—दे० वंशावळी।

वंसी—(ना०) बाँसुरी। मुरली।

वंसी-वाळो—(न०) श्रीकृष्ण।

वंसोधर—(वि०) १. वंश को धारण करने वाला। २. वंश की कीर्ति को बढ़ाने वाला। ३. वंश में उत्पन्न। (न०)

१. परिवार। कुल। २. वंशधर। ३. पुत्र।

वा—(ना०) १. वायु। पवन। २. प्राण। जीव। ३. वायु रोग या पीड़ा। ४. पाद। अधोवायु। ५ बास। गली। मुहल्ला। ६. अन्तर। दूरी। जैसे—खेतरवा। ७. बावड़ी। बावड़ी। (अव्य०) १. अथवा। या। कि। २. बस। अलम्। पर्याप्त।

वाइक—दे० वायक।

वाइक-चर—(न०) कान। श्रवणेंद्रिय।

वाई—(ना०) १. वायु। पवन। २. वायु-रोग। ३. अधोवायु। पाद।

वाउग्रो—(वि०) १. वाचाल। बकवादी। २. सन्निपात का रोगी। वातग्रस्त। ३. पागल। बावळो।

वाउळो—दे० बावळो।

वाक—(न०) १. चेप। लस। २. मोच। ३ वाणी। वाचा। ४. जीभ। ५. सरस्वती। ६. वाक्य। ७. आटे का विकास।

वाकई—(अव्य०) सचमुच। वस्तुतः।

वाक-उछाळ—(ना०) बकवाद। (वि०) बकवादी। लबाड़ी।

वाक-उछाळू—(न०) बकवादी। लबाड़ी। मूक-वछाळू।

वाकफियत—(ना०) जानकारी वाकि-फीयत। परिचय। वाकवी।

वाकब—(वि०) १. वाकिफ। जानकार। २. अनुभवी। (ना०) जानकारी।

वाकवी—दे० वाकफियत।

वाकळ—(वि०) कुँए का (पानी)।

वाकळ-पाणी—(न०) कूपजल। कुँए का पानी। जमीन के अन्दर का पानी। भूमि-जल। भुँईजळ।

वाकानवीस—(न०) १. समाचार भेजने-वाला। वाकिग्रानवीस। २. समाचार ले जाने वाला। ३. राजा को खबरें पहुँचाने वाला राज्य कर्मचारी।

वाकारणो—दे० वकारणो।

वाकिफ—(वि०) १. जानकार। २. अनु-भवी। वाकब।

वाको—(न०) १. घटना। वाकाँ। वाकिया। २. वृत्तान्त।

वाक्य—(न०) १. पूर्ण अर्थ बतलाने वाला शब्द समूह। व्याकरण के अनुसार क्रम से लगा हुआ सार्थक शब्द समूह, जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रगट किया जाता है। २ कथन। वचन।

वाक्य-रचना—(ना०) व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य बनाना। (व्याकरण)

वाक्य-विन्यास—(न०) १. पदों को ठीक स्थान पर रखा जाना। २. वाक्य-विचार (व्याकरण)।

वाक्य-विचार—(न०) वाक्य रचना का विवेचन। (व्याकरण)।

वाखड़ी—दे० बाखड़ी।

वाखर—दे० बाखर।

वाखळ—दे० बाखळ।

वाखाण—दे० बखाण।

वाखाणणो—दे० बखाणणो।

वाग—(ना०) १. वाटिका। बगीचा। २. सरस्वती। ३. वाणी। ४. रास। लगाम। मोहरी। बाग।

वागड़—(न०) १ राजस्थान में डूंगरपुर के आसपास का प्रदेश। २. कच्छ, सौराष्ट्र और मारवाड़ के बीच का रेतीला प्रदेश।

वागड़ी—(ना०) १. वागड़ प्रदेश की बोली। (वि०) वागड़ संबंधी।

वागडोर—दे० बागडोर।

वागरणौ—(क्रि०) १. लड़ना। लड़ाई करना। २. जूझना। ३. बजना। ४. चोट लगना। ५. वार होना। ६. वार करना।

वागर—(ना०) १. व्यवस्थित रूप से लगाया हुआ घास का बड़ा ढेर। २. वह स्थान जहाँ घास की अनेक वागरें पास-पास में खड़ी की हुई होती हैं। वारवाड़ो। ३. ऊँट की गर्दन की वह जगह जहाँ मद चूता है। ४. ऊँट की पूंछ के बाल।

वागरण—(ना०) १. वागरी की स्त्री। २. वागरी जाति की स्त्री।

वागरी—(न०) १. एक जाति। २. वागरी जाति का मनुष्य।

वागळ—(ना०) चमगादड़। चमचेड़।

वाग-हीरण—(वि०) गूंगा। मूक। गूंगो।

वागीश—(न०) १. ब्रह्मा। २. बृहस्पति। ३. कवि। ४. वाग्मी। ५. पंडित।

वागीशा—(ना०) सरस्वती।

वागीश्वरी—(ना०) सरस्वती। शारदा।

वागीसरी—दे० वागीश्वरी।

वागुर—(ना०) १. जाल। फंदा। मृग को फंसाने का जाल। वागुरा।

वागेसरी—(ना०) १. वागेश्वरी। वागीश्वरी। सरस्वती। २. वागेश्वरी। सिंहवाहिनी-देवी।

वागो—(न०) १. जामा। २. पोशाक। ३. रंग-बिरंगी पन्नियों (मालीपन्नों) को काट-छांट करके बनाई हुई पोशाक जैसी सज्जा जो तेल और सिंदूर से हनुमान की मूर्ति पर चिपकाई जाती है। ४. बादशाह, राजा या दूल्हे का मध्ययुगीन कलीदार घेर वाला पहनावा। बागो। आंगी। बागो। जामो।

वागोळ—(ना०) जुगाली। ओगाळ।

वागोळणौ—(क्रि०) १. जुगाली करना। २. ओगाळणो। २. बहुत खाना। खाते ही रहना (व्यंग में)। ३. विचारना सोचना। ४. चुगलना।

वागोळी—(न०) गडरियों से लिया जाने वाला टैक्स।

वाग्दान—(न०) १. किसी को कुछ देने का वचन। २. कन्या को गलायत के लड़के के साथ विवाहने का दिया जाने वाला वचन। सगाई। सगपण।

वाघ—(न०) बाघ। व्याघ्र। शेर।

वाघण—(ना०) १. बाघ की मादा। व्याघ्री। शेरनी। २. तलवार।

वाघणी—दे० वाघण।

वाघनख—(न०) १. बाघ का नख। (यह दृष्टि दोष के निवारणार्थ बालक के गले में पहनाया जाता है)। २. हाथ की अंगुलियों में पहना जाने वाला एक शस्त्र।

वाघनखो—दे० वाघनख सं० २.

वाघमार—(वि०) १. बाघ को मारने वाला वीर। २. अपनी बड़ाई करने वाला। ३. जंगली बिल्ली। ४. बिल्ली।

वाघमूत—(न०) १. मनुष्य का पिशाब। मानव मूत्र। २. बाघ का मूत्र।

वाघंवर—(न०) व्याघ्र चर्म। बाघ की खाल।

वाघेलो—(न०) क्षत्रियों के वाघेला वंश का व्यक्ति।

वाघेसरी—(ना०) बाघ के ऊपर सवारी करने वाली देवी। दुर्गा। व्याघ्रेश्वरी। वाघेश्वरी।

वाङ्मय—(न०) साहित्य। (वि०) १. वचन संबंधी। २. जो पठन-पाठन का विषय हो।

वाच—(ना०) १. वाणी। वाचा। २. बोली। ३. वचन। प्रतिज्ञा।

वाचक—(वि०) १. पढ़ने वाला। पढणियो। वांचने वाला। वाचणियो। २. पढ़कर सुनाने वाला। ३. बताने वाला। द्योतक। बोधक। (ना०) १. पंडित या साधुओं की एक उपाधि। २. नाम। संज्ञा। (व्या०)

वाचणो—(क्रि०) पढ़ना। पढणो।

वाचन—(न०) पढ़ने का काम। पठन। २. प्रतिपादन। ३. आवृति।

वाचनालय—(न०) दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक आदि समाचार-पत्र और साहित्य इत्यादि की पत्र-पत्रिकाएँ सार्वजनिक रूप से पढने के लिये रखे जाते हों, वह स्थान। रीडिंग-रूम।

वाच-साच—(न०) १. सत्य वाणी। २. प्रतिज्ञा। वचन। ३. सत्य भाषण। (वि०) सत्य-भाषी।

वाचा—(ना०) १. वचन। प्रतिज्ञा। २. वाणी। बोली। ३. वचन। शब्द।

वाचाछळ देवी—(ना०) एक लोक देवी।

वाचा-बंध—(वि०) प्रतिज्ञा बद्ध। वाचा-बंधियो। वचनबद्ध।

वाचा-बंधियो—प्रतिज्ञा बद्ध। वाचाबंध। वचन-बद्ध।

वाचाळ—(वि०) १. व्यर्थ बोलने वाला। २. अधिक बोलने वाला।

वाच्यार्थ—(न०) शब्द की अभिधाशक्ति से निकलने वाला मूल अर्थ। शब्द का नियत अर्थ।

वाछड़—दे० वाछड।

वाछड़की—दे० वाछड़ी।

वाछड़ियो—दे० वाछड़ो।

वाछड़ी—(ना०) गाय की बछिया। बछड़ी। लौरी। लवारड़ी। वाछरड़ी। टोगड़ी।

वाछड़ू—दे० वाछडो।

वाछड़ो—(न०) गाय का बछड़ा। लैरु। लवार। लवारियो। वाछो। टोगड़ियो।

वाछरड़ी—दे० वाछड़ी।

वाछरड़ो—दे० वाछड़ो।

वाछंट-(ना०)अधोवायु। पाद। दे० वाछांट।

वाछांट—(ना०) १. मकान के अन्दर या छत के नीचे हवा से उड़कर आई हुई वर्षा की बूंदें। २. अधोवायु। पाद। गोज।

वाछी—दे० वाछड़ी।

वाछूट—(ना०) १. अधोवायु। पाद। २. अधोवायु की आवाज। गोज।

वाछूटणो—(क्रि०) १. अधोवायु निकलना। पादणो। २. अवाज के साथ अधोवायु का निकलना। अपानवायु का छूटना।

वाछो—दे० वाछड़ो।

वाज—(न०) १. घोड़ा। वाजि। २. वेग। ३. बल। शक्ति। ४. युद्ध। संग्राम। ५. यज्ञ। ६. घृत। घी। ७. अन्न। ८. बाण का पंख।

वाजरण—(ना०) १ घोड़ी। २ मंगलकार्य। उत्सव। ३. बाजा-गाजा। वाजित्र और इनकी धूम-धाम, जैसे—वीवा-वाजरण।

वाजणू—दे० वाजणो।

वाजणो—(क्रि०) १ बजना। आवाज निकलना (वाद्य का)। २. युद्ध करना। जूझना। ३. अमुक समय होना। बजना (घड़ी मे) ४. पवन का बहना। (वि०) १. प्रसिद्ध। मशहूर। ठावो। २. प्रगट। जाहिर। ३. बजने वाला। (न०) बाजा (वाद्य)।

वाजवी—(वि०) १. वाजिब। योग्य। २. उचित। ३. मिश्रण वाली। जिसमे खोट हो। (सोना चाँदी मे)। ४. जरूरी।

वाजंतर—दे० वाजित्र।

वाजत्र—दे० वाजित्र।

वाजंदो—(वि०) १. प्रसिद्ध। ठावो। वाजणो। (प्रायः निंदा या व्यंग्यार्थ मे)। २. बजने वाला। २. बजाने योग्य।

वाजाळ—(न० ब० व०) घोड़े। (न०) १. घोड़ो की सेना। अश्व सेना। २. अश्वारोही। घुड़सवार। ३. घोड़ा। (वि०) १. घोड़े वाला। २. बाजेवाला। ३. बजने वाला। ४. प्रसिद्ध। प्रख्यात। ५. बजने वाला।

वाजाळो—दे० वाजाळ।

वाजित—दे० वाजित्र।

वाजित्र—(न०) वाद्य। बाजा। बाजो। बाजित्र। वाद्ययन्त्र। तार वाद्य।

वाजिब-(वि०) १. उचित। २. ठीक। ३. जरूरी।

वाजियो—(न०) १. कुँए, नहर आदि द्वारा सिंचाई करके उत्पन्न किये हुये (गेहूं)। २. 'वाजिया' किस्म का (गेहूं)।

वाजिया-गेहूं—(न०व०व०) १. एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ। २. गेहूं की एक किस्म।

वाजित्र—(न०) वादित्र। बाजा। वाद्य। वाजंतर। वाजंत्र।

वाजिंद—(न०) १. घोड़ा। २. वाजीन्द्र। बढ़िया घोड़ा। ३. एक कवि का नाम।

वाजिंदो—दे० वाजंदो।

वाजी—(न०) १. घोड़ा। २. बाण। ३. हवि। ४. अडूसा।

वाजीकरण—(न०) वीर्यवर्धक औषध प्रयोग। (वि०) वीर्यवर्धक। संभोग मे घोड़े के समान शक्ति वाली औषध-प्रक्रिया।

वाजीद्र—(न०) घोड़ा।

वाजो—(न०) १. बाजा। २. वाद्य।

वाट—(न०) १. मार्ग। मरग। मारग। रास्ता। रस्तो। २. पगडंडी। डाँडी। ३. पहिये की लकीर। चीलो। ४. प्रतीक्षा। इन्तजार। राह। ५. रुई मे बल देकर बनाई हुई दीपक की बत्ती। बाती। ६. बाट। बटखरा। तौल। ७ जाल वृक्ष की मंजरी। ८. परम्परा।

वाटकी—(ना०) कटोरी। प्याली। बटकी।

वाटको—(न०) कटोरा। प्याला। बटको।

वाट-जोवणी—(मुहा०) प्रतीक्षा करना। राह देखना। खोटी-होणो।

वाट-जोवणो—दे० वाट जोवणी।

वाटड़लो—दे० वाटड़ी।

वाटड़लो—(न०) मार्ग। रास्ता। बाट।

वाटड़ी—(ना०) १. प्रतीक्षा। २. मार्ग। वाट। ३. पद मार्ग। पगडंडी। दे० माटी सं. १।

वाटणो—(क्रि०) १. सिल पर पीसना। लसोटना। २. चूर्ण करना। ३. ग्राहकी होना। परचूनी माल की बिक्री होना। माल बेच कर कीमत प्राप्त करना।

वाटदह—(न०) विध्वंस। नाश। दहवट।

वाट-भूलो—(वि०) १. पथभ्रष्ट। २. भ्रमित। ३. भूला हुआ।

वाट-वळ—दे० राहदारी।

वाट-वहणियो—(न०) बटाऊ। पथिक। पथी। यात्री। बटाऊ। वाटेरु।

वाट-वाढणो—(मुहा०) मार्ग काटना। मार्ग तय करना। चलते रहना।

वाटिका—(न०) १. बगीचा। २. छोटा बगीचा। ३. वाड़ी। ४. कटोरी। वाटकी।

वाटी—(ना०) १. चक्की के चारों ओर का वह गोलाकार भाग जिसमें आटा गिरता है। वाटो। गरंड। २. प्रदेश सूचक एक प्रत्यय, जैसे—शेखावाटी, ईंदावाटी, तोरावाटी इत्यादि। दे० वाट। सं. ३, १४, ५.

वाटेड़—दे० वाटेरू।

वाटेरू—(न०) पथिक। यात्री। मुसाफिर। भारगू। बटाऊ।

वाटो—(न०) १. मिट्टी, चूने आदि की बनाई हुई बड़ी वाटी। दे० वाटी सं. १।

वाड़—(ना०) १. खेत, बगीचे आदि की सुरक्षा के लिए कांटों वाली टहनियों (प्रायः छोटी बोरड़ी) का बनाया हुआ घेरा। २. घेरा। अहाता। ३. कनात। ४. ईख। गन्ना। सेलड़ी। ५. ईख का खेत।

वाड़-कांटो—(न०) १. छोटी से छोटी वस्तु। नाकुछ चीज। वाड़ और कांटा। (वि०) परिचित-अपरिचित कोई आयो-अजाण्यो

वाड़णो—(क्रि०) १. प्रवेश करना। घुसाना। २. धँसाना। वाड़णो।

वाड़लो—दे० वाड़लो।

वाड़लो—(न०) स्त्रियों का एक कंठाभूषण।

वाड़व—(न०) १. वंशावली लिखने बांचने का धंधा करने वाली जाति व उस जाति का व्यक्ति। २. ब्राह्मण। ३. वाड़वाग्नि। ४. घोड़ी। ५. बिजली। दामिनी।

वाड़वी—(ना०) १. घोड़ी। अश्वी। २. ब्राह्मण स्त्री। ब्राह्मणी। बामणी।

वाड़वो—(न०) १. वंशावली लिखने वाली जाति का पुरुष। वहुवो। भाट। २. ब्राह्मण।

वाड़ा-बंधी—(ना०) १. अलग-अलग पक्षों में बँधाना। २. पक्षा-पक्षी। ३. समाज, जाति या पक्ष के रूप में गठबंधन। तड़बंधी। धड़ाबंधी।

वाड़ियो—(न०) १. शौच-शुद्धि का जल-पात्र। लोटियो। बाहरलो लोटो। २. स्त्रियों के पाखाना फिरने का बाड़ा। ३. छोटा बाड़ा। ४. खजूर भरने का सावड़ी का थैला। ५ खजूर भरा हुआ टोकरा।

वाड़ी—(ना०) १. अनेक परिवारों वाला ऐसा मोहल्ला जिसका निकास-प्रवेश द्वार एक ही हो। दरवाजा बंद मोहल्ला। बाड़ी। २. कुटुम्ब। परिवार। बाड़ी। ३. घर। ४. फुलवाड़ी। वाटिका। ५. वह खेत जिसमें साग-सब्जी, फल-फूल होते हो। साग-सब्जी वाला खेत। ६. सींचा जाने वाला खेत। जाव। ७. नित्य उपयोग में लिया जाने वाला घी या तेल का छोटा पात्र। रोटी चुपड़ने का रसोड़े का घृत-पात्र। घीलोड़ी। ८. घी परोसने का पात्र। ९. कनात। बाड़।

वाड़ी-गुआड़ी—(ना०) १. बाल-बच्चों तथा भाई-बन्धुओं से भरा गृहस्थी। २. बड़े कुटुम्ब परिवार वाला घर।

वाड़ी-ग्वाड़ी—दे० वाड़ी-गुआड़ी।

वाड़ी-विस्तार—(न०) कुटुम्ब-कबीला।

वाडेली—दे० वाढाळी।

वाड़ो—(न०) १. बाड़ से घिरा हुआ स्थान। २. घर के पीछे की खुली जगह। ३. बकरा-बकरी गाय-भैंस आदि पशुओं को रखने बांधने की जगह। बाड़ो। नोहरो। ४. पक्ष। पार्टी। तड़। ५. किसी एक ही सम्प्रदाय में अपने-अपने गुरुओं का अलग-अलग शिष्य-समुदाय। ६. गाँव के बाहर बाड़ से घेरा हुआ वह स्थान जहाँ स्त्री वर्ग शौचनिवृत्ति को जाता है। ७. गाँव। जैसे—मलरा-रो-वाड़ो, पाँता-रो-बाड़ो। इत्यादि।

वाड़ोटियो—दे० वाड़ो सं. १, २, ३, ६।

वाढ—(न०) १. बाढ़ने (काटने) की क्रिया या भाव। २. बाढ़ने का चिन्ह। ३. टुकड़ा। ४. पेट की आंतों में होने वाली तीक्ष्ण पीड़ा। ५. धार। शस्त्र की धार। ६. मारकाट। लड़ाई। प्रहार। (ना०) १. शत्रुता। २. पानी की बाढ़। पूर। रेल।

वाढ-उतरणो—(मुहा०) तलवार के घाट उतरना।

वाढणो—(क्रि०) काटना। कापणो। चीरणो।

वाढाऊ—(वि०) १. खड्ग प्रहार करने वाला। २. खड्गधारी। ३. काटने योग्य। ४. काटने वाला। (ना०) १. तलवार। २. कटारी।

वाढाणी—दे० वाढाळी।

वाढाळ—(ना०) १. तलवार। २. कटारी।

वाढाळ-धर—(वि०) तलवार धारण करने वाला। खड्गधारी।

वाढाळी—(ना०) १. कटारी। २. तलवार। तरवार।

वाढाळो—(वि०) १. खड्गधारी। शस्त्रधारी। २. शस्त्र चलाने वाला। ३. शस्त्र चलाने में कुशल। ४. पराक्रमी। वीर। जोरावर। (न०) १. युद्ध। लड़ाई। २. संहार। नाश।

वाढियोड़ो—(भू० कृ०) कटा हुआ।

वाण—(न०) १. मूंज। २. मूंज की रस्सी। ३. खाट बुनने की रस्सी। बाण। ४. विमान। वाहन। (ना०) १ वाणी। २. सरस्वती। ३. भाषा। ४. बैलगाड़ी। ल्हाण। ५. चारण। ६. बनियापना। ७. मर्यादा। ८. शक्ल। ९. स्वभाव। प्रकृति।

वाणक—(ना०) १. आकृति। रूप। बानक। २. मुँह। ३. वेश। भेस। बानक।

वाणिज—(न०) १. वणिक। २. वाणिज्य।

वाणिज्य—(न०) व्यापार। वैपार।

वाणियो—(न०) वणिक। बनिया।

वाणी—(ना०) १. सरस्वती। २. वाक्-शक्ति। ३. मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। ४. बोली। ५. ब्रह्मज्ञानी संतों के रचे हुए आध्यात्म-पद। ६. जीभ। ७. सुर। स्वर।

वाणीकी—(वि०) १. वाणिज्य संबंधी। २. वणिक संबंधी। (ना०) १. बेलोटी, सिद्धो, चिणायकों आदि पाठ, तथा पट्टी-पहाड़े, जोड़, (योग) से लगाकर कटमे-ब्याज तक हिसाबी-गुर इत्यादि एवं लेखा-जोखा (गणित) और बही-खाता आदि लिखने की पढ़ाई। वाणीकी-भणत। २. वणिक लिपि। बही-खातों की लिपि। महाजनी। ३. मारवाड़ी लिपि।

वाणीकी-पोसाळ—*(ना०)* नित्य व्यवहार के शिक्षण की लोकोपयोगी पाठशाला। पट्टी-पहाड़े, बही खाते लिखने और ब्याज आदि सभी प्रकार की गणित एव गुर आदि सिखाये जाने की पाठशाला। वाणीकी पाठशाला।

वाणीकी-भणत—दे० वाणीको *(ना०)* सख्या १, २, ३।

वाणो—*(न०)* १. कपडे की बुनावट का वह धागा जो आड़े बल भरा जाता है। कपडे की चौड़ाई का धागा। 'ताणो' का उलटा शब्द। २. कपड़े की चौड़ाई। ३. पाणी के घड़े अथवा घास आदि से भरी हुई बैलगाड़ी। गाडा। गाडो।

वात—*(ना०)* १. वार्तालाप। बातचीत। २. कथन। वचन। ३. प्रसंग। चर्चा। ४. अफवाह। किंवदती। ५. हकीकत। ६. खबर। समाचार। ७. वृतान्त। ८. परामर्श। सलाह। ६. कहानी। १०. आख्यानक। ११. उल्लेख। १२. वर्णन। १३. भाव। आशय। १४. तारीफ। १५. कारण। १६. विषय। १७. रहस्य। १८. वायु। हवा। १६. वायु रोग। २०. स्थिति।

वातकार—दे० वातगर।

वातकुंभ—*(न०)* हाथी के कुंभस्थल के सामने का (बिंदी के नीचे का) भाग।

वात-खोलणी—*(मुहा०)* भेद खोलना।

वातगर—*(न०)*१ कहानी कहने में निष्णात व्यक्ति। बात-पोश। २. बात-चीत। *(वि०)* बातें करने मे कुशल। बातें करने वाला।

वातगरो—*(वि०)* बातो का रसिक। दे० बातगर।

वात-चीत—*(ना०)* १ वार्तालाप। संभाषण। २. गप्पें। ३ विचार-विमर्श।

वातड़ली—*(ना०)* बात। (लालित्यसूचक)।

वातड़ी—दे० वातड़ली।

वातण—दे० वातेरण।

वातप—*(न०)* हरिण। मृग। अगलो।

वात-पोस—*(न०)* १. बात अर्थात् कहानी कहने वाला विशेषज्ञ। बात-पोश। मनोरंजन के लिए कहानियाँ कहने वाला। वातगर। २. मनोरजन की कहानियाँ कहने वाला। ३. राजा, ठाकुरो के खाली समय में कहानियाँ सुभाषित आदि सुनाकर मन बहलाने वाला व्यक्ति।

वातमांडणो—*(मुहा०)* कहानी कहना शुरु करना।

वात राखणी—*(मुहा०)* प्रतिष्ठा बचाना।

वात लड़ी—दे० वातड़ली।

वात वणीगो—*(वि०)* १. बातें बनाने वाला। गप्पी। २. निकम्मा।

वात-विगत—*(ना०)* १. हाल-हकीकत। २. समाचार। ३. बातचीत।

वातायण—*(न०)* १. झरोखा। वातायन। २. बारी। खिड़की। ३. हवा बारी।

वातायु—*(न०)* हरिण। हिरणियो। मिरगो।

वाताळ—*(वि०)* १. बातें करने वाला। बहुत या निरर्थक बातें करने वाला। बातूनी। २. बात रसिक। वाताळियो। वाताळू। वातोकड़।

वाताळग—दे० वाताळ।

वाताळगो—*(न०)* १. बातचीत। वार्तालाप। २. मनोरंजन। मनोरंजन की बातचीत। ३. सलाह-मशविरा। परामर्श। ४. चर्चा। जिक्र।

वाताळण—(वि०) बातें करने वाली। बहुत बातें करने वाली। बाताळी। बातण। बातेरण।

वाताळियो—दे० वाताळ।

वाताळी—दे० वाताळगो। दे० वाताळण।

वाताळू—दे० वाताळ।

वातावरण—(न०) १. पृथ्वी को घेरा हुआ वायु का आवरण। २. आसपास की परिस्थिति जिसका जीवन या अन्य बातो पर प्रभाव पड़ता हो। ३. आस-पास के नैतिक या मानसिक संयोग। परिस्थिति।

वातियो—(न०) १. घोड़ी की जननेन्द्री। घोड़ी की योनि। २. घोड़े की मूत्रेंद्रिय।

वाती—(ना०) १. बत्ती। २. कपड़े का दवा-सिंचित टुकड़ा जो घाव में भरा जाता है।

वातुल—(वि०) १. वायु वाला। २. जिसकी बुद्धि वायु के प्रकोप के कारण अस्थिर रहती हो। वातग्रसित दिमाग वाला। बावळो। ३. वातग्रसित (शरीर)। वायू रोग वाला।

वातेरण—(ना०) १. बातपोश स्त्री। २. वाचाल स्त्री। (वि०) बातें करने वाली। बाताळण।

वातोकड़—दे० वाताळ।

वातोकड़ी—दे० वाताळण।

वातोकड़ो—दे० वातोकड़।

वातोड़ियो—(वि०) १. बातूनी। २. बकवादी। वातोकड़।

वात्सल्य—(न०) १. बड़ों का छोटों के प्रति प्रेम। २. अपनी संतान के प्रति माता-पिता का स्नेह। प्रेम। ३. स्नेह। प्रेम। ४. ममता।

वात्स्यायन—(न०) १. न्यायसूत्रों के भाष्यकार एक ऋषि। २. काम-सूत्र के रचयिता एक विद्वान् पंडित।

वाद—(न०) १. कलह। २. युद्ध। ३. तकरार। बोल-चाल। विवाद। चढ़ा-चढ़ी। ४. उक्ति। ५. दलील। तर्क। ६ बहस। तर्क-वितर्क। ७. निंदा। ८. चर्चा। ९. शास्त्रार्थ। १० तत्वज्ञों द्वारा निश्चित किया हुआ कोई मत या सिद्धान्त। जैसे—सांख्यवाद। अद्वैत-वाद। ११. हठ। जिद। १२. मुकदमा।

वादक—(वि०) १. वाद्य बजाने वाला। २. वाद-विवाद करने वाला।

वादण—(ना०) वादी की स्त्री।

वादणो—(क्रि०) १. तकरार करना। बोल-चाल करना। झगड़ना। २. बहस करना। जिद करना। ३. होड़ करना। ४. युद्ध करना। ५. शर्त लगाना।

वादन—(न०) बजाने का उपकरण। वाद्य। बाजा।

वाद-प्रतिवाद—(न०) १. उत्तर-प्रत्युत्तर। बहस। २. खंडन-मंडन। ३. वाद-विवाद।

वाद मांडणो—(मुहा०) १. लड़ाई करना। २. जबान करना। विवाद करना।

वादळ—(न०) बादल। मेघ।

वादळवाई—(ना०) १. बादलों का अधिक समय तक छाया रहना (खास कर ठंडी ऋतु में)। २. बादलों का होना। ३. मेघाच्छन्न।

वादळी—(ना०) १. बदली। छोटा बादल। २. एक छोटा जल-पात्र। (वि०) बादल जैसे रंग का।

वांदळो—(न०) १. बादल। मेघ। २. यात्रा में साथ रखने का असद का बना एक

जल-पात्र । ३. जरकशी । गोटा । किनारी । वादला । ४. सोने या चांदी का चमकीला चिपटा तार ।

वाद-विवाद—(न०) १. चर्चा । बहस । २ तर्क-वितर्क । ३. सवाल-जवाब । ४. झगड़ा । तकरार ।

वादंत्र—(न०) वाद्य-यंत्र । बाजा ।

वादानुवाद—दे० वाद प्रतिवाद ।

वादित्र—(न०) वाद्य । बाजा ।

वादी—(न०) १. न्यायालय में मुकदमा प्रस्तुत करने वाला मुद्दई । फरियादी । २. एक नट जाति जो रस्सी पर चलने-नाचने, बांसों के सहारे चलने-दौड़ने आदि के कौशल और विस्मयपूर्ण कौतुक दिखाने का काम करती है । बादीगर । ३. इस जाति का व्यक्ति । बादीगर । ४. वायु-रोग । वात-विकार । ५ वाद-संबंधी बोलनेवाला । वक्ता । ६. एक प्रत्यय, जैसे—सत्यवादी । ७ विचारार्थ विषय उपस्थित करने वाला ।

वादीगर—(न०) १. एक नट जाति । दे० वादी सं० २. ३. वादी । ३. बाजीगर ।

वादीलो—(न०) १. गीतों के रसिक नायक का एक विशेषण । स्वाभिमानी रसिक नायक । (वि०) १. वात-रोग ग्रसित । २. वाद करने वाला । ३. वाद विजयी । ४. मस्त । मौजी । ५. छैल । रंगीला । ६. हठीला । जिद्दी । ७. वाचाल । बकवादी । ८. पागल । गहलो ।

वादो—दे० वायदो ।

वादो-वाद—(न०) १. स्पर्धा । प्रतियोगिता । २. होड़ । दे० वाद-विवाद । (अव्य०) वाद-विवाद में । स्पर्धा में ।

वाद्य—(न०) बाजा ।

वाध—(वि०) १. अधिक । बहुत । २. वृद्धि ।

वाधड़ी—दे० वाधरी ।

वाधणो—(क्रि०) १. बढ़ना । २. बढ़ाना । ३. रस्सा । रांढू ।

वाधर—दे० वाधरी ।

वाधरी—(ना०) चमड़े की लंबी पट्टी या रस्सी । वांधर ।

वाधी—(ना०) १. बोहरे (ऋणद) और आसामी (ऋणी-कृषक) के बीच की एक प्रथा जिसमें कृषक को खाने अथवा बोने के लिए दिये गये मोटे अनाज (बाजरी, जुआर आदि) के बदले में गेहूं की फसल पर कृषक से ड्योढा या दुगुना (जैसी शर्त) नये गेहूं लिया जाता है । २. वाधी के रूप में लिया जाने वाला अनाज । ३. चमड़े की रस्सी ।

वाधू—(वि०) अधिक । ज्यादा ।

वाधेत—दे० बाढेत ।

वाधेपो—(न०) १. वंश-वृद्धि । संतान-वृद्धि । २. आबादी । ३. वृद्धि । बढ़ापन । आधिक्य । ४. समृद्धि ।

वाधो—(न०) १. वृद्धि । २. लाभ । नफा । दे० वाधी सं० १, २.

वाधो-घाटो—(न०) १. लाभ और हानि । हानि-लाभ । २. उन्नति-अवनति । ३. ३. बढ़ना-घटना । घाटो-वाधो ।

वाधोतर—दे० वधोतर ।

वान—(ना०) १. रत्न । मणि । जवाहर । २. कांति । शोभा । ३. रूप । वर्ण । ४. शरीर-सौष्ठव । ५. बनाव-सिंगार । ६. सज-धज । ७. सजावट । ८. यश । कीर्ति । ९. ब्याहे जाने वाले वर-कन्या को दुलहा दुलहिन के रूप में प्रतिष्ठित

करने का उत्सव। १०. विवाह के पूर्व वर तथा कन्या के तेल-पीठी चढ़ाने (वाने बिठाने) के मुहूर्त्त के दिन किया जाने वाला मांगलिक आचार। पाटोत्सव। ११. दुलहा, दुलहिन को सगे-सबंधी और मित्रों इत्यादि की ओर से भेजी जाने वाली मिष्टान्न आदि की भेंट। सौगात। वायन। १२. एक प्रत्यय जो संज्ञाओं के अन्त में लग कर उस शब्द का विशेषण रूप बनाता है जैसे धनवान, भाग्यवान, बलवान आदि। १३. वर्ण। रंग। १४. घना-जंगल। *(वि०)* वन संबंधी। वन का।

वानक—दे० वाणक।

वानगी—*(ना०)* १. नमूना। २. कोई अद्भुत वस्तु। ३. रंग-रूप। ४. आदर्श।

वानप्रस्थ—*(वि०)* घर-बार छोड़कर वन में रहने संबंधी जीवन का तीसरा विभाग।

वान-प्रस्थाश्रम—*(न०)* गृहस्थाश्रम के बाद का आश्रम। तीसरा आश्रम। वन में रह कर संन्यास की तैयारी करने का आश्रम। भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसमें वन में रहने का विधान किया गया है।

वान-भरणो—*(मुहा०)* दूल्हा-दुल्हिन के लिये मिष्टान्न आदि की भेंट भेजना।

वानर-माळ—दे० वदरण-माळ।

वानरी—दे० वादरी।

वानरो—दे० वांदरो।

वाना—*(न०ब०व०)* १. जिनके संबंध में कुछ कहा जाय। विषय। २. प्रसंग। चर्चाएं। ३. काम। बातें। ४. समस्याएं। ५. व्यवहार। ६. कामनाएं। इच्छाएं। ७. वस्तुएं। ८. प्रकार। ९. अनेक प्रकार। १०. उपाय। ११. खातिर। सम्मान। १२. रत्न। नगीनो।

वाना-जडित—*(वि०)* रत्न-जड़ित। जड़ाऊ।

वानायु—*(न०)* एक देश का नाम।

वानायुज—*(न०)* १. घोड़ा। २. वानायु देश का घोड़ा।

वानी—*(ना०)* राख। भस्म। ठाडी।

वानेत—*(न०)* १. मुखिया। २. वीर पुरुष।

वानै—*(सर्व०)* उनको। उणांनै। वणांनै।

वानो—*(न०)* १. लड़का या लड़की के पाणिग्रहण से पूर्व विवाह स्थापन की विधि के प्रारम्भिक मुहूर्त्त का उत्सव। विवाह का मंगलारंभ। २. भेष। वेश। पहनावा। ३. वस्तु। ४. बात। काम। ५. उपकार। अहसान। ६. उपाय। प्रयत्न। ७. महत्व। ८. महिमा।

वानो वधारणो—*(मुहा०)* १. महिमा बढ़ाना। २. प्रशंसा करना। ३. सम्मान करना।

वापरणो—*(क्रि०)* १. काम में लेना। उपयोग में लेना। २. खर्च करना।

वापरत—*(ना०)* १. वापरने का काम। उपयोग। वपरास। २. खर्च। उठाव। वपरास। ३. आवश्यकता।

वापरास—दे० वपरास।

वापस—*(वि०)* लौट कर अपने स्थान पर आया हुआ। *(अव्य०)* पीछा। पाछो।

वापी—*(ना०)* बावली। वापिका। बावड़ी। वाव।

वाम—*(ना०)* स्त्री। वामा। लुगाई। *(वि०)* १. बांया। दाहिने का उलटा।

डावो। २. सुन्दर। ३. उलटा। प्रतिकूल। ४. अधम। नीच। हलकट।

वामण—दे० वामन।

वामण-डंड—(न०) वामन-दण्ड।

वामण-विसन—(न०) १. विष्णु का वामन अवतार। २. महाराणा कुंभा का विरुद।

वामणो—(वि०) १. बौना। ठिगना। ठींगणो। २. बांया। ३. बांये हाथ से काम करने के अभ्यास वाला। खावलो। खावळियो।

वामन—(न०) महर्षि कश्यप और उनकी पत्नी अदिति के पुत्र विष्णु का पाँचवां अवतार। वामन अवतार। (वि०) बौना। ठींगणो।

वामन-पुराण—(न०) अठारह पुराण ग्रंथों में का एक।

वाम-मार्ग—(न०) पंचमकारों पर आधारित एक तांत्रिक मत। वाम-पंथ।

वामस—दे० वामच।

वामा—(ना०) १. नारी। स्त्री। २. सुंदर स्त्री। ३. लक्ष्मी। ४. सरस्वती। ५. शृगाली। गीदड़ी। ६. गधी। ७. घोड़ी। ८. पत्नी।

वामाचार—(न०) १. विरुद्ध आचरण। २. वाम-पंथ। वाम-मार्ग।

वामी—(वि०) बांयी। डावी। (ना०) १. गीदड़ी। २. गधी। ३. घोड़ी। ४. हथिनी।

वामी-पाघ—(ना०) १. बांए हाथ से बाँधी जाने वाली पगड़ी। २. राठौड़ राजाओं की पगड़ी।

वामी-बंध—(न०) १. बाँयें पेच की पगड़ी बांधने वाला मारवाड़ का राठौड़ क्षत्री। २. मारवाड़ के राठौड़ शासकों का एक काव्यगत नाम। खांगीबंध। ३. राठौड़ क्षत्री। (वि०) बाँयें पेच की पगड़ी या साफा बांधने वाला।

वागीबंध-खिड़कियां-पाघ—(ना०) जोधपुर (मारवाड़) के राजाओं के सिर पर धारण करने की एक प्रकार की बाँयें पेच की (बंधी-बंधाई) पगड़ी।

वामो—(वि०) १. बांया। डावो। २. टेढ़ा। ३. प्रतिकूल। ४. उलटा। ऊंधो।

वाय—(ना०) १. वायु। पवन। वायरो। २. वायु-रोग। वातपीड़ा। ३. अधोवायु। पाद।

वायक—(न०) १. वचन। प्रतिज्ञा। २. वचन। बोल। उच्चार। ३. वाक्य।

वायका—(ना०) १. लोकवाणी। २. लोकवाणी पर प्रसारित समाचार। उड़ती खबर। अफवाह। बात। ३. वचन। बोल। ४. भविष्य कथन। ५. वाणी। बोली।

वाय-गोळो—(न०) पेट का एक वायु-रोग। वायुगोला।

वायड़ाई—(ना०) १. असंगत बातें। २. वायड़ापणो। ३. हठ। जिद। ४. मूर्खाई। ५. पागलपन।

वायड़ो—(वि०) १. बहुत बोलने वाला। वाचाल। २. असंगत बातें करने वाला। ३. हठो। हठीलो। जिद्दी। ४. मूर्ख। ५. वात-ग्रस्त। बेंडो। ६. पेट में वायु उत्पन्न करे वैसा। ७. पागल।

वायणी—(ना०) वेण्या। पातर।

वायदो—(न०) १. प्रतिज्ञा। २. अवधि। मुद्दत। ३. अमुक मुद्दत पर अमुक भाव

करने का उत्सव। १०. विवाह के पूर्व वर तथा कन्या के तेल-पीठी चढ़ाने (वाने बिठाने) के मुहूर्त्त के दिन किया जाने वाला मांगलिक आचार। पाटोत्सव। ११. दुलहा, दुलहिन को सगे-संबंधी और मित्रों इत्यादि की ओर से भेजी जाने वाली मिष्टान्न आदि की भेंट। सौगात। वायन। १२. एक प्रत्यय जो संज्ञाओं के अन्त में लग कर उस शब्द का विशेषण रूप बनाता है जैसे धनवान, भाग्यवान, बलवान आदि। १३. वर्ण। रंग। १४. घना-जंगल। *(वि०)* वन संबंधी। वन का।

वानक—दे० वाणक।

वानगी—*(ना०)* १. नमूना। २. कोई अद्भुत वस्तु। ३. रंग-रूप। ४. आदर्श।

वानप्रस्थ—*(वि०)* घर-बार छोड़कर वन में रहने संबंधी जीवन का तीसरा विभाग।

वान-प्रस्थाश्रम—*(न०)* गृहस्थाश्रम के बाद का आश्रम। तीसरा आश्रम। वन में रह कर सन्यास की तैयारी करने का आश्रम। भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसमें वन में रहने का विधान किया गया है।

वान-भरणौ—*(मुहा०)* दूल्हा-दुल्हिन के लिये मिष्टान्न आदि की भेंट भेजना।

वानर-माळ—दे० वदण-माळ।

वानरी—दे० वादरी।

वानरौ—दे० वांदरो।

वाना—*(न०ब०व०)* १. जिनके संबंध में कुछ कहा जाय। विषय। २. प्रसंग। घटनाएं। ३. काम। बातें। ४. समस्याएं। ५. व्यवहार। ६. कामनाएं। इच्छाएं। ७. वस्तुएं। ८. प्रकार। ९. अनेक प्रकार। १०. उपाय। ११. खातिर। सम्मान। १२. रत्न। नगीनो।

वाना-जड़ित — *(वि०)* रत्न-जड़ित। जड़ाऊ।

वानायु—*(न०)* एक देश का नाम।

वानायुज—*(न०)* १. घोड़ा। २. वानायु देश का घोड़ा।

वानी—*(ना०)* राख। भस्म। ठाडी।

वानेत—*(न०)* १. मुखिया। २. वीर पुरुष।

वानै—*(सर्व०)* उनको। उणांनै। वणांनै।

वानौ—*(न०)* १. लड़का या लड़की के पाणिग्रहण से पूर्व विवाह स्थापन की विधि के प्रारम्भिक मुहूर्त्त का उत्सव। विवाह का मंगलारंभ। २. भेष। वेश। पहनावा। ३. वस्तु। ४. बात। काम। ५. उपकार। अहसान। ६. उपाय। प्रयत्न। ७. महत्व। ८. महिमा।

वानौ वधारणौ—*(मुहा०)* १. महिमा बढ़ाना। २. प्रशंसा करना। ३. सम्मान करना।

वापरणौ—*(क्रि०)* १. काम में लेना। उपयोग में लेना। २. खर्च करना।

वापरत—*(ना०)* १. वापरने का काम। उपयोग। वपरास। २. खर्च। उठाव। वपरास। ३. आवश्यकता।

वापरास—दे० वपरास।

वापस—*(वि०)* लौट कर अपने स्थान पर आया हुआ। *(अव्य०)* पीछा। पाछो।

वापी—*(ना०)* बावली। वापिका। बावड़ी। बाव।

वाम—*(ना०)* स्त्री। वामा। लुगाई। *(वि०)* १. बाया। दाहिने का उलटा।

डावो । २. सुन्दर । ३. उलटा । प्रतिकूल । ४. अधम । नीच । हळकट ।

वामण—दे० वामन ।

वामण-डंड—(न०) वामन-दण्ड ।

वामण-विसन—(न०) १. विष्णु का वामन अवतार । २. महाराणा कुंभा का विरुद ।

वामणो—(वि०)१. बौना । ठिगना । ठींगणो । २. बांया । ३. बांये हाथ से काम करने के अभ्यास वाला । खावलो । खाबळियो ।

वामन—(न०) महर्षि कश्यप और उनकी पत्नी अदिति के पुत्र विष्णु का पाँचवाँ अवतार । वामन अवतार । (वि०) बौना । ठींगणो ।

वामन-पुराण—(न०) अठारह पुराण ग्रंथों में का एक ।

वाम-मार्ग—(न०) पंचमकारों पर आधारित एक तांत्रिक मत । वाम-पंथ ।

वामरा—दे० वामथ ।

वामा—(ना०) १. नारी । स्त्री । २. सुंदर स्त्री । ३. लक्ष्मी । ४. सरस्वती । ५. शृगाली । गीदड़ी । ६. गधी । ७. घोड़ी । ८. पत्नी ।

वामाचार—(न०) १. विरुद्ध आचरण । २. वाम-पंथ । वाम-मार्ग ।

वामी—(वि०) बांयी । डावी । (ना०) १. गीदड़ी । २. गधी । ३. घोड़ी । ४. हथिनी ।

वामी-पाघ—(ना०) १. बाँएं हाथ से बांधी जाने वाली पगड़ी । २. राठौड़ राजाओं की पगड़ी ।

वामी-बंध—(न०) १. बांयें पेच की पगड़ी बांधने वाला मारवाड़ का राठौड़ क्षत्री । २. मारवाड़ के राठौड़ शासकों का एक काव्यगत नाम । खांगीबंध । ३. राठौड़ क्षत्री । (वि०) बांयें पेच की पगड़ी या साफा बांधने वाला ।

वागीबंध-खिड़किया-पाघ—(ना०) जोधपुर (मारवाड़) के राजाओं के सिर पर धारण करने की एक प्रकार की बांयें पेच की (बंधी-बंधाई) पगड़ी ।

वामो—(वि०) १. बांया । डावो । २. टेढ़ा । ३. प्रतिकूल । ४. उलटा । ऊंधो ।

वाय—(ना०) १. वायु । पवन । वायरो । २. वायु-रोग । वातपीड़ा । ३. अधोवायु । पाद ।

वायक—(न०) १. वचन । प्रतिज्ञा । २. वचन । बोल । उच्चार । ३. वाक्य ।

वायका—(ना०) १. लोकवाणी । २. लोकवाणी पर प्रसारित समाचार । उड़ती खबर । अफवाह । बात । ३. वचन । बोल । ४. भविष्य कथन । ५. वाणी । बोली ।

वाय-गोळो—(न०) पेट का एक वायु-रोग । वायुगोला ।

वायड़ाई—(ना०) १. असंगत बातें । २. वायड़ापणो । ३. हठ । जिद । ४. मूर्खाई । ५. पागलपन ।

वायड़ो—(वि०) १. बहुत बोलने वाला । वाचाल । २. असंगत बातें करने वाला । ३. हठी । हठीलो । जिद्दी । ४. मूर्ख । ५. वात-ग्रस्त । बंडो । ६. पेट में वायु उत्पन्न करे वैसा । ७. पागल ।

वायणी—(ना०) वेश्या । पातर ।

वायदो—(न०) १. प्रतिज्ञा । २. अवधि । मुद्दत । ३. अमुक मुद्दत पर अमुक माप

से माल लेने-देने (खरीदने-बेचने) का सट्टे का व्यापार। वायदे का सौदा।

वायन—दे० वान स० १० और ११.

वायनंद—*(न०)* हनुमान।

वाय-भखो—*(वि०)* १. वायु परमाणुओं द्वारा दूषित (भोजन, फल इत्यादि)। २. वायु भक्षण करने वाला (सर्प)।

वायरो—*(न०)* १. पवन। वायु। २. वातावरण।

वायल—*(न०)* १. एक वस्त्र।

वायविडंग—*(ना०)* १. एक काष्ठ औषधि।

वायव्य—*(ना०)* उत्तर और पश्चिम के बीच की दिशा। *(वि०)* वायु संबंधी।

वायस—*(न०)* १. कौआ। कागलो। २. अगर का वृक्ष। ३. तारपीन।

वायस-सात्रव—*(न०)* उल्लू। वायसारी। वायस-अरि। घुग्घु। घूघू।

वाय-सरणो—*(मुहा०)* अधो वायु का आवाज के साथ निकलना। पाद आना। पादणो।

वायु—*(न०)* १. पवन। वायु। २. पेट का वायु-रोग। वायु-गोळो। ३. पंच भूतों में का एक। ४. वायु-पीड़ा। आवी।

वायु-पुत्र—*(न०)* १. हनुमान। २. भीम।

वायु-पुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में का एक पुराण ग्रंथ।

वायु-भक्षक—*(न०)* सर्प। गौर। साप।

वायु-मंडळ—*(न०)* १. वातावरण। २. पृथ्वी के चारों ओर गोलाकार वाष्पीय आवरण।

वायु-विकार—*(न०)* त्रिदोषों में वातदोष के न्यूनाधिक से होने वाला रोग। वातविकार।

वायु-सखा—*(न०)* अग्नि। वासदे।

वार—*(न०)* १. सप्ताह का प्रत्येक दिन। २. समय। काल। ३. दिन। ४. अवसर। मौका। ५. देर। विलंब। शासन-काल। ७. हमला। आक्रमण। ८. दफा। बार। फेरा। ९. वारी। समय। १०. एक नाप। गज। ११. वारि। पानी।

वारक—*(अव्य०)* वार एक (एक बार) का काव्य में प्रयुक्त संक्षिप्त रूप। एक बार। *(वि०)* १. वार करने वाला। २. वार रोकने वाला। ३. निषेध करने वाला। रोकने वाला।

वारकन्या—*(ना०)* वेश्या। पातर।

वारगह—*(न०)* तंबू। शामियाना।

वारगी—*(अव्य०)* दफा। बार। *(न०)* एक अनुसूचित जाति। वारगी। विरगी।

वारज—दे० वारिज।

वार-जाया—*(ना०)* वेश्या। पातर।

वारण—*(न०)* १. हाथी। २. कवच। ३. अंकुश। *(ना०)* १. मनाही। निषेध। २. रोक। रुकावट। बाधा।

वारणा—*(न०)* १. उत्सर्ग। निछावर। वारना। २. बत्तीस प्रकार के व्यंजन पदार्थ जैसे—बत्तीस वारणा, छत्तीस भारणा।

वारणो—*(न०)* १. विवाह करके लौट आने पर अति निकट के स्नेही या कुटुंबी जनों के द्वारा वर-वधू को दिये जाने वाले भोजन का एक विशेष समारोह। २. वारणा। उत्सर्ग। वैवाहिक मंगल कामना का समारोह। २. द्वार। बारणो। *(क्रि०)* १. न्योछावर होना। २. निछरावल करना। ३. रोकना।

अटकाना । ४. मना करना । निषेध करना ।

वार-तहवार—(न०) वार-त्यौहार । उत्सव या पर्व का दिन । शुभ दिन । पर्व । (अव्य०) १. त्यौहार के दिन । २. त्यौहार पर । ३. कभी-कभी ।

वारता—(ना०) १. आख्यानक । २. कथा । ३. बात । ३ हकीकत । वृतान्त ।

वार-त्यौहार—दे० वार-तहवार ।

वारद—(न०) बादल । मेघ । बादळो । वारिद ।

वारदात—(ना०) १. दुर्घटना । २. लड़ाई-झगड़ा । दंगा-फसाद ।

वारनिस—(न०) वह रोगन जिसे किसी वस्तु पर लगाने से चमक आवे ।

वार-परब—(न०) १. वार-पर्व । पर्व-दिन । उत्सव । २. पुण्यकाल ।

वारमवार—दे० वारंवार ।

वार-वधू(ना०) १. वेश्या । रंडी । पातर । २. नगर-नायिका ।

वार-वनिता—दे० वार-वधू ।

वार-विलासिनी—दे० वार-वधू ।

वारस—(न०) उत्तराधिकारी । वारिस । रिक्थभागी ।

वारसदार—दे० वारस ।

वार-सुंदरी—दे० वार-वधू ।

वारसो—(न०) उत्तराधिकार मे मिली हुई सम्पत्ति ।

वारहर—(न०) समुद्र । उदधि । वारिधर ।

वारंग—(ना०) १. अप्सरा । २. वारांगना । वारांगणा । पातर ।

वारंगणा—(ना०) वारांगना । वेश्या । पातर । वारंग ।

वारंगार—(न०) मंगलवार ।

वारंट—(न०) अपराधी को पकड़ने अथवा तलाशी लेने का सरकारी आज्ञा-पत्र ।

वारंवार—(अव्य०) पुनः-पुनः । बार-बार ।

वाराणसी—(ना०) गंगा के किनारे वरुणा और अस्सी नदियों के संगम पर स्थित प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र । काशीपुरी । हिन्दुओं का अति प्राचीन और प्रख्यात तीर्थ-स्थान । काशी ।

वारा-तारा—(न०ब०व०) १. जीवन का महत्व । २. प्रभावपूर्ण जीवन काल । ३. जीवन के महत्वपूर्ण काम या बातें । ४. किसी व्यक्ति की शक्ति, आतंक और सम्मान आदि विशेषताओं का प्रभाव ।

वाराधिप—(न०) समुद्र । सागर । महार्णव ।

वाराफरतो—(अव्य०) बारी-बारी से । एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा इस क्रम से ।

वाराह—(न०) १. शूकर । सूअर । २. एक पर्वत । दे० वराह ।

वाराह-अवतार—(न०) वाराह रूप में विष्णु का तीसरा अवतार ।

वाराह-कल्प—(न०) जिस कल्प में विष्णु ने वाराह का अवतार लिया ।

वाराह-क्षेत्र—(न०) एक क्षेत्र का नाम ।

वाराहजी—(न०) १. श्रीमालनगर (भीनमाल) के प्रधान नगर-देवता । २. विष्णु का वाराहावतार ।

वाराहपुरी—(ना०) १. उत्तर गुजरात और राजस्थान के मारवाड़ प्रान्त की सीमा पर ढेमा (धरणीधर तीर्थ) का एक प्राचीन नाम । २. श्रीमालनगर (भीनमाल) का एक प्राचीन नाम ।

वाराही—(ना०) १. शूकरी । २. एक देवी ।

वारांगणा—(न०) वेश्या । पातर । वारंग ।

वारि—(न०) पानी । जल ।

वारिगह—(न०) १. तंबू । २. प्याऊ । ३. पणियारा । पर्णांडो ।

वारिज—(न०) १. कमल । २ मछली । ३. शंख ।४. कौडी ।

वारिद—(न०) बादल । मेघ ।

वारिस—(ना०) वर्षा । मेह । (न०) उत्तराधिकारी ।

वारी—(ना०) १ बारी । पारी । २. अवसर । ३. न्योछावर । बलिहारी ।

वारु—(अव्य०) ठीक । अच्छा । खैर । अस्तु। भला । (वि०) १ सुंदर । २. प्रिय ।

वारुणी—(ना०) १. मद्य । शराब । २. हथिनी । ३. पश्चिम दिशा । ४. वरुण की स्त्री ।

वारू—(वि०) १. अर्घ्य । २ त्याज्य । ३. निषिद्ध । ४. अच्छा । श्रेष्ठ । ५. प्रिय । (अव्य०) खैर । अस्तु । अच्छा । भला ।

वारो—(न०) १. क्रमानुसार आने वाला अवसर । बारी । पारी । २. समय । काल । ३. किसी युग-पुरुष (अद्वितीय वीर, दानी, न्यायी व श्रेष्ठ महा-पुरुष) का जीवन काल । ४. राजा का शासन काल । ५. कुएँ में से पानी से भरे हुए मोट को बाहर निकाल कर खाली करने की क्रिया । ६ उक्त क्रिया की एक दफा ।

वारोवार—(अव्य०) १. बार-बार । पुनः पुनः । बारंबार । २. एक बार से दूसरे बार तक का समय । दूसरे सप्ताह उसी दिन । वासर प्रति वासर । ३. सप्ताह भर ।

वार्ता—दे० वारता ।

वार्तिक—(न०) १. ग्रंथ की टीका । २. सूत्र ग्रंथ की अर्थ-दर्शक टिप्पणी ।

वार्षिक—(वि०) १. वर्ष संबंधी । २. जो प्रति वर्ष होता हो । २. वर्षा संबंधी । (क्रि०वि०) प्रति वर्ष के हिसाब से ।

वाळ—(न०) केश । बाल ।

वाल—(न०) १. तीन रत्ती का एक तौल । २. एक द्विदल अनाज ।

वाळकी—(ना०) नाक या कान की बाली । वाली । बुगल ।

वाळ-कूंची—(ना०) बालों का बना बुरुस । कूंची ।

वालखिला—(न०) बालखिल्य ऋषि ।

वालखिल्य—दे० वालखिला ।

वालरण-काकड़ी—दे० वालारण-काकड़ी ।

वाळणो—(क्रि०) १. मोड़ना । झुकाना । २. लौटाना । ३. कचरा निकालना । ४. ढकना ।

वालदेन—(न०) माता-पिता । वालदैन ।

वाळधी—(ना०) १ पूंछ । दुम । पूंछड़ी । २ मैमा । वालधि ।

वालम—(न०) १. पति । स्वामी । २. वल्लभ । बालम ।

वालम-काकड़ी—(ना०) लंबी-पतली एक प्रकार की अनाम्ल ककड़ी । वालम-मीरा । वालारण-काकड़ी ।

वाल-मृग—(ना०) चँवर गाय । वालप्रिय ।

वाळली—दे० वाड़ली ।

वाळलो—दे० वाड़लो ।

वालहो—दे० वाल्हो या व्हालो ।

वाळंद—(न०) नाई । हजाम । खवास ।

वाळा-कूंची—दे० वाळकूंची ।

वालारण-काकड़ी—दे० वालम-काकड़ी ।

वालि—दे० वाली।

वालिद—(न०) पिता। बाप।

वालिदा—(ना०) माता। जननी। माँ।

वाली—(न०) १. किष्किन्धा देश की पपा-नगरी का महा पराक्रमी वानर राजा। सुग्रीव का बड़ा भाई। अंगद का पिता। बालि। २. स्वामी। मालिक। ३. संरक्षक।

वाळी - (ना०) १. स्त्रियों के नाक या कान में पहिनने का एक गहना। २. नथ। बाली। ३. कान की बाली। बाळकी। (प्रत्य०) 'वाळो' प्रत्यय का नारी रूप, यथा—पाणीवाळी, घरवाळी, लाजवाळी।

वालीस-धरा—(ना०) भूतपूर्व मारवाड़ राज्य का बाली प्रदेश। मारवाड़ के गोडवाड़ प्रान्त का बाली परगना। (काव्य रूप)।

वाळू—बालू। रेती। रेत। रज।

वालेसर—(वि०) प्यारा। वल्लभेश्वर। प्रिय।

वालेसरी—दे० वालेसर।

वाळो—(न०) १. नारू नामक एक रोग। नहरुआ। २. धातु का पतला लम्बा तार। ३. एक आभूषण। (प्रत्य०) नाम के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय। जैसे—रंगवाळो, जोधपुर वाळो। दूध वाळो। इत्यादि।

वालोड़—दे० वालोळ।

वाळो-निकळणो—(मुहा०) नहरुआ का रोग होना।

वालोळ—(ना०) फली वाला एक शाक।

वाळोवळ—(अव्य०) १. उपरांत। पीछे। २. पुन:। फिर। और। ३. बार-बार। ४. बारी-बारी से। ५ चारो ओर से। सब तरफ से।

वाल्मीकि—(न०) संस्कृत भाषा के आदि कवि रामायण के रचयिता एक ऋषि।

वाल्हो—(न०) चुम्बन। (वि०) प्यारा। प्रिय। वल्लभ।

वाव—(न०) वायु। (ना०) वापी। बावली। वावड़ी।

वाव-करण—(न०) पंखा।

वावटो—(न०) ध्वजा। पताका। धजा। २. झंडा। झंडी।

वावड़—दे० वावोड़।

वावडणो—दे० वावोडणो।

वावड़ी—(ना०) वापी। बावली। वाव।

वावणी—(ना०) बोने का काम। बोआई। बोवणी।

वावणो—(क्रि०) १. उगाने के लिये जमीन में बीज डालना। बोना। २. पौधे को रोपना। रोप लगाना। ३. फेंकना। उछालना। ४. बजाना। ५ बजना।

वाव-भख—दे० वायु-भक्षक।

वावर—(ना०) १. वायु। २. बाड़ (काँटों की) ३. नारी पशुओं की जननेंद्री। व्यावर। ४. उपयोग। ५. खर्च। (वि०) १. पागल। बातुल। २ व्यर्थ।

वावरणो—(क्रि०)१. काम में लेना। उपयोग में लाना। उपयोग करना। बापरणो। २. खर्च करना। खरचणो। ३. बाँटना। ४. शस्त्र चलाना। प्रहार करना।

वावरत—दे० वपरास।

वावरी—(न०) १. एक अनुसूचित जाति। इस जाति का व्यक्ति।

वावरो—दे० वावळो।

वावळ—*(ना०)* १. वर्षा के साथ या उसके पूर्व आने वाला प्रचंड वायु वेग। आंधी। २. धूलिपूर्ण प्रचंड वायु।

वावळी—*(वि०)* १ पगली। मूर्खा। २. वातरोग से ग्रसित। ३. वाचाल। ४. घटसट बकने वाली। *(ना०)* १. तोड़ कर देने और अपनी चाल को समाप्त कर देने के बाद घर में पहुंची हुई चौपड़ की गोट को पुनः उलटी चाल चलाने का भाव व क्रिया तथा उलटी चाल (चौपड़ का खेल) चलने वाली गोट।

वावळो—*(वि०)* १. पागल। २. मूर्ख। ३. वातरोग ग्रसित। ४. वाचाल। ५. अंटसंट बोलने वाला।

वावाळी—*(ना०)* १. कीर्ति। यश। २. ख्याति। प्रसिद्धि। नामवरी। ३. सौरभ। सुगंध। ४. धन्य नाम। ५. अतर की छोटी शीशी। ६ सुगंधित वातावरण। धोरो। ७ बदनामी (व्यांजोक्ति)। *(वि०)* १. मोहल्ले की। २. मोहल्ले में रहने वाली।

वावाळी करणो *(मुहा०)* प्रसंसा करना।

वावाळी फूटणो—*(मुहा०)* १. सर्वत्र धन्य-धन्य होना। २. प्रशंसा होना। ३. ख्याति होना। ४ (व्यंग में) निंदा होना।

वावाळी फैलणो—दे० वावाळी-फूटणो।

वावाळी व्हेणो—*(मुहा०)* प्रशंसा होना।

वावेतर—*(वि०)* १. बोया हुआ। *(ना०)* बोई हुई जमीन। २ बोने का काम। बुवाई।

वावेलो—(न०) हल्ला। कोलाहल। बावेला।

वावो—*(न०)* मेह में की जाने वाली बुवाई। बोवाई।

वावोड़—*(न०)* १. उड़ती खबर। अफवाह २. समाचार। खबर। ३. संवाद। बातचीत। ४. पता। खोज। अनुसन्धान। जाँच। पतो।

वावोड़णो—*(क्रि०)* १. दिखाना। बताना। २. पता लगवाना।

वास—*(ना०)* १. मोहल्ला। गली। २. २. गाँव का कोई भाग जिसमें किसी एक जाति के मनुष्य रहते हों। ३. निवास। स्थान। घर। ४. गंध। ५. दुर्गन्ध। ६. सुगन्ध। महक। सौरभ।

वासक—दे० वासग।

वासकोट—*(न०)* एक प्रकार का पहिनावा' कोट के नीचे पहिनने की फतूही। सदरी। वैस्टकोट।

वासग—*(न०)* १. वासुकि नाग। २. सर्प।

वास-गवाड़—*(ना०)* वास-मोहल्ला। गुळी-गुवाड़।

वासण—*(न०)* बरतन। पात्र। ठाम। प्राहण।

वासण-कूसण—*(न०ब०व)* छोटे-बड़े बरतन बस्सन, खुरपा-खुरपी इत्यादि।

वासणो—*(क्रि०)* १. दुर्गंध देना। २. बसना। रहना।

वासदी—*(न०)* अग्नि। वासदे।

वासदे—*(न०)* १. वैश्वदेव। अग्नि। आहवी।

वासना—१. पूर्व संस्कारों की दृढीभूत कामना। संस्कार स्मृति। २ गंध। ३. दुर्गंध। ४. सुगंध। ५. यश। कीर्ति। ६. काम वासना। ७. अतृप्त इच्छा।

वास-फूटणो—*(मुहा०)* १. खबर फैलना। २. सुगंध या दुर्गंध आना। ३. बदनामी होना। ४ कीर्ति होना।

वासर—*(न०)* दिन। दिवस। दहाड़ो। बार।

वासरकर—*(न०)* दिनकर। सूर्य। सूरज।

वा-सरणो—*(क्रि०)* अधोवायु का निकालना। पादणो।

वासव—*(न०)* इंद्र।

वासवी—(ना०) इंद्राणी।

वासंतिक—(वि०) १. वसंत ऋतु का। २. वसंत ऋतु संबंधी।

वासंती—(वि०) १. वसन्त ऋतु का। २. वसन्त ऋतु सम्बन्धी।

वासावळी—(ना०) १. अधिक सुगन्ध। २. भरपूर सुगंध का वातावरण। ३. कीर्ति। यश। ४. सुगन्ध। ५. ख्याति।

वासी—(वि०) १. रहने वाला। निवासी। २. वह जिसको पकाये हुये बहुत समय हो गया हो (भोजन)। अधिक समय हो जाने के कारण जिसमें विकार उत्पन्न हो गया हो (भोजन, दूध आदि) ३. पहिले दिन या रात का बनाया या या रखा हुआ भोजन।

वासी-ईद—(न०) ईद का दूसरा दिन।

वासी-मालाळा—(न०यौ०)प्रभात के समय में (नाश्ता करने के पहले) यात्रा में दाहिनी ओर होने वाले हरिण के शकुन।

वासी-सांगवण—(न०यौ०) प्रभात समय में (नाश्ता करने के पहले) यात्रा में बाईं ओर होने वाले हरिण के शकुन।

वासीदी—(ना०) झाड़ू। बुहारी। मारजणी। मावरणी। संमार्जनी।

वासीदो—(न०) १. घर का कूड़ा-कचरा। झूस। कचरो। २. झाड़ू लगाने की क्रिया। ३. झाड़ से कचरा आदि निकालने की सफाई। ४. रहने वाला। निवासी। वासिंदा। रहवासियो। ५. का रहने वाला। का निवासी।

वासुकि—(न०) १. नागों का राजा। नागेन्द्र। २. समुद्र-मंथन में मंथन-रज्जु (नेतरो) की तरह प्रयुक्त नाग-राज।

वासुदेव—(न०) श्रीकृष्ण। वसुदेव का पुत्र।

वा-सुरणो—(मुहा०) अधोवायु छूटना। पादणो।

वासो—(न०) १. विश्राम। २ पड़ाव। ३ घर। ४.पैसे लेकर भोजन कराने की दुकान या घर। Lodge। ५. मोहल्ला। ६. आडोस-पाडोस में बसने वाले लोग।

वास्तव—(वि०) १ यथार्थ। २ प्रकृत। ३. सत्य।

वास्तव में—(अव्य०) १. सचमुच। २. हकीकत में। ३ निश्चित रूप से। ४ वस्तुतः।

वास्तविक—(वि०) वास्तव। सत्य। यथार्थ।

वास्तविकता—(ना०) १. सच्ची हकीकत। २. वस्तुगत स्थिति। सत्य। ३. घटित हुई बात। ४ उपयुक्तता।

वास्तु—(न०) १ घर। मकान। २. वास्तु पूजन। ३ वास्तु पूजन का उत्सव या भोज। नांगळ।

वास्तु-पूजा—(ना०) नये घर में प्रवेश करने के लिये की जाने वाली पूजा, यज्ञ इत्यादि। नांगळ।

वास्तु-विद्या—(ना०) भवन निर्माणशास्त्र।

वास्तु-शांति—दे० वास्तु पूजा।

वास्ते—(अव्य०) लिये। निमित्त। कारण। हेतु। वास्ते। भणी।

वास्तो—(न०) १. सम्बन्ध। नाता। सम्पर्क। वास्ता। २. लेन-देन। ३. मित्रता।

वाह—(न०)१. घोड़ा। वाहु। २. बैल। बळद। ३. भैंसा। ४ वाहन। सवारी। ५. भार-वाहन। ६. भार-बरदारी। ७. पवन। वायु। ८. मेघ। बादल। ६.

चंद्रमा। १० प्रहार। चोट। खड्ग प्रहार। ११ बाहु। बांह। १२. मुहल्ला। वास। १३. धाड़ा। १४ आक्रमण। १५. वास। निवास। रहवास। १६. दान। १७. नेग। लाग। *(ना०)* १. नौका। नाव। २. दिशा। तरफ। ३. दूरी। पहुंच। ४. खबर। जाँच। ५. दूरी। फासला। ६ गंध। सुगंध। ७. रीति। ८ प्रवाह। धारा। *(वि०)* १. सुन्दर। २. श्रेष्ठ। *(अव्य०)* १. आश्चर्य व प्रशंसा सूचक शब्द। धन्य। शाबास। झोक। २. तिरस्कार सूचक शब्द।

वाहग—*(वि०)* १. प्रहार करने वाला। २. भार उठा कर ले जाने वाला। वाहक। ३. फेंकने वाला। ४. जासूस।

वाहडियो—दे० वाड़ियो मं० १।

वाहण—*(ना०)* १. वाहन। सवारी, घोड़ा, ऊँट आदि। २. बैलगाड़ी। ३ बरतन। ढाम। रागणा। *(ना०)* नदी।

वाहणी—दे० वाहिनी।

वाहणो—*(क्रि०)* १. फेंकना। २. प्रहार करना। मारना। ३. गध देना। गधाना। बाग माना। ४. खेत में बीज बोना। *(ना०)* सुथारों का एक औजार। बेतक।

वाहदे—दे० वासदे।

वाहन—*(न०)* गाड़ी, घोड़ा, ऊँट इत्यादि आने जाने का साधन। सवारी। बेतक।

वाहना—*(ना०)* १. गंध। २. दुगंध। ३. सुगन्ध। वासना।

वाहर—*(ना०)* १. पूछताछ। २. खोज-खबर। ३. सहायतार्थ पीछे धावन। अनुधावन। पीछा। वारो। हेरो। ४. खोज। तलाश। ५. सहायता। मदद। ६. चढ़ाई। आक्रमण।

वाहरू—*(वि०)* १. वाहर करने वाला। पीछा करने वाला। चढ़ाई करने वाला। २. तलाश करने वाला। ३. मदद करने वाला। ४. खबर-सम्हाल लेने वाला।

वाहळो—*(न०)* १. छोटा जल प्रवाह। नाळो। २. प्रवाह।

वाह-वाह—*(ना०)* कीर्ति। जस। *(अव्य०)* १. धन्य। शाबास। झोक। २. आश्चर्य व खुशी का उद्गार।

वाह-वाही—*(ना०)* १. शाबासी। साधुवाद। २. प्रशंसा। तारीफ। *(अव्य०)* बहुत लोगों का वाह-वाह शब्द कहना।

वाहाऊ—*(न०)* १. दूत। कासिद। २. अश्वारोही। घुड़सवार। ३. उष्ट्रारोही। ओठी। *(वि०)* १. बहने वाला। २. चलने वाला।

वाहित्र—*(ना०)* १. नाव। जहाज। वाहित्र। २. सवारी। वाहन। वहतङ।

वाहिनी—*(ना०)* १. सेना। फौज। २. नदी। ३. नस। नाड़ी। नाड़।

वाहियात—*(वि०)* १. व्यर्थ। फजूल। २. खराब। ३. निकम्मा।

वाही—*(वि०)* वहने वाला। प्रवाही। दे० 'वामी' तथा 'वासी'।

वाही-खपतां—*(अव्य०)* सम्पूर्ण प्रयत्न पूर्वक। पूरी कोशिश से। पूरी कोशिश में।

वाही-पूगतां—दे० वाही-खपतां।

वाही-लगतां—दे० वाही-खपतां।

वाहींदो—दे० वासीदो।

वाहींदो—दे० वाधीदो।

वां—*(सर्व०)* १. उन। २. उन्होंने।

वांइटो—*(न०)* शरीर की अंगुली आदि किसी भाग में होने वाली नस की

अकड़न या आंटा और उसके कारण होने वाला दर्द ।

वांक—(न०) १. टेढापन । वळ । २. मोड । घुमाव । ३ ऐंठन । मरोड । ४. अपराध । दोष । ५ विषमता । असमानता । ६ दुख । संकट । ७. विरोध । वैर । ८. न्यूनता । ९. एक शस्त्र । ६. धनुष । १०. अभिमान । ११. तलवार । १२. व्यंग्य । १३. कमी । कसर । १४. सुंदरता । १५. कमर । कटि । लंक ।

वांक-चूका—(ना०) १. भूल-चूक । (वि०) टेढ़ा-मेढा ।

वांकड़—दे० वांको ।

वांकड़मल—(वि०) वीर । बांका ।

वांकड़ली—(वि०) टेढी । वांकी ।

वांकड़लो—दे० वांकडमल ।

वांकड़ी—(वि०) टेढ़ी । वांकी ।

वांकडो—(वि०) १. टेढ़ा । वांको । २. बंका । वीर ।

वांकम—(ना०) १. वांकापन । वक्रता । २. स्वाभिमान । ३. पराक्रम । (वि०) १. टेढा । वक्र । वांका २. दुर्गम । ३. वीर । पराक्रमी ।

वांकल-माता—(ना०) एक लोक देवी ।

वांकाई—(ना०) १. टेढ़ापन । २. कुटिलता । ३. गर्व । ४. शौर्य । वीरता ।

वांकापण—दे० वांकाई ।

वांकापणो—दे० वांकाई ।

वांकियो—(न०) १. नरसिंहे की तरह फूंक कर बजाया जाने वाला बाजा । २. रथ के पहिये में लगी रहने वाली लकड़ी का धनुषाकार उपकरण । ३. दीवाल में बाहर की ओर निकली हुई ओसरी को सहारा देने के लिए लगा रहने वाला लकड़ी का एक उपकरण ।

वांकी—(वि०) १. एक टेढी । २. दुर्गम । विकट । (ना०)१. एक शस्त्र । २. वीरांगना ।

वांको—(वि०) १ टेढ़ा । २ वीर । ३. अद्भुत । ४. कुटिल । ५. जबरदस्त । ६. स्वाभिमानी । ७. दुर्गम । विकट ।

वांको-चूको—(वि०) १. बांका । टेढ़ा । टेढ़ामेढा । ३. इधर-उधर । ४. आडा-टेढा । आडो-अवळो ।

वांग—दे० वांगण ।

वांगण—(न०) पहिये की धुरी में दिया जाने वाला तेल । उस तेल की संज्ञा जो पहिये की धूरी में दिया जाता है ।

वांगणो—(क्रि०) १. पहिये की धुरी मे तेल देना । २. संभोग करना । (संकेत) ।

वांचजो—दे० बांचजो ।

वांचणो—दे० वाचणो ।

वांछणो—(क्रि०) इच्छा करना । चाहना । वांछा करना ।

वांछा—(ना०) इच्छा । अभिलाषा । चाह ।

वांछित—(वि०) इच्छित । अभिलषित ।

वांझ—(वि०) वन्ध्या । वाझ । वांझड़ी ।

वांझड़ी—दे० वांझ ।

वांझड़ो—दे० वांझियो ।

वांझणी—दे० वांझ ।

वांझणो—दे० वांझियो ।

वांझियो—(वि०) जिसके संतान नहीं हुई हो । (पुरुष) ।

वांटणो—(क्रि०) १. हिस्सा करना । भाग करना । २. वितरण करना । ३. सिल पर पीसना । बांटना ।

वांटो—(न०) १ गाय, भैंस आदि दुधारु पशुओं के लिए कुतर, बाजरी, गवार, खली आदि को मिला कर पकाया हुआ खाद्य जो दोहते समय खिलाया जाता है। सानी। २. बट। हिस्सा। भाग।

वांढणी—दे० वांढी।

वांढियो—दे० वांढो।

वांढी—(वि०) वर नहीं मिलने से क्वारी रही हुई। वांढणी। अपरिणीत।

वांढो—(वि०) वह जिसका वयस्क होने पर भी विवाह न हुआ हो। कन्या नहीं मिलने से क्वारा रहा हुआ। अपरिणीत। वांढियो।

वांतरियो—(न०) अनाज में उत्पन्न होने वाला एक कीड़ा।

वांद—दे० वान सं० ६ और १०।

वांदणो—(क्रि०) १. वंदन करना। नमस्कार करना। २. भगवद प्रसादी को सिर और आंखों पर चढ़ाना।

वांदरी—(ना०) बंदर की मादा। बंदरी बानरी।

वांदरो—(न०) बंदर। वानर। बानरो।

वांदियोड़ो—(भू०कृ०) १. वंदन किया हुआ। २. सम्मानित। वंदित।

वांदोळी—दे० वंदोळी।

वांदोळो—दे० वंदोळो।

वांधा-खोर—(वि०) १. तकरारी। झगड़ालू। २. अड़चन डालने वाला।

वांधो—(न०) १. आपत्ति। विरोध। २. तकरार। झगड़ा। ३. अड़चन। ४. शत्रुता।

वांनै—(सर्व०ब०व०) उनको। व्यांनै। उणांनै।

वां-पर—(अव्य०) उनके ऊपर।

वांयटो—दे० वांइटो।

वांरी—(सर्व०ब०व०) उनकी। व्यांरी। उणांरी।

वांरै—(सर्व०ब०व०) उनके। व्यांरै। उणांरै।

वांरो—(सर्व०ब०व०) उनका। व्यांरो। उणांरो। यणांरो।

वांस—(न०) १. बांस। २. आठ हाथ का नाप। ३. बांसुरी। वंसी।

वांसलड़ो—(वि०) पीछे वाला। पिछला। लारलो।

वांसळी—(वि०) १. पीछे की। २. पीछे रही हुई। (ना०) १. पत्नी (व्यंग्य और क्रोध) २. वंसी।

वांसली—(ना०) मुरली। बंसरी। (वि०) पीछे की।

वांसलो—(वि०) पिछला। पीछे वाला। (न०) लकड़ी छीलने का एक सुथारी औजार। वांसोलो।

वांसां—(अव्य०) १. पीछे से। २. बाद में। लारेसूं। ३. पीछे।

वांसूं—(सर्व०ब०व०) उनसे। व्यासूं। उणांसूं।

वांसे—(अव्य०) १. पीछे। पीछे की ओर। २. अनुपस्थिति में न रहने की हालत में। ३. मर जाने पर।

वांसो—(न०) १. सहायता। २. पीछा। ३. पीठ। ४ पिछली हकीकत। ५. पिछला भाग।

वांसोलो—(न०) खाती का एक औजार। वांसलो।

वांह—(न०) पीछा।

वांहली—दे० वांसली।

वांहलो—दे० वांसोलो। (वि०) पिछला।

पीछे का ।

वांहि—(श्रव्य०) पीछे । वांसे । लारे ।

वांहेंवाळो—(न०) पिछला । पीछेका ।

वांहो—दे० वांसो ।

वि—(उप) एक उपसर्ग जो शब्दो के पूर्व जोडने पर विशेष, अनेक रूपता, निषेध इत्यादि अर्थ देता है ।

विश्रावणो—दे० वियावणो ।

विकच—(वि०) केश रहित । मुंडन किया हुआ । विकचो ।

विकचो—दे० विकच ।

विकट—(वि०) १. कठिन । २. दुर्गम । ३. भीषण ।

विकणो—(क्रि०) विकना । बिकरी होना ।

विकराळ—(वि०) भयानक । डरावना ।

विकराळी—(ना०) १. विकराल रूप धारण की हुई एक देवी । २. रक्त-पिपासु योगिनी । ३. तलवार । खड्ग ।

विकरी—(ना०) १. विक्रय । बेचान । २. विक्रय से प्राप्त रकम ।

विकरो—(न०) बिकरा । विक्रय ।

विकळ—(वि०) १. क्षुब्ध । २. व्याकुल । ३. विह्वल । विकल । ४. अपूर्ण । खंडित ५. असमर्थ । ६. पागल । (न०) कला का साठवां भाग । विकला ।

विकळणो—(क्रि०) १. व्याकुल होना । २. असमर्थ होना ।

विकळता—(ना०) १. पागलपन । २. व्याकुलता । ३. आतुरता ।

विकल्प—(न०) १. तर्क-वितर्क । २. अनिश्चय । ३. धोखा । भ्रम । ४. अनेक बातों, रास्तों इत्यादि में से अपनाने योग्य प्रत्येक । ५. उनमें से किसी एक को अपनाने की स्थिति या उपाय । ६. कोई दूसरा उपाय ।

विकसणो—(क्रि०) १. विकसित होना । विकसना । विगसणो । २. खिलना । ३. प्रफुल्लित होना । ४ आनंदित होना ।

विकसाणो—दे० विकसावणो ।

विकसावणो—(क्रि०) १. फैलाना । २. बढाना । ३. प्रफुल्लित करना ।

विकसित—(भू०कृ०) १. खिला हुआ । २. प्रफुल्लित । ३. विकास प्राप्त । जिसका विकास हुआ हो ।

विकाम—दे० बेकाम ।

विकार—(न०) १. शारीरिक या मानसिक बिगाड़ । विकृति । २. बिगाड़ । ३ दोष । ४. रोग । ५. मन में उत्पन्न होने वाली प्रबल वृत्ति । (प्रायः दूषित वृत्ति) । ६. औषधि सेवन के समय पथ्य नहीं रखने से होने वाला रोग । ७ परिवर्तन । फेरफार । ८. व्याकरण में उसके नियमानुसार शब्द का रूप बदलना । एक वर्ण के स्थान पर दूसरे वर्ण का आगमन ।

विकारी—(वि०) जिसमें कोई विकार या राग-द्वेष हो । विकार वाला ।

विकास—(न०) १. प्रसार । फैलाव । २. विस्फुटन । ३. उत्क्रांति । विगास ।

विकासणो—(क्रि०) १. विकसित होना । २. फैलाना । ३. फैलना ।

विकृत—(वि०) १. विकार प्राप्त । बिगड़ा हुआ । बिगड़ियोड़ो । २. जो भद्दा हो गया हो । ३. अपूर्ण ।

विकृति—(ना०) १. विकार । बिगाड़ । २. रोग । ३. क्षोभ । दे० विकार ।

विक्रम—(न०) १. पराक्रम । शक्ति । २. प्रभुता । ३. गति । चाल । ४. प्रकार । ढंग । ५. विक्रमादित्य । (वि०) श्रेष्ठ ।

विक्रम-सवत—*(न०)* उज्जयिनी के प्रसिद्ध प्रतापी राजा विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित सम्वत जो ईसवी सन् से ५७ और शक सवत से १३५ वर्ष पहिले प्रवर्तित हुआ था। विक्रमी सम्वत्।

विक्रमाजीत—दे० विक्रमादित्य।

विक्रमादित्य—*(न०)* उज्जयिनी का एक प्रतापी राजा, जिनके नाम से आज २०४० विक्रम सम्वत् चल रहा है।

विक्रमी—*(वि०)* १. जिसमे वीरता हो। पराक्रमी। २. विक्रम सम्बन्धी।

विक्रय—*(न०)* बेचान। विक्री। बिकरी।

विक्रिया—*(ना०)* विकार। खराबी।

विक्री—*(ना०)* बेचान। बिकरी। बिकरो।

विक्षिप्त—*(वि०)* १. पागल। बावळो। २. फैला हुआ।

विक्षुब्ध—*(वि०)* जिसके मन मे क्षोभ उत्पन्न हो गया हो।

विक्षेप—*(न०)* १. बाधा। अड़चन। २. अस्थिरता। ३. विभ्रम। ४. उच्चाट। व्यग्रता। ५. घबराहट। विखेप।

विख—१. विष। जहर। २. परस्पर के सम्बन्धों में कटुता। ३. शत्रुता। ४. सर्प। साप।

विख-कन्या—दे० विषकन्या।

विख-कामण—दे० विष-कामिनी।

विखजर—*(न०)* महादेव। शकर। *(वि०)* विष को हजम करने वाला।

विखधर—*(न०)* १. सर्प। नाग। विषधर। २. महादेव।

विखम—दे० विषम।

विख-मंत्र—*(न०)* विष उतारने का मंत्र। विषमंत्र।

विखमी—*(वि०)* १. अति कठिन। २. असह्य। ३. भयंकर। ४. दुर्गम। ५. प्रतिकूल। विरुद्ध। ६. शत्रु।

विखमी-वार—*(ना०)* १. सकट का समय। २. विषम स्थिति।

विखरणो—*(क्रि०)* १. बिखरना। छितराना। फैलना। २. अलग-अलग होना। छंटना। ३. तितर-बितर होना। ४. दूर-दूर चले जाना।

विखवाद—*(न०)* १. कटुता उत्पन्न हो ऐसी बोल-चाल। २. तकरार। झगड़ा। कजियो। ३. शत्रुता।

विखसूचक—*(न०)* चकोर पक्षी।

विखहर—*(न०)* विषधर। नाग। सांप। *(वि०)* विष को हरने वाला।

विखाद—दे० विषाद।

विखायत—*(वि०)* १. संकटापन्न। संकट-ग्रस्त। २. भीतिग्रस्त। बिलायती।

विखायती—दे० विखायत।

विखियात—दे० विख्यात।

विखूटणो—दे० विछूटणो सं० १, २, ४, ५।

विखूटो—*(भू०कृ०)* १ समूह या राशि से अलग हो गया, रह गया या निकाल दिया गया हुआ। *(क्रि०वि०)* वियुक्त। भिन्न। दूर। *(वि०)* अलग। पृथक।

विखूटो-पड़णो—*(मुहा०)* १. समूह से अलग हो जाना या निकल जाना। २. साथ वालों से पीछे रह जाना। साथ छूट जाना। अकेला रह जाना। ३. अलग हो जाना।

विखेप—दे० विक्षेप।

विखेरणो—*(क्रि०)* १. इधर-उधर फैलाना। छितराना। २. नाश करना। ३. चिने

हुए या जमे हुए को उखाड़ कर इधर-उधर डाल देना। विखोरणो। ४. अलग-अलग करना। ५. भीड़ को हटाना। तितर-बितर करना। बिखराना।

विखेरो—(न०) १. वस्तुओं का अव्यवस्थित फैलावा। २ फैलाव। छितराव।

विखै—(अव्य०) १. बावत। संबध मे। २. मे। अन्दर। ३. प्रति। ४. पर। ५. निकट। दे० विषय।

विखै-तो—(अव्य०) १. तेरे साथ। २. तेरे मे। ३. तेरे सम्बन्ध में। ४. तेरी भक्ति, उपासना और ज्ञान का विषय। ५. तेरा विषय। ५. तेरे विषय मे।

विखो—(न०) १. विपत्ति। संकट। २. सकट काल। आपत्तिकाल। ३. उत्पात। विग्रह। ४. शत्रु के भय से राज्य व गृह विहीन होकर पहाड़ व जंगल में किया जाने वाला गुप्त निवास।

विखोरणो—दे० विखेरणो।

विख्यात—(वि०) प्रसिद्ध। छावो। सर्वविदित।

विगड़णो—(क्रि०) १. बिगड़ना। खराब होना। २. नाश होना। ३. सड़ना। गलना। ४. क्रोध करना। ५. वैमनस्य। होना। ६. पथभ्रष्ट होना। ७. चालचलन ठीक नहीं होना।

विगत—(ना०) १. सम्पूर्ण विवरण। २. विस्तृत वर्णन। ३. सूझ। ४. बाबत। ५. हकीकत। ६. वृत्तान्त। ७. अतीत। ८. राजस्थानी गद्य साहित्य का एक प्रकार। ९. विस्तार पूर्वक विवरण। (वि०) १. बीता हुआ। गत। २. मृत। ३. रहित।

विगतवार—(अव्य०) १. पूरे विवरण के साथ। तफसीलवार। विस्तार पूर्वक। २. सवृत।

विगताणो—(क्रि०) १. सूचित करना। २. विस्तृत वर्णन भेजना।

विगताळो—(वि०) १. छल-छिद्र वाला। २. चालाक। ३. विवरण वाला। ४. जानकार। बहुज्ञ। ५. युद्ध विशारद।

विगन—(न०) विघ्न।

विगनान—दे० विज्ञान।

विगर—(अव्य०) १. वगैर। बिना। २. छोड़ कर। ३. अतिरिक्त। सिवाय। ४. रहित। विहीन।

विगसणो—(क्रि०) दे० विकसणो।

विगाड़—दे० बिगाड़।

विगाड़णियो—दे० बिगाड़ू।

विगाड़णो—दे० बिगाड़णो।

विगाड़ू—(वि०) बिगाड़ने वाला। बिगाड़णियो।

विगाड़ो—दे० बिगाड़।

विगूचणो—(क्रि०) १. भ्रष्ट करना। बदनाम करना।

विगूचीजणो—(क्रि०) १. भ्रष्ट होना। २. पतित होना। बदनाम होना।

विगेरे—दे० वगैरह।

विगोईजणो—(क्रि०) बदनाम होना। वगोईजणो। भडोजणो।

विगोवणो—(क्रि०) निंदा करना। बदनाम करना। वगोवणो। भांडणो।

विग्यान—दे० विज्ञान।

विग्रह—(न०) १. युद्ध। झगड़ा। संग्राम। २. कलह। ३. भगवान की मूर्ति। देवता की मूर्ति। प्रतिमा४. शरीर। ५. शृंगार। ६. विश्लेषण के लिये प्रत्येक शब्द (समास, सधि के अवयवो) को अलग-अलग करना। उपवाक्यादि का विश्लेषण। (व्या०)

विग्रहणो—(क्रि०) १. युद्ध करना। २. युद्ध होना। झगड़णो।
विग्रो—दे० विग्रह। सं. १, २.
विघन—(न०) १. विघ्न। बाधा। रुकावट। २. हरकत। ३ संकट। विपत्ति। आपत्ति। आफत। विपत।
विघन-हरण—(न०) गणेश। विघ्न-हरण। (वि०) विघ्न हरने वाला।
विघरणो—(क्रि०) १. पिघलना। गलना। २. द्रवीभूत होना।
विघात—(न०) १. आघात। प्रहार। २. संहार। नाश। ३. विघ्न। बाधा।
विघ्न—दे० विघन।
विघ्नकर्ता—(वि०) १. विघ्न करने वाला। २. रुकावट डालने वाला।
विघ्नकारी—(वि०) विघ्नकर्ता। विघ्न करने वाला।
विघ्न-नाशक—(वि०) विघ्न मिटाने वाला। (न०) गणपति।
विघ्न-पति—(न०) गणेश।
विघ्न-राज—(न०) गणपति।
विघ्न-विनायक—(न०) गणपति।
विघ्न-विनाशक—(न०) गणपति।
विघ्न-हरण—(न०) गणपति।
विच—दे० वीच।
विचक्षण—(वि०) १. बुद्धिमान। २. चतुर। चालाक। ३. विद्वान। ४. निपुण। दक्ष। ५. पंडित।
विचत—(न०) १. मुसलमान। २. शत्रु। वैरी।
विचत्र—दे० विपत। (वि०) १. अद्भुत। २. विलक्षण। दे० विचित्र।
विचरण—(न०) १. घूमना-फिरना। २. प्रवास। ३. चलना। ४. आना-जाना।
विचरणो—(क्रि०) १. घूमना। फिरना। २. जाना। प्रवास करना। ३. चलना। ४. जीवन यापन करना। ५. आते-जाते रहना।
विचलित—(वि०) १. अस्थिर। चंचल। २. अपने स्थान, प्रतिज्ञा सिद्धान्त आदि से हटा हुआ।
विचलो—(वि०) बीच का। मध्यम भाग से संबंधित।
विचार—(न०) १. संकल्प। २. मन में उठने वाली कोई बात। ३. कल्पना। मनसूबा। ४. इच्छा। ५. अभिप्राय। ६. उद्देश्य। आशय। ७. निश्चय। ८. विवेक। मर्यादा। ६. चिंता। १०. भ्रम। ११. समझ।
विचारणा—(ना०) १ विचार करने का भाव। २. विचार की हुई बात। ३. निर्णय।
विचारणीय—(वि०) १. विचारने योग्य। २. विचार करने की (बात)।
विचारणो—(क्रि०) १. विचार करना। सोचना। २. मनसूबा करना। इच्छा करना। ३. चिंतन करना। ४. कल्पना करना। धारना। धारणो। ५. चर्चा करना। ६. तपासना। ७. निश्चय करना। ८. समझना। ६. भ्रम में पड़ना।
विचार-वमळ—दे० वमळ।
विचारवान—(वि०) १. विचार वाला। विचारशील। २. बुद्धिमान।
विचाळ—दे० वीच।
विचाळी—(अव्य०) बीच में। (वि०) बीचवाली। बिचली।
विचाळै—(अव्य०) बीच में।
विचित—दे० विचत।

विचित्र—(वि०) १. विलक्षण। २. अद्भुत। ३ अनेक रंगों वाला। ४. सुंदर। (न०) १. शत्रु। २. यवन।

विचेटियो—(वि०) बीच का। मध्य का।

विच्छू—दे० बीछू।

विच्छेद—(न०) १. विभाग। २. छेद। ३. काप। ४. वियोग। ५. नाश। ६. क्रम टूटना।

विच्छेदणो—(क्रि०) विच्छेद करना।

विछड़णो—दे० विछुड़णो।

विछड़ाणो—(क्रि०) १. साथ छुड़ा देना। अकेला कर देना। २. बिछुड़ जाना।

विछड़ियोड़ो—(भू०कृ०)१. बिछुड़ा हुआ। अकेला रहा हुआ। २. मार्ग भूला हुआ। ३ भटका हुआ।

विछळणो—(क्रि०) १. पानी से साफ करना। धोना। २. साधारण रूप से या थोड़े पानी से धोना।

विछळाणो—दे० विछळावणो।

विछळामण—(न०) १. बिछलाने का पानी। २ बिछलाया हुआ पानी। धोवन।

विछळावणो—(क्रि०) १. धुलाना। २. पानी की धार देकर धुलाना।

विछाणो—दे० बिछाणो।

विछात—दे० बिछात।

विछायत—दे० बिछायत।

विछायती—दे० बिछायती।

विछावणो—दे० बिछावणो।

विछिया—(न०ब०व०) स्त्रियों के पाँवों की अंगुलियों में पहनने की घुंघुरूदार अंगूठियाँ। बिछुड़ियाँ।

विछियो—(न०) जैसलमेर (राजस्थान) के पास मिलने वाला एक खूब कठोर पत्थर जिसके (औषधियाँ घोटने के) खल-बट्टे आदि बनते हैं।

विछुड़णो—दे० बिछुड़णो।

विछूटणो—(क्रि०) १. छूट जाना। छूटना। २. बिछुड़ना। ३. गर्भपात होना। ४. कट कर दूर पड़ना। ५. अलग होना। दूर हटना। ६. जुदा होना।

विछूटो—(भू० कृ०) बिछुड़ा हुआ। (क्रि०भू०) बिछुड़ गया।

विछूंदरी—दे० विसूंदरी।

विछेप—दे० विक्षेप।

विछोह—(न०) वियोग। जुदाई।

विछोहो—दे० विछोह।

विजड़—(ना०) १. खड्ग। तलवार। २. कटारी।

विजड़-हथ—(वि०) खड्गधारी।

विजड़ी—(वि०) १. खड्ग। २. कटारी।

विजन—(न०) पंखा। व्यजन। (वि०) १. निर्जन। २. एकान्त स्थान।

विजय—(ना०) जीत। फतह।

विजय-ध्वज—(ना०) विजय की सूचक ध्वजा।

विजयवर्गी—(न०) एक वणिक जाति।

विजय-शाही—(न०)१. जोधपुर महाराजा विजयसिंह द्वारा प्रवर्तित चाँदी का रुपया। २. विजयसिंह का राज्यकाल।

विजय-स्तम्भ—(न०) १. विजय की यादगिरी में बनाया हुआ स्तम्भ। २. महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित चित्तौड़ दुर्ग का विजय-स्तम्भ।

विजया—(ना०) १. भाँग। २ पार्वती।

विजया-दशमी—(ना०) १. आसोज शुक्ल दशमी। २. दशहरा। दसरावो।

विजयी—(वि०) विजय करने वाला। विजयवंत। विजेता।

विजयोत्सव—(न०) विजय का उत्सव।

विजळी—(ना०) बिजली। दामिनी। खिवण।

विजाति—(ना०) १. भिन्न जाति। २. दूसरी जाति।

विजेता—(वि०) विजयी ।
विजै-थंभ—दे० विजय-स्तम्भ ।
विजैवरणी—दे० विजयवर्गी ।
विजैशाही—दे० विजयशाही ।
विजोग—(न०) १. वियोग । विरह । २. मृत्यु । मौत । ३. मृतक का शोक ।
विजोगण—(वि०) जो अपने प्रेमी से बिछुड़ी हुई हो । (ना०) वियोगी स्त्री ।
विजोगणी—दे० विजोगण ।
विजोगी—(वि०) जो अपनी प्रेमिका से बिछुड़ गया हो । वियोगी । विरही ।
विज्ञ—(वि०) १. जानकार । २. बुद्धिमान । ३. पंडित । विद्वान ।
विज्ञप्ति—(ना०) १. विनती । २. सर्व-साधारण के नाम सूचना । ३. विज्ञापन ।
विज्ञान—(न०) १. असामान्य ज्ञान । २. शास्त्रीय ज्ञान । ३. अनुभव ज्ञान । ४. ब्रह्म ज्ञान । तत्त्व ज्ञान । ५. तत्त्वों का विवेचन के एक स्वतन्त्र शास्त्र का पदार्थ-विद्या । साइन्स ।
विज्ञानिक—दे० वैज्ञानिक ।
विज्ञानी—दे० वैज्ञानिक ।
विट—(वि०) १. लंपट । कामी । २. धूर्त । चालाक । (न०) १. वैश्य । बनिया । २ भड़ुआ । ३. एक गाली ।
विटप—(न०)१. वृक्ष । रूंख । २. वृक्ष की शाखा । डाली ।
विटमणा—दे० विटंबणा ।
विटळ—(वि०) १. अपने धर्म को छोड़कर विधर्मी बनने वाला । धर्मभ्रष्ट । विगड़ेल । २. मूर्ख । ३. भ्रष्ट । ४. अपवित्र । ५. वर्णसंकर । ६. आचार रहित । ७. पंक्ति बाहर । बहिष्कृत । ८. कुमार्गी ।
विटळणो—(क्रि०) १. विधर्मी होना । २ बिगड़ना । ३. अपवित्र होना । भ्रष्ट होना । ४. धर्मभ्रष्ट होना । ५. आचार भ्रष्ट होना ।
विटळियोड़ो—(वि०) १. धर्म-भ्रष्ट । २. आचार-भ्रष्ट । ३. वर्णसंकर ।
विटव—(वि०) १. धोखाबाज । २. बद-माश ।
विटंबणा—(ना०)१. धोखा । २. भ्रम । ३. माया । ४. माया-जाळ । ५. आवा-गमन । ६ व्यर्थ विचार । विचारों का उतार-चढ़ाव । ७. परेशानी । ८. कठिनाई । मुश्किली । ९. कष्ट । दुख । संताप । १०. उपहास । विडंबना ।
विटंबणो—(क्रि०) १. आना-जाना । २. घूमना-फिरना । भटकना । ३. दुःख पाना । ४. धोखा खाना । ५. माया-जाल में फँसना ।
विटाळणो—(क्रि०) १. धर्म भ्रष्ट करना । २. अपने धर्म को छुड़ाकर अन्य धर्म को जबरदस्ती अंगीकार कराना । ३.अपवित्र करना । भ्रष्ट करना । बटाळणो ।
विट्ठल—(न०) १. श्रीकृष्ण । २. श्रीविष्णु । ३. महाराष्ट्र, आन्ध्र आदि में बहुपूजित एक विष्णु रूप । विठोबा ।
विठागर—(न०) विष्टिकार । समाधान कराने वाला । विस्टाळू ।
विठोबा—(न०) पंढरपुर के प्रसिद्ध देव श्री विट्ठल । दे० विट्ठल । सं० ३ ।
विड—(न०) शत्रु । दुश्मन ।
विडणो—(क्रि०) १. नष्ट होना । २. शत्रुता करना । ३. नष्ट करना ।
विड़द—दे० विरुद ।

विडरणो—(क्रि0) १. क्रोध करना। २. अत्यन्त क्रोध से अंटसंट बोलना। ३. तितर-बितर होना। इधर-उधर भागना। ४. कांतिहीन होना। मंद प्रकाश होना। ५. विर्दीण होना। ६. लड़ना। जूझना। ७ नाराज होना। बिगड़ना।

विडंग—(न0) १. घोडा। अश्व। २. वायविडंग नामक औषधि।

विडगाण—(न0)१ घोड़ा। २.घुड़-समूह। घोड़े।

विडंगी—(न०) १. घोडा। अश्व। (ना0) घोड़ी। अश्वी।

विडंगी-अरोहा—(न०) अश्वारोही। घुड़-सवार।

विडंब—दे0 विटंब।

विडंबणा - दे0 विटंबणा।

विडार—(न०) नाश।

विडारणो—(क्रि0) १. नाश करना। मार डालना। २. विर्दीण करना। चीर डालना। ३. भगाना। तितर-बितर करना।

विडाळ—(ना०) बिल्ली। मिन्नी। (न0) बिल्ला। मिन्नो। मीनको।

विडोजा—(न0) १. इन्द्र। २. इन्द्र का एक नाम।

विढ—(ना0) १ झगड़ा। कलह। २. लड़ाई। युद्ध।

विढणी—दे0 वेढणी।

विढणो—(क्रि0) १. लड़ना। युद्ध करना। २. तकरार करना। झगड़ना।

विढोणाद—दे0 विढोणानाद।

विढोणानाद—(न0)१ युद्ध हाक। युद्ध घोष। वीर हाक। २. रणवाद्य। युद्ध के ढोल का बजना। विढोणाव।

विढोणार—(वि0) युद्ध करने वाला। योद्धा।

विढोणो—दे० विढोणार।

विण—(सर्व0) उसने। उण। (अव्य0) बिना। बिन। रहित। बिगर।

विण-ऊपर—(अव्य0) १. इस पर। २. उस पर। ३ तत्र।

विणज—(न०) १ चावलों को खांड की चाशनी में केशर, मेवा आदि डाल कर घी में पकाया हुआ एक भोज्य पदार्थ। बिरंज। केशरी चावल। २. वनिज। वाणिज्य। व्यापार।

विणजणो—(क्रि0) १. ग्राहक को पटाना। २. व्यापार करना। रोजगार करना। वनजना।

विणज-हलीलो—(न0) व्यापार-धंधा।

विणजार—(न०) १. बनजारे की बालद। पोठ।

विणजारण —दे0 विणजारी या वणजारी।

विणजारी—(ना0) १. बनजारी। बनजारा की पत्नी। २. बनजारा जाति की स्त्री। वणजारी।

विणजारो—दे० वणजारो।

विणठ—(भू0कृ0)विनष्ट। नाश। भ्रष्ट।

विणठणो—(क्रि0)१. विनिष्ठ होना। नाश होना। २. भ्रष्ट होना।

विण-माथै—(अव्य0) १. इस पर। २. उस पर। ३. तब। (वि0) बिना सिर मस्तक रहित।

विणसणो—(क्रि०) १. विनाश होना। विनसना। नाश होना। बिगड़ना।

विणसाड़णो—(क्रि0)१. विनाश करना। विणसाणो। २. बिगाड़ना।

विणसाणो—(क्रि०) १. विनाश करना। विणसाड़णो। २. विनाश होना।

विणसीजणो—(क्रि०) नाश होना। विनाश होना।

विण-हथियारो—(वि०) नि शस्त्र। जिसके पास या हाथ मे शस्त्र न हो।

विणंज—दे० विणज या विरंज।

विणाक—(न०) १. गणपति। विनायक। २ विवाह के पूर्व विनायक पूजार्थ किया जाने वाला गुड़ का मांगलिक भोज। ३ खाती। बढ़ई।

विणायक—दे० विणाक।

विणास—(न०) १. विनाश। नाश। २. लोप।

विणासकारी—दे० विनाशकारी।

विणास-काळ—दे० विनाशकाल।

विणासणो—(क्रि०) नाश करना। विनाश करना।

विणियाणी—(ना०) १ बनिये की पत्नी। २ बनिया जाति की स्त्री। ३. वणिक स्त्री।

विणियाणी-जायो—(न०) वणिक-पुत्र। बनिया। वाणियो।

वित—(न०) १ धन। माल। रुपया-पैसा। वित्त। २ गाय, भैंस आदि पशुधन। ३. स्नेह-धन। (वि०) निपुण। चतुर।

वितरण—(न०) १. बांटना। २. अर्पण करना। देना। ३. अर्पण। दान।

वितरणो—(क्रि०) १. देना। अर्पण करना। देवणो। २ बांटना। बांटणो।

वितल—(न०) सात पातालो मे से दूसरा पाताल।

वितंड—(न०) व्यर्थ का बकवाद। वितंडा।

विताणो—(क्रि०) १. व्यतीत करना। बितोवणो। २. समाप्त करना। बिताना। ३. गुजारना। समय काटना। ४. हैरान करना। दुख देना। विताणो।

वितावणो—दे० विताणो।

वितिहोतर—(ना०) अग्नि। वीतिहोत्र।

वितीत—दे० व्यतीत।

वितुंड—(न०) १. घोड़ा। २. हाथी।

वितोवणो—दे० विताणो।

वित्त—(न०) १. धन। द्रव्य। संपत्ति। रुपया-पैसा। २. कोप। ३. गाय, भैंस आदि पशुधन। ४. स्नेह-धन। ५ शक्ति। ६. सार।

वित्थरण—(न०) विस्तरण। फैलाव।

वित्थरणो—(क्रि०) विस्तार होना। विस्तरना। फैलना।

वित्रहोत—(ना०) अग्नि। वीतिहोत्र। आग। बासदे।

वियकणो—(क्रि०) १. थकना। थाकणो। २. खूब हैरान होना। ३ थकावट दूर करना।

विथरणो—(क्रि०) १ विस्तृत होना। फैलना। पसरणो।

विथा—दे० व्यथा।

विथार—(न०) विस्तार। फैलाव। पसार। विस्तारो।

विथारक—(वि०) १. विस्तार करने वाला। २. फैलाने वाला।

विथारण—दे० विथारक।

विथारणो—(क्रि०) विस्तार करना। विस्तृत करना। फैलाना। फैलाणो। पसारणो।

विदग्ध—(वि०) १. परिपक्व। २. चतुर। निपुण। ३. विद्वान। ४. रसिक। ५. जला हुआ। (न०) पंडित।

विदमान—दे० विद्यमान।

विदर—(न०) १. दास । गोला । २. वर्णसंकर ।

विदरी—(ना०) दासी । गोली ।

विदर्भ—(न०) भारत का वरार प्रदेश ।

विदा—(ना०) १. रवानगी । प्रस्थान । २. चलने की आज्ञा या अनुमति । सीख ।

विदाई—(ना०) १. रवानगी । प्रस्थान । २ विदा होने के समय दिया जाने वाला पारितोषिक द्रव्यादि । उपहार । उपढौकन । ३. किसी की विदाई का उत्सव । ४. बरात आदि के प्रस्थान (लौटने) का समारोह ।

विदा करणो—(क्रि०) रवाना करना । सीख देणो ।

विदाम—दे० विदाम ।

विदायती—(वि०) विदा होने वाला । जाने वाला ।

विदारक—(वि०) १. मारने वाला । २. चीरने वाला । फाड़ने वाला ।

विदारणो—(क्रि०) १. चीरना । फाड़ना । टुकड़े करना । २. नाश करना । ३. मार डालना ।

विदारी-कंद—(न०) एक पौष्टिक कंद ।

विदावण—दे० वदाण ।

विदा होणो—(क्रि०) रवाना होना । सीख करणो ।

विदित—(वि०) जाना हुआ । ज्ञात ।

विदिशा—(ना०) दो दिशाओं के बीच की दिशा । २. एक नदी ।

विदीण—(वि०) चीरा हुआ । फाड़ा हुआ । विदारित ।

विदुख—दे० विदुष ।

विदुर—(न०) धृतराष्ट्र और पांडु का परम ज्ञानी व्यास पुत्र । दासी पुत्र भाई ।

विदुर-नीति—(ना०) महात्मा विदुर द्वारा धृतराष्ट्र को संबोधित करके कहा गया एक नीति ग्रन्थ ।

विदुष—(न०) विद्वान । पंडित ।

विदुषी—(ना०) विद्वान स्त्री । पंडिता ।

विदेश—(न०) अन्य देश । परदेश ।

विदेह—(न०) १. राजा जनक । २. प्राचीन मिथिला देश । ३. जो शरीर रहित हो । ४. मृत ।

विदेह-धी—(ना०) सीता । जानकी । जनक-जा ।

विदेही—(वि०) विना देह वाला । (ना०) सीता । जानकी ।

विदोख—(न०) १. महादोष । २. दोष रहित ।

विद्यमान—(वि०) १. जीवित । २. मौजूद । उपस्थित । ३. वर्तमान ।

विद्या—(ना०) १ शिक्षा द्वारा उपार्जित ज्ञान । २. मोक्ष प्राप्त करने वाला ज्ञान । ३. ज्ञान के विशेष-विशेष विभाग । ४. ज्ञान । ५. विज्ञान । ६. गुण । ७. सरस्वती । ८. दुर्गा ।

विद्या-गुरु—(न०) पढ़ाने वाला गुरु । विद्या सिखाने वाला गुरु ।

विद्या-दाता—(वि०) विद्या देने वाला । (न०) १. गुरु । २. सरस्वती ।

विद्या-दान—(न०) विद्या का दान । विद्या सिखाना ।

विद्या-देवी—(ना०) सरस्वती । शारदा । भवसोदरी । वरदा । वीणा-वादिनी ।

विद्या-धन—(न०) विद्या रूपी धन ।

विद्याधर—(न०) १. एक देवयोनि । गंधर्व २. जादूगर । (वि०) विद्वान । पंडित ।

विद्याधरी—(ना०) १. विद्याधर की स्त्री । गंधर्वी । २. जादूगरनी ।

विद्याध्ययन—(न०) विद्या की पढ़ाई। विद्याभ्यास। पढ़ाई।
विद्यापीठ—(न०) विश्वविद्यालय। युनिवर्सिटी।
विद्याभ्यास—(न०) विद्याध्ययन। शिक्षण। पढ़ाई।
विद्यारंभ—(न०) १. बालक को पढ़ाना शुरू करना। २. तत्संबंधी संस्कार।
विद्यार्थिनी—(ना०) विद्या पढ़ने वाली। विद्याभ्यासिनी। छात्रा।
विद्यार्थी—(न०) विद्या पढ़ने वाला। विद्याभ्यासी। छात्र।
विद्यालय—(न०) पाठशाला।
विद्या-वृद्ध—(वि०) खूब पढ़ा-लिखा। विद्या में श्रेष्ठ। (न०) पंडित।
विद्या-हीन—(वि०) १. नहीं पढ़ा हुआ। अपढ़। २. मूर्ख। ३. गँवार।
विद्योपासक—(वि०) विद्या का उपासक।
विद्रोह—(न०) १. बलवा। बगावत। २. द्वेष।
विद्रोही—(वि०) १. बलवाखोर। बलवाई। बगावती। बागी। २. द्वेषी।
विद्वज्जन—(न०) विद्वान मनुष्य।
विद्वत्ता—(ना०) १. ज्ञान। २. पंडिताई। पांडित्य।
विद्वान—(न०) १. पंडित। २. ज्ञानी।
विद्वेष—(न०) १. शत्रुता। २. द्वेष।
विध—(ना०) १. विधि। प्रकार। रीति। २. विधाता। ब्रह्मा। ३. उपाय। तरकीब। ४. व्यवस्था। ५. विधान। (वि०) (समास के अन्त में) प्रकार का जैसे—अनेकविध। (अव्य०) यथाविधि। विधिवत्।
विधना—(ना०) विधाता। ब्रह्मा।
विधर्म—(न०) १. विरोधी धर्म। २. दूसरे का धर्म।
विधर्मी—(वि०) १. विरोधी धर्मवाला। २ अन्य धर्मावलम्बी।
विध-लाधरण—(वि०) १. विधि से प्राप्त होने वाला। २. सरल विधि से प्राप्त होने वाला।
विधवा—(ना०) जिसका पति मर गया हो। बेवा। रांड।
विधवापणो—(ना०) वैधव्य। रंडापो।
विध-विध—(वि०) अनेक प्रकार का। (अव्य०) अनेक प्रकार से।
विधा—(ना०) १. प्रकार। भाँति। २. ढंग। ३. भेद।
विधाता—(न०) १. ब्रह्मा। (ना०) विधात्री।
विधान—(न०) १. विधि। रीति। २. व्यवस्था। ३. अनुष्ठान। ४. शास्त्राज्ञा। ५. सेवा। ६. उपाय। ७. नियम। कानून। ८. काम करने की प्रणाली। ९. हाथी का ग्रास।
विधायक—(वि०) १. व्यवस्था करने वाला। २. आज्ञा देने वाला। ३. विधान करने वाला। (न०) विधान सभा का सदस्य।
विधि—(न०) १. ब्रह्मा। २. भाग्य देवता। ३. प्रकृति। ४. शास्त्राज्ञा। ५. संस्कार। ६. कानून। ७. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने की आज्ञा दी जाती है। ८. क्रिया का कर्म। क्रिया की पद्धति। (ना०)९. भाँति प्रकार। १०. विधान। ११. विधि-विधान।
विधि-निषेध—(न०) किसी कार्य को करने या नहीं करने की शास्त्रोक्त आज्ञा।
विधि-पूर्वक—(अव्य०) १. शास्त्र विधि के अनुसार। नियमानुसार। २. कानून मुताबिक।

विधि-रानी—*(ना०)* सरस्वती ।
विधि-वत—दे० विधिपूर्वक ।
विधि-वधू—*(ना०)* सरस्वती ।
विधि-वशात —*(अव्य०)* दैवयोग से ।
विधि-विधान—*(न०)* १. विधाता की रचना । २. शास्त्राज्ञा ।
विधि-हीन—*(वि०)* १. शास्त्र-विरुद्ध । २. विधि रहित ।
विधु—*(न०)* १. चंद्रमा । २. वायु । ३. कपूर । ४. विष्णु । ५. जलस्नान ।
विधुर—*(वि०)* व्याकुल । दुखी । *(न०)* वह जिसकी पत्नी मर गई हो । रंडुआ।
विधु-वदनी—*(वि०)* चंद्रमुखी । *(ना०)* चंद्रमुखी स्त्री ।
विधूंस—*(न०)* विध्वंस । विनाश ।
विधूंसण—*(वि०)* विध्वंस करने वाला । नाश करने वाला । *(अव्य०)* नाश करने के लिए ।
विधूंसणो - *(क्रि०)* १. विध्वंस करना । नाश करना । २ मार डालना ।
विधेय—*(वि०)* १. जिसका करना उचित हो । करने योग्य । २. जो नियमानुसार किया जाय। ३. अधीन । आज्ञाधारक। ४. वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कहा जाय । उद्देश के सम्बन्ध में वाक्य में जो कहा जाय । (व्या.)
विधो-विध—*(अव्य०)* १. यथानियम । २. प्रचलित रीति के अनुसार। यथारीति । विधिपूर्वक । ३. अच्छी तरह से । यथावत । ४. ठीक जगह पर । यथा-स्थान । ५. यथायोग्य। ६. जैसा चाहिये वैसा ।
विध्रम—दे० विधर्म ।
विध्वस्त—*(वि०)* १. नष्ट । विनष्ट । २ नाश प्राप्त ।
विध्वंस—*(न०)* विनाश । नाश । बर-बादी ।
विन—दे० विन ।
विनटणो—*(क्रि०)* नाश होना । विनष्ट होना ।
विनत—*(वि०)* नम्र ।
विनता—*(ना०)* १ गरुड़ की माता । २. दक्ष की एक कन्या । ३. वनिता । स्त्री । *(वि०)* नम्र स्वभाववाली ।
विनती—*(ना०)* १. प्रार्थना । २. अनुनय-विनय ।
विनम्र—*(वि०)* १. विशेष नम्र । २. झुका हुआ । ३. विनीत ।
विनय—*(न०)* १. नम्रता । २. प्रार्थना । ३. प्रणति ।
विनय-वान—*(वि०)* १. विनयवाला । २. सभ्य । ३. शिष्ट ।
विनयी—*(वि०)* विनयशील ।
विनवणो—*(क्रि०)* १. विनती करना । प्रार्थना करना । २. अनुनय-विनय करना ।
विनसणो—*(क्रि०)* नष्ट होना । बरबाद होना ।
विनंती—*(ना०)* अर्ज । प्रार्थना ।
विना—*(अव्य०)*१. रहित । बिना । सिवाय । विना । बगर । बिगर । २. अतिरिक्त ।
विनाण—*(न०)* १. विज्ञान । २. ज्ञान । ३ उपाय । तरीका । ४. रूप । ५. चरित्र । ६. विधान । ७. विविध प्रकार । ८. प्रकार । तरह ।
विनाणी—*(न०)* सुहार । वेनाणी । वेदाणी । *(वि०)* १. ज्ञानी । २. विज्ञानी ।

विनायक—(न०) १. गणेश । गणपति । २. बढ़ई । खाती । वणाक ।

विनायक-पूजा—दे० वणाक-पूजा । गणेश-पूजा ।

विनाश—(न०) १. नाश । पूरा नाश । २. दुर्दशा । ३. अधिक हानि ।

विनाशकारी—(वि०) १. नाश करने वाला । २ दुर्दशा करने वाला । ३. हानिकारक ।

विनाश-काल—(न०) १. विनाश होने का समय । २ मृत्युकाल ।

विनाशी—(वि०) १. नाश होने वाला । नश्वर । २. नाश करने वाला ।

विनास—दे० विनाश ।

विनासणो—(क्रि०) १. विनाश करना । नाश करना । २. बिक्रन करना ।

विनिपात—(न०) १ अवनति । पड़ती । २. नाश । पतन । ३. बुरी तरह से निपात ।

विनिमय—(न०) १. अदल-बदल । परिवर्तन । २. अलग अलग देशों के सिक्कों का परस्पर लेन-देन के लिये निश्चित किया हुआ बटाव ।

विनियोग—(न०) १. किसी फल के उद्देश्य से किया जाने वाला किसी मंत्र या वस्तु का उपयोग । प्रयोग । २. स्थिरीकरण ।

विनीत—(वि०) १. सुशील । २. शिष्ट । ३. विवेकी । ४. सौम्य । ५. सुशिक्षित । ६. हाईस्कूल या विनय मंदिर के शिक्षण क्रम को पास किया हुआ । मैट्रिक पास्ड । ७. धार्मिक । दे० विनय-युक्त । नम्रतायुक्त ।

विनै—दे० विनय ।

विनोटा—दे० बींदोळियौ ।

विनोद—(न०) १. हास्य । २. मौज । आनंद । ३. मजाक । हँसी । प्रमोद । ४. कौतूहल । तमाशा । ५. प्रसन्नता ।

विनोदी—(वि०) १. कुतूहल करने वाला । विनोद करने वाला । २. मौजी । ३. आनंदी । क्रीड़ाशील । विनोद वाला ।

विनोळियौ—(ना०व०व०) दे० बींदोली ।

विनोळी—दे० बंदोळी । दे० बींदोली ।

विन्यास—(न०) १. स्थापन । २. सजाना ।

विपक्ष—(न०) १. दूसरा पक्ष । २. शत्रु-पक्ष । ३. विरोधी । प्रतिद्वन्द्वी ।

विपक्षी—(न०) १. विरोधी । २. शत्रु । ३. प्रतिद्वन्द्वी ।

विपख—दे० विपक्ष ।

विपच्छ—दे० विपक्ष ।

विपणक—(न०) दूकानदार । बनिया ।

विपणी—(न०) दूकान । हाट ।

विपत—दे० विपत्ति ।

विपता—दे० विपत्ति ।

विपतकाळ—(न०) दुख का समय । विपत्काल ।

विपत्ति—(ना०) १. संकट दुख । आफत । २. दुख की स्थिति । विपत ।

विपथ—(न०) कुमार्ग । बुरा मार्ग ।

विपद—दे० विपदा ।

विपदा—दे० विपत्ति ।

विपन्न—(वि०) १. कठिनाई में फँसा हुआ । २. आर्त । दुखी । ३. मरा हुआ ।

विपर—दे० विप्र ।

विपरीत—(वि०) १. विरुद्ध । प्रतिकूल । २. उलटा । ऊंधो ।

विपर्यय (न०) १. उलट-पुलट । २. भ्रम । ३. भूल । गलती । ४. अव्यवस्था । ५. नाश । ६. किसी शब्द का उलटा रूप । ७. किसी शब्द का उलटा अर्थ प्रगट करने वाला शब्द । विपर्याय ।

विपल—*(न०)* एक पल का साठवाँ भाग।
विपाक—*(न०)* १. परिपक्वता। २. पूरी अवस्था में पहुंचना। ३. परिणाम। फल। ४. स्वाद। सवाद। ५. पाचन। पचना। ६. पूर्णता।
विपिन—*(न०)* जंगल। वन।
विपिन-विहारी—*(न०)* श्रीकृष्ण। *(वि०)* जंगल में विहार करने वाला।
विपुल—*(वि०)* १. विशाल। अगाध। २ पुष्कल। बहुत अधिक। घणो।
विपुला—*(ना०)* १. एक छंद। २. पृथ्वी।
विप्र—*(न०)* १. ब्राह्मण। बामण। २. पुरोहित। ३. वेद मंत्रों का ज्ञाता। *(वि०)* बुद्धिमान।
विप्रलंभ—*(न०)* १. वियोग। विरह। २. प्रिय वस्तु का न मिलना। ३ प्रेमियो का वियोग। ४. छल। धूर्तता। ठगाई। ५. बुरा काम।
विप्लव—*(वि०)* १. उपद्रव। अशांति। २. विद्रोह। बलवा। ३. विपत्ति। ४. नाश।
विप्लवी—*(वि०)* १. उपद्रव करने वाला। २. विद्रोही।
विफरणो—दे० वीफरणो।
विफल—*(वि०)* निष्फल। व्यर्थ।
विफळ—दे० विफल।
विबुद्ध—*(वि०)* १. जाग्रत। जगा हुआ। २ प्रवीण। चतुर। ३. चेतन। *(न०)* १. देवता। २. पंडित। ३. विद्वान।
विबुध—*(न०)* १. ज्ञानी। २ पंडित। ३. देव। ४. शिव। ५. चंद्रमा।
विबुधालय—*(न०)* देव मंदिर। देवालय।
विबोध—*(न०)* १. पूरा ज्ञान। २. जाग-रण। ३. होश-हवास।
विभक्त—*(वि०)* १. विभाजित। बाँटा हुआ। २. अलग किया हुआ।
विभक्ति—*(ना०)* १. नाम का क्रिया के साथ संबंध दिखाने वाला प्रत्यय। २ (व्या०) कारको के चिन्ह। (व्या) ३. विभक्त होने का भाव। ४ विभाग। ५. अलगाव।
विभचार—दे० व्यभिचार।
विभचारी—दे० व्यभिचारी।
विभव—*(न०)* १. वैभव। ऐश्वर्य। २. धन। सम्पत्ति। ३. शक्ति। ४. सौंदर्य। ५. साठ संवत्सरो में से एक। ६ निर्वाण। मोक्ष।
विभा—*(ना०)* १. प्रकाश। २. किरण। ३ शोभा। ३. प्रभा।
विभाकर—*(न०)* १. सूर्य। २ अग्नि। ३. राजा।
विभाग—*(न०)* २. भाग। हिस्सा। बंट-वारा। १. अंश। ३. पुस्तक का प्रकरण। अध्याय। ४ सुभीते के लिए कार्य का अलग। किया हुआ क्षेत्र। ५ महकमा। ६ कार्य क्षेत्र। ७ सीगा। ८. मद्द।
विभाजक—*(वि०)* १. विभाग करने वाला। २. वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्या को भाग दिया जाय। (गणित)।
विभाज्य—*(वि०)* १. विभाग करने योग्य। २. बाँटा जाने योग्य।
विभाड़—*(न०)* नाश। ध्वंस।
विभाड़णो—*(क्रि०)* १. नाश करना। मारना। २. तोड़ना। ३. भागना। तितर-बितर कर देना।
विभावना—*(न०)* एक अर्थालंकार। (साहि.)।
विभावरी—*(ना०)* १. रात्रि। रात। २. हल्दी। ३ दूती।
विभास—*(ना०)* एक राग। २. प्रकाश। चमक।
विभीखण—दे० विभीषण।
विभीषण—*(न०)* रावण का भाई।

विभु—*(वि०)* १. सर्वव्यापी। २. नित्य। ३. अचल। ४ शक्तिमान। समर्थ। ५. महान। ६. श्रेष्ठ। *(न०)*१. आत्मा। २. परमात्मा। ३. ब्रह्मा। ४. शिव। ५ प्रभु। स्वामी ६. जीवात्मा।

विभुता—*(ना०)* १ सर्वव्यापकता। २. प्रभुता। ३. ऐश्वर्य।

विभूति—*(ना०)* १. ऐश्वर्य। विभव। २. धन-संपत्ति। अलौकिक शक्ति। ४. प्रभुता। महत्ता। ५. सामर्थ्य। ६. भस्म। ७. शिव के अंग मे लगाने की भस्म। भभूत।

विभेदणो—*(क्रि०)* १. भेदन करना। २. नाश करना। ३ तोड़ना।

विभो—*(न०)* १. कृषक का गाय, भैंस, बैल, खेती आदि धन। २. खेती बाड़ी का काम। भंभो। ३. कृषि। खेती। ४ धंधा। कारोबार। काम-धंधा। ५. वैभव। विभव। ऐश्वर्य। साहिबी।

विभोर—*(वि०)* १. विह्वल। २. लीन। ३. मस्त।

विभ्रम—*(न०)* १. संशय। २ भ्रांति। ३. घबराहट। ४. स्त्रियों का एक भाव जिसमे प्रियतम को देखकर हर्ष के मारे गहने उलटे-सुलटे पहिन लेती है। (साहि) ५. विलास-युक्त हावभाव।

विभ्रांत—*(वि०)* १. भ्रमित। २. घबराया हुआ।

विमणो—दे० विमनो।

विमनो—*(वि०)* १. उदास। २. नाराज। ३. बिना मन का। विमणो।

विमर—दे० विमर।

विमर्श—*(न०)* १. विचार। २. समीक्षा। आलोचना। ३. विवेचन। ४. परामर्श। ५. अधीरता। ६ संशय। ७. क्षमा। का अभाव।

विमल—*(वि०)* १. मल-रहित। विमल। निर्मल। २. स्वच्छ। ३. निष्कलंक। विमळ। ४. शुद्ध।

विमळ—दे० विमल।

विमाण दे० विमान।

विमाता—*(ना०)* सौतेली माता। मां की सौत। मांई-मां।

विमान—*(न०)* १. हवाई जहाज। विमाण। २. उड़न-खटोला।

विमाळ—*(न०)* १. निस्तेज। निर्माल। २. निरुपाय।

विमास—*(न०)* १. विचार। २. विमर्श। ३. पश्चाताप। ४. उलझन (मनकी)।

विमासणो—*(क्रि०)* १. विचार करना। २. विमर्श करना। ३. पश्चाताप करना। पछताना। ४. चिंता करना। ५. विचारो मे उलझना।

विमाह—दे० विवाह।

विमुक्त—*(वि०)* १. छूटा। बरी। मुक्त। २. त्यक्त। ३. स्वतन्त्र। ४. स्वच्छंद। ५. दंडमुक्त। ६. निवृत।

विमुख—*(वि०)* १. प्रतिकूल। विरुद्ध। २. पराङ्मुख। ३. विरक्त। उदासीन।

विमुग्ध—*(वि०)* १. आसक्त। मोहित। २. भ्रांत। ३. घबराया हुआ। ४. पागल।

विमुहा-खड़णो—*(मुहा०)* १. विरुद्ध चलना। २. प्रतिकूल व्यवहार करना। ३. लौट जाना।

विमुहो—*(वि०)* १. विमुख। विरुद्ध। प्रतिकूल। २. पराङ्मुख। विमुख।

विमूढ—*(वि०)* १. विशेष रूप से मोहित। २. बेसुध। ३. ज्ञानरहित। ४. नादान। ५. मूर्ख। नासमझ।

विमेक—दे० विवेक ।

विमोचन—(न०) १. छुटकारा । मुक्ति । २. बंधन आदि से छूटना । ३. अभियोग से मुक्त होना ।

विमोह—(न०) १. मोह । अज्ञान । २. भ्रांति । ३. विशेष मोह ।

विमोहणो—(क्रि०) मोहित करना ।

विमोहन—(न०) १. कामदेव का एक बाण । २. आकर्षण ।

विमोहित—(वि०) मोहित । आसक्त ।

विमोही—(वि०) १. मोहित करने वाला । २. प्रेमी ।

वियान—दे० विस्यान ।

वियापक—दे० व्यापक ।

वियापणो—दे० व्यापणो ।

वियावणो—दे० व्यावणो ।

वियावर—दे० व्यावर ।

वियोग—(न०) १. अलग होना । २. अलग होने का दुख । ३. विरह । ४. प्रेमियों के बिछुड़ने की अवस्था या भाव । ५. अलगाव । ६. विरह-वेदना । दे० विजोग ।

वियोगांत—(वि०) जिसका अंत प्रेमियों के वियोग से हो (कथा, काव्य आदि)।

वियोगिनी—(वि०) पति या प्रेमी से बिछुड़ी हुई (स्त्री या नायिका) ।

वियोगी—(वि०) १. प्रेमिका से बिछुड़ा हुआ । २. विरही । (न०) विरही व्यक्ति ।

विरकत—दे० विरक्त ।

विरक्त—(वि०) १. उदासीन । २. अप्रसन्न । खिन्न । ३. आसक्ति रहित । ४. विमन । ५. उदास । खिन्न ।

विरक्ति—(ना०) १. उदासीनता । २. अनासक्ति । ३. खिन्नता ।

विरख—(न०) १ वृक्ष । रूंखड़ो । २. वृष । वृषभ । बैल ।

विरखा—(ना०) वर्षा । मेह ।

विरचणो—(क्रि०) १. बाँटना । भाग करना । २. निर्माण करना । ३. सजाना ।

विरज—(वि०) १. रज-रहित । २. पवित्र । (न०) वीर्य । २ व्रज ।

विरड़णो—(क्रि०) क्रोध करना ।

विरत—(वि०) १. जो प्रवृत्त न हो । २. अनमना । उदास । ३. किसी काम से हाथ खींच लेना । ४. विमुख । ५. निवृत्त । ६. विरक्त । ७. पूजा-पाठ, विवाह आदि करने-कराने की पुरोहिती । गाँव गुरु या पुरोहित का बँधा हुआ वक्त काम । वृत्ति ।

विरत-वाड़ी—(ना०) विरत का काम । वृत्ति । दे० व्रतवाड़ी ।

विरत-वाळी—दे० व्रतेसरी ।

विरतंत—दे० वृत्तांत ।

विरतियो—दे० व्रतेसरी ।

विरती—दे० वृत्ति ।

विरतेसरी—दे० व्रतेसरी ।

विरथ—दे० बिरथा ।

विरथा—(वि०) वृथा । व्यर्थ । फालतू । निरर्थक । (क्रि०वि०) १. बिना जरूरत या प्रयोजन के । २. मूल से । ३. मूर्खता से ।

विरद—(वि०) १. यश । कीर्ति । २. विरुद । गुण । ३. ख्याति । ४ सिद्धि । (वि०) बिना दाँतों वाला ।

विरद-भलू—(वि०) १. विरदधारी । २. यशस्वी । कीर्तिमान ।

विरद-पगार—(वि०) अनेक विरद धारण करने वाला । यशस्वी ।

विरद-पत—दे० विरुद-पति ।

विरद-वड़ी—वरद-वड़ी । विरध-वड़ी ।

विरदाणो—(क्रि०) १. प्रशंसा करना । २. यशगाना । ३. खुशामद करना । चापलूसी करना । वड़दावणो ।

विरदायक—(वि०) विरुद वाला । विरुदायक ।

विरदाळ—दे० विरुदाळ ।

विरदाळो—दे० विरुदाळ ।

विरदाव—(न०) १. विरुद-वचन । २. वरद-वचन । ३ आशीर्वाद । (अव्य०) कल्याणमस्तु । स्वस्ति । बरदाव ।

विरदावणो—दे० विरदाणो ।

विरदावळी—दे० विरुदावली ।

विरदेत—(वि०) १. विरुद-वाला । विरुद-धारी । २. कीर्ति वाला । ३. विरुद बखानने वाला । (न०) १. चारण । २. भाट । ३. ढाढी ।

विरध—(वि०) वृद्ध । बूढ़ा । डोकरो । (न०) १. विवाहादि के कार्यारंभ में संपादन किया जाने वाला वृद्धि रूप मंगलोत्सव । २. विवाहोत्सव । ३. विवाह में वृद्धि की कामना का मंगल लोकगीत । वरध । बरद ।

विरध-वड़ी—(अव्य०) १. विवाह के प्रारंभिक मांगलिक कार्यों की एक विधि या प्रथा जो मूंग की बरी (मुंगोड़ी) बनाकर मनाई जाती है । २. विरध-वड़ी के बनाने के समय गाया जाने वाला मंगलगीत । बरद-वड़ी ।

विरधी—(ना०) १. वृद्धि । बढती । २. विवाह, जनेऊ आदि संस्कारों में मनाया जाने वाला वृद्धि का एक मंगलोत्सव ।

विरमाणो—(क्रि०) १. त्यागना । २. मरना । ३. विराम करना । आराम करना । ४. अटकना । रुकना ।

विरमो—(न०) १. एक वस्त्र । २. कीमती दुशाला ।

विरल—दे० विरलो ।

विरळ—दे० विरलो ।

विरळणो—(क्रि०) १. बिखेरना । छितराना । २. भगाना । ३. अलग-अलग करना । ४. बिगड़ना । भ्रष्ट होना । पतित होना ।

विरलो—(वि०) १. कोई सा ही । कोई ही । २. जो अधिकता से न मिले । ३. जो घना न हो । ४. विरल । दुर्लभ । ५. अल्प ।

विरस—(न०) १. मनोमालिन्य । २ शत्रुता । वैर । ३. रसभंग । ४. लड़ाई । कजियो । (वि०) १. रस-रहित । नीरस । २. स्वाद-रहित । ३. अरुचिकर । ४. बे-मुहब्बत । स्नेहाभाव ।

विरसणो—(क्रि०) १. शत्रुता करना । वैर मोल लेना । २. लड़ाई करना ।

विरह—(न०) १. वियोग । विजोग । जुदाई । २. दुख । ३. प्रियजन का वियोग । ४. वियोग में अनुभव होने वाला अनुराग ।

विरहणी—(वि०) वियोगिनी । विजोगण । जिसे अपने प्रेमी या पति का वियोग हुआ हो । प्रिय के वियोगवाली । विरहिणी ।

विरह-विजोग—दे० विरह वियोग ।

विरह-वियोग—(न०) १. प्रिय व्यक्ति का वियोग । २. वियोग का दुख ।

विरह वीर—(न०) बलराम । बलिभद्र ।

विरहाग्नि—(ना०) विरह रूपी अग्नि ।
विरहातुर—(वि०) विरह से व्याकुल बना हुआ ।
विरहानल—दे० विरहाग्नि ।
विरही—(वि०) विरहवाला । वियोगी ।
विरंग—दे० विरंगो ।
विरंगो—(वि०) १. बिना रंग का । २. बदरंग । ३. अनेक रंगों वाला ।
विरंच—दे० विरंची ।
विरंची—(न०) विरंचि । ब्रह्मा ।
विरंज—(न०) १. चावलों का बनाया जाने वाला एक मधुरान्न । बिरंज । २. चावल डाल कर बनाया हुआ एक माँस खाद्य ।
विरडी—दे० बंडी । (ना०) एक प्रकार की शराब । ब्रांडी ।
विरंडो—दे० वरडो ।
विराग—(न०) १. वैराग्य । २. उदासीन भाव । ३. इच्छा का अभाव । रुचि का अभाव ।
विरागी—दे० वैरागी ।
विराज—(न०) १. सम्राट । २. राजा । ३. एक वैदिक छंद । ४. शोभा । ५. निवास । (वि०) नाराज ।
विराजणो—(न०) निवास । निवास स्थान । (क्रि०) १ बैठना । विराजना । २. शोभा देना । फबना । ३. प्रकाशमान होना । ४. निवास करना । रहना ।
विराज-मान—(वि०) १. शोभित । शोभायमान । २. प्रतिष्ठित । स्थापित । ३. उपस्थित । विद्यमान । ४. बैठे हुये (आदरसूचक, बहुवचन रूप में) ।
विराजो—दे० मैराजो ।
विराट—(वि०) १. विशाल । बहुत बड़ा । २. बहुत भारी । (न०) १. विश्वरूप ब्रह्म । २. विश्व । ३. जयपुर जिले के प्रसिद्ध, प्राचीन ऐतिहासिक नगर । वैराट ।
विराट नगर—(न०) जयपुर जिले का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर 'वैराट' का महाभारत कालीन नाम ।
विराड़—(न०) १. भागीदारी । २. शांति । ३. मैत्री । ४. दरार । तेड़ । ५. विमर । ६. दर । बिल । घर । ७. घाव । ८. महसूल । वराड़ ।
विराणो—(वि०) अन्य । दूसरा । पराया । बिराना । पारको । परायो ।
विरादरी—दे० बिरादरी ।
विराम—(न०) १. विश्राम । आराम । अवकाश । २. अन्त । अवसान । मृत्यु । मिरतू । ३. वाक्य में वह स्थान जहाँ बोलते समय थोड़ा ठहरना पड़ता है । ४. पद्य की पंक्ति में यति या ठहराव (काव्य) । ५. चित्रकारी । ६. मीनाकारी ।
विराम-चिन्ह—(न०) १ वाक्य या पद्य में पढ़ते समय ठहरने का निशान । २. वाक्य के बीच में या अंत में प्रयुक्त , ; । ? . — इत्यादि चिन्ह ।
विरामणो—(क्रि०) १ मरना । मरणो । २. रुकना । अटकना । ३. विश्राम करना । ४. मारना । मारणो ।
विराळ—(न०) १. गहन विचार । २. नाश । संहार । विरोळ ।
विरासत—(ना०) १. उत्तराधिकार । २. उत्तराधिकार में मिलने वाली सम्पत्ति इत्यादि । वरासत ।
विरियाळी—(ना०) सौंफ । मूंफ । वरियाळो ।
विरियाँ—(ना०) १. वेला । समय । २ विलंब । देरी ।

विरद-पत—दे० विरद-पति।

विरद-वड़ी—बरद-वड़ी। विरध-वड़ी।

विरदाणो—(क्रि०) १. प्रशंसा करना। २. यशगाना। ३. गुणानुवाद करना। चापलूसी करना। बड़बावणो।

विरदायक—(वि०) विरद वाला। विरदा-यक।

विरदाळ—दे० विरदाळ।

विरदाळो—दे० विरदाळ।

विरदाव—(न०) १. विरद-वचन। २. वरद-वचन। ३. आशीर्वाद। (अव्य०) कल्याणमस्तु। स्वस्ति। वरदाय।

विरदावणो—दे० विरदाणो।

विरदावळी—दे० विरदावली।

विरदेत—(वि०) १. विरद-वाला। विरद-धारी। २. कीर्ति वाला। ३. विरद बखानने वाला। (न०) १. चारण। २. भाट। ३. ढाढ़ी।

विरध—(वि०) वृद्ध। बूढ़ा। डोकरो। (न०) १. विवाहादि। के कार्यारंभ में संपादन किया जाने वाला वृद्धि रूप मंगलाराव। २. विवाहोत्सव। ३. विवाह में वृद्धि की कामना का मंगल लोकगीत। वरध। वरद।

विरध-वड़ी—(अव्य०) १. विवाह के प्रारंभिक मांगलिक कार्यों की एक विधि या प्रथा जो मूंग की बरी (मुंगोड़ी) बनाकर मनाई जाती है। २. विरध-वड़ी के बनाने के समय गाया जाने वाला मंगलगीत। वरद-वड़ी।

विरधी—(ना०) १. वृद्धि। बढ़ती। २. विवाह, जनेऊ आदि संस्कारों में मनाया जाने वाला वृद्धि का एक मंगलोत्सव।

विरमाणो—(क्रि०) १. त्यागना। २. मरना। ३. विराम करना। आराम करना। ४. अटकना। रुकना।

विरमो—(न०) १. एक वाद्य। २. कीनतो दुनाला।

विरल—दे० विरलो।

विरळ—दे० विरलो।

विरळणो—(क्रि०) १. बिखेरना। छित-राना। २. भगाना। ३. अलग-अलग करना। ४. बिगड़ना। भ्रष्ट होना। पतित होना।

विरलो—(वि०) १. कोई सा ही। कोई ही। २. जो अधिकता से न मिले। ३. जो घना न हो। ४. विरल। दुर्लभ। ५. अल्प।

विरस—(न०) १. मनोमालिन्य। २. शत्रुता। वैर। ३. रसभंग। ४. लड़ाई। कजियो। (वि०) १. रस-रहित। नीरस। २. स्वाद-रहित। ३. अरुचिकर। ४. बे-मुहब्बत। स्नेहाभाव।

विरसणो—(क्रि०) १. शत्रुता करना। वैर मोल लेना। २. लड़ाई करना।

विरह—(न०) १. वियोग। विजोग। जुदाई। २. दुख। ३. प्रियजन का वियोग। ४. वियोग में अनुभव होने वाला अनुराग।

विरहणी—(वि०) वियोगिनी। विजोगण। जिसे अपने प्रेमी या पति का वियोग हुआ हो। प्रिय के वियोगवाली। विरहिणी।

विरह-विजोग—दे० विरह वियोग।

विरह-वियोग—(न०) १. प्रिय व्यक्ति का वियोग। २. वियोग का दुख।

विरह वीर—(न०) बलराम। बलिराज।

विरहाग्नि—(ना०) विरह रूपी अग्नि।
विरहातुर—(वि०) विरह से व्याकुल बना हुआ।
विरहानल—दे० विरहाग्नि।
विरही—(वि०) विरहवाला। वियोगी।
विरंग—दे० विरगो।
विरगो—(वि०) १. बिना रंग का। २. बदरंग। ३. अनेक रंगो वाला।
विरंच—दे० विरंची।
विरंची—(न०) विरंचि। ब्रह्मा।
विरंज—(न०) १. चावलों का बनाया जाने वाला एक मधुरान्न। बिरंज। २. चावल डाल कर बनाया हुआ एक माँस खाद्य।
विरडी—दे० वंडी। (ना०) एक प्रकार की शराब। आडी।
विरंडो—दे० वरडो।
विराग—(न०) १. वैराग्य। २. उदासीन भाव। ३. इच्छा का अभाव। रुचि का अभाव।
विरागी—दे० वैरागी।
विराज—(न०) १. सम्राट। २. राजा। ३. एक वैदिक छंद। ४. शोभा। ५. निवास। (वि०) नाराज।
विराजणो—(न०) निवास। निवास स्थान। (क्रि०) १ बैठना। विराजना। २. शोभा देना। फबना। ३. प्रकाशमान होना। ४. निवास करना। रहना।
विराज-मान—(वि०) १. शोभित। शोभायमान। २. प्रतिष्ठित। स्थापित। ३. उपस्थित। विद्यमान। ४. बैठे हुये (आदरसूचक, बहुवचन रूप मे)।
विराजी—दे० वैराजी।
विराट—(वि०) १. विशाल। बहुत बड़ा। २. बहुत भारी। (न०) १. विश्वरूप ब्रह्म। २. विश्व। ३. जयपुर जिले के प्रसिद्ध, प्राचीन ऐतिहासिक नगर। वैराट।
विराट नगर—(न०) जयपुर जिले का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर 'वैराट' का महाभारत कालीन नाम।
विराड़—(न०) १. भागीदारी। २. शांति। ३. मैत्री। ४. दरार। तेड़। ५. विमर। ६. दर। बिल। घर। ७. घाव। ८. महसूल। बराड़।
विराणो—(वि०) अन्य। दूसरा। पराया। बिराना। पारको। परायो।
विरादरी—दे० बिरादरी।
विराम—(न०) १. विश्राम। आराम। अवकाश। २. अन्त। अवसान। मृत्यु। मिरतु। ३. वाक्य में वह स्थान जहाँ बोलते समय थोडा ठहरना पड़ता है। ४. पद्य की पंक्ति मे यति या ठहराव (काव्य)।५. चित्रकारी। ६. मीनाकारी।
विराम-चिन्ह—(न०) १. वाक्य या पद्य में पढ़ते समय ठहरने का निशान। २. वाक्य के बीच मे या अंत मे प्रयुक्त, ; ।? . — इत्यादि चिन्ह।
विरामणो—(क्रि०)१ मरना। मरणो। २. रुकना। अटकना। ३. विश्राम करना। ४. मारना। मारणो।
विराळ—(न०) १. गहन विचार। २. नाश। संहार। विरोळ।
विरासत—(ना०) १. उत्तराधिकार। २. उत्तराधिकार में मिलने वाली सम्पत्ति इत्यादि। वरासत।
विरियाळी—(ना०)सोफ। सूंफ। वरियाळी।
विरियाँ—(ना०) १. वेला। समय। २. विलंब। देरी।

बिरुद—(न०) १. यश। कीर्ति। २. गुण, प्रताप, उदारता इत्यादि का बखान। यश वर्णन। ३. श्रेष्ठता। ४. पदवी। ५. ख्याति।

बिरुद पति— (न०) १. अनेक बिरुद (गुणों को) धारण करने वाला यशस्वी पुरुष। बिरुदपति। २. बिजयी पुरुष।

बिरुदाणो—(क्रि०) १. प्रशंसा करना। २. खुशामद करना।

बिरुदायक—दे० बिरदायक।

बिरुदाळ—(वि०) १. बिरुद वाला। २. कीर्तिमान। ३. पदवीधारी।

बिरुदावणो—(क्रि०) बिरदाणो।

बिरुदावळी—(ना०) बिरुदों या पदवियों का विस्तारपूर्वक वर्णन या संग्रह। गुणावली।

बिरुद्ध—(वि०) १. विपरीत। प्रतिकूल। २. रुष्ट। खिन्न। (अव्य०) १. मुकाबले में। २. विरोध में। ३. सामने।

बिरूप—(वि०) कुरूप। बदसूरत। कबरूपो।

बिरेचन—(न०) जुलाब।

बिरोध—(न०) १. आपत्ति। २. विपक्षता। ३. शत्रुता। ४. कलह। झगड़ा। ५. रुकावट। व्याघात।

बिरोधाभास—(न०) १. दो बातों में दिखाई देने वाला विरोध। २. एक अर्थालंकार।

बिरोधी—(वि०) १. विरोध करने वाला। २. वैरी। शत्रु। ३. विपक्षी। ४. प्रतिद्वन्द्वी।

बिरोधणो—(क्रि०) १. विरोध करना। निषेध करना। २. रुकावट डालना।

बिरोळ—(न०) १. नाश। नष्ट। २. गंभीर विचार।

बिरोळणो—(क्रि०) १. निर्णयार्थ मन में विचार करना। २. बार-बार सोचना या विचार करना। ३. जाँच करना। तपासना। परीक्षा करना। ४. बिखेरना। छितराना। ५. नाश करना। संहार करना।

बिलकुल—दे० बिलकुल।

बिळकुळणो—(क्रि०) १. व्याकुल होना। घबरा जाना। २. लालायित होना। ३. आतुर होना। ४. अधीन होना। ५. क्रोध से लाल पीला होना। ६. तड़फड़ाना। छटपटाना। ७. दुखी होना। ८. उत्तम। श्रेष्ठ।

बिलक्षण—(वि०) १. विशेष लक्षणों से युक्त। विशेष लक्षणों वाला। २. असाधारण। ३. अद्भुत। ४. विशिष्ट। ५. विचित्र।

बिलखणो—(वि०) १. कुलक्षणों वाला। कुलखणो। २. विलक्षण गुण वाला। सुलखणो। ३. व्याकुल। उदास। बिलखो। (क्रि०) १. रोना। बिलखना। विलाप करना। २. उदास होना। ३. दुखी होना। ४. व्याकुल होना।

बिलखो—(वि०) १. दुखी। २. उदास। ३. व्याकुल।

बिलग—(वि०) १. अलग। पृथक। जुदा। अळगो। वेगळो। २. लगा हुआ। चिपका हुआ। चिपियोड़ो।

बिलगणो—(क्रि०) १. चिपकना। लिपटना। बिलगना। २. दूर होना। ३. अलग होना।

बिलगाणो—(क्रि०) १. विलग्न करना। बिलगाना। २. लिपटाना। चिपटाना।

चेपणो । ३ दूर करना । अलग करना ।

विलगावणो—दे० विलगाणो ।

विलच्छण—दे० विलक्षण ।

विलच्छणो—दे० विलक्षण ।

विलज—*(वि०)* निर्लज्ज । विलजो ।

विलजो—दे० विलज ।

विलपणो—*(क्रि०)* विलाप करना । रोना ।

विलम—*(न०)* १. विलंब । देर । मोड़ो । २. मोह । ३. आकर्षण । *(वि०)* १. २. मोहित । आकर्षित ।

विलमणो—*(क्रि०)* १. मोहित होना । २. आकर्षित होना । ३. विलंब होना । देर होना । ४. ललचाना । ५. उत्साहित होना । ६. विफल होना । ७. गद्-गद् होना । ८. प्रसन्न होना । खुश होना । ९. हर्षित होना ।

विलमाणो—दे० विलमावणो ।

विलमायोड़ो—*(वि०)* १. मोहित । मुग्ध । २. स्नेहाधीन । ३. आकर्षित । ४. अभिभूत ।

विलमावणो—*(क्रि०)* १. मोहित करना । मुग्ध करना । २. आकर्षित करना । ३. मोहित होना । ४. आकर्षित होना । ५. मीठी बातों से वश में कर लेना । अभिभूत करना । विलमाना । ६. हर्षाना । हर्षित करना । राजी करना ।

विलय—*(न०)* १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु में समा जाना । २. लीन होना । ३. घुल जाना । ४. विघटित होना । ५. घुलमिल जाना । ६. छोटे राज्य का बड़े राज्य में मिल जाना । ७. आत्मा का परमात्मा में मिल जाना । ८. सृष्टि का मूल तत्वों में मिल जाना । प्रलय । ९. ध्वंस । नाश । १०. मृत्यु ।

विलळो—*(वि०)* १. भद्दा । खराब । २. अवांछनीय । बेहूदा । ३. आचार । भ्रष्ट । पतित । ४. गंदा । मैला-कुचेला । ५. हर समय खाने को ललचाने वाला । लोलुप । ६. व्यर्थ ।

विळविळाट—*(न०)* १. विलाप । रुदन । बळवळाट । २. वियोग जनित-विलाप । ३. रुदन ।

विलस—*(न०)* १. शोभा । २. विलास । ३. आनन्द । मोज ।

विलसणो—*(क्रि०)* १. उपभोग करना । आनंद से भोगना । २. विलास करना । आनद करना । ३ शोभा पाना । फबना । ४. भोगना ।

विलंग—दे० विलंगणी ।

विलंगड़ी—दे० विलंगणी ।

विलंगणी—*(ना०)* १. कपड़े टांगने की तनी । अरगनी । तणी । अळगणी । २. टांड । पछीत । टांस ।

विलद—दे० बुलंद ।

विलंब—*(न०)* देर । वार । ढील । मोड़ो ।

विलंबणो—*(क्रि०)* १. विलंब करना । २. देर करना । ३. देर होना । मोड़ो हुणो । दे० विलमणो ।

विलाग—दे० वेलाग ।

विलागणो—*(क्रि०)* दे० विलगणो ।

विलाणो—*(क्रि०)* १. विलीन होना । २. नष्ट होना । विलाना । ३. लुप्त होना । ४. मरना ।

विलाप—*(न०)*१. बिलख-बिलखकर रोना । २. रुदन । रोना । ३. क्रंदन ।

विलाप करणो—*(क्रि०)* १. बिलख-बिलख कर रोना । क्रदन करना । रोना । २. दुख करना ।

विलापणो— दे० विनाश करणो ।

विलापात—(न०) १. रोना-धोना । २ आत्मीय के वियोग का रुदन । ३. वियोग दुख के कारण निरन्तर बना रहने वाला रुदन । विलाप ।

विलाय जाणो—दे० विलाणो ।

विलायत—(न०) १. समुद्र पार का देश । २. यूरोप । ३. इंगलैण्ड । ४ विदेश । ५. यूरोप का कोई देश । ६. सात विलायतों में से कोई एक ।

विलायती—(वि०) १. विलायत का । २. विलायत का रहने वाला । ३. विलायत का बना हुआ । ४. विलायत संबंधी । ५. विदेशी ।

विलालो—(वि०) १. शौकीन । २ मौजी । ३. रसिक । ४. उदार । ५. मजाकी । परिहास-प्रिय । दिल्लगीबाज । ६. खुश-मिजाज ।

विलायणो—दे० विलाणो ।

विलावल—(ना०) एक राग (संगीत) । बिलावल ।

विलास—(न०) १. प्रेम-क्रीड़ा । क्रीड़ा । २. सुख-भोग । ३. शृंगार-चेष्टा । ४. स्त्री-प्रग की कामोत्तेजक चेष्टाएं । ५. आनंद । हर्ष । ६. मनोरंजन । विनोद । ७. शृंगार-क्रीड़ा । ८. मोहक हाव-भाव । ९. खेल ।

विलासणो—(क्रि०) १. प्रेम-क्रीड़ा करना । २. मनोरंजन करना । ३. कामोत्तेजक चेष्टाएं करना । ४. उपभोग करना ।

विलासी—(वि०) १. कामासक्त । विषयी । कामुक । विषयासक्त । २. भोगी । ३. प्रवृत्तिवाला । ४. मौजी । आनंदी ।

विळिया—दे० वेळा ।

विलीन—(वि०) १. पूरी तरह से लीन । २. अदृश्य । लुप्त । गायब । ३. गुप्त । ४. नष्ट । ५. मृत ।

विलुप्त—(वि०) १. लुप्त । २. नष्ट । ३. अदृश्य । गायब ।

विलुब्ध—(वि०) १. मोहित । आसक्त । २. लिपटा हुआ । चिपटा हुआ । ३. आलिंगन किया हुआ । ४. विशेष प्रकार से लुब्ध । ५. लुभाया हुआ ।

विलूमणो—दे० विलूंबणो ।

विळूंधणो—(क्रि०) १. घेरा लगाना । २. विलुब्ध होना । ३. आसक्त होना । ४. आश्रित होना ।

विलूंबणो—(क्रि०) १. विलुब्ध होना । आसक्त होना । लुभाना । २. लीन होना । ३. लिपटना । ४. गलबहियां लेना । गले लगना । आलिंगन करना । ५. लहराना । झूमना ।

विलूंबो—(वि०) १. आसक्त । २ लीन । ३ लिपटा हुआ । (भू०क्रि०) लिपट गया ।

विलै—दे० विलय ।

विलोकणो—(क्रि०) १. देखना । २. जांचना । परीक्षा करना । अवलोकन करना । ३. कृपा दृष्टि रखना ।

विलोचन—(ना०) १. आंख । नेत्र । लोचन । २. दृष्टि । (वि०) लोचन रहित ।

विलोड़णो—(क्रि०) १. हिलाना । २. मथना । विलोड़ना । मथन करना । मथणो । ३. नाश करना । ४. हैरान करना ।

विलोणो—दे० विलोवणो ।

विलोप—(न०) १. लोप । गायब । अदर्शन । २. रद्द । ३. नाश । ४. बाधा । रुकावट । ५. हानि । नुकसान । ६. उल्लंघन ।

विलोपणो—(क्रि०) १. लोप करना । गायब करना । २. उल्लंघन करना ।

२. नाश करना । मिटाना । ४. रुकावट डालना । बाधा डालना ।

विलोपन—*(न०)* १. लुप्त होने या करने की क्रिया या भाव । लुप्त । गायब । २. नाश । ३. रद्द ।

विलोम—*(वि०)* १. विपरीत । प्रतिकूल । उलटा । २. ऊपर से नीचे की ओर जाने-उतरने वाला । ३. केश रहित । *(न०)* १. विपरीत क्रम । २. सर्प । ३. श्वान । कुत्ता । कूतरो । ४. रहँट । अरट । ५. वरुण ।

विलोमज—*(वि०)* उच्च जाति की स्त्री और नीच जाति के पुरुष से उत्पन्न (संतान) ।

विलोल—*(वि०)* १. चंचल । अस्थिर । २. सुन्दर । ३. ढीला । ४. अस्त-व्यस्त ।

विलोवणो—*(क्रि०)* १. मंथन करना । २. दही को मथना । बिलोना । *(न०)* १. बिलोने का काम । २. बिलोने का पात्र । दही मथने का मटका । बलोणो ।

विवनो—*(वि०)* १. दुखी । २. मृत । ३. बदरंग । विवर्ण । ४. कांतिहीन । ५. नीच । ६. पागल । गैरसो ।

विवनोम—दे० विवनो ।

विवर—*(न०)* १. बिल । दर । २. गुफा । ३. छिद्र । छेद । विमरा । ठीडो ।

विवरण—*(न०)* १. विवेचन । स्पष्टीकरण । २. वृत्तान्त । ३. विस्तृत वर्णन । ब्योरा । ४. व्याख्या । टीका ।

विवरावणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत वर्णन करना । २. व्याख्या करना ।

विवरो—*(न०)* १. जानकारी । ज्ञान । २. भेद । ३. अतर । दे० विवरण ।

विवर्जन—*(न०)* १. त्याग । २. रोक । मनाही । रुकावट । ३. उपेक्षा । ४. अनादर । अपमान ।

विवर्जित—*(वि०)* १. उपेक्षित । २. अनादृत । ३. निषिद्ध । ४. रोका हुआ । मना किया हुआ । ५. बंद ।

विवश—*(वि०)* १. बेबस । मजबूर । २. पराधीन । ३. व्याकुल । ४. अशक्त ।

विवसणो—*(क्रि०)* १. पराधीन होना । २. मजबूर होना ।

विवसाय—दे० व्यवसाय ।

विवसाव—दे० व्यवसाय ।

विवह—*(वि०)* अनेक प्रकार का । विविध प्रकार का ।

विवह-करि—दे० विवहपरि ।

विवह-परि—*(अव्य०)* १. विविध प्रकार से । भाँति-भाँति से । २. विस्तार-पूर्वक ।

विवह-विध—*(अव्य०)* १. विविध विधि । २. भाँति-भाँति ।

विवहार—दे० व्यवहार ।

विवहारियो—दे० व्यवहारी ।

विवहारी—दे० व्यवहारी ।

विवहार्यो—दे० विवहारियो ।

विवाण—दे० विमाण ।

विवाद—*(न०)* १. चर्चा । २. झगड़ा । ३. कहा-सुनी । ४. तकरार । ५. मुकदमा । ६. तर्क-वितर्क ।

विवादास्पद—*(वि०)* १. जिसके संबंध में विवाद चल रहा हो या चल सकता हो । २. संदिग्ध ।

विवादी—*(वि०)* १. विवाद करने वाला । २. झगड़ा करने वाला ।

विवाह—*(न०)* शादी । परिणय । पाणि-ग्रहण । ब्याव । वीवा ।

विवाहणो—*(क्रि०)* १. विवाह करना । २. विवाह होना । शादी होना ।

विवाह-वाजन—*(न०)* १. विवाह और उसके संबंध की धाम-धूम । २. विवाहादि मांगलिक उत्सव । ब्याव-बाजण ।

विवाहोत्सव—*(न०)* विवाह और उससे संबंधित उत्सव । विवाह समारंभ ।

विविध—*(वि०)* अनेक प्रकार का । भांति-भांति का । विवाह ।

विविध-संग्रह—*(न०)* मलसीसर के भूरसिंह शेखावत द्वारा संकलित-संपादित एक ऐतिहासिक काव्य-संग्रह । २. विविध प्रकार का संग्रह ।

विवृत—*(वि०)* १. फैला हुआ । विस्तृत । २. खुला हुआ । ३. जिसकी व्याख्या की गई हो । ४. पूरा मुंह खोलकर बोला जाने वाला स्वर । 'आ' स्वर (व्या०) ।

विवेक—*(न०)* १. भले-बुरे का ज्ञान । २. सत्यज्ञान । ३. विवेचन शक्ति । ४. अच्छी बुद्धि ।

विवेक रहित—*(वि०)* १. बिना विवेक का । २. मूर्ख । ३. अज्ञानी ।

विवेकहीन—*(वि०)* १. मूर्ख । अविवेकी । २. अज्ञानी ।

विवेकी—*(वि०)* १. भले-बुरे को समझने वाला । २. भले-बुरे की समझ या ज्ञानी । ज्ञान रखने वाला । विवेकवान । ३. बुद्धिमान ।४. ज्ञानी

विवेचक—*(वि०)* विवेचन करने वाला ।

विवेचन—*(न०)*१. विचारपूर्वक किया हुआ निर्णय । २. तर्क-वितर्क । ३. मीमांसा । ४. सम्यक् परीक्षण ।

विश—*(ना०)* १. समस्त प्रजा । २. वैश्य ।

विशद—*(वि०)* १. विस्तार सहित । सुस्पष्ट । २. निर्मल । स्वच्छ । उज्ज्वल । विसद ।

विशाखा—*(न०)* १. सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवां नक्षत्र । २. छोटी शाखा ।

विशारद—*(वि०)* १. विशेषज्ञ । २. पंडित । ३ श्रेष्ठ । *(न०)* एक विद्या उपाधि ।

विशाल—*(वि०)* १. आकार, प्रकार आदि की दृष्टि से बहुत बड़ा । २. विस्तृत, मोटा या ऊंचा । ३. विस्तीर्ण । ४. भव्य ।

विशांपति—*(न०)* राजा ।

विशिख—*(न०)* १. बाण । २. सुई । *(वि०)* शिखाहीन ।

विशिष्ट—*(वि०)* १. विशेषता वाला । २. असामान्य । असाधारण । ३. विलक्षण । ४. अद्‌भुत । ५. यशस्वी । ६. प्रसिद्ध । ७. प्रति शिष्ट ।

विशिष्टता—*(ना०)* १. विशिष्ट का भाव या गुण-धर्म । २. विशेषता ।

विशिष्टाद्वैत-मत—*(न०)* श्री रामानुजाचार्य प्रतिपादित एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें जीवात्मा और जगत, ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न माने गये हैं । जीव और जगत ब्रह्म के विशेषण हैं और संसार मिथ्या नहीं है । विशेषणयुक्त अद्वैत ।

विशुद्ध—*(वि०)* १. जिसमें कोई मिलावट न हो । बिना मिलावट का । २. पूर्ण शुद्ध । अत्यन्त शुद्ध ।

विशृंखल—*(वि०)* १. जिसमे कड़ी या शृंखला न हो। २. नियन्त्रण बाहर। ३ अस्त-व्यस्त। ४. उच्छृंखल। ५ बिखरा हुआ। टूटा हुआ।

विशेष—*(वि०)* १. अधिक। विपुल। २. असाधारण। ३. विलक्षण। *(न०)* १. अन्तर। २ प्रकार। ३. विचित्रता।

विशेषण—*(न०)* १. संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने वाला शब्द *(व्या०)*। २. वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो।

विशेषता—*(ना०)* १. अधिकता। २. विलक्षणता। ३. असाधारणता।

विशेष्य—*(न०)* विशेषण द्वारा जिसकी विशेषता बताई जाय वह शब्द। वह संज्ञा-शब्द जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो। (व्या०)

विश्रवा-ऋषि—*(न०)* पुलस्त्य ऋषि के पुत्र और रावण के पिता का नाम।

विश्रंभ—दे० विसंभ।

विश्राम—*(न०)* १ थकावट दूर करने के लिए बैठने-लोटने इत्यादि की क्रिया या स्थिति। काम करते हुए थक जाने के कारण काम को छोड़कर रखा जाने वाला थोड़े समय का अवकाश। २. आराम। विसामो। विसराम। ३. सुख। शान्ति। ४. विश्राम लेने का स्थान। ५. मृत्यु।

विश्रांत—*(वि०)* १. जो विश्राम कर रहा हो। २. जिसकी थकावट मिट गई ३ थका हुआ। ४. शांत।

विश्रांति—*(ना०)* १ विश्राम। आराम। २. अन्त।

विश्रुत—*(वि०)* १. प्रख्यात। प्रसिद्ध। २. जाना हुआ। ३. सुना हुआ।

विश्लेषण—*(न०)* १. सूक्ष्म छानबीन। २. किसी बात के अन्तर्निहित तत्वों का पृथक्करण। अलगाव। ४. वियोग। ५. विघटन।

विश्व—*(न०)* १. संसार। जगत। २. सृष्टि। ३. ब्रह्मांड। ४. लोक। ५. भूमि। पृथ्वी।

विश्व-करण—*(न०)* विश्व की रचना करने वाला। ईश्वर। २. ब्रह्मा।

विश्वकर्मा—*(न०)* १. विश्व की रचना करने वाला एक देव। २. देवों का शिल्पशास्त्री। ३. ईश्वर। ४. ब्रह्मा। ५. शिव। ६. सूर्य। ७. बढ़ई। सुथार। ८. लोहार। ९. सूत्रधार। राज। कड़ियो।

विश्व-कोष—*(न०)* ज्ञान सर्व विद्या-कोश। सग्रह कोश। एनसाइक्लोपीडिया।

विश्वतोमुख—*(वि०)* सर्व ओर मुखवाला। ईश्वर। परब्रह्म।

विश्वनाथ—*(न०)* १. महादेव। शिव। २ परमेश्वर। ३. काशी के शिवजी का ज्योतिर्लिंग।

विश्व-भरण—*(न०)* विश्व का पालन करने वाला। विष्णु।

विश्व-विख्यात—*(वि०)* जगत-प्रसिद्ध।

विश्व-विद्यालय—*(न०)* बहुत बड़ी शैक्षणिक संस्था। विद्यापीठ। यूनिवर्सिटी।

विश्व-वृक्ष—*(न०)* वृक्ष के उदाहरण रूप विस्तार वाला विश्व। २. परमात्मा। परमेश्वर। ३. ब्रह्म।

विश्वसनीय—*(वि०)* विश्वास करने योग्य। विश्वासपात्र।

विश्वस्त—दे० विश्वसनीय।

विश्वंभर—(न०) १. विश्व का भरण-पोषण करने वाला। ईश्वर। २. विष्णु।

विश्वात्मा—(न०) १. ब्रह्मा। २. शिव। ३. विष्णु ४. सूर्य। ५. ईश्वर।

विश्वामित्र—(न०) एक प्रसिद्ध महर्षि।

विश्वास—(न०) १. भरोसा। एतबार। २. निष्ठा। श्रद्धा। ३. प्रतीति।

विश्वास-घात—(न०) १. विश्वास रखने वाले के साथ धोखाधड़ी का आचरण। २. दगाबाजी।

विश्वास-घाती—(वि०) विश्वासघात करने वाला।

विश्वासी—(वि०) १. विश्वासपात्र। २. विश्वास करने वाला। ३. विश्वास रखने वाला।

विश्वासु—दे० विश्वासी।

विष—(न०) जहर। विस।

विष-कन्या—(ना०) १. प्राचीनकाल में वह युवती जिसके शरीर में बाल्यकाल से ही इसलिए विष प्रविष्ट कर दिया जाता था कि उसके साथ संभोग करने वाला तत्काल ही मर जाय। बिसकन्या २. अत्यन्त घातक कन्या।

विष-कंठ—(न०) शिव। नीलकंठ। महादेव।

विष-कामिनी—(ना०) वह नारी जिसका शरीर-सम्पर्क विषैला बना दिया गया हो। विषांगना। विस-कामणी। विस-कामण। २. अत्यन्त घातक स्त्री।

विष-धर—(न०) सर्प। साँप। नाग।

विषम—(वि०) १. जो सम या समान न हो। २. दो भागों में पूरी तरह बँट न सकने वाली संख्या। एकी। ३. विकट। दुस्साध्य (कार्य)। ४. न्यूनाधिक। ५. ऊबड़-खाबड़ (जगह या मार्ग) ६. अनमेल। बेमेल। ७. असंगत। ८. भयंकर। (न०) १. संगीत का एक ताल। २. एक अर्थालंकार।

विषम-ज्वर—(न०) जूड़ी बुखार। मलेरिया।

विष-मंत्र—दे० विषमन्त्र।

विषय—(न०) १. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गृहीत होने वाले पदार्थ। २. भौतिक पदार्थ। ३. कारबार। ४. इन्द्रिय-जन्य आनन्द। ५. संभोग। रतिक्रीडा। ६. ग्रन्थ, लेखादि में विवेच्य वस्तु या विचार। मजमून। ७. प्रकरण। प्रसंग। ८. उद्देश्य, हेतु। ९. देश। जनपद।

विषय-भोग—(न०) कामभोग।

विषय-वस्तु—(ना०) १. उपन्यास, काव्य आदि की कथा। २. ग्रन्थ आदि का विचारणीय वस्तु तत्व। ३. खास मुद्दे की बात। ४. मुद्दा। ५. तात्पर्य। आशय।

विषय-वार—(अव्य०) विषयों (प्रसंग, विचार इत्यादि) के अनुसार।

विषय-वासना—(ना०) विषय-भोग की इच्छा या कामना।

विषया—(वि०) विष के समान।

विषयानुक्रमणिका—(ना०) ग्रंथादि में विवेचित विषयों की अनुक्रम-सूची। अनुक्रमणिका।

विषयी—(वि०) विषयासक्त। इन्द्रिय-लोलुप। कामी।

विषाक्त—(वि०) १. विषयुक्त। जहरीला। २. दूषित।

विषाण—(न०) १. सींग। सींगड़ो। २. हाथी का दाँत। ३. सींग का बाजा।

विषाद—(न०) १. संताप। २. मन का दुख। ३. शोक। ४. खेद। ५ निराशा।

विष्टि—(ना०) १. बेगार। वेठ। २. समाधान की बातचीत। विस्टाळो। ३. समाधान का प्रयत्न। धाटाधाट। ४ समाधान।

विष्टिकार—दे० विसटाळू।

विष्ठा—(न०) १. गुप्त द्वार से विस्टत मल। पाखाना। टट्टी। भिस्टो।। गू। बीट। गोबर।

विष्णु—(न०) त्रिदेवों में से जग का भरण-पोषण करने वाला प्रधान देव। त्रिमूर्ति में सृष्टि का पालन-पोषण करने वाला स्वरूप।

विष्णु-पत्नी—(ना०) १. लक्ष्मी। लिछमी। २. पृथ्वी। धरती। जमी।

विष्णु-पुराण—(न०) अठारह पुराणों में से एक पुराण।

विष्णु-लोक—(न०) वैकुंठ। स्वर्ग।

विष्णु-सहस्रनाम—(न०) विष्णु के हजार नामों का वर्णन करने वाला एक प्रसिद्ध स्तोत्र।

विस-कन्या—दे० विषकन्या।

विस-कामण—दे० विष-कामिनी।

विस-कामणी—दे० विष-कामिनी।

विसख—दे० विशिख।

विसटाळू—(वि०) समाधान कराने वाला। विष्टिकार। विठागर।

विसटाळो—(न०) समाधान की बातचीत। २. टटे, विवाद आदि का किसी मनुष्य का बीच में पड़कर कराया जाने वाला समाधान ३. समाधान का प्रयत्न। विष्टि। वड़साळो। ४. नाराज को मनाने का काम। (वि०) १. समाधान की बात-चीत करने वाला। समाधान कराने वाला। विष्टिकार। विष्टि कराने वाला। विस्टाळू।

विसतरण—(वि०) विस्तार करने वाला। (अव्य०) विस्तार करने के लिए।

विसतरणो—दे० विस्तरणो।

विसतारण—दे० विसतरण।

विसथणो—(क्रि०) साथ वालों से अलग होना। साथ वालों से छूट जाना।

विसथो—(वि०) १. साथ वालों से अलग। अकेला। २ छूटा हुआ। अलग पड़ा हुआ।

विसद—दे० विशद।

विस-धर—दे० विषधर।

विसन—(न०) १. विष्णु। २. व्यसन।

विसनी—(वि०) व्यसनी।

विसनूव—दे० १. वैष्णव। २ विष्णु।

विसनोई—(न०) १. जाभोजी द्वारा प्रवर्तित २९ नियमों को पालन करने वाला एक लोक सम्प्रदाय। २. विसनोई मत को मानने वाली एक कृषक जाति। ३. विसनोई जाति का व्यक्ति। सिनानी।

विसर—(न०) १. निन्दा। बुराई। २. निंदात्मक कविता। भूंडा। ३. व्यंग्यात्मक काव्य। विषकर या विषहर काव्य। ४. भूल। विस्मृति। ५. नाश। ६. मृत्यु। ७. जीत। ८. तुष्टीदान के नहीं मिलने पर सुनाया जाने वाला। निन्दात्मक काव्य। ९. साँप। विषधर।

विसरणो—(क्रि०) १. भूल जाना। भूलना। विसरना। २. बदनाम करना। अपकीर्ति करना। विसुरना।

विसराणो—(क्रि०) १. भुला[illegible] विसराना। २ किसी[illegible]

निंदात्मक कविता सुनाना । विसर-काव्य सुनाना । २. निंदा करना । ३. अपशब्द कहना ।

विसराम—दे० विश्राम ।

विसरामणो—(क्रि०) १. विश्राम लेना । २. मरना । ३. मर जाना । शरीर त्याग करना । ३. जीवन से विश्राम लेना ।

विसरावणो—दे० विसराणो ।

विसरात—दे० विश्राति ।

विसर्ग—(न०) १. 'ह्' (अर्ध 'ह') के समान उच्चरित तथा वर्ण के आगे ' : ' इस रूप में प्रयुक्त अर्द्ध'ह'का चिन्ह । २. दान । ३. त्याग । ४. मृत्यु ।

विसर्जन—(न०) १ दान । २. परित्याग । ३. समाप्ति । ४. विदा करना । ५. यज्ञ, उत्सव या पूजा में आहूत या स्थापित देवादि को प्रस्थान कराने या जलाशय में प्रवाहित करने की क्रिया ।

विसव—दे० विश्व ।

विसव-विरख—(न०) विश्व-वृक्ष ।

विसवार—दे० वेसवार ।

विसवा-वीस—दे० वीस-विसवा ।

विसवास—दे० विश्वास ।

विसवासी—दे० विश्वासी ।

विसवासू—दे० विश्वासु ।

विसवो—दे० विसवो ।

विसहर—(न०) १. व्यंग्यात्मक कविता । २. निंदात्मक कविता । विसर । ३. विषको हरने वाला । ४. विष को हरने वाली औषधि । ५. विषधर । सर्प । साँप ।

विसहर-तिथ—(ना०) भादों वदी पाँचम । नाग-पंचमी । विषहर-तिथि । विषधर-तिथि । नाग-पूजा का पर्व या दिन ।

वि.सं.—(न०) 'विक्रम-सम्वत' का छोटा रूप । वर्ष (सम्वत्) के अंक लिखे जाने के पूर्व विक्रम-सम्वत् को सूचित करने, वाला उसका संक्षिप्त नाम तथा रूप गया – वि.सं. २०१६ ।

विसंगत—(वि०) असंगत । बेमेल । जो संगत न हो । जिसकी संगति न बैठती हो ।

विसंभ—(न०) १. दृढ़ विश्राम । विश्रम । २. प्रत्यय । ३. निश्चय । ४. आधार । ५. प्रेम । ६. प्रेम-विषाद । ७. विश्वंभर ।

विसुभर—दे० विश्वंभर ।

विसात—(न०) १. महत्ता । २ मूल्य । मोल । ३. औकात । गुंजाइश । हैसियत । बिसात । ४. गिनती । गणना । प्रतिष्ठा । ५. गिनती में लिया जाय ऐसा प्रतिष्ठा वाला व्यक्तित्व । ६. सामर्थ्य । शक्ति । ७. विसाती की कपड़े पर फैलाई हुई फुटकर सामग्री जो जमीन पर बैठकर बेचता है । विसायत ।

विसाती—दे० विसायती ।

विसामित—दे० विश्वामित्र ।

विसामो—दे० विश्राम ।

विसायत—दे० विसात ।

विसायतियो—(न०) घूमकर या जमीन पर बैठकर सामान बेचने वाला । कपड़े पर रख और जमीन पर बैठकर फुटकर माल बेचने वाला व्यक्ति । विसाती । मनिहार । फुटकरियो । मणियारो । बिसायती ।

विसायती—दे० विसायतियो ।

विसार—(ना०) भूल । (अव्य०) भूल करके ।

विसारणो—*(क्रि०)* १. भूलना । विस्मृत करना । २. भुलाना । बिसारना ।

विसाळ—दे० विशाल ।

विसावण—*(न०)* वैर । शत्रुता ।

विसावणो—*(क्रि०)* १. शत्रुता करना २. उत्पन्न करना । पैदा करना । ३. फैलाना । ४. मन में स्थान देना । ५. व्यवसाय करना । *(न०)* शत्रुता । दुश्मनी ।

विसास—दे० विश्वास ।

विसासणो—*(क्रि०)* विश्वास करना । भरोसा करना ।

विसाहणो—दे० विसावणो ।

विसांई—*(ना०)* विश्राम । विश्रांति ।

विसांपत—दे० विशांपति ।

विसिया—दे० विषया ।

विसी—*(वि०)* उसी प्रकार की । वैसी ।

विसूकणो—*(क्रि०)* गाय, भैंस का दूध देना बन्द करना ।

विसूचिका—*(ना०)* हैजे का रोग । विशूचिका ।

विसूरणा—*(न०ब०व०)*१. निंदा । बुराई। २. शोकोद्‌गार । ३. शोक-कविता ।

विसूरणो—*(क्रि०)* १. निंदा करना । बुराई करना । २. शोक प्रदर्शित करना । दे० विसूरणा ।

विसूंद—दे० वरसूंद । दे० वीसूंद ।

विसूंदरी—*(ना०)*छिपकली । गृह-गोधिका । विस्तुइया । विछूंदरी ।

विसेख—दे० विशेष ।

विसेखणो—*(वि०)* १. विशेष रूप से प्रशंसा करना । २. विशेता प्रकट करना।

विसेखियो—*(वि०)* १. विशेष रूप से प्रशंसित । विख्यात । २. विशेष रूप से प्रशंसित हुआ है । *(क्रि०भू०)* १. विशेष प्रशंसित हुआ या किया गया । २. तुलना में विशेष बतलाया गया ।

विसं- *(अव्य०)* १. से । २. अन्दर । मे ।

विसो—*(वि०)* वैसा । उस प्रकार का ।

विस्टाकारो—*(ना०)* १. गाली । २. कलंक । लाञ्छन । ३. अपमान ।

विस्टाळ—दे० विसटाळ ।

विस्टाळो—दे० विसटाळो ।

विस्टी—दे० विष्टि ।

विस्टो—दे० विष्ठा ।

विस्तर—दे० विस्तरो । १. अग्नि । २ विस्तार ।

विस्तरणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत होना । फैलना ।

विस्तरो—*(न०)* बिछौना । बिस्तरा । पथरणो ।

विस्तार—*(न०)* १. प्रसार । फैलाव । २. विशालता । ३ बढावा । ४. बाल-बच्चे । पुष्कल परिवार ।

विस्तारण—*(ना०)* विस्तार करने की क्रिया । *(वि०)* विस्तार करने वाला ।

विस्तारणो—*(क्रि०)* १. प्रसार करना । फैलाना । २ बढाना । ३. लंबाना ।

विस्तारी—*(वि०)* १. बाल-बच्चों वाला । २. अधिक बाल-बच्चों वाला । ३. बड़े कुटुम्ब वाला । पुष्कल परिवार वाला । ४. विस्तार वाला । ५. विस्तार करने वाला ।

विस्तृत—*(वि०)* १. विस्तार वाला । २. फैला हुआ ।

विस्फोट—*(न०)* १. आग, गैस, दारू इत्यादि का जोर की आवाज के साथ फूटना । २. रहस्योद्‌घाटन होना । ३. फोड़ा । फुंसी ।

विस्फोटक—*(वि०)* १. विस्फोटित होने वाला । २. विस्फोट करने वाला ।

विस्मय—*(न०)* आश्चर्य । अचमा । अचंभो ।

विस्मय-कारक—(वि०) आश्चर्य-जनक ।

विस्मयादि-बोधक—(न०) वाक्यों में आश्चर्य, खुशी, भेद इत्यादि का द्योतक अविकारी शब्द (व्या.) ।

विस्मरण—(न०) भूलना । याद नहीं रहना । स्मृतिभ्रंश । पांतरो ।

विस्मृत—(वि०) १. भूला हुआ । २. भुलाया हुआ । विस्मृति से उतरा हुआ । पांतरियोड़ो । भूलोड़ो ।

विस्मृति—(ना०) विस्मरण । भूल जाना । पांतरो ।

विस्यान—(वि०) वैसा । वैड़ो । ग्रोड़ो । (क्रि०वि०) उसी प्रकार । वैसे ।

विस्यो—दे० विसो ।

विस्वकरमा—दे० विश्वकर्मा ।

विस्व-विरख—दे० विश्व-वृक्ष ।

विस्वामित—(न०) विश्वामित्र ऋषि ।

विह—(न०) १. विधाता । ब्रह्मा । विधि । २. प्रकार । ३. भेद ।

विहग—(न०) १. पक्षी । २. घोड़ा । ३. सूर्य । ४. चंद्रमा । विहंग ।

विहद—(वि०) १. बृहद् । २. विशाद । ३. बेहद । असीम ।

विहर—(न०) १. टुकड़ा । २. खड्ग प्रहार से कटकर अलग हुआ अंग भाग । ३. विचरण । (ना०)१. भूल । विस्मृति । विसरण । पांतरो । २. लकड़ी का चूरा ।

विहरणो—(क्रि०) १. बिसरना । भूल जाना । पांतरणो । २. विचरण करना । चलना । ३. अलग होना । जुदा होना । ४. हटना । ५. अलग करना । ६. हटाना । ७. चीरना । ८. टुकड़े करना । करवत से लकड़ी काटना । वैरणो । ६. भिक्षा देना (जैन साधु को) । वैराणो । बहराणो ।

विहराणो—दे० विहरणो सं. ६ ।

विहवळ—दे० विह्वल ।

विह-विह—(वि०) विविध । विध-विध । अनेक ।

विहसणो—(क्रि०) १. उत्साहित होना । २. प्रसन्न होना । ३. हँसना ।

विहंग—(न०) १. पक्षी । २. घोड़ा । ३. सूर्य ४. चंद्रमा । ५. पर्वत । ६. विशिष्टांग । (वि०) बहादुर । वीर ।

विहंगड़ो—(न०) १. एक रागिनी । २. पक्षी । दे० विहंग ।

विहंग-दृष्टि—(ना०) १ समस्त परिस्थिति को बारीकी से एक ही बार में देख लेना या समझ लेना । २. किसी दृश्य या विषय पर डाली जाने वाली सरसरी निगाह ।

विहंगम—दे० विहंग । (वि०) विहंग के समान । विहंग की-सी । (दृष्टि) ।

विहंग-राज—(न०) गरुड़ ।

विहंगाण—(न०व०व०) १. पक्षी-समूह । २. अश्व-दल । घुड़-समूह । घुड़सा ।

विहंगावलोकन—(न०) विहग-दृष्टि से किया जाने वाला अवलोकन या निरीक्षण ।

विहंगेश—(न०) गरुड़ ।

विहंड—(न०) १. नाश । २. टुकड़ा । खण्ड । (वि०) १. नष्ट । २. घायल ।

विहंड-कंस—(न०) कंस का नाश करने वाले श्री कृष्ण ।

विहंड-खळ—(न०) १. शत्रु का नाश करने वाला वीर पुरुष । २. श्री कृष्ण । ३. श्री राम ।

विहंडणो—(क्रि०) १. नाश करना । मारना । खंडन करना । २. काटना । ३. नाश होना । ४. कटना ।

विहंड-दसाणण—(न०) श्रीराम। दशानन का नाश करने वाले।

विहंस—(न०) नाश। संहार।

विहंसणो—(क्रि०) नाश करना। दे० विहंडणो।

विहाग—(ना०) एक राग जो अर्द्ध रात्रि के बाद गाई जाती है।

विहागड़ो—(ना०) एक राग।

विहाण—(न०) १. प्रातःकाल। विहान। प्रभात। २. आने वाला प्रातःकाल ३. संध्या समय। ४. परित्याग।

विहाणे—(अव्य०) प्रातःकाल में। सवेरे।

विहाणो—दे० विहाण। दे० विहावणो।

विहामो—दे० विसामो।

विहार—(न०) १. टहलने-फिरने की क्रिया। टहलना। घूमना। २. प्रस्थान। गमन। ३. बौद्ध भिक्षुओं का मठ। संघाराम। ४. रति-क्रीड़ा। ५. भारत का एक प्रदेश।

विहारणो—(क्रि०) १. विहार करना। प्रस्थान करना (साधु का) २. चलना। फिरना। टहलना। ३. जैन साधु को भिक्षा देना। गोचरी कराणो। ४. भिक्षा के लिये फिरना। विहरणो।

विहारी—(वि०) विहार करने वाला। (न०) श्री कृष्ण।

विहावणो—(क्रि०) १. बिताना। व्यतीत करना। २. दूर करना। परित्याग करना। ३. छूटना। छूट जाना। ४ अभाव होना। नहीं होना। ५. कमी होना। ६. आवश्यकता होना।

विहाम—(न०) मुसकान। मंद स्मित। मुळकणो।

विहासणो—(क्रि०) १. हंसना। मुसकाना। मुळकणो। २. प्रकाश करना।

विहि—(ना०) विधाता। विधि। ब्रह्मा। विह। वेह।

विहित—(वि०) १. विधि अनुरूप। नियमानुसार। २. शास्त्रों द्वारा आज्ञा की हुई। शास्त्रोक्त। ३. अनुष्ठित। ४ न्याय्य।

विहीण—दे० विहीन।

विहीन—(वि०) १. रहित। हीन। वंचित। २. बिना। बगैर।

विहूण—दे० विहूणो।

विहूणो (वि०) १. विहीन। रहित। २. बिना। बगैर।

विह्वले—(वि०) १. विकल। २. गदगद।

विंझ्याचळ—(न०) विंध्याचल। विंध्यपर्वत।

विंडी—दे० वंडी दे० वरंडी।

विंताक—(न०) बैंगन। वृन्ताक। बिंताक। रींगणो।

विंदोळी—दे० वंदोळी। दे० वींदोली।

विंध्यवासिनी—दे० वींझासणी।

विंध्याचल—(न०) विंध्यपर्वत। विंझ्याचळ।

वियो—(न०) १. अफीम का रस (कसूंबा) बनाने के लिये रूई में लपेटा हुआ अफीम का टुकड़ा, जिसको पानी में मसलकर कसूंबा बनाते हैं। २. बीज। ३ कोई अनोखी वस्तु। द्रुम। ४. ऊन का धागा।

वीक—दे० वीकम।

वीकपुर—(न०) 'बीकानेर' का काव्य नाम।

वीकपुरो—(वि०) बीकानेर का निवासी।

वीकम—दे० विक्रम।

वीकमपुर—दे० वीकपुर।

वीकमपुरो—दे० वीकपुरो।

वीका-घोड़ी—(ना०) एक खेल। दे० भीला री घोड़ी।

वीकाण—(न०) 'बीकानेर' शहर का एक काव्य नाम।

वीकाणो—दे० वीकाण।

वीकानेर –दे० बीकानेर ।

वीकानेरियो—(वि०) बीकानेर का निवासी

वीख –(ना०) १. पाँव । पैर । चरण । २. पैंड । डग । कदम । ३. चाल । गति । ४ सवारी के पशुओं की एक मध्य-चाल । परोल ५. दृष्टि । डीठ । वेध । ६. विचारशक्ति । सूझ । ७. पद-चिन्ह ।

वीखड़िया –(ना०ब०व०) पद-चिन्ह । पैर के निशान । पगनिसाण । खोज ।

वीखरण—(न०) ग्रीक्ष । वीक्षण ।

वीखणो—(क्रि०) १. रुई या ऊन की गाँठें बिखेरना । जमी हुई रुई या ऊन की परतों को छितराना । पहल बनाना । २. बिखेरना । ३. चलना । ४. देखना । वीक्षण करना । ५. तरसना । ललचाना । ६. दुख देना । ७. दुख सहना ।

वीखरणो—(क्रि०) १. तितर-बितर होना । फैलना । छितरना । बिखरना । २. अलग होना । दूर होना ।

वीघो—(न०) जमीन का एक नाप । बीघा । बीस बिस्वे का रकबा ।

वीघोटी—दे० वीघोड़ी ।

वीघोड़ी—(ना०) प्रति बीघा पर लिया जाने वाला कर या लगान । बीघोटी बीघोटी ।

वीच—(न०)१. मध्य । बीच । २. किसी बीच का अंतर । ३. अंतर । फर्क । भेद । ४. बीच की जगह । मध्यभाग । (अव्य०) मध्य में । बिच में ।

वीचि—(ना०) लहर । तरंग ।

वीचोवीच—(अव्य०) ठीक बीच में । बिलकुल बीच में । बीचोबीच । वचोवच ।

वीछरण—(ना०) बिच्छू की मादा ।

वीछलणो—(क्रि०) १. धोना । २. पानी डाल, हिला कर साफ करना । खंखोळणो ।

वीछी—दे० वीछू ।

वीछू—(न०) जहरीले डंक वाला एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा । बिच्छू ।

वीछूड़ी—(ना०) स्त्रियों के पैर की अंगुलियों में पहने जाने वाला एक गहना ।

वीज—(ना०) १. विद्युत । बिजली । सिवण । २. वज्र ।

वीजणी—(ना०) पंखी । छोटा पंखा । बीजणी ।

वीजणू—दे० पंखो या वीजणो । हाथ को हिलाकर डाली जाने वाली हवा का साधन ।

वीजणो—(न०) पंखा । व्यजन । हाथ-पंखा । बीजणो ।

वीजळ—(ना०) १. तलवार । २. बिजली । (वि०) बिजली के समान प्रकाशमान । २. मनोहर । सुन्दर ।

वीजळसार—(न०) १. उत्तम जाति का लोह । २. वह लोह जिसको जंग नहीं लगे । स्टील । ३ कांतिसार । कांतिलोह । कान्तलोह । ४. तलवार ।

वीजळ-हथो—(वि०) खड्ग-धारी ।

वीजळी—(ना०) बिजली । दे० वीज ।

वीजूजळ—(ना०) तलवार ।

वीजूझळ—दे० बीजूजळ ।

वीझणो—(न०) १. पंखा । व्यजन । २. खाती का एक औजार । लकड़ी में छेद करने का औजार । ख्यारड़ी ।

वीटली—(न०) अजमेर के किले का नाम तारागढ ।

वीटोरो—दे० वींटोड़ो ।

वीठळ—*(न0)* १. श्री कृष्ण । २. विष्णु । विट्ठल ।

वीठळो—दे0 वीठळ ।

वीड़—*(न0)* १. जंगल । वन । सीम । २. घना जंगल । ३. गोचर भूमि ।

वीड़ो—दे0 वीड़ ।

वीढक—दे0 वेढक ।

वीण—दे0 वीणा ।

वीणणो—*(क्रि0)* १. चुनना । बीनना । चुगना । चुगणो । २. अलग-अलग करना । छांटना ।

वीणती—दे0 विनती या वीनती ।

वीणा- *(ना0)* एक प्रसिद्ध भारतीय वाद्य-यंत्र जो सभी तार या स्वर वाद्यों में श्रेष्ठ माना जाता है । बीन । वीणा ।

वीणापाणि—*(ना0)* सरस्वती । *(न0)* नारद मुनि ।

वीणा-वादिनी—*(ना०)* सरस्वती । शारदा ।

वीणी—*(ना०)* किवाड़ के पल्ले की चौड़ाई में लगाई जाने वाली आड़ी चीप । पट्टी ।

वीणो—*(न0)* स्त्रियों के शिरोकेश की एक बनावट । एक केश-विन्यास ।

वीत—दे0 वित्त । दे0 व्यतीत ।

वीतक—*(वि0)* बीती हुई घटना या बात ।

वीतणो—*(क्रि0)* १. समाप्त होना । बीतना । खूटणो २. गुजरना । ३. कटना । ४. क्षय होना । कम होना । घटना । ५. घटित होना । ६. संकट आ पड़ना । दुख पड़ना । ७. सहन करना या होना । मूर्ख बनना । ८. बनना । ९. नष्ट होना । १०. जीर्ण होना । ११. फट जाना । १२. असर होना । १३. भुगतना । १४. मरना । १५. कमजोर होना ।

वीतराग—*(वि0)* राग रहित । आसक्ति, मोह, मायादि से मुक्त । *(न0)* तीर्थंकर महावीर स्वामी ।

वीतहोत—*(ना0)* १. अग्नि । वीतिहोत्र । २. सूर्य । सूरज ।

वीती—*(वि०)* १. जिसमें बीत गई हो । २. भोगा हुआ । मुक्त । ३ बीती हुई । गत । बीतोड़ी ।

वीथि-*(ना0)* मार्ग । रास्ता । बाट । बाटड़ली ।

वीदक—दे0 वीदग ।

वीदग—*(न0)* १. विरुद गायक । २. चारण । ३. भाट ।

वीदावत—*(न०)* १ राठौड़ वीदा का वंशज । २. वीदा का पुत्र ।

वीन—दे० वीद । दे0 वीणा ।

वीनणी—*(ना0)* १. दुलहिन । २ पत्नी । ३. पुत्रवधू । ४. छोटे भाई की पत्नी ।

वीनणो—दे0 विनवणो ।

वीनती—दे0 विनती ।

वीनवणो—*(क्रि0)* विनती करना । अनुरोध करना । विनवणो ।

वीनैं—*(सर्व0)* उसको । उसे । *(क्रि0वि०)* उधर । उस ओर । *(न0)* विनय ।

वीपी—*(ना0)* लिखा हुआ मूल्य चुकाने से प्राप्त होने वाला डाक मारफत आया हुआ पारसल । डाकखाने से भेजी जाने वाली 'मूल्यदेय' पारसल इत्यादि । वी.पी. । वेल्यु-पे-एबिल ।

वीप्सा—*(ना0)* १. एक अर्थालंकार जहां एक शब्द को बार-बार कहा जाय । २. पुनरुक्ति ।

वीफरणो—*(क्रि0)* १. क्रोध से बाहर होना । २. क्रोध में बकना । अंट-संट बोलना । ३. बिगड़ना । ४. गुस्से में होना । ५. क्रोध करना । ६. बहकना

शैतानी करना। शरारत करना। ८. उत्पात करना। ९. भड़क उठना। १०. बिगड़ना। ११. विद्रोह करना। बिफरना।

वीफरेल—(वि०) १. अत्यधिक क्रोधित। २. शैतान। ३. शरारती। ४. उत्पाती। ५. बहका हुआ। ६. विद्रोही। ७. क्रुद्ध।

वीभच्छ—दे० वीभत्स।

वीभछ—दे० वीभत्स।

वीभत्स—(वि०) १. घृणाजनक। २. कुत्सित। ३. विकृत। ४. क्रूर। ५. भयावह।

वीभम—दे० विभ्रम।

वीभरणो—दे० 'वीभरणो' या 'वीफरणो'।

वीमा—(न०) विवाह। पाणिग्रहण। ब्याव।

वीमाह—(न०) विवाह। पाणिग्रहण। ब्याव।

वीमो—(न०) १. एक ऐसा विधान जिसके अनुसार तत्सम्बन्धी एक कम्पनी किसी प्रकार की हानि हो जाने की अवस्था मे निश्चित रकम ब्याज और लाभ के साथ एक मुश्त दे देने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर इसलिए लेती है कि उसे निर्धारित समय या हानि हो जाने तक किश्तों में निश्चित रकम दी जाती रहे। क्षेम विधान। आगोप। बीमा। २. डाक विभाग की एक जिम्मेवारी। दे० बीमो सं० २।

वीर—(न०) १. बलवान पुरुष। २. साहसी व्यक्ति। ३. योद्धा। ४. भाई या पुत्र के लिए प्रयुक्त शब्द। ५. भाई। वीरो। ६. पुत्र। (वि०) १. बहादुर। २. साहसी। ३. पराक्रमी।

वीर-काव्य—(न०) १. वीर-रस का काव्य। २. वह काव्य जिसमें वीरता या वीरों का वर्णन हो। (साहि०)

वीर-केशरी—(न०) सिंह के समान बलशाली वीर पुरुष। वीरों में श्रेष्ठ वीर।

वीर-खेत—(न०) वीर-क्षेत्र। युद्ध-भूमि।

वीरगति—(ना०) १. युद्ध में मृत्यु। २. रणक्षेत्र मे वीरता पूर्वक लड़कर मरने पर प्राप्त होने वाली गति। ३. स्वर्ग।

वीर-गाथा—(ना०) वीर या वीर-रस की कथा (साहि०)।

वीर-गुरु—(न०) वीरों का गुरु। बड़ा वीर।

वीर-घंट—(न०) १. बड़ा घंट। २. हाथी के गले में (या झूल से) बंधा रहने वाला घंट।

वीर-चक्र—(न०) युद्ध मे वीरता दिखाने वाले सैनिक को दिया जाने वाला पदक। भारत गणराज्य की ओर से दिया जाने वाला एक सैनिक-पदक।

वीरज—(न०) १. वीर्य। शुक्र। २. बल। शक्ति। ३. वीर की संतान।

वीरजवान—(वि०) १. वीर्यवान। शक्तिशाली। बलवान। २. युवावीर।

वीरत—(ना०) १. वीर-वृत्ति २. वीरत्व। वीरता। वीरपणो। बहादुरी।

वीरत-वयण—(न०) १. वीर वाणी। २. वीर-हाक। वीर शब्द। ३. वीरता के वचन।

वीरत-वयणा—(ना०) वीरवाणी। ओज-वाली वाणी। २. वीरों की भाषा। ३. राजस्थानी (मारवाड़ी) भाषा। ४. वीरत्व उत्पन्न करने वाली भाषा। ५. वीर-काव्य।

वीरनंदो—(न०) १. वीर-पुत्र। २. वीर का पुत्र।

वीरपं—दे० वीरत ।

वीरपणो—(न०) वीरता । बहादुरी ।

वीर-पुरुष—(न०) वीर व्यक्ति । बहादुर पुरुष ।

वीर-पूजा—(ना०) वीरो का आदर सम्मान ।

वीरबळ—(न०) अकबरी दरबार के नौ रत्नों मे से एक रत्न-पुरुष जो शीघ्र प्रत्युत्पन्न-मति था । वीरबल ।

वीरबळी—(ना०) एक आभूषण ।

वीर-बहूटी—(ना०) लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा जो मखमल के समान सचिक्कण और कोमल होता है । इन्द्र-वधू । इंद्रगोप । वीरघूटी । मामोलो । मामलियो ।

वीर-भद्र—(न०) १. महादेव का एक गण । २. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा । ३. उशीर । खस ।

वीर-भू—दे० वीर-भूमि ।

वीर-भूमि—(ना०) १. वीरो को जन्म देने वाली भूमि । वीरो का जन्मदाता प्रदेश । २. राजस्थान (मरुभूमि) का एक विशेषण ।

वीर-भोम—दे० वीर-भूमि ।

वीर-माता—(ना०) वीर पुत्र को जन्म देने वाली माता । वीर की माता । वीर-जननी ।

वीर-मादळ—(न०) युद्ध मे बजाया जाने वाला बड़ा ढोल । युद्ध-मर्दल । वीर-मर्दल । मादळ ।

वीरमायण—(न०) राव वीरमजी राठोड़ का शौर्य सम्बन्धी बहादर ढाढ़ी द्वारा रचा गया डिंगल का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक काव्य ।

वीर-रस—(न०) १ काव्य के नौ रसों मे से एक । २. वह काव्य या काव्य-रस जिसमे वीरता से शत्रु का दमन करके विजय प्राप्त करने का वर्णन हो ।

वीर-वधू—(ना०) १. वीर की पत्नी । २. वीरांगना ।

वीर-वर—(वि०) वीरो में श्रेष्ठ । (न०) श्रेष्ठ वीर पुरुष ।

वीर-विनोद—(न०) इतिहास के इस नाम के दो प्रसिद्ध ग्रंथ (कवि श्यामलालदास और कवि गणेशपुरी कृत) ।

वीर शय्या—(ना०) रणभूमि ।

वीर सतसई—(ना०) वीर रस के सात सौ छन्दों का ग्रन्थ ।

वीर-हाक—(ना०) युद्ध के समय वीर पुरुष की ललकार । वीर-गर्जन । वीरतर्जन ।

वीरा—(अव्य०) प्रायः स्त्रियों की ओर से परिचित या अपरिचित किसी भी पुरुष के लिए 'भाई' अर्थ को सूचित करने वाला एक सभ्य तथा स्नेह-संबोधन । (ना०) १. वीरपति और वीर पुत्रों वाली वीरांगना । २. पति और पुत्रों वाली सौभाग्यवती स्त्री ।

वीराण—(न० ब० व०) १. वीर पुरुषों का समूह । वीर-समूह । २. सेना । ३. वीरत्व । पुरुषत्व । (वि०) १. वीरों का । २. वीरान । उजाड़ ।

वीरातन—(न०) वीरत्व । वीरता । शौर्य ।

वीराधिवीर—(न०) वीरो में श्रेष्ठ वीर पुरुष । (वि०) वीरो का वीर । वीरों मे श्रेष्ठ वीर ।

वीरापण—दे० वीरापो ।

वीरापो—दे० वीरातन ।

वीरारस—दे० वीर-रस ।

वीरां-भ्रागळो—*(वि०)* वीराग्रणी। वीरों मे श्रेष्ठ।

वीरांगना—*(ना०)* अपने सतीत्व, धर्म और देश की रक्षा के लिये युद्ध करने या बलिदान होने वाली स्त्री। वीर-स्त्री। वाहुड़ी। मोटरण।

वीरो—*(न०)* १. 'भाई' अर्थ का सूचित 'वीर' शब्द का स्नेह तथा ऊन वाचक पर्याय। २. भाई। ३. माहेरा का एक लोक-गीत।

वीरोटरण—*(ना०)* वीरता। वीरत्व। शौर्य। वीरातन। विरासत।

वीर्य—*(न०)* १. शुक्र। धातु। राजा। २. बीज। ३. बल। पराक्रम।

वीर्य-वान—*(वि०)* पराक्रमी। बलवान।

वीर्य-हीन—*(वि०)* १. निर्बल। अशक्त। २. नामर्द।

वील—*(ना०)* १. रोंछ। परछत्ती। टांड। २. संकरी परछत्ती। ताक के ऊपर छोटी-मोटी वस्तु रखने के लिए बनाई जाने वाली छज्जी या छजली।

वीवा—*(न०)* विवाह। ब्याव। पाणिग्रहण।

वीवा-वाजरण—*(न०)* १. विवाह आदि २. मंगल कार्य। विवाहोत्सव। ३. विवाह आदि उत्सवों में बाजों-गाजों की धूम-धाम।

वीस—*(वि०)* गिनती में दस और दस। *(न०)* बीस की संख्या '२०' बीस।

वीसधरणाणी—*(न०)* १. रावण। २. बीस-पाणि-धर। बीस भुजाधारी।

वीस-नैण—*(न०)* रावण। दशानन।

वीस-पाणी—*(न०)* रावण। बीसहाथाळो।

वीस-वाहु—*(न०)* रावण। बीसभुज।

वीस-भुज—*(न०)* रावण।

वीसमणो—*(क्रि०)* मरना। मर जाना। विसरामणो।

वीसमों—*(वि०)* १. क्रम या गिनती से बीस की जगह पर आने वाला। बीसवाँ। *(न०)* १. प्रसूता का बीसवाँ दिन। २. बीसवें दिन की जाने वाली प्रसव-शोच-शुद्धि।

वीसमो धोणो—दे० बीसमो धोणो।

वीसरणो—*(क्रि०)* भूल जाना। विस्मृत होना। बिसरना।

वीसा-विसवा—*(अव्य०)* १. निश्चय ही निश्चित रूप से। २. शत-प्रति-शत। सौ टका। ३. जरूरी ही। ४. बहुत करके। घणो करने। ५. पूरी तरह।

वीसा-वीसी—*(वि०)* चार सौ। *(न०)* चार सौ का आंक ४००।

वीसहथ—*(न०)* रावण। *(ना०)* बीस हाथों हाथों वाली देवी।

वीस-हथी—*(ना०)* बीस भुजाळी। बीस वाली देवी।

वीसा—दे० बीसा।

वीसा सौ—*(न०)* पहाड़ा में बोली जाने वाली '१२०' की संख्या। (अंकों की गुणन सूची)।

वीसी—*(ना०)* १ बीस वस्तुओं का समूह। एक बीसी। एक कोड़ी। २. ग्रो संवत्सरों के पांच विभागों में से एक। बीस वर्ष का समय। बीसी। ३. समय। काल। वक्त। ४. मूल्य देकर भोजन करने की दूकान।

वीमूंद—*(ना०)* १. ब्याज के ऊपर दी जाने वाली धर्मादे की रकम। ब्याज के ऊपर धर्मादा। २. धर्मादा। ३. ब्याज की आय मे धर्मादे का भाग। ४ धर्मादे का विशेष सूद। विशेष-सूद। वि-सूद। दे० वरसूंद। ५. एक प्राचीन राहदारी कर जो मुलतान से जाने वाले मार्ग पर पूंगल मे लिया जाता था।

वीसो—(न०) १. जाति का उपभेद । २. सदी का बीसवां वर्ष । ३. तौल का एक मान । (वि०) १. श्रेष्ठ । उत्तम । २. असली ।

वीसोतर—(वि०) एक सौ बीस । (न०) चारण ।

वीसोतर-चारण—(न०) समस्त चारण जाति ।

वीसोतर-साख—(ना०) १. चारणों की एक सौ बीस शाखायें । २. चारण जाति ।

वीह—दे० वीस । दे० बीह ।

वीहंडणो—दे० विहडणो ।

वीहा—दे० व्याघ ।

वी—(सर्व०) उस । उण । वीं ।

वीखणो—दे० वीखणो ।

वीजणी—(ना०) पंखी । हाथ से हिलाकर हवा डालने या खाने की पंखी ।

वीजणो—(न०) पंखा । हाथ से हिला कर हवा खाने का पंखा । व्यजन ।

वीभ—(न०) १ विंध्य पर्वत । २. छेद । सुराख । वेभ ।

वीभणो—(न०)१. खाती का एक औजार । वींधणो । स्यारड़ी । २. पंखा । बड़ा हाथ-पंखा । पंखी ।

वीभाचळ—(न०) विंध्याचल पर्वत ।

वीभासण—दे० वीभासणी ।

वीभासणी—(ना०) १. एक लोक देवी । २. विंध्यवासिनी देवी ।

वींट—(ना०) १. पक्षी की विष्ठा । बीट । २. घेरा ।

वींटणो—(क्रि०) १. लपेटना । २. घेरा डालना । (न०) लपेटन । वेस्टन ।

वींटली—(न०) अजमेर के किले का एक नाम । तारागढ़ ।

वींटाकड़ो—(न०) १. गठरी । २ बिस्तरे का समेटन । बिस्तरा ।

वींटी—(ना०) अंगूठी । मुद्रिका । बींटी ।

वींटो—(न०) बधा हुआ बिस्तरा । समेटा हुआ बिस्तरा । विस्तरा । बींटा ।

वींटोकड़ो—दे० वींटाकड़ो ।

वींटोड़ो—(न०) झड़बेरी के कांटों की अनुमानतः सौ पाहियों का बड़ा ढेर अथवा उतना समूह जो बैलगाडी के ऊपर समा सके । भींटोड़ो । वींटोरो । भींटोरो ।

वींद—(न०) १. दुलहा । वर । बनड़ो । २ पति । खाविंद ।

वींदणी—(ना०)१ दुलहिन । वधू । बींनणी । बीनणी । बनड़ी । २. पत्नी ।

वींद-राजा—(न०) दुलहा । वर-राजा ।

वींद वागो—(न०) दूल्हे का जामा या पोशाक ।

वींदोटी—दे० वींदोली ।

वींदोटो—(न०) १. दूल्हे की प्रशंसा का एक राजस्थानी काव्य प्रकार । २. दुलहे की प्रशंसा का काव्य । दे० वींदोला ।

वींदोला—(न०ब०व०) दुलहा या दुलहिन की जूतियां । बींदोटा ।

वींदोलियां—दे० वींदोला ।

वींदोली—(ना०) दुलहा या दुलहिन की जूती । बींदोटी ।

वींधणो—(न०) छेद करने का खाती का एक औजार । वींभणो । (क्रि०) १. सुराख करना । छेद करना । २. हैरान करना । तंग करना ।

वींधाणो—(क्रि०) १. छिदवाना । २. तंग करवाना । हैरान करवाना । ३. हैरान होना ।

वींनै—(सर्व०)उसको । उणनै । बीनै ।

वींमरणो—(क्रि०) १. क्रोधित होना । गरम होना । भीमरणो । बींभरणो । २. बिगड़ना । नाराज होना ।

वींया—दे० 'वोवा' वा 'विवाह'।

वीयो—(न०) रूई के फाहे में लपेट कर रखी जाने वाली पिसे हुये अफीम की मात्रा, जिसे पानी में निचोड़ कर पिया जाता है। दे० वियो।

वींरी—(वि०) उसकी। उणरी। वींरी।

वींरो—(वि०) उसका। उणरो। वींरो।

वुओ—(भू०क्रि०) वेणो का 'भूतकाल'। हुआ। हो गया। हुओ।

वुछाव—(न०) १. उत्सव। उछव। २. उत्साह। उछाव।

वुजर—दे० उजर।

वुसत—(ना०) वस्तु। वस्त। चीज।

वुही—(भू०क्रि०) १. चली। २. अनुसरण किया। ३. बह गई। (ना०) एक घास।

वुहो—(भू०क्रि०) 'वहणो' का भू-कालिक १. चला। २. अनुसरण किया। ३. बह गया।

वूठणो—(क्रि०) बरसना। बरसात होना। बरसणो।

वूठां—(अव्य०) १. वर्षा होने से। बरसने से। २. बरसने पर।

वूठो—(भू०क्रि०) वर्षा हुई। बरसा। बरस गया। 'वूठणो' क्रिया का भूतकालिक रूप।

वूहो—दे० वुहो।

वृक—(न०) १. भेड़िया। २. चोर। ३. गीदड़। ४. कौआ। ५. वज्र ६. क्षत्रिय।

वृकोदर—(न०) पांडु पुत्र भीम का एक नाम।

वृक्क—(न०) मूत्राशय। गुरदा।

वृक्ष—(न०) पेड़। दरख्त। झाड़। रूंख।

वृत—(वि०) आवरित। ढका हुआ। ढकियोड़ो।

वृत्त—(न०) १. वृत्तान्त। हाल। हकीकत। २. समाचार। ३. चरित्र। ४. आचार। वर्तन। ५. घेरा। ६. घटना का विवरण। ७. स्तन का अग्र भाग। ८. अक्षर मेल छंद। (वि०) १. बीता हुआ। २. गोलाकार। गोल।

वृत्ताकार—(वि०) गोल आकार वाला। (न०) गोलाकार।

वृत्तान्त—(न०) १. समाचार। २. विवरण। हकीकत। ३. घटना, विषय, स्थिति, वस्तु इत्यादि का वर्णन।

वृत्ति—(ना०) १. मन की अवस्था। मन का व्यापार। २ स्वभाव। ३. जीविका। ४. पारिश्रमिक। ५. ग्रंथ इत्यादि की टीका। व्याख्या। कारिका। ६. रचना शैली। ७. शब्द की अर्थबोधक शक्ति। ८. सहायतार्थ दिया जाने वाला धन। ९. जीवन निर्वाह का साधन। १० काम। धंधा।

वृथा—(वि०) व्यर्थ। फजूल। निष्फल। निरर्थक। बिरथा। (अव्य०) १. बिना प्रयोजन के। २ भूल से। ३. मूर्खता से।

वृद्ध—(वि०) १. बुड्ढा। बूढ़ा। २. बढ़ा हुआ। ३. बड़ा। ४. श्रेष्ठ। (न०) १. बूढ़ा आदमी। डोकरो। २. पंडित। विद्वान।

वृद्धा—(वि०) १. बूढ़ी। २. बड़ी। (ना०) बूढ़ी औरत। बुढ़िया। डोकरी।

वृद्धावस्था—(ना०) बुढ़ापा। वृद्धत्व।

वृद्धि—(ना०) १. बढ़ती। अधिकता २. विकास। ३. उन्नति। ४. विस्तार। ५. उत्कर्ष। ६. ब्याज। सूद।

वृश्चिक—(न०) १. एक विष-कीट। बिच्छू। २. आठवीं राशि। (ज्यो०)

वृष—(ना०) १. बारह राशियों में दूसरी राशि। (ज्यो.) १. सांड। २. बैल।

वृषण—(न०) अंडकोश।

वृषभ—(न०) १. सांड। २ दे० वृष सं. २.

वृषभ-भुज—(न०) शिव।

वृषभ-ध्वज—(न०) शिव।

वृष्टि—*(न०)* वर्षा । मेह । बरसात । बिरखा।
वृहत्—*(वि०)* १. बहुत बड़ा । २. विशाल।
वृहस्पति—*(न०)* १. देवगुरु वृहस्पति । २. वेदकालीन एक नास्तिक ऋषि । अत्यन्त विद्वान व्यक्ति ।
वृहस्पति-वार—*(न०)* १. बुध-वार के बाद का दिन । गुरु-वार । २. सूर्य-परिवार का सबसे बड़ा ग्रह । ३. जो ग्रहों मे से एक ग्रह ।
वृंद—*(न०)* १. झुंड । टोला । समूह । टोळो । २. राशि । ढेर । ढिगलो ।
वृंदा—*(न०)* १ तुलसी । २. राधा । राधिका । ३. एक तपस्विनी का नाम ।
वृंदावन—*(न०)* १. मथुरा के पास श्रीकृष्ण की क्रीड़ा-स्थली । गोकुल के पास का तुलसी-वन । २. वृंदा की तपो भूमि ।
वे—*(सर्व०)* 'वो' (हिन्दी 'वह') का बहु-वचन या सम्मान सूचक शब्द । *(अव्य०)* १. उपसर्ग, जिसका शब्द के पहिले लगने से उसका विपरीतार्थ हो जाता है । बे । २. बिना । बगैर ।
वे-अकल—*(वि०)* बुद्धिहीन । नासमझ ।
वे-अकली—*(ना०)* नासमझी ।
वे-अदब—दे० बे-अदब ।
वे-अदबी—दे० बे-अदबी ।
वे-आदर—दे० बे-आदर ।
वे-आब—*(वि०)* १. बिना पानी । जल रहित । २. बिना चमक का । ३. कान्ति-हीन । दे० बे-आबरू ।
वे-आबरु—दे० बे-आबरू ।
वेइ—*(अव्य०)* १. सम्प्रदान कारक का शब्द । २. लिये । वास्ते । निमित्त । ३. वगैरा । इत्यादि ।
वे-इजत—दे० बे-इज्जत ।
वे-इजती—दे० बे-इज्जती ।
वे-इतबार—दे० बे-इतबार ।
वे-इनसाफ—दे० बे-इन्साफ ।
वे-इनसाफी—दे० बे-इन्साफी ।
वे-ईमान—दे० बेईमान ।
वेईमानी—दे० बेईमानी ।
वेउणी—दे० वेउंडी ।
वेऊंगो—*(वि०)* १. बेशऊर । फूहड़ । २. मद्ध विक्षिप्त । *(ना०)* वेऊंगी ।
वेउंडी—*(ना०)* छोटी भिंडी (पाली) द्वारा घेरा हुआ चूल्हे के आगे का भाग जिसमें चूल्हे की राख इकट्ठी होती है। वेवणी । बेवणी ।
वेऊणी—दे० वेउडी ।
वे-कदर—दे० बेकदर ।
वे-कदरी—दे० बेकदरी ।
वे-कदरो—दे० बेकदरो ।
वेकर—दे० वेकळू ।
वे-करार—दे० बे-करार।
वे-करारी—दे० बे-करारी ।
वे-करियो—*(न०)* एक घास ।
वेकरो—*(न०)* मोटी रेती । कंकड़ वाली रेती । बजरी ।
वेकळू—*(ना०)* बालू रेत । पांशु । पांहु ।
वे-कसूर—दे० बेकसूर ।
वे-काज—दे० बेकाम ।
वे-कावू—दे० बेकाबू ।
वे-काम—दे० बेकाम ।
वे-कायदे—दे० बे-कायदे ।
वे-कार—दे० बे-कार ।
वेकूब—*(वि०)* बे-वकूफ । मूर्ख ।
वेकूबी—*(ना०)* बे-वकूफी । मूर्खता ।
वेख—*(ना०)* १. बुद्धि । सीख । ३. विचार-शक्ति । सूझ ।

वे-खटके—दे० वेखटके ।

वेखणो—(क्रि०) १. देखना। २. तपासना। देखणो ।

वे-खता—दे० बे-खता ।

वे-खबर—दे० बे-खबर ।

वेखरी—(ना०) १. वाणी की चौथी कोटि (परा, पश्यती, मध्यमा और वैखरी) । २. मुँह से उच्चारित शब्द । बोलने की शक्ति । ३. सरस्वती। वैखरी ।

वेखा—(न०) १. ढिलाई । सुस्ती । दीर्घसूत्रता । २. विलंब । देरी । ३ व्यर्थ समय खोना ।

वेखाई—(वि०) वेखा करने वाला । ढीला । दे० वेखा ।

वेखा करणो—(मुहा०) १. फालतू बातें करके देर करना । २. व्यर्थ समय गँवाना । ३. सुस्ती से काम करना ।

वे-खातर—(वि०)१. बे-खबर। २. बे-होश। (न०) आश्वासन। तसल्ली (विरुद्धार्थ)।

वेखाळो—(वि०) दीर्घसूत्री । ढीला । सुस्त । वेखो ।

वेखो—दे० वेखाळो ।

वेग—(क्रि०वि०) शीघ्र । जल्दी । (न०) १. प्रवाह । बहाव । २. गति । ३. मल-मूत्रादि शरीर के मलों का शरीर से बाहर निकलने की प्रवृत्ति । ४. सिर का एक रोग । ५. कनपट्टी में होने वाली एक भारी वेदना । ६. श्वास । ७. ताप । ८. तेजी । ९. जोर । १०. शीघ्रता ।

वेगड़—दे० बेगड़ी स० २.

वेगर—(न०)बकरी के काटे हुए बाल। जट।

वे-गरजी—दे० बे-गरजी ।

वेगळो—(वि०) १. दूर । २. जुदा । न्यारो ।

वेगागळ—(न०) घोड़ा । अश्व ।

वेगार—दे० बेगार ।

वेगारी—दे० बेगारी ।

वेगाळ—(न०) घोड़ा । अश्व ।

वेगाळो—(वि०) १. वेगवान । उतावला । (न०) घोड़ा ।

वे-गुना—दे० बे-गुनाह ।

वेगेरो—दे० वेगो ।

वेगो—(न०) शीघ्रता । त्वरा । (क्रि०वि०) १. शीघ्रता से । जल्दी से । शीघ्र । २. तुरन्त । वेगेरो ।

वे-घर—दे० बे-घर ।

वे-घाट—(वि०) बेडौल । कुरूप ।

वेचणो—(क्रि०) बेचना। मूल्य लेकर बदले में वस्तु को देना । विक्रय करना ।

वेचवाळ—(वि०) बेचने वाला । वेचू । वेचाळ ।

वेचवाळी—(ना०) १. माल बेचने की क्रिया । २. माल बेचने की इच्छा या आवश्यकता ।

वेचाऊ—(वि०) १. बेचने योग्य । २. बेचने वाला ।

वेचाक—(न०) बीमार । अस्वस्थ । मांदो ।

वेचाण—(न०) बेचने की क्रिया । बेचना।

वेचाणो—दे० वेचावणो ।

वेचाळ—दे० वेचवाळ ।

वेचावणो—(क्रि०) बिकवाना । बेचाना । बिकवाणो ।

वेचू—दे० वेचवाळ ।

वे-चेते—दे० बे-चेते ।

वेछाड़—दे० बेछाड़ ।

वेछाड़णो—(क्रि०) १. समतल करना । २. विच्छिन्न करना । विच्छेद करना । ३. अलग करना । ४. मारना ।

वे-जा—(वि०) अनुचित । बे-जा । अजुगतो।

वे-जान—दे० बे-जान ।

वे-जाब्ता—*(वि०)* १. बिना कानून। २ बिना व्यवस्था। ३. अनुचित।

वेजार—*(वि०)* तंग। परेशान। बेजार।

वे-जोड—दे० बे-जोड।

वेजो—दे० वेजो।

वेभ—*(न०)* सुराख। छिद्र। ठीडो।

वेभको—दे० वेभ।

वेठ—*(ना०)* १. बेगार। बिना पैसों का परिश्रम। २. जबरदस्ती लिया जाने वाला काम। ३. उपाधि। ४. परस्पर का मुफ्त का काम।

वेठ काढणो—*(मुहा०)* १. बेगार निकालना। २ काम को अच्छी तरह से और अच्छा नही करना।

वेठणी *(ना०)* १. वेठ मे काम करने वाली स्त्री। २. वेठिया की स्त्री।

वेठणो—*(क्रि०)* १. सहन करना। खमणो। २. निबाहना। ३. वेठ निकालना। ४ वेठ सहन करना। ५ सम्हालना। ६ भुगतना।

वेठियो—*(न०)* वेठ का काम करने वाला। बेगारी। विष्टिक।

वेड़णो—*(क्रि०)* १. काटना। २. निवारण करना। रोकना। ३ दूर करना। ४. खेत मे बाजरी आदि की पूंखो को तोड़ना। दे० वेडणो।

वेडलो—*(न०)* स्त्रियों के कान मे पहिनने का एक गहना।

वेडूंबो—*(न०)* १. छोटा मतीरा। २. गोल और छोटी ककड़ी। ३. गड़ा हुआ मतीरा। *(क्रि०)* १. बिना सूरत शक्ल का। २. मूर्ख।

वे-डोळ—दे० वे-डोळ।

वेढ—*(ना०)* युद्ध। लड़ाई।

वेढक—*(वि०)* १. युद्ध करने वाला। २. वीर। बहादुर। ३. भयंकर। *(न०)* १ युद्ध। २. योद्धा। वेढी। ३. बिना ढक्कन का।

वेढणी—*(ना०)* वीरांगना। *(वि०)* युद्ध करने वाली।

वेढणो—दे० विढणो।

वे-ढब—दे० बे-ढब।

वेढमी—*(ना०)* पिट्ठी भर कर बनाई हुई पूरी या घी से सान कर बनाई हुई एक प्रकार की बढिया रोटी। पिट्ठी, मसाले आदि भरी तवा-रोटी। बेढई। बेढा रोटी। बेढापुड़ी।

वेढंग—दे० वेढंगो।

वेढंगो—दे० वेढंगो।

वेढाळो—*(वि०)* १. बिना ढंग का। २. अव्यवस्थित। दे० वेढाळ।

वे-ढाळ—*(न०)* १. रण-कुशल व्यक्ति। योद्धा। २. युद्ध-प्रिय वीर। वेढीमणो।

वेढां-करंगी—*(वि०)* १. युद्ध करने वाला। योद्धा। २. युद्ध-कुशल।

वेढी—*(न०)* योद्धा। वेढक। वेढीगारो।

वेढीगार—दे० वेढीगारो।

वेढीगारो—*(न०)* योद्धा। वेढी। वेढक।

वेढीमणो—*(न०)* १. जबरदस्त वीर। वेढीमणो। २. युद्ध प्रिय वीर। *(वि०)* पराक्रमी।

वेढीलो—दे० वेढीमणो।

वेढो—*(न०)* १ अंगुली की जोड़ में (हथेली की ओर में) आड़ी रेखा। अंगुली के जोड का निशान। पर्व। पोर। पेरवो। २. अंगुली की दो गांठो के बीच का भाग। ३. गांठ। ग्रंथि। पर्व। ४. ईख, ज्वार आदि के डंठल की गांठ या जोड़। ५. लकड़ी आदि पर औजार से किया हुआ निशान।

वेण—(न०) १. बांस । २. बांसुरी । वेणु । मुरली । बंसरी । दे० वेणी ।

वेणी—(ना०) १. स्त्रियों के केशों की गुंथी हुई चोटी । २. शिखा । चोटी । ३. नदियों का संगम । ४. नदी । ५. नदी का प्रवाह । जल प्रवाह । ६. स्त्रियों के जूड़े में बांधने की पुष्पों की माला ।

वेणी-माधव—(न०) श्री कृष्ण ।

वेणी-संहार—(ना०) १. वेणी संवरण । २. द्रोपदी के वेणी संवरण संबंधी भट्ट नारायण द्वारा रचित एक संस्कृत नाटक ।

वेणु—(ना०) बांसुरी । मुरली । बंसी । बंसरी । (न०) बांस ।

वेत—(ना०) १. संतान । औलाद । २. पशु-संतति । बछड़ा-बछड़ी । ३. बेंत । वेत्र । वेतर । ४. सवारी के ऊंट, घोड़ा आदि ।

वेतन—(न०) तनख्वाह । मासिकी । माहवारी । तनखा । पगार ।

वे-तमीज— दे० बे-तमीज ।

वेतर—(न०) १. मादा-पशु को होने वाला गर्भाधान का समय । २. मादा-पशु की गर्भाधान कराने की इच्छा । ३. मादा पशु को रहा हुआ गर्भ । ४. आसन्न-प्रसूता मादा-पशु । तुरन्त बियाने वाली गाय-भैंस आदि । ५. मादा-पशु का एक बार का प्रसव । ६. गाय-भैंस का बछड़ा-बछड़ी । बाछड़ो ।

वे-तरतीब—दे० बे-तरतीब ।

वे-तरह—दे० बे-तरह ।

वे-तरीके—दे० बे-तरीके ।

वे-तरीको—(वि०) बिना तरीका । बिना ढंग । बेढंगो ।

वे-ताज—(वि०) १. बिना ताज का । बे-ताज । २. बिना राज्य का ।

वे-ताव—दे० बे-ताव ।

वेताळ—(न०) १. बैताल । २. भाट, बंदी आदि । (वि०) जिसमें ताल का ध्यान नहीं रखा गया हो । बेताल । (संगीत) । दे० बेताळ ।

वेतुको—दे० बेतुको ।

वेत्र—(ना०) बेंत । छड़ी । दे० वेतर ।

वे-थाग—दे० बे-थाग ।

वेद—(न०) १. आर्यों (हिन्दुओं) के, दुनिया में सबसे प्राचीन दर्शन एवं धर्म ग्रंथ । [ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद] श्रुति । निगम । २. ज्ञान । ३. शास्त्रीय ज्ञान । सत्यज्ञान । ४. चार की संख्या । [वि.वि. चारों वेदों में ऋग्वेद सृष्टि का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना गया है] ।

वेदक—(न०) हिन्दू । आर्य-हिन्दू । दे० वेदग ।

वे-दखल—दे० बे-दखल ।

वे-दखली—दे० बे-दखली ।

वेदग—दे० वेदक ।

वेदज्ञ—(न०) १. वेदों को जानने वाला । २. ब्रह्मज्ञानी ।

वेद-त्रयी—(ना०) ऋक्, यजु, और साम ये तीन वेद ।

वेद-ध्वनि—(ना०) वेद-घोष । वेदों का परस्पर पढ़ना ।

वेदन—दे० वेदना ।

वेदना—(ना०) १ कष्ट । तकलीफ । दुख । पीड़ा । २. बीमारी । रोग ।

वेदपाठ—(न०) वेदों का पढ़ना । वेदाध्ययन ।

वेदपाठी—(वि०) वेदों का पाठ करने वाला ।

वेदपित—(न०) अग्नि ।
वेद-मंत्र—(न०) १ वेदों के मंत्र । २. वेदों के मूलमंत्र । (न०) किसी वेदकी ऋचा ।
वेद-माता—(ना०) १. गायत्री । २. सरस्वती । शारदा ।
वे-दर—(वि०) १. बिना घर । बेदर । २. बिना इज्जत ।
वेदवंत—(न०) वेदज्ञ ।
वेद-वाक्य—(न०) १. वेदो का प्रमाणभूत आदेश । २. सत्य-कथन । ३. अनुलंघनीय आदेश ।
वेद-विद्—(न०) १. वेदज्ञ । २. विष्णु ।
वेद-विहित—(वि०) १. वेद प्रतिपादित । वेदों में कही हुई । २. जिसकी वेदों ने आज्ञा की है ।
वेदव्यास—(न०)वेदों के संग्रहकर्ता,मंत्र द्रष्टा संपादक एवं पुराणों तथा महाभारत के रचयिता महर्षि पाराशर के पुत्र महर्षि वेदव्यास । कृष्ण-द्वैपायन ।
वे-दाग—दे० बे-दाग ।
वेदाणी—(न०) लुहार । वेनाणी ।
वेदांग—(न०) १. वेद के शिल्प, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद तथा निरुक्त ये छः अंग या शास्त्र । २. इनमें का कोई एक शास्त्र ।
वेदांत—(न०) १. वेदों का अन्तिम भाग, उपनिषद । २. ब्रह्मसूत्र । ३. ब्रह्मविद्या । ४. अद्वैतवाद । ५. आत्मा-परमात्मा और जगत का जिसमें निरूपण किया गया है वह शास्त्र ।
वेदांती—(न०) १. ब्रह्मज्ञानी । २. ब्रह्मवादी । ३. अद्वैतवादी । ४. वेदांत का ज्ञाता । वेदान्त मत का अनुयायी ।
वे-दिल—(वि०) १. हताश । निराश । २. उदास । खिन्नचित्त । ३ नाराज ।
वेदियो—(वि०) १. वेदज्ञ २. वेद पाठ करने वाला ।
वेदी—(ना०) १. यज्ञकुंड । २. मांगलिक या धार्मिक कृत्य करने के लिये बनाया हुआ चबूतरा । ३. एक अल्ल । ४. उलझन । अटपटापना । ५. कठिनता । ६.विशेषता । ७. उत्कृष्टता । ८. यज्ञ मंडप । ९. सरस्वती । १०. पंडित । ११. जानकारी । १२. कला । १३. होशियारी । १४. विवाद (वि०) १. जानकार । २. विद्वान । ३. वेद जानने वाला ।
वेद्य—(न०) १. चिकित्सक । वैद्य । २. ज्ञान । (वि०) १. जानने योग्य ।
वेद्यक—(न०) चिकित्साशास्त्र । आयुर्वेद । वैद्यक ।
वेध—(न०) १. युद्ध । लड़ाई । बेध । २. शत्रुता । अनबन । ३. कलह । ४. आघात । ५ मानसिक क्लेश । ६. छिद्र । सुराख । भेद । ठीडो । ७.आकाशीय ग्रहो की गति, समय इत्यादि का निरीक्षण ।(ज्यो.) ८. सूर्य और चन्द्र ग्रहण के पूर्व का सूतक का समय । ९. सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का किसी अन्य ग्रह की सीध में या छाया में आना । (ज्यो.)
वेधक—(वि०) १. युद्ध करने वाला । योद्धा । वेदी । २. छेद करने वाला । ३. पीड़ा करने वाला । ४ कलहकारी । ५. आघात करने वाला । ६. तीक्ष्ण । (न०) १. शत्रु । वैरी । २. छेद करने का औजार । ३. अंकुश ।
वे-धड़—(वि०) बिना धड़ का । रहित ।
वे-धड़क—दे० बेधड़क ।

वेधरा-झक—(न०) अर्जुन । वेधण-मच्छ ।

वेधरा-मच्छ—दे० वेधण-झक ।

वेधरिणयाप—(वि०)१.बिना मालिकी का । २. बिना मालिक का ।

वेधरगो—(क्रि०) १. छेद करना । बींधणो । २. दुख देना । पीड़ा पहुंचाना । ३. आघात करना । ४. कलह उत्पन्न करना ।

वे-धरम—(न०) धर्म रहित । अधर्म ।

वेधशाला—(न०)ग्रह, नक्षत्रों आदि की गति वगैरह के निरीक्षण करने की यंत्र-शाला ।

वेधाक—दे० वेधाक ।

वेधी—दे० वेधक ।

वे-नसीब—(वि०) भाग्यहीन । करमहीण ।

वेनाणी—(न०) लोहार । वेवाणी ।

वेनाप—(वि०) बिना नाप का । बेनाप । अतिशय ।

वे-नीत—(ना०) अनीति । (वि०) बिना नीति का ।

वेपगो—(वि०) अविश्वासी । नपगो ।

वेपत—(वि०) अविश्वसनीय । बिना पत या पतियारे का । अपतियो ।

वेपता—(वि०) १ जिसका पता ठिकाना न हो । वेपता । २ आवारा ।

वेपथ—(न०) कुमार्ग । (वि०) भूला हुआ। भटका हुआ ।

वेपरवा—दे० वेपरवाह ।

वेपरवाही—दे० वेपरवाही ।

वेपाट—(वि०) असीम । बेहद । अपार । (न०) व्यापार । वैपार ।

वेपैठ—(वि०) १. बिना इज्जत का । २. अविश्वासी ।

वेफाम—(अव्य०)बिना विचार कि । ध्यान दिये बिना । वेफहम । (वि०) गाफिल । वेपरवाह । बेसुध ।

वे-फायदा—दे० बेफायदा ।

वे फिकर—(वि०) बेफिक्र । निश्चित ।

वे-फिकरी—(ना०) निश्चितता ।

वे-फैम—दे० वेफहम ।

वे-बुनियाद—(वि०) निर्मूल । आधार-रहित ।

वेमान—दे० वेमान ।

वेम—(न०) १. गाय, भैंस आदि पशुओं का जनन क्रम । वेतर । २ प्रत्येक बार का जनन (ढोर का बच्चा) । ३. पशु संतति । बछड़ा । ४. पशु प्रसव । ५. बच्चा । संतान । पुत्र (आक्रोश या व्यंग्य में) । ६.विचार ।

वेमणो—(क्रि०) १. विचार करना । गंभीरता से सोचना । गहराई में सोचना । २. हित-अहित सोचना ।

वेमन—दे० वेमन ।

वे-मनो—(वि०) १. उदास २. वेमन ।

वे-मरामत—(वि०) वेमरम्मत । टूटा-फूटा ।

वे-माप—(वि०) १. वेमाप । बिना माप का । २. अपार ।

वे-मार—दे० बीमार ।

वे-मारी—दे० बीमारी ।

वे-मालुम—(वि०) जिसका पता न हो । वेमालूम । वेपता ।

वे-मुख—दे० विमुख ।

वेमेदा—दे० वेमेदा ।

वेमेळ—दे० बेमेल ।

वे-मोसम—दे० बेमौसम ।

वे-मौत—दे० वेमौत ।

वेर—(ना०) १. विलंब । देर । २. समय । वेला । (प्रव्य०) फिर । फेर । पुनः ।

वेर-प्रवेर—(प्रव्य०) १. वक्त-बेवक्त । समय-कुसमय । २. शीघ्र-प्रशीघ्र । बेगो-मोड़ो ।

वेरक—(प्रव्य०) एक वार । 'एक वेर' का संक्षिप्त रूप ।

वेरणो—(क्रि०) १. वर्णन करना । कहना । २. सम्हालना । ३. एकत्र करना । ४. मन चुराना । ५. देर करना । ६. बिखेरना । ७. विचार करना ।

वे-रद—(वि०) १. बिना दाँतों का । २. मुकनो-हाथी ।

वे-रस—दे० विरस

वे-रहम—दे० बेरहम ।

वे-रहमी—(ना०) दया हीनता । बेरहमी । प्रवकृपा ।

वे-रंग—(वि०)१. रंग रहित । विरंगा । २. बिना टिकट या कम टिकट लगा हुआ । (डाक पत्र) । ३. फीके या ढीले मुंह का ।

वे-रंगो—दे० बेरंग ।

वेरागर—(वि०) १. विस्तृत । २. बहुत बड़ा । विशाल । (न०) नमक बनाने के निमित्त वर्षा का पानी संग्रह करने के लिए बनाया हुआ खड्डा या खान । आगर ।

वे-राजी—दे० बेराजी ।

वेराए—दे० वोराए । (वि०) सं. २

वे-राबतो—(न०) १. अनबन । वैमनस्य । २. शत्रुता । दुश्मनी । दुसमणी ।

वे-रास्ती—(ना०) १. मनोमालिन्य । वैमनस्य । २. शत्रुता । दुश्मनी । वैर ।

वेरी—(ना०) १. छोटा कुंआ । कुई । २. कुंआ ।

वे-रीत—(वि०) बिना रीति के । (ना०) कुरीति । रीति के विरुद्ध ।

वे-रुख —(न०) उपेक्षा का भाव । बेरुख ।

वे-रुत—(वि०) बिना मौसम के ।

वे-रूप—(वि०) कुरूप । विद्रूप । विरूप ।

वेरो—(न०) १. कुआं । कूप । २. जानकारी । विज्ञता । पता । ब्योरा । ३. याद । स्मृति । ४. कर । महसूल । बराड़ । लगान ।

वे-रोक—दे० बेरोक ।

वे-रोक-टोक—दे० बे-रोकटोक ।

वेरोजगार—(वि०) १ बिना धंधा का । २. बेकार । बेरोजगार ।

वे-रोजगारी—(ना०)बेकारी । बेरोजगारी ।

वेल—(ना०) १. लता । वल्ली । बेलड़ी । २. अंगूठी । बींटी । ३. वंश । ४. स्त्री ।लुगाई ।

वेळ—(वि०ना०)१. फूहड़ ।२. विह्वल । ३. मूर्ख । (ना०) १ लहर । वेल। २. पागलपन । ३ अनेक आटों वाली एक अंगूठी । ४. एक कंठाभूषण ।

वेलख—दे० बेलख ।

वे-लगाम—दे० बेलगाम।

वेलड़ी—(ना०) १. लता । वेल । २. कमनीय स्त्री ।

वेलण—(न०) रोटी बेलने का बेलन । बेलन ।

वेलणियो—(वि०) बेलने वाला । (न०) छोटा बेलन । बेलण ।

वेलणी—(ना०) छोटा बेलन । बेलणी ।

वेलणो—(क्रि०) बेलना (रोटी, पापड़ आदि) । वटणो । बटणो ।

वेलदार—*(न०)* १. तालाब, खानों आदि में मिट्टी पत्थर आदि खोदने का काम करने वाली एक जाति। इस जाति का व्यक्ति। *(वि०)* बेल-बूंटों वाला।

वेलदारी—*(ना०)* १. वेलदार की स्त्री। २. वेलदार का काम।

वेल-वधरणो—*(मुहा०)* वंश वृद्धि होना।

वेलंगो—*(वि०)* १. लंबा, पतला और कुरूप (मनुष्य)। २ ढीला और सुस्त। (मनुष्य)।

वेला—*(न०ब०व०)* १. अनेक प्रकार के संकट। २. संकटों का एक साथ आ पड़ना। ३. संकट काल।

वेळा—*(ना०)* १. समय। काल। वक्त। २. खाली समय। फुरसत। अवकाश। ३. देर। विलंब। ४. कोई खास अवसर। प्रसंग। ५. आपत्तिकाल का प्रसंग। ६. सागर-तरंग। ७. सागर-तट।

वेळा करणो—*(मुहा०)* देर लगाना। मोड़ो करणो।

वेळा-कुवेळा—*(अव्य०)* १. समय-कुसमय। वक्त-बेवक्त। २. किसी भी समय। वेर-अवेर।

वे-लाग—*(वि०)* १. निष्पक्ष। बेलाग। २. व्यवहार में खरा। खरा। ३. बिना आधार का। आधार रहित। ४. बिलकुल अलग। ५. कर-मुक्त।

वेळा-पुळ—*(ना०)* १. शुभ समय। भाग्योदय-काल। २. विशेष समय। ३. जन्म समय (के ग्रहादि)। ४. समय। वक्त। वेला-पल। ५. मुहूर्त।

वेळा लागणो—*(मुहा०)* देर लगना।

वे-लाज—*(वि०)* निर्लज्ज बेशर्म। नलजो।

वे-लाभ—*(वि०)* बिना लाभ का।

वेळावळ—*(न०)* १. समुद्र। २. लहर। तरंग। ३. एक राग। बिलावल।

—**वेला-वीतणो**—*(अव्य०)* दुख पाना। संकट में पड़ना। संकट भुगतना।

वेळासर—*(अव्य०)* यथा समय। ठीक समय पर। नियत समय पर।

वेळाहरण—*(न०)* समुद्र।

वेळाहळ—*(न०)* समुद्र।

वेलि-क्रिसन-रुकमणी-री—*(ना०)* बीकानेर के भक्त पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रचा गया डिंगल का एक उत्तम कोटि का अति प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ।

वेलियो-छंद—*(न०)* राजस्थानी काव्यशास्त्र का एक छंद। एक डिंगल छंद। छोटा साणोर छंद।

वेली—*(ना०)* १. लता। बेलड़ी। बेल। २. एक काव्य प्रकार।

वेळू—*(ना०)* १. बालू। धूलि। रेत। रेती। २. वह रज जिसमें मिट्टी का अंश न हो। पांशु। वेकळू। पांह।

वेलो—*(न०)* १. बड़ी लता। २. वंश। ३. पापड़ बनाने के लिये लोइयों के लिये बनाया हुआ लंबा लाटा।

वेल्हा—दे० वेला।

वेवणी—दे० वेजंडी।

वेवणो—*(क्रि०)* विवेकपूर्ण विचार करना।

वेवला—*(न०ब०व०)* १. व्याकुलता। २. विह्वलता। ३. बीमारी की वह दशा जिसमें बीमार, हाथ को हिलाने की और अपने आप बातें करने की चेष्टाएँ करता है।

वेवला-वीणणो—*(मुहा०)* बीमारी की बेख्याली में हाथ से कोई चीज चुनने या उठाने जैसी क्रियाएँ करना।

वेवाई—(न०) १. पुत्र या पुत्री का ससुर। २.पुत्र या पुत्री के ससुराल के कुटुंबीजन। ३.वेवाई पक्ष का व्यक्ति सगा-संबंधी। समधी। सगो गिनायत। ब्याही।

वेवाही—दे० वेवाई।

वेवाण—(ना०) वेवाई की पत्नी। समधिन। सगी। गिनायतण। ब्यायण।

वेश—(न०) १. पोशाक। परिधान। वेष। २. वस्त्र पहिनने का ढंग। ३. जाति या संप्रदाय (साधु-संन्यासी) के रीति-रिवाज के अनुसार कपड़े पहिनने का ढंग। दे० वेस।

वेश-धारी—(वि०) १. छद्मवेश धारण करने वाला। भेसधारी। २. दंभी। ढोंगी।

वेश्या—(ना०) १ गणिका। पातर।

वेश्या-गमन—(न०)वेश्या के साथ संभोग।

वेष—दे० वेश या वेस।

वेष्टन—(न०) १. लपेटन। २. किसी वस्तु को लपेटने का कपड़ा। वींटण।

वेस—(न०) १. सम्पूर्ण स्त्री परिधान। स्त्री पोशाक। वेष। २. विवाह की एक परिपाटी जिसमें वर पक्ष की ओर से वधू के घर पड़ला ले जाने के समय वधू के लिये अन्य मांगलिक वस्तुओं के साथ भेंट की जाने वाली कीमती पोशाक। ३. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर वेदी-मंडप के चारों कोनों में स्थापित किये जाने वाले मंगल-कलश। ५ वयस। आयु। उमर। ६. मिले-सिलाये पहनने के सिर से पैर तक सभी कपड़े। ७. स्वांग। ८. भेष। वेश।

वे-सऊर—(वि०) १. अशिष्ट। वे-शऊर। २. बेढंगा। ३. गंवार। ४. अयोग्य। ५. निर्बुद्धि।

वेसण—(न०) १. चने का आटा। वेसन। २. मूंग, मोंठ आदि द्विदल नाज का आटा। वेसण।

वेसन्नर—(न०) १. वैश्वानर। अग्नि। वासदे। २. परमेश्वर।

वे-सवर—(वि०) बेसब्र। अधीर।

वे-समझ—(वि०) निर्बुद्धि। मूर्ख। अज्ञानी। नासमझ।

वे-समझी—(ना०) मूर्खता। अज्ञानता। नासमझी। मूरखाई।

वे-समभ्—दे० वेसमझ।

वेसर—(न०) स्त्रियों के नाक का एक आभूषण। नकवेसर। वेसर।

वे-सरम—दे० वेशर्म।

वेसवार—(न०) साग-तरकारी में डाला जाने वाला हल्दी मिर्च, धनिया आदि मसाला। वेशवार। बिसवार।

वेसंदर—दे० वेसन्नर।

वे-साख—(वि०) १. शाखा रहित। २. प्रतिष्ठा रहित।

वे-साज—(वि०) साज सामान रहित।

वेसास—दे० विश्वास।

वेसासणो—(क्रि०) १. विश्वास करना। २. भरोसे रहना।

वे-सुध—(वि०) वेसुध। वेहोश। अचेत।

वे सुमार—(वि०) वेशुमार। असंख्य। अगणित।

वे-सवाद—(वि०) १ वेस्वाद। स्वाद रहित। असवादो। २ अरुचिकर।

वेह—(न०) १. आयु। उम्र। २. वेश। वेशभूषा। ३. विधाता। ब्रह्मा। ४. मानव शरीर। ५. मंगल कलश। ६. विवाह मंडप में स्थापित किये जाने वाले मंगल कलश। ७ विवाह, की

द्वारा मंडित मातृका। ८. विवाह में स्त्रियों द्वारा की जाने वाली घट स्थापन विधि। ९. विवाह में वधू को पहिनाये जाने वाला वस्त्राभूषण।]

वे-हक—दे० वेहक।

वेहड़ली—दे० वेह सं. १।

वेहड़लो—दे० वेह सं. ६.

वे-हद—दे० वेहद।

वेह-माता—(ना०) विधाता। ब्रह्मा। (वि०ना०) १. मूर्खा। २. भोली।

वेह मांडणो—(मुहा०)१. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर घट-स्थापन करना। २. मातृका स्थापन करना।

वे-हवाल—दे० वेहाल।

वे-हाल—दे० वेहाल।

वे-हिसाब—दे० वेहिसाब।

वेहुंगो—दे० वेऊंगो।

वेहूदो—दे० वेहूदो।

वे-हेत—(वि०)प्रीति रहित। विना प्रीति का।

वे-होस—दे० वेहोश।

वे-होसी—दे० वेहोशी।

वेंत—दे० वैत।

वेंतणो—दे० वैतणो।

वेंतरणो—दे० वैतरणो।

वेंतरियोड़ो—दे० वैतरियोड़ो।

वेंत-सूत—दे० वैत-सूत।

वेंताणो—दे० वैताणो।

वेंतियोड़ो—(भू०कृ०) व्योंता हुआ। नापा हुआ (कपड़ा)।

वेंतीजणो—(क्रि०) व्योंता जाना। नापा जाना (कपड़ा)।

वै—(ना०) १. वय। आयु। अवस्था। २. २.बीता हुआ जीवन। (न०) १. पति। स्वामी। २. राजा।

वैकल्पिक—(वि०) १. विकल्पवाला। २. विकल्प के रूप में प्रयुक्त। ३. विकल्प के रूप में संभवित। ४. अनिश्चित। ५. शंकास्पद।

वैकुंठ—(न०) १. विष्णुधाम। विष्णुलोक। २. स्वर्ग। स्वर्गलोक।

वैकुंठ-धाम—दे० वैकुंठवास।

वैकुंठ-नाथ—(न०)विष्णु।

वैकुंठ-पति—(न०)विष्णु।

वैकुंठ-वास—(न०) १. मृत्यु। मौत। २. वैकुण्ठ में निवास।

वैकुंठ-वासी—(वि०) १. स्वर्गवासी। २. मृत। रामशरण। (न०) श्री विष्णु।

वैकुंठी—(ना०) शव को बिठा कर श्मशान ले जाने की देवलनुमा अरथी। शव-विमान। वैकुंठ में जाने का विमान।

वैखरी—(ना०) १. वाणी की चौथी कोटि (परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी)। २. स्पष्ट उच्चरित वाणी। ३. मुँह से उच्चरित शब्द। ४. बोलने की शक्ति। ५. सरस्वती। शारदा।

वैखानस—(न०) वानप्रस्थाश्रम में स्थित व्यक्ति। वानप्रस्थ। (वि०) वानप्रस्थ संबंधी।

वैजयंती—(ना०) १. घुटनों तक की लम्बी माला। २. पचरंगी मोतियों की लम्बी माला। ३. ध्वजा। पताका। ४. खेलकूद में विजेता को प्राप्त होने वाली शील्ड।

वैजंती—दे० वैजयंती।

वैज्ञानिक—(वि०) १. विज्ञान सम्बन्धी। २. विज्ञान के अनुसार। (न०) विज्ञान-शास्त्री।

वैड़—(ना०) १. पहली बार ब्याई हुई गाय। वैडकी। २. वह बछिया जो गर्भ धारण करने योग्य हो गई हो।

वैड़की—दे० वैड़।

वैड़ो—(वि०) वैसा। उस प्रकार का। प्रोड़ो। उड़ो।

वैण - (न०) १. वचन। वयण। कथन। बोल। २. प्रतिज्ञा। कौल।

वैण देणो—(मुहा०) प्रतिज्ञा करना। वचन देना। कौल करणो।

वंणव—(न०) बाँस। वाँह। वांहड़ो।

वैण-सगाई—(ना०) राजस्थानी काव्य का एक विशिष्ट अलंकार या आवर्तन। प्रत्येक तुक के प्रथम वर्ण का तुकान्त में किया जाने वाला प्रतिस्थापन। वर्ण-संबंध। वयण-सगाई। वर्णमेळ।

वैणी—दे० वेणी।

वैत—(न०) १. ऊंट। २. ऊंट, घोड़ा, बैलगाड़ी आदि सवारी का कोई वाहन। वहत। ३. भार। वहन। (ना०) बित्ता। बालिश्त।

वैतनिक—(वि०) १. वह जो वेतन पर काम करता हो। २. वेतन सम्बन्धी। वेतन का।

वैतरणी—(ना०) यमपुरी की एक नदी। मृतात्मा द्वारा पार की जाने वाली यम-लोक की एक काल्पनिक नदी।

वैतरू—दे० वाहन।

वैताल—दे० वैताळ।

वैताळ—(न०) १. शिव का एक गण। वीर वैताल। २. एक भूतयोनि। ३. एक जाति का भूत। ४. भूतों का राजा। ५. स्तुतिपाठक। ६. द्वारपाल। (वि०) (वैताल के समान) क्रोधी व भयंकर।

वैतालण—(ना०) १. वताल की स्त्री। २. भूतनी। ३. डरावनी सूरत वाली स्त्री। ४. झगड़ालू तथा क्रोधी स्त्री। ५. भाटनी। (वि०) डरावनी।

वैतूळ—(न०) वातचक्र। वायुतूल। गैतूळ। भतूळियो। (वि०) बावला। पागल।

वैद—दे० वैद्य।

वैदक—(न०) चिकित्सा-शास्त्र। वैद्यक।

वैदगी—(ना०)१.वैद्य का काम। चिकित्सा। २. वैद्यक।

वैदराज—(न०) वैद्य (मानार्थ)। वैद्य-राज।

वैदिक—(वि०) १. वेद सम्बन्धी। २. वेदों द्वारा प्रमाणित। ३.वेदोक्त। ४. वेदानु-सारी। ५. वेदकालीन।

वैदिक-धर्म—(न०) वेदोक्त धर्म।

वैदिक-युग—(न०) १. वेदों का रचना काल। २ वेदों के प्रचलन का समय। वैदिक काल। ३.वेदों के अनुसार धर्म-कर्म, रीति-नीति, आचार-विचार इत्यादि के पालन करने का आर्यों का प्राचीन युग।

वैदूर्य—(न०) लहसुनिया नामक एक रत्न।

वैदेही—(ना०) विदेह (राजा जनक) की पुत्री। सीता। जानकी।

वैद्य—(न०) आयुर्वेद चिकित्सक। वैद।

वैद्यक—दे० वैदक।

वैध—(वि०) १. कानून के अनुसार। २. विधि सम्मत। विहित। कायदासर।

वैधव्य—(न०) विधवापन। रंडापो।

वैनतेय—(न०) १. गरुड़। २. अरुण।

वैपार—दे० व्यापार।

वैपारी—दे० व्यापारी।

वैभव—(न०) १. ऐश्वर्य। २. धन-सम्पत्ति ३. विभव। ४. महिमा। ५. सामर्थ्य। ६. शान-शौकत।

वैभव-शाली—*(वि०)* ऐश्वर्यवान । बहुत धन-सम्पत्ति वाला ।

वैमनस्य—*(न०)* १. दुश्मनी । वैर । शत्रुता । २. द्वेष । ३. भिन्नता ।

वैयाकरणी—*(न०)* व्याकरण शास्त्र का विशेषज्ञ । व्याकरण-शास्त्री ।

वैर—*(न०)* १. शत्रुता । दुश्मनी । २. विरोध ।

वैरण—*(ना०)* १. शत्रु-स्त्री । वैरिन । २. शत्रु की स्त्री । ३. एक गाली । ४. सौत । *(वि०)* दुख-दायिनी ।

वैरणो—*(क्रि०)* १. लकड़ी आदि किसी वस्तु को आरा से चीरना । २. वैर का बदला लेना । ३. जैन साधु को (भोजन पानी की) भिक्षा देना ।

वैर-भाव—*(न०)* शत्रुता । दुश्मनी ।

वैर-वाढ—*(ना०)* १. उग्र शत्रुता । २. झगड़ा । लड़ाई ।

वैर-वाळू—(वि०) १. वैर का बदला लेने वाला । २. प्रत्याघाती ।

वैर-वाहरू—*(वि०)* १. वैर का बदला लेने वाला । २. वैरी का पीछा करने वाला ।

वैर-विरोध—*(न०)* १. शत्रुता और अनबन । २. शत्रुता या अनबन ।

वैर विहडणो—*(वि०)* वैर का बदला लेने वाला । शत्रु को मार कर वैर का बदला लेने वाला ।

वैराइत—दे० वैरायत ।

वैराइयां—*(न०ब०व०)* (वैरी शब्द का बहुवचन रूप) शत्रु समूह । शत्रुगण । *(अव्य०)* १. शत्रुओं से २. शत्रुओं का ।

वैराई—दे० वहराई ।

वैराग—दे० वैराग्य ।

वैरागण—*(वि०)* वैराग्यवाली । *(ना०)* १. वैराग्यवाली स्त्री । २. वैरागी की स्त्री । ३. साध्वी । साधणी ।

वैरागर—*(न०)* १. शत्रु । २. शत्रु समूह । ३. खान । खदान । आगर । ४. नमक की खान । ५. चौड़ा कुआं । ६. एक प्रदेश । *(वि०)* १. विस्तृत । २. बहुत बड़ा (कुआं, तालाब, खान इत्यादि) ।

वैरागी—*(न०)* १. वैराग्यवाला (पुरुष) । २. साधुओं की एक जाति । ३. एक वैष्णव सम्प्रदाय । ३. साधु । *(वि०)* वैराग्य-वाला ।

वैराग्य—*(न०)* संसार पर की आसक्ति का अभाव । विरक्ति ।

वैराजी—*(वि०)* नाखुश । अप्रसन्न । नाराज ।

वैराजी-पणो—दे० वैराजीपो ।

वैराजीपो—*(न०)* नाराजी । अनबन । वैराजीपणो ।

वैराजो—दे० वैराळो ।

वैराट—दे० विराट ।

वैराडी—*(ना०)* शत्रुता ।

वैराड़ो—दे० वैराळो ।

वैराणो—*(क्रि०)* १. भिक्षा देना (जैन) । वहराणो । २. करोत से कटवाना । चिरवाना । चीरावणो ।

वैरान—*(वि०)* १. निर्जन । उजाड़ । २. शोभाहीन ।

वैरापो—दे० वैराळो ।

वैरायत—(न०) १. शत्रु समूह । शत्रुगण । २. शत्रुप्रदेश । ३. शत्रुभाव । शत्रुता ।

वैराळो—*(न०)* १. वैरभाव । २. शत्रुता । दुसमणावट । ३. शत्रु प्रदेश । ४. शत्रुओं का आक्रमण । वैराड़ो । वैराजो ।

वैरावणो—दे० वैराणो ।

वैरी—*(न०)* शत्रु । दुश्मन । वेरी । बैरी । दुसमण ।

वैरी-वाड़ो—*(न०)* १. शत्रुओं का मोहल्ला। २. शत्रुता। वेराड़ो। दुश्मनावट।

वैल—*(ना०)* १. नाटे बैलों का रथ। २. रथ के आकार की बैलगाड़ी। बहली।

वैवार—दे० व्यवहार।

वैशंपायन—*(न०)* वेद-व्यास के शिष्य एक ऋषि जिन्होने जन्मेजय को महाभारत की कथा सुनाई थी।

वैशाख—*(न०)* चान्द्र वर्ष का विशाखा नक्षत्र वाला दूसरा मास। चैत्र और जेठ के बीच का महीना।

वैशाख-नंदन—*(न०)* गदहा। गधेड़ो।

वैशाखी—*(न०)* १. वैशाख महीने की पूर्णिमा। २. लंगड़े के सहारे का डंडा। २. डोली।

वैशेषिक-दर्शन—*(न०)* छः वैदिक दर्शनों में से कणाद ऋषि द्वारा प्रवर्तित एक दर्शन। परमाणुवाद दर्शन।

वैश्य—*(न०)* १. हिन्दुओं के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण। २. वणिक। बनिया। वाणियो। ३. एक हिन्दू जाति।

वैश्या—*(ना०)* वैश्य की स्त्री।

वैश्रवण—*(न०)* १. कुबेर। २. शिव।

वैश्वदेव—*(न०)* १. भोजन के पूर्व देवों को दिया जाने वाला बलि। २. विश्व देव के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

वैश्वानर—*(न०)* १. अग्नि। २. जठराग्नि। ३. परमेश्वर।

वैष्णव—*(न०)* १. एक साधु जाति। २. विष्णु की भक्ति करने वाला एक सम्प्रदाय। विष्णु उपासक सम्प्रदाय। ३. विष्णुभक्त।

वैष्णवास्त्र—*(न०)* विष्णु का अस्त्र।

वैस—*(ना०)* १ आयु। वयस। *(न०)* १. वैश्य। २ वैश्य जाति।

वैसन्नर—*(न०)* अग्नि। वैश्वानर। विसन्नर। वैसन्दर।

वैसाख—दे० वैशाख।

वैसाख-नंदण—दे० वैशाखनन्दन।

वैसाख-पूत—दे० वैशाखनंदन।

वैसाखी—*(ना०)* लगड़े मनुष्य के चलते समय बगल में रखा जाने वाला डंडा। दे० वैशाखी।

वैसासणो—*(क्रि०)* १. विश्वास करना। दिलासा देना। सांत्वना देना। ३. विश्वास करना। ४. आश्वस्त होना।

वैहरणो—*(क्रि०)*१. चीरना। २. काटना। तोड़ना। दे० वैरणो। सं. १. ३.

वैहल—*(ना०)* रथ के आकार की बैलगाड़ी। बहल। वैल।

वैहलियो—*(न०)* बहली मे जोता जाने वाला बैल।

वंगण—*(न०)* बैंगन। वृन्ताक। विंताक। रींगणो।

वंगाळ—*(न०)* घोड़ा। अश्व। वेंडाक।

वेंचणो—*(क्रि०)* १. बांटना। २. हिस्से करना।

वेंचवाड़ो—*(न०)* बँटवारा।

वेंडाक—*(न०)* घोड़ा। अश्व। वंगाळ।

वेंडापणो—*(न०)* १. पागलपन। २. बहादुरी। वीरता। ३. अड़ियलपन।

वेंडी—*(वि०ना०)* १. मूर्खा। २. पगली। झगड़ालू। वीरांगना।

वेंडाळ—*(वि०)* १. युद्धोन्मत्त। २. पागल। *(न०)* हाथी।

वेंडूक—*(न०)* घोड़ा। अश्व।

वेंडूर—दे० वेंडूक।

वैंडो—*(वि०)* १. पागल। उन्मत्त। २. भड़ियल। बहादुर। ४. दुर्गम। ५. प्रतिकूल। ६. मूर्ख। ७. बेपरवाह।

वंत—*(ना०)* १.अंगुलियाँ फैलाने पर कनिष्का और अंगूठे के सिरों तक बन जाने वाली लंबाई। २. बालिश्त। *(न०)* १. एक माप। बेंत। २. सवारी का ऊंट घोड़ा आदि। ३. पोशाक(परिधान)को यथा अंग सीने के लिए शरीर के अंगों का लिया जाने वाला माप। ४. अंगों के अनुसार लिया गया कपड़े का नाप। ५. नाप। ६. युक्ति। तजवीज। ७. ढांचा। प्रतिरूप। ८. अवसर। मौका। *(अव्य०)* १. ही। २. निश्चिय ही। ३. अवश्य। ४. पर। ५. के साथ। ६. मात्र। केवल। सिर्फ।

वैंतणो—*(क्रि०)* १. पोशाक को सीने के पूर्व उसको यथाप्रण बनाने के लिये शरीर के अंगो को नापना। ब्योंतना। २. किसी परिधान को सीने के पूर्व अंगों के अनुसार कपड़े का नाप करना। ३. जमीन को नापना। ४. नापना।

वैंतरणो—दे० वैंतणो। सं. १.२.४

वैंतरियोड़ो—*(भू०कृ०)* ब्योंता हुआ। नापा हुआ।

वैंत-सूत—*(न०)* १. किसी वस्तु को तैयार करने के पूर्व उसके भागों का किया जाने वाला माप तोल। २. तैयार की हुई वस्तु के भागो का तोल माप के अनुसार सही सिक्के होना। ३. वैंतने का काम। नापने का काम।

वैंताणो—*(क्रि०)* १. कपड़ा सीने के लिये अंगों का माप लिवाना। २. नाप करवाना।

वो—*(सर्व०)* वह। उवो। हेवो। बो।

वोज—*(न०)* १. ढंग। प्रकार। भांति। २. प्रणाली। रीति। शैली। पद्धति। ढब। चळामण। ३. खाट बुनने का प्रकार, जैसे—बावड़ी-वोज, गुरड़-वोज। ४. रचना। ५. युक्ति। उपाय। ६. शोभा। ७. सामर्थ्य। हैसियत। ८. विनम्रता। ९. विवेक।

वोजतो—*(वि०)* १. शोभा देने वाला। शोभित। २. ग्रहण करने योग्य। वोजतो। ३. ढब वाला। ४. रीति अनुसार। वोजवाळो।

वोज-वाळो—दे० वोजतो।

वोजाळो—*(वि०)* १. ढंग वाला। वोज-वाला। २. विनम्र।

वोट—*(न०)* प्रतिनिधि चुनाव में किसी उम्मीदवार के पक्ष में दिया जाने वाला मत। चुनाव का मत।

वोटर—*(न०)* मतदाता।

वोटिंग—*(न०)* मतदान।

वोढ—दे० ओढ।

वोढो—*(वि०)* १. विकट। २. भयंकर। भीषण। ओढो। ३. वृद्ध। *(न०)* एक घास।

वोढो-रावण—*(न०)* १. विकट रावण। २ रावण के समान विकट वीर पुरुष। ३. वृद्ध रावण। ४. कुम्भकर्ण। *(वि०)* अत्यन्त जबरदस्त।

वोभर—दे० ओभर।

वोम—*(न०)* आकाश। व्योम। आभो।

वोमग—*(न०)* १. आकाश-मार्ग। २. व्योमचर। पक्षी। पंखी। ३. देवता। ४. बादल।

वोमगा—*(न०)* १. आकाशगामी। २. पक्षी। ३. देवता। बादल।

वोमंगी—*(वि०)* १. आकाशगामी। व्योम विहारी। २. बड़े शरीर वाला। व्योमांगी। ३ बड़े विस्तार वाला। ४. जबरदस्त। *(न०)* पक्षी।

वोम-मिरा—*(न०)* १. व्योममरिण। सूरज। २. चंद्र। ३. नक्षत्र।

वोये—*(अव्य०)* १. समर्थन सूचक अव्यय। हकारात्मक अव्यय। २. हुंकारा देने का एक उद्गार। हाँ *(न०)* स्वीकृति।

वोरगत—दे० वोहरगत।

वोरी—दे० वोहरी।

वोरो—दे० वोहरो।

वोळणो—*(क्रि०)* १. बिताना। व्यतीत करना। २. उपभोग करना। ३. निर्गम करना। ४. लाटना। ५. लौटाना।

वोळाऊ—*(न०)* १. यात्रा के साथ चलने वाला यात्रा-रक्षक। २ मार्ग रक्षक। वळाऊ। ३. मार्ग दर्शक। भोमियो। *(वि०)* १. लौटने वाला। २. लौटाने वाला। ३. संदेश-वाहक। दूत।

वोळामरा—दे० वोळावरा।

वोळामरणी—दे० वोळावरणी।

वोळावरा—दे० वोळावरणी दे० वळामरा।

वोळावरणी—*(ना०)* १. प्रसिद्ध गरागोर त्योहार का अन्तिम दिन, जिस दिन गौरी को ससुराल भेजे जाने का महोत्सव मनाया जाता है। २. गौरी उत्सव का उद्यापन। बोळावणी। ३. विदाई। ४. वापिस लौटाने का भाव या क्रिया।

वोळावरणो—*(क्रि०)* १. लौटाना। २. विदा करना। ३. विदा होने वाले के प्रमुक स्थान तक साथ जाना। पहुंचाना। मेहमान को विदाई देना। ४. व्यतीत करना। बिताना।

वोळावो—*(न०)* १. यात्रा में रक्षा के लिये साथ में लिया जाने वाला साहसी और वीर रक्षक (राजपूत, भील, मीना इत्यादि जो प्रायः वोळाने का काम किया करते थे)। २. दूत। दे० वोळाऊ।

वोहरगत—*(ना०)* १. ब्याज पर रुपया देने का धंधा। २. कृषकों को उधार देने का धन्धा।

वोहरी—*(ना०)* १. वोहरा की स्त्री। २. वोहरा जाति की स्त्री।

वोहरो—*(न०)* १. ब्याज पर कर्ज देने का काम करने वाला व्यक्ति। २. ऋरा-दाता। ३. शियापंथी मुसलमान जाति। ४. इस जाति का व्यक्ति। बोहरा।

व्यक्त—*(वि०)* १. जो प्रकट किया गया हो। २. स्पष्ट। साफ।

व्यक्ति—*(न०)* १. समाज या समष्टि में से कोई एक। जाति या समूह में से कोई एक। व्यष्टि। जणो। २. मनुष्य। आदमी। ३. व्यक्त होने की क्रिया या भाव। व्यक्तता। स्पष्टता।

व्यक्तिगत—*(वि०)* १. व्यक्ति से सम्बन्धित २. व्यक्ति विशेष का सम्बन्ध। ३. व्यक्ति का अपना। निजी। वैयक्तिक। निजी। अपणो।

व्यक्तिवार—*(अव्य०)* व्यक्तिशः। प्रति-व्यक्ति। जणारोठ। जणीका-रोठ।

व्यग्र—*(वि०)* १. व्याकुल। बेचैन। २. अस्थिर। ३. घबराया हुआ।

व्यग्रता—*(ना०)* १. व्याकुलता। बेचैनी। २. अस्थिरता। ३. घबराहट।

व्यजन—*(न०)* पंखा। बींजणो।

व्यतिक्रम—*(न०)* १. उल्लंघन। २. विपर्यास। ३. विघ्न। बाधा। ४. रुकावट। ५. क्रम को गड़बड़ा देने वाली बात। क्रम विपर्यय।

व्यतीत—*(वि०)* १. बीता हुआ। गुजरा हुआ। वितीत। २. चला गया हुआ। ३. मरा हुआ।

व्यतीपात—*(न०)* १ एक निषिद्ध योग। ज्योतिष में अशुभ माना जाने वाला सत्रहवाँ योग। २. उत्पात। उपद्रव। ३. भीषण प्राकृतिक उत्पात।

व्यथा—*(ना०)* दुख। पीड़ा। विथा।

व्यथित—*(वि०)* १. दुखित। दुखी। २. पीड़ित। ३. व्याकुल।

व्यभिचार—*(न०)* १. दुश्चरित्रता। २. पराये पुरुष या स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध। स्त्री-पुरुष का अवैध सभोग-सम्बन्ध। जारकर्म। छिनाला। ३. कर्त्तव्य भ्रष्टता। ४. दुराचार।

व्यभिचारिणी—*(ना०)* परपुरुष से अवैध संबंध रखने वाली स्त्री।

व्यभिचारी—*(वि०)* परस्त्री से अवैध रति सम्बन्ध रखने वाला। *(न०)* १. व्यभिचारी मनुष्य।

व्यय—*(न०)* १. खर्च। २. दान। उत्सर्ग। ३. नाश। क्षय।

व्यर्थ—*(वि०)* १. अर्थ-रहित। २. निरर्थक। विरथा। ३. अनावश्यक। ४. निरुपयोगी। ५. निष्फल। अफळ।

व्यवधान—*(न०)* १. विघ्न। २. बीच की आड़। परदा। ३. बीच का अन्तर या अवकाश।

व्यवसाय—*(न०)* १. धंधा। पेशा। २. उद्योग। ३. आजीविका। रोजी। ४. व्यापार। रोजगार।

व्यवसायी—*(वि०)* १. व्यवसाय वाला। व्यवसाय करने वाला। २. व्यापारी। ३. उद्यमी।

व्यवस्था—*(ना०)* १. प्रबन्ध। बन्दोबस्त। २. काम करने का विधान। ३. किसी काम के करने का शास्त्रीय विधान या आज्ञा। ४. न्यायालय या आयोग की आज्ञा या निर्णय। ५. प्रमाण। ६. आदेश। ७. दृढ़ आधार।

व्यवहार—*(न०)* १. परस्पर लेन देन का सम्बन्ध। २. लोक-रीति। ३. आचरण। बरताव। ४. व्यवसाय। धंधा। काम-काज। व्यापार। ५. परिपाटी। ६. कार्यान्विती। उपयोग।

व्यवहार-कुशल—*(वि०)* व्यवहार के सम्बन्ध में होशियार। व्यवहार-दक्ष। व्यवहार को जानने समझने वाला।

व्यवहारिक—*(वि०)* १. जो व्यवहार के लिए ठीक हो। २. जो व्यवहार में आ सके। ३. काम में आने लायक।

व्यवहारियो—*(वि०)* १. व्यवहार करने वाला। २. व्यवहार वाला। ३. देन-लेन मे साधारणतया ठीक।

व्यवहारी—*(वि०)* १. व्यवहार करने वाला। २. व्यवसायी। ३. व्यवहार संबंधी। ४. प्रचलित।

व्यष्टि—*(न०)* समष्टि का कोई एक पृथक एवं विशिष्ट अंश। समाज का एक अंग या सदस्य। समष्टि की सबसे छोटी अभिन्न इकाई।

व्यसन—*(न०)* १. किसी विषय की तीव्र आसक्ति। २. किसी विषय की न छूटने वाली आदत। ३. मादक पदार्थ लेने की आदत। तलब। लत। ४. बुरी आदत। ५. आफत। ६. कष्ट। विपत्ति।

व्यसनी—(वि०) व्यसन वाला।

व्यस्त—(वि०) १. किसी बात या काम में पूरी तरह से लगा हुआ। मग्न। २. घबराया हुआ। व्याकुल। ३. ३. फेंका हुआ। ४. बिखरा हुआ। ५. व्यप्त।

व्यंग—(वि०) १. खंडित। २. विकृत। ३. विकलांग। अपंग। (न०)१. दोष। ऐब। दे० व्यंग्य।

व्यंग-वचन—(न०) १. हँसी उड़ाने वाली बात। २. ताना। कटाक्ष।

व्यंग्य—(न०) १. वक्रोक्ति। कटाक्ष। ताना। २. मार्मिक बात। ३. उपालंभ। ४. आक्षेप। ५. मीठी-मजाक।

व्यंजन—(न०)१. वह वर्ण जो स्वर की सहायता बिना नहीं बोला जा सके। व्यंजन अक्षर। (व्या.) २. साग, चटनी, तरकारी आदि। ३. पका हुआ भोजन। ४. अलग-अलग प्रकार के खाद्य-पदार्थ। ५. अंग। ६. अभिव्यक्ति। व्यंजना। ७. चिन्ह। ८. दिन। ९. मूंछ।

व्यंजना—(ना०) १. साधारण अर्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करने वाली शब्द शक्ति। २. वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के सिवाय विशेष अर्थ प्रकट करने वाली शब्द शक्ति। (व्या.)

व्यंतर—(न०) १. एक प्रकार की भूत योनि। २. वंतर। भूत।

व्याई—(न०) सगा। संबंधी। समधी। 'व्याणो'। व्याहो। वेवाई। (भू.का.)

व्याऊ—(ना०) बिवाई। सरदी से हथेली या तलवे के फटने से पड़ने वाली दरार।

व्याकरण—(न०) भाषा के स्वरूप, गठन, रचना विधान, शब्द-प्रयोग, वाक्य-विन्यास इत्यादि का नियामक शास्त्र। २. एक वेदांग।

व्याकुळ—(वि०) १. घबराया हुआ। व्याकुल। बेचैन विकल। २. विचलित। कातर। भयभीत। ४. अधीर।

व्याख्या—(ना०) १. किसी जटिल वाक्य के अर्थ का स्पष्टीकरण। २. विवेचन। ३. टीका। ४. वर्णन।

व्याख्यान—(न०) १. भाषण। बखाण। २. वक्तृता।

व्याघ्र—(न०) बाघ। शेर।

व्याज—(न०)१. ऋण दिये हुये धन के बदले में मूलधन के अतिरिक्त मिलने वाला धन। उधार दी हुई रकम का सूद। ब्याज। २. बहाना। मिष। ३. छल। कपट। धोखा। ४. युक्ति। ५. कूटयुक्ति। ६. दोष। ७. एक अलंकार (काव्य)।

व्याज-निंदा—(ना०) १. स्तुति की आड़ में की जाने वाली निंदा। २. एक शब्दालंकार।

व्याज-स्तुति—(ना०) १. निंदात्मक शब्दों में की जाने वाली स्तुति। निंदा की आड़ में की जाने वाली प्रशंसा। २. एक शब्दालंकार। (काव्य)

व्याजू—(वि०) १. ब्याज पर दिया हुआ या लिया हुआ। २. ब्याज संबंधी।

व्याजोक्ति—(ना०)१. छल-कपट की बात। २. एक अर्थालंकार। (काव्य)

व्याण—दे० वेवाण।

व्याणो—(क्रि०) गाय, भैंस आदि का बच्चा जनना।

व्याध—(न०) शिकारी। व्याधा। बहेलिया। (ना०) १. व्याधि। रोग। बीमारी। २. विपत्ति। ३. झंझट। झमेला।

व्याधा—(ना०) १. रोग। बीमारी। व्याधि। २. विपत्ति। ३. चिंता। ४. झंझट।

व्याधि—दे० व्याधा।

व्याधी—दे० व्याधि।

व्यापक—(वि०) १. चारों ओर फैला हुआ। २. विशाल। ३. फैलने वाला।

व्यापणो—(क्रि०) १. फैलना। २. किसी चीज के अन्दर व्याप्त होना। व्यापना। प्रसार होना। ३. प्रगट होना। ४. मन में स्फुरण होना। (न०) स्फुरण।

व्यापार—(न०) १. उद्योग। धंधा। २. चीज खरीद कर और नफा लेकर बेचने का काम। बेपार। ३. काम। कार्य। ४. प्रयोग। ५. आचरण।

व्यापारी—(न०) व्यापार करने वाला। व्यवसायी। बेपारी।

व्यापित—दे० व्याप्त।

व्याप्त—(भू०कृ०) १. फैला हुआ। २. अन्तर्गत।

व्यामण—(ना०) समधिन। सगी। वेवाण।

व्यायाम—(न०) १. कसरत। २. शारीरिक परिश्रम।

व्यायाम-शाला—(ना०) व्यायाम करने का स्थान। अखाड़ा।

व्यायोग—(न०) एक प्रकार का एकांकी नाटक।

व्यायोड़ी—(भू०का०कृ०) प्रसव की हुई। (गाय, भैंस आदि।

व्याळ—(न०) सूर्य। दे० व्योम।

व्याल—(न०)१. सर्प। सांप। गोगोजी।२. बाघ। बाघ।

व्याळू—(न०) सायंकाल या रात में किया जाने वाला भोजन।

व्याळू-टाणो—दे० व्याळू-वेळा।

व्याळू-वेळा—(न०) १. ब्यालू करने का समय। २. सायंकाल।

व्याव—(न०) विवाह। ब्याह। शादी। बोवा।

[illegible]णू—(न०) १. गाय, भैंस आदि की प्रसवावस्था। २. जनने का समय। ३. गाय या भैंस। भ्रूण।

व्यावणो—(क्रि०)मादा पशु का बच्चा देना। मादा पशु का प्रसव होना। ब्याणो।

व्यावतार—(अव्य०) गाय भैंस आदि का जनने की तैयारी में होना।

व्यावर—(ना०) मादा पशुओं की प्रसवेन्द्री। योनि। (वि०) सगर्भा (मादा पशु)।

व्यावलो—(न०) १ विवाह। २. विवाह संबंधी राजस्थानी काव्य या काव्य-ग्रंथ। ३. विवाह संबंधी लोक-काव्य।

व्यावहारिक—(वि०) व्यवहार संबंधी। व्यवहारू। वहवारू।

व्यास—(न०) १. पाराशर ऋषि के पुत्र श्रीकृष्ण द्वैपायन। वेदों के संग्रहकर्ता, वेदान्त दर्शन और पुराणों के रचयिता श्री वेदव्यास। २.कथावाचक। पुराणी। व्यासजी। ३. वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त या गोल क्षेत्र के बीच में होती हुई गई हो। ४. विस्तार। फैलाव। ५. ब्राह्मण जाति की शाखा या अल्ल। एक उप-गोत्र।

व्यासजी—(न०)१. महाभारत या भागवत की कथा करने वाला। २. व्यास ऋषि।

व्यासण—(ना०) १. कथावाचक व्यास की पत्नी। २. व्यास गोत्र वाले व्यक्ति को ब्याही हुई स्त्री।

व्यास-पीठ—(ना०) कथा-वाचक के बैठने का ऊंचा स्थान या मंच।

व्यास-पूनम—(ना०) आषाढ़ी पूर्णिमा। गुरू-पूर्णिमा। गुरू-पूनम।

व्यासंग—(न०) १. अभ्यास। मनोयोग। २. धार्मिक संपर्क। ३. अधिक आसक्ति।

ब्याह—(न०) विवाह। ब्याव। बीवा।

ब्याहण—(ना०) समधिन। सगी। व्यापण। वेवाण।

ब्याहणो—(क्रि०) १. विवाह होना। २. विवाह करना।

ब्याहलो—दे० ब्यावलो।

ब्याही—(न०) समधी। वेवाई। सगो।

व्याहृति—(ना०) १. उक्ति। कथन। २. पवित्र शब्द। ३. व्याहृति तीन हैं—ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः। प्राणायाम के समय सात व्याहृतियाँ कही जाती हैं। (व्याहृति के शब्द अति पवित्र और कल्याणकारी हैं।)

ब्यां—दे० वा।

ब्यांने—दे० वांने।

ब्यांरी—दे० वांरी।

ब्यांरे—दे० वांरे।

ब्यांरो—दे० वांरो।

ब्यांसू—दे० वांसू।

व्युत्क्रम—(ना०) १. उलटा क्रम २. अव्यवस्था। ३. उल्लंघन। ४. मृत्यु।

व्युत्पत्ति—(ना०) १. शब्द का वह मूल रूप जिससे वह बना हो। (व्या.) २. उद्गम उत्पत्ति का स्थान। ३. विद्वता। ४. प्रवीणता। ५. शास्त्रों का ज्ञान।

व्युत्पत्ति-शास्त्र—(न०) व्युत्पत्ति बताने वाला शास्त्र। निरुक्त।

व्युत्पन्न—(वि०) १. विद्वान। प्रवीण। २. साधित (शब्द) (व्या०)।

व्यूह—(न०) १. युद्ध के समय की जाने वाली सेना की रक्षात्मक व आक्रामक स्थापना। २. सैन्य रचना। ३. मोर्चा। ४. सेना।

ब्योपार—दे० व्यापार।

ब्योपारी—दे० व्यापारी।

व्योम—(न०) १. आकाश। २. अंतरिक्ष ३. मेघ। बादल। ४. जल। पानी।

व्योम-गंगा—(ना०) आकाश-गंगा।

व्योम-चर—(वि०) आकाश में उड़ने या विचरने वाला। (न०) १. देवता। २. पक्षी। ३. बादल।

ब्योरो—(न०) १. विवरण। ब्योरा। विगत। २. वृत्तान्त।

ब्योसाय—दे० व्यवसाय।

व्रईक—(वि०) १. वीर। २. बांका। ३. स्वाभिमानी। ४. श्रेष्ठ। दे० व्रीख।

व्रक—दे० वृक।

व्रकोदर—दे० वृकोदर।

व्रक्ख—(न०) वृक्ष। पेड़। झाड़। रूंख।

व्रख—(न०) १. वृक्ष। दरख्त। झाड़। २. बारह राशियों में से दूसरी राशि। वृष। ३. सांड़। गोधो। ४. वर्ष। साल।

व्रखभ—(न०) १. बैल। २ सांड़। वृषभ। ३. ऋषभ। ऋषभावतार। ४. प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव। आदीश्वर।

व्रखभ-धुज—दे० वृषभध्वज।

व्रख-भाण—दे० व्रखभाणु।

व्रख-भाणु—(न०) श्री राधा के पिता वृषभानु।

व्रख-भाणु-जा—(ना०) वृषभानुजा। श्री राधा।

व्रख-भानु-जा—दे० व्रखभाणुजा।

व्रखा—(ना०) वर्षा। मेह। बिरखा।

व्रखाकंप—(ना०) अग्नि। बासदे।

व्रखी—(न०) वर्षा करने वाला। इन्द्र।

व्रच्छ—(न०) वृक्ष। पेड़। दरख्त। दरखत। झाड़। रूंख।

व्रज—(न०) पूर्वी राजस्थान की लगा हुआ उत्तर-प्रदेश का

मथुरा-वृंदावन के आसपास का क्षेत्र जो श्रीकृष्ण की लीलाभूमि था।

व्रजणो—(क्रि०) १. जाना। चलना। २. दौड़ना। भागना।

व्रज-चंद—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रजड़—(ना०) तलवार। खड्ग।

व्रज-देह—श्रीकृष्ण।

व्रज-नंद (न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-नाथ—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-नायक—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-नारी—दे० व्रज-वनिता।

व्रज-पति—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-बाळ—(न०) श्रीकृष्ण। बालकृष्ण। २. व्रज के गोप बाल।

व्रज-भाखा—दे० व्रज-भाषा।

व्रज-भाषा—(ना०) व्रज-प्रदेश की भाषा। मथुरा, गोकुल, आगरा आदि व्रज-प्रदेश में बोली जाने वाली एक भाषा जिसमें सूरदास, बिहारी आदि अनेक कवियों ने काव्य रचनाएँ की हैं।

व्रज-भूखण—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-भूषण—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-मंडळ—(न०)व्रज प्रदेश। व्रज। मथुरा गोकुल के आसपास का प्रदेश।

व्रज-मोहन—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-राज—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-वनिता—(ना०) १. व्रज की स्त्री। २. गोपी।

व्रज-वल्लभ—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रज-वासी—(वि०)१. व्रज में रहने वाला। (न०) श्री कृष्ण।

व्रज-विहारी—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रजाग—(ना०) वज्राग्नि। विद्युत्पात। वजराग।

व्रजाग्नि—दे० व्रजाग।

व्रजांगना—(ना०) गोपी।

व्रजेश्वर—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रजेश—(न०) श्रीकृष्ण।

व्रजेश्वरी—(ना०) श्री राधा।

व्रण—(न०) १. घाव। २. फोड़ा। व्रण। ३. दोष। ४. छेद। दे० वर्ण।

व्रत—(न०) १. नियमानुसार किया जाने वाला धार्मिक कृत्य। २. पुण्य कार्य करने का नियम। ३. प्रतिज्ञा। ४. संकल्प। करने या नहीं करने का निश्चय। ५. धार्मिक उपवास।

व्रत-धारी—(वि०) १. व्रत रखने वाला। व्रती। २. प्रतिज्ञा पालक। ३ उपवास करने वाला। ४. ब्रह्मचारी।

व्रतवाड़ी—(ना०)१. यजमान-वृत्ति-बरत-वाड़ी। २. ब्राह्मण का पाठ-पूजा और भिक्षावृत्ति से गुजारा करने का काम। ३ ग्राम-पुरोहितों का बारी-बारी से की जाने वाली यजमान-वृत्ति का नियम। बरत-वारी। विरत-वारी। विरत। ४. वृत्ति। जीविका। रोजी। ५ विरत की क्रिया या काम।

व्रती—(वि०) १. व्रत रखने वाला। २. ब्रह्मचारी।

व्रतेसरी—(न०) विवाह-शादी का काम कराने वाला और नेग लेने वाला गाँव पुरोहित। २. भाट, चारण, साधु, ब्राह्मण आदि जिनका बंधी हुई निश्चित वृत्ति के नेग माँगने का हक होता है।

व्रथा—(वि०) व्यर्थ। वृथा। निरर्थक। फजूल। (क्रि०वि०) भूल से।

व्रद—दे० विरुद।

व्रदाळ—दे० विरुदाळ।

व्रद्ध—दे० वृद्ध।

व्रन—दे० व्रण ।
व्रम—(न०) कवच । वर्म ।
व्रवणो—दे० ब्रवणो ।
व्रह—(न०) विरह । वियोग ।
व्रह्म—दे० ब्रह्म ।
व्रहमंड—दे० ब्रह्माण्ड ।
व्रहमा—दे० ब्रह्मा ।
व्रहमण—दे० ब्रहमाण ।
व्रहमाणी—दे० ब्रह्माणी ।
व्रहमाद—दे० ब्रहमाद ।
व्रहास—दे० वरहास ।
व्रह्म—दे० ब्रह्म ।
व्रह्मपुरी—दे० ब्रह्मपुरी ।
व्रह्मांण—दे० ब्रहमाण ।
व्रह्माद—दे० ब्रहमाद ।
व्रंद—दे० वृंद ।
व्रंदारक—(न०) देवता । वृंदारक ।
व्रंदावन—दे० वृंदावन ।
व्राचड़—(ना०) १. अपभ्रंश भाषा का एक प्रकार । २. सिन्धी भाषा की जननी एक प्राचीन अपभ्रंश भाषा ।
व्रात्य—(न०) १. संस्कार हीन । २. वर्ण-संकर । ३. वैदिक कृत्य न करने वाला सवर्ण हिन्दू ।
व्रिखभ—दे० वृखभ ।
व्रिथा—दे० वृथा ।
व्रिद—(न०) विरुद ।
व्रिदवंध—(वि०) विरुदधारी ।
व्रिध—(वि०) अधिक आयु वाला । वृद्ध । बूढ़ा । डोकरो ।
व्रीख—दे० वीख ।
व्रीडा—(ना०) लज्जा । लाज ।
व्हाण—(ना०) १. बैल-गाड़ी । २. वाहन । सवारी ।
व्हार—दे० बाहर ।
व्हाल—(न०) १. प्यार । स्नेह । २. चुंबन । बोसो ।
व्हाली—(वि०) प्रिया । वल्लभा ।
व्हालो—(वि०) प्रिय । वल्लभ । वालहो । (न०) चुंबन । दोस्त ।
व्हियो—(भू०क्रि०) 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक रूप । हुआ । हो गया ।
व्ही—(भू०क्रि०) 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक नारी रूप । हुई । हो गई ।
व्हे—(व०क्रि०) १. हो जाता है । २. होता है ।
व्हेगी—(भ०क्रि०) 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक नारी रूप । हुई । हो गई । व्ही ।
व्हेगो—(भू०क्रि०) 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक रूप । हुआ । हो गया । व्हियो ।
व्हेग्यो—दे० व्हेगो ।
व्हेणो—(क्रि०) १. सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करने वाला अति प्रचलित क्रिया शब्द । २. होना । निर्माण किया जाना । बनना । ३. कार्य का संपन्न किया जाना । सरना । ४. भुगताना । ५. भुगतना । ६. बीतना । गुजरना । दे० 'होणो' या 'होवणो' ।
व्हेतां थकां—(अव्य०) होते हुए ।
व्हेतां थकांई—(अव्य०) १. होते हुए भी । २. होते हुए ही ।
व्हेतो-थको—(अव्य०) होता हुआ ।
व्हेलो—(स०क्रि०) 'व्हेणो' क्रिया का भविष्य कालिक रूप । होगा । होसी । होवेला ।
व्हेसी—दे० व्हेलो ।
व्है—दे० हां ।
व्हैत—(ना०) सवारी का ऊंट या घोड़ा । वहत ।
व्हैला—(क्रि०भ०) होगा । हुवैला । होवैला । होसी ।
व्होत—(ना०) वस्तु । चीज ।

श

श—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण-माला का तीसवां व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है। (श, ष, स, ह) चार ऊष्माक्षरों का प्रथम अक्षर।

शऊर—(ना०) १. समझ। बुद्धि। २. भली प्रकार काम करने की योग्यता।

शक—(न०) १. संदेह। शंका। भ्रम। २. तातार जाति। एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। ३ तातार देश। ४. शक-संवत्। सम्राट् शालिवाहन द्वारा सन् ७८ मे प्रवर्तित संवत्।

शकट—(न०) १. गाड़ा। छकड़ा। २. गाड़ी।

शकमंद—(वि०) शकवाला। संशयग्रस्त। वहमी। सांसाळ्ठो।

शकरकंद—(न०) एक मीठा कंद। सकर-कंदी।

शकल—(न०) १. मुख का भाव। २. चेहरा। ३. स्वरूप। ४. बनावट। ५. ढंग।

शक-संवत्—(न०) शक जाति के राजा शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित सम्वत् जो ईसवी सन् के ७८ वर्ष और विक्रम सम्वत् से १३५ वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ था। शालिवाहन सम्वत्। शक-संवत्सर।

शकाब्द—दे० शक-संवत्।

शकार—(न०) 'श' अक्षर।

शकुन—(न०) १. भावी शुभाशुभ सूचक चिन्ह। सगुन। २. किसी कार्य के प्रारंभ में दिखाई देने वाले शुभ या अशुभ लक्षण। ३. शुभ मुहूर्त। सुगन। सऊन। सवण।

शकुनि—(न०) १. दुर्योधन का मामा। २. दुष्ट मनुष्य। ३. गिद्ध।

शकुनी—(न०) शकुन जानने वाला। शकु-नज्ञ। सुगनी। सवणी।

शकुंतला—(ना०) १. विश्वामित्र और मेनका की पुत्री तथा राजा दुष्यंत की पत्नी। २. महाकवि कालिदास का एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक।

शक्कर—(ना०) १. चीनी। २. खांड।

शक्ति—(ना०) १. बल। सामर्थ्य। २. क्षमता। ३. प्रभाव। ४. एक बाण। ५. दुर्गा। ६. लक्ष्मी। ७. गौरी। ८. प्रकृति। माया। ९. भग। १०. अधि-ष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करने वाले शाक्त कहलाते है। (तंत्र)। ११. अधिकार। १२. तलवार। १३. बड़ा और परा-क्रमी राज्य। १४. त्रिशूल।

शक्र—(न०) इंद्र।

शख्स—(न०) मनुष्य। व्यक्ति। इंसान। मिनख। जण। जणो।

शची—(ना०) १. इंद्राणी। २. बुद्धि। ३. वक्तृत्व-शक्ति।

शची-पति—(न०) इंद्र।

शठ—(वि०) १. धूर्त। २. चालाक। ३. लुच्चा। ४. मूर्ख। ५. दुष्ट।

शठता—(ना०) १ धूर्तता। २. चालाकी। ३. मूर्खता। ४. दुष्टता। ५. लुच्चाई।

शत—(वि०) सौ। (न०) सौ की संख्या। १००

शतक—(न०) १. सौ वर्ष। सौ वर्ष का समय। शताब्दी। सइको। २. सौ का समूह। सैकड़ों। ३. सौ छंद, पद

इत्यादि का संग्रह। ४. सौ की संख्या वाली वस्तु या बात।

शत-पत्र—*(न०)* १ कमल। २. मोर।

शतपथ—*(न०)* यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ।

शत-पद—*(न०)* कनखजूरा। कानसळायो।

शत-प्रतिशत—*(अव्य०)* सैकड़े सौ टका।

शतरंज—*(ना०)* एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर बत्तीस-गोटियों से खेला जाता है।

शतरंजी—*(ना०)* एक बिछावन। दरी। सेतरूंजी।

शतरूपा—*(ना०)* ब्रह्मा की पत्नी। मनु की माता।

शत-शीर्षा—*(ना०)* वासुकि नाग की पत्नी।

शताब्दी—*(ना०)* १. सौ वर्ष। सौ वर्ष का समय। सईको। २. सौ वर्ष का उत्सव। ३. सौ वर्ष पूर्ण हो जाने पर मनाया जाने वाला उत्सव। २. शतायु-समारोह।

शतायु—*(वि०)* सौ वर्ष की आयु वाला।

शतावधानी—*(वि०)* एक ही साथ सौ बातों पर ध्यान रखने वाला या याद रखने वाला।

शतावर—*(ना०)* एक वनस्पति।

शतांश—*(न०)* सौवाँ भाग या अंश।

शती—*(ना०)* १. शताब्दी। सदी। सईको। २. सैकड़ा।

शत्रु—*(न०)* दुश्मन। वैरी। दुसमण।

शत्रुघ्न—*(न०)* राम के छोटे भाई, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। *(वि०)* शत्रुओं का नाश करने वाला।

शत्रुता—*(ना०)* दुश्मनी। वैर। दुसमणी। वैराळो।

शत्रु-संहरण—*(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला। *(अव्य०)* शत्रु का नाश करने के लिये। *(न०)* शत्रु का संहार।

शत्रुंजय—*(न०)* १ सौराष्ट्र में आया हुआ एक जैन तीर्थ। २ विमलाचल पर्वत। ३. परमेश्वर। *(वि०)* शत्रु को जीतने वाला।

शनि—*(न०)* १. सौर जगत के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह। थावर। २. शनिवार।

शनिवार—*(न०)* शुक्रवार के बाद का दिन। थावर-वार।

शपथ—*(ना०)* १. सौगंध। कसम। सौगन। २. प्रतिज्ञा। प्रण।

शफाखानो—*(न०)* चिकित्सालय। अस्पताल। दवाखानो। इसपताळ।

शबनम—*(ना०)* ओस। झाकळ।

शबरी—*(ना०)* १. श्रमणा नाम की शबर जाति की एक रामभक्त स्त्री। शबरी। २ भीलनी। भीलण। भीलणी।

शब्द—*(न०)* १. ध्वनि। आवाज। २. वचन। बोल। ३ आप्त-वचन। सबद। ४ एक या एक से अधिक अक्षरों का अर्थयुक्त समुच्चय (व्या०)। ५. सार्थक ध्वनि। ६ ब्रह्म। शब्द-ब्रह्म।

शब्द-कोश—*(न०)* वह ग्रंथ जिसमें अक्षर क्रम से किसी भाषा के सभी शब्दों के अर्थ दिये हुये हों। उत्पत्ति आदि पर्यायवाची शब्दों का संग्रह-ग्रन्थ।

शब्द-ग्रह—*(न०)* कान। श्रवणेन्द्रिय।

शब्द-भंडार—*(न०)* १. शब्दों का समूह। २ शब्द-संग्रह।

शब्द-साधन—*(न०)* व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की उत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन किया गया होता है।

शब्दानुशासन—*(न०)* व्याकरण।

शब्दार्थ—*(न०)* १. शब्द का ... २. शब्द और उसका अर्थ।

शब्दालंकार—(न०) शब्द रचना की चमत्कृति वाला अलकार।

शमन—(न०) दोष, विकार, विचार, उपद्रव आदि का दमन। २ शांति।

शमशेर—(ना०) तलवार।

शमी—(ना०) एक वृक्ष। खेजड़ी। जांट।

शमी-पूजा—(ना०) दशहरा के दिन की जाने वाली शमी पूजा।

शयन—(न०) १ निद्रित होना। सोना। २. शय्या। बिछौना।

शयन-आरती—(ना०) ठाकुरजी की शयन समय की आरती।

शय्या—(ना०) १. सेज। २. बिछौना। ३. पलग। ढोलियो। ४ पलग, बिछौना इत्यादि। सेज।

शर—(न०) १. बाण। तीर। २. पांच की संख्या।

शरण—(ना०) १ आश्रय। रक्षण। २. रक्षा का स्थान। ३. घर।

शरणागत—(वि०) शरण मे आया हुआ। सरणाई।

शरद—(ना०) १. एक ऋतु जो आश्विन और कार्तिक मास मे होती है। २. ठंडी। शीत।

शरद-पूनम—(ना०) शरत्पूर्णिमा। आश्विन पूर्णिमा।

शरद-पूर्णिमा—दे० शरद-पूनम।

शरवत—(न०) मीठा ठंडा पेय पदार्थ।

शरवती—(वि०) १. शरबत का। २. हलके रंग का। ३. कुछ लाली लिये हुये पीले रंग मे रगा हुआ। (न०) लाली युक्त पीला रंग।

शरम—(ना०) १. लाज। शर्म। २. प्रतिष्ठा। ३. सकोच। लिहाज।

शरमा शरमी—(अव्य०) १. एक दूसरे से शरमा करके। २. शरमाने के कारण। लाज के कारण। सरमासरमी।

शरमाणो—(क्रि०) लज्जित होना।

शरमावणो—दे० शरमाणो।

शराव—(न०) मद्य। मदिरा। सुरा। दारू।

शरावी—(वि०) शराब पीने वाला। दारूड़ियो।

शरारत—(ना०) १. सताने की क्रिया। २. पाजीपन। ३. दुष्टता।

शरारती—दे० सरारती।

शरीक—(वि०) १. कार्य मे साथ देने वाला। साथी। २. भागीदार। ३. सम्मिलित। मिला हुआ।

शरीफ—(न०) सज्जन। भला आदमी।

शरीर—(न०) १. देह। तन। काया। २. २. किसी वस्तु का पूरा ढांचा। (वि०) १. उपद्रवी। २. दुष्ट-प्रकृति। चंचल।

शर्त—(ना०) १. दाव। २. बाजी। ३. कौल। करार। ४. उपबन्ध। ५. पाबंदी।

शर्मा—(न०) १. ब्राह्मण की उपाधि। २. ब्राह्मण।

शर्मिंदो—(वि०) १. लजीला। शर्मिंदा। २. खिसियाना। संकुचित। लज्जित।

शर्व—(न०) शिव। महादेव।

शर्वरी—(ना०) रात। रात्रि।

शर्वाणी—(ना०) पार्वती।

शलाका—(ना०) सलाई। सळियो।

शव—(न०) १ लास। लाश। २. मुर्दा। मुड़दो।

शश-धर—(न०) चंद्रमा।

शशांक—(न०) चंद्रमा।

शशि—(न०) चद्रमा।

शशि-धर—(न०) महादेव। शिव।

शस्त्र—(न०) १. हथियार। आयुध। २. औजार।

शस्त्र-धारी—(न०) योद्धा। (वि०) शस्त्र धारण करने वाला।

शहद—*(ना०)* मधु ।

शहतीर—*(न०)* लकडी का लंबा लट्ठा । वल्ली । मोभ ।

शहतूत—*(न०)* मझोले आकार का एक वृक्ष व उसकी मीठी मजरी । सेतूत । सेतूर ।

शहनशाह—*(न०)* बादशाह । सम्राट । पातसाह ।

शहनाई—*(ना०)* मुँह से फूंककर बजाया जाने वाला एक बाजा । नफीरी । सुरणाई ।

शहर—*(न०)* नगर ।

शहर-पनाह—*(ना०)* शहर के चारों तरफ उसके रक्षण के लिये बनी हुई दीवाल । —कोट । परकोटो ।

शहादत—*(ना०)* १. साक्षी । गवाही । २. प्रमाण । सबूत । ३. गवाह । ४. शहीदपना ।

शहीद—*(न०)* धर्म, देश, सिद्धांत अथवा किसी सत्काम के लिए अपनी बलि देने वाला व्यक्ति ।

शंकर—*(न०)* १ शिव । महादेव । २. आदि शंकराचार्य । *(वि०)* कल्याणकारी । शुभ ।

शंकर-शैल—*(न०)* कैलास पर्वत ।

शंकरा—*(ना०)* एक राग ।

शंकराचार्य—*(न०)* १. अद्वैतवाद के प्रवर्तक प्रसिद्ध आचार्य । आदि शंकराचार्य । २. बुद्ध के बाद वर्णाश्रम एवं वेदधर्म के पुनः संस्थापक आचार्य । ३ उनके द्वारा स्थापित मठों के परंपरागत प्रमुख ।

शंकराभरण—*(ना०)* एक राग ।

शंकराभूषण—*(न०)* १. सर्प । नाग । २. भस्म । भभूती । भभूत ।

शंकरी—*(ना०)* पार्वती ।

शंका—*(ना०)* १. संदेह । शक । २. कल्पित भय । ३. मलमूत्र की हाजत । शंका । ४, डर । भय । शंका ।

शंख—*(न०)* १. एक समुद्री जंतु की कड़ी खोल । एक समुद्री घोंघा जिसको फूंकने से आवाज होती है । २ नौ पद्म की संख्या ।

शंखधर—*(न०)* विष्णु भगवान ।

शंखनाद—*(न०)* शंख की ध्वनि । शंख-ध्वनि ।

शंखपाणि—*(न०)* विष्णु ।

शंखासुर—*(न०)* एक दैत्य जो ब्रह्मा से वेद चुरा कर समुद्र में जा छिपा था ।

शंखिनी—*(ना०)* कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक ।

शंपा—*(ना०)* १. बिजली । २. कमर । कटि । कड़ ।

शंबर—*(न०)* १. युद्ध । २. मछली । ३. एक दैत्य का नाम । ४ मेघ । ५. पर्वत । ६. जल ।

शंबरारि—*(न०)* कामदेव । मदन ।

शंबल—*(न०)* १ सफर । पाथेय । संबाळ । भातो । २ तट । किनारा ।

शंबुक—*(न०)* शंख । घोघा ।

शंभु—*(न०)* शिव । महादेव ।

शंभु-मेळो—*(न०)* १. भिन्न-भिन्न जातियों का अव्यवस्थित समूह और उसका आचार-विचार रहित खान-पान । २. ऊँच-नीच वर्ग का एक साथ एक पंगत में खाना-पीना । अगुवमेरा । ३. बहुसंख्यक संन्यासियों साधियों) का भंडारा । साधियों के मृतक का भंडारा । शंभुमेळो ।

शाकंभरी—*(ना०)* १. दुर्गा । २. सांभर (शाकंभरी) नगर की देवी । ३. राजस्थान की अधिष्ठात्री देवी । सांभरा देवी ।

शाक—*(न०)* १. वनस्पति । २. तरकारी ।

शाका—दे० शाके ।

शाकाहार—*(न०)* अन्नाहार

शाकाहारी—*(वि०)* अन्नाहारी भाजी ।

शाके—*(अव्य०)* शक संवत

शाक्त—*(वि०)* १. शक्ति-पूजक। २. शक्ति संबंधी। ३. शाक्त मत का अनुयायी।

शाख—*(ना०)* १. डाली। टहनी। २ वंश की शाखा। ३. जाति। ४ गवाही।

शाखा—*(ना०)* १ टहनी। डाली। २. किसी संस्था का वह अंग जो उसके अधीन तथा नियमों के अनुसार काम करता हो। अंग। ३. उपांग।

शाखा-नगर—*(न०)* उप-नगर।

शाण—*(ना०)* शस्त्रों की धार तेज करने का उपकरण। सान। साण।

शादी—*(ना०)* विवाह।

शान—*(ना०)* १ तड़क-भड़क। ठाट-बाट। २. भव्यता। ३. ऐश्वर्य। ४. प्रतिष्ठा। ५. गौरव। ६. ऐंठ। ७. शाण। सान।

शानदार—*(वि०)* १. तड़क-भड़क वाला। २. ठसक वाला। ३. वैभवपूर्ण। ४. भव्य।

शाप—*(न०)* १. दूसरे के लिये क्रोध में की हुई अनिष्ठ भावना। बददुआ। २. धिक्कार।

शाबास—*(न०)* धन्य। वाह। *(अव्य०)* धन्य हो। वाह-वाह, खूब क्या कहने, बहुत अच्छा, इत्यादि प्रशंसा सूचक उद्‌गार।

शाबासी—*(ना०)* १. धन्यवाद। २. वाह-वाही। ३. काम की प्रशंसा।

शायद—*(अव्य०)* कदाचित्। संभव है। कदाच। कदास।

शायर—*(न०)*१. उर्दू का कवि। २. कवि।

शायरी—*(ना०)*१. उर्दू की कविता। २. कविता।

शारदा—*(ना०)* १. सरस्वती। २. दुर्गा। ३. एक प्राचीन भारतीय लिपि।

शारदा-पीठ—*(न०)* आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित पश्चिम भारत की गद्दी या मठ। द्वारका में स्थित शंकराचार्य की गद्दी।

शारदा-लिपि—*(ना०)* एक प्राचीन भारतीय लिपि।

शार्ङ्गधर—*(न०)* १. रणथंभोर (बाद में चित्तौड़) का प्रसिद्ध विद्वान जिनकी रची हुई 'शार्ङ्गधर-पद्धति' विख्यात है। २. इसी नाम के राजस्थान के एक दूसरे विद्वान जो 'शार्ङ्गधर-संहिता' के रचयिता हैं। शारंगधर। ३. विष्णु। ४. श्रीकृष्ण।

शार्दूल—*(न०)* १. सिंह। २. एक छंद।

शाल—*(ना०)* ओढ़ने का एक कीमती ऊनी वस्त्र। ऊनी चादर। दुशाला। २. साग का वृक्ष। सालर।

शाल-भंजिका—*(ना०)* १. वेश्या। पातर। २. थंभे में बनी हुई पुतली।

शालि—*(न०)* एक प्रकार का चावल। साळ।

शालिग्राम—*(न०)* गंडकी नदी में से प्राप्त होने वाली गोल काले पत्थर की बटिया जो विष्णु के प्रतीक रूप में पूजी जाती है।

शालिवाहन—*(न०)* शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा जिसने शक सम्वत चलाया था।

शालिहोत्र—*(न०)* १. घोड़ा आदि पशु चिकित्सा विज्ञान। साळोतर। २. घोड़ा।

शालिहोत्री—*(न०)* घोड़ा आदि पशुओं का चिकित्सक। (वेटेरिनेरी डॉक्टर)

शाश्वत—*(वि०)* १. सदा चलता आया हुआ। २. सदा बना रहने वाला। ३. नित्य। निरंतर। सासतो। *(न०)* १. १. स्वर्ग। २. अंतरिक्ष।

शाश्वती—*(ना०)* पृथ्वी।

शासक—*(न०)* १. शासन करने वाला। २. राजा। ३. हाकिम। ४. दंड करने या देने वाला।

शासन—*(न०)* १. राज्य। हुकूमत। २. राज्य के कार्यों की व्यवस्था या सचालन। ३. दंड। ४. आज्ञा। ५. राजा या राज्य की ओर से दान की हुई भूमि। सासण।

शास्त्र—*(न०)* १. सर्वसाधारण के हितार्थ विधान बताने वाला धार्मिक ग्रंथ। धर्मग्रंथ। २. किसी विषय का क्रमबद्ध समस्त ज्ञान। ३. तात्विक ज्ञान।

शास्त्रार्थ—*(न०)* १. शास्त्रों के अर्थ, विवेचन तथा सिद्धान्तों पर होने वाला वाद-विवाद। २. शास्त्रो के किसी विषय पर होने वाली बहस।

शास्त्री—*(न०)* १. शास्त्रो का ज्ञाता। २. एक उपाधि।

शाह—*(न०)* १. बादशाह। २. साहूकार का उपनाम। ३. चोर (कटाक्ष में)। *(वि०)* प्रामाणिक।

शाहजादी—*(ना०)* बादशाह की पुत्री।

शाहजादो—*(न०)* बादशाह का पुत्र।

शाह-जोग—*(वि०)* १. प्रामाणिक समझा जाने योग्य। प्रामाणिक। २. ईमानदार। ३. प्रतिष्ठित। इज्जतदार। ४. विश्वस्त। भरोसादार। ५. भला। *(अव्य०)* हुंडी लेकर आने वाला हुंडी के रुपये लेने का वास्तविक अधिकारी है—ऐसी खातिरजमा। साहजोग।

शांत—*(न०)* काव्य के नौ रसो में से एक। *(वि०)* १. जिसमें चिंता, उद्वेग, दुख आदि न हो। शांतियुक्त। २. शोरगुल से रहित। ३. निश्चल। ४. स्वस्थ। ५. मौन। ६. सौम्य। ७. उत्साह रहित। ८. बुझा हुआ। ९ मृत।

शांत-रस—*(न०)* काव्य के नौ रसों में का एक रस।

शांति—*(ना०)* १. चित्त की स्वस्थता। २. वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव। ३. नीरवता। स्तब्धता। ४. गंभीरता। ५. निश्चलता। ६. क्लेश, युद्ध आदि का अभाव। ७ धीरज। ८. खामोश। ९. विश्राम। १० निवृत्ति।

शांति-पाठ—*(न०)* शांति के लिये किया जाने वाला वेद-मंत्रो का पाठ।

शिकायत—*(ना०)* १. फरियाद। २. उलाहना। ३ चुगली। ४. भूल। दोष। ५. बीमारी।

शिकार—*(ना०)* १. मृगया। आखेट। २. वह पशु जो शिकार में मारा जाय या मारा गया हो।

शिकारी—*(न०)* शिकार करने वाला।

शिक्षा—*(ना०)* १ विद्या पढने तथा कोई कला सीखने की क्रिया। २. पढ़ाई। ३. ज्ञान। ४. वेद के छः अंगो में से वह अंग जिसमें वेदो के स्वरों आदि का विवेचन होता है। एक वेदांग। ५. उच्चारण शास्त्र। ६. उपदेश। ७. शासन। ८. पाठ। ९. दंड। १०.सजा।

शिखर—*(न०)* १. पर्वत का उभरा हुआ नुकीला भाग। पहाड़ की चोटी। २. मंदिर के गुंबद का ऊंचा उठा हुआ नुकीला भाग। ३. गुंबद का ऊंचा नुकीला सिरा।

शिखरण—*(न०)* दही का बनाया जाने वाला एक मधुर भोज्य पदार्थ। श्रीखंड।

शिखरबंद—*(वि०)* शिखर वाला। जिसके ऊपर शिखर बना हुआ हो।

शिखा—(ना०) १. चोटी। २. कलगी। ३ दीपक की लौ। ४. आग की लपट।
शिखिवाह—(न०) स्वामी कार्तिक।
शिथिल—(वि०) १. ढीला। २. सुस्त। ३. थका हुआ। ४. धीमा।
शिर—(न०) सिर। माथो।
शिरकत—(न०) १. मिलकर काम करना। २. शरीक होना। ३ मिलावट। ४. साझे-दारी। साझा। भागीदारी। साझो।
शिरोमणि—(न०) १. सिर पर पहनने का रत्न। २. चूड़ामणि। (वि०) १. सबसे उत्तम। श्रेष्ठ। २. मुख्य।
शिला—(ना०) १ पत्थर की पट्टी। २. पत्थर। पाषाण। भाटो
शिलाजीत—(न०) पहाड़ी चट्टान का एक रस जो पौष्टिक होता है। शैल-निर्यास।
शिलालेख—(न०) वह प्रस्तर खड, जिस पर प्रशस्ति लेख खुदा हुआ हो।
शिल्प—(न०) १. कला। कारीगरी। २. कला पूर्ण वस्तु। ३ साहित्य-कृति।
शिल्पकार—(न०) कलाकार। शिल्पी। कारीगर।
शिव—(न०) १. महादेव। परमेश्वर। २. कल्याण। मगल। ३. कल्याणकारी।
शिव-ठाणि—(न०) श्मशान। मसाण।
शिव-निर्माल्य—(न०) शिवजी को अर्पण किया हुआ पदार्थ, जो ग्रहण नहीं किया जाता।
शिवपुरी—(ना०) १. वाराणसी। काशी। २. मेवाड का एकलिंगजी तीर्थ। ३. कैलासपुरी।
शिवभंडारी—(न०) कुबेर।
शिवराई—(न०) शिवाजी के चलाये हुये सक्के का नाम।
शिवरात—(ना०) शिवरात्रि। फाल्गुन कृ० १४ की रात। महाशिव-रात्रि। इस दिन विशेष प्रकार से व्रत, उपवास और शिव पूजा की जाती है।
शिवरात्री—दे० शिवरात।
शिवलिंग—(न०) १. अखिल ब्रह्मांड का एक अडाकार चिन्ह, जिसकी ब्रह्माड रूप मे पूजा होती है। शिवजी का लिंग या पिंडी जिसकी समस्त सृष्टि की उत्पादक शक्ति के रूप से पूजा होती है। २. शिवजी का लिंग स्वरूपी प्रतीक।
शिव-लोक—(न०) कैलास।
शिव-सखा—(न०) कुबेर।
शिवा—(ना०) पार्वती।
शिवाजी—(न०) भोसले वंशीय सुविख्यात स्वाधीन महाराष्ट्र राज्य के प्रतिष्ठाता छत्रपति शिवाजी महाराज।
शिवालय—(न०) शिवजी का मदिर। सिवालो।
शिवालो—(न०) शिवजी का मदिर। शिवालय।
शिविका—(ना०) डोली। पालकी।
शिविर—(न०) १. डेरा। २. सेना का डेरा। छावनी।
शिशिर—(ना०) माघ और फाल्गुन मास की ठंडी ऋतु। २. शीतकाल।
शिशु—(न०) बालक।
शिशुपाल—(न०) चेदि देश का राजा जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था।
शिष्ट—(वि०) १. सुशिक्षित। विद्वान। २. योग्य। लायक। ३. अच्छे स्वभाव, आचरण और व्यवहार वाला। ४. सभ्य। ५. धर्मशील। ६. शांत। ७. श्रेष्ठ। ८ आज्ञाकारी। ९. भद्र। (न०) शिष्ट पुरुष।

शिष्टाचार—(न०) १. शिष्ट व्यवहार। २. औपचारिक भद्र व्यवहार। ३. आने वाले का आदर सम्मान। अतिथि-सत्कार।

शिष्य—(न०) १. विद्यार्थी। २. चेला। ३. वह जिसे किसी ने पढ़ाया हो।

शीघ्र—(अव्य०) १. जल्दी से। झटपट। २. जल्दी। त्वरा से।

शीघ्र-धाव—(न०) हरिन। मृग। हिरणियो।

शीत—(ना०) ठंड। सरदी। (वि०) ठंडा।

शीतल—(वि०) १. ठंडा। २. शांत।

शीतलता—(ना०) १. शीतल होने का गुण, धर्म, भाव या अवस्था। २. ठंडक। ३. जड़ता।

शीतला—(ना०) १. चेचक रोग की देवी। सीतळा। २. चेचक की बीमारी।

शीतला-वाहन—(न०) गदहा। गधो। खर। गधेडो।

शीतला-सातम—(ना०) १. चैत्र वदी सातम। २. उस दिन मनाया जाने वाला शीतला का त्योहार और मेला। शीतला-सप्तमी।

शीताभ—(न०) चंद्रमा।

शीतांशु—(न०) चंद्रमा।

शीरा—(न०) १. हलुवा। सीरो। २. चाशनी।

शीर्ष—(न०) १. सबसे ऊपरी सिरा। शिखर। २. सिर। माथो।

शीर्षक—(न०) लेखों आदि के ऊपर लेख का परिचयात्मक नाम। प्रकरण, लेख इत्यादि के ऊपर शुरू मे दिया जाने वाला नाम। मथारो। हेडिंग।

शील—(न०) १. उत्तम स्वभाव व आचरण। २. संकोच। ३. ब्रह्मचर्य। ४. स्त्री की पवित्रता। सतीत्व। ५. सात्विकता। ६. कुलीनता।

शील-भंग—(न०) ब्रह्मचर्य या सतीत्व का नष्ट होना।

शीलवान—(वि०) १. उत्तम शील वाला। २. सदाचारी। ३. ब्रह्मचारी।

शीलवती—(वि०) १. उत्तम शील वाली। २. सदाचारिणी। ३. ब्रह्मचारिणी। ४. सती।

शीलव्रत—(न०) १. ब्रह्मचर्य पालन करने का व्रत। ब्रह्मचर्य। २. सयम।

शीश—(न०) माथा। सिर। सीस। माथो।

शीशफूल—(न०) स्त्रियों का एक सिरो-भूषण। बोर। रखड़ी।

शीशी—(ना०) औषधि आदि डालने का काच का एक छोटा पात्र।

शीशो—(न०) १. बड़ी शीशी। कांच। आईना। दर्पण। काच। २. एक धातु। सीसा।

शुक—(न०) १. तोता। सूवटो। सुम्रो। २. शुकदेव मुनि।

शुकदेव—(न०) भागवत कथाकार श्री वेदव्यास के पुत्र श्री शुकदेव मुनि।

शुक्तिज—(न०) मोती।

शुक्र—(न०) १. एक ग्रह। २. शुक्रवार। ३ वीर्य। ४. पौरुष। बल। ४. आभार। उपकार। ५. सद्भाग्य।

शुक्रवार—(न०) गुरुवार के बाद का दिन।

शुक्राचार्य—(न०) १. दैत्यों के गुरु का नाम। २. काना मनुष्य। काणो मिनख। (व्यंग्य में)

शुक्रिया—(न०) धन्यवाद। आभार।

शिखा—(ना०) १. चोटी। २. कलगी। ३. दीपक की लौ। ४. आग की लपट।

शिखिवाह—(न०) स्वामी कार्तिक।

शिथिल—(वि०) १. ढीला। २. सुस्त। ३ थका हुआ। ४ धीमा।

शिर—(न०) सिर। माथो।

शिरकत—(ना०) १. मिलकर काम करना। २. शरीक होना। ३. मिलावट। ४. साझे-दारी। साझा। भागीदारी। साझो।

शिरोमणि—(न०) १. सिर पर पहनने का रत्न। २. चूड़ामणि। (वि०) १. सबसे उत्तम। श्रेष्ठ। २. मुख्य।

शिला—(ना०) १. पत्थर की पट्टी। २. पत्थर। पाषाण। भाटो

शिलाजीत—(न०) पहाड़ी चट्टान का एक रस जो पौष्टिक होता है। शैल-निर्यास।

शिलालेख—(न०) वह प्रस्तर खंड, जिस पर प्रशस्ति लेख खुदा हुआ हो।

शिल्प—(न०) १. कला। कारीगरी। २. कला पूर्ण वस्तु। ३ साहित्य-कृति।

शिल्पकार—(न०) कलाकार। शिल्पी। कारीगर।

शिव—(न०) १. महादेव। परमेश्वर। २. कल्याण। मंगल। ३. कल्याणकारी।

शिव-दारिग—(न०) श्मशान। मसाण।

शिव-निर्माल्य—(न०) शिवजी को अर्पण किया हुआ पदार्थ, जो ग्रहण नहीं किया जाता।

शिवपुरी—(ना०) १. वाराणसी। काशी। २. मेवाड़ का एकलिंगजी तीर्थ। ३. कैलासपुरी।

शिवभंडारी—(न०) कुबेर।

शिवराई—(न०) शिवाजी के चलाये हुये सिक्के का नाम।

शिवरात—(ना०) शिवरात्रि। फाल्गुन कृ० १४ की रात। महाशिव-रात्रि। इस दिन विशेष प्रकार से व्रत, उपवास, और शिव पूजा की जाती है।

शिवरात्री—दे० शिवरात।

शिवलिंग—(न०) १. अखिल ब्रह्मांड का एक अंडाकार चिन्ह, जिसकी ब्रह्मांड रूप में पूजा होती है। शिवजी का लिंग या पिंडी जिसकी समस्त सृष्टि की उत्पादक शक्ति के रूप में पूजा होती है। ३. शिवजी का लिंग स्वरूपी प्रतीक।

शिव-लोक—(न०) कैलास।

शिव-सखा—(न०) कुबेर।

शिवा—(ना०) पार्वती।

शिवाजी—(न०) भोंसले वंशीय सुविख्यात स्वाधीन महाराष्ट्र राज्य के प्रतिष्ठाता छत्रपति शिवाजी महाराज।

शिवालय—(न०) शिवजी का मंदिर। सिवालो।

शिवालो—(न०) शिवजी का मंदिर। शिवालय।

शिविका—(ना०) डोली। पालकी।

शिविर—(न०) १. डेरा। २. सेना का डेरा। छावनी।

शिशिर—(ना०) माघ और फाल्गुन मास की ठंडी ऋतु। २. शीतकाल।

शिशु—(न०) बालक।

शिशुपाल—(न०) चेदि देश का राजा जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था।

शिष्ट—(वि०) १. सुशिक्षित। विद्वान। २. योग्य। लायक। ३. अच्छे स्वभाव, आचरण और व्यवहार वाला। ४. सभ्य। ५. धर्मशील। ६. शांत। ७. श्रेष्ठ। ८ आज्ञाकारी। ९. भद्र। (न०) शिष्ट पुरुष।

शिष्टाचार—*(न०)* १. शिष्ट व्यवहार। २. औपचारिक भद्र व्यवहार। ३. आने वाले का आदर सम्मान। अतिथि-सत्कार।

शिष्य—*(न०)* १. विद्यार्थी। २. चेला। ३. वह जिसे किसी ने पढ़ाया हो।

शीघ्र—*(अव्य०)* १. जल्दी से। झटपट। २. जल्दी। त्वरा से।

शीघ्र-धाव—*(न०)* हरिन। मृग। हिरणियो।

शीत—*(ना०)* ठंड। सरदी। *(वि०)* ठंडा।

शीतल—*(वि०)* १. ठंडा। २. शांत।

शीतलता—*(ना०)* १. शीतल होने का गुण, धर्म, भाव या अवस्था। २. ठंडक। ३. जड़ता।

शीतला—*(ना०)* १. चेचक रोग की देवी। सीतळा। २. चेचक की बीमारी।

शीतला-वाहन—*(न०)* गदहा। गधो। खर। गधेड़ो।

शीतला-सातम—*(ना०)* १. चैत्र वदी सातम। २. उस दिन मनाया जाने वाला शीतला का त्योहार और मेला। शीतला-सप्तमी।

शीताभ—*(न०)* चंद्रमा।

शीतांशु—*(न०)* चद्रमा।

शीरा—*(न०)* १. हलुवा। सीरो। २. चाशनी।

शीर्ष—*(न०)* १. सबसे ऊपरी सिरा। शिखर। २. सिर। माथो।

शीर्षक—*(न०)* लेखों आदि के ऊपर लेख का परिचयात्मक नाम। प्रकरण, लेख इत्यादि के ऊपर शुरू मे दिया जाने वाला नाम। मथारो। हेडिंग।

शील—*(न०)* १. उत्तम स्वभाव व आचरण। २. संकोच। ३. ब्रह्मचर्य। ४. स्त्री की पवित्रता। सतीत्व। ५. सात्विकता। ६. कुलीनता।

शील-भंग—*(न०)* ब्रह्मचर्य या सतीत्व का नष्ट होना।

शीलवान—*(वि०)* १. उत्तम शील वाला। २. सदाचारी। ३. ब्रह्मचारी।

शीलवंती—*(वि०)* १. उत्तम शील वाली। २. सदाचारिणी। ३. ब्रह्मचारिणी। ४. सती।

शीलव्रत—*(न०)* १. ब्रह्मचर्य पालन करने का व्रत। ब्रह्मचर्य। २. सयम।

शीश—*(न०)* माथा। सिर। सीस। माथो।

शीशफूल—*(न०)* स्त्रियों का एक सिरोभूषण। बोर। रखड़ी।

शीशी—*(ना०)* औषधि आदि डालने का कांच का एक लबोतरा पात्र।

शीशो—*(न०)* १. बड़ी शीशी। कांच। आईना। दर्पण। काच। २. एक धातु। सीसा।

शुक—*(न०)* १. तोता। सूवटो। सुग्गो। २. शुकदेव मुनि।

शुकदेव—*(न०)* भागवत कथाकार श्री वेदव्यास के पुत्र श्री शुकदेव मुनि।

शुक्तिज—*(न०)* मोती।

शुक्र—*(न०)* १. एक ग्रह। २. शुक्रवार। ३ वीर्य। ४. पौरुष। बल। ४. आभार। उपकार। ५. सद्भाग्य।

शुक्रवार—*(न०)* गुरुवार के बाद का दिन।

शुक्राचार्य—*(न०)* १. दैत्यों के गुरु का नाम। २. काना मनुष्य। काणो मिनख। (व्यंग्य में)

शुक्रिया—*(न०)* धन्यवाद। आभार।

शुक्ल—*(वि०)* १. सफेद। २. उज्वल। ३. सात्विक। *(न०)* १ एक ब्राह्मण कुल २. ब्राह्मणो की एक अल्ल है। ३. चादी। ४. नवनीत। मक्खन। माखन। ५. सुदी (पक्ष)।

शुक्ल-पक्ष—*(न०)* अमावस के बाद की प्रतिपदा से पूनम तक के पंद्रह दिन। सुदी पख। अजवाळियो-पख।

शुचि—*(वि०)* १. पवित्र। २. स्वच्छ। ३. उज्वल। ४. निष्पाप। ५. सच्चा। *(न०)* १. अग्नि। २. ग्रीष्म।

शुतुर—*(न०)* ऊट।

शुतुर-मुर्ग—*(न०)* एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन और टांगें ऊट के समान लम्बी होती हैं। उष्ट्र-पक्षी। उष्ट्र-ग्रीव।

शुतुर-सवार—*(न०)* ऊट-सवार। उष्ट्रा-रोही। ओठी। ओठीड़ो।

शुद्ध—*(वि०)* १. स्वच्छ। २. पवित्र। ३. दोष रहित। ४. बिना मिलावट का। खालिस। चोखो। ५. ठीक। सही।

शुद्धता—दे० शुद्धि स. १ और २.

शुद्धात्मा—*(न०)* १. पवित्र पुरुष। २. शिव।

शुद्धाद्वैत—*(न०)* श्री वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित सम्प्रदाय पुष्टि-मार्ग।

शुद्धापह्नुति—*(न०)* एक काव्यालकार।

शुद्धाशुद्ध—*(वि०)* शुद्ध और अशुद्ध।

शुद्धि—*(ना०)* १. पवित्रता। शुद्धता। चोखाई। २. स्वच्छता। ३. प्रायश्चित करके पवित्र होने की क्रिया। ४. धर्मान्तर किये हुये को धार्मिक क्रिया करवा कर वापिस अपने धर्म मे लेने या आने की विधि। ५. धर्म भ्रष्ट हो गया हो उसे विधि पूर्वक अपने असल धर्म मे लाना।

शुद्धि-पत्र—*(न०)* पुस्तक के अन्त मे लगने वाला पुस्तक मे रह गई अशुद्धियो का शुद्ध रूप दर्शाने वाला पत्र।

शुद्धिकरण—*(न०)* अशुद्धि को शुद्ध करना। शुद्ध करने की क्रिया।

शुद्धोदन—*(न०)* भगवान बुद्ध के पिता का नाम।

शुभ—*(वि०)* १. मांगलिक। २. मगलप्रद। कल्याणकारी। ३. अच्छा। भला। *(न०)* १. कल्याण। आनद। २. शून्य। पूर्ण। बिंदी। मींडो। सुन। सुभ।

शुभ-ओपमा-लायक—*(वि०)* 'शुभ उपमाओ के लायक' इस आशय का पत्र मे लिखा जाने वाला एक शिष्टाचारिक पद। (पारंपरिक पत्र-लेखन-पद्धति।)

शुभ-चरिता—*(वि०)* पतिव्रता।

शुभमस्तु—*(अव्यपद)* १. 'भला हो' ऐसा आशीर्वाद। २. प्रायः हस्तलिखित ग्रंथो के अंत में लिखा जाने वाला आशीर्वादात्मक मगल-पद। कल्याणमस्तु।

शुभस्थाने—*(अव्य०)* प्राचीन पत्र लेखन परिपाटी के अनुसार ग्राम नाम लिखने के बाद उसके विशेषण रूप मे लिखा जाने वाला एक अव्यय पद। जो शुभ स्थान है', इस भाव को बताने वाला एक पारिभाषिक पद।

शुभारंभ—*(न०)* शुभ काम का आरंभ।

शुभाशिष—दे० शुभाशीर्वाद।

शुभाशीर्वाद—*(न०)* 'भला हो' ऐसा आशीर्वाद।

शुभ्र—*(वि०)* १. उज्वल। २. श्वेत।

शुमार—*(न०)* १. गिनती। २. हिसाब। ३. अनुमान। अन्दाज।

शुरुआत—*(ना०)* आरम्भ। पहल।

शुरू—*(न०)* १. प्रारम्भ। आरंभ। २. आदि।

शुश्रूषा—*(ना०)* १. सेवा। टहल। २. रोगी की परिचर्या।

शुंग—*(न०)* एक प्राचीन राजवंश जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र था।

शूकर—(न०) सूअर।

शूकरी—(ना०) सूअर की मादा।

शूद्र—(न०) १. आर्यों के चार वर्णों का चौथा वर्ण। २. चौथे वर्ण का पुरुष। ३. दास।

शूद्रा—दे० शूद्राणी।

शूद्राणी—(ना०) १. शूद्र की पत्नी। २. शूद्र जाति की स्त्री। शूद्रा।

शून्य (न०) १. बिन्दु। २. अभाव। ३. खाली जगह। ४. ब्रह्म। ५. ईश्वर। ६. आकाश। (वि०) १. खाली। कुछ नहीं। २. निराकार। ३. असत्।

शून्य-शिखर—(न०) १. निर्विकल्प दशा। २. समाधि अवस्था।

शूर—(वि०) बहादुर। पराक्रमी। (न०) योद्धा।

शूरवीर—(वि०) बहादुर। वीर। (न०) बड़ा योद्धा। सूरमो।

शूर्पणखा—दे० सूरपणखा।

शूल—(न०) १. एक शस्त्र। २. कांटा। ३. त्रिशूल। ४. वायु के प्रकोप से होने वाली वेदना। ५. पेट का दर्द। (ना०) बबूल का लंबा कांटा। सूळ।

शृगाल—(न०) सियार। गीदड़। सियाळियो।

शृंगार—(न०) १. शरीर पर वस्त्राभूषणों को धारण करना। सणगार। २. वह जिससे किसी वस्तु की शोभा बढ़े। ३. सजावट। साज-सज्जा। ४. साहित्य के नौ रसों में से एक। (काव्य)

शृंगारी—(वि०) १. शौकीन। छैला। २. नखरों वाला। ३. कामी। ४. शृंगार संबंधी। ५. शृंगार वाली। (ना०) सुन्दर स्त्री।

शृंगी—(न०) १. पर्वत। २. वृक्ष। ३. सींगवाला पशु। ४. सींग का बना वाद्य। [illegible] ६. एक ऋषि। ७. स्वर्ण। सोना। ८. सींगिया विष। (वि०) १. सींगवाला। २. शिखर वाला।

शृंगी ऋषि—(न०) परीक्षित को सातवें दिन सर्प काटने से मृत्यु हो जाने का श्राप देने वाले ऋषि।

शेख—(न०) १. मुसलमानों में एक जाति। २. शेख जाति का मनुष्य।

शेखर—(न०) १. मुकुट। २. शिखर। सिरा। (वि०) श्रेष्ठ।

शेखावाटी—(ना०) शेखावत, कछवाहों के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान का एक प्रदेश जो जयपुर के उत्तर-पश्चिम में आया हुआ है।

शेखावत—(न०) १. कछवाहा मोकल के पुत्र शेखा के नाम से प्रसिद्ध कछवाहा राजपूत जाति का एक प्रवर्तक या शाखा। २. शेखावत राजपूत।

शेखावतजी—(ना०) शेखावत-राजपूत की पुत्री का उसकी ससुराल में सम्मान-सूचक संबोधन या नाम।

शेखी—(ना०) १. डींग। २. अकड़। ३. घमंड। ४. बढ़-बढ़ कर बातें करना।

शेर—(न०) १. बाघ। सिंह। २ उर्दू-कविता।

शेरवानी—(ना०) घुटनों तक लंबा बंद गले का कोट।

शेष—(वि०) १ बचा हुआ। २. बाकी। (न०) १. दिग्गज। २. शेष-नाग। ३. शेष भाग। ४. भागाकार में घटती संख्या। ५. अन्त। समाप्ति।

शेष-नाग—(न०) पाताल में रहने वाला एक नाग। नागराज।

शैतान—(न०) १. गलत राह पर ले जाने वाला कल्पित दुष्ट देव। २. ईश्वर

विरोधी देव। ३. दुष्ट देव। ४. दुष्ट देव-योनि। ५. भूत, प्रेत, जिन इत्यादि ६. दुराचारी दुष्ट व्यक्ति। ७ काम, क्रोध इत्यादि दुर्वृत्तियाँ। *(वि०)* १. उच्छृंखल। निरंकुश। २. शरारती।

शैतानी—*(ना०)* १. पाजीपन। दुष्टता। २. शरारत। ३. दुष्ट आचरण। ४. तंग करना। सताना। *(वि)* १. शैतान का। २. शैतान से संबंधित।

शैल—*(न०)* पर्वत।

शैल-कन्या—*(ना०)* १. पार्वती २. दुर्गा। ३. गंगा।

शैल-कुमारी—दे० शैल-कन्या।

शैल-जा—दे० शैल-कन्या।

शैल-सुता—दे० शैल-कन्या।

शैली—*(ना०)* १. परिपाटी। प्रणाली। २. ढंग। तरीका। ३. कला, साहित्य, लेखन, भाषण, पहनावा इत्यादि की विशिष्ट रीति।

शैव—*(न०)* १. शिव-भक्त। २. शिव-संप्रदाय। *(वि०)* शिव सबंधी।

शोक—*(न०)* १. दुख। संताप। २. दिल-गीरी। ३ किसी प्रिय अथवा आत्मीय के मरने का सताप। ४. मरणोपरान्त शोक व्यक्त करने का लोकाचार। मरणोत्तर शोक-प्रथा। सोग।

शोण—*(न०)* १. रक्त। खून। लोहू। २. लाल रंग। ३. लाली।

शोणित—*(न०)* १. रक्त। लोहो।

शोध—*(ना०)* १. खोज। तपास। जाँच। २. शुद्ध करने वाला संस्कार। ३. दुरुस्ती। शुद्धि। ४. अनुसंधान।

शोध-कर्ता—*(वि०)* १. शोध करने वाला। ढूंढने वाला। २. शुद्ध करने वाला।

शोध-निबंध—*(न०)* १. विस्तृत गवेषणा-पूर्ण लेख। २. पी-एच.डी. की डिगरी के लिए यूनिवर्सिटी द्वारा स्वीकृत विषय पर शोधार्थी द्वारा लिखा जाने वाला शोध-पूर्ण महानिबंध।

शोभा—*(ना०)* १. कीर्ति। २. प्रतिष्ठा। आबरू। ३. सुन्दरता। ४. कांति चमक। ५. सजावट।

शोभायमान—*(वि०)* शोभा वाला। सुन्दर।

शोर—*(न०)* १. कोलाहल। होहल्ला। धूम। २. जोर की आवाज।

शोर-गुल—*(न०)* कोलाहल। हल्ला-गुल्ला।

शोषण—*(न०)* १. अधीनस्थ या दुर्बल के परिश्रम, भाव आदि से अनुचित लाभ उठाना। २. किसी को विवश करके उससे उठाया जाने वाला लाभ। ३. सोखना। ४. सुखाना।

शौच—*(न०)* १. स्वच्छता। पवित्रता। २. मलोत्सर्ग। झाड़ें।

शौनक—*(न०)* नैमिषारण्य ऋषिकुल-तीर्थ के कुलपति और ऋग्वेद प्रतिशाख्य के रचयिता ऋषि।

शौरसेनी—*(ना०)* शौरसेन (ब्रज-मंडल) प्रदेश की प्राचीन अपभ्रंश भाषा। नागर अपभ्रंश। *(वि०)* शूरसेन सम्बन्धी।

श्मशान—*(न०)* मरघट। समसान। मसाण। औराण।

श्याम—*(न०)* श्रीकृष्ण। *(वि०)* काला। स्याह। सावला। सांवळो।

श्याम-सुन्दर—*(न०)* श्रीकृष्ण।

श्यामा—*(ना०)* १. श्रीराधा। २. कालिका। ३. साँवले रंग की गाय। ४. कस्तूरी। ५. रात। ६. यमुना। ७. तुलसी। ८. छाया। ९. सांवा अन्न। एक फलाहार।

श्रद्धा—(ना०) १. आस्था। ईश्वर, धर्म, गुरु अथवा बड़ों के प्रति पूज्य भाव। सरधा। २. विश्वास। ३. आदर। दे० सरधा।

श्रद्धालु—(वि०) १. जिसके मन में श्रद्धा हो। सरधाळू। २. विश्वासी।

श्रद्धावान्—(वि०) १. श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु। सरधावान। ३. शक्तिशाली। ४. धर्मनिष्ठ। (न०) श्रद्धालु पुरुष।

श्रम—(न०) १. परिश्रम। मेहनत। २. थकावट। थाकेलो। ३. मजदूरी। मजूरी।

श्रम-जीवी—(न०) मजदूर। मजूर।

श्रमण—(न०) बौद्ध अथवा जैन साधु।

श्रव—(न०) कान। कर्ण।

श्रवण—(न०) १. कान। २. वेदाध्ययन। ३. बाईसवाँ नक्षत्र। ४. अन्धे माता-पिता को कावड़ में बिठा कर तीर्थ यात्रा कराने वाला अंधक मुनि का पुत्र। ५. टपकना। रिसना। ६. सुनने की क्रिया या भाव।

श्राद्ध—(न०) १. मृतक के पीछे किया जाने वाला तर्पण आदि धार्मिक कृत्य। सराध। २. पितृओं की तृप्ति के लिये श्रद्धापूर्वक कराई जाने वाली तर्पण क्रिया। ३. पितरों की मृत्यु तिथि के दिन आश्विन कृष्ण पक्ष में कराया जाने वाला तर्पण, भोजनादि।

श्रावक—(न०) १. बौद्ध। २. जैन गृहस्थ। जैनी। ३. नास्तिक। ४. श्रोता। ५. शिष्य। चेलो।

श्रावण—(न०) विक्रम संवत का पाँचवाँ महीना। आषाढ़ और भादो के बीच का महीना। सावण। सरावण।

श्रावणी—(ना०) श्रावण मास की पूर्णिमा। रक्षाबन्धन का दिन। राखड़ी-पूनम।

श्राविका—(ना०) १. श्रावक की स्त्री। २. जैन स्त्री। ३. शिष्या। चेली। ४. बौद्ध स्त्री।

श्री—(ना०) १. लक्ष्मी। २. सरस्वती। ३. सम्पत्ति। धन। ४. वृद्धि। ५. विभूति। ६. शोभा। ७. चंदन। ८. एक वैष्णव सम्प्रदाय। ९. वैष्णवों का तिलक। खड़ा तिलक। १०. ऊर्ध्वपुण्ड्र की तीन रेखाओं में की बीच की खड़ी रेखा। श्रीमुद्रा। ११. एक राग। १२. एक आदर सूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले लिखा या बोला जाता है। १३. लिखने के पूर्व शीर्ष में लिखा जाने वाला एक मंगल शब्द। १४. ऐश्वर्य। १५. स्त्री। नारी। (वि०) १. श्रेष्ठ। २. शुभ। ३. सुन्दर। ४. मांगलिक।

श्री ऋषभदेव—(न०) १. विष्णु का एक अवतार। १. जैनियों के प्रथम तीर्थंकर। आदीश्वर।

श्रीकंठ—(न०) शिव। महादेव।

श्रीकंत—दे० श्रीकांत।

श्रीकार—(वि०) १. श्रेष्ठ। २. सुन्दर। उत्तम। ३ लाभदायक। (न०) लक्ष्मी स्वरूप। १. 'श्री' शब्द। २. शुभ काम। मंगल कार्य।

श्रीकांत—(न०) विष्णु।

श्रीकृष्ण (न०) विष्णु का सोलह कला का एक पूर्णावतार। वासुदेव।

श्रीकृष्णार्पण—(अव्य०) सब कुछ भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित।

श्रीकोलायतजी—(न०) बीकानेर के उत्तर-पश्चिम में ५० किलो मीटर दूर श्री कपिल मुनि के तपस्या स्थान का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान।

श्रीखंड—(न०) १. चंदन। २. शिखरण।

श्रीगणेश—(न०) १. प्रारम्भ। शुरुआत। शुभारम्भ। २. श्रीगणपति।

श्रीगणेशाय नमः—(अव्य०)१.श्री गणेश को नमस्कार (लेख के प्रारम्भ में मंगलार्थ)। २.शुभारम्भ।

श्रीजी—(न०) १. ईश्वर। परमात्मा। २ विष्णु। ३. राजा के लिये आदर सूचक शब्द या सम्बोधन। ४. जिसके नाम के पूर्व 'श्री' और अन्त में 'जी' लिखे जायें या सम्बोधन किये जायें, वह आदरणीय पुरुष।

श्रीठाकुरजी प्रीत्यर्थे—(अव्य०) दानपत्र या शिलालेखों में प्रयुक्त भूमिदान सम्बन्धी एक पद। श्री ठाकुरजी (श्रीकृष्ण) की प्रसन्नता के निमित्त।

श्रीजी शरण—(पद०)१.देहावसान। मृत्यु। स्वर्गवास। २.ईश्वर की शरण।

श्रीजी शरण होणो—(मुहा०) देहावसान होना। मरना। मरणो।

श्रीजी साहेब—दे० श्रीजी सं. ३

श्रीजी साहेबा—(अव्य०) रानी के लिए आदर सूचक शब्द या संबोधन।

श्रीजी साहेबां—दे० श्रीजी सं. ३।

श्रीद—(न०) कुबेर।

श्रीधर—(न०) १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

श्रीधराज—(न०) श्रीराजाधिराज।

श्रीनाथजी—(न०) १.राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थस्थान नाथद्वारा के अधिष्ठाता भगवान श्रीनाथजी। २. एक वैष्णव धार्मा ग्राम। ३. विष्णु।

श्रीपति—(न०) १. लक्ष्मीपति। विष्णु। २. धनवान।

श्री५—(अव्य०) नाम के पहिले मान वाचक पूर्वपद (धन, धान्य, पशु, पुत्र और दीर्घायु—इन पांचों की शोभा और सम्पन्नता)।

श्रीपूज—(न०) १. श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय के धर्माचार्य। २. उक्त उपाधि।

श्रीफळ—(न०) १. नारियल। नारेल। माळेर। २. आंवला।

श्रीबंधु—(न०) चंद्रमा।

श्रीभणंकानाथ—(न०) महादेव। रुद्र।

श्रीभाष्य—(न०) ब्रह्मसूत्र पर श्रीरामानुजाचार्य का भाष्य।

श्रीमती—(ना०) १. 'श्रीमान' का 'स्त्रीलिंग। २. सौभाग्यवती स्त्री के नाम के पहिले लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द। ३. पत्नी वाचक शब्द। ४. लक्ष्मी।

श्रीमंडल—(न०) १. आभा। कान्ति। २. एक वाद्य। ३. भा-मंडल। प्रभामंडल। किरणियो।

श्रीमंत—(न०) १. किसी फर्म के नाम के पहले लिखा जाने वाला शब्द (पत्रादि में)। मेसर्स। २. श्रीमान। (वि०) १. श्रीमान। २. धनवान। तवंगर।

श्रीमाताजी—(ना०)१. दुर्गा। २. शक्ति। ३. महामाया। ४. लक्ष्मीजी। ५. सरस्वती। ६. गायत्री।७. पार्वती। ८. जन्मदात्री।

श्रीमान्—(न०) पुरुष नाम के पहले लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द। (वि०) धनवान।

श्रीमाल—(न०) मारवाड़ के इतिहास प्रसिद्ध नगर भीनमाल का प्राचीन नाम। भिल्लमाल।

श्रीमालण—(ना०) १. श्रीमाली जाति की स्त्री। २. श्रीमाली की पत्नी।

श्रीमाल-पुराण—*(न०)* श्रीमाल नगर व यहां से निष्काशित इसके नाम पर बनी जातियों का इतिहास-ग्रंथ ।

श्रीमाली—*(न०)* श्रीमाली ब्राह्मण, बनिया या स्वर्णकार । *(वि०)* १. श्रीमाल नगर से संबंधित । २. श्रीमाल नगर का ।

श्रीमाली ब्राह्मण—*(न०)* १. श्रीमाल (भीनमाल) नगर से उत्पन्न या उद्‌गत एक ब्राह्मण जाति २. उक्त जाति का व्यक्ति ।

श्रीमाळी सोनी—*(न०)* १. इस नाम की एक ब्राह्मण जाति २. एक बनिया जाति । २. इन जातियों का व्यक्ति ।

श्रीमुख—*(न०)* १. वेद । २. सूर्य । ३. माता-पिता, गुरु, और राजा आदि गुरुजनों के बोलने, आज्ञा करने तथा उनसे बातचीत करने के समय उनके लिये 'आप', 'उन, या 'स्वमुख' शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त किया जाने वाला आदर सूचक शब्द । ४. भव्य और सुन्दर मुख । ५. पूज्य और पुण्यात्मा पुरुष का मुख ।

श्रीमुखसूं—*(अव्य०)* गुरूजनों से बोलने या कहने-करने के सम्बन्ध में उत्तर देते समय कहा जाने वाला 'तुमने', 'आपने' या 'उन्होंने' अर्थ वाला) एक आदर सूचक पद ।

श्रीयुत—*(वि०)* पुरुष नाम के पूर्व लिखा जाने वाला एक आदर सूचक विशेषण।

श्रीरस्तु—*(अव्य०)* १. हस्तलिखित ग्रंथों के अन्त में लिखा जाने वाला एक मंगल पद । २. 'समृद्धि बढ़े' ऐसा आशीर्वादात्मक पद ।

श्रीरंग—*(न०)* विष्णु ।

श्रीरंगजी—*(न०)* तामिलनाडु में कावेरी नदी के मध्य द्वीप रूप में बना शेषशायी विष्णु भगवान का सबसे बड़े और भव्य मंदिर वाला बहुत प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान ।

श्रीराम—*(न०)* १. विष्णु का श्रीरामचंद्र के रूप में एक पूर्ण कला अवतार । २. दशरथनंदन राम ।

श्रीलंका—*(न०)* १. भारत के दक्षिण का एक द्वीप । लंका द्वीप ।

श्रीवत्स—*(न०)* १. विष्णु । २. विष्णु के वक्षस्थल का चिन्ह ।

श्रीवृक्ष—*(न०)* पीपल वृक्ष । अश्वत्थ ।

श्रीसरूप—*(न०)* श्री बालकृष्ण की मूर्ति । श्रीस्वरूप ।

श्रीसंघ—*(न०)* जैन [ओसवालों के न्याति संगठन का नाम ।

श्रीसंप्रदाय—*(न०)* श्रीरामानुजाचार्य का वैष्णव सम्प्रदाय ।

श्रीसुत—*(न०)* कामदेव ।

श्रीहस्थ—*(अव्य०)* १. श्रीहस्त । २. आपके हाथों से । आपके द्वारा ।

श्रीहस्त—दे० श्रीहस्थ ।

श्रुत—*(वि०)* सुना हुआ । *(न०)* १. श्रुत ज्ञान । २. शास्त्र ज्ञान ।

श्रुत-लेखन—*(न०)* सुनकर लिखने में आया हुआ अनुलेखन । डिक्टेशन ।

श्रुत-साहित्य—*(न०)* १. अलिखित साहित्य । २. लोगों की जबान पर रहा हुआ काव्य, कथा, वार्ता, कहानी इत्यादि । ३. सुना हुआ साहित्य । श्रवण-साहित्य ।

श्रुति—*(न०)* १. सृष्टि के प्रारम्भ से चलता आ रहा पवित्र ज्ञान । वेद । २. कान । कर्ण । ३. चार की संख्या । ४. ध्वनि । ५. नाद का एक भेद ।

श्रुति-स्मृति—*(न०)* १ वेदादि धर्मशास्त्र। २ वेद और स्मृति शास्त्र।

श्रेणी—*(ना०)* १. दरजा। वर्ग। क्लास। २. पंक्ति। ३. क्रम। परम्परा।

श्रेय—*(न०)* १ मोक्ष। २. शुभ। कल्याण। ३ यश। ४. पुण्य।

श्रेष्ठ—*(वि०)* सर्वोत्तम। उत्कृष्ट।

श्रोण—*(न०)* रक्त। लोही।

श्रोणी—*(न०)* नितम्ब। ढूंगा।

श्रोता—*(न०)* १. कथा, व्याख्यान सुनने वाला व्यक्ति। २. सुनने वाला।

श्रोत्र—*(न०)* कान। कर्ण।

श्लोक—*(न०)* १. संस्कृत का पद्य। २. संस्कृत का अनुष्टुप छंद। ३. यश। ४. स्तुति। सलोक। ५. चार चरण का पद।

श्वपच—*(न०)* १. चांडाल। २. भंगी। महतर।

श्वान—*(न०)* कुत्ता। कूतरो।

श्वास—*(न०)* १. नाक के द्वारा वायु लेने छोड़ने की क्रिया। सांस। २. दमा रोग।

श्वेत—*(वि०)* सफेद। धोळो।

श्वेताम्बर—*(न०)* एक जैन सम्प्रदाय। २. श्वेत वस्त्र।

ष

ष—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का इकतीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। प्राचीन लिखावट में इसका 'ख' के स्थान में भी प्रयोग होता था। यजुर्वेद काल से (यजुर्वेद में) इसका उच्चारण 'ख' होने लग गया था। २. प्राचीन राजस्थानी वर्णमाला का 'ख' वर्ण। उच्चारण भेद के कारण इसका प्रयोग दन्त्य 'स' के रूप में भी कहीं-कहीं होता है।

षट—*(वि०)* छः (गिनती में) *(न०)* छः की संख्या। '६'। छह।

षट-कर्म—*(न०)* १. अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन दान और प्रतिग्रह—ये ब्राह्मण के छ कर्म। २. स्नान, संध्या, तर्पण पूजन, जप और होम—गृहस्थ के ये विहित कर्म। ३. जारण, मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तंभन और विध्वंसन—ये छः तंत्र-कर्म। ४. धौती, वस्ति, नेती, नौली, त्राटक और कपाल भांति—ये छः यौगिक क्रियाएँ। खटकरम। खटकम।

षट-कोण—*(न०)* छः कोणों वाली आकृति। खटकोण।

षट-चरण—*(न०)* भ्रमर। भौंरा। भमरो।

षट-दर्शन—*(न०)* सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त। वैदिक तत्व-ज्ञान के ये छः शास्त्र। षट्-शास्त्र। भारतीय दर्शनशास्त्र।

षट-पद—*(ना०)* भौंरा। भमरो।

षट-पदी—*(ना०)* छप्पय छंद। खटपदी।

षट-शास्त्र—दे० षट-दर्शन।

षड्-ऋतु—*(ना०)* वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर ये छः ऋतुएँ।

षड्ज—*(न०)* नाक, कंठ, उर, तालु, जीभ और दाँतों के सम्मिलित प्रयत्नों से

उच्चरित संगीत का पहला 'सा' स्वर। खरज।

षड़यन्त्र—(न०) १ किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की जाने वाली कारंवाई। भीतरी चाल। २. कपटपूर्ण आयोजन। कावतरो।

षड्-रस—(न०) १.मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल, नामक जिव्हा के रस। २. स्वाद के छः प्रकार।

षड्राग—(ना०) १. 'भैरव' मलार, श्री, हिंडोल, मालव और दीपक-संगीत के ये छः राग। २. अनबन। झगड़ा-बखेड़ा। अणबणाव, कजियो, कडाकूट, खटराग।

षड्रिपु—(न०) मनुष्य के छः आंतर शत्रु–'काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर'। घातक मनोविकार।

षडंग—(न०) १.'शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष, नामक छः वेदांग। २. दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़ नामक शरीर के छः अंग। खडंग।

षष्ठी—(ना०) १. पखवाड़े की छठी तिथि। २. बालक के जन्म से छठे दिन का उत्सव। छठी। ३. सम्बन्ध कारक का नाम। (व्या०)।

षोडश—(वि०) सोलह। (न०) सोलह की संख्या। '१६'

षोडश-कला—(ना०) अमृता, मानदा,पूषा, तुष्टि, पुष्टि रति, धृति, शशिनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्ण तथा पूर्णामृता नामक चन्द्रमा की सोलह कलाएं।

षोडश-दान—(न०) भूमि, आसन, जल, वस्त्र, अन्न, दीपक, पान, छत्र, सुगन्धित द्रव्य, पुष्पमाला, फल, शास्त्र, खड़ाऊ, गौ, सोना और चांदी इन सोलह वस्तुओं का एक साथ दिया जाने वाला दान।

षोडश-शृंगार—(न०) उबटन, स्नान, वस्त्र-धारण, केश-भूषा, अंजन, सिंदूर, महावर, भाल-तिलक, ठोडी पर तिल, मेंहदी, आभूषण-धारण, पुष्प-सज्जा, सुगन्धित द्रव्य-प्रयोग, होठ रंगना। मिस्सी लगाना, पान खाना इत्यादि सोलह शृंगार-प्रकार।

षोडश-संस्कार—(न०) हिन्दू सवर्णों के लिये विहित गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के—'गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास तथा अंत्येष्टि' नामक सोलह संस्कार।

षोडशी—(ना०) सोलह वर्ष की युवती।

षोडशोपचार—(न०) देव पूजा के सोलह उपचार—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताबूल, परिक्रमा और वंदन।

स

स—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा का ३२ वाँ व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दंत्य है। नागरी लिपि में ऊष्माक्षरों मे का तीसरा अक्षर। सकार।

स—एक पूर्वग (उपसर्ग)। शब्द के पहले लग कर उसकी विशेषता प्रकट करने वाला उपसर्ग। (सर्व०) वह। वो। हैवो। (न०) संगीत मे षड्ज स्वर का सूचक अक्षर।

सइ—दे० सई।

सइकड़ो—(न०) १. सौ की संख्या। २. सौ वर्षों का समूह। ३. सौ वर्षों का समय।

सइको—(न०) १. सदी। शती। सौ वर्षों का समूह। २ सौ वर्षों का समय। शताब्दी। सइको।

सई—(ना०) १. अनाज मापने का एक माप-पात्र जो आठ माणों का होता है। २. सई परिमाण की कोई वस्तु। ३. वृद्धि। बरकत। ४. सरस्वती। ५. सरस्वती नदी। (न०) दरजी। (वि०) १. सब। २. सभी। ३ तब। ४. रात। सौ। (अव्य०) १. से। २. साथ।

सईकी—दे० सइको।

सईको—दे० सइको।

सउण—(न०) १. कान। श्रवण। २. शकुन। सुकन।

सऊर—(ना०) १. बात या काम करने का ठीक ढंग या सलीका। शऊर। २. तारतम्य युक्त सूक्ष्म बुद्धि। ३. योग्यता। ४. विवेक। ५. सुशीलता।

सईस—(न०) घोड़ों की देखभाल करने वाला नौकर। साईस।

सओधो—(न०) योद्धा। जोधो। (वि०) कुलीन। ओधवाळो।

सक—(न०) १. शक। शंका। वहम। भरम। २. शक्ति। ३. शालिवाहन-संवत्सर। शक।

सकज—(न०) सुकार्य। (अव्य०) १. काम के लिये। सकाम। २. लिये। वास्ते। सारू। भणी।

सकट—(न०) १. छकड़ा। २. गाड़ा। गाडी। ३. संकट।

सकटी—(ना०) गाड़ी।

सकड़—(वि०) १. दृढ़। मजबूत। सेंठो। २. सम्पन्न। ३. सज्जित। ४. वीर। जोरावर। सौकड़।

सकड़दो—(न०) पात्र के अंदर वस्तु सहित किया जाने वाला तौल। (वि०) पात्र, करदा, बारदाना सहित (तोली हुई वस्तु)।

सकणो—(क्रि०) १. कोई काम करने मे समर्थ होना। २. शक्तिमान होना। सकना। ३. हो सकना। संभव होना। सभवना। ४. पहुंचना। (प्राय साधारण क्रिया की धातु के साथ सहायक रूप मे ही इसका प्रयोग होता है।)

सकत—(ना०) १. शक्ति। बल। २ देवी। ३. पार्वती। सगत।

सकति—दे० सकती।

सकती—(ना०) १ शक्ति। बल। सरधा। २. शक्ति। देवी। दुर्गा। सगत।

३. खड्ग । ४. बरछी । ५. एक प्रकार का शस्त्र । शक्ति नामक शस्त्र ।

सकत्त—दे० सकत ।

सकन—*(न०)* शकुन ।

सकपक—*(ना०)* घबराहट ।

सकबंध—*(न०)* १. सेनापति । २. योद्धा । ३. आक्रामक । *(वि०)* १. वह जिस पर सील सिक्के लगे हुये हों । सील सिक्का बंध । अकबंध । २. वह जो खुला या फटा व टूटा न हो । अकबंध । ३. संशय वाला । शकवाला ।

सकबंधी—*(वि०)* १ पराक्रमी । वीर । २. संशयी । शकी । ३. आक्रामक । *(न०)* सेनापति ।

सकर—दे० शक्कर ।

सकरकंद—*(न०)* एक मीठा कंद । शकरकंद ।

सकरणो—*(क्रि०)* १. स्वीकृत होना । मकरना कबूला जाना । सिकरणो । २.हुंडी का सिकारा जाना ।

सकरपारा—दे० सकर पैंडो ।

सकरपैंड़ो—*(न०)* एक मिठाई । शक्करपारा ।

सकराई—दे० सिकराई ।

सकराणो—दे० सिकरावणो ।

सकराय—*(ना०)* एक लोकदेवी । सकराय माता ।

सकरावणो—दे० सिकरावणो ।

सकरांत—दे० संक्रांति ।

सकर्मक—*(वि०)* १. कर्म संयुक्त (क्रिया पद)। (व्या.) २. क्रियाशील ।

सकर्मक-*क्रिया*—*(ना०)* कर्म के साथ प्रयुक्त क्रियापद (व्या.) ।

सकर्मी—*(वि०)* शुभ काम करने वाला (अकर्मी या कुकर्मी का उलटा) ।

सकल—दे० सकळ ।

सकळ—*(वि०)* १. सर्व । तमाम । सकल । समस्त । सँग । सिगळा । २. कलावान ।

सकळ-जगपालक—*(न०)* परमेश्वर । परमात्मा ।

सकळंक—*(न०)* चंद्रमा । *(वि०)* कलंक वाला ।

सकलंबरा—*(ना०)* शारदा । सरस्वती ।

सकलात—*(ना०)* १ ओढने का एक मखमली या ऊनी कपड़ा । बनात । २. रजाई । दुलाई

सकळीव्रत—*(न०)* चंद्र ।

सकस—*(वि०)* १. श्रेष्ठ । २. जोरावर । वीर । बलवान । *(न०)* व्यक्ति । शख्स ।

सकाज—*(अव्य०)* १. निमित्त । कारण । २. कारणसर । ३ सकारण । सहेतुक ।

सकाथ—*(वि०)* सशक्त । जोरावर ।

सकाम—*(वि०)* १. फल की इच्छावाला । २. फल की इच्छा से काम करने वाला । ३. जिसके मन में कामना हो । ४. सफल । *(अव्य०)* काम से । काम सहित ।

सकाय—*(अव्य०)* काम के लिये । *(न०)* १. दृढ़ शरीर । २. दीर्घ-काय । *(सवर्त.क्रि०)* १. सकता है । २. हो सकता है । ३. किया जा सकता है ।

सकार—*(न०)* 'स' अक्षर ।

सकारज—*(अव्य०)* १. काम से । कारज सहित । सकाज । २. कारण । ३. कारणसर ।

सकारण—*(अव्य०)* १. कारण सर । २. कारण सहित । *(वि०)* १. कारण वाला । २. सगर्भा बुजोवी बेजीवी ।

सकारणी—(क्रि०) १. स्वीकार करना। २. अपने नाम की हुण्डी को स्वीकार करके उसके रुपये दे देना। हुंडी का भुगतान करना। हुंडी के रुपये भरना या चुकाना। सिकारना। सिकारणो।

सकूनत—(ना०) १. निवास स्थान। २. पता। ठिकाना।

सको—(वि०) १. सब। २. सभी। सभी-कोई। सगळा।

सकोई—(वि०) सभी। सब कोई। सँग।

स-कोड—(अव्य०) १. उत्साह से। उत्साह-पूर्वक। सोत्साह। २. सहर्ष। ३. सप्रेम। ४ साभिलाष।

सकोनूं—(सर्व०) सबको।

स-कोप—(अव्य०) कोप करके। सरोस।

सकोरो—(न०) पानी पीने का मिट्टी का एक जलपात्र। करवो।

सक्क—(न०) इन्द्र। शक्र।

सक्करपारो—दे० सकरपैंडो।

सक्की—(वि०) शक करने वाला। वहमी।

सक्को—(न०) भिश्ती। पखाली।

सक्र—(न०) इन्द्र। शक्र।

सक्र-कोस—(न०) कुबेर।

सक्र-घरण—(न०) वज्र।

सक्रनंदण—(न०) शक्रनंदन। अर्जुन।

सक्र-प्रिया—(ना०) इन्द्राणी।

सक्र-वाह—(न०) इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

सक्राणी—(ना०) इन्द्राणी।

सखत—(वि०) १. सख्त। कठोर। २. [illegible]। मजबूत। ३. निर्दय। ४. कठिन। मुश्किल। आकरो।

सखत-भीड़—(ना०) १. असीम तंगी। खूब तंगी। २. मसीबत। ३. पैसे की तंगी। नाणा-भीड़।

सखत-सजा—(ना०) सख्त मजदूरी के साथ कैद की सजा।

सखताई—(ना०) १. सख्ती। कड़ापन। २. कठोर व्यवहार। ३. जुल्म। ४. प्रति-बन्ध।

सखती—दे० सखताई।

सखम—(न०) १. आराम। २. सुख। सुखम। (वि०) १. क्षमा वाला। सक्षम। २. सहनशील।

सखरी—(वि०) १. अच्छी। ठीक। २. सुन्दर। ३. मूल्यवान। (ना०) १. आटा-दाल आदि खाद्य-पदार्थ। भोजन बनाने के लिए किसी को दी जाने वाली आटा-दाल आदि सामग्री। सीधो।

सखरो—(वि०) १. अच्छा। ठीक। २. सुन्दर। ३. मूल्यवान। ४. खूब। (न०) १. ब्राह्मण, साधु आदि को भोजन बनाने के लिये दी जाने वाली सूखी समग्री (आटा, घी, दाल, आदि)। सीधा। सीधो। २. किसी के हाथ का पकाया हुआ नहीं खाने वाले को उसके भोजन बनाने के लिये दिया जाने वाला आटा, दाल आदि का सूखा सामान।

सखा—(न०) मित्र। साथी।

सखाई—(ना०) मित्रता। दोस्ती।

सखायो—(न०) अंगरक्षक की तरह हर समय साथ रहने वाला दूल्हे का मित्र। सखा। सखैयो। सखो।

सखावत—(ना०) १. दानशीलता। २. उदारता। ३. दान।

सखा-समीर—(न०) अग्नि। 'वासदे' देवता।

सखी—(ना०) सहेली। सहचरी। सायण। (वि०) १. दानी। दाता। २ उदार।

सखी-भाव—(न०) अपने को इष्ट देवता की सखी या पत्नी मानने का भाव।

२. पत्नी या सखी रूप में की जाने वाली इष्ट-देव की भक्ति।

सखी-सहेली—(ना०) १. सखी। सहेली। २. सखी समूह। सायण।

सखी-सम्प्रदाय—(न०) पत्नी के वेष में रहते हुए श्रीकृष्ण की पति के रूप में आराधना करने वाला सम्प्रदाय।

सखुन—(न०) १. कथन। बोल। वेण। २. बातचीत। ३. कौल। वचन। ४ उक्ति। ५ कविता। काव्य।

सखो—(न०) साथी। मित्र। सखायो।

सखोड़—(वि०) १. सदोष। २. अशुद्ध। अपवित्र। (न०) लंगडापन।

सखोध—(वि०) सक्रोध। रीसवाळो। रीसठियो।

सख्त—दे० सखत।

सख्ती—दे० सखती।

सग—(ना०) १. दीप-शिखा। सिग। २. दीपक की ज्योति। ३. दोहने समय की दूध धारा। ४. पतली धारा। ५. सगा। संबंधी।

सगठ—(न०) संकट। कष्ट। तकलीफ। (वि०) १ गाँठ वाला। २. ग्रथित। ३. गठित। रचा हुआ।

सगड़—(न०) शकट। गाडी। छकड़ा।

सगड़ी—दे० सिगड़ी।

सगण—(न०) छंद शास्त्र में एक गण जिसमे पहला दूसरा लघु और तीसरा गुरु (IIS) होता है।

सगणो—दे० सकणो।

सगत—(ना०) १. शक्ति। देवी। २. पार्वती। ३. तलवार। खड्ग।

सगतरो-पूत—(न०) १. चारण। २. शक्ति-पुत्र।

सगती—(ना०) १. शक्ति। देवी। २. तलवार। तरवार।

सगती-पुत्र—(न०) १. चारण। २. शक्ति पुत्र।

सगन—दे० शकुन।

सगपण—(न०) १. कन्या का वाग्दान। सगाई। २. लड़के के लिए कन्या का वाग्दान स्वीकार करना-या मांगना। ३. विवाह-सम्बन्ध। ४. रक्त-संबंध। ५ संबंध। रिलेशन।

सगरथ—(वि०) १. सम्पन्न। २. गुणवान। (न०) १. परिवार और मित्र-मण्डली। (अव्य०) समस्त परिवार सहित।

सगराम—(न०) संग्राम। युद्ध। जुध।

सगरी—दे० सिगरी।

सगर्भा—(वि०) १. गर्भवती। भारीपगे। (ना०) १. गर्भवती स्त्री। २. सगी बहन। सोदरी। सहोदरा।

सगर्व—(वि०) गर्वयुक्त। (अव्य०) गर्व से।

सगळाई—(वि०अ०व०) समस्त ही। सभी।

सगळी—(वि०ना०) सब। समस्त। सँग।

सगळो—(वि०) सकल। समस्त। सँग।

सगळोई—(वि०) सभी। सब ही।

सगवड़—(ना०) १. सुविधा। अनुकूलता। २. व्यवस्था। जोगवाई। सवड़।

सगस—(न०) शख्स। व्यक्ति।

सगाई—(ना०) १. लड़के या लड़की की मँगनी। वाग्दान। सगपण। २. रिश्ता। नाता। ३. विवाह-निश्चय। ४. लिहाज। ५. ध्यान। ६. संकल्प।

सगापणो—(न०) सगापन। रिश्तेदारी।

सगारथ—(न०) विवाह-संबंध। सगापन। रिश्तेदारी। सिनातपणो।

सगावळ—(ना०) १. सगा बनने की रस्म। सम्बन्धी बनने की विधि। २. सगों के आपसी रीति-रस्म। ३. सगापन।

सगाविध—*(ना०)* १. सगापन । २. सगाई । ३. सगों के परस्पर के रीति रस्म । सगे-संबधियों के परस्पर के रीति रस्म । सगे-सबंधियों के परस्पर के रीति-रिवाज । ४. सगा बनने की रस्म । सगावळ ।

सगा-सम्बन्धी—*(न०ब०व०)* १. सगे और संबंधी-जन । २. समधी लोग ।

सगा-सोई—दे० सगा-सबंधी ।

सगी—*(ना०)* समधिन । वेवाण । *(वि०)* एक माँ से उत्पन्न । सोदरी ।

सगी-काकी—*(ना०)* बाप के सगे भाई की पत्नी । ताई । काकी । चाची ।

सगी-नानी—*(ना०)* माँ की माता ।

सगी-बहन—*(ना०)* एक ही माता से उत्पन्न बहन । सहोदरा ।

सगी-भाभी—*(ना०)* सगे भाई की पत्नी । भावज । भोजाई ।

सगी-भोजाई—दे० सगी भाभी ।

सगी-मामी—*(ना०)* माँ के भाई की पत्नी ।

सगी-सासू—*(ना०)* पति या पत्नी की माता । सास । सासूजी ।

सगीड़—*(न०)* आघात । धक्का ।

सगुण—*(वि०)* १. गुणयुक्त । २. आकार आदि ३. गुणवानगुण वाला । *(न०)* १. साकार ब्रह्म । २ परमात्मा का वह रूप जिसमें सत्व, रज और तम तीनों गुण हों । ईश्वर का अवतारी सशरीरी रूप ।

सगुण-उपासना—*(ना०)* परमात्मा के सगुण रूप की उपासना । सगुणोपासना ।

सगुण-ब्रह्म—*(न०)* साकार ब्रह्म ।

सगुणी—*(वि०)* गुणों वाली । *(ना०)* गुणों वाली स्त्री । दे० सगुण । सं. १२१

सगुणोपासना—दे० सगुण उपासना ।

सगुरो—दे० सुगरो ।

सगो—*(न०)* १. समधी । संबंधी । गिनायत । वेवाही । २. सगोत्री । सगोत्र । सगा । ३. सहोदर । भाई । ४. मित्र । स्नेही । *(वि०)* कुल में अति निकट का । रक्त-सम्बन्ध वाला ।

सगो-काको—*(न०)* पिता का सगा भाई ।

स-गोढ-री—*(वि०)* १. हितू । बहुत चाहने वाली । हितैषी । २ निकट समधिन । बहुत निकट की । सगोढी ।

स-गोढ-रो—*(वि०)* १. हितचिंतक । बहुत चाहने वाला । २. निकट संबंधी । बहुत निकट का । सगोढ़ो । ३. विश्वसनीय । ४. प्यारा । ५ पड़ौसी ।

स-गोढी—दे० सगोढ-री ।

स-गोढो—दे० सगोढ-रो ।

सगोत—दे० सगोती ।

सगोती—*(वि०)* १. एक ही गोत्र का । सगोत्री । स्वगोत्री । *(न०)* स्वजन । २. कुटुम्बीजन ।

सगोत्र—दे० सगोती ।

सगो-नानो—*(न०)* माता का पिता ।

सगो-परसंगी—*(न०)* १. सगा और प्रसंग वाला । २. सगा-स्नेही ।

सगो-भाई—*(न०)* अपनी माँ से उत्पन्न लड़का । एक ही माता से उत्पन्न भाई । सहोदर ।

सगो-मामो—*(न०)* माता का भाई ।

सगो-संबंधी—*(न०)* सगा सम्बन्धी । समधी ।

सगो-सुसरो—*(न०)* पति या पत्नी का पिता ।

सगो-सोई—दे० सगो सबंधी ।

सग्ग—*(न०)* १. स्वर्ग । सुरग । २. सगा । सम्बन्धी । ३. दीप-शिखा । लौ । ४. पतली धारा । ५. दोहते समय थन में से निकलने वाली दूध की धारा ।

सघण—दे० सघन ।

सघण-वाह—(न०) इन्द्र ।

सघन—(वि०) १. घना । २. गाढ़ा । ठोस । भिड़मो । ३. अविरल । (न०) घन । मेघ । बादल ।

सघनता—(ना०) सघन होने का भाव ।

सच—(वि०) १. सत्य । यथार्थ । जैसा हो वैसा । साच । २. वास्तविक । ३. ठीक । (न०) सत्य बात या स्थिति । तथ्य । वास्तविकता ।

सचम—(वि०) १. जबरदस्त । २. बहुत भारी । सच्चम ।

सचमुच—(अव्य०) १. वास्तव में । वस्तुतः । २. निश्चय । खरेखर ।

सचराचर—(न०) १. संसार के सभी चर, अचर, स्थावर और जंगम पदार्थ तथा प्राणी । (अव्य०) चर, अचर समस्त में ।

सचळो—(वि०) १. चंचल । चपल । २. अस्थिर ।

सचवाणो—(क्रि०) सुरक्षित रखना या रखवाना । २. सम्हालना । साचवणो ।

सचवायो—(वि०)१.सच बोलने वाला । २. सच्चा । खरो । ३. सम्हाला हुआ । ४. सुरक्षित । ५. यत्न किया हुआ । साचवियोड़ो ।

सचाई—(ना०) सच्चाई । सत्यता । वास्तविकता ।

सचाळो—(वि०) १. युद्ध करने को उत्साहित । युद्ध करने को तत्पर । २. वीर । ३. चंचल । ४. अद्‌भुत ।

सचावट—(ना०) १. सच्चाई । सत्यता । २. दृढ़ता । खरापणो ।

सचिक्कण—(वि०) बहुत चिकना । सुंवाळो ।

सचित्र—(वि०) जो चित्रों से युक्त हो । जिसमे चित्र हो ।

सचियारो—(वि०)१. सत्य बोलने वाला । २. ईमानदार । सच्चा ।

सचिव—(न०) १. मंत्री । २. प्रधान । ३. संस्था का प्रमुख अधिकारी या कार्यकर्ता । ४. मित्र ।

सचिवालय—(न०) राज्य के सचिवों एवं प्रमुख अधिकारियों का कार्यालय ।

सचिंत—(वि०) १. चिन्ता वाला । २. चिंतित ।

सची—(ना०) इन्द्राणी । शचि ।

सचीकणो—(वि०) १. तेल से युक्त । तैली । तैलियो । चीकटवाळो । २. चिकना । सुंवाळो । सचिक्कण ।

सची-पति—(न०) इन्द्र । शचि-पति ।

सचीराट—(न०) इन्द्र । शचि-राट ।

सची-स्याम—(न०) इन्द्र । शचि-स्वामी ।

सचूंप—(क्रि०वि०) १. उत्साह से । २. शौक से । ३. सुघड़ता से ।

सचूंपो—(वि०) १. सुघड़ता से काम करने वाला । सुघड़ । २. उत्साह वाला । ३. शौकीन ।

सचेत—१. सावधान । सजग । सजाग । २. समझदार ।

सचोट—(वि०) १. अचूक । २. निष्फल नही जाये ऐसा । ३. खरा । पक्का । (अव्य०) चूके नहीं इस प्रकार ।

सच्च—दे० सच ।

सच्चम—दे० सचम ।

सच्चरित—(वि०) अच्छे चरित्र वाला । सदाचारी ।

सच्चरित्र—दे० सच्चरित ।

सच्चाई—*(ना०)* सत्यता । सचावट ।

सच्चापरण—*(न०)* सत्यता । सचाई ।

सच्चापरणो—दे० सच्चापण ।

सच्चिदानंद—*(न०)* सत्, चित और आनन्दमय ब्रह्म । परब्रह्म । परमेश्वर ।

सच्चो—*(वि०)* १. सत्य । सांचो । २. असली । *(अव्य०)* 'सत्य कहता हूं' इस भाव का उद्गारित शब्द ।

सच्चो—दे० साचो ।

सजग—*(वि०)* १. सावधान । सजाग । २. होशियार । जाग्रत । जागरूक ।

सजगो—दे० सजग ।

सजड़—*(वि०)* १. दृढ़ । मजबूत । २. सख्त चिपटा हुआ । ३. जड़ सहित ।

सजड़ो—दे० सजड़ ।

सजरण—दे० सजन ।

सजरणो—*(क्रि०)* १. सजना । तैयार होना । सज्जित होना । २. अलंकृत होना । ३. शोभित होना । ४. संजाना । सजावणो । ५. निभाना । वैसे ही बने रहना । ६. किसी वस्तु का आवश्यकतानुसार बनना या परिपूर्ण होना । यथावश्यक पूरा होना । बराबर बनना । बराबर होना । ७. गुजारा होना । ८. बराबर होते रहना । ९. खतम नहीं होना । १०. पर्याप्त होना । ११. निर्माण करना । १२. शृंगार करना । १३. ऊंट, घोड़े आदि पर काठी कसना ।

सजन—*(न०)* १. सज्जन । भला मनुष्य । २. प्रियतम । पति । साजन ।

सजन-गोठ—*(ना०)* १. मित्र, संबंधियों की स्नेह-गोष्ठी । २. प्रीति-भोज ।

सजनपद—*(न०)* प्राचीन समय के किसी एक जनपद के निवासियों की पारस्परिक संज्ञा । स्व-जनपद ।

सजन-सनेही—*(वि०)* सज्जन-स्नेही *(न०)* १. समधी । २. प्रियतम । पति ।

सजनी—*(ना०)* १. सखी । सायण । २. प्रिया ।

सजम—*(ना०)* 'समझ' का विपर्यय रूप । दे० समझ ।

सजमरणो—*(वि०)* 'समझणो' शब्द का विपर्यय रूपान्तर । दे० समझणो ।

सजळ—*(वि०)* १. जल वाला । २. हरा-भरा । ३. गीला । आर्द्र । ४. अश्रुपूर्ण । ५. जल पूर्ण । ६. जहां जल गहरा (ऊंडा) न हो वह (प्रदेश) ।

सजळाई—*(ना०)* १. जल की पुष्कलता । जल की पूर्णता ।

सजळो—दे० सजल ।

सजस—*(न०)* सुयश । *(वि०)* यश वाला ।

सजा—*(ना०)* १. दण्ड । जुर्माना । २. कारावास । कैद । ३. सरकार द्वारा भुगताया जाने वाला अपराध का दण्ड ।

सजाई—*(ना०)* १. सजावट । २. तैयारी । ३. ऊंट की पीठ पर कसा जाने वाला पलान, घासिया आदि । सवारी का सामान । ४. ऊंट को सजाने का सामान ।

सजाग—दे० सजग ।

सजाणो—*(क्रि०)* १. अलंकृत करना । सजाना । सजावणो । २. वस्तुओं को यथाक्रम रखना । करीने से रखना । ३. निभाना । वैसे ही बनाये रखना । ४. खतम नहीं होने देना । बराबर बनाये रखना । यथावश्यक बनाये रखना या

पूरा करना। पर्याप्त हो जाय वैसी व्यवस्था करना। ५. गुजारा चलाना। ६. तैयार करना। ७. निर्माण करना। ८. सबको बराबर मिले इस प्रकार बांटना।

सजात—(वि०) १. एक ही जाति का। सजाति। सजातीय। २. साथ में जन्मा हुआ। ३. कुलीन।

सजायाफ्ता—(वि०) जो सजा भुगत चुका हो।

सजायो—(न०) हजामत करने का छुरा। उस्तुरा। पाछणो।

सजाय—(न०) १. किसी वस्तु का यथावश्यक होना। किसी वस्तु का जरूरत मुताबिक सबको मिल जाना। २. सबमें बराबर होना। ३. निर्वाह। निबाह।

सजावट—(ना०) १. तैयारी। २. शोभा।

सजावणो—दे० सजाणो।

सजावार—(वि०) १. सजा पाने का पात्र। सजा करने योग्य। २. सजायाफ्ता।

सजियोड़ो—दे० सज्जित।

सजीव—(वि०) १. जिसमें जीव हो। जीवित। २. जिसमें जीवन हो। ३. ओजस्वी।

सजीव-चित्रण—(न०) ओजस्वी आलेखन।

सजीवण—(वि०) १. जीवन देने वाला। २. सजीवन।

सजीवण-बूंटी—(ना०) सजीवन करने वाली बूटी। सजीवन बूटी। संजीवनी।

सजीवण-मंत्र—(न०)१. पुनः जीवित करने वाला मंत्र। संजीवन मंत्र। २. प्राण फूंकने वाला मंत्र।

सजीवन—दे० सजीवण।

सजीव-वर्णन—(न०) प्राण फूंक देने वाला कथन। ओजस्वी वर्णन।

सजूसण—दे० सजोसण।

सजूसणियो—दे० सजोसणियो।

सजो—दे० सज्जो।

सजोड़ै—(अव्य०) १. पति-पत्नी साथ में। सपत्नीक। २. जोड़े सहित। गठ-बंधन किये हुए।

सजोरी—(क्रि०वि०) जबरदस्ती से। जोरजबरी से (वि०) १. जोर वाली। २. उद्दंड। ३. झगड़ालू।

सजोरो—(वि०) १. जबरदस्त। बलवान। २. ऊधमी। उद्दंड। ३. इतराया हुआ। घमण्डी। कँगरियोड़ो। ४. जिस मोहरे के पीछे किसी अन्य मोहरे की शक्ति हो। (शतरंज)

सजोसण—(वि०) १. कवच सहित। २. कवचधारी (न०) कवच। बखतर।

सजोसणियो—(वि०)१. कवचधारी। कवच से सज्जित। २. युद्ध के सभी साज और शस्त्रों आदि द्वारा सज्जित।

सज्ज—(न०) तत्पर। तैयार। सज्जित।

सज्जन—(न०) १. भला आदमी। २. अच्छे कुल और आचरण वाला व्यक्ति।

सज्जित—(वि०) सजा हुआ। सजियोड़ो।

सज्जो—(वि०) १. समस्त। सब। २. अत्रुटित। साजो। ३. स्वस्थ। साजो।

सज्झाय—(न०) १. 'स्वाध्याय' शब्द का प्राकृत भाषा रूप। २. जैन शास्त्रों का नियमित पाठ।

सज्या—(ना०) शय्या। सोने का पलंग बिस्तर आदि। ढोंया। सेज।

सज्या-सेस—(न०) १. विष्णु-भगवान। २. विष्णु भगवान की शेष-शय्या।

सझाड़ो—(वि०) घने वृक्षों वाला (पर्वत)। (न०) वृक्षों और झाड़ी वाला सघन वन।

सभूल—(वि०) १. भूल डाला हुआ (हाथी)। २. मूल सहित। ३. भुंड के साथ। ४. भुंड सहित।

सटकै—(क्रि०वि०) तुरन्त। झटपट।

सटणो—(क्रि०) १. बहुत पास आकर बैठना। २. चिपकना। चिपकणो। ३. पास आना। मिलना।

सटा—(ना०) जटा।

सटाक—(अव्य०) 'सट' ऐसी आवाज हो इस प्रकार। २. झट। त्वरा से। (न०) १. चाबुक। कोरड़ो। साटको। २. चाबुक की आवाज।

सटाको—(न०) १. चाबुक। कोरड़ो। साटको। २. चाबुक मारने का शब्द।

सटाणो—(क्रि०) १. दो वस्तुओं को मिलाना। २. पास ले जाना। सटाना।

सटावणो—दे० सटाणो।

सटीक—(वि०) टीका सहित (मूल ग्रन्थ)। व्याख्या या टीका समेत।

सटै—दे० साटै।

सटोड़ियो—(वि०) वह जो तेजी मंदी के विचार से किसी वस्तु का भविष्यकालीन (वायदे की) खरीद बिकरी करता हो। सट्टा खेलने वाला। सट्टाखोर। सटोरियो।

सटोरियो—दे० सटोड़ियो।

सटोरो—दे० सटोरियो।

सटोळणो—(क्रि०) मारना। पीटना।

सटोसट—(अव्य०) सटासट। झटपट। जल्दी-जल्दी।

सट्टाखोर—(वि०) सट्टा खेलने वाला। सटोड़ियो। सटोरियो।

सट्टी—(ना०) एक ही मेल की बहुत सी चीजों का बाजार।

सट्टेबाज—दे० सट्टाखोर।

सट्टो—(न०) १. केवल तेजी मंदी के आधार पर लाभ प्राप्ति के लिये किया जाने वाला वायदा-व्यापार। २. खरीद-बिकरी का वह व्यापार जो केवल तेजी मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ प्राप्ति के लिये किया जाता है। माल के भावों में भविष्यकालीन घटा-बढ़ी पर खेले जाने वाला जुआ। तेजी-मंदी का व्यापार।

सठ—(वि०) १. शठ। धूर्त। २. मूर्ख। ३. धोखेबाज। ठग। दे० साठ।

सठता—(ना०) १. शठता। धूर्तता। २. मूर्खता। ३. धोखेबाजी। ठगाई। ठगी।

सठताई—दे० सठता।

सठवा—(वि०) १. ऊंची जाति की (सोठ) २. सोंठ। शुंठि। शूंठ।

सठवा-सूंठ—(ना०) एक प्रकार की बढ़िया सोंठ।

सठियाणो—(क्रि०)१. साठ वर्ष का होना। २. बुढ़ापे के कारण बुद्धि का काम नहीं देना। सठियाना।

सड़क—(वि०)१. स्तब्ध। दिङ् मूढ़। चकित। भौंचक्का। २. जड़। ३. स्थिर। (ना०) पक्का मार्ग। रोड।

सड़कावणो—(क्रि०) १. बेंत या कोड़े से मारना। फटकारना। २. मारना। पीटना।

सड़णो—(क्रि०) १. किसी वस्तु में ऐसा विकार पैदा होना कि वह गलने लगे और उसमें दुर्गंध आने लगे। सड़ना। २. हीनावस्था में पड़ा रहना। ३. दुर्गति होना। ४. लम्बी बीमारी भुगतना। ५. असाध्य व्याधि से ग्रस्त होना।

सडर—(वि०) डरा हुआ । भयपूर्ण । सभीत । डरियोड़ो ।

सड़ाक—(अव्य०) जल्दी । दे० सड़ाको ।

सड़ाको—(न०) १. बेंत या चाबुक मारने की आवाज । कोड़े की फटकार । २. चिलम या हुक्के का दम खींचना । ३. चाबुक । कोरड़ो ।

सड़ासड़—(अव्य०) १. 'सड़सड़' शब्द के साथ । २. शीघ्रता से । ३ ऊपरा-ऊपरी ४. झटाझट ।

सड़ांद—दे० सड़ांध ।

सड़ांध—(ना०) किसी वस्तु के सड़ जाने पर उसमें से निकलने वाली दुर्गन्ध सड़ान ।

सडुक—(न०) कुत्ता । गडक ।

सड़ो—(न०) १. सड़ने की क्रिया या भाव । सड़ान । २. सड़ने की दुर्गंध । ३. भ्रष्टाचार । दुराचार । ४. रिश्वतखोरी । घूसखोरी । ५. आफत । आपत्ति । ६. ६. दीर्घकाल से चला आ रहा दो पक्षों का झगड़ा । ७. कुए पर बैल आदि को बांधने का घास का झोंपड़ा ।

सढाळो—(वि०) १. अनुकूल । २. हितकर । ३. सीधा । सरल । पाधरो । सुढाळो ।

सढ्ढो—(न०) ऊंट ।

सण—(न०) एक पौधा जिसके रेशे से थैले, रस्सियां आदि बनाई जाती है । सन । जूट ।

सणक—(ना०) वेदना । सणको । (वि०) सीधा । अवक्र । दे० सनक ।

सणको—(न०) १. शूल चुभने के समान होने वाली वेदना ।

सणगार—दे० शृंगार ।

सणगारज—(न०) कामदेव ।

सणगारणो—(क्रि०) शृंगार करना ।

सणगारियोड़ो—(वि०) शृंगार किया हुआ । शृंगारित ।

सणियो—(न०) एक क्षुप । सिणिया नामक घास । सिणियो ।

सणेजो—(न०) स्नेहीजन । सैंण ।

सत—(न०) १. सत्य । सच । २. स्वरूप-ज्ञान । ३. सत्यता । सच्चाई । ४. देवता का आवेश । वीरत्व । व्रत । ६. साहस । ७. वीर-मृत्यु । ८. प्रतिज्ञा । ९. शपथ । १०. ईमानदारी । ११. सतीत्व । १२. सती होने का जोश । सतीत्व का जोश । १३. सार वस्तु । १४ पातिव्रत-धर्म । १५. सार । सत्व । १६. तत्व । १७ सात की संख्या '७' । १८. सौ की संख्या । '१००' । (वि०) १. सौ । दश का दश गुना । २. सात । चार और तीन ।

सत-अंगो—(न०) रथ । सप्तांग । (वि०) खरा । सच्चा ।

सत आवणो—(मुहा०) १. सती होने का आवेश उत्पन्न होना । २. शौर्य उत्पन्न होना ।

सत करणो—(मुहा०) १. प्रतिज्ञा करना । २. मरना । ३. युद्ध में मरना । ४. स्त्री का पति के पीछे सती होना । सती का पति की चिता पर चढ़ना ।

सत-करमी—(वि०) सत्कर्म करने वाला । सत्कर्मी ।

सतकार—(न०) १. सम्मान । आदर । सत्कार । २. आव-आदर । आव-भगत । आतिथ्य ।

सत-कारज—(न०) सत्कार्य । सत्कर्म ।

सतकारणो—(क्रि०) सत्कार करना । आदर करणो ।

सतक्रत—(न०) १. इन्द्र । [illegible] । २. सत्कर्म । सत्कार । ३. आदर । (वि०) १. भली-भांति किया हुआ । २. सत्कृत । ३. [illegible] । ४. [illegible] करने वाला ।

[illegible] (वि०) [illegible] । उत्कृ[illegible] (न०) १. [illegible] । २. [illegible] [illegible] कार्य ।

सत-खणो—(वि०) सात खडों वाला। (न०) सात खडो वाला मकान।

सत-खंड—(न०) सात खड (मकान, अलमारी इत्यादि के)।

सत-खंडी—(वि०) सात खडो वाली। सातखणी।

सत-गुर—दे० सद्गुरु।

सत-गुरु—(न०) १. सद्गुरु। २. परमेश्वर।

सत चढणो—(मुहा) सतीत्व या शूरातन चढ़ना।

सत-जुग—(न०) सतयुग। सत्ययुग।

सतत—(अव्य०) १. निरतर। लगातार। २. बराबर। ३. हमेशा। सदा।

सत-देणो—(मुहा०) वीरगति को प्राप्त होना। युद्ध मे मरना।

सत-धर्म—(न०) १. सतीधर्म। २. सतीपना। ३. सद्धर्म।

सत-ध्रत—(न०) ब्रह्मा।

सतनारायण—दे० सत्यनारायण।

सत-पकवान—दे० सतपकवानी स. १

सत-पकवानी—(ना०) १. सात प्रकार के पक्वान्न। २. सात पकवानो का भोजन। ३. सात राजस्थान-एकांकियों की पुस्तक का नाम।

सतपत—(न०) १. सत्य और प्रतिष्ठा। २. सत्य की प्रतिष्ठा। ३. सत्य प्रतिज्ञा।

सत-पत्र—(न०) कमल। शत-पत्र।

सत-परव—(ना०) १. वशी। मुरली २. बांस। सप्त-पर्व।

सत-परविका—(ना०) दूर्वा। दूब।

सतपुड़ो—(न०) १. हथेली मे होने वाला एक व्रण। २. सतपुड़ा पहाड़।

सत-पुरख—दे० सतपुरस।

सत-पुरस—दे० सत्पुरुष।

सत-बीरणी—(ना०) सात भांति के पकवान। सत-सीरणी।

सत-भंग—(न०) १. स्त्री के सतीत्व का भंग। २. असत्य नही बोलने की प्रतिज्ञा का भंग। कर्त्तव्य-च्युति।

सत-मासियो—(वि०) सातवें मास मे उत्पन्न होने वाला (शिशु)।

सतर—(न०) शत्रु। वैरी। (ना०) रेखा। ओळी। लीठी।

सतर-धड़—(ना०) शत्रु-सेना।

सतरदा—(ना०) बिजली।

सतरगो—(वि०) सात रगो वाला।

सतरज—(न०) एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानो की बिसात पर बत्तीस गोटियो से खेला जाता है। शतरज।

सतरंजी—(ना०) दरी। सेतरू जी। जीरोई। फराशी।

सतरूघण—दे० शत्रुघ्न।

सतरे—(न०) सतरह की सख्या। '१७'। (वि०) सात और दस।

सतरे-सौ—(न०) एक हजार और सात सौ की सख्या। '१७००' (वि०) एक हजार और सात सौ।

सतरोतर-सौ—(न०) पहाड़े मे बोली जाने वाली एक सौ सतरह (११७) की सख्या।

सतर्क—(वि०) सावधान। सचेत।

सतलड़ी—(ना०) सात लड़ो वाला हार।

सतलड़ो—दे० सतलड़ी।

सतवती—(वि०) १. पतिव्रता। २. सती। ३. साध्वी। (ना०) सती स्त्री।

सतवाची—दे० सतवादो।

सतवादो—(वि०) १. सत्य बोलने वाला। सत्यवादी। २. दृढ़ प्रतिज्ञ। (न०) १. हरिश्चद्र। २. युधिष्ठिर।

सतवारो—(न०) १. सत्पुरुषो का युग। २. सत्य युग। ३. सत्य की महिमा। ४. महत्व का काल। हरखद-वारो।

सतवी—(ना०) सोंठ। सूंठ।

सत-संग—(ना०) सत्संग। साधु पुरुषों की संगति। सत-संगत।

सत-सई—(ना०) सात सौ छंदों का ग्रंथ। सप्त-शती।

सत-सदी—(ना०) १. सात सौ वर्षों का समय। सात सदी। २. सातसौवां वर्ष। ३. सात सौ वर्ष पूरे हो जाने पर मनाया जाने वाला उत्सव।

सत-संगत—दे० सत-संग।

सत-संगी—(वि०) १.अच्छी संगति में रहने वाला। २. सत्संग करने वाला। (न०) साथी।

सत-साल—(वि०)१. शत्रु का संहार करने वाला। २. शत्रु के लिए शल्य रूप। शत्रु-शल्य। शत्रुसाल। (न०) सात वर्ष का समय।

सत-साहब—(न०) कबीर-पंथी सम्प्रदाय का एक विशिष्ट पद। जिसका अर्थ-'साहब (ईश्वर) सत्य हैं' होता है, जो साधुओं को नमस्कार करने के समय या मधुकरी के समय उनके द्वारा उच्चारण का काम किया जाता है। २. कबीर साहब।

सतहर—(न०) शत्रु। वैरी। (वि०) १. झूठा। २. निबल।

सत-हारणो—(मुहा०) १. वचन भंग होना। २. व्रत भंग करना या होना। ३. सत्य बात का खंडन होना या करना। ४. बुद्धि भ्रष्ट होना।

सत-हीणो—(वि०) १. शक्तिहीन। कमजोर। २. असत्य। झूठा।

सताइस—(न०) सत्ताइस की संख्या। '२७'। (वि०) बीस और सात।

सताइस-सा—(न०) दो हजार सात सौ की संख्या। '२७००'। (वि०) दो हजार और सात सौ।

सताइसा—(न०) सदी का सत्ताईसवां वर्ष।

सताजोग—(अव्य०) १. दैव योग से। २. ईश्वर इच्छा से। ३. संयोगवश।

सताणुओ—(न०) सदी का सत्तानवां वर्ष।

सताणूं—(वि०) नब्बे और सात। (न०) सत्तानवे की संख्या ९७'

सताणो—(क्रि०) १. परेशान करना। सताना। २. दुख देना। हैरान करना।

सताब—(क्रि०वि०) शीघ्र। जल्दी। सिताब। झटपट।

सताबा—(क्रि०वि०) १.शीघ्र। २. शीघ्रता से। जल्दी से।

सतार—(ना०) तारों वाला एक वाद्य यन्त्र। सितार।

सतारा—(न०ब०व०) सप्त ऋषियों के नाम के सात तारों का समूह जो ध्रुव तारे की परिक्रमा करते रहते हैं। सात तारे।

सतारा—(न०)१. तारा। नक्षत्र। सितारा। २. भाग्य। प्रारब्ध। तकदीर। नसीब।

सतालक—(न०) बालभद्र। बलराम।

सतावणो—दे० सताणो।

सतावन—(वि०)पचास और सात। (न०) सत्तावन की संख्या। ५७।

सतावनो—(न०) संवत का सत्तावनवां वर्ष।

सतावर—(न०) एक पौष्टिक वनौषधि। शतावरी। सतमूली।

सातयासी—दे० सितयासी।

सतिया—(वि०) १. सत्य मार्ग का आचरण करने वाला। सतवादी। २. ३. सत्यवक्ता। ३. सत्यवादी ४. दानी। ५. वीर।

सती—(ना०) १. पतिव्रता स्त्री। २. सतवंती। ३. मृत पति के शव के साथ जलने वाली पतिव्रता स्त्री। शिवजी की पहली पत्नी। दक्ष-कन्या। ४.

पार्वती । ५ गायत्री । ६. देवी । ७. सती माता । (वि०) १. दानी । २. उदार ।

सती-रो-नाळेर—(वि०) १. सती होने वाली स्त्री के हाथ मे का नारियल । २. विपत्ति मे पडने को विवश किया हुआ । ३. विपत्ति-ग्रस्त ।

सतूकार—(न०) महाभोज, महादान आदि सतकार्य । बड़ा काम । यश-काम । क्रियावर ।

सते—(ना०) सती । (ना०व०व०) सतियों का समूह । (अव्य०) अपने आप । मते । योंही ।

सते-भाव—(न०) १. सद्भाव । सतभाव । २. सचाई । ३. सीधापन । (अव्य०) १. सीधापन से । २. सच्चाई से । ३. सरल हृदय से । ४. सत्य भाव से ।

सते-मे—(अव्य०) १. यों ही । २. अपने आप । घते में ।

सतो—(न०) १. सत्य मार्ग पर चलने वाला । सच्चा । २. पत्नी व्रत पुरुष । ३. पत्नी के मरने पर उसके शव के साथ जलने वाला पत्नी-भक्त पुरुष । ४. बलिदान । ५. न्योछावर । निछावर ।

सतोगुण—(न०) सत्व गुण ।

सतोगुणी—(वि०) १. सत्वगुण वाला । सात्विक । २. सद्गुणी ।

सतोत्र—(न०) १. स्तोत्र । २. छंदोबद्ध देव-स्तुति । ३. देवस्तुति का संस्कृत भाषा का छद ।

सतोम—(न०) यज्ञ । स्तोम ।

सतोल—(वि०) १. वजनी । भारी । सतोल । २. अपेक्षाकृत वजनी । ३. तुल्य । समान ।

सत्कार—दे० सतकार ।

सत्त—(न०) १. सत्य । सच्च । २. सत्व । सत्व-भाग । ३. शत्रु । वैरी । ४. सात की संख्या '७' । (वि०) सात ।

सत्त-आणंद-सचेत—दे० सच्चिदानन्द ।

सत्त-निरंजण—(न०) निरंजनी साधुओं का साम्प्रदायिक आध्यात्मिक-पद जो उन्हें प्रणाम करने के समय या उनकी मधुकरी के समय उनके द्वारा उच्चारण किया जाता है । २. सत्य निरंजन । ३. निरंजन ब्रह्म सत्य है ।

सत्ताइस—(वि०) बीस और सात । (न०) सत्ताइस की सख्या । '२७' ।

सत्ताइसो—(न०) सत्ताइसवां संवत्सर ।

सत्ताणुओ—(न०) सत्तानवां सम्वत् ।

सत्ताणू—(वि०) नब्बे और सात । (न०) सत्तानवे की संख्या, '९७' ।

सत्तावन—(वि०) पचास और सात । (न०) सत्तावन की सख्या । '५७' ।

सत्तू—(न०) १. शत्रु । २. भुने हुये गेहूं या चने का आटा । ३. भुने हुये गेहूं या चने के आटे का एक मिष्टान्न । सातू ।

सत्तूकार—दे० सतूकार ।

सत्थ—दे० सथ ।

सत्पुरुप—(न०) १. सद् आचरण या विचारो वाला साधु-पुरुष । सदाचारी पुरुष । २. सज्जन । ३. भक्त या ज्ञानी पुरुष ।

सत्य—(वि०) १. सत् से युक्त । २. वास्तविक । ३. यथार्थ । ठीक । ४. असल । अकृत्रिम । (न०) १. सर्वोच्च पारमार्थिक सत्ता । ब्रह्म । २. परमेश्वर । विष्णु । ३. तथ्य । सच्ची बात ।

सत्यनारायण—(न०) १. विष्णु भगवान का एक लोक पूज्य रूप । सत्यनारायण । २. सत्य रूपी नारायण । नारायण (सच्चिदानन्द) का सत्य रूप । ३. विष्णु भगवान का एक नाम । ४. ईश्वर ।

सत्यपुर—*(न०)* ऐतिहासिक नगर सांचार (मारवाड़) का शिलालेखों एवं काव्यों में उल्लिखित संस्कृतनिष्ठ नाम।

सत्यवादी—*(वि०)* १. सत्य बोलने वाला। सतवादी। २. दृढ़ प्रतिज्ञ।

सत्यवान—*(न०)* साल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसे सावित्री ने वरण किया था और उसे यमपाश से मुक्त करवाया था। सावित्री का पति। *(वि०)* १. सत्य बोलने वाला। २. वचन का पालन करने वाला। ३. सच्चा। ईमानदार। सतो। साँचो।

सत्यानाश—*(न०)* सर्वनाश। नाश।

सत्र—*(न०)* १. शत्रु। दुश्मन। वैरी। २. यज्ञ। ३. यज्ञ के प्रारम्भ होने से समाप्त होने तक (१३ से १०० दिन का) समय। ४. एक परीक्षा-काल से दूसरी परीक्षा के बीच का विद्यालय के अध्ययन-क्रम का समय। दो परीक्षाओं के बीच का अभ्यास-काल। दो परीक्षाओं के बीच का अन्तर। टर्म। सेशन। ५. सदाव्रत। ६. घर।

सत्रकोटी—*(न०)* वज्र।

सत्र-घड़—*(ना०)* शत्रु सेना। दुश्मन की फौज।

सत्रव—*(न०)* शत्रु। दुश्मन। वैरी। सात्रव।

सत्रवट—दे० सात्रवट।

सत्र-साल—*(वि०)* शत्रु के लिए शल्य रूप। शत्रुसाल।

सत्रह—दे० सतरं।

सत्राट—*(न०ब०व०)* १. शत्रुगण। शत्रु-समूह। २. शत्रुता। ३. शत्रु।

सत्राटां-करणी-सरद—*(ना०)* तलवार।

सत्रांजीत—*(न०)* १. भीम। २. शत्रुजयी।

सत्री—*(ना०)* स्त्री। लुगाई। बैर।

सत्रु—*(न०)* शत्रु। दुश्मन। वैरी। दुसमी।

सत्रुघण—दे० शत्रुघ्न।

सत्रूपा—दे० शतरूपा।

सथ—*(न०)* १. साथ। २. संगति। *(अव्य०)* से। द्वारा।

सथपाळ—*(वि०)* कारवाँ या पथिकों का रक्षक। सार्थपाल।

सथान—*(न०)* १. स्थान। जगह। २. नगर। शहर।

सथान-वासो—*(न०)* १. शुभ स्थान में निवास। २ निवास योग्य सुस्थान। सुथानवासो।

सथापण—*(न०)* स्थापन।

सथिर—*(वि०)* १. स्थिर। स्थायी। २. शांत। ३. दृढ़। ४. निश्चित। *(ना०)* पृथ्वी।

सथीरण—दे० सथिर।

सथूळ—*(वि०)* स्थूल। मोटा। जाडो।

सथ्थ—दे० सथ।

सद—दे० सद्द।

सदई—दे० सदा।

सदके—*(अव्य०)* न्योछावर। बलिजाना। बलिहार।

सदकेजाणो—*(मुहा०)* न्योछावर होना। बलि जाना। उत्सर्ग होना।

सदको—*(न०)* निछावर। सदका। वारणो। बलिहारी। उत्सर्ग।

सदकोजी—*(अव्य०)* 'मेरे गुण, रूप, वैभव, ख्याति इत्यादि पर न्योछावर होने वाला वह व्यक्ति' इस बड़प्पन-भाव का अहम्-पद।

सदगत—दे० सदगति।

सदगतनाथ—*(न०)* विष्णु।

सदगति—*(ना०)* १. शुभगति। २. मोक्ष प्राप्ति। ३. अच्छी दशा। सद्गति।

सदगुण—*(न०)* अच्छा या अच्छे गुण।

सदगुणी—(वि०) सद्गुणों वाला। अच्छे गुणों से युक्त (व्यक्ति)।
सद-घटा—(ना०) सभा।
सदणो—(क्रि०) १ अपनी प्रकृति के अनुकूल होना। भोजनादि का अनुकूल होना। ३. रुचि होना। ४. रुचिकर होना।
सदन—(न०) १. घर। भवन। २. ससद्।
सदबुद्ध—(न०) १. गणेशजी। गणपति। २ उत्तम बुद्धि।
सद-भागण—(वि०) भाग्यशालिनी। सुहागिन। सुहागण।
सद-भागी—(वि०) भाग्यशाली।
सदम—दे० सदन।
सदमो—(न०) १ मानसिक आघात। २. अफसोस। ३. दुख। रंज। ४. मनस्ताप। सदमा।
सदर—(वि०) १. ईमानदार। २. अच्छी स्थिति वाला। ३. मुख्य। प्रधान। (न०) १. केन्द्र स्थान। २. सभापति। अध्यक्ष।
सदर-ग्रासामी-(ना०) १. ईमानदार व्यक्ति। २. वह व्यक्ति या कृषक जो अपना कर्ज चुकाने मे समर्थ हो। ३. अच्छी स्थिति वाला व्यक्ति। संपन्न व्यक्ति।
सदर-बाजार—(न०) मुख्य या बड़ा बाजार।
सदर-मुकाम—(न०) मुख्य मुकाम।
सदरी—(ना०) छाती पर पहिनने की बंडी। एक छोटा पहनावा।
सदळ—(वि०) १. सेना सहित। दल सहित। २. पत्र (पत्ता) सहित। (न०) बड़ी सेना।
सदस्य—(न०) सभासद। मेम्बर।
सदा—(ग्रव्य०) १. हररोज। हमेशा। नित्य। २. हर समय।
सदाई—(ग्रव्य०) हररोज। हमेशा। नित्य।
सदाई-लगं—(ग्रव्य०) १. परम्परा से। २. सदा ही। ३. सदा के लिये।
सदाकत—(ना०) सत्यता। सच्चाई।
सदा-कँवर—दे० लाड-कँवर।
सदा-कँवरि—(ना०) पुत्री। लाड-कँवरी
सदाग—(वि०) दाग वाला। कलंकित।
सदा-गति—(न०) पवन। हवा।
सदाचार—(न०) १. शुभ आचार। सदाचरण। २. शिष्ट व्यवहार।
सदाचारी—(वि०) १. अच्छे आचरण वाला। २. धर्मात्मा।
सदानंद—(न०) १. शाश्वत आनन्द। २. परमानंद। ३. परमेश्वर। ४. शिव। (वि०) सदा आनंद में रहने वाला।
सदाप—(वि०) समर्व। साभिमान। सदर्प।
सदाफळ—(न०) नारियल। नाळेर।
सदामद—(ग्रव्य०) १. सदा से चलता आने वाला। परम्परागत। २. सदा। नित्य। हमेशा। सर्वदा। निरंतर।
सदार—(वि०) पत्नी सहित। सपत्नीक। सजोड़े।
सदारत—(ना०) अध्यक्षता। सभापतित्व।
सदालग—(ग्रव्य०) १. हमेशा तक। २. हमेशा के लिए। ३. सदा ही।
सदावरत—(न०) १. वह स्थान जहां गरीबों को नित्य खाने को, दिया जाता हो। २. नित्य दान मे दिया जाने वाला भोजन। सदावर्त। सदाव्रत। ३. सदा अन्न दान करने का व्रत।

सदाव्रत—*(न०)* १. नित्य दिया जाने वाला दान। सदावर्त। २. हमेशा भोजन अथवा अन्न बाँटने का व्रत। सदावरत। दे० सदावरत।

सदाशय—*(वि०)* शुभ आशय वाला।

सदाशिव—*(न०)* शिव। महादेव। *(वि०)* सदा मंगलमय।

सदा-सुहागण—*(ना०)* १. सदा सौभाग्यवती स्त्री। २. वेश्या। पातर।

सदाँ—दे० सदा।

सदिये—*(अव्य०)* १. दिन रहते। दिन अस्त होने के पहिले। २ जल्दी।

सदी—*(ना०)* १. शती। शताब्दी। २. सैकड़ा। सौ का समूह। ३. एक शाही मनसब। ४. क्रिकेट के सौ रन।

सदीव—*(अव्य०)* सदैव। हमेशा। सदा।

सदीहे—दे० सदिये।

सदेई—दे० सदा।

सदै—*(क्रि०वि०)* सदा। सदैव।

सदोगत—*(ना०)* १. सद्गति। २. मोक्ष। ३. सत्योक्ति।

सदोमत—*(वि०)* सद्मति वाला। *(ना०)* सद्मति।

सदोरी—*(वि०)* १. दुखिता। २. उदास। ३. नाराज।

सदोरो—*(वि०)* १. नाराज। अप्रसन्न। २. क्रुद्ध। ३. दुखी। ४. सुस्त। आलसी।

सद्गति—दे० सदगति।

सद्गुण—दे० सदगुण।

सद्गुरू—*(न०)* अज्ञान को मिटाकर परमानन्द की प्राप्ति कराने वाला गुरु। ज्ञानमूर्ति। श्रेष्ठ गुरु।

सद्-ग्रन्थ—*(न०)* १. वेद, पुराण, उपनिषद, ब्राह्मण आदि धर्म ग्रन्थ। २. आर्षग्रन्थ। ३. नीति ग्रन्थ।

सद्-भाव—*(न०)* १ मंगल कामना। २. अच्छा भाव। छल कपट से रहित भाव।

सद्-भावना—दे० सद्भाव।

सद्द—*(न०)* १. शब्द। लफ्ज। २ शब्द। आवाज। ३. पुकार। हेलो।

सधण—*(अव्य०)* पत्नी सहित। सजोड़े। *(ना०)* पत्नी। धण। जोड़ायत।

सधणो—*(क्रि०)* १. सिद्ध होना। बनना। सम्पन्न होना। २ काम चलना या चलाना। अभ्यस्त हो जाना। ४. प्रयोजन सिद्धि के लिए अनुकूल होना। ५. लक्ष्य ठीक होना। निशाना बराबर लगना। ६. पूरा होना। बराबर होना।

सधर—*(वि०)* १. दृढ़। मजबूत। २. कठिन। कठण।

सधर्मी—*(वि०)* १. मेरे अपने धर्म का। २. एक ही धर्म का। साधर्मी।

सधवा—*(ना०)* सौभाग्यवती स्त्री। सुहागिन स्त्री। सुहागण।

सधीर—*(ना०)* पृथ्वी। *(क्रि० वि०)* धीरज सहित। *(वि०)* धीरजवान।

सधुर—*(वि०)* पत्नी वाला। (विधुर का उलटा)।

सधुरंधर—*(न०)* बैल। बळद।

सधू—*(ना०)* पुत्री। कन्या। बेटी। छोकरी।

सधूकड़ी—*(वि०)* १. साधुओं की भाषा। २. संत-साहित्य की भाषा।

सन—*(न०)* १. वर्ष। संवत्। २. जूट का पौधा या रेशा। सण।

सनक—*(ना०)* १. मन की विक्षिप्त लहर। २. पागल जैसा आचरण। भक्क। ३. ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में एक।

सनकारणो—(क्रि०) आँख का इशारा करना।

सनकारी—दे० सनकारो।

सनकारो—(न०) १. सैन। सकेत। २ हाथ आँख आदि का इशारा।

सनकियो—दे० सनकी।

सनकी—(वि०) सनक वाला झक्की।

सनद्ध—(वि०) १. सन्नद्ध। उद्यत। तैयार। २ सज्ज। (न०) कवच।

सनत-कुमार—(न०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम। सनत्कुमार।

सनद—(ना०) १ परवाना। प्रमाण पत्र। शासकीय प्रमाणपत्र। सनद। २. विश्वास। भरोसा। ३ प्रमाण। सबूत।

सनध—दे० सनद्ध।

सनध-बध—(वि०) सन्नाहबद्ध। कवच-धारी।

सनम—(न०) प्यारा। प्रिय।

सनमन—दे० सबंध।

सनमध—दे० सबंध।

सनमान—(न०) १. आदर। मान। सम्मान। २ प्रतिष्ठा। ३. गौरव।

सनमुख—दे० सम्मुख।

सनस—(ना०) १ सन्देश। सनेसो। २. चिंता। ३ लज्जा। शर्म। ४. सनसनाहट। घबराहट।

सनसरणो—(क्रि०) १ चिंतित होना। २. घबराना। ३ लज्जित होना। ४ इशारा पाना। ५. सचेत होना। ६. संदेश देना। ७. उत्तेजित होना। ८. इशारा करना।

सनसनाटी—(ना०) १ अनहोनी बात के कारण उत्पन्न स्तब्धता। २. खलबली। सनसनी। ३. घबराहट।

सनसनी—सनसनाटी।

सनंद—दे० सनद।

सनंदन—(न०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम।

सनाढ्य—(न०) एक ब्राह्मण जाति।

सनातन—(वि०) १. आदि काल से चला आने वाला। २. अति प्राचीन। ३. सदा बना रहने वाला। शाश्वत। ४. अनादि और अनंत। ५. क्रमागत। ६. परम्परालब्ध। (न०) १. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम। सनत्सुजात। २. प्राचीनकाल। ३. बहुत दिनों से चला आने वाला व्यवहार या परम्परा। ४. सम्बन्ध। रिश्ता। ५. ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७. शिव।

सनातन-धर्म—(न०) १. परम्परागत धर्म। २. प्राचीन काल से चला आने वाला हिन्दू धर्म।

सनातन-धर्मी—(वि०) सनातन धर्म का अनुयायी।

सनातन-पुरुष—(न०) विष्णु।

सनातनी—(वि०) सनातन धर्म का अनुयायी।

सनाथ—(वि०) जिसका कोई स्वामी, रक्षक या पति हो। जो अनाथ न हो। 'अनाथ' का उलटा।

सनाथा—(वि०) १. सधवा। सुहागिन। सुहागण। २. पति सहित।

सनान—(ना०) स्नान। सिनान।

सनानी—(वि०) नित्य स्नान करने का नियम वाला। (न०) बिसनोई जाति का व्यक्ति। दे० बिसनोई।

सनाप—(वि०) १. सीमित। २. नाप सहित। ३. नापा हुआ।

सनाय—दे० सोनामखी।

सनाह—(न०) १. कवच। सन्नाह। बख्तर। २. पति। नाथ। ३ सनाथ।
सनि-पिता—(न०) सूर्य। शनि पिता।
सनियाई—(वि०) न्याय करने वाला। सुन्यायी। न्यायकर्ता।
सनीचर-(न०) शनैश्चर। शनि। थावर।
सनीचर-वार—दे० शनिवार।
सनीचरियो—दे० थावरियो।
सनीड—(क्रि०वि०) निकट। पास। सन्निकट। कनै। नैड़ो।
सनीपात—दे० सन्निपात।
सनीम—(न०) १. मित्र ('गनीम' का विरुद्धार्थ शब्द)। २. क्षत्री। राजपूत। (वि०) सनियम। नियमित। (अव्य०) नियमपूर्वक।
सनेचर—दे० सनीचर।
सनेव—दे० स्नेह।
सनेस-दे० संदेश।
सनेसो—दे० संदेसो।
सनेह—दे० स्नेह।
सन्नाह—(न०) कवच। सनाह। बख्तर। बगतर।
सन्निपात—(न०) १. वात, पित्त और कफ इन तीनों के एक साथ कुपित होने की स्थिति। २. रोग की भयानकता का उपद्रव। सनीपात। ३. एक साथ गिरना। ४. कई घटनाओं का एक साथ होना।
सन्मान—दे० सनमान।
सन्मार्ग—(न०) १. सद्गुणों से युक्त आचरण। २. जीवन यापन का सुन्दर और श्रेष्ठ मार्ग। नेक राह। सुपथ। ३. नीति का मार्ग।
सन्यास—दे० संन्यास।
सन्नत—(न०) सत्य। 'अनृत' का उलटा।
सपखाळो—(वि०) १. जबरदस्त। २. अत्यधिक उग्र। ३. उतावला। ३. पाँखों वाला। ५. जिसके पक्ष में अधिक लोग हैं। बड़े पक्ष वाला। ६. प्रक्षालित। ७. स्नपित। (न०) एक डिंगल छंद।
सपगां—(क्रि०वि०) होश में। सुधि में। (वि०) स्वावलम्बी। स्वाश्रयी।
सपड़ाइजणो—दे० सपड़ावणो।
सपड़ाणो—दे० सपड़ीजणो।
सपड़ावणो—(क्रि०) १. फँसना। २. पकड़ा जाना। सपड़ीजाणो। ३. वश में होना।
सपड़ीजणो—दे० सपड़ावणो।
सपणी—(ना०) सर्पिणी। सरपणी। सापणी।
सपत-सुर—(न०) संगीत के सप्त स्वर। स, रे, ग, म, प, ध और नी—ये सात स्वर।
सपतास—(न०ब०व०) १. सूर्य के रथ के सात घोड़े। सप्ताश्व। २. घोड़ा।
सपती—दे० सपतास। (वि०) १. पति वाली। २. पति सहित। ३. सधवा।
सपनो—(न०) स्वप्न। सुपनो।
सपन्न—(वि०) १. उत्पन्न। २. निर्मित।
सपन्नो—(क्रि०भू०) उत्पन्न हुआ।
सपरस—दे० स्पर्श।
सपरसणो—(क्रि०) स्पर्श करना। छूना।
सपरसन—(न०) वायु। पवन। बायरो।
स-परिवार—(अव्य०) परिवार सहित। सकुटुम्ब। सिगरो।
स-पलाण—(वि०) १. जीन-काठी सहित (ऊंट, घोड़ा आदि)। २. पलान कसा हुआ।
स-पलाणो—वि०) जिस पर पलान कसा हुआ हो (ऊंट, घोड़ा आदि)।

सपळोटियो—*(न०)* १. साँप का बच्चा। २. छोटा साँप। सपोळियो।

सपंक—*(वि०)* कीचड़ सहित। कावाळो।

सपाट—*(वि०)* बिना खड्डे या टेकरे वाला। एकसा (मैदान)। समतल।

सपाटा-बंध—*(अव्य०)* एकदम। तुरन्त। त्वरा से। झटाझट।

सपाटो—*(न०)* १ चलने, दौड़ने, उड़ने इत्यादि का वेग। सपाटा। २. दौड़। ३. सैर-सपाटा।

सपाड़ो—*(न०)*अहसान। उपकार। आभार। पाड़। *(वि०)* उपकार से दबा हुआ।

स-पाद—*(वि०)* १. सवा। २ सवाया। ३ चरण-सहित।

सपादलक्ष—*(न०)* राजस्थान के भूतपूर्व राज्य मारवाड़ का नागोर जिला। स्वाळख।

सपिंड—*(न०)* १ एक ही कुल की सात पीढ़ियों तक को पिंड देने का अधिकारी पात्र। २. वंशज।

सपिंडीकरण—*(न०)* मृतकों को पितरों में मिलाने का श्राद्धकर्म।

सपूत—*(न०)* सुपुत्र। अच्छा और योग्य पुत्र। *(वि०)* योग्य। लायक।

सपूतपणो—दे० सपूताई।

सपूतर—दे० सपूत।

सपूताई—*(ना०)* १. सपूत होने का भाव। २. सुपात्रता। योग्यता।

सपूती—*(ना०)* १. सपूत की माता। २. लायकी। योग्यता।

सपेत—दे० सफेद।

सपेती—दे० सफेदी।

सपेद—दे० सफेद।

सपेद-कूड़—*(न०)*बिलकुल झूठ। एकदम झूठ। साव कूड़।

सपेदी—दे० सफेदी।

सपेदो—दे० सफेदा।

सपोळियो—दे० सपळोटियो।

सप्त—*(वि०)* गिनती में सात। तीन और चार। सात। *(न०)* सात का अंक '७'।

सप्तक—*(न०)* १. संगीत में सात स्वरों का समूह। संगीत के सात स्वर—सा, रे, ग, म, प, ध, नि। २. सात वस्तुओं का समाहार। ३. सात का समूह। *(वि०)* १. सात। २. सातवाँ।

सप्त-तंतु—*(न०)* यज्ञ। जगन।

सप्त-द्वीप—*(न०)* जंबू, कुश, प्लक्ष, क्रौंच, शाल्मलि, शाक और पुष्कर नामक सात भूभाग (पुराण)।

सप्त-धातु—*(ना०)* १. शरीरस्थ रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र नामक संयोजक द्रव्य। २. सोना, चाँदी, तांबा आदि सात मुख्य खनिज पदार्थ।

सप्त-पदी—*(ना०)* १. पाणिग्रहण के समय वर-वधू की दी जाने वाली अग्नि की सात परिक्रमाएँ। २. पाणिग्रहण के समय अग्नि की साक्षी में वर-वधू द्वारा परस्पर सात वचनों का लेन-देन। ३. वेद के सात मंत्रों द्वारा परस्पर की जाने वाली प्रतिज्ञा। ४. प्रतिज्ञा के सात वेद-मंत्र। सप्तपदी। ५. आदान-प्रदान की क्रिया।

सप्त-पाताल—*(न०)* पृथ्वी के नीचे के अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल महातल और पाताल नामक सात लोक।

सप्तपुरी—*(ना०)* १. अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची,

अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका नामक सात पुण्य तीर्थ स्थान मोक्ष देने वाले कहे गये हैं। २. सात पुरियां।

सप्त-मातृका—(ना०) १. विवाहादि में आद्य-पूजनीया ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, इंद्राणी, कौमारी, वाराही और चामुंडा'—ये सात पवित्र दैवी-शक्तियां। २. सात लोक-मातृकाएं। मावड़ियांजी। मायांजी।

सप्तमी—(ना०) चान्द्र मास में कृष्ण या शुक्ल पक्ष की सातवीं तिथि। सातम। सातें।

सप्तर्षि—(न०) १. गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वशिष्ट, कश्यप और अत्रि। २. सात तारे जो ध्रुव की परिक्रमा करते दिखाई देते हैं।

सप्त-शती—(ना०) सात सौ पद्यों का संग्रह। सात सौ पद्यों वाला ग्रन्थ। सतसई।

सप्त-स्वर—(न०) संगीत के सात स्वर। दे० सप्तक।

सप्ता—(ना०) १. सात। २. सात दिन। ३. सात दिन का समय। सप्ताह। हफ्तो। ४. सात दिन में कही (सुनाई) जाने वाली श्रीमद्भागवत की कथा।

सप्ताश्व—(न०) १. सूर्य के रथ के सात घोड़े। सपतास।

सप्ताह—(न०) सात दिन का समय। सोमवार से रविवार तक का समय। हप्ता। हफ्तो।

सफ—(न०) १. खुर। २. कतार। पंक्ति। ३. फर्श। ४. चटाई। ५ रेखा।

सफर—(ना०) यात्रा। मुसाफिरी। गामतरो। प्रवास।

सफर-खर्च—(न०) मार्ग-व्यय। भत्तो।

सफरी—(ना०) मछली। (वि०) १. सफर में साथ रखने लायक। २. सफर का।

सफरी-भंडार—(न०) समुद्र।

सफळ—(वि०) १. जिसमें फल लगे हों। फल वाला। २. जिसकी कामना या काम सिद्ध हुआ हो। कृतकार्य। ३. कामयाब। सफल। पास।

सफा—(वि०) स्वच्छ। साफ। स्पष्ट। (अव्य०) १. कतई। नितान्त। बिल्कुल। साव। २. समाप्त। खतम। ३. पूर्णतया। ४. सबका सब। (न०) पुस्तक का पृष्ठ या पन्ना।

सफाई—(ना०) १. स्वच्छता। पवित्रता। २. चतुराई। ३. अभियोग का जवाब या बचाव। ४. झगड़े टंटे का निवटारा। ५. ऋण का चुकारा। बेबाक।

सफाईदार—(वि०) १. सफाई वाला। २. साफ करने वाला। ३. साफ रहने वाला। ४. खूब स्पष्ट और स्वच्छ। साफ।

सफाई-सुथराई—(ना०) १. स्वच्छता और अच्छापन। २. पवित्रता।

सफाखानो—(न०) अस्पताल। दवाखाना। शिफाखाना। इसपताळ।

सफाचट—(वि०) १. साफ। खतम। समाप्त। बिल्कुल खतम। २. जिस पर कुछ लगा न रह गया हो। ३. समतल।

सफाचट-करणो—(मुहा०) १. सब का सब खाजाना। २. हड़प करना। हड़पणो। ३. खतम करना। नाश करना। खतम करणो।

सफायो—(न०) १. पूरी तरह से नष्ट। सम्पूर्ण विनाश। सफाया। निर्मूलन। खातमो। २. कुछ भी शेष न रह जाना।

सफायो-करणो—(मुहा०) पूर्ण रूप से खतम करना। खातमो करणो।

सफाळो—(क्रि०वि०) १. कूदता हु उछलता हुआ। २. लांघता हुआ

सफील—*(ना०)* १. परकोटा। २. दीवाल। भींत।

सफेद—*(वि०)* १. उजला। उज्ज्वल। २. धवल। श्वेत। शुभ्र। धोळो। ३. गोर।

सफेद-झूठ—दे० सपेद झूठ।

सफेदी—*(ना०)* १ दीवाल पर की जाने वाली चूने के घोल की पुताई। घोळाई। २. धवलता। शुभ्रता। ३. श्वेत प्रदर। धोळो।

सफेदी-आणो—*(मुहा०)* १. श्वेत प्रदर का रोग होना। धोळो आवणो। धोळो पड़णो। २. बालों का सफेद होना। ३. बुढापा आना।

सफेदी-करणो—*(क्रि०)* चूने के घोल से पुताई करना। पोतणो। धोळणो।

सफेदी-पड़णो—*(मुहा०)* दे० सफेदी आणो।

सफेदो—*(न०)* जसद की भस्म और तेल मिला कर बनाया हुआ एक सफेद रंग। सफेदा।

सफो—*(न०)* पुस्तक का पन्ना या पृष्ठ। सफा। पानो।

सब—*(वि०)* १. सर्व। सकल। समग्र। २. पूरा। सारा। सगळो।

सबक—*(न०)* १. पाठ। २. शिक्षा। ३. सजा। ४. नसीहत। सीख।

सबको—*(वि०)* मजबूत। दृढ। सेंठो। *(क्रि०वि०)* मजबूती से। दृढ़ता से।

सबड़काणो—*(क्रि०)* १. सबडके के साथ पीना। २. एक बार मे पी जाना।

सबड़को—*(न०)* १. किसी द्रव पदार्थ को होठों द्वारा मुंह में खींचकर पीने से होने वाला शब्द। २. तरल ग्रास।

सबद—*(न०)* १. संतों के बनाए हुए हितोपदेश के पद। महात्माओं का रचा हुआ दूहा, साखी, पद आदि। आध्यात्मिक साहित्य। २. उपदेश। ३. संतवाणी। ४. शब्द। सार्थक अक्षर समूह। ५. आवाज। साद।

सबद-ग्रह—*(न०)* कान। कर्ण शब्द। ग्रह।

सबदी—*(ना०)* दे० सबद सं. १, २, ३, सबद रचना। सबद काव्य। संतो के पद, साखी इत्यादि। ५. सबद संग्रह। पद-साखी इत्यादि का संग्रह। ६. यश। कीर्ति। जस।

सबब—*(अव्य०)* कारण। हेतु। वजह।

सब्र—*(न०)* संतोष। धीरज। सब्र।

सबरस—*(न०)* नमक। लूण

सबरी—*(ना०)* १. मुनादी। ढिंढोरा। २. रामायण में उल्लिखित रामभक्त भीलनी। शबरी। *(वि०)* सब्र करने वाली। क्षमाशीला।

सबळ—*(वि०)* १. बलवान। सशक्त। सबल। २. दृढ़। मजबूत। ३. विद्वता, बुद्धि तथा ज्ञान का धनी। ४. ठोस।

सबळ-दळां-गाहणो—*(न०)* योद्धा। *(वि०)* सबल सेनाओं का नाश करने वाला।

सबळी—*(ना०)* वीरांगना। *(वि०)* १. शक्तिशाली। बलवान। जबरी। २. बहु पुत्र-पौत्रों वाली। ३. पतिव्रता। सती। ४. सधवा।

सबळो—*(वि०)* १. जबरदस्त। जबरो। २. ताकतवर। शक्तिवान। ३. महत्वपूर्ण। बड़ा भारी। ४. अत्यावश्यक। ५. उच्च श्रेणी का। श्रेष्ठ। ६. बड़े कुटुम्ब वाला। ७. सम्पन्न।

सबाध—*(वि०)* १. तमाम। समस्त। बाधो। सँग। २. बाँधा हुआ। ३. हुआ हुआ। *(न०)* १. अवरोध। रोक। २. नियंत्रण। बंधन।

सम—(वि०) १. बराबर। सदृश। २. समतल। ३. हेर-फेर रहित। ४. जो दो से पूरी बँट जाय (वह सख्या)। (न०) १. शपथ। सोगध। सोंस। सोगन। २. ताल का आरम्भ स्थान (सगीत) ३. लय मे गति की समाप्ति का स्थान (सगीत)।

समइयो—(न०) अवसर। मौका। समो।

समक—(वि०) १. समग्र। सगळो। सारो। २. बराबरी का। (ना०) बराबरी।

समकक्ष—(वि०) बराबरी का। बराबरी वाला। समान कक्षा का। एक सरीखो।

सम-कालीन—(वि०) एक ही समय मे स्थित। समसामयिक।

समकित—(न०) सच्ची तत्व जिज्ञासा (जैन)।

सम-कोण—(न०) १. ९०° डिग्री का कोण (ज्यामिति)। २. जिसके सारे कोण बराबर हो।

समक्ष—(अव्य०) १. प्रत्यक्ष। आंखो के सामने। २. उपस्थिति मे। ३. सामने। सामैं।

समग—(वि०) समग्र। समस्त। सगळो। सारो। २. सत्य। साच।

समग्र—(वि०) सब का सब। समस्त। पूरा। सारा। सगळो। सारो।

समच—(वि०) सब। समस्त। समूचा।

सम-चरण—(न०) दोहे का दूसरा और चौथा चरण।

समचो—(न०) १. सदेश। २. समाचार। ३. सकेत। इशारा। ४. संवाद।

सम-चोरस—(वि०) जिसके चारो पहलू एक नाप के हों। (न०) चारों कोण एक नाप के हों ऐसी आकृति। समचतुष्कोण।

समच्छरी—(ना०) १. सम्वतसरी। वार्षिक मरण-विधि। २. सावत्सरिक-श्राद्ध। ३. जैनो का पर्यूषण पर्व। सवतसरी। छमछरी। समचरी।

समज—दे० समझ।

समजण—दे० समझ।

समजणो—दे० समझणो।

समजदार—दे० समझदार।

समजदारी—दे० समझदारी।

समज-फेर—दे० समझ फेर।

समज-शक्ति—(ना०) समझने की शक्ति।

समजावट—दे० समजास।

समजास—(ना०) समझाने का प्रयत्न।

समजू—दे० समझू।

समजोतरी—दे० समजोती।

समजोती—(ना०) १. इशारा। सकेत। २. इशारा से समझाना।

समजोतो—दे० समझोते।

समझ—(ना०) १. बुद्धि। अक्ल। २. पसद। मन पसन्द।

समझण—(ना०) १. समझ मे आना। २. समझ। बुद्धि।

समझणी—(वि०ना०) बुद्धिमती। समझदार (स्त्री)। समझ वाली।

समझणो—(क्रि०) १. जानना। समझना। २. अनुमान लगाना। कल्पना करना। (वि०) समझदार। बुद्धिमान। समझू।

समझदार—(वि०) १. बुद्धिमान। अकलमद। समझू।

समझदारी—(ना०) बुद्धिमानी। अक्लमदी।

समझ-फेर—(ना०) समझने मे फर्क। भूल।

समझाणो—(क्रि०) १. समझाना। व्याख्या करना। २. स्पष्ट करना। ३. भली-भांति परिचित करवाना। ४ उपदेश देना। ५. सिखाना। ६. डाँटना।

समझाणो-बुझाणो—(क्रि०) किसी बात की अच्छाई-बुराई को अच्छी तरह से कहना या समझाना समझाना-बुझाना।

समझास—(ना०) समझाने का प्रयत्न।

समझू—(वि०) समझदार। बुद्धिमान। समझणो। सैंणो।

समझू-सोचू—(वि०)समझने-सोचने वाला।

समझूती—दे० समझोतो।

समझोतो—(न०) १. व्यवहार, लेनदेन या मतभेद आदि का समाधान। २. विवाद, झगड़े, कलह आदि में सब पक्षों में आपस में मिल कर किया जाने वाला निपटारा। समझौता।

समड़—दे० समवड़।

समडोळो—(न०) विवाह की एक प्रथा।

समत—दे० संवत।

समतळ—(वि०) जिसका तल ऊँचा-नीचा न हो। सपाट। समतल। समथळ।

समता—(ना०) बराबरी। तुल्यता। तुलना।

सम-तुलन—(वि०) समतुला।

समतुला—(ना०) समतोलपन। समतुलन।

सम-तोल—(न०) बराबर वजन। (वि०) १. बराबर वजन का। २. वजन में भारी। वजनी। सतोल।

समरथ—दे० समर्थ।

समप्व—दे० समता।

समथ—दे० समत्व।

समथळ—दे० समतळ।

समद—दे० समद।

समदकप—(न०) १.समुद्र-फेन। २. फेन। झाग। समदफीण।

समद-फीण—(न०) समुद्र फेन।

समद-मेखळा—(ना०) पृथ्वी। धरनी।

समदर—(न०) समुद्र। सागर। समंद।

समदर-कांठो—(न०) समुद्र का किनारा। सागर-तट।

समदर-फीण—(न०) समुद्र फेन।

समदर्शी—(वि०) १. सब की ओर समान दृष्टि से देखने वाला। २. किसी के प्रति भेदभाव नहीं रखने वाला।

समद-सुत—(न०) १. चंद्र। २. अमृत।

समदां-पार—(अव्य०) १. बहुत दूर। कहीं २. समुद्रों को लांघने के बाद। समुद्र की उस ओर।

सम-दृष्टि—(ना०) सबके साथ एक जैसा व्यवहार। समानदृष्टि।

समध—दे० समझ। दे० संबंध।

समधण—(ना०) समधिन। सगी। वेवाण।

समधा—(ना०) १. पोल। अन्धाधुन्धी। २. गोटाला। ३. कमजोरी। ४. निस्सारता। ५. मर्यादा उल्लंघन। ६. गुरुजनों की आज्ञा-मर्यादा का उल्लंघन। ७. गुरुजनों की विशिष्टता या बड़प्पन रोज मानना या साधारण समझना।

समधी—(न०) १. पुत्र या पुत्री का ससुर। सगो। गिनायत। मनात। वेवाई। २. संबंधी। रिश्तेदार (क्रि०भू०) समझ गई।

समघो—(क्रि०भू०) समझ में आ गया। समझ गया। दे० समधा।

समन—*(न०)* १. अदालत में हाजिर होने का नोटिस। कचहरी का बुलावा २. *(वि०)* शमनकारी। दे० शमन।

समन्वय—*(न०)* १. एक समान व्यवस्थित क्रम। २. एक इकाई बनकर समान रूप से मिलन। ३. परस्पर संबंध या मेल। ४. परस्पर विलय। ५. एक रूपता। ६. तात्पर्य।

समपण—*(न०)* १. दान। २. समर्पण। ३. पराजय।

समपणो—*(क्रि०)* १. दान देना। २. देना। समर्पण करना। ३. समर्पण होना। ४. हार मानना। पराजय स्वीकार करना।

समप्पण—दे० समपण।

समप्पणो—*(क्रि०)* दे० समपणो।

समप्पिय—*(क्रि०भू०)* १. समर्पण किया। *(क्रि०)* १. समर्पण करिये। २. समर्पण करता हूं। समर्पण करना।

समभाव—*(न०)* १. सब प्राणियो पर एक सी स्नेह-दृष्टि। २. सुख मे इतराना नहीं और दुख मे विचलित नही होना। ३. सम्मान-निरादर में एक भाव।

समय—*(न०)* १. काल। वक्त। वखत। वेळा। २. अवसर। मौका। ३. मौसम। ४. अवकाश। फुरसत। ५. संयोग। परिस्थिति।

समय-कुसमय—*(अव्य०)* १. उपयुक्त या अनुपयुक्त समय। वेळा कुवेळा। २. अच्छे या बुरे दिन।

समय-सर—*(अव्य०)* ठीक समय पर।

समय-सरूप—*(अव्य०)* समय के अनुरूप।

समय-सार—*(अव्य०)* यदा-कदा। कभी-कभी।

समय-सारिणी—*(ना०)* रेल या बस की सवारी गाड़ियों के पहुंचने, रवाने होने या ठहरने का समय बताने वाली जंत्री या पुस्तिका। टाइम-टेबल। समय-पत्रक।

समय-सारू—*(अव्य०)* समय मिलने पर।

समयानुकूल—*(वि०)* अवसर के अनुरूप।

समयानुसार—*(अव्य०)* जैसा समय हो वैसा। वेळा-प्रमाणे।

समर—*(न०) (न०)* १. स्मर। कामदेव। २. युद्ध। लड़ाई। वेढ। आहव।

समरण—*(न०)* १. स्मरण। २. सुमिरन।

समरणी—दे० सुमरणी।

समरणो—*(क्रि०)* १. स्मरण करना। २. सुमिरन करना।

समरत्थ—दे० समर्थ।

समरथ—*(वि०)* शक्तिमान। समर्थ। बलवान।

समरधुका—*(ना०)* पुत्री। बेटी। डीकरी।

समरधुज—*(न०)* स्मरध्वज। पुरुष की लिंगेन्द्री।

समरागार—*(न०)* स्मरागार। भग। योनि।

समराथ—दे० समरथ।

समरारि—*(न०)* स्मरारि। शिव। महादेव।

समरस—*(वि०)* सदा एक सा रहने वाला।

समरांगण—*(न०)* युद्ध भूमि। रणक्षेत्र।

समरूप—*(वि०)* १. समान रूप वाला। एक समान।

समर्थ—*(वि०)* १. बलवान। शक्तिशाली। बलियो। जोरावर। समरथ। समाथ। २. प्रभावशाली।

समर्थक—*(वि०)* १. समर्थन करने वाला। अनुमोदन करने वाला। २. समान अर्थ वाला।

समर्थन—*(न०)* १. सहमति। अनुमोदन। २. सहारा। टेको। ३. सहायता। मदद।

समर्थवान—दे० समर्थ ।

समर्पक—(वि०) समर्पण करने वाला । २. उचित । योग्य ।

समर्पण—(न०) १. श्रद्धापूर्वक अर्पण । २. हार कर शरण में जाना ।

समळ—(वि०) १. मैला । गंदा । अस्वच्छ । मैलो । २. श्यामल । कृष्णवर्ण । सांवळो ।

समळावणी—दे० सँभळावणी ।

समळी—(ना०) चील नामक हिंसक पक्षी । सँवळी । चील ।

समवड़—(वि०) १. समान । सदृश । बराबर । बरोबर । २. प्रतिस्पर्धी । ३. बराबरी करने वाला । बरोबरियो । बराबरी का । (न०) तुलना । समता । बराबरी ।

समवड़ियो—दे० समवड़ ।

समवड़ी—(ना०) बराबरी । (वि०) बराबरी करने वाली । दे० समवड़ ।

सम-वया—(वि०) समान उम्र की ।

सम-वयस्क—(वि०) समान उम्र का । समवयी । हम उम्र । सोयो ।

समवरती—(न०) यमराज ।

समवसरण—(न०) १. श्रीपूज, आचार्य या साधु की अगवानी के समय इकट्ठा होने वाला समुदाय । २. उक्त उत्सव । (जैन) ।

समवाय—(न०) १. राशि । समूह । झुंड । २. संयोग । ३. सम्बन्ध । ४. सदा एकसा बना रहने वाला सम्बन्ध । ५. हिस्सेदारों की पूंजी से बनी हुई व्यापारिक संस्था । कंपनी ।

समवेग—(न०) श्रीकृष्ण के घोड़े का नाम ।

समवेत—(वि०) १. एकत्रित । २. मिलाया हुआ । ३. संयुक्त ।

समष्टि—(ना०) १. समुदाय । २. समग्रता । (व्यष्टि का उलटा) । ३. साधुओं का वह भंडार जिसमें स्थानिक साधु निमंत्रित किये जाते हों ।

समसत—(वि०) समस्त । समग्र । सघळा । सँग ।

समसत्तां—(अव्य०) सजातीय प्राणी अथवा वस्तुओं के अलग-अलग अनेक समूहों सहित । (वि०) समस्त । सभी । सघळा ।

समसमा—(अव्य०) १. आमने-सामने । २. बराबरी के ।

समसाण—(न०) श्मशान । मरघट । मसाण । जोराण ।

समसान—दे० समसाण ।

सम-सामयिक—(वि०) समकालीन ।

समसेर—(ना०) तलवार । तरवार । समशेर ।

समस्त—(वि०) समग्र । तमाम । सब । सँग ।

समस्या—(ना०) १. उलझन भरी बात । जिसका निर्णय सहज में न हो सके । २. कठिन प्रश्न । ३. विकट प्रसंग । ४. किसी छंद का अन्तिम चरण जो कवियों के आगे पूरा करने को रखा जाता है । छंद का वह अंश जिस पर से पूरा छन्द बनाना हो ।

समस्या-पूर्ति—(ना०) १. छंद की एक पंक्ति से पूरा छंद तैयार करना । २. किसी विचारणीय विषय की पूर्ति होना ।

समहर—(न०) युद्ध । समर । लड़ाई ।

समंड़ळ—(न०) सूर्य । सूरज ।

समंद—*(न०)* समुद्र । सागर । समदर ।

समंदर—*(न०)* समुद्र । समदर ।

समंदरी—*(वि०)* १. समुद्र का । २. समुद्र संबंधी । ३. समुद्र मे उत्पन्न होने वाला ।

समंद-सुत—*(न०)* १. अमृत । २. चंद्र ।

समंध—दे० संबंध ।

समा—*(अव्य०)* १. ही । ज्योंही । सँवां । *(वि०)* समान ।

समाई—*(ना०)* १. सहन । बरदाश्त । २. २. सहन-शीलता । २. समावेश । समाव । ३. जैनियो के णमोकार मन्त्र जपने की क्रिया या विधि । ४. सब का साथ मे बैठकर स्तवन, सुमिरण, धर्म-ध्यान आदि करने का भाव या क्रिया । सामायक । ५. सामर्थ्य । शक्ति । ६. बिसात ।

समागम—*(न०)* १. सयोग । २. मिलाप । ३. आगमन । ४. सभोग । मैथुन ।

समाचार—*(न०)* १. खबर । सूचना । २. हालचाल । वृत्तान्त । समंचार । ३. कुशलक्षेम के समाचार ।

समाचार-पत्र—*(न०)* अखबार । छापो ।

समाज—*(न०)* १. व्यवसाय, आचार-विचार, भोजन तथा वैवाहिक सबध इत्यादि बातो एव रीति-रिवाजो से बद्ध या गठित हो गया हुआ समूह । न्यात । २. एक प्रकार का काम करने वालो का वर्ग । ३. किसी विशिष्ट उद्देश्य से गठित की गई सभा या संस्था । ४. एक धर्म या आचरण वाला जन-समुदाय । ५. एक निष्ठा से बधा हुआ जन-समूह । ६. जात । ७. समूह । गिरोह । ८. एक धर्म को मानने वाला वर्ग ।

समाजवाद—*(न०)* वह सिद्धान्त जिसके अनुसार राज्य के समस्त उत्पादन साधनों पर समाज का अधिकार हो तथा उससे उत्पादित सम्पत्ति की जहाँ तक हो सके सबको बराबर मिलने की व्यवस्था हो। (सोशलिज्म) ।

समाज-वादी—*(वि०)* १. जो समाजवाद के सिद्धान्तों को मानता हो । (सोशलिस्ट) । २. समाजवाद का । ३. समाजवाद सम्बन्धी ।

समाज-शास्त्र—*(न०)* वह शास्त्र जिसमे मनुष्य समाज की उत्पत्ति, गठन, संस्कृति आदि के विकास का विवेचन किया हुआ हो । (सोशियोलॉजी) ।

समाज-सुधार—*(न०)* समाज की कुरीतियो, खामियो इत्यादि मे किया जाने वाला सुधार ।

समाज-सेवक—*(न०)* समाज की भलाई के काम करने वाला (व्यक्ति) ।

समाज-सेवा—*(ना०)* समाज की उन्नति तथा भलाई के लिए किये जाने वाले काम ।

समाजी—*(न०)* आर्य-समाजी । *(वि०)* १. समाज सबधी । २. समाज का ।

समाजोग—*(न०)* १. समायोग । संयोग । २. मौका । अवसर । ३. अचानक मिलन । ४. योग्य समय । अनुकूल समय ।

समाण—*(न०)* समावेश । दे० समान ।

समाणी—*(ना०)* १. एक औजार । बारीक वस्तु पकड़ने का छोटा चिमटा । चिमटी । चिमटड़ी । चिमतड़ी । *(वि०)* १. समवयस्का । २. समान । *(भू० क्रि०)* १. समा गई । २. प्रवेश कर गई । ३. मिल गई । ४. मर गई ।

समाणो—*(वि०)* १. समवयस्क । २. समान । *(न०)* बड़ी समाणी । चिमटी। *(क्रि०)* १. समा जाना । मर जाना । २. मर जाना । *(क्रि०भू०)* १. समा गया । २. मर गया । मुँग्रो ।

समाथ—दे० समर्थ ।

समादर—*(न०)* आदर । सम्मान ।

समादरणीय—*(वि०)* आदर-सत्कार के योग्य ।

समादृत—*(वि०)* जिसका खूब आदर हुआ हो । सम्मानित ।

समादेय—*(वि०)* १. आदर करने योग्य । २. स्वागत करने योग्य ।

समादेश—*(न०)* १. वह आज्ञा जो न्यायालय से होता हुआ काम रोकने के लिये दी जाती है। (इनजंक्शन) । २. साधिकार किसी को कोई काम करने की आज्ञा देना ।

समाद्रित—दे० समादृत ।

समाध—*(ना०)* १. समाधि । २. मृत्यु । मरण । *(वि०)* नैरोग्य । तंदुरस्ती, आराम ।

समाध-समंद—*(ना०)* प्रलयकाल की समुद्र समाधि ।

समाधान—*(न०)* १. मतभेद या विरोध दूर करना । २. किसी का संदेह दूर करने वाली बात या काम । ३. विरोध, संदेह, आपत्ति या भ्रान्ति का निवारण । निवेड़ो । ४. शंकाओं का निराकरण । ५. प्रणिधान । ६. बात या मत का समर्थन अथवा पुष्टि । ७. सान्त्वना । ८. संतोष ।

समाधि—*(ना०)* १. चित्त की एकाग्रता । २. ध्यान मग्नता । ३. ब्रह्म में चित्त को स्थिर करना । ४. योग साधन की एक चरम स्थिति । योग सिद्धि । ५. ईश्वर के ध्यान में मग्न होना । ध्यान । ध्यानमग्न । ६. प्रणिधान । ७. किसी साधु-महात्मा के शव (या अस्थियों) को गाड़ने या जलाने की जगह । ८. उक्त स्थान पर निर्मित वास्तु या देवली । ९. साधु-सन्यासी की मृत्यु ।

समाधियो—*(वि०)* १. स्वस्थ । तदुरुस्त । २. विद्यमान । जीवित । ३. चिरायु । दीर्घायु । ४. सम्पन्न । *(भू० क्रि०)* मर गया । मुँग्रो । पाछो हुग्रो ।

समान—*(वि०)* १. तुल्य । सदृश । अनुरूप । बराबरी का । समोवड़ियो । बराबर । *(न०)* १. सामान । समान । २. मान सहित । ३. वाणिकी पाठशाला में पढ़ाया जाने वाला एक पाठ ।

समानता *(ना०)* १. अनुरूपता । २. बराबरी । तुल्यता ।

समानमा—*(न०)* सरीखा-लेन, देन या आदान-प्रदान । सर्वानवां ।

समानार्थ—*(न०)* पर्याय । *(वि०)* समान अर्थ वाला ।

समानोदरज—*(न०)* भाई । सगा भाई।

समाप—*(न०)* १. दान । २. माप सहित । ३. मर्यादित । ४. माप सर ।

समापण—*(न०)* १. दान । समर्पण । २. समाप्त । समापन ।

समापणो—*(क्रि०)* १. देना । २. समर्पण करना । ३. समापन करना ।

समाप्त—*(वि०)* १. आ खतम या पूरा हो गया हो । २. नष्ट । मृत । खतम ।

समाप्ति—*(ना०)* १. अन्त । अवसान । २. किसी विचार का अन्त ।

समार—*(न०)* १. साथ । सं[illegible] । २. व्यवस्था । ३. संशोधन

सुधार । सँवार ४. सजावट । तैयारी । ५. क्षौर । हजामत ।

समार कांम—*(न०)* दुरस्ती का काम । दुरुस्ती । मरम्मत । मरामत ।

समारणो—*(क्रि०)* १. किसी काम को सुचारू रूप से सम्पन्न करना । २. छील-छाल करके साफ करना या काटना (साग-सब्जी आदि को) । बनारणो । ३. कंघी करना । कंघी करके सँवारना (बालों को) । ओस-ळणो । ४. साफ करना ।

समारंभ—*(न०)* १. खूब ठाट से किया हुआ आरंभ । २. समारोह । ३. धाम-धूम । ४. उत्सव । उच्छव ।

समारो—*(न०)* १ लाभ । फायदा । २. प्राप्ति । अर्थ प्राप्ति । कमाई । आम-दनी । कमाणी । ३. वृद्धि । उबारा । शेष । बच रहना । ४. बचा कर रखने की वृत्ति । सँवारो ।

समारोह—*(न०)* १. भारी आयोजन । समारंभ । २. धामधूम ।

समाळो—दे० संभाळो ।

समालोचक--*(वि०)* १. समालोचना करने वाला । २. किसी रचना या ग्रंथ के गुण-दोष आदि की विवेचना करने वाला । समीक्षक । ३. अवलोकन करने वाला । ४. वस्तु के गुण-दोषों को ढूंढ कर विवेचन करने वाला ।

समालोचना—*(ना०)* १. साहित्य (रचना या ग्रंथ) के गुण दोषों की विवेचना । साहित्यिक कृति का विवेचन । आलो-चना । २. गुण दोषों का विवेचनात्मक लेख । समीक्षा । ३. वस्तु के गुण-दोषों की विवेचना ।

समाव—*(न०)* १. समावेश । समाई । २. सहन । बरदाश्त ।

समावण—*(न०)* १. मृत्यु । २. समावेश ।

समावणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु का किसी पात्र के अन्दर भर जाना । समा जाना । २. बराबर भर जाना । ३. मृत्यु होना । मरना । मरणो ।

समावेश—*(न०)* एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अतर्गत होना । अतर्भूत ।

समास—*(न०)* १. समावेश । २. संक्षेप । ३. सग्रह । संचय । ४. समर्थन । ५. दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग से बना हुआ शब्द *(व्या०)* । ६. शब्दो या पदों का एक सयुक्त शब्द *(व्या०)* । *(वि०)* सक्षेप ।

समाहार—*(न०)* १. समूह । २. राशि । ३. सग्रह । ४. मिलाप ।

समिजा—*(ना०)* सभा ।

समिति—*(ना०)* १. सभा । संस्था । २. कुछ व्यक्तियों की कमेटी । छोटी सभा ।

समिधा—*(ना०)* १. यज्ञ में जलाने की लकड़ी । २. ईंधन ।

समियो—*(न०)* १. बीता हुआ समय । विगत समय । २. समय । काल ।

समी—*(वि०)* १. सीधी । सुलटी । २. समान । ३. ठीक । ऐन । ४. बिलकुल । *(ना०)*५. शमी । खेजड़ो । जांट । जांटी ।

समीक—*(न०)* युद्ध । जुध । आहव ।

समीक्षा—*(ना०)* बारीकी से की जाने वाली जांच । समालोचन । परीक्षण ।

समीप्रभ—*(न०)* अग्नि । वासदे ।

समीचीन—*(वि०)* १. यथार्थ । २. उचित । योग्य । जोग । ३. सत्य । साच ।

समीप—*(वि०)* पास । निकट । कनै । गोडै । नैड़ो ।

समीपता—(ना०) निकटता। नैड़ापणो। नैड़ापो।

समी वेंफार—(अव्य०) ऐन दुपहर में।

समीर—(न०) पवन। वायु। हवा। वायरो।

समीरण—(न०) पवन। वायु। वायरो।

समो सवार—(न०) ऐन सुबह।

समीसांझ—(ना०) १. ऐन संध्या समय। ठीक संध्या समय। २. संध्या काल। सांझवेळा। ३. कुवेळा।

समुचित—(वि०) हर तरह से उचित। उपयुक्त। ठीक।

समुच्चय—(वि०) १. संग्रह। २. समूह। ३. साहित्य में एक अलंकार।

समुच्चय बोधक—(न०) दो वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ने वाला शब्द या पद (व्या०)।

समुदाय—(न०) झुंड। समूह। भीड़।

समुद्र—(न०) सागर। समंद। समदर।

समुद्रमंथन—(न०) दानवों और देवताओं द्वारा अमृत के लिये किया हुआ समुद्र मंथन।

समुहणो—(क्रि०) युद्ध करने को सम्मुख आना या होना।

समुहो—(वि०) सामने। सामने आया हुआ। सामुंहा। साम्हा।

समुंदर—दे० समुद्र।

समूचो—(वि०) सब। पूरा। समूचा। समूधो। सघळो।

समूधो—(वि०) तमाम। सब। समस्त। सघला। (क्रिoवि०) बिलकुल। सबका सब। समूंदो।

समूळ—(वि०) १. मूल सहित। २. सम्पूर्ण। सब। समूळो।

समूळगो—(वि०) समस्त। तमाम। सब। (क्रिoवि०) पूरे पूरा। सबका सब।

समूळो—दे० समूळ।

समूह—(न०) समुदाय। झुंड। भीड़। टोळो।

समृद्ध—(वि०) समृद्धि वाला। संपन्न। धनवान।

समृद्धि—(ना०) १. सम्पत्ति। सम्पन्नता। २. वैभव। ऐश्वर्य। अमीरी।

समेटणो—(क्रि०) १. कपड़ा, कागज आदि को तह देना। फैले हुए कागज, कपड़े आदि को परतों में मोड़ना। समेटना। २. बिखरी हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना। ३. संचित करना। ४. संकुचित करना। ५. व्यवस्थित करना। ६. सम्पूर्ण करना।

समेत—(अव्य०) सहित। साथ। साथ में। के साथ।

समेळो—दे० सामेळो।

समै—दे० समय।

समो—(न०) १. वर्ष। २. सुभिक्ष। सुकाल। ३. जमाना। ४. समय। ५. अवसर। (वि०) १. सीधा। सुलटा। २. व्यवस्थित। ३. दुरस्त। ठीक। ४. एक सरखा। समान। ५. ठीक। ऐन।

समोकरणो—(मुहा०) १. सुलटा करना। सीधा करना। दुरुस्त करना। ३. व्यवस्थित करना।

समोद—(न०) प्रसन्नता सहित। सानंद।

समोनमो—(वि०) एक सरीखा। बराबर। सरभर।

समोभ्रम—(न०) १. पुत्र। २. पौत्र। ३. वंशज। (वि०) समान। बराबर। सरीखो।

समोरण—(न०) गरम पानी को काम में आने लायक बनाने के लिये उसमें मिलाया जाने वाला ठंडा पानी। अमोरण।

समोरणो—(क्रि०) अधिक गरम पानी को स्नानादि के काम मे लेने योग्य करने के लिये उसमें ठंडा पानी मिलाना। अमोरणो।

समोरो—(न०) किसी वस्तु मे थोडी वही वस्तु मिला कर बढ़ाने का भाव। उमेरो। दे० समोरण।

समोवड़—(वि०) १. बराबर। समान। २ बराबरी वाला। बरोबरियो। समबड़। (न०) समानता। बराबरी।

समोवड़ियो—दे० समोवडी।

समोवडी—(वि०) बराबरी का। बराबरी वाला।

समोवणो—(क्रि०) स्नान के गर्म पानी मे ठंडा पानी मिलाना। समोना। समोरणो।

समोसो—(न०) मैदे का एक तिकोना (सिंघाड़े के आकार का) नमकीन पकवान। एक प्रकार का पकोडा। समोसा।

सम्मत—(वि०) सहमत। राजी।

सम्मति—(ना०) १. राय। सलाह। २. अनुमति। सहमति।

सम्मान—दे० सनमान।

सम्मुख—(अव्य०) १. सामने। समक्ष। साम्हुं। २. साक्षात। प्रत्यक्ष।

सम्मेलन—(न०) १. अधिवेशन। २. सभा। मजलिस।

सम्प्रतीवंद—(न०) १. पति। २. स्मृर्येन्द्र।

सम्रथ—(वि०) दे० समरथ।

सम्रथवान—दे० समर्थवान।

सम्राज्ञी—(ना०) सम्राट की पत्नी। महारानी।

सम्राट—(न०) वह बड़ा राजा जिसके आधीन अनेक राजा या राज्य हों। महाराजाधिराज। बादशाह। महाराजा।

सम्राथ—दे० समर्थ।

सयण—(न०) १. सज्जन। सैण। २. पति।

सयंभू—दे० स्वयंभू।

सयाण—दे० सयाणो।

सयाणो—(वि०) १. सयाना। चतुर। २. ज्ञानी।

सर—(ना०) १. माला। लड़ी। हार। २. अेक आभूषण। ३. ताल। सरोवर। ४. विजय। ५. आधीन। वश। ६. बाण। शर। ७. मस्तक। सिर। ८. शिखर। ९. समय। १०. जल। ११. सरकंडा। १२. स्वर। १३. स्वांग। १४. पांच की संख्या। १५. दमन। १६. अंग्रेजी शासन काल में दी जाने वाली एक उपाधि। १७. ताश के खेल में दांव जीतने वाला पत्ता। १८. जीता हुआ हाथ या बाजी। १९. ताश के अमुक पत्ते की प्रधानता। हुकम। २०. समानता। बराबरी। २१. दूध। (वि०) १. श्रेणीबद्ध। २. सरल। (अव्य०) १. प्रमाण में। प्रमाणे। २. ऊपर। ऊंचा। (न०) २२. खारे पानी का तालाब जिसके पानी से नमक बनता है। २३. सिरा। २४. अग्रभाग। २५. चरम सीमा। २६. चिता। २७. श्रेष्ठता।

सरक—*(ना०)* १. चित्त का उभार। मनोवेग। २. उमंग। लहर। तरंग। ३. हलका चित्तभ्रम। ४. चित्त की ग्रस्थिरता। चित्त की लहर। ५. कुछ क्षणों के लिए चित्त में उत्पन्न होने वाली ग्रसंयम ग्रवस्था।

सरकणो—*(क्रि०)* खिसकना। हटना। दे० सरकनो।

सरकनो—*(न०)* १. सरकंडा। मूंज। २. सरकंडे का पौधा।

सर करणो—*(मुहा०)* १ जीतना। हराना। २. ग्रधिकार करना। ३. हासिल करना।

सरकस—*(न०)* हाथी, घोड़े, सिंह ग्रादि जानवरों का खेल तथा खेल कराने वालों का साज-सामान तथा ग्रखाड़ा। क्रीड़ाचक्र। सर्कस। २. उद्दंड। विद्रोही। सरकश।

सरकंडो—दे० सरकनो।

सरकाणो—*(क्रि०)* खिसकाना। हटाना। सरकावणो।

सरकार—*(ना०)* १. प्रजा का शासन करने वाली सत्ता। राज्य का शासन यंत्र। २. राज्य तंत्र। ३. स्वामी। मालिक।

सरकारी—*(वि०)* सरकार का। सरकार या राज्य संबंधी।

सरकावणो—दे० सरकाणो।

सरकोपासो—*(न०)* सरका करके ढीली या तंग की जा सके ऐसी ग्रंथि। पासा-गांठ। गाळो।

सरकोपाहो—दे० सरकोपासो।

सरखाई—दे० सरीखाई।

सरखाणो—दे० सरखावणो।

सरखामण—दे० सरखामणी।

सरखामणी—*(ना०)* तुलना। समानता। बराबरी।

सरखावणो—*(क्रि०)* १. तुलना करना। बराबरी करना। मोंढणो। २. एक जैसा तैयार करना। सरखाणो।

सरखो—दे० सरीखो।

सरग—दे० सुरंग। दे० सर्ग।

सरगड़ो—दे० सरगरो।

सरगतरंगण—*(ना०)* गंगा।

सरग नदी—*(ना०)* गंगा। स्वर्ग नदी।

सरगम—*(न०)* षड्ज से निषाद तक का स्वर समूह। स्वरग्राम। (संगी.)

सरगरण—दे० सरगरी।

सरग राजान—*(न०)* इंद्र। स्वर्ग का राजा।

सरगरी—*(ना०)* १. सरगरा जाति की स्त्री। २. सरगरा की स्त्री। होड़ागरी। गांछी। गांछण।

सरगरो—*(न०)* १. एक ग्रस्पृश्य जाति। २. ढोल, थाली तथा बरघू ग्रादि बजाने वाला व्यक्ति। ३ टोकरी, डलिया ग्रादि बनाने वाला व्यक्ति। गांछो। गराछो। ४. कासीदी (संदेशवाहक) ग्रादि सेवा का काम करने वाला। होड़ागर।

सरगलोक—*(न०)* स्वर्गलोक।

सरगलोकेगता—*(भू०का० कृ०)* स्वर्ग में चला गया। मर गया। स्वर्गवासी। (शिला०)

सरगलोकोपहुत—*(भू०का०कृ०)* स्वर्गलोक में पहुंच गया। मृत्यु हो गई। स्वर्ग-वासी। (शिला.)

सरगासेरी—*(ना०)* १. एक ग्राभूषण। २. बहुत सँकरा मार्ग। ३. तीर्थ स्थानों के देवालयों में (प्रायः शिखर में) बनी

सँकरी खिड़की या गली जिसमें होकर पुण्यात्मा हो वही निकल सके ऐसी मान्यता होती है। योनि त्र। जोणी जंतर। ४ स्वर्ग में जाने का मार्ग। ५. स्वर्ग का द्वार।

सरगुण—दे० सगुण।

सरगे गतो—दे० सरगलोकेगता। (शिला.)

सरगोपहुत—दे० सरगलोकोपहुत। (शिला.)

सरघा—(ना०) सरघा। मधुमक्खी।

सरचणो—(क्रि०) १ बराबर बाँटना। सरसणो। २. उचित भाव लगाना। ३ मोलतोल उचित करना। ४. जितना है उतने में सबका निर्वाह कर लेना। सजाणो। ५. सुलझाना।

सरचावणो—(क्रि०) १. सुलझाना। २. बाँटना। बराबर बाँटना। सरसाणो।

सरज—(न०) १ एक प्रकार का वस्त्र। सर्ज। २. मक्खन। ३. राल। ४. ओढ़ने की एक बढ़िया ऊनी चादर।

सरजणहार—दे० सर्जनहार।

सरजणो—(क्रि०) सृजन करना। रचना। उत्पन्न करना। बनाना।

सरजनहार—दे० सरजणहार।

सरजळ—(वि०) १. पानी से भरा हुआ। जलपूर्ण। २. सजल।

सरजाणो—(क्रि०) रचना करवाना या करना। सृजन करना या कराना।

सरजायोड़ो—१. बनवाया हुआ। बणवायोड़ो। २. बनाया हुआ। बणायोड़ो।

सरजियोड़ो—दे० सर्जित।

सरजीत—दे० सरजीव।

सरजीव—(वि०) १. जीवित। २. जिसमें जीव हो। सजीव। ३. जिसमें पुनः जीव आ गया हो।

सरजीवण—(न०) संजीवन। पुनर्जीवन।

सरजीवत—दे० सरजीव।

सरजीवन—दे० सरजीवण।

सरजू—(ना०) सरयु नदी।

सरजोर—दे० सिरजोर।

सरजोरी—दे० सिरजोरी।

सरट—(न०) गिरगिट।

सरठ—(ना०) १. संकेत। इशारा। २. साजिश। षड्यंत्र। ३. लक्ष्य स्थान। लक्ष्य। ४. मशवरा। सलाह। ५ शर्त। होड़। ६. किसी गुप्त स्थान पर इकट्ठा होने का निश्चय। ७. ताकने की क्रिया या भाव।

सरड़को—(न०) १ चाबुक मारने का शब्द। २ चिलम की फूंक खींचने का शब्द।

सरड़ाटो—(न०) तेज गति से उड़ने से होने वाला शब्द। सर्राटा।

सरढी—(ना०) ऊँटनी। सांयड़।

सरढो—(न०) ऊँट। लदूडो।

सरण—(ना०) १. शरण। आश्रय। २. सँकड़ा मार्ग। तंग रास्ता। ३. किसी देवालय में बनी वह तंग बारी जिसमें होकर भक्त निकलते हैं। सरगासेरी। ४. सरकने-खिसकने की क्रिया। ५. निभाव। ६. रक्त की कमी, अशक्ति तथा वातदूषित हो जाने के कारण पाँवों में होने वाली एक पीड़ा।

सरणाई—(वि०) १. शरण देने वाला। शरण में रखने वाला। २. शरण में आने वाला। ३. शरण में आया हुआ। शरणागत।

सरणाई-साधार—(न०) शरण में आये हुए की रक्षा करने वाला वीर पुरुष। शरणागतरक्षक।

सरणाटो—(न०) १. अतिवेग से जाने तथा उड़ने वाली वस्तु का शब्द।

सरड़ाटो। २. झपट्टा। ३. शून्य स्थान में सुनाई देने वाला शब्द। खालीपन का शब्द। शून्य शब्द। ४. शून्यता। खालीपन।

सरणाय—*(वि०)* शरणागत।

सरणायत—दे० सरणाय।

सरणि—*(न०)* १. शरण। २. निसैनी। निसरणी। ३. पगथियो। ४. पगडंडी। डांडी।

सरणी—*(ना०)* पगडंडी। छोटा मार्ग। डांडी। २. प्रथा। ३. निसैनी। निसरणी।

सरणो—*(न०)* १. शरण। आश्रय। २. पुराने समय का राज्य प्राप्त एक अधिकार, जिसके द्वारा शरण में आया हुआ व्यक्ति सुरक्षित समझा जाता था। (राजा लोग किसी अन्य राज्य के अपराधी को ऐसी शरण देने के स्वतः अधिकार सम्पन्न होते थे। वे अपने कृपापात्र जागीरदार को भी ऐसा अधिकार दे दिया करते थे)। ३. शरण में आये हुये को रखने के लिये किले या कोट जैसे सुरक्षित स्थानों में बना हुआ विशेष स्थान। (क्रि०) १. बनना। संपन्न होना। २. प्रयोजन सिद्ध होना। काम बनना। ३. पूर्त्ति होना। ४. बराबर होना। ५. सरकना। ६. अधोवायु निकलना। ७. बन आना। ८. निभाव होना।

सरणोदेवी—*(ना०)* वागड़िये चौहानों की कुलदेवी।

सरणो लेणो—*(मुहा०)* शरण में जाना। शरण लेना।

सरत—*(ना०)* १. नजर। दृष्टि। २. ध्यान। खयाल। ३. शर्त। होड़। ४. दाँव। बाजी। ५. होश। चेतो। ६. सावधानी।

सरतचूक—*(ना०)* १. ध्यान से उतरना। ख्याल में नहीं रहना। बेख्याली। २. देखने में चूक होना। दृष्टिदोष। ३. ध्यान नहीं रहने से होने वाली भूल।

सरत-चूकणो—*(मुहा०)* १. भूल जाना। २ ध्यान में नहीं रहना। ख्याल बाहर हो जाना। ३. देखने में चूक हो जाना।

सरतत—*(ना०)* १. यत्न। २. शीघ्रता। त्वरा।

सरतन—*(न०)* १. धनमाल। २. सामर्थ्य। हैसियत। ३. साधन। ४ सम्पन्नता। ५. उपाय। प्रयत्न।

सरत-पूगणो—*(मुहा०)* १. नजर पहुँचना। नजर दौड़ाना। २. अक्ल काम करना।

सरतर—*(वि०)* १ स्वस्थ। तंदुरस्त। २. दृढ़। मजबूत।

सरत-राखणो—*(मुहा०)* १. खयाल रखना। ध्यान रखना। २. ध्यान में रखना।

सरतरियो—*(वि०)* सरतन (सरतर) वाला। सम्पन्न। समर्थ।

सरतंत—दे० सरतन।

सरताज—दे० सिरताज।

सरद—*(ना०)* १. शरदऋतु। २. विजय। ३. पराजय। जेर। ४. लाश। *(वि०)* १. ठंडा। शीतल। सर्द। २. जेर। परास्त। ३. जीता हुआ। ४. वश में होने वाला। ५. दाँतों वाला।

सरद-करणो—*(मुहा०)* १. सर करना। जीतना। २. अधिकार करना। ३. मारना। नाश करना।

सरद-गरम—(ना०) १. सर्द और गरम। २. एक रोग।

सरदणो—(क्रि०) १ नाश करना। मारना। काटना। २. सर करना। जीतना। ३. अधिकार करना। सर करणो।

सरदर्द—(न०) १. सिर में दर्द। २. परेशानी। हैरानी।

सरद-पूनम—(ना०) शरदपूर्णिमा। आसोजी पूनों।

सरदार—(न०) १. नायक। मुखिया। अगुआ। २ उमराव। ३. जागीरदार। ४. सिखों की पदवी। ५. सिख जाति।

सरदारगी—दे० सरदारी।

सरदारणी—(ना०) १. सरदार की पत्नी। सरदारनी। २. सिख स्त्री। ३ सिख की पत्नी।

सरदारी—(ना०) सरदार का काम। भाव या स्थिति। सरदारपणो।

सरदी—(ना०) १ ठंडी। शीत। जाड़ा। सर्दी। २. जाड़े का मौसम। ३. जुकाम। ठंडी। श्लेष्म।

सरदीजणो—(क्रि०) १. नमी लगना। सरदियाना। २. सरदी लगना। ३. ठंडा होना।

सरदो—(न०) एक प्रकार का बढ़िया खरबूजा। सरदा।

सरधा—(ना०)१. बल। शक्ति। २. आर्थिक स्थिति। ३. रोग मिटने के बाद प्राप्त होने वाली शक्ति। ४. श्रद्धा। आस्था। ५. भक्ति। ६. ईश्वर, धर्म और गुरुजनों के प्रति आदरपूर्ण और पूज्य भाव। ७. विश्वास। ८. आदर। ९. साहस। हिम्मत। धासांस।

सरधाळू—(वि०) श्रद्धावान। श्रद्धालु।

सरनंद—(न०) कमल।

सरनाम—(वि०) १. प्रसिद्ध। मशहूर। २. सबसे ऊपर नाम वाला।

सरनामो—(न०) १. लेख का शीर्षक। २. चिट्ठी के ऊपर लिखा जाने वाला पाने वाले का नाम, पता आदि। प्रेषिती का नाम, उपाधि, पता तथा गाँव।

सरनांव—दे० सिरेनाम या सरनाम।

सरनांवो—दे० सरनामो।

सरप—(न०) सर्प। साँप। सरप। फुणाळो।

सरप-अरी—(न०) १. गरुड़। २. मोर।

सरप जगन—दे० सरप जाग।

सरपजाग - (न०) जनमेजय का नाग यज्ञ। सर्पयज्ञ।

सरप-जीभ—(ना०) कटारी। कटार।

सरपजीह—दे० सरपजीभ।

सरपट—(अव्य०) तेज चाल में। (ना०) घोड़े की एक तेज दौड़।

सरपटणो—(क्रि०) भागना। दौड़ जाना। दौड़णो।

सरपणी—(ना०) सर्पिणी। साँपिन। सापणी। फुणाळी।

सरपध्घर—दे० सरपाधर।

सरपफीण—(न०) १. अफीम। सर्पफेन। अमल। २. सर्प के मुँह का फेन।

सरपंच—(न०) १. बड़ा पंच। २. पंचायत का सभापति।

सरपाधर—(न०) १. नाश। संहार। (वि०) सीधा। सरल। पाधरो।

सरपाव—(न०) १. सिर से पैर तक की पूरी पोशाक जो राजदरबार से किसी को सम्मान के रूप में दी जाती है। सिरोपाव। सरोपा। २. सिरोपाव का सम्मान।

सरपेच—*(न०)* पगड़ी पर बांधने का एक जड़ाऊ गहना।

सरफराज—*(वि०)* १. उच्च पदस्थ। २. प्रख्यात। ३. कृतार्थ। धन्य।

सरफराजी—*(ना०)* १. प्रसन्नता। २. कृपा। दे० सरफराज।

सरब—*(वि०)* सर्व। समस्त। कुल। सँग। सगळो। सब। २. सबही। समस्त।

सरब ग्रोपमा—दे० सरब ग्रोपमा लायक।

सरब ग्रोपमा लायक—*(ग्रव्य०)* सभी शुभ उपमाओं के योग्य। पत्र लेखन का एक पारिभाषिक पद।

सरब-ग्रोपमा-विराजमान—*(ग्रव्य०)* (प्राचीन पत्र लेखन परिपाटी का जिसके नाम पत्र लिखा जाता है उसके लिये, एक विशेषण)। २. सभी उपमाओं से प्रकाशमान। मान-सम्मान-पूर्वक सभी उपमाओं से विद्यमान। सभी उपमाओं से अलंकृत होकर बिराजे हुए हैं।

सरब-काल—*(न०)* हर समय। सदा।

सरब-जाण—*(वि०)* सब जानने वाला। सर्व वेत्ता। सर्वज्ञ।

सरब-जीत—*(वि०)* सबको जीतने वाला। सर्वजित।

सरब-जोग—*(वि०)* १. सभी प्रकार से योग्य। सर्वयोग्य। २. सभी के योग्य।

सरब-निवास—*(न०)* सभी प्राणियों में निवास करने वाला। सर्वव्यापक। ब्रह्म।

सरब-भखी—*(वि०)* सब कुछ भक्षण करने वाला। सर्वभक्षी। सरभख।

सरबर—दे० सरभर।

सरब-रस—*(न०)* १. नमक। लूण। सबरस। २. सभी रस।

सरबरी—*(ना०)* रात। शर्वरी।

सरबस—*(न०)*सर्वस्व। जो पास में हो वह सब कुछ। सारी संपत्ति। सगळो।

सरब-साखी—*(न०)* १. सर्वसाक्षी। २. ईश्वर।

सरबसहा—*(ना०)* पृथ्वी। सर्वसहा।

सरब-सुहाग—*(न०)* ग्रखंड सौभाग्य। सर्व सौभाग्य।

सरबंग—दे० सर्वांग।

सरबिलंद—*(वि०)* १. प्रतिष्ठित। सर-बुलंद। २. मान्यवर।

सरभ—*(न०)* १. हाथी का बच्चा। करभ। २. ऊँट। ३. शेर। बाघ।

सरभख—*(वि०)* सर्वभक्षी। सरबभखी।

सर-भखड़ो—*(न०)* सर्वभक्षण करने वाला व्यक्ति।

सरभर—*(न०)* १. समान ग्राय-व्यय। जमा ग्रौर खर्च बराबर। २. बराबरी। *(वि०)* न कम या ग्रधिक। बराबर। २. बिना नफा-नुकसान वाला। जिसके क्रय-विक्रय में न लाभ रहा हो ग्रौर न नुकसान। समोनमो। *(न०)* एक खेल।

सरभर-खातो—*(न०)* १. वह खाता जिसमें जमा ग्रौर खर्च की मदें बराबर हों। २. वह हिसाब जिसमें लेन-देन बराबर हो गया हो। खाता चुकता। लेन-देन चुकता। ३. दोनों पक्ष बराबर।

सरभरा—*(ना०)* १. खातिरदारी। ग्राव-भगत। २ सेवा-चाकरी। ३. खाने-पीने का प्रबन्ध। सरबराह। ४. मार-पीट। ५. डाँट। फटकार।

सरभंगी—*(न०)* १. सब कुछ जिसे किसी बात का परहेज एक ग्रस्पृश्य जाति।

सरम—*(ना०)* १. शर्म । लज्जा । २. लिहाज । संकोच । ३. पश्चात्ताप । ४. प्रतिष्ठा । इज्जत ।

सरम करणी (करणो)—*(मुहा०)* घूंघट निकालना ।

सरम-काढणी (काढणो)—*(मुहा०)* घूंघट निकालना ।

सरम-राखणी—*(मुहा०)* १. मान-सम्मान का विचार करके आचरण करना । २. संकोच करना । ३. मर्यादा में रहना । ४. भय खाना । डरना ।

सरमाणो—दे० सरमावणो ।

सरमाळू—*(वि०)* १. शरमाने की प्रकृति वाला । लज्जाशील । शरम वाला । २. संकोचवाला ।

सरमावणो—*(क्रि०)* १. शर्मिंदा होना । लज्जित होना । सरमाणो । सरमीजणो । २. संकोच करना । ३. खिसियाना ।

सरमा-सरमी—*(अव्य०)* १. लाज के मारे । लाज के कारण । शरम में आकर के । ३. एक दूसरे से लज्जित होकर के । ४. संकोच से । लिहाज से । ५. शर्म । लाज ।

सरमिंदो—*(वि०)* शर्मिंदा । लज्जित ।

सरमी-जणो—दे० सरमावणो ।

सरमीली—*(वि०)* लाजवाली ।

सरमीलो—*(वि०)* १. शर्मिंदा । २. शर्म-वाला ।

सरयू—*(ना०)* अयोध्या के पास की एक नदी । सरजू ।

सरल—*(वि०)* १. सीधा । सरल । जो टेढा या वक्र न हो । पाधरो । २. निष्कपट । ३. भोला । ४. साधु स्वभाव का । संतो ।

सरलता—*(ना०)* १. सीधापन । अवक्रता । पाधराई । २. आसानी । सुगमता । सोराई । ३. सच्चाई । ४. निष्कपटता ।

सरव—दे० सरब ।

सरवग—*(वि०)* १. सर्व व्यापक । सर्वग । २. सब जगह । *(न०)* १. शिव । २. आत्मा । ३. सर्वज्ञ ।

सरवड़—*(ना०)* १. वर्षा का झपाटा । २. भागते हुए बादल का बरसते जाना । एक बादल के पीछे दूसरे बादल का बरसते जाना । ३. जोर की वर्षा की आवाज । ४. दूर वर्षा होने की आवाज ।

सरवण—दे० श्रवण ।

सरवर—*(न०)* १. तालाब । सरोवर । २. जलाशय ।

सरवरणो—*(क्रि०)* १. धीरे-धीरे चलना । २. गुप्त रूप से चल देना । खिसक जाना ।

सरवरी—*(ना०)* शर्वरी । रात । रात्रि ।

सरवसह—*(ना०)* धरती । पृथ्वी । सर्वसह । जमी ।

सरवंग—दे० सरवंग ।

सरवाणी—*(ना०)* पार्वती । शर्वाणी ।

सरवाळे—*(अव्य०)* १. समग्रतया । सब मिलाकर । औसतन । सरेरास । २. अंत में । आखिरकार । छेवट । ३. फलतः । फलस्वरूप । ४. इसलिये । अतः । ५. सबसे ऊपर । शीर्ष । मथाळे । *(वि०)* कुल ।

सरवाळो—*(न०)* १. सभी मदों से ली हुई (छोटी-मोटी) रकमों की कुल जोड़ । बड़ी जोड़ । २. नफा-नुकसान । ३.

नफा-नुकसान का हिसाब । ४, औसत । सिरेराशि । सरेरास ।

सरवाळो-काढणो—*(मुहा०)* १. नफा-नुकसान का हिसाब निकालना । २. औसत निकालना ।

सरवो—*(न०)* १. यज्ञकुंड मे आहुति देने का लकड़ी का कलछा । स्रुवा । सरुवो । २. घड़े मे से पानी लेने का डंडी वाला पात्र । सरुवो । *(वि०)* तीक्ष्ण श्रवण-शक्ति वाला । बहुत धीमी आवाज को सुन लेने वाला । श्रव ।

सरस—*(वि०)* १. सुन्दर । २. अच्छा । उत्तम । ३. रस वाला । ४. भावपूर्ण ।

सरसइ—*(ना०)* १. सरस्वती । सरसती । २. सरस्वती नदी । ३. सरसता । सरसताई ।

सर-सज्या—दे० सरेव सज्जा ।

सरसणो—*(क्रि०)* १. सरस दिखना । २. शोभित होना । ३. शोभित करना । ४. शोभित होना । ५. सबमें समान बंटवारा करना । सजाणो । सरचणो । ६. राजी करना । प्रसन्न करना । ७. अच्छा लगना । ८. फलना-फूलना । ९. फैलना ।

सरसत—दे० सरसती ।

सरसता—*(ना०)* १. सरस होने की अवस्था, गुण या भाव । २. मधुरता । ३. रसिकता । ४. सुस्वाद । ५. श्रेष्ठता ।

सरसताई—दे० सरसता ।

सरसती—*(ना०)* सरस्वती । शारदा ।

सरसब्ज—*(वि०)* १. हरा-भरा । लहलहाता हुआ । २. समृद्ध । ३. आबाद ।

सरसरी—*(अव्य०)* ऊपर-ऊपर से । स्थूल रूप से । जल्दी मे ।

सरसरी-तौर-सूं—*(अव्य०)* १. जल्दी-जल्दी में । मोटे रूप में । सरसरी तौर पर ।

सरसरी-नजर-सूं—*(अव्य०)* उचटती हुई या ऊपरी निगाह से । चलती निगाह से ।

सरसव—*(न०)* सरसों ।

सरसवान—*(न०)* समुद्र ।

सरसाई—*(ना०)* १. अधिकता । २. सुन्दरता । ३. श्रेष्ठता । ४. शोभा । ५. स्पर्धा । प्रतियोगिता । ६. समानता । बराबरी । सरसाई ।

सरसाणो—*(क्रि०)* १. शोभित करना । २. सरस बनाना । सरसाना । ३. सँवारना । सजाना । ४. बनाना । सरसावणो । ५. फैलाना ।

सर-सामान—*(न०)* असबाब । सामग्री । सरोसामान ।

सरसावणो—दे० सरसाणो ।

सरसिज—*(न०)* कमल ।

सरसियो—*(न०)* सरसों का तेल । कड़वा तेल । *(वि०)* सरसों का ।

सरसियो तेल—दे० सरसियो ।

सरसी—*(वि०)* १. समान । बराबर । एक समान । २. सुंदर । ३. श्रेष्ठ । अधिक । *(क्रि०वि०)* सरेगा । बनेगा ।

सरसीरुह—*(न०)* कमल ।

सरसुती—दे० सरस्वती । शारदा ।

सरसूं—*(न०)* १. एक प्रसिद्ध पौधा, जिसके बीजों से तेल निकलता है । सरसों । सरसव । २. सरसों तिलहन ।

सर-सैमान—दे० सरसामान ।

सरसो—*(वि०)* १. दो या अनेक में से अच्छा । २. अच्छा । श्रेष्ठ । ३. एक समान । सरीखा । सरखो । ४. सुंदर ।

सरम—(ना०) १. शर्म। लज्जा। २. लिहाज। सकोच। ३. पश्चात्ताप। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत।

सरम करणी (करणो)—(मुहा०) घूंघट निकालना।

सरम-काढणी (काढणो)—(मुहा०) घूंघट निकालना।

सरम-राखणी—(मुहा०) १. मान-सम्मान का विचार करके आचरण करना। २. संकोच करना। ३. मर्यादा मे रहना। ४. भय खाना। डरना।

सरमाणो—दे० सरमावणो।

सरमाळू—(वि०) १. शरमाने की प्रकृति वाला। लज्जाशील। शरम वाला। २. संकोचवाला।

सरमावणो—(क्रि०) १. शर्मिंदा होना। लज्जित होना। सरमाणो। सरमीजणो। २. संकोच करना। ३. खिसियाना।

सरमा-सरमी—(अव्य०) १. लाज के मारे। लाज के कारण। शरम में आकर के। २. एक दूसरे से लज्जित होकर के। ४. संकोच से। लिहाज से। ५. शर्म। लाज।

सरमिंदो—(वि०) शर्मिंदा। लज्जित।

सरमी-जणो—दे० सरमावणो।

सरमोली—(वि०) लाजवाली।

सरमीलो—(वि०) १. शर्मिंदा। २. शर्म-वाला।

सरयू—(ना०) अयोध्या के पास की एक नदी। सरजू।

सरल—(वि०) १. सीधा। सरल। जो टेढा या वक्र न हो। पाधरो। २. निष्कपट। ३. भोला। ४. साधु स्वभाव। सैणो।

सरलता—(ना०) १. सीधापन। अवक्रता। पाधराई। २. आसानी। सुगमता। सोराई। ३. सज्जाई। ४. निष्कपटता।

सरव—दे० सरब।

सरवग—(वि०) १. सर्व व्यापक। सर्वग। २. सब जगह। (न०) १. शिव। २. आत्मा। ३. सर्वज्ञ।

सरवड़—(ना०) १. वर्षा का झपाटा। २. भागते हुए बादल का बरसते जाना। एक बादल के पीछे दूसरे बादल का बरसते जाना। ३. जोर की वर्षा की आवाज। ४. दूर वर्षा होने की आवाज।

सरवण—दे० श्रवण।

सरवर—(न०) १. तालाब। सरोवर। २. जलाशय।

सरवरणो—(क्रि०) १. धीरे-धीरे चलना। २. गुप्त रूप से चल देना। खिसक जाना।

सरवरी—(ना०) शर्वरी। रात। रात्रि।

सरवसह—(ना०) धरती। पृथ्वी। सर्वसह। जमी।

सरवंग—दे० सरबंग।

सरवाणी—(ना०) पार्वती। शर्वाणी।

सरवाळे—(अव्य०) १. समग्रतया। सब मिलाकर। औसतन। सरेरास। २. अंत मे। आखिरकार। छेवट। ३. फलतः। फलस्वरूप। ४. इसलिये। अतः। ५. सबसे ऊपर। शीर्ष। मथाळै। (वि०) कुल।

सरवाळो—(न०) १. सभी मदों से ली हुई (छोटी-मोटी) रकमों की कुल जोड़। बड़ी जोड़। २. नफा-नुकसान। ३.

नफा-नुकसान का हिसाब । ४. औसत । सिरेराशि । सरेरास ।

सरवाळो-काढणो—(मुहा०) १. नफा-नुकसान का हिसाब निकालना । २. औसत निकालना ।

सरवो—(न०) १. यज्ञकुंड में आहुति देने का लकड़ी का कलछा । स्रुवा । सरवो । २. घड़े में से पानी लेने का डंडी वाला पात्र । सरवो । (वि०) तीक्ष्ण श्रवण-शक्ति वाला । बहुत धीमी आवाज को सुन लेने वाला । श्रव ।

सरस—(वि०) १. सुन्दर । २. अच्छा । उत्तम । ३. रस वाला । ४. भावपूर्ण ।

सरसइ—(ना०) १. सरस्वती । सरसती । २. सरस्वती नदी । ३. सरसता । सरसताई ।

सर-सज्या—दे० सरेस सज्जा ।

सरसणो—(क्रि०) १. सरस दिखना । २. शोभित होना । ३. शोभित करना । ४. शोभित होना । ५. सबमें समान बटवारा करना । सजाणो । सरचणो । ६. राजी करना । प्रसन्न करना । ७. अच्छा लगना । ८. फलना-फूलना । ९. फैलना ।

सरसत—दे० सरसती ।

सरसता—(ना०) १. सरस होने की अवस्था, गुण या भाव । २. मधुरता । ३. रसिकता । ४. सुस्वाद । ५. कोष्ठता ।

सरसताई—दे० सरसता ।

सरसती—(ना०) सरस्वती । शारदा ।

सरसब्ज—(वि०) १. हरा-भरा । लहलहाता हुआ । २. समृद्ध । ३. आबाद ।

सरसरी—(अव्य०) ऊपर-ऊपर से । स्थूल रूप से । जल्दी में ।

सरसरी-तौर-सूं—(अव्य०) १. जल्दी-जल्दी में । मोटे रूप में । सरसरी तौर पर ।

सरसरी-नजर-सूं—(अव्य०) उचटती हुई या ऊपरी निगाह से । चलती निगाह से ।

सरसव—(न०) सरसो ।

सरसवान—(न०) समुद्र ।

सरसाई—(ना०) १. अधिकता । २. सुन्दरता । ३. श्रेष्ठता । ४. शोभा । ५. स्पर्धा । प्रतियोगिता । ६. समानता । बराबरी । सरखाई ।

सरसाणो—(क्रि०) १. शोभित करना । २. सरस बनाना । सरसाना । ३. सँवारना । सजाना । ४. बनाना । सरसावणो । ५. फैलाना ।

सर-सामान—(न०) असबाब । सामग्री । सरोसामान ।

सरसावणो—दे० सरसाणो ।

सरसिज—(न०) कमल ।

सरसियो—(न०) सरसों का तेल । कड़वा तेल । (वि०) सरसों का ।

सरसियो तेल—दे० सरसियो ।

सरसी—(वि०) १. समान । बराबर । एक समान । २. सुंदर । ३. श्रेष्ठ । अधिक । (क्रिअ०) सरेगा । बनेगा ।

सरसीरुह—(न०) कमल ।

सरसुती—दे० सरस्वती । शारदा ।

सरसूं—(न०) १. एक प्रसिद्ध पौधा, जिसके बीजों से तेल निकलता है । सरसों । सरसव । २. सरसों तिलहन ।

सर-सँमान—दे० सरसामान ।

सरसो—(वि०) १. दो या अनेक में से अच्छा । २. अच्छा । श्रेष्ठ । ३. एक समान । सरीखा । सरसो । ४. सुंदर ।

५. अधिक। ६. माप या तोल आदि में यथेष्ट से कुछ अधिक। टंकण।

सरस्वती—(ना०) १. विद्या तथा वाणी की अधिष्ठात्री देवी। ज्ञानशक्ति। शारदा। ब्राह्मी। भारती। वरदा। भवसोदरी। २. विद्या। ३. त्रिवेणी संगम की अदृश्य नदी। ४. गुजरात की एक नदी जो (सिद्धपुर-मातृगया-के पास होकर) कच्छ के रण में समाप्त होती है। कुमारिका नदी।

सरहद—(ना०) १. सीमा। हद। कांकड़। २. सीमा-प्रदेश।

सरहर—(वि०) समान। तुल्य। सरीखो। (न०) तालाब। सरोवर। सरवर।

सरंजाम—दे० सराजाम।

सराई—(न०) मिट्टी का ढक्कन। ढाकणा।

सराकत—दे० सरागत।

सरागत—(अव्य०) हिस्से में। भागीदारी मे। सराकत।

सराजाम—(न०) १. सामग्री। सामान। सरंजाम। २. तैयारी। ३. व्यवस्था।

सराड़ै—(अव्य०) १. (एक) झपट्टे मे। २. (एक) स्वास में। ३. एक बार में। एके सराड़ै।

सराड़ो—(न०) १. झपट्टा। झपट। २. वेग। वेग से आगे बढ़ना।

सराण—दे० साण।

सराणियो—(न०) शस्त्रादि को धार लगाने वाला। सिकलीगर।

सराणो—दे० सरावणो। (न०) सिरहाना।

सराध—दे० श्राद्ध।

सराधणो—(क्रि०) श्राद्ध करना।

सराप—(न०) शाप। श्राप। बददुआ।

सरापणो—(क्रि०) शाप देना।

सरापियल—(वि०) १. शापित। जिसको शाप दिया गया है।

सराफ—(न०) १. सोना, चांदी और जवाहरात इत्यादि का व्यापारी। २. सुनार।

सराफत—(ना०) भलमनसाहत। शरीफ होने का भाव।

सराफी—(ना०) सराफ का पेशा। (वि०) सराफ से सम्बद्ध।

सराफो—(न०) १. सराफ का काम। २. सराफों का बाजार। सराफा।

सराब—(न०) शराब। मद्य। दारू।

सराबोर—(वि०) बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर। गीला।

सरामण—दे० सावण।

सराय—(ना०) मुसाफिरो के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। विश्रामालय।

सरारत—दे० शरारत।

सरारती—(वि०) १. ऊधमी। शरारती। २. बदमाश।

सरावग—दे० श्रावक सं० २।

सरावगी—(न०) १. श्रावक। जैन। २. जैन वणिक।

सरावण—दे० श्रावण।

सरावणो—(क्रि०) १. श्राद्ध करना। सराधणो। २. मृतक की भस्मी और फूल (अस्थि) गंगा, नर्मदा आदि (तीर्थों) में शास्त्रविधिपूर्वक प्रवेश करना। ४. मृतक का क्रिया कर्म करना। एकादशा करना। ५. प्रशंसा करना। सराहना।

सरासण—(न०) १. शरासन। धनुष। २. शरशय्या।

सरासर—(अव्य०) १. बिलकुल। पूरा-पूरा। पूरी तरह से। २. प्रत्यक्ष।

सरासरी—(ना०) मोटा अनुमान। (अव्य०) मोटे तौर पर। अनुमानतः।

सराहणो—(क्रि०) बड़ाई करना। प्रशंसा करना। सराहना। सरावणो।

सरि—(ना०) १. झरना। निर्झर। २. समता। बराबरी। ३. लड़। लड़ी। हार। ४. नदी। (वि०) समान। बराबर।

सरिज—(न०) १. एक प्रकार का कपड़ा। सर्ज। २. कमल। ३. मछली। ४. सीप।

सरिग—(न०) स्वर्ग। सुरग। (क्रि०भू०) १. बना। निर्माण हुआ। हुआ। २. खिसक गया। ३. संपन्न या सिद्ध हो गया।

सरित—(ना०) सरिता। नदी।

सरितपति—(न०) समुद्र। समदर।

सरितवरा—(ना०) गंगा।

सरिता—(ना०) नदी।

सरितां-पति—(न०) समुद्र। सागर। सायर।

सरियो—(न०) लोहे की लंबी पतली छड़। सळियो। शलाका।

सरिश्तेदार—(न०) १. मुकदमों की मिसलें रखने वाला कर्मचारी। २. सरकारी विभाग का अधिकारी।

सरिस—(वि०) समान। सदृश। जिसो। जैड़ो।

सरीक—(अव्य०) साथ में। (वि०) मिला हुआ। सम्मिलित। शरीक।

सरीकत—(ना०) १. शराकत। साझा। हिस्सा। २. हिस्सेदारी। ३. पक्ष। ४. साथ। (अव्य०) १. पक्ष में। २. साथ में। ३. हिस्सेदारी में। भाग में।

सरीखाई—(ना०) १. समानता। बराबरी। २. एकरूपता।

सरीखापणो—दे० सरीखाई।

सरीखो—(वि०) १. बराबर। समान। सरीखा। जिसो। जैड़ो।

सरीगत—दे० सरीकत।

सरीर—(न०) १. शरीर। देह। काया। २. किसी वस्तु का पूरा ढांचा।

सरीसो—दे० सरीखो।

सरुआत—(ना०) आरंभ। शुरुआत। शुरू।

सरुपांत—दे० सरूपांत।

सरुवो—दे० सरवो।

सरू—(न०) शुरू। आरंभ।

सरूठ—(वि०) क्रुद्ध। क्रोधित। रीसाणो। रूठोड़ो।

सरूप—(न०) १. श्रीनाथजी की मूर्ति। श्री बालकृष्ण की मूर्ति। श्री स्वरूप। २. वह जो देवत्व को प्राप्त हो गया हो। परमात्मा रूप। ३. वह जिसने देवता का रूप धारण किया हो। ४. पहुंचा हुआ पुरुष। महात्मा। ५. देव-मूर्ति। ६. मूर्ति, चित्र आदि। ७. व्यक्ति, पदार्थ आदि की आकृति। ८. बनावट। ९. शक्ल। सिकल। सरूप। चेहरा। १०. स्वभाव। ११. सुंदरता। १२. सदृश। १३. तुलना। (वि०) १. सुंदर। २. समान। तुल्य। अनुसार। (अव्य०) १. रूप में। तुलना में। २. किसी की भाँति।

सरूपता—(ना०) समानता। एकरूपता।

सरूपवान—(वि०) स्वरूपवान। सुंदर।

सरूपश्री—(अव्य०) १. जो 'श्री' का स्वरूप है। धनधान्य से सम्पन्न है। स्वरूपश्री। २. जिस स्थान और व्यक्ति को पत्र लिखा जाता है उस स्थान और व्यक्ति के नाम लिखा जाने वाला विशेषण। जैसे—स्वरूपश्री जोधपुर शुभस्थाने……। सरूपश्री महाराजाधिराज……।

सरूपोत—(अव्य०) पहले-पहल। शुरूआत में ही। सरूपोत।

सरूपोत—दे० सरूपोत।

सरूंखो—दे० सभाड़ो।

सरे-आम—(अव्य०) खुले आम। सबके सामने। सर्व साधारण में।

सरे-इजलास—(अव्य०) भरी कचेरी में। भरे इजलास में।

सरे-बाजार—(अव्य०) १. सबके सामने। जनता के सामने। खुले आम। २. बाजार में। बाजार के बीच में।

सरे-रास—(न०) छोटी-बड़ी संख्याओं का योग करके निकाला जाने वाला मान। औसत। (अव्य०) अनुमान से। अंदाज सुं। अंदाज थी। अड़सटो।

सरेव-सरजा—(ना०) आहत भीष्म पितामह की शर शय्या। बाणों की बनी शय्या।

सरेस—(न०) ऊँट, भैंस, गाय इत्यादि के चमड़े, हड्डी से बनाया जाने वाला एक लसदार पदार्थ।

सरै—(ना०) १. शरह। २. रीति-रिवाज।

सरो—(अव्य०) से। के साथ। लेकर। (न०) १. एक वृक्ष। सनकाक। २. रिवाज। शरह। दे० सिरो।

सरोख—दे० सरोस।

सरोज—(न०) १. कमल। २. ब्रह्मा।

सरोतो—(न०) सुपारी काटने का एक उपकरण। सरोता। सूड़ो। शंकुला।

सरोद—(न०) एक तंतुवाद्य। सारंगी।

सरोदो—(न०) नाक में से निकलते स्वास पर से भविष्य कहने की विद्या। स्वरोदय।

सरोपा—दे० सरपाव।

सरोपाव—दे० सरपाव।

सरोष—दे० सरोस।

सरोस—दे० सकोप।

सरोवर—(न०) १. तालाब। तळाव। २. छोटी झील।

सर्ग—(न०) १. काव्य ग्रंथ का एक प्रकरण। २. जगत। संसार। ३. प्राणी। जीव। ४. उद्गम। मूल। ५. स्वभाव। प्रकृति।

सर्जक—(वि०) सर्जन करने वाला। रचने वाला। रचयिता। (न०) १. सृष्टिकर्ता। २. ब्रह्मा। ३. ईश्वर।

सर्जन—(न०) १. सृष्टि। उत्पत्ति। पैदाइश। २. शल्य चिकित्सक।

सर्जनहार—दे० सर्जक।

सर्जित—(भू०कृ०) सर्जन किया हुआ। रचित। बणायोड़ो। रचियोड़ो। सरजियोड़ो।

सर्टिफिकेट—(न०) प्रमाणपत्र।

सर्दी—दे० सरदी।

सर्प—(न०) साँप। नाग। भुजग। फुंणिद।

सर्प-फण—(ना०) सर्प का फूला-फैला हुआ सुजाकार सिर। नागफन। फण।

सर्प-यज्ञ—(न०) जनमेजय का नाग यज्ञ। सरप जगन।

सर्व—(वि०) १. सकल। समस्त। सब। सगळो। २. पूरा। आदि से अंत तक।

सर्वंग—*(वि०)* सर्वव्यापक । *(न०)* १. आत्मा । २. शिव ।

सर्वगुण-संपन्न—*(वि०)* सभी गुणों वाला ।

सर्वजीव—*(न०)* ब्रह्मा । विधाता ।

सर्वज्ञ—*(वि०)* सब कुछ जानने वाला । *(न०)* ईश्वर । शिव ।

सर्वतोभद्र—*(न०)* १. चारों ओर द्वार वाला मंदिर । २. प्रत्येक ओर से एक समान पढ़ने में आये ऐसी काव्य रचना । ३. एक व्यूह रचना । ४. नीम का वृक्ष । ५. बांस । ६. स्वस्तिक । ७. योग की एक मुद्रा । *(वि०)* १. सभी प्रकार सुंदर । २. सब ओर से मंगल । ३. संपूर्ण मुंडन किया हुआ । ४. एक चौकोर पूजा चक्र ।

सर्वत्र—*(अव्य०)* १. सब दिशाओं में । २. सब जगह ।

सर्वथा—*(अव्य०)* १. सब प्रकार से । पूरी तरह से । २. प्रत्येक दृष्टि से । ३. बिलकुल । नितान्त । सरासर । ४. अत्यन्त ।

सर्वदा—*(अव्य०)* सदा । हमेशा ।

सर्वनाम—*(न०)* नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला प्रतिनिधि शब्द (व्या.) । हूं, थूं, वो इत्यादि ।

सर्व-नामिक-विशेषण—*(न०)* सर्वनाम से बना हुआ विशेषण (व्या०) ।

सर्वनाश—*(न०)* १. सम्पूर्ण विनाश । २. पूरी बरबादी । ३. समूलोच्छेद ।

सर्वनियंता—*(न०)* सबको नियंत्रित करने वाला । २. ईश्वर ।

सर्वप्रिय—*(वि०)* सभी को प्रिय ।

सर्वभक्षी—*(वि०)* सब कुछ भक्षण करने वाला । *(न०)* अग्नि ।

सर्व-मंगला—*(वि०)* सब प्रकार का मंगल करने वाली । *(ना०)* १. दुर्गा । २. लक्ष्मी । ३. पार्वती ।

सर्वमान्य—*(वि०)* सबके द्वारा मान्य । जिसे सब मान देते हैं । २. सबके द्वारा स्वीकृत ।

सर्वरी—*(ना०)* शर्वरी । रात ।

सर्वविद्—*(वि०)* १. सब कुछ जानने वाला । २. सबको जानने वाला ।

सर्व-व्यापक—*(वि०)* सब जगह और सब पदार्थों में व्याप्त । *(न०)* ईश्वर ।

सर्व-व्यापी—दे० सर्वव्यापक ।

सर्व-शक्तिमान—*(वि०)* १. पूरी तरह से शक्तिशाली । २. सम्पूर्ण शक्तियों से युक्त । *(न०)* ईश्वर ।

सर्व-श्राद्ध अमावस्या—*(ना०)* १. आश्विन मास की अमावस्या । २. श्राद्धपक्ष का अंतिम दिन जिस दिन रहे सहे पितृगणों का श्राद्ध किया जाता है ।

सर्वश्री—*(वि०)* एक साथ एक से अधिक व्यक्तियों के नामों के लिये लिखा जाने वाला सम्मान सूचक विशेषण पद ।

सर्वश्रेष्ठ—*(वि०)* सबसे श्रेष्ठ ।

सर्वस—दे० सर्वस्व ।

सर्व-सम्मत—*(वि०)* जिसके पक्ष में सभी सदस्यों के मत हों ।

सर्व-सम्मति—*(ना०)* सबकी राय ।

सर्व-सहा—*(ना०)* पृथ्वी । धरती ।

सर्वसाक्षी—*(वि०)* जो सबका साक्षी हो । साक्षीभूत । *(न०)* ईश्वर । परमात्मा ।

सर्व-साधारण—*(न०)* १. सामान्यजन । २. सभी प्रकार के लोग ।

सर्वसुलभ—*(वि०)* जो अ: [illegible] सकता हो । सबको सुलभ

सर्वस्व—(न०) १. सब कुछ। २. समस्त धन दौलत, वैभव, सत्ता इत्यादि।
सर्वात्मा—(न०) ईश्वर। परमेश्वर।
सर्वाधिक—(वि०) सबसे अधिक।
सर्वाधिकार—(न०) सब कुछ करने का अधिकार। सब इख्तियार।
सर्वानुमति—(ना०) सबकी अनुमति।
सर्वानुमते—(क्रि०वि०) सबकी अनुमति से।
सर्वांग—(न०) १. समस्त अवयव। २. शरीर के सभी अंग। (वि०) संपूर्ण अंगों सहित।
सर्वांग-सुंदर—(वि०) जिसके सभी अंग सुंदर हों।
सर्वांगीण—(वि०) १. समस्त अंगों से संबंधित। २. समस्त।
सर्वांतर्यामी—(वि०) ईश्वर।
सर्विस—(ना०) १. नौकरी। २ सेवा।
सर्वेसर्वा—(वि०) १. सब अधिकारों से युक्त। २. सब कुछ कर सकने वाला।
सर्वोच्च—(वि०) १. सबसे ऊंचा। २. सबसे बड़ा।
सर्वोच्च न्यायालय—(न०) वरिष्ठ न्यायालय। सुप्रीम कोर्ट।
सर्वोत्तम—(वि०) सबसे उत्तम।
सर्वोदय—(न०) सभी का उदय। सबका हित। २. सर्वोदयवाद का सिद्धांत।
सर्वोपमा—दे० सरब ओपमा।
सर्वोपरि—(वि०) सबसे ऊपर। सर्वश्रेष्ठ।
सळ—(न०) सिलवट। सिकुड़न। शिकन।
सळवट।
सल—(न०) १. ऊंट। २. शल्य। कांटा।
सळकणो—(क्रि०) सोते सोते या बैठे बैठे खिसकना। सरकना। सिरकणो।
सळकी—(ना०) मछली। माछळी।
सलखणो—दे० सुलखणो।
सळगणो—दे० सुळगणो।
सळगम—(न०) एक तरकारी कंद। शलगम। शलजम।
सलज—दे० सलज्ज।
सलजी—(वि०) लाजवाली। सलज्जा। 'नलजी' का उलटा।
सलजो—(वि०) लाजवाला। सलज। लजालू। 'नलजो' का उलटा।
सलज्ज—(वि०) १. लज्जा सहित। २. लज्जावान। सलजो।
सळटणो—(क्रि०) १. निपटना। परस्पर समझ लेना। २. मुकाबिला करना। सुलझना। ३. उलझी हुई बात या विवाद को मिटा देना। सुलझाना। ४. काम को पूरा करना।
सळटाणो—(क्रि०) १. निपटाना। २. निर्णय कराना। ३. काम को पूरा करना। ४. विवाद को सुलझाना।
सळटावणो—दे० सळटाणो।
सलणो—(क्रि०) १. शल्य रूप होना। २. खटकना। दुख होना। सलना। ३. पीड़ा होना। ४. मन में खटकना। ५. सहन नहीं होना। ६. चुभना। ७. सुराख होना। ८. सुराख किया जाना (खाट के पाये में)।
सळपोटियो—दे० सपळोटियो।
सलबो—(वि०) १. निकट। पास। २. सुलभ। सहज। ३. विस्तृत। ४. सुखी। ५. स्वस्थ। ६. उदार। ७. सुलभता से प्राप्त होने वाला।
सलभ—(न०) १. पतंगा। शलभ। २. टिड्डी।
सलमो—(न०) १. सोने या चांदी का तार, जिससे कपड़े में बेलबूटे बनाये जाते

है । बादलो । २. कपड़े पर किया हुआ सोने या चाँदी के तार का काम ।

सलमो-सितारो—*(न०)* १. सितारों वाला सलमे का काम । २. सोने चाँदी के सितारों और सलमे का कपड़े पर किया हुआ काम ।

सळवट—दे० सळ ।

सळवळ—*(ना०)* १. धीरे धीरे खिसकना । सळवळाट । २. बार बार होने वाला हलका दर्द । ३. शरीर पर कीड़ी-मकोड़ी चलती हो ऐसी प्रतीति । सळवळाट ।

सळवळणो—*(क्रि०)* १.थोड़ा-थोड़ा खिसकना, हटना या चलना । २. शरीर पर कीड़ी-मकोड़ी चलने जैसी खसखसाहट या प्रतीति का होना ।

सळवळाट—दे० सळवळ ।

सळवळाटो—दे० सळवळाट ।

सळवा—*(ना०)* १. एकांत की गुप्त बैठक जहाँ से किसी को कुछ सुनाई न दे या जहाँ पर किसी की आवाज न सुनाई दे । २. एकान्त की बैठक ।

सलवाणो—*(क्रि०)* १. लकड़ी के खाट के पायों में सुराख पड़वाना । २. सुराख करवाना । ३. दुखी होना ।

सलवार—*(न०)* एक प्रकार का ढीला पाजामा ।

सळसणो—*(क्रि०)* १. सांप का चलना । २. धीरे-धीरे खिसकना ।

सळसळणो—*(क्रि०)* १. धीरे-धीरे सरकना । २. बैठे-बैठे या सोते-सोते हिलना या खिसकना । ३. सांप का चलना ।

सळंग—*(वि०)* १. सम्पूर्ण । जो कहीं भी टूटा-फूटा न हो (प्रायः लंबाई में) । सलग । *(अव्य०)* १. झटके बिना । रुके बिना । लगातार । २. ठेठ तक । शुरू से आखिर तक । ३. एक छोर से दूसरे छोर तक (मार्ग अथवा लंबाई) । ४. क्रम से पंक्ति बद्ध । ५. पूरे नाप का ।

सलंभ—*(वि०)* सुलभ । सहज ।

सला—दे० सलाह ।

सळाक—*(ना०)* सलाई । सलाका ।

सळाको—*(न०)* १. बिजली की भाँति उठने वाली पीड़ा । रह रह कर उठने वाला दर्द । २. पीड़ा स्थान पर पतली शलाका से की जाने वाली दग्ध क्रिया ।

सलाजीत—दे० शिलाजीत ।

सलाट—*(न०)* १. भार । २. परिमाण । ३. शिलाकार । शिलावट । सिलावटो ।

सलाड़णो—*(क्रि०)* १. बरमे से लकड़ी में सुराख करना । सुराख करना । सलारणो । २. खाट के पायों में सुराख करना । ३. दो पशुओं को रस्सी से गरदन में एक साथ बांधना । ४. एक को दूसरे के साथ बांधना या जोड़ना । ५. एक की पूंछ में दूसरे ऊँट की मुहरी बांधना । सांगरणो ।

सलाम—*(ना०)* नमस्कार का एक प्रकार । अभिवादन (मुसलमान) ।

सलामत—*(वि०)* १. सुरक्षित । २. दीर्घायु । ३. तन्दुरुस्त । स्वस्थ । ४. जीवित । कायम । हयात ।

सलामती—*(ना०)* १. सुरक्षा । २. क्षेम कुशल । ३. शान्ति । ४. तन्दुरुस्ती । मौजूदगी । हयाती ।

सलामी—*(ना०)* १. सलाम करने की क्रिया या भाव । २. तोपों, किला इत्यादि के द्वारा राजकीय महत् व्यक्ति का समारोहपूर्वक अभि

३. सलामी में दिया जाने वाला उप-हार। ४. अभिवादन या स्वागत इत्यादि के रूप मे तोपो-बन्दूकों का छोड़ा जाना।

सलारणो—(क्रि०) दे० सलाड़णो।

सळाव—(ना०) १. विद्युत शलाका। २. बिजली की चमक।

सलासूत—(ना०) १. परामर्श। सलाह। २. सलाह का दौर। परामर्श सूत्र। मश्वरा।

सलाह—(ना०) १. परामर्श। २. सम्मति। राय। अभिप्राय। ३. सीख। शिक्षा। सिखामण।

सलाहकार—(वि०) सलाह देने वाला। परामर्शदाता।

सलिता—(ना०) सरिता। नदी।

सळियो—(वि०) १. ['भळियो' का उलटा] सरल। सीधा। २. निष्कपट। ३. शात प्रकृति का। ४. आसान। सहल। ५. साफ। खालिस। बिना मिलावट का। ६. लोह आदि धातु की लबी शलाका। शलाका। सरियो। ७. कंकर, धूल रहित (अनाज)।

सलिल—(न०) पानी। जल।

सळी—(ना०) १. सलाई। २. सींक। ३. स्त्रियों के नाक मे पहिनने की लौंग जैसी नाक की छोटी सिली। फुल्ली। सिणको। सिळी।

सलीकेवाळो—(वि०) १. सामर्थ्य वाला। हैसियत वाला। २. शऊर वाला।

सलीको—(न०) १. ठीक से काम करने का ढंग। सुघड़पन। सलीका। २. शिष्टता। योग्यता। शऊर। ३. सामर्थ्य। हैसियत।

सुळू—(न०) १. चमड़े की डोरी (प्रायः मैंस के चमड़े की)। २. सुराख या सुई मे पिरोने के लिए डोरी या धागे इत्यादि का पतला और नोकदार बनाया हुआ सिरा।

सलूक—(न०) १. ढंग। तौर। २. तरीका। ३. मेल-मिलाप। ४. प्रेम। ५. अच्छा बरताव। सलूक।

सलूकात—(न०ब०व०) १. प्रेम। मेल-मिलाप। २. बर्ताव।

सुळूजणो—(क्रि०) १. उलझन या जटिलता को दूर करना। २. किसी टंटे झगड़े का परस्पर समझना या निबट जाना।

सुळूजाड़ो—दे० सुळजाड़ो।

सलूणी—(ना०) मिट्टी के पके हुये (लाल रंग के) नरिया (कँलू) का नमक मिश्रित चूर्ण जो सोने को शुद्ध करने के काम आता है। सोने को शुद्ध करने का एक मसाला। सलोनी। (वि०) १. सुंदर। २. स्वादिष्ट। ३. लवण सहित। सलोनी।

सलूणो—(वि०) १. सुंदर। सलोना। लावण्ययुक्त। २. नमकीन।

सलूंधो—(वि०) १. सुलभ। २. संलग्न। ३. उलझन रहित।

सळे—(न०) १. काम बनने या बना देने की सामर्थ्य। २. ढंग। ३. ढगसर।

सुळे आवणो—(मुहा०) १. बन पाना। काम करने या आने के योग्य होना। २. निभना या पटना।

सलेट—(ना०) लिखने की पत्थर की एक पाटी। स्लेट। स्लेटपाटी।

सलेट-पेण—(ना०) स्लेट और पेन।

सलेमकोट—(न०) किले में बनी वह जगह जहाँ राजा, नवाब, जागीरदार आदि कैद करके रखे जाते हैं। सलीमखाना।

सळेवड़ो—(न०) निशास्ता से बनाया हुआ एक प्रकार का पापड, जिसे घी या तेल में तल कर खाया जाता है।

सळो—दे० सुळो।

सलोको—दे० सिलाको।

सलोच—(वि०) १. लोचवाला। लचक-वाला। २. कोमलता सहित सौंदर्य वाला।

सल्तनत—(ना०) १. राज्य। २. हुकूमत। ३. व्यवस्था।

सल्ल—(न०) १. शल्य। बरछी। २. काँटा।

सल्लो—(वि०) अधिक। ज्यादा। घणो।

सवड़—दे० सगवड़।

सवण—(न०) शकुन। सुकन।

सवणी—(वि०) १. शकुन शास्त्री। शकुनी। २. शकुन देखकर काम या यात्रा करने वाला। शाकुन। सुकनी।

सवर—(न०) १. स्वयंवर। २. वरसहित। दंपति। ३. स्वयंवर द्वारा ब्याही हुई कन्या। सवर्या। स्ववर्या। सवरी।

सवरी—(वि०) १. ब्याही हुई। सवर्या। २. स्वयंवरा।

सवरो—(न०) म्लेच्छ।

सवळत—(ना०) सुविधा। सहूलियत।

सवळी—(ना०) चील पक्षी। (वि०) १. 'अवळी' का उलटा। सीधी। २. आसान।

सवळो—(वि०) १. 'अवळो' का उलटा। सीधा। टेढ़ा नहीं। २. आसान। सरल। ३. अनुकूल। मनपसंद।

सवसाचो—दे० सम्यसाचो।

सवा—(वि०) १. एक और उसका चौथाई। २. एक से निन्यानवे की संख्या के साथ जुड़ने वाला एक का चौथाई। जैसे—'५।' (सवा पाँच); '६६।' (सवा छ्यासट); '७३।' (सवा तिहत्तर) इत्यादि। ३. पूरी संख्या (शतान्त) के साथ जुड़ा हुआ सौ का चौथाई (पच्चीस) जैसे—१०० + २५ = १२५ (सवा सौ); ३०० + २५ = ३२५ (सवा तीन सौ); '५२५' (सवा पाँसौ) इत्यादि। ४. श्रेष्ठ। (न०) १. सवा की संख्या '१।' (एक और उसका चौथाई रूप खड़ी पाई)। २. आनों के आगे लगने वाली खड़ी पाई। आनों के आगे लगने वाला खड़ी पाई के रूप में एक पैसा, जैसे—'–)।' सवा आना (एक आना और एक पैसा पुराने पाँच पैसे); '। –)।' सवा पाँच आने (चार आने, एक आना और एक पैसा। पुराने इक्कीस पैसे; '॥ ≡)।' सवा ग्यारह आने (आठ आने, तीन आने और एक पैसा। पुराने ४५ पैसे) इत्यादि।

सवा-आनो—(न०) रुपये के सोलह आने (६४ पैसे) और एक आने के चार पैसे के हिसाब से पाँच पैसे। पाँच पैसों का नाम। एक आने का सवाया '–)।'।

सवाई—(न०) १. जयपुर के महाराजाओं की उपाधि। २. पुत्र। ३. पुत्री। ४. एक से सवा करने या होने की क्रिया या भाव। (वि०) १. सवा गुनो। २. श्रेष्ठ।

सवा-करोड़—(वि०) एक करोड़ और पच्चीस लाख। एक करोड़ और उसका चौथाई। (न०) एक करोड़ पच्चीस लाख की संख्या। '१२५०००००'

सवा-गुणो—दे० सवायो।
सवागो—(न०) सुहागिन स्त्री की पोशाक आदि सौभाग्य की सामग्री। सुवागो।
सवाणी—(ना०) चिमटी। चिमतड़ी।
सवाणो—दे० सिवाणो।
सवाद—दे० स्वाद।
सवादियो—(वि०) १. स्वादिष्ट पदार्थों को खाने की आदतवाला। स्वादी। सुवादी। २. रसिक।
सवाब—(न०) १. धर्मकृत्य। २. पुण्य।
सवाय—(वि०) १. सवा गुना अधिक (श्रेष्ठ या निकृष्ट)। २. श्रेष्ठ।
सवाया—(न०) १. सवा का पहाड़ा। सवैया।
सवायो—(वि०) १. सवा गुना। पूरे से अेक चौथाई अधिक। २. श्रेष्ठ। ३. अधिक। ४. सुंदर।
सवार—(ना०) प्रातःकाल। सुबह। प्रभात। सवारणा। (वि०) १. सवारी करने वाला। २. घोड़ा, हाथी या किसी वाहन पर बैठा हुआ। असवार।
सवारणा—(न०) प्रातःकाल। सुबह। भोर। प्रघड़ो।
सवारथ—दे० स्वार्थ।
सवारथी—दे० स्वार्थी।
सवार-होणो—(मुहा०) १. सूर्योदय होना। प्रभात होना। २. सवारी करना। ३. नशा, क्रोध आदि का उत्पन्न होना।
सवारी—(ना०) १. वह गाड़ी, घोड़ा आदि जिस पर सवार हुआ जा सके। वाहन। २. वह व्यक्ति जो सवार हो। ३. शोभायात्रा। जुलूस।
सवा-रुपियो—(न०) १. रुपया और उसका चौथा हिस्सा। एक रुपया और एक चौअन्नी। २. रुपये के चौंसठ पैसों के हिसाब से ८० पैसों की संज्ञा। ३. सवा रुपये की संख्या। '१।)'
सवारूं—(अव्य०) १. शीघ्रता से। उतावली। २. समयसर। सवेळा। ३. सवेरे।
सवारे—(अव्य०) १. आने वाले प्रातःकाल में। २. आने वाले प्रातःकाल को। कल सुबह को। ३. अगले थोड़े दिनों बाद। ४. समय पाकर। (न०) १. आने वाला प्रातःकाल। आने वाले कल का प्रातःकाल।
सवाल—(न०) १. प्रश्न। २. गणित का प्रश्न या समस्या। हिसाब। ३. कुछ माँगने या पाने की प्रार्थना। ४. पूछी हुई बात। ५. प्रस्तुत आकांक्षा।
सवाल-करणो—(मुहा०) १. प्रश्न करना। २. गणित के किसी प्रश्न या समस्या का हल निकालना। ३. हिसाब करना।
सवाळख—(न०) १. सपादलक्ष। २. मारवाड़ का नागोर जिला। सुआळख। स्वाळख।
सवा-लख—दे० सवा लाख।
सवाल-जवाब—(न०) १. प्रश्न और उत्तर। २. विवाद। बहस। ३. तकरार। हुज्जत।
सवा-लाख—(वि०) एक लाख और पच्चीस हजार। लाख और उसका चौथाई। (न०) एक लाख और पच्चीस हजार की संख्या। '१२५०००'
सवा-वीस—(वि०) १. सत्य खरा। २. योग्य। उचित। ३. बीस और एक का चौथाई। (न०) सवा बीस की संख्या। '२०।'
सवासरण—दे० सवासणी।

सवासणी—*(ना०)* १. बहिन-बेटी जिनके यहाँ भोजन-पानी करने का निषेध माना गया है। सवासण। २. सौभाग्यशालिनी। ३. सुहागिनी। दे० सुहासणी।

सवासणो—*(न०)* १. सवासणी का पुत्र। २. बुआ या बहन का पति।

सवा-सेर—*(वि०)* १ अधिक अच्छा। २. अधिक। खूब। ३. तुलना में जबरदस्त या श्रेष्ठ। ४. एक सेर और उसका चौथाई।

सवा-सोळै आना—*(अव्य०)* १. जिसके सत्य होने में कोई संदेह नहीं। सर्वप्रकार सत्य। २. पक्की बात। ३. निश्चयपूर्वक। ४. पूर्णरूपेण। ५. निस्संदेह। *(न०व०व०)* (सोलह आनों का) एक रुपया और एक पैसा।

सवा-सौ—*(वि०)* एक सौ और पच्चीस। एक सौ और उसका चौथाई। *(न०)* एक सौ पच्चीस की संख्या। '१२५'.

सवा-हजार—*(वि०)* एक हजार और दो सौ पचास। हजार और उसका चौथाई। बारह सौ पचास। *(न०)* सवा हजार की संख्या। '१२५०'.

सवाँ-नवाँ—दे० समानमा।

सविता—*(न०)* १. सूर्य। २. ईश्वर। ३. ब्रह्म। सरजनहारो।

सविता-सुत—*(न०)* शनैश्चर। सनीचर।

सविनय—*(वि०)* विनय युक्त। *(अव्य०)* विनयपूर्वक।

सवियाणो—दे० सिवियाणो।

सविस्तर—*(अव्य०)* विस्तारपूर्वक।

सवेई—दे० सवेयी।

सवेयी—*(वि०)* समवयस्क। हमउम्र। समवयी। २. बराबरी का।

सवेरी—*(ना०)* १. वह स्त्री जो उसके विवाह के पहिले किसी और को वाग्दत्ता थी। वह स्त्री जिसकी कन्यावस्था में सगाई किसी और से की गई थी किंतु आड़े आकर कोई और ही विवाह कर ले गया हो। २. वह विवाहिता स्त्री जिसको भगा कर किसी दूसरे ने अपनी पत्नी बनाकर रख लिया हो। ३. विवाहित पति को छोड़ कर दूसरे की पत्नी बनने वाली स्त्री। सवरी।

सवेरो—*(न०)* सवेरा। प्रभात। प्रातःकाल। सवारणो।

सवेळा—*(ना०)* १. प्रभात। सवेरा। २. मंगल समय। शुभवेला। *(अव्य०)* १. सवेरे। प्रभात में। २. प्रभात की ठंडी वेला में। ३. दोपहर होने के पहिले। ४. भोजन या ब्यालू के समय या इससे पहिले। ५. सूर्यास्त के पहले। साँझ होने के पहिले। दिन थकां। ६. समय पर। समय सर। सवारूं। ७. शीघ्र। जल्दी।

सवेळो—*(क्रि०वि०)* १. जल्दी। शीघ्र। २. समय पर।

सवैया—*(न०)* वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है। सवा का पहाड़ा। सवाया।

सवैयो—*(न०)* एक छंद। सवैया छंद।

सवो—*(न०)* पुत्र। बेटा।

सवों—*(अव्य०)* हिंदी में 'ही' शब्द का समानार्थी शब्द। ही, निश्चय, अवश्य। भी, केवल, [illegible], [illegible], [illegible] इत्यादि सूचक शब्दों [illegible] दे० सभी (वि०)।

सव्य—*(वि०)* १. बायां। [illegible] कंधे पर पहने जाना (जनेऊ)

सव्य-साची—(न०) १. (बायें हाथ से भी बाण चला सकने वाला) बायाँ तथा दाहिना दोनों हाथों से बाण चला सकने के कारण अर्जुन का एक नाम। २. बायें दाहिने दोनों हाथों से काम करने वाला। लावेड़ो। लावलो।

सशक्त—(वि०) शक्तिवाला। सबल। सबळो। जोरावर।

सस—(न०) १. शशि। चंद्रमा। २. धान्य। शस्य। ३. खरगोश। सुसियो।

ससकणो—(क्रि०) १. हिलना। हिलना-डुलना। २. काँपना। ३. छूने या हिलाने का असर होना। ससकना। ३. घबराना।

ससत—(वि०) १. निःसंदेह। २. शाश्वत। निरंतर। (न०) शस्त्र।

ससत्र—(न०) शस्त्र।

ससधर—(न०) १. चंद्रमा। २. महादेव। शशिधर।

ससनेह—(न०) सच्चा प्रेम। सुस्नेह।

ससनेही—(वि०) सच्चा प्रेमी। सुस्नेही।

ससफोट—(न०) युद्ध। जुध।

ससमरथ—(वि०) सुसमर्थ। दे० ससमाथ।

ससमाथ—(वि०) समर्थ। सुसमर्थ। (न०) महादेव। शिव।

ससलो—(न०) खरगोश। शशक। ससियो। सुसियो। खरगो।

ससवो—(न०) १. साहस। २. हिम्मत। (वि०) १. साहसिक। पराक्रमी। दिलेर। २. सावधान। होशियार। सतर्क। ३. स्वस्थ। ४. कुशल। ससमो।

ससहर—(न०) १. चंद्रमा। शशधर। २. महादेव।

ससाद—(वि०) शब्द सहित। आवाज के साथ।

ससांक—(न०) चंद्रमा। शशांक।

ससि—(न०) शशि। चन्द्रमा।

ससिमोती—(न०) मोती।

ससिधर—(न०) १. चन्द्रमा। २. महादेव। शशिधर।

ससियो—दे० ससलो।

ससियाम—(ना०) रात।

ससिहर—(न०) १. चंद्रमा। २. महादेव।

ससी—(न०) चंद्रमा। शशि।

ससी-सहोवर—(न०) शंख।

ससो—(न०) १. खरगोश। सुसियो। २. 'स' अक्षर। सकार।

ससोभणो—(क्रि०) १. विशेष प्रकार से शोभा पाना। २. अत्यन्त शोभित होना। सुशोभित होना। ३. पति के साथ वाम भाग में बैठे पत्नी का शोभा पाना।

ससोभन—(न०) बहुमूल्य सुंदर वस्त्राभूषण। सुशोभन।

सस्तर—दे० शस्त्र।

सस्ताई—(ना०) महँगी का अभाव। सस्तापन। सुंघापलो।

सस्तापणो—(न०) १. वह समय जब चीजें सस्ते दामों में मिलती हैं। २. महँगी का अभाव। सस्तापन। सस्ताई। सस्तीवाड़ो।

सस्तीवाड़ो—(न०) सभी वस्तुओं के सस्ता होने का भाव या अवस्था। सस्तापन।

सस्तो—(वि०) १. जो महँगा न हो। सस्ता। २. साधारण से कम मूल्य का।

सस्त्र—दे० शस्त्र।

सस्सो—(न०) १. 'स' अक्षर। सकार। ससो। २. खरगोश। शश। सुसियो।

सह—*(वि०)* १. सब । समस्त । २. सहनशील । ३. समर्थ । *(अव्य०)* १. साथ । सहित । समेत । २. से । ३. अवश्य । जरूर । अवस ।

सहकार—*(न०)* १ सहायक । २. सहयोग । ३ औरों के साथ काम करने का भाव । ४. कलमी आम । ५. आम ।

सह-कोई—*(वि०)* सभी । *(सर्व०)* सब लोग ।

सह-कोय—दे० सहकोई ।

सहकृतवास—*(न०)* मित्र । दोस्त । भायलो । साथी ।

सहगमरा—दे० सहगमन ।

सहगमन—*(न०)* १. पति के शव के साथ पत्नी का जल मरना । सती होना । २. साथ मे जाने की क्रिया या भाव । सहगवरण । ३. संभोग । मैथुन ।

सहगवरा—दे० सहगमन ।

सहचर—*(न०)* १. साथी । संगी । २. मित्र । सखा । ३ सेवक । नौकर ।

सहचरी—*(ना०)* १. पत्नी । २. सखी । सहेली । ३. सेविका ।

सहज—*(वि०)* १. आसान । सरल । २. स्वाभाविक ।

सहजभाव—*(न०)* सहजता । सरलता ।

सहज-साज—*(वि०)* १. थोड़ा-बहुत । २. थोड़ा सा ।

सहजे—*(अव्य०)* १. आसानी से । सहजता से । सरलता से । २. अनायास ।

सहटो—*(वि०)* १. पक्का । दृढ़ । मजबूत । सेंठो । २. मोटा । जाड़ो ।

सह-ठाम—*(न०)* सभी जगह । सर्वत्र ।

सह-ठाँव—दे० सहठाम ।

सहड—*(न०)* हाथी ।

सहरा—*(ना०)* १. क्षमा । सहनशीलता । बरदाश्त । २ माफी । ३. पृथ्वी ।

सहणी—*(वि०)* सहन करने वाली । *(क्रि०)* सहन करना । खमणो ।

सहणो—*(क्रि०)* १. सहन करना । सहना । खमणो । २. तकलीफ उठाना । *(वि०)* सहन करने वाला । खमणारो ।

सहत—*(ना०)* शहद । मधु ।

सहतीर—दे० शहतीर ।

सहतूत—*(न०)* एक पेड़ जिसकी मंजरी मीठी होती है । शहतूत । सहतूर ।

सहदेव—*(न०)* १. पाँच पाण्डवों में सबसे छोटे का नाम । २. भविष्य जानने वाला ।

सहधर्मिणी—*(ना०)* सहधर्मचारिणी । पत्नी । घरणी ।

सहन—*(न०)* सहने की शक्ति । सहन करने की क्रिया या भाव । बरदाश्त । सहिष्णुता ।

सहनशील—*(ना०)* सहने की क्षमता या स्वभाववाला ।

सहनशीलता—*(ना०)* १. सहिष्णुता । २. सब्र । संतोष । ३. सहने की क्षमता ।

सहनाई—*(ना०)* एक फूंक वाद्य । शहनाई ।

सहनाण—*(न०)* १. निशान । चिन्ह । २. पहचान । परिचय । ओळखाण ।

सहनाणक—दे० सहनाण ।

सहनाणी—*(ना०)* १. चिन्ह । निशान । २. परिचय । ओळखाण । ३. स्मृति के लिये किसी की दी हुई वस्तु । निशानी । सहिदानी ।

सहपाठी—*(न०)* साथ में विद्यार्थी ।

सह्भोज—(न०) १. सबको साथ में लेकर किया जाने वाला भोज। २. भेदभाव को त्याग कर साथ में बैठ कर किया जाने वाला भोज।

सह्म—(न०) १. संकोच। २. लज्जा। ३. डर। भय।

सह्मणो—(क्रि०) लज्जित होना। सह्मना। संकोच करना।

सह्योग—(न०) किसी क्रिया में योग देने, हाथ बँटाने या मिलकर काम करने की क्रिया या भाव। सहकार। २. सहायता। मदत।

सह्योगी—(वि०) साथ मिल कर काम करने वाला साथी। सहकारी।

सह्र—(न०) शहर। नगर।

सह्रकोट—(न०) शहरपनाह।

सह्र-भदर—(न०) शहर निकाला। शहर बदर। नगर निकाळो। सह्रवटो।

सह्र-वाद—(न०) कारागार। कैद। शहर बंद।

सह्र-सारणी—(ना०) शहर के समस्त लोगों को दी जाने वाली दावत। नगर-सारणी।

सह्रिया—(न०) कोटा जिले की एक जन-जाति।

सह्ल—(वि०) १. सरल। २. आसान। (ना०) सैर। मनोरंजन के लिये भ्रमण करना। हवाखोरी।

सह्लकी—(वि० न०) सरल। आसान। सह्ली।

सह्लको—(वि०) सरल। आसान। सीधो।

सह्लाण—दे० सह्नाण।

सह्नाणी—(ना०) १. कूटे हुए तिल और कड़कड़ खांड को मिलाकर बनाई हुई एक बुकनी। २. मृतक की याददाश्त में सगा-संबंधियों में बाँटी जाने वाली उक्त बुकनी। दे० सह्नाणी।

सह्ली—दे० सह्लकी।

सह्लो—(वि०) सुगम। सहल। सह्लको।

सहवार्ता—(क्रि०वि०) सभी प्रकार से।

सहवास—(न०) १. संबंध। २. साथ रहना। मैथुन। संभोग।

सहस—(वि०) सहस्र। हजार। (न०) हजार की संख्या। '१०००'.

सहसकर—(न०) १. सूर्य। २. सहस्रबाहु। ३. विष्णु।

सहस-किरण—(न०) सूर्य।

सहसगुणो—(वि०) हजार गुना। सहस्र-गुना।

सहस-चख—(न०) सहस्रचक्षु। इन्द्र।

सहस-दोयक्रण—(न०) दो सहस्र कानों वाला। सहस्रशीर्षा। विष्णु।

सहस-दोय-चख—(न०) १. दो सहस्र नेत्रों वाला। सहस्रशीर्षा। विष्णु। २. शेष-नाग।

सहस-नाग—(न०) शेषनाग। सेसनाग।

सहस-नामी—(न०) विष्णु।

सहस-नेत्र—(न०) इंद्र।

सहस-नैण—(न०) इंद्र।

सहसबळी—(वि०) महान पराक्रमी। सहस्र गुना बल वाला।

सहसार—(न०) संसारी दुनिया।

सहस्र—(वि०) हजार। सहस। (न०) एक हजार की संख्या। '१०००'.

सहस्र-मुखी—(ना०) १. गंगा। (न०) २. शेषनाग। (वि०) सहस्र मुखों वाला या वाली।

सहस्र-कार—(न०) सूर्य। सूरज।

सहस्र-पात—(न०) कमल।

सहस्र-बाहु—(वि०) सहस्र हाथों वाला। (न०) १. बाणासुर। २. विष्णु।

सहस्र-लिंग—*(न०)* सहस्र शिवलिंगों का एक प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर समूह जो अणहिलवाड़ा-पाटण (गुजरात) के पास सरस्वती नदी के तट पर कलापूर्ण रमणीय तालाब पर खंडहर रूप में स्थित है। सहस्रलिंग तालाब और मंदिरों को सिद्धराज जयसिंह ने बनवाया था।

सहस्रार्जुन—दे० बाणासुर।

सहस्सरबाहुव—*(न०)* सहस्रबाहु।

सहानुभूति *(ना०)* हमदर्दी। अनुकंपा।

सहाय—*(ना०)* १. मदद। सहायता। मदत। २. आश्रय। आसरो। *(वि०)* सहायक।

सहायक—*(वि०)* १. सहायता करने वाला। मददगार। मदतगार। २. सहकारी।

सहायता—*(ना०)* मदद। मदद।

सहारो—*(न०)* १. सहारा। २. आश्रय। आसरो। ३. सहायता। मदद।

सहालग—दे० सहावो।

सहावो—*(न०)* विवाह का शुभ दिन। सहालग। साहो। दे० साहो।

सहि—*(वि०)* सब। समस्त। सगळा। *(अव्य०)* साथ। सहित। से। अवश्य।

सहित—*(अव्य०)* १. साथ। २. समेत।

सहिलाळी—*(ना०)* पृथ्वी। भूमि।

सही—*(ना०)* १. हस्ताक्षर। दसखत। २. दस्तावेज की साक्षी रूप में किये गये हस्ताक्षर। ऋण-पत्र में साक्षी के हस्ताक्षर। ३. कबूलात के दस्तखत। स्वीकृति-हस्ताक्षर। ४. ऋणपत्र में ऋणी के हस्ताक्षर। ५. निश्चय। दृढ़ संकल्प। *(वि०)* १. शुद्ध। खरा। २. दुरस्त। जिसमें कोई त्रुटि न हो। ३. वास्तविक। यथार्थ। ४ प्रामाणिक। *(क्रि०वि०)* अवश्य।

सही-सलामत—*(वि०)* १. बिना किसी बीमारी या हानि के। २. तंदुरुस्त। स्वस्थ। ३. निर्दोष।

सहु—*(वि०)* सब। समस्त। सँग।

सहुको—*(क्रि०वि०)* शाश्वत। निरंतर। *(वि०)* सभी कोई। सब के सब।

सहुजाण—दे० सोहजाण।

सहुवै—*(वि०)* सभी। सब। तमाम।

सहूर—दे० सऊर।

सहूलियत—*(ना०)* सुभीता। सुगमता।

सहृदय—*(वि०)* १. दूसरों के सुख-दुख को समझने वाला। भावुक। २. दयालु

सहेट—*(ना०)* १. सीमा। २. संकेत। ३. संकेत स्थान। ४. निश्चित किया हुआ किसी के मिलने का गुप्त स्थान। *(अव्य०)* सहित। समेत।

सहेत—दे० सहेतो।

सहेतो—*(वि०)* हेत से। प्रेम से। *(अव्य०)* सहित। साथ।

सहेलड़ी—दे० सहेली।

सहेली—*(ना०)* १. सखी। सहचरी। २. दासी।

सहेळो—*(न०)* १. सम्मेलन। २. स्वागत-सम्मेलन-स्थान। ३. बारात के स्वागत का स्थान या चौक।

सहोद—दे० सहोदर।

सहोदर—*(न०)* सगा भाई। सहोवर।

सहोदर-लखमण—*(न०)* श्रीराम।

सहोदरा—*(ना०)* बहन।

सहोवर—दे० सहोदर।

सं—*(उप०)* अच्छी तरह से, संग, साथ या सुंदर अर्थ में। *(न०)* संवत् का संक्षिप्त नाम।

संक—दे० संका ।
संकट—(न०) १. कष्ट । दुख । २. आफत। विघ्न । सगट । संघट ।
संकट-मोचन—(वि०) संकट से छुड़ाने वाला (प्रभु) । ईश्वर ।
संकड़ाई—(ना०) १. तगी । गरीबी । २. संकरापन । स्थान की तंगी । ३. भीड़। ४. मुश्किली ।
सं'कड़ाटो—दे० संकड़ामरण ।
सं'कड़ामरण—(ना०) १ संकरापन। तंगी। २. आर्थिक तंगी । संकड़ाटो । गरीबी। ३. विपत्ति । ४. संकरा स्थान । संकड़ावरण ।
सं'कड़ावरण—दे० संकड़ामरण ।
सं'कड़ीजरणो—(क्रि०) १. सँकराना । भीड़ में फँस जाना । २. संकोच करना । ३. आर्थिक संकट में पड़ना । साकड़ीजणो ।
संकड़ेलो—दे० सकड़ाटो ।
सं'करणो—(क्रि०) १ भय खाना । डरना। २. लज्जित होना । शरमाना । सरमावणो ।
संकर—(न०) १. दो भिन्न प्रकार की वस्तुओं का मिलकर एक हो जाना । मिश्रण । मेळसेळ । २ वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियो के माता पिता से हुई हो । वर्णसकर । दोगलो । ३. दे० शंकर ।
संकरखरण—(न०) १. सकर्पण । बलराम । २. शेषनाग ।
संकर-घरणी—(ना०) पार्वती ।
संकरणी—(ना०) हरे । हरीतकी ।
संकरांत—दे० संक्रांति ।
संकरी—(ना०) पार्वती ।
संकळ—दे० सांकळ ।
संकलन—(न०) १. एकत्रीकरण । संग्रह । संग्रहण । जमा । २. ढेर । राशि ।
संकळप—दे० संकल्प ।
संकळपणो—(क्रि०) १. दृढ़ निश्चय करना। २. मंत्र पढ़ कर दान देने का निश्चय करना । संकल्प करना ।
संकळी—दे० सांकली ।
संकल्प—(न०) १. मानसिक इच्छा, अभिलाषा या दृढ़ निश्चय । २. दान देने का निश्चय; तदर्थक मंत्रपाठ, जलग्रहण क्रिया इत्यादि ।
सं'का—(ना०) १. शौच जाने या पिशाव करने की हाजत । २. टट्टी या मूत्र का वेग । ३. भय । डर । बी । ४. शंका । संशय ।
संकाय—(ना०) विश्वविद्यालयो मे विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन से संबंधित शाखा या विभाग । फॅकल्टी ।
संकारणो—(क्रि०) १. सकेत करना । २. संकेत से समझाना । ३. भय दिखाना ।
संकाळू—(वि०) १. लाज-शरम वाला । २. संकोच वाला । संकोची । सांकोलो । ३. लिहाज वाला । लिहाजू ।
संकावाळो—(वि०) १. संदेह वाला । वहमी । २. शरम वाला । ३. हाजत वाला ।
संकीजरणो—(क्रि०) १. शर्माना । लजाना । २. डरना । भय खाना । डरणो ।
संकीर्ण—(वि०) १. सँकरा । २. क्षुद्र । तुच्छ । नीच । ३. अनुदार मनोवृत्ति वाला ।
संकीर्तन—(न०) १. ईश्वर, देवी-देवता का जाप, भजन या कीर्तन । २. स्तुति। गुणगान ।

संकीलो—दे० सकाळू ।
संकुकरण—(न०) गदहा । खर । गधो ।
संकुचित—(वि०) १. जिसे सकोच हो। लाजवाला । २. सिकुड़ा हुआ । ३. संकरा । ४. अनुदार ।
संकुल—(न०) युद्ध । लड़ाई । (वि०) १. पूरा । २. भरा हुआ । ३. छिपा हुआ । ४. भिड़ा हुआ । ५. समेटा हुआ । ६. घना ।
सकुलणो—(क्रि०) १. लड़ना । भिड़ना । २. समेटना । ३. छिपना । ४. पूरा करना । ५. भरना । ६. घना होना ।
सकेत—(न०) १. इशारा । २. चिन्ह । निशान । ३. शृ गार-चेष्टा । ४. सकट या भाव की स्थिति।
सकेलणो—(क्रि०) १. काम का निपटाना। काम खतम करना । २. समेटना। सकेलना । ३. इकट्ठा करना ।
स्ंको—(न०) १. भय । डर । २. शका। सशय । ३. सकोच । हिचक । आगा-पीछा । ४. लाज । शर्म । ५.मर्यादा।
सकोच—(न०)१. लाज। २. थोड़ी लज्जा। लज्जाभाव । ३. भय । ४. लोक-लाज इत्यादि से उत्पन्न हिचक । ५. आगा-पीछा ।
सकोचणो—(क्रि०) १. सकोच करना । २. शर्म करना ।
सकोची—(वि०) सकोच या शर्म करने वाला ।
संकोचीगात—(न०) कछुआ ।
सक्रमण—दे० संक्रांति ।
संक्रांति—(ना०) १. सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि मे जाना। २. उक्त संक्रमण का समय, दिन या पर्व । संक्रमण काल ।
संक्षिप्त—(वि०) १. संक्षेप में कहा या लिखा हुआ। टूंको । २. आकार-प्रकार इत्यादि मे छोटा बनाया हुआ।
सक्षेप—(न०) १. बात या लेख का सक्षिप्त । रूप । सार । टूंकाण । संखेप।
सख—दे० शंख ।
सखणी—(ना०) १. कर्कशा स्त्री । २. कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियो के चार भेदो में से एक। शखिनी।
सखधर—दे० शखधर ।
सखनाद—दे० शखनाद ।
सख-सवदी—(न०) गदहा । गधो ।
सखात—(न०) युद्ध ।
सखारणो—(क्रि०) मृतक-सस्कार करना।
सखियो—(न०) १. एक उपविष । सखिया । २. छोटा शख ।
सखेप—(न०) सक्षेप । सार ।
सखोढाळ—(न०) १. मृतक के अशौच की एक शुद्धि क्रिया । २. निम्न जातियो का मृतक-कर्म ।
संख्या—(ना०) १. १, २, ३, इत्यादि अंक। अको मे लिखी जाने वाली राशि या गिनी जाने वाली तादाद (गणित)। २. गणना । गिनती ।
सख्या-वाचक—(वि०) सख्या दर्शाने वाला, जिससे सख्या की जानकारी होती हो (व्या.) ।
संख्या-वाचक विशेषण—(न०) संज्ञा, सर्वनाम आदि, की सख्या दर्शाने वाला विशेषण । (व्या०)
संग—(अव्य०) १. साथ । सहित । २. सगति । ३. मिलन । ४. सहवास । सभोग । ५. ससर्ग । संपर्क ।

संक—दे० संका।

संकट—(न०) १. कष्ट। दुख। २. आफत। विघ्न। सघट। संघट।

संकट-मोचन—(वि०) संकट से छुड़ाने वाला (प्रभु)। ईश्वर।

संकड़ाई—(ना०) १. तंगी। गरीबी। २. संकरापन। स्थान की तंगी। ३. भीड़। ४. मुश्किली।

संकड़ाटो—दे० संकड़ामण।

संकड़ामण—(ना०) १. संकरापन। तंगी। २. आर्थिक तंगी। संकड़ाटो। गरीबी। ३. विपत्ति। ४. सकरा स्थान। संकड़ावण।

संकड़ावण—दे० संकड़ामण।

संकड़ीजणो—(क्रि०) १. सँकराना। भीड़ में फँस जाना। २. संकोच करना। ३. आर्थिक संकट में पड़ना। साकड़ीजणो।

संकड़ेलो—दे० संकड़ाटो।

संकणो—(क्रि०) १ भय खाना। डरना। २. लज्जित होना। शरमाना। सरमावणो।

संकर—(न०) १. दो भिन्न प्रकार की वस्तुओं का मिलकर एक हो जाना। मिश्रण। भेळसेळ। २. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के माता पिता से हुई हो। वर्णसंकर। दोगलो। ३. दे० शंकर।

संकरखण—(न०) १. संकर्षण। बलराम। २. शेषनाग।

संकर-घरणी—(ना०) पार्वती।

संकरणी—(ना०) हर्रे। हरीतकी।

संकरांत—दे० संक्रांति।

संकरी—(ना०) पार्वती।

संकळ—दे० सांकळ।

संकलन—(न०) १. एकत्रीकरण। संग्रह। संग्रहण। जमा। २. ढेर। राशि।

संकळप—दे० संकल्प।

संकळपणो—(क्रि०) १. दृढ़ निश्चय करना। २. मंत्र पढ कर दान देने का निश्चय करना। संकल्प करना।

संकळी—दे० सांकली।

संकल्प—(न०) १. मानसिक इच्छा, अभिलाषा या दृढ निश्चय। २. दान देने का निश्चय; तदर्थक मंत्रपाठ, जलग्रहण क्रिया इत्यादि।

संका—(ना०) १. शौच जाने या पिशाब करने की हाजत। २. टट्टी या मूत्र का वेग। ३. भय। डर। डौ। ४. शंका। संशय।

संकाय—(ना०) विश्वविद्यालयों में विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन से संबंधित शाखा या विभाग। फैकल्टी।

संकारणो—(क्रि०) १. संकेत करना। २. संकेत में समझाना। ३. भय दिखाना।

संकाळू—(वि०) १. लाज-शरम वाला। २. संकोच वाला। संकोची। सांकीलो। ३. लिहाज वाला। लिहाजू।

संकावाळो—(वि०) १. संदेह वाला। वहमी। २. शरम वाला। ३. हाजत वाला।

संकीजणो—(क्रि०) १. शर्माना। लजाना। २. डरना। भय खाना। डरणो।

संकीर्ण—(वि०) १. सँकरा। २. क्षुद्र। तुच्छ। नीच। ३. अनुदार मनोवृत्ति वाला।

संकीर्तन—(न०) १. ईश्वर, देवी-देवता का जाप, भजन या कीर्तन। २. स्तुति। गुणगान।

संकीलो—दे० संकाळू ।

संकुकरण—(न०) गदहा । खर । गधो ।

संकुचित—(वि०) १. जिसे संकोच हो । लाजवाला । २. सिकुड़ा हुआ । ३. सँकरा । ४. अनुदार ।

संकुल—(न०) युद्ध । लड़ाई । (वि०) १. पूरा । २. भरा हुआ । ३. छिपा हुआ । ४. भिड़ा हुआ । ५. समेटा हुआ । ६. घना ।

संकुलणो—(क्रि०) १. लड़ना । भिड़ना । २. समेटना । ३. छिपना । ४. पूरा करना । ५. मरना । ६. घना होना ।

संकेत—(न०) १. इशारा । २. चिन्ह । निशान । ३. शृंगार-चेष्टा । ४. संकट या भाव की स्थिति ।

संकेलणो—(क्रि०) १. काम का निपटाना । काम खतम करना । २. समेटना । सँकेलना । ३. इकट्ठा करना ।

संको—(न०) १. भय । डर । २. शंका । संशय । ३. संकोच । हिचक । आगा-पीछा । ४. लाज । शर्म । ५. मर्यादा ।

संकोच—(न०)१. लाज । २. थोड़ी लज्जा । लज्जाभाव । ३. भय । ४. लोक-लाज इत्यादि से उत्पन्न हिचक । ५. आगा-पीछा ।

संकोचणो—(क्रि०) १. संकोच करना । २. शर्म करना ।

संकोची—(वि०) संकोच या शर्म करने वाला ।

संकोचीगात—(न०) कछुआ ।

संक्रमण—दे० संक्रांति ।

संक्रांति—(ना०) १. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना । २. उक्त संक्रमण का समय, दिन या पर्व । संक्रमण काल ।

संक्षिप्त—(वि०) १. संक्षेप में कहा या लिखा हुआ । टूंको । २. आकार-प्रकार इत्यादि में छोटा बनाया हुआ ।

संक्षेप—(न०) १. बात या लेख का संक्षिप्त । रूप । सार । टूंकाण । संखेप ।

संख—दे० शंख ।

संखणी—(ना०) १. कर्कशा स्त्री । २. कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक । शंखिनी ।

संखधर—दे० शंखधर ।

संखनाद—दे० शंखनाद ।

संख-संवदी—(न०) गदहा । गधो ।

संखात—(न०) युद्ध ।

संखारणो—(क्रि०) मृतक-संस्कार करना ।

संखियो—(न०) १. एक उपविष । संखिया । २. छोटा शंख ।

संखेप—(न०) संक्षेप । सार ।

संखोढाळ—(न०) १. मृतक के अशौच की एक शुद्धि क्रिया । २. निम्न जातियों का मृतक-कर्म ।

संख्या—(ना०) १. १, २, ३, इत्यादि अंक । अंकों में लिखी जाने वाली राशि या गिनी जाने वाली तादाद (गणित) । २. गणना । गिनती ।

संख्या-वाचक—(वि०) संख्या दर्शाने वाला, जिससे संख्या की जानकारी होती हो (व्या.) ।

संख्या-वाचक विशेषण—(न०) संज्ञा, सर्वनाम आदि की संख्या दर्शाने वाला विशेषण । (व्या०)

संग—(अव्य०) १. साथ । सहित । २. संगति । ३. मिलन । ४. सहवास । संयोग । ५. संसर्ग । संपर्क ।

संग-चढ़णो—*(मुहा०)* १. पार आना । सफल होना । सिग चढ़णो । २. दीपक की लौ का एक सरीखी बनी रहना । सिग चढ़णो ।

संगट—दे० संकट ।

संगठन· *(न०)* १. बिखरी हुई शक्ति को किसी कार्य के लिये तैयार करना । २ उक्त क्रिया से बना हुआ दल । संघटन ।

संगठित—*(वि०)* १. जिसका संगठन हुआ हो । संगठन वाला । २. एकत्रित । ३. सुव्यवस्थित ।

संगत—*(ना०)* १. साथ । २. सोहबत । ३. संबंध । ४. उदासीन साधुओं की जमात या रहने का मठ । ५. योग तथा अध्यात्म पद (वाणी-पद) गाने वालों की मंडली । ६. तुर्रा-किलंगी की लावनियां गाने वालों की मंडली । ७. बाजा बजाकर गाने वालों का साथ देना । ८. संगति । संपर्क । *(वि०)* १. अनुरूप । सिमेट्रिकल । २. उपयुक्त । ३. हर प्रकार मेल खाने वाला ।

संगतार्थ—*(न०)* १. संगति के अनुसार बिठाया जाने वाला अर्थ । २. ठीक अर्थ । ३. (प्रसंग पर विचार किये बिना केवल) संगति से बिठाया जाने वाला अर्थ । *(वि०)* ठीक अर्थ वाला । (साहित्य) ।

संगति—*(ना०)* १. संग । साथ । २. मेल । मिलाप । ३. प्रसंग । ४. आगे पीछे के शब्दों तथा वाक्यों से मेल खाने वाला पूर्वापर संबंध । ५. किसी ग्रंथ के शब्द या वाक्यों का प्रसंग या विषय के अनुकूल अर्थ को बिठाना । ६. अच्छी सोहबत । सुसंग ।

संगती—*(वि०)* १. साथी । सोहबती । २. गवैये के साथ बाजा बजाने वाला । ३. साथ । सोहबत । संगत । ४. संबंध ।

संगम—*(न०)* १. वह स्थान जहां दो नदियां मिलें । २. मेल । मिलाप । ३. सम्मेलन । ४. दो या दो से अधिक वस्तुओं के मिलने का भाव । ५. प्रयाग तीर्थ ।

संगमरमर—*(न०)* एक प्रकार का बढ़िया सफेद पत्थर । आरसपाण । आरसं । पाषाण । अकराणो ।

संगर—*(न०)* १. युद्ध । संग्राम । २. विपत्ति । संकट । आफत । ३. संहार । नाश ।

संगरणी—*(ना०)* संग्रहणी नामक बीमारी ।

संगरणो—*(क्रि०)* संग्रह करना । संग्रहणो ।

संगराम—दे० संग्राम ।

संगरे-खोर—दे० संग्रहखोर ।

संगरे-खोरी—*(ना०)* संग्रह करने का काम या गुण । संग्रहखोरी ।

संगरो—*(न०)* संग्रह । जमा ।

संगाळियो—*(न०)* १. साथी । २. एक छोटा जलपात्र । संगळियो ।

संगळो—*(न०)* साथी । मित्र । *(वि०)* १. साथ रहने वाला । २. छोटा गडुआ । भाळियो ।

सुंगाती—दे० संगाथी ।

संगाथ—*(न०)* साथ । संग । साहचर्य ।

संगाथण—*(ना०)* पत्नी । स्त्री ।

संगाथी—*(न०)* १. साथी । संगी । संगाती । २. मित्र । दोस्त । भायलो ।

संगाथे—*(अव्य०)* १. साथ में । साथे । २. सामिल । इकट्ठा । भेळो ।

संगार—*(न०)* पशु।
संगी—दे० संगाथी।
संगीत—*(न०)* १. निर्धारित स्वर, लय तथा नाद से युक्त मधुर तान। गायन विद्या। २. गायन, वादन तथा नृत्य का समाहार। ३. नृत्य तथा बाजों के साथ गाने की कला।
संगीत-कला—*(ना०)* गाने की कला। संगीत विद्या।
संगीतकार—*(न०)* संगीत गाने वाला या संगीत विद्या का जानकार। वह जो संगीत विद्या में निपुण हो।
संगीत-विद्या—*(ना०)* १. संगीत कला। २. संगीत शास्त्र।
संगीत-शास्त्र—*(न०)* संगीत संबंधी शास्त्र।
संगीती—*(वि०)* १. गानविद्या का पंडित। संगीतिक। २. गानेवाला। गावणियो।
संगीन—*(ना०)* बंदूक के सिरे पर लगाई जाने वाली नुकीली बरछी (बेयोनेट)। *(वि०)* १. पत्थर के समान कड़ा। २. मजबूत। दृढ़। ३. मोटी तहवाला। जाडो। ४. जबरदस्त। ५. पेचीदा। ६. गम्भीर।
संग्रह—*(न०)* १. संचय। जमा। ढेर। संगरो। २. इकट्ठा करने की क्रिया या भाव। ३. वह पुस्तक जिसमें अनेक विषय एकत्रित किये गये हो। बहुत सी बातो, रचनाओं इत्यादि का एकत्र ग्रंथ।
संग्रहकर्ता—*(न०)* संग्रह करने वाला।
संग्रहखोर—*(वि०)* १. संग्रह करने वाला। संगरेखोर। २. निकम्मी वस्तुओं का संग्रह करने की आदत वाला।
संग्रहणी—*(ना०)* दस्त लगने की एक बीमारी। संगरणी।
संग्रहालय—*(न०)* विविध प्रकार की प्राचीन और अद्‌भुत एवं कलापूर्ण वस्तुओं का संग्रह स्थान। जानने तथा देखने योग्य वस्तुएँ जहाँ इकट्ठी की हुई हो, वह स्थान और उनका प्रदर्शन। अजायबघर। म्यूजियम। अजबघर। अद्‌भुतालय।
संग्राम—*(न०)* १. युद्ध। जुध। लड़ाई। बादशाह अकबर की एक बंदूक का नाम।
संघ—*(न०)* १. मंडल। २. यात्रियो का समूह। ३. कार्य या ध्येय के लिये गठित संस्था या दल। ४. राज्यों या संस्थाओं का केन्द्रीय संगठन। ५. बौद्ध भिक्षुओं का समाज, मठ या विहार।
संघट—दे० संकट।
संघटन—दे० संगठन।
संघरणी—दे० संग्रहणी।
संघरणो—दे० संगरणो।
संघरो—दे० संगरो।
संघवी—*(न०)* १. यात्रा का संघ निकालने वाला। २. संघ का नेता। ३. अमुक जाति की एक शाखा। ४. उपशाखा। अल्ल।
संघाड़ियो—*(वि०)* संघाड़े पर हाथी दाँत, लकड़ी आदि के अनेक प्रकार के आकार उतारने वाला। चोरवियो।
संघाड़ो—*(न०)* खरादी की चरख।
संघात—*(न०)* १. आघात। २. आकस्मिक आघात।
संघातक—*(वि०)* घात करने वाला। मारने वाला।

संघार—*(न०)* संहार । नाश ।
संघारणो—*(क्रि०)* संहार करना । मारना । नाश करना । संहारणो ।
संघाराम—*(न०)* १. बौद्ध मठ । २. आश्रम ।
संच—*(न०)* १. संचय । २. देखभाल । ३. रक्षा ।
संचगर—*(न०)* १. कृपण । कंजूस । २. संचय करने वाला ।
संचणो—*(क्रि०)* १. एकत्रित करना । संग्रह करना । संघरणो । २. रक्षा करना ।
संचर - *(न०)* १. देह । २. विकास ।
संचरणो—*(क्रि०)* १. जाना । विचरण करना । २. उत्पन्न होना । पैदा होना । सांचरणो । ३. फैलाना ।
संचर-लूण—*(न०)* सोचर नमक । काला नमक ।
संचाणो—*(न०)* जामनगर (सौराष्ट्र) के पास आये हुये भक्त ईसरदास की कर्म-भूमि का नाम । जहां चौरे मे उनके पगलियो की पूजा होती है ।
संचार—*(न०)* १. गमन । २. प्रसार । फैलाव । ३. आने जाने के साधन । ४. मार्ग प्रदर्शन । ५. कष्ट ।
संचारक—*(वि०)* १. संचार करने वाला । २. चलाने वाला । *(न०)* १. दलपति । २. नायक ।
संचार-जीवी—*(वि०)* खानाबदोश ।
संचार-साधन—*(न०)* यातायात से संबंध रखने वाले साधन । गमनागमन, डाक-तार इत्यादि के साधन ।
संचारी—*(वि०)* संचार करने वाला । *(न०)* रस के परिपाक मे सहायक भाव। साहित्य मे वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते है । ४. गीत के चार चरणों मे से तीसरा ।
संचालक—*(न०)* १. कार्यालय का काम चलाने वाला । २. व्यवस्था करने वाला ।
संचित—*(वि०)* इकट्ठा किया हुआ । संग्रह किया हुआ । संघरियोड़ो ।
संचित-कर्म—*(न०)* पूर्व जन्म के शेष रहे हुए कर्म (जिनका फल भुगतना है) ।
संचो—*(न०)* १. संचय करने का काम या भाव । २. संचय । ३. सांचा । ठप्पा । ४. यंत्र ।
संछेप—*दे०* संक्षेप ।
संज—*(न०)* १. सामान । २. घोड़े, ऊंट आदि की जीन । सवारी के लिये कसा जाने वाला सामान । ३. सामर्थ्य । हैसियत । ४. संकेत । ५. लक्षण । चिन्ह । ६. सम्पन्नता ।
संजनी—*(ना०)* धनुष की डोरी । पनच । प्रत्यंचा । शिंजिनी ।
संजम—*(न०)* १. निग्रह । २. नियंत्रण । ३. इंद्रिय निग्रह । संयम । ४. दमन । ५. अभाव । ६. बंद ।
संजमनीपत—*(न०)* यमराज ।
संजमी—*(वि०)* १. इंद्रिय निग्रह करने वाला । जितेंद्रिय । संयमी । *(न०)* १. यति । २. ऋषि ।
संजवारी—*(ना०)* १. झाड़ू । बुहारी । सारवणी । २. कचरा । दे० संजेरो ।
संजवारो—*(न०)* झाड़ू । बुहारा । दे० संजेरो ।
संजात—*(वि०)* १. उत्पन्न । २. साथ मे उत्पन्न । ३. प्राप्त ।
संजाब—*(ना०)* कपड़े पर लगाई जाने वाली मगजी । संजाफ ।

संजीदगी—(ना०) १. गंभीरता। २. शिष्टता। ३. सहिष्णुता।

संजीदो—(वि०) १. गंभीर। २. शांत। ३ बुद्धिमान। संजीदा।

संजीवण—(वि०) १. जिलाने वाला। सजीवन। २. पुनर्जीवित करना।

संजीवण-बूंटी—(ना०) नया या पुनर्जीवन देने वाली औषधि। संजीवणी।

संजीवणी—(ना०) १. संजीवनी। संजीवण बूंटी। पुनर्जीवन देने वाली एक औषधि। २. पुनर्जीवन की विद्या।

संजीवणी-बूंटी—दे० संजीवण बूंटी।

संजीवन—दे० संजीवण।

संजीवनी—दे० संजीवणी।

संजुग- (न०) १. युद्ध। २. मिहंत।

संजुगत—दे० संयुक्त।

संजुत—दे० संयुक्त।

संजेरो—(न०) १. भोजन कर लेने के बाद झाड़ू निकालना, चौका-पोता करना और बरतन आदि मांज कर रसोई में सफाई करने का काम। २. कचरा-कूस। संजवारो। ३. भोजन बनाने के बाद बिना साफ किया हुआ रसोई का सामान (बरतन इत्यादि)।

संजोग—दे० संयोग।

संजोगड़ो—दे० संजोगी सं० ५.

संजोगी—(वि०) १. संयोगी। संयोग करने वाला। २. संयुक्त। मिला हुआ। ३. विवाहित। ४. वह जिसे अपने संबंधी, मित्र, पत्नी इत्यादि कुटुंबी जनों से वियोग सहन नहीं करना पड़ा हो। ५. नीच जाति का व्यक्ति, जो साधु का भेष बना कर भिक्षा मांगता हो। नकली साधु। संजोगड़ो।

संजोड़णो—(क्रि०) १. साथ में लेना। २. साथ में लेकर चलना। ३. संयुक्त करना।

संजोणो—दे० संजोवणो।

संजोरो—(वि०) जबरदस्त। सजोरो। बलवान।

संजोवणो(क्रि०) १. सम्हालना। २. सम्हाल कर रखना। ३. सजाना। ४. सजा कर रखना। ५. स्थापित करना। रखना। ६. दीपक जलाना। ७. उत्पन्न करना। ८. देखना। तपास करना। ९. प्रकाश करना। १०. संयुक्त करना।

संज्ञा—(ना०) १. व्याकरण में वह शब्द जो किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु का बोधक होता है। नाम। अभिधान। ३. चेतना। होश। ४. बुद्धि। समझ। ५. ज्ञान। ६. सूर्य की पत्नी का नाम। ७. गायत्री। ४. संकेत।

संज्ञार्थक क्रिया—(ना०) वह क्रिया जो संज्ञा-अर्थ को सूचित करती है। वह क्रिया-शब्द जो संज्ञा का अर्थ बोधक होता है। (व्या०)। जैसे—रुदन। (न०) रोना। प्रक्षालन (न०) धोना।

संज्या—(ना०) संध्या। सांझ। शाम।

संझ—(ना०) संध्या। सांझ। दे० सांज।

संझाचळ—(न०) राक्षस।

संठ—(वि०) सम्पन्न।

संठणो—(क्रि०) १. धन, धान्यादि से संपन्न होना। दरिद्रता का मिट जाना। धनवान होना। २. योग्य होना। ३. सबल होना।

संठियोड़ो—(वि०) अच्छी स्थिति को प्राप्त। संस्थित। संपन्न। धन-धान्य वाला।

संड-मुसंड—*(वि०)* मोटा ताजा। हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट।
सडावो—दे० संडासो।
सडास—*(न०)* पायखाना। शौचकूप।
संडासी—*(ना०)* सँडसी। पकड़। सँडासी।
सडासो—*(न०)* सुनारो का लंबा चिमटा। सँडावो। चींपियो।
संडोरियो—*(न०)* चरस का एक उपकरण।
सढ—*(न०)* नपुंसक। हिजड़ा। नाजर। हींजड़ो।
सत—*(न०)* १. साधु। २. महात्मा। ३. साधु पुरुष। पवित्र पुरुष। ४. विरक्त पुरुष। ५. ईश्वर भक्त। *(वि०)* १. धर्मात्मा। २. पवित्र।
सतणो—*(क्रि०)* १. छिपना। लुकणो। २. संतप्त होना। दुखी होना।
संतत— *(अव्य०)* सदा। सर्वदा। निरतर। सवाही। सदां।
सतति—*(ना०)* सतान। बाल-बच्चे। औलाद।
सतति-पथ—*(न०)* मग। योनि।
सतमस—*(न०)* अधेरा। अंधारो।
संत-महिमा—*(न०)* १. संतो की महिमा। २. पं० भगनीराम साकरिया द्वारा रचित निरजनी संप्रदाय के सतो की महिमा का एक ग्रंथ।
संतरण—*(न०)* १. तैरना। २. उबरना। ३. नाव। *(वि०)* तारने वाला। उबारने वाला। उद्धारक।
संतरी—*(न०)* पहरेदार। पोहरायत।
संतरो—*(न०)* संतरा। नारंगी।
सतवाणी—*(ना०)* संतो की वाणी। संतो का उपदेश।
संत-समागम—*(न०)* सतो के साथ सहवास या उनके उपदेश, कीर्तन इत्यादि का लाभ। २. सत्संगति। संतो की संगति।
संत-साहित्य—*(न०)* संतों द्वारा रचित साहित्य।
संताड़णो—*(क्रि०)* छिपाना।
सताणी—*(ना०)* नारी संत। साधणी।
सताणो—*(क्रि०)* १. सताना। दुख देना। २. छिपाना। ३. छिपना। लुकणो।
सतान—*(ना०)* सतति। औलाद। बाल-बच्चे। १. अपत्य। २. प्रजा। ३. वंश। कुळ।
सताप—*(न०)* १. क्लेश। दुख। २. चित्तोताप। मानसिक कष्ट। ३. पछतावा। पश्चात्ताप। ४. दाह। जलन। ५. अतर्पीड़ा। ६. उत्तेजन। जोश। ७. शत्रु।
सतापणो—*(क्रि०)* १. सताप देना। अत्यधिक कष्ट देना। २. जलाना। ३. मानसिक कष्ट पहुचाना। ४. सताप होना।
संतावणो—*(क्रि०)* १. सताना। सताप देना। २. छिपाना। ३. छिपना।
संतीजणो—दे० संतणो।
सतुष्ट—*(वि०)* १. जिसे सतोष हो गया हो। सतोष प्राप्त। २. तृप्त।
सतोख—दे० संतोष।
सतोखणो—*(क्रि०)* १. संतोष करना। २. सतोष होना। ३. सतोष दिलाना। राजी करना। ४. उपहार देना। ५. दान देना। ६. बहन-बेटी को मनवांछित वस्त्रादि देकर राजी करना।
संतोखी—दे० सतोषी।
सतोष—*(न०)* १. तृप्ति। २. समाधान। ३. प्रसन्नता। ४. सुख। ५. जितना

हो उतने से संतुष्ट होना। ६. किसी बात की चिंता या शिकायत न करना। ७. सदा प्रसन्न रहना।

संतोषी—*(वि०)* संतोष रखने वाला। प्राप्त स्थिति मे संतोष मानने वाला।

संतोषी देवी—*(ना०)* एक लोक देवी। जिसका व्रत तथा पूजा शुक्रवार को की जाती है और अमुक परिमाण मे उस दिन चने हो खाये जाते है।

संतोस—दे० संतोष।

संथ—*(न०)* १. मत। राय। २. साथ। ३. सम्पन्न। ४. संग्रह। ५. रीति। ढंग। प्रकार। ६. बार। समय। दफा।

संथणो—*(क्रि०)* १. संग्रह करना। २. सम्हाल कर रखना।

संथा—*(ना०)* एक बार या एक दिन मे पढ़ाया जा सकने वाला पाठ। सबक।

संथारो—*(न०)* मृत्यु निकट होने के समय माया, ममता, खान-पान इत्यादि का त्याग कर मृत्यु का आह्वान करना (जैन धर्म मे) मरणव्रत।

संथियोड़ो—*(भू०क्रि०)* संग्रह किया हुआ। सम्पन्न।

संथो—*(न०)* १. पूंजी। २. धन। सम्पत्ति। ३. भंडार। कोठार। ४. परिग्रह। संग्रह। संचो।

संद—*(न०)* १. पानी के रिसने से उत्पन्न गीलापन। सील। भेज। २. छेद। दरार। ३. रज। धूलि।

संदण—दे० स्यंदन।

संदणारोही—दे० स्यंदनरूढ।

संदर्भ—*(न०)* १. निबंध। प्रबंध। २. प्रकरण। प्रसंग। ३. किसी वस्तु या बात का पूर्वापर संबंध। ४. पूर्वापर अर्थ का संबंध। ५. किसी बात का उसके आगे-पीछे की या आसपास की बातों की पार्श्वभूमि में अन्वय या अर्थ।

संदर्भ-ग्रंथ—*(न०)* १. वह ग्रंथ जिसमे अन्य पुस्तकों मे आये हुए गूढ़ विषय या शब्दो का स्पष्टीकरण हो। २. विशिष्ट, विविध या विस्तृत जानकारियों से युक्त ग्रंथ या कोश।

संदल—*(न०)* चंदन। मलय।

संदली—*(वि०)* चंदनी रंग का। *(न०)* १. वह हाथी जिसके बाहर के दांत न हो। मकुना हाथी। मकनो। २. एक प्रकार का कपड़ा।

संदिग्ध—*(वि०)* १. संदेहपूर्ण। संदेहास्पद। २. जिस पर संदेह हो। ३. जिसके बारे में अपराधी या दोषी होने का अनुमान हो। ४. अस्पष्ट या अनिश्चित अर्थ या व्याख्या वाला।

संदी—*(अव्य०)* 'की' विभक्ति का एक पर्याय। हंदी।

संदीपन*(न०)* १. कामदेव का एक बाण। २. उद्दीपन। ३. श्रीकृष्ण और सुदामा के गुरु। सांदीपनि।

संदूक—*(न०)* लकड़ी या धातु की पेटी। बक्स।

संदूकड़ी—*(ना०)* छोटा संदूक।

संदेड़ो—*(न०)* एक वृक्ष।

संदेश—*(न०)* १. खबर। समाचार। २. प्रेषित आदेश, आज्ञा, सूचना या बात। संदेशो। ३. विवाहादि उत्सव, समारोह इत्यादि पर किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का मंगलकामनात्मक आशीर्वचन।

संदेश-काव्य—(न०) वह काव्य जिसमे विरही अपने प्रियतम के पास कुरजां (क्रौंच) भौंरा, बादल, पवनादि के माध्यम से सदेश भेजता है।

संदेस—दे० सदेश।

संदेसो—दे० संदेश।

संदेह—(न०) शंका। सशय। शक। वहम। संको।

संदेहाळ—(वि०) वहमी।

सदेहो—दे० सदेश।

संदो—(अव्य०) नर जाति की 'का' विभक्ति का एक पर्याय। हदो।

संदोह—(न०) समूह। झुंड।

संध—(अव्य०) निश्चय ही। (न०) सधि। सांध। सांधो।

संधणो—(क्रि०) १. जुड़ना। सयुक्त होना। संधना। सांधीजणो। २. बनना। तैयार होना। ३. जोड़ा जाना। सांधीजणो।

संधाणो—(न०) पौष्टिक पाक। (क्रि०) जोड़ लगवाना। जुड़वाना।

संधाणो-सांधणो—(मुहा०) अशक्त व्यक्ति के लिए पौष्टिक पाक बनवाना। शीतकाल मे शक्ति बनाये रखने के लिये बलवर्धक औषधियो का सधाना बनाना।

संधावणो—(क्रि०) टूटे हुए को संधवाना। संधाना।

संधि—(ना०) १. दो टुकड़ों या मिलने का स्थान। जोड़। गांठ। २. दो वस्तुओं के बीच की दरार या अवकाश। ३. दो राज्यों या दलो के बीच समझौता। सुलह। ४. दो वर्णों के पास-पास आने से और उनके मिलने से होने वाला परिवर्तन। जोड़ना या विकार (व्या.)। ५. दो युगों या विशिष्ट समयो के बीच का काल। ६. एक स्थिति के समाप्त होने पर दूसरी स्थिति या अवस्था के आरंभ का समय। ७. संयोग। मेल। ८. सुलह। करार।

संधि-काल—(न०) एक स्थिति या अवस्था की समाप्ति तथा दूसरी के प्रारभ का समय। सक्रमण काल।

संधि-पत्र—(न०) राज्यों इत्यादि के बीच मे सधि की शर्तों इत्यादि का लेख। करारनामो। राजीनामो।

संधि-विच्छेद—(न०) १. सधिगत शब्दो को अलग-अलग करना। २. संधि या समझौते का टूटना।

संधि-स्वर—दो स्वरो की सधि होने से बना हुआ स्वर वर्ण, जैसे—ऐ, औ।

सध्या—(ना०) १. सायंकाल। सांझ। शाम। दिन के अन्त का समय। २. दिन और रात (रात और दिन) का सधिकाल। ३. दो युगो के बीच का समय। युगसंधि। ४. सध्याकाल में किया जाने वाला सूर्योपासन, गायत्री जप और प्राणायाम इत्यादि वैदिक कर्म। सवेरे, दुपहर और संध्या के समय की जाने वाली पूजा-अर्चना।

संध्या-करणी—(मुहा०) त्रिकाल संध्याओ मे पाठपूजा, गायत्रीमंत्र आदि का जप करना।

संध्या-काळ—(न०) १. सांझ। शाम। २. संध्यादि नित्य कर्म करने का समय।

संध्या-टाळणी—(मुहा०) संध्या समय सभी कांम बंद करके ध्यान-वंदन करना।

संध्या-फूलणो—*(मुहा०)* सूर्यास्त की संध्या के समय आकाश का लाल पीले आदि विविध रंगों से प्रफुल्लित होना।

संध्या-माता—*(ना०)* सूर्यास्त के बाद लगभग आधे-पौन घंटे के समय तक का संध्याकाल का नाम।

संध्या-वांदणो—*(मुहा०)* संध्यावंदन करना।

संध्योपासना—*(ना०)* संध्याकाल में किया जाने वाला पूजा, उपासना आदि नित्य-कर्म।

संनिधान—*(न०)* निकटता। समीपता। *(क्रि०वि०)* निकट। पास।

संन्यास—*(न०)* १. संसार व्यवहार का त्याग। २. स्वेच्छापूर्वक त्याग। परित्याग।

संन्यासाश्रम—*(न०)* हिन्दुओं के चार आश्रमों में से चौथा और अन्तिम आश्रम। पर-गृहस्थी के परित्याग से संबद्ध जीवन का एक आश्रम।

संन्यासी—*(न०)* जिसने संन्यास लिया हो वह व्यक्ति। साधु।

संप—*(न०)* १. मेल। एकता। २. मित्रता। ३. प्रेम। ४. बिजली। संपा।

संपज—*(ना०)* १. प्राप्त। मिला हुआ। २. उत्पन्न।

संपजणो—*(क्रि०)* १. प्राप्त होना। मिलना। २. देना। ३. उत्पन्न होना।

संपट—*(न०)* १. मौका। २. नाश।

संपटपाट—*(न०)* नाश। बरबाद।

संपड़ावणो—*(क्रि०)* स्नान करवाना। झीलावणो। न्हवाणो।

संपणो—*(क्रि०)* १. प्राप्त होना। मिलना। २. संप से रहना। मिलकर रहना। ३. बिजली का चमकना।

संपत—*(ना०)* दे० संप। दे० संपत्ति।

संपत्ति—*(ना०)* १. धन। दौलत। जायदाद। २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपत्ति-शास्त्र—*(न०)* संपत्ति की उत्पत्ति और उसके बँटवारे आदि के नियमों की चर्चा करने वाला शास्त्र। अर्थ-शास्त्र।

संपदा—*(ना०)* १. संपत्ति। धन। २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपन्न—*(वि०)* १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। २. युक्त। सहित। ३. समृद्ध। धनी। ४. वैभवशाली। श्रीमान्।

संपरदा—*(ना०)* १. धार्मिक पंथ। सम्प्रदाय। २. मित्रमंडली। ३. मंडली। गोष्ठी। ४. बाल बच्चे। बाल मंडली। ५. संगठन। ६. पक्ष। तड़। धड़ो।

संपराय—*(न०)* युद्ध।

संपर्क—*(न०)* १ संबंध। लगाव। वास्ता। २. संयोग। ३. स्पर्श।

संपा—*(ना०)* बिजली। मेघ विद्युत। खिवण।

संपाड़ो—*(न०)* स्नान। नहाना। सिनान। न्हाण।

संपाड़ो-करणो—*(क्रि०)* स्नान करना। झीलणो।

संपादक—*(न०)* १. वह व्यक्ति जो दूसरे की रचना को शुद्ध कर प्रकाशन योग्य बनाता है। पत्र-पत्रिका, पुस्तक, लेखों इत्यादि को चुनने, ठीक करने तथा प्रकाशन योग्य बनाने वाला व्यक्ति। संपादन करने वाला। २. कार्य को व्यवस्थित, संपन्न, संयोजित, तैयार या प्रस्तुत करने वाला। ३. कार्य संपन्न करने वाला व्यक्ति।

संपादकीय—(वि०) १. संपादक का। २. संपादक का लिखा हुआ। ३. संपादक से संबंधित। ४. संपादक संबंधी। (न0) समाचार पत्र का वह लेख जो किसी विशिष्ट विषय पर संपादक ने लिखा हो।

संपादन—(न०) १. किसी पुस्तक या समाचार-पत्र आदि को क्रम, पाठादि लगा कर प्रकाशित करने योग्य बनाने का काम। २. काम इत्यादि को अच्छी प्रकार से पूरा करने का काम। ३. प्राप्ति।

संपुट—(न०) १. दोना। २. अंजलि। ३. फूल का कोश। ४. औषध इत्यादि पकाने के लिये (औषध भरे हुये सकोरे का) गीली मिट्टी से लपेटा हुआ बंद मुँह का पात्र। ५. मूल मंत्र के पहिले व बाद की पवित्र शब्दावली। ६. इसको दुहराकर के पाठ या जप करने की तांत्रिक विधि। ७. बात करते बीच में बोला जाने वाला अनावश्यक शब्द। तकिया कलाम।

संपूज्य—(वि0) अत्यधिक आदरणीय।

संपूरण—दे० संपूर्ण।

संपूर्ण—(वि0) १. पूरी तरह से भरा हुआ या किया हुआ। २. पूरा। समूचा। ३. समाप्त। ४. सातों स्वर जिस राग में लगते हों, उसका विशेषण, जैसे—संपूर्ण राग।

संपेखणो—(क्रि0) १. देखना। जोवणो। २. जांच करना। जांचणो।

संपोळियो—(न0) १. सांप का बच्चा। २. छोटा सांप। सळपोटियो।

संप्रति—(अव्य0) अभी। इसी समय। अबार। हमार।

संप्रदान—(न0) १. दान देने की क्रिया या भाव। २. मंत्रोपदेश। दीक्षा। ३. भेंट। नजर। ४. जिसके निमित्त क्रिया या कार्य हुआ हो, उस व्यक्ति या वस्तु शब्द का कारक। चौथा कारक (व्या०)।

संप्रदान-कारक—दे० संप्रदान सं० ४.

संप्रदाय—(न0) १. परंपरागत मत। २. विशिष्ट मत या सिद्धान्त। ३. धार्मिक मत। पंथ। ४. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। ५. रिवाज। परिपाटी।

संबद्ध—(वि०) १. बंधा या जुड़ा हुआ। २. संबंधयुक्त। ३. संयुक्त।

संबर—(न0) १. पानी। २. मछली। ३. हरिण। ४. युद्ध। ५. तालवृक्ष। ६. मेघ। ७. पर्वत। ८. एक राक्षस का नाम। (वि0) १. सुखी। २. भाग्यवान। ३. बहुत बढ़िया।

संबरारि—(न0) कामदेव। शंबरारि।

संबल—(न0) १. यात्रा मे साथ ली हुई भोजन सामग्री। रास्ते में खाने का सामान। पाथेय। संबाल। २. आश्रय। सहारा। ३. जल। ४. एक वाद्य। दे० संबाळ।

संबंध—(न0) १. संयोग। २. संपर्क। ३. नाता। रिश्ता। ४. मैत्री। ५. सगाई। ६. विवाह। ७. परिचय।

संबंधकारक—(न0) एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबंध सूचित करने वाला कारक। 'षष्टी विभक्ति' का कारक। संबंध वाचक (व्या०)।

संबंधी—(वि०) १. जिसका विवाहादि के कारण संबंध बंधा हो। २. संबंध रखने वाला। (न0) समधी। रिश्तेदार।

सगो। वेवाही। ब्याही। (ग्रव्य०) १. संबंध में। विषयक। २. सिलसिले में। प्रसंग।

संबाळ—(ना०) १. पाथेय। संबल। भातो। २. दूसरे गाँव के सगे-संबंधियों के यहाँ भेजी जाने वाली मिठाई आदि भोज्य पदार्थों की भेंट।

संबाहणो—(क्रि०) १. धारण करना। सम्हालना। २. धारण कराना।

संबोध—(न०) पूरा ज्ञान। सम्यक् ज्ञान। पूरी जानकारी।

संबोधणो—(क्रि०) १. संबोधन करना। २. उपदेश करना। ३. समझाना।

संबोधन—(न०) १. जगाना। बोध कराना। २. पुकारना। ३. संबोधित करने या पुकारने के लिये प्रयुक्त शब्द।

संबोधन-कारक—(न०) वाक्य में संबोधन शब्द कारक रूप (व्या०)।

संभ—(न०) १. संभव। २. संभावना। ३. उत्पत्ति। ४. संयोग। ५. सृष्टि। ६. ध्वंस। नाश। ७. ईश्वर। शिव। ८. ब्रह्मा।

संभणो—(क्रि०) १. संभव होना। २. तैयार होना। ३. सावधान होना। ४. रोग मुक्त होकर स्वस्थ होना। ५. भार उठाया जाना।

संभर—दे० साँभर।

संभरणो—(क्रि०) १. याद आना। २. याद होना। ३. सुमिरण करना या होना।

संभर-पति—(न०) साँभर नगर या प्रदेश का चौहान राजा।

संभरा-देवी—दे० साँभरा देवी।

संभरा-माता—दे० साँभरा माता।

संभरियो—(न०) चौहान राजा या क्षत्री। संभरी।

संभरी—(न०) १. चौहान राजपूत। २. शाकंभरी देवी। साँभरी।

संभरीक—(न०) चौहान क्षत्री। (वि०) साँभर क्षेत्र का रहने वाला।

संभरीनाथ—(न०) १. साँभर का अधिपति। २. पृथ्वीराज चौहान।

संभरीराव—(न०) १. चौहान राजा। २. शाकंभरीपति। साँभर का राजा। ३. साँभर का अधिपति पृथ्वीराज चौहान।

संभरघो—दे० संभरियो।

संभळणो—(क्रि०) १. गिरने, फिसलने, आक्रमण इत्यादि से सावधान रहना। सँभलना। सम्हलना। २. तैयार होना। सजना। सँवरना। ३. सुनना। साँभळणो। ४. सुनाई देना। सुणीजणो।

संभळामणी—(ना०) १. प्रदेश आदि किसी अन्य स्थान से प्राप्त होने वाला किसी स्नेही-संबंधी की मृत्यु का पत्र या समाचार। २. सँभळावणी का शोक। समळावणी।

संभावणी—दे० सँभळामणी।

संभळावणो—(क्रि०) १. सँभलाना। सम्हलाना। २. सुनाना। ३. किसी संबंधी के मर जाने के समाचार कहना।

संभळी—(ना०) १. गणिका। २. जादूगरनी। शांवरी।

संभव—(न०) १. जन्म। उत्पत्ति। २. जिसके घटित होने की संभावना हो। ३. किये जाने या होने योग्य। मुमकिन। शक्य। होने योग्य। ४. उत्पन्न या घटित होने की स्थिति या भाव। ५. घटित होना। ६. अयुक्तता। ७. ध्वंस। नाश।

संभवणो—(क्रि०) १. संभव होना। २. उत्पन्न होना। ३. उत्पन्न करना।
संभा—(ना०) १. सभा। छभा। २. अफीम गोष्ठी। रिहाण।
संभाणो—दे० संभावणो।
संभार—(ना०) १. ख्याल। विचार। २. याद।
संभारणो—(क्रि०) याद करना। स्मरण करना। (न०) स्मारिका।
संभाळ—(ना०) १. देखरेख। हिफाजत। २ पालन-पोषण। ३. व्यवस्था। ४. यत्न। ५. चेत। होश।
संभाळणो—(क्रि०) १. देखरेख करना। २ पालन-पोषण करना। ३. व्यवस्था करना।
संभाळियोड़ो—(भू०कृ०) संभाला हुआ।
संभाळीजणो—(क्रि०) सम्हाला जाना।
संभाळो—(न०) १. निगरानी। देखरेख। २. पुलिस की जांच या तफतीश। ३. तपास। तलाशी। झड़की।
संभाळो लेणो—(मुहा०) तलाशी लेना।
संभावणो—(क्रि०) १. धारण करना। सम्हालना। २. सुपुर्द करना। ३. संभव होना। ४. तैयार करना। ५. सम्हलाना।
संभावना—(ना०) १. शक्यता। हो सकना। २. कल्पना। अनुमान। ३. एक अलंकार (साहित्य)।
संभाषण—(न०) वार्तालाप। बातचीत।
संभियोड़ो—(वि०) तैयार। तत्पर।
संभु—दे० शंभु।
संभूमेळो—(न०) १. संन्यासियों का भोजन समारोह। २. साधियों के मृतक का भण्डारा। ३. अनेक जातियों का समूह। ४. अनेक जातियों का सहभोज। ५. भिन्न-भिन्न जातियों का अव्यवस्थित समूह और उसका आचार-विचार रहित खान-पान। ६. जुदी-जुदी जातियों का समूह। ७. सभी प्रकारों का मिलान। सेळभेळ।
संभोग—(न०) १. पूरा उपयोग। २. मैथुन।
संभ्रम—(न०) १ पुत्र। अंगोभ्रम। अंगज। डीकरो। २ भ्रांति। भ्रम। ३. भूल। ४ भय। डर। ५. चक्कर। ६ त्वरा। उतावळ। ७. उत्पात। ८. संदेह। शक। ९ आवेग। १०. घबराहट। बेचैनी। ११. मान। १२. गौरव। १३. उत्कंठा।
संभ्रांत—(वि०) १. प्रतिष्ठित। सम्मानित। २ क्षुब्ध। व्यग्र। ३. भ्रम में पड़ा हुआ।
संमत—(वि०) १. सम्मत। सहमत। २ स्वीकृत। माना हुआ। दे० संवत।
संमारजणी—(ना०) मार्जनी। झाड़ू। बुहारी। संजवारी।
संमुखीन—(अव्य०) सामने। समक्ष। आगे।
संयम—(न०) १. मन और वृत्तियों पर रोक। २. इंद्रिय निग्रह। ३. क्षोभ, आवेगादि का निवारण। ४. हानिकारक वस्तुओं तथा बातों से परहेज। ५. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।
संयमी—(वि०) १. वासनाओं तथा मन को काबू में रखने वाला। आत्मनिग्रही। संयम रखने वाला। योगी। २. पथ्य से रहने वाला। करी राखण वाळो।

संयुक्त—*(वि०)* १. जुड़ा या लगा हुआ। सटा हुआ। २. सहित। ३. साथ-साथ मिल कर काम करने वाले। जिसमें एक से अधिक भागीदार हों।

संयोग—*(न०)* १. दो या अधिक बातों का अचानक एक साथ होना, मिलना या आना। २. मिलन। मेल। ३. मिश्रण। ४. समागम। ५. संभोग। सहवास। ६. लगाव। ७. संबंध।

संयोजक—*(वि०)* १. जोड़ने या मिलाने वाला। संयोजन कराने वाला। *(न०)* १. सभा-समितियों के कार्यों को संयोजित करने वाला व्यक्ति। कन्वीनर। २. दो वाक्यों या दो शब्दों को जोड़ने वाला शब्द (व्या०)।

संयोजक-चिह्न—*(न०)* दो शब्दों को जोड़ने वाली, उनके बीच में दी जाने छोटी लकीर। योजिका। हाइफन। जैसे—मान-मर्यादा।

संरक्षक—*(वि०)* १. रक्षण करने वाला। शरण देने वाला। २. संस्था का प्रधान पोषक। *(न०)* अभिभावक।

संरक्षण—*(न०)* १. पालन-पोषण। २. देखरेख। हिफाजत। ३. रक्षा।

संरक्षित—*(वि०)* विशिष्ट रूप से रक्षित। सलामत।

संलग्न—*(वि०)* १. साथ जुड़ा हुआ। संबद्ध। २. नत्थी किया हुआ।

संलय—*(ना०)* नींद। ऊंघ।

संवच्छर—*(न०)* सम्वत्सर।

संवढ्डिय—*(वि०)* संवर्धित।

संवत—*(न०)* १. वह वर्ष गणना जो राजा विक्रमादित्य के समय से चली आ रही है। २. विक्रम संवत का कोई भी वर्ष। ३. संख्या के विचार से चलने वाली वर्षगणना का कोई वर्ष। ४. वर्ष, साल, सम्वत। बरस। ५. सौ वर्ष का समय। सईको।

संवत-आद—*(न०)* मार्गशीर्ष।

संवत्सर—*(न०)* वर्ष। साल। बरस।

संवत्सरी—दे० समछरी।

संवरण—*(न०)* १. चुनना। पसंद करना। २. ढकना। छिपाना। ३. वश में करना। ४. वरण करना।

संवरणो—*(क्रि०)* १. वस्त्र, अलंकार इत्यादि से युक्त होकर सुशोभित होना। सज्जित होना। सजणो। २. मरम्मत होना। संवारा जाना। ३. तैयार होना। ४. समेटना। ५. समेटा जाना। समेटीजणो।

संवरतन—*(न०)* १. प्रलय। परलो। २. प्रलय काल की सात मेघमालाओं में से एक। संवर्तक।

सँवराजणो—दे० सँवराणो।

सँवराणो—*(क्रि०)* १. मरम्मत कराना। दुरुस्त कराना। २. तैयार कराना। ३. निर्माण कराना। बनवाना।

सँवरावणो—दे० सँवराणो।

सँवरारि—*(न०)* कामदेव।

सँवळी—*(ना०)* चील पक्षी। *(वि०)* 'अवळी' का उलटा। अनुकूल।

सँवळो—*(वि०)* १. सीधा। अनुकूल। 'अवळो' का उलटा। २. सांवला। श्यामल।

सँवा—*(अव्य०)* ही। समां।

संवाद—*(न०)* १ बातचीत। वार्तालाप। २. संदेश। ३. वृत्तान्त। ४. खबर। समाचार।

सँवार—*(ना०)* १. हजामत। क्षौर। वपन। खिजमत। स्वाँर। २. सजावट। ३. शेष। ४. लाभ। फायदो। ५. बचत। ६. सुधार। ७. शृंगार।

संवारणो—*(क्रि०)* १. काट-छाँट कर ठीक करना। दुरस्त करना। समारना। समारणो। २. शुद्ध करना। ३. तैयार की हुई वस्तु को अंतिम रूप देना। ४. सुन्दर, सुचारु बनाना। सजाना। *अलंकृत करना।*

संवारो—दे० समारो।

संविधान—*(न०)* १. वह विधान जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन तथा व्यवस्था होती है। २. व्यवस्था। आयोजन। ३. रचना। ४. रीति।

संवेदना—*(ना०)* १. किसी के कष्ट को देखकर मन में होने वाला दुख। २. सहानुभूति।

संवेष्टन—*(न०)* १ लपेटन। वींटण। २. घेरना। ३. बाँधना।

संवेसर—*(ना०)* नींद। सलय ऊंघ।

संवैधानिक—*(वि०)* संविधान संबंधी।

संव्रत—*(न०)* वरुण।

संशय—*(न०)* १. शक। संदेह। साँसो। २. शंकाकुल स्थिति। ३. आशंका।

संशोधक—*(न०)* १. संशोधन करने वाला। दुरस्त करने वाला। २. अच्छी दशा में लाने वाला।

संशोधन—*(न०)* १. शुद्धिकरण। २. दोष-निवारण। भूल सुधारना। ३. प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाने-बढ़ाने संबंधी सुझाव।

संशोधित—*(वि०)* संशोधन किया हुआ।

संस—*(न०)* संशय। भ्रम। साँसो।

संसकार—दे० संस्कार।

संसकारणो—*(क्रि०)* १. दाल, शाक आदि में छौंक लगाना। बघारणो। २. संस्कार करना।

संसक्रित—दे० संस्कृत।

संसद—*(ना०)* १. प्रजातंत्र में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचित सर्वोच्च परिषद्। शासन संबंधी कार्यों में पुराने विधानों में संशोधन तथा नये विधान बनाने के लिये प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्यों की सभा। पार्लियामेंट। २. सभा।

संसय—दे० संशय।

संसरण—*(न०)* राजमार्ग।

संसर्ग—*(न०)* १. मिलाप। मिलन। २. साथ। संगति। ३. मेल-जोल। ४. लगाव। ५. परिचय। ६. सहवास। साहचर्य।

संसार—*(न०)* १. जगत। दुनिया। २. संसृति। जन्म-मरण। आवागमन। ३. मृत्यु लोक। इहलोक। ४. जीवन। घर-गृहस्थी। ५. जीवन का प्रपंच। मायाजाल।

संसार-चक्र—*(न०)* १. बार-बार जन्म लेने तथा मरने का चक्र। भवचक्र। आवागमन। २. सांसारिक प्रपंच। ३. सुख-दुख का चक्र।

संसार-दवग्र—*(न०)* संसार रूपी दावाग्नि।

संसार-बंधन—*(न०)* सांसारिक बंधन। दुनिया के बंधन।

संसार-सागर—*(न०)* संसार रूपी सागर। भव सागर। भवार्णव (वन)।

संसार-सुख—*(न०)* भौतिक सुख।

संसारी—*(वि०)* १. संसार में रहने वाला। २. गृहस्थ जीवन बिताने वाला।

गृहस्थी। ३. संसार संबंधी। लौकिक। ऐहिक। ४. भौतिक। ५. बार-बार जन्म ग्रहण करने वाला। ६. व्यवहार-कुशल।

संसृति—*(ना०)* १. सृष्टि। संसार। जगत। २. चराचर।

संसै—दे० संशय।

संसो—दे० संशय।

संस्करण—*(न०)* १. पुस्तकों आदि की एक बार की छपाई तथा आवृत्ति। एडीशन। २. संशोधन या परिष्कार करने की अथवा नया रूप देने की क्रिया।

संस्कर्ता—*(न०)* १. संस्कार कराने वाला। २. झडूला उतारने वाला। नाई। चूड़ाकर्म कराने वाला।

संस्कार—*(न०)* १. श्रेष्ठ और धार्मिक शिक्षण द्वारा जाना जाने वाला और नित्य व्यवहार में लाया जाने वाला शुद्ध आचरण। २. द्विजातियों के शास्त्र-विहित कार्य। ३. जन्म से मृत्यु तक के धार्मिक, सामाजिक कर्मकांड, उपचारादि। ४. हिन्दुओं में धार्मिक दृष्टि से शुद्धि तथा उन्नत करने के लिये किये जाने वाले सोलह विशिष्ट कृत्य। ५. समाज एवं व्यक्ति पर जीवन-यापन की परिस्थिति, उत्पादन-विधा, शिक्षा-दीक्षा, इत्यादि का सामूहिक परिणाम और तज्जन्य वृत्ति इत्यादि। ६. शुद्धि। परिष्कृति।

संस्कारहीन—*(वि०)* जिसका संस्कार न हुआ हो।

संस्कारी—*(वि०)* १. अच्छे संस्कारों वाला। २. भाग्यशाली। पुण्यशाली।

संस्कृत—*(न०)* १. भारतीय आर्यों की प्राचीन तथा प्रसिद्ध भाषा। २. भारत की एक प्राचीन आर्यभाषा। देवभाषा। *(वि०)* १. शुद्ध किया हुआ। परिष्कृत। परिमार्जित। २. जिसका संस्कार हो गया हो।

संस्कृति—*(ना०)* १. विशिष्ट प्रदेश के लोक जीवन पर भूगोल, जलवायु, उत्पादन-विधा, रहन-सहन, इतिहास, परंपरा, साहित्य, धर्म, दर्शन इत्यादि का एवं तज्जन्य संस्कारों का पुंजीभूत प्रभाव। किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उनका मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल, धर्म तथा सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं। कल्चर। २ सभ्यता, संस्कार, आचार-विचार इत्यादि।

संस्था—*(ना०)* विशिष्ट उद्देश्यों एवं नियमों से संचालित मंडल, समाज या दल। सभा। परिषद्।

संस्थान—*(न०)* १. साहित्य आदि की उन्नति के लिए स्थापित सभा। बड़ी संस्था। २. देश। ३. छोटा राज्य। रजवाड़ा। ४. वह जागीर या प्रदेश, जो अन्य राज्य के बीच में आया हुआ हो। किसी राज्य के बीच में आया हुआ किसी अन्य राज्य का भाग। अन्य राज्यों में बिखरे हुए किसी एक राज्य के भूभाग। ५. छोटे-छोटे राज्यों तथा जागीरों का एक संस्थानीय शासन।

संस्मरण—*(न०)* १. आप बीती या अनुभूत बातों का वर्णन या कथन। किसी व्यक्ति के संबंध की स्मरणीय घटनाएँ तथा उनका उल्लेख।

संहार—*(न०)* १. नाश। ध्वंस। २. प्रलय। ३. अंत। समाप्ति। ४. मार डालना। ५. समेटना।

संहारणो—*(क्रि०)* १. मार डालना। वध करना। २. नाश करना। संघारणो।
संहिता—*(ना०)* १. वेदों का ब्राह्मण ग्रंथो से भिन्न परंपरा से पद, पाठ, इत्यादि के क्रम में सुनिश्चित स्तोत्रों, सूक्तों तथा यज्ञादि के मंत्रों वाला भाग। वेदों का देवों की स्तुति वाला मंत्र भाग। २. (अधिकारियों द्वारा किया गया) नियमों, विधियों आदि का संग्रह। ३. वह ग्रंथ जिसमें पाठादि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। पाठ या पदों का व्यवस्थित संग्रह। ४. व्याकरण में संधि। ५. मिलावट। ६. संकलन। ७. संयोग।
सा—*(सर्व०)* वह। *(ना०)* १. पार्वती। २. लक्ष्मी। ३. संगीत के स्वर सप्तक का प्रथम स्वर। षड्ज का संकेताक्षर। *(अव्य०)* १. पद में प्रयुक्त होने वाला एक सम्मानार्थक शब्द। जैसे—आम्रूं हू सा। जळ अरोगो सा। २. जैसा। समान। *(सर्व० ना०)* वह (स्त्री)। था। हेवा।
साइकल—*(ना०)* दो पहियों वाली एक सवारी गाड़ी।
साइज—*(न०)* १. आकार। २. माप।
साइत—*(ना०)* १. समय। २. क्षण। पल।
साइन—*(न०)* हस्ताक्षर। दस्तखत। स्वाक्षर।
साइर—दे० सायर।
साइवान—*(न०)* एक प्रकार का तंबू। सायबान।
साई—*(ना०)* १. पेशगी। बयाना। २. वह धन जो कोई काम करने के पहिले बात पक्की करने के लिये दिया जाता है।
साईस—दे० सईस।
साइसेंतो—*(क्रि०वि०)* १. भलीभांति। २. संपूर्ण।
साउ—दे० साऊ।
साउज—दे० सावज।
साउजम—*(वि०)* १. सोद्यम। २. सोत्सुक।
साउळ—*(ना०)* एक वस्त्र। ओढ़नी। साड़ी। दे० सावळ।
साउळो—*(न०)* लाल रंग की ओढ़नी। साड़ी।
साउवाळी—*(ना०)* १. जागीरदार की पत्नी। ठकराणी। २. जिसके सासू-ससुर जीवित हों वह सधवा पुत्रवधू।
साऊ—*(वि०)* १. अच्छा। २. सुन्दर। ३. ठीक। सही। ४. स्वस्थ। ५. यथा-तथ्य। ६ प्रामाणिक।
साक—दे० साग।
साकण—दे० साकणी।
साकणी—*(ना०)* शाकिनी। डायन। एक प्रकार की भूतनी।
साकत—दे० साखत।
साकर—*(ना०)* १. चाशनी करके मटकी, कूजे आदि में जमाई हुई चीनी के पासे। मिश्री। मिसरी। नवात। २. शक्कर। चीनी।
साकरिया—*(न०)* १. साक्षर ब्राह्मण। २. ब्राह्मणों की उपाधि या उपगोत्र। ३. एक बंद।
साकळी—*(ना०)* आटे मे गुड़ का पानी मिला कर बनाई हुई खाजा जैसी खस्ता पूरी। शाकल्य। सुंहाळी। सुंवाळी।
साकळें—*(अव्य०)* १. प्रभात समय में। सवेरे। *(न०)* १. प्रातः। प्रभात। २. आने वाला कल।

साकळो—(न०) प्रभात। सवेरा। सुवार।

साकाऊ—(वि०) साका करने वाला। आक्रमणकारी। सांवत।

साका-बंध—(वि०) १. यशस्वी। ख्याति वाला। २. विजयी। ३. प्रामाणिक। ४. विश्वसनीय। ५. आतंक वाला। ६. साकावाला।

साकार—(वि०) १. रूप या आकार वाला। २. मूर्तिमान। (न०) ईश्वर का मूर्तिमान रूप। ईश्वर का मूर्त या अवतरित रूप।

साकारोपासना—(ना०) १. ईश्वर को साकार मान कर या मूर्ति रूप में पूजना। २. भक्ति का एक प्रकार।

साकिन—(वि०) रहने वाला। निवासी। वाशिंदा। रहवासी।

साकी—(न०) १. शराब तथा हुक्का पिलाने वाला व्यक्ति। २. माशूक। प्रिय। (ना०) १. प्याले में शराब भर कर देने वाली स्त्री। २. माशूका।

साकुर-(न०) १. घोड़ा। २. फरास (भाऊ) वृक्ष का डाडा।

साकेत—(न०) १. अयोध्यानगरी। २. रामचंद्रजी का लोक। साकेतधाम। ३. हिंदी महाकवि मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य 'साकेत'। (वि०) साका करने वाला। आक्रमणकारी। साकाऊ।

साको—(न०) १. देश-प्रदेशों को विजय करने के लिए किया जाने वाला आक्रमण। २. आक्रमण। ३. युद्ध। ४. विजयाकांक्षा। ५. युद्धाकांक्षा। ६. युद्ध-विजय का उत्सव। ७. विजय-ख्याति। ८. ख्याति। ९. कीर्ति। १०. साहस या कीर्ति का अनोखा काम। ११. आतंक। धाक। १२. शक सम्वत्। शाका। साका।

साक्षर—(वि०) १. जो पढना-लिखना जानता हो। २. शिक्षित। विद्वान। ३. लेखक। ४. साहित्यकार।

साक्षात—(अव्य०) आँखों के सामने। प्रत्यक्ष। परतख। नजरोनजर। (वि०) मूर्तिमान। साकार। (न०) भेंट। मुलाकात।

साक्षात्कार—(न०) १. प्रत्यक्ष दर्शन। २. ईश्वर से प्रत्यक्ष भेंट। परम तत्व अर्थात ईश्वर का साक्षात अनुभव। ३. भेंट। ४. अनुभूति। ५. ज्ञान।

साक्षी—(वि०) १. वह जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो। चश्मदीद। २. दूर से देखने वाला। तटस्थ दर्शक। (न०) १. गवाह। २. आत्मद्रष्टा। (ना०) १. गवाही। २. शहादत।

साक्षी-भूत—दे० साक्षी नं० २ और (वि०) सं० १।

साख—(ना०) १. खत (दस्तावेज) में साक्षी रूप में किये जाने वाले हस्ताक्षर। सही। २. व्यापार या लेन-देन इत्यादि में आर्थिक क्षमता संबंधी प्रतिष्ठा। ३. लेन-देन में विश्वास तथा खरापन। साहूकारी। ईमानदारी। ४. प्रतिष्ठा। ५. प्रभाव। रोब। धाक। ६. साक्षी। गवाही। ७. वह उपकुल जो किसी कुल के विशिष्ट पुरुष के नाम से प्रसिद्धि में आया हो। वंश का अंग। शाखा। पीढ़ी। ८. शाखा। डाल। डाळी। ९. फसल। खेती। १०. आँखों देखी घटनाओं के संबंध में रची गई कविता। साक्षी काव्य। ११. संबंध। सगापन। रिश्ता। सगाई। १२. द्वार के चौखट की खड़ी दो लकड़ियों में से एक। बारसोत-री-साख। १३. जाति। वर्ग।

जात। १४. प्रामाणिकता। १५. सत्यता। सच्चाई। १६. मर्यादा।

साखत—(ना०) घोड़े की जीन और उसके अन्य उपकरण। (वि०) कुशल। प्रवीण। चतुर।

साखती—(वि०) १. घोड़े पर जीन कसने वाला। २. साखत संबंधी। साखत का। ३. घोड़े की जीन बनाने वाला। ४. कुशल। चतुर।

साखवाळो—(वि०) १. प्रतिष्ठित सम्मानित। २. विश्वासी। भरोसादार।

साख-सीर—(न०) १. किसी काम या बात में एक मत। परस्पर एक-विचार। मिली भगत। २. (निश्चित किया हुआ) समान भाग। ३. साक्षी के सम्मुख किसी काम में निश्चित किया हुआ हिस्सा।

साखा—(ना०) १. शाखा। डाळी। २. विभाग। ३. वंश की उपशाखा। साख।

साखाम्रग—(न०) बंदर। शाखामृग। बांदरो।

साखियात—दे० साख्यात।

साखियो—(न०) १. पर्व तथा मंगलोत्सव के समय आंगन में बनाया जाने वाला मंगल-सूचक चिन्ह या रचना। मांडणा। साथियो। २. स्वस्तिक आकृति।

साखी—(ना०) १. निर्गुणोपासक संतों का ज्ञानोपदेशात्मक दोहा साहित्य। २. साक्षी। गवाह। ३. गवाही। साखी। ४. वृक्ष।

साखीचर—(न०) बंदर।

साखीएो—(वि०) १. समवयस्क। सांईनो। (न०) साथी। मित्र। दोस्त। साथीड़ो। २. संबंधी।

साखोचर—(न०) बंदर।

साखो-व्रख—(न०) वटवृक्ष। वड़। वड़लो।

साखेत—(वि०) १. वीर। २. श्रेष्ठ वंश का। कुलवान। ३. अपने नाम की कुल में शाखा स्थापित करने वाला। (अव्य०) साक्षात्।

साखोचार—(न०) १. विवाहादि में वर-वधू के पूर्वजों का किया जाने वाला क्रमशः विवरण। शाखोच्चार। २. उक्त अवसरों पर वर्णन की जाने वाली वंशावली की कीर्ति।

साख्यात—दे० साक्षात।

साग—(न०) १. विशिष्ट हरी पत्तियां जिनकी तरकारी बनती है। २. पकी हुई तरकारी या भाजी। शाक-भाजी। तरकारी। ३. सागवान का वृक्ष या लकड़ी। सागोन।

सागई—दे० सागेई।

सागड़ी—(न०) १. गाड़ी को हांकने-चलाने वाला व्यक्ति। २. कर्ज के बदले में ऋणदाता के यहाँ बंधक में रहा हुआ व्यक्ति। ओळियो। ओगळियो।

सागण—(अव्य०) १. वही। २. सत्य ही। ३. सचमुच ही। दरअसल ही। यथार्थतः। (वि०) सत्य। यथार्थ। ठीक। सागी।

साग-पात—(न०) १. पत्ते, भाजी, कंद-मूल इत्यादि। २. तरकारी। ३. रूखा-सूखा भोजन। ४. तुच्छ और निकम्मी वस्तु।

सागर—(न०) १. समुद्र। २. बड़ा तालाब या जलाशय। ३. दशपद्म की संख्या। ४. एक प्रकार के सन्यासी।

सागरनेमी—(ना०) पृथ्वी। भूमी।

सागर-मेखळा—(ना०) पृथ्वी। भूमि।

सागवान—*(न०)* १. इमारती लकड़ी का एक वृक्ष। सागोन। २. उक्त वृक्ष की लकड़ी।

साग-सब्जी—दे० सागपात।

सागार—*(न०)* १. शाकाहार। २. उपवास के दिन किया जाने वाला शाकाहार। सैंगार।

सागिरद—*(न०)* १. शिष्य। शागिद। २. नौकर।

सागी—*(वि०)* असल। अकृत्रिम। सागण। सागेई।

सागीड़ो—दे० सागेड़ो।

सागीड़ो—दे० सागेड़ो।

सागूदाना—दे० साबूदाणा।

सागे—*(अव्य०)* साथ में। *(वि०)* १. असल। अकृत्रिम। २. वही। ३. खूब।

सागेई—*(वि०)* १. असल। अकृत्रिम। २. वही। ३. खूब। अच्छी। सागण। *(अव्य०)* वास्तव में। सचमुच। दर-असल।

सागेड़ो—*(वि०)* १ खूब। अत्यधिक। २. बहुत बढ़िया। श्रेष्ठ।

सागै—*(वि०)* १. वही। २. असली। प्रकृत। यथार्थ। *(अव्य०)* १. साथ में। साथ-साथ। २. वास्तव में। सचमुच।

सागो—*(न०)* १. एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओं का एक साथ ही बनाना शुरू करना। २. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं की एक इकाई। ३. साथ। संग। ४. साथ के लोग। ५. राशि। ढेर।

साच—*(न०)* १. सत्य। सच्च। २. वास्तविक। यथार्थ। ठीक। ३. सच्चाई।

साचकलो—*(वि०)* १. अकृत्रिम। सच्चा। खरो। २. प्रामाणिक। सत्यभाषी। ३. यत्न। उपाय। जतन।

साचवणी—*(ना०)* १. सम्हाल। संभाल। साचव कर रखने का मेहनताना।

साचवणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु को यत्न से सम्हाल कर रखना। २. यत्न करना। ३. रक्षा करना। ४. पकड़ना। थामना। ५. स्वास्थ्य की रक्षा करना। ६. पालन करना। ७. अनुसरना। ८. सचेत रहना।

साचवोजणो—*(क्रि०)* सम्हाला जाना।

साचाई—*(ना०)* सच्चाई। सचावट।

साचाणी—*(अव्य०)* १. वास्तव में। सच-मुच। खरेखर।

साचाबोलो—*(वि०)* सत्य बोलने वाला। सत्यवक्ता। सचबोलो। साचो।

साच-माच—*(अव्य०)* १. सचमुच। वास्तव में। यथार्थ में। यों ही नहीं। २. जैसा है वैसा ही।

साचा-माचा—दे० साचमाच।

साची—*(वि०)* १. सच्ची। सत्य। २. शुद्धाचरण वाली। *(अव्य०)* किसी नई या आश्चर्यजनक बात की वास्तविकता की पुष्टि के लिए बात कहने वाले से किया जाने वाला प्रश्न-शब्द। साची ?

साचुकलो—दे० साचकलो।

साचेली—*(वि०)* १. सच्ची। असली। अकृत्रिम। २. जो भ्रम रूप न हो। खरेखर। *(क्रि०वि०)* सच्चे रूप से। दे० साच।

साचेलो—*(वि०न०)* अकृत्रिम। सच्चा। असली। *(क्रि०वि०)* सच्चे रूप से। *(अव्य०)* सच्चे रूप में।

साचो—*(वि०)* १. सच्चा। सत्य। खरा। २. बनावटी नहीं। अकृत्रिम। विशुद्ध। असल। ३. सच बोलने वाला। सत्यभाषी। ४. शुद्ध आचरण वाला। ५. यथायोग्य। उचित।

साचोटपणो—*(न०)* १. प्रामाणिकता। सच्चाई। २. ईमानदारी। सचावट सचोटपणो।

साचोटो—*(वि०)* १. सच्चा। प्रामाणिक। *(न०)* सत्य। सही। सच। साचो।

साचोड़ो—दे० 'साचेलो' तथा 'साचोटो'।

साचोर—*(न०)* मारवाड़ का एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर। प्राचीन नाम सत्यपुर है।

साचोरी—*(ना०)* मारवाड़ का साचोर प्रदेश। *(वि०)* १. साचोर के प्रदेश से संबंधित। २. साचोर का (गाय-बैल)।

साचोरो—*(न०)* १. क्षत्रियों की एक शाखा। २. साचोरा जाति का ब्राह्मण। *(वि०)* १. साचोर नगर से संबंधित। २. साचोर नगर के नाम पर ब्राह्मण जाति का विशेषण या अल्ल।

साचोरो-ब्राह्मण—*(न०)* साचोर नगर (मारवाड़) से उद्गत ब्राह्मण जाति का व्यक्ति।

साज—*(न०)* १. जीन, लगाम आदि घोड़े पर रखने-कसने का सामान। २. ऊँट, घोड़े, बैल आदि की सवारी तथा उनको सिंगारने का सामान। सवारी का सामान। ३. कवच, शस्त्रादि युद्ध का सामान। ४. गाने-बजाने की सामग्री। ५. छोटी सारंगी। ६. सारंगी जैसा एक तंतुवाद्य। ७. वस्त्राभूषण आदि शृंगार का सामान। ८. औजार। ९. कमाया हुआ चमड़ा। १०. स्वास्थ्य। तंदुरुस्ती। ११. रोग-निवृत्ति। *(वि०)* बनाने या मरम्मत करने वाले के अर्थ का सूचक प्रत्यय, जैसे—घड़ीसाज, रंगसाज।

साजण—दे० साजन।

साजणो—*(क्रि०)* १. तैयार करना। सजाना। २. सँवारना। अलंकृत करना। ३. निर्माण करना। बनाना। ४. निश्चित समय पर काम का संपादन कर लेना। ५. किसी वस्तु को इस प्रकार बाँटना या उसका उपयोग करना कि वह सबको उनकी आवश्यकतानुसार अथवा समान परिमाण में प्राप्त हो जाय। ६. वश में करना। अधिकार में करना। ७. मारना। संहार करना। ८. नाश करना।

साजत—*(ना०)* १. तैयारी। २. साज-सज्जा।

साजन—*(न०)* १. पति। भर्ता। २. वैश्य समाज। ३. मित्र। दोस्त। *(वि०)* १. सज्जन। २. प्रेमी। ३. सबंधी। सगो।

साजनिया—*(न०ब०व०)* १. सगा-सबंधी। गिनायत। २. सज्जन लोग।

साजनियो—दे० साजन।

साजबाज—*(न०)* १. वाद्य-सामग्री। २. उपकरण। सामग्री। ३. ठाटबाट। ४. तैयारी।

साज-माँद—*(ना०)* तंदुरुस्ती और बीमारी। स्वास्थ्य और रोग। कोई स्वस्थ, कोई रोगी ऐसी अवस्था।

साजवण—दे० सांजवण।

साज-सामान—*(न०)* १. आवश्यक सामग्री। असबाब। २. उपकरण। ३. ठाट-बाट।

साजी—(ना०) एक क्षार। सज्जीखार। साजीखार। (वि०ना०) १. स्वस्थ। २. प्रखंड। नहीं टूटी हुई। प्रटूट। साबती।

साजीखार—दे० साजी।

साजीवंध—(वि०) १. कमर कस कर तैयार। सज्ज। सज्जित। (न०) प्रयत्न। उपाय।

साजो—(वि०) १. स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग। २. जो टूटा फूटा न हो। प्रटूट। प्रखंड। प्रखंडित। ३. दुरुस्त। साबत। साबतो। ४. जो फटा न हो। दे० साभो।

साजोत-रूप—(न०) ज्योतिस्वरूप। परब्रह्म। परमात्मा।

साजो-ताजो—(वि०) ताजा और नीरोग। प्रसन्न और स्वस्थ।

साजोति—(ना०) १. ज्योतिस्वरूप परमात्मा। २. स्वज्योति। स्वात्मन। आत्मा। ३. परब्रह्म। ४. मोक्ष। ५. परम ज्योति।

साजो-मांदो—(वि०) १. स्वस्थ और बीमार। २. कभी रोगी और कभी निरोगी।

साज्योड़ो—(वि०) सजा हुआ। सज्ज।

साझणो—दे० साजणो।

साझत—दे० साजत।

साझेदार—(न०) हिस्सेदार। भागीदार। सीरवाळो। शिरकती।

साझेदारी—(ना०) हिस्सेदारी। साझा। शिरकत। साझो। सीर।

साझो—(न०) १. भागीदारी। सीर। हिस्सेदारी। २. हिस्सा। भाग। साझा।

साट—(ना०) १. स्त्रियों के पांव का एक गहना। २. सूअर की मोटी चमड़ी या उसका टुकड़ा। ३. चाबुक की मार का निशान।

साटक—(न०) १. चाबुक। कोरड़ो। २. चाबुक की मार। ३. चाबुक मारने का शब्द।

साटको—(न०) चाबुक। कोरड़ो।

साटण—(न०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। साटन। सैटिन।

साटणी—(ना०) १. साटिया जाति की स्त्री। २. साटिया की पत्नी। (वि०) झगड़ाखोर (स्त्री)।

साटन—दे० साटण।

साटमारी—दे० साठमारी।

साटां—(ना०ब०व०) स्त्रियों के पांवों का एक आभूषण।

साटिया—(न०) एक निम्न वर्ग की जाति।

साटियो—(न०) साटिया जाति का पुरुष।

साटी—(ना०) एक घास। साटोड़ी।

साटूक—(न०) एक प्रकार का वस्त्र।

साटै—(अव्य०) १. बदले में। एवज में। २. लिये। वास्ते।

साटो—(न०) १. एक घास। २. कन्या देकर कन्या लेना। कन्या के बदले अपना विवाह करना। आटे-साटे का विवाह। ३. अदला-बदली। विनिमय।

साटोड़ी—(ना०) एक घास। साटो।

साट्या—दे० साटां।

साठ—(वि०) पचास और दस। (न०) साठ की संख्या, '६०'।

साठमार—(वि०) १. हाथियों को लड़ाने वाला। साटमार। २. वीर। बहादुर (व्यंग्य में)।

साठमारी—(ना०) १. हाथियों की लड़ाई। २. साटमार द्वारा हाथियों को खिजा करके या चाबुकों से मार करके लड़वाने

का काम । ३. शिकार के पशुओं को सजा कर, परस्पर लड़वाकर किया जाने वाला शिकार । ४. सूअर का शिकार । ५. परेशानी । हैरानी । ६. मारामारी । ठोकापीटो । लड़ालड़ी । ७. कलह । ककास ।

साठी—*(ना०)* १. साठ वर्ष का समय । २. साठ वर्ष की आयु । ३. साठ वर्ष का अंतर । *(वि०)* साठ का । साठ से सबंधित ।

साठी-कूड़ो—*दे०* साठी कोहर ।

साठीको—*(न०)* साठ पुरसा गहरा कुंआं । *(वि०)* साठ पुरुष (पुरसा) गहरा ।

साठीको कुओ—*दे०* साठी कोहर ।

साठीको कोहर—*दे०* साठी कोहर ।

साठीको बेरो—*दे०* साठी कोहर ।

साठी कोहर—*(न०)* साठ पुरसा गहरा कुंआं । साठीकूड़ो । साठीको ।

साठी चावळ—*(न०)* चावल की एक जाति । एक प्रकार का चावल ।

साठो—*(न०)* साठवां वर्ष (संवत् की गणना में) ।

साड़—*(ना०)* १. दुख । कष्ट । २. लंबी बीमारी । ३. सड़ाध । ४. इल्लत । झंझट ।

साड—*(न०)* आषाढ़ मास का छोटा नाम । आषाढ़ ।

साड़लो—*(न०)* स्त्रियों के पहिनने की धोती । साड़ी ।

साढा—*(वि०)* सार्ध । आधे के साथ । ऊपर आधा, जैसे साढा सात । *दे०* साढा ।

साड़ियो—*(न०)* जाटनियों और सौसनियों के पहनने का घाघरा (अंग०) साड़ो ।

साड़ी—*(ना०)* जनानी धोती ।

साडी—*दे०* साढा । साढी ।

साढी आठ सौ—*(वि०)* आठसौ और पचास । *(न०)* साढी आठसौ की संख्या । '८५०'.

साढी चार सौ—*(वि०)* चारसौ और पचास । *(न०)* साढी चारसौ की संख्या । '४५०'.

साढी छ सौ—*(वि०)* छः सौ और पचास । *(न०)* साढी छःसौ की संख्या । '६५०'.

साढी तीन सौ—*(वि०)* तीनसौ और पचास । *(न०)* साढी तीनसौ की संख्या । '३५०'.

साढी नवसौ—*(वि०)* नौ सौ और पचास । *(न०)* साढी नवसौ की संख्या । '९५०'.

साढी पांचसौ—*(वि०)* पांचसौ और पचास । *(न०)* साढी पांचसौ की संख्या । '५५०'.

साढ़ी सात सौ—*(वि०)* सात सौ और पचास । साढी सात सौ की संख्या । '७५०'.

साढी सौ—*(वि०)* एक सौ और पचास । डेढ़ सौ । *(न०)* साढी सौ की संख्या । '१५०'.

साढ़ो—*दे०* साड़ियो ।

साढ—*(न०)* असाढ़ का छोटा रूप । आषाढ़ मास ।

साढ-साती—*(ना०)* १. शनि के साढ़े सात वर्ष की पनोती । २. शनिग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने या साढ़े सात दिन की अशुभ दशा । ३. बहुत बुरे दिन ।

साढा—(वि०) १. एक और उसका आधा। डेढ़। २. तीन से निन्यानवे की संख्या के आगे लगने वाले एक के आधे का नाम, जैसे—२१॥ या $21\frac{1}{2}$ साढ़ा इक्कीस; ५०॥ या $50\frac{1}{2}$ साढा पचास। इत्यादि। (सिर्फ एक की सख्या के साथ आधा लगने से उसकी संज्ञा 'डेढ' या 'डोढ' कहलाती है और दो के साथ लगने से 'अढी', 'अढाई' या 'ढाई' कहलाती है)। ३. पूरी सख्या (शतान्त) के साथ जुड़ा हुआ सौ का आधा (पचास), जैसे—३००+५०=३५० साढा तीनसौ; ७५० साढा सातसौ इत्यादि।

साढी—दे० साढा।

साढू—(न०) १. पत्नी की बहिन का पति। साली का पति। पत्नी का बहनोई।

साढूती—(ना०) साढू या साले की लड़की। भानजी।

साढूतो—(न०) साढू का लड़का। भानजा।

साण—(ना०) शस्त्रों की धार तेज करने का कुरंड आदि से बना हुआ लुहार का एक चक्राकार उपकरण। शान। शाण। सराण।

साणी—दे० सानी। सं० ३.

साणो—(न०) अनाज की कोठी का छेद जिसके द्वारा अनाज बाहर निकाला जाता है।

सात—(वि०) चार और तीन। (न०) सात की सख्या, '७'.

सातताळी—(ना०) बच्चों का एक खेल।

सात-पांच—(अव्य०) १. रोब, प्रभाव। २. चालाकी।

सात-पांच करणो—(मुहा०) १. रोब जमाना। २. अभिमान की बातें करना। ३. अभिमान करना। ४. चालाकी या चालाकी की बातें करना।

सात-पांच जमावणो—(मुहा०) दे० सात-पांच करणो।

सातपुड़ो—(न०) १. पगतली या हथेली मे होने वाला एक फोड़ा। २. सतपुड़ा का विख्यात पर्वत।

सातफेरा—(न०) पाणिग्रहण के बाद पति-पत्नी की सजोड़े की जाने वाली अग्नि की सात प्रदक्षिणाएँ। पाणिग्रहणोपरान्त साक्षीभूत अग्नि-देवता की वर-वधू द्वारा की जाने वाली सात परिक्रमाएँ।

सात-वीसी—(वि०) एकसौ चालीस।

सातम—(ना०) पक्ष की सातवीं तिथि। सप्तमी।

सातमो—(वि०) क्रम या गिनती में सातवें स्थान पर आने वाला। क्रम में छः के बाद पड़ने वाला।

सातवत—(न०) १. बलिभद्र। बलराम। २. यादव। ३. श्री कृष्ण का भक्त।

सातवारी—(वि०) सात वार की। (अव्य०) सात दिनों मे।

सातवों—दे० सातमो।

सात समंदर पार—(अव्य०) बहुत अधिक दूर। विदेश मे।

साता—(ना०) १. शांति। निरांत। २. सुख-शांति। ३. रोग-निवृत्ति। ४. स्वास्थ्य वृद्धि। ५. नैरोग्य-पृच्छा।

साती—(ना०) सात बिंदियों वाला ताश का पत्ता।

सातू—(न०) १. श्रावण शुक्ल पक्ष और भादों की कृष्ण पक्ष तीज पर सौभाग्य-वती स्त्रियों के व्रत के पारण के लिये

सेके हुए अनाज के आटे से बनाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का मिष्ठान्न। सत्तू मे घी, खांड मिला कर बनाया जाने वाला लड्डू। २. सत्तू। शक्तु।

सातूं रिख—(न०) सप्तऋषि।

सातेइ कारण—(अव्य०) सभी प्रकार। सातों ही कारणो से। सभी कारणों से।

सातैं—(ना०) पक्ष का सातवाँ दिन। सातम। सप्तमी।

सातो—(न०) १. सात सुपारियो की ईकाई। २. विवाह के विभिन्न प्रसंगों या अवसरों पर समधी, समधिनों, नेगियों इत्यादि प्रत्येक को मांगलिक रूप मे बाँटी जाने वाली सात-सात सुपारियाँ। ३. सात का अंक, '७'.

सात्यो—दे० साथियो।

सात्विक—(वि०) १. सत्व गुण वाला। सतोगुणी। २. शुद्धात्मा। निष्कपट। ३. सत्वनिष्ठ। ४. शांत। ५. प्रामाणिक। ६. सद्‌गुणी। ७. सत्ववाला।

सात्विकज्ञान—(न०) सभी प्राणियों को एक दृष्टि से देखने का ज्ञान।

सात्विकभाव—(न०) अंतःकरण मे सत्त्व से उत्पन्न बाह्य आठ भाव या अंग-विकार। [स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर-भग, कंप (वेपथु), वैवर्ण्य, अश्रुपात और प्रलय (मूर्च्छा)] (साहि०)।

सात्रव—(न०) १. शत्रु। वैरी। दुसमी। २. शत्रुगण।

सात्रवट—(ना०) शत्रुता। दुश्मनी। वैर। वैराड़ो। दुसमणावट।

साथ—(न०) १. संगति। संसर्ग। २. सहवास। ३. संग। हेलमेल। ४. संगी। ५. सेवक। नोकरी। ६. सेना। ७. मनुष्यदल। ८ जाति। ९. सम्प्रदाय। १०. मेलजोल। घनिष्ठता। (अव्य०) १. सहित। २. से। ३. विरुद्ध। ४. प्रति। ५. द्वारा। ६. पूर्वक।

साथण—(ना०) साथिन। सहचरी। सहेली।

साथण-क्रोध—(ना०) अग्नि।

साथण-समीर—(ना०) अग्नि।

साथणी—दे० साथण।

साथरवाड़ो—(न०) मृतक के पीछे शोक मनाने को साथरी बिछा करके घर वालों के बैठने की जगह। सापड़।

साथरियो—(न०) १ फटा-पुराना बिछौना। २. घास का बिछौना। ३. साथरवाड़े का बिछौना।

साथरी—दे० सादड़ी।

साथरो—(न०) १. घास का बिछौना। २. किसी के मरने के बाद शोक प्रदर्शित करने को बिछौने बिछा कर बैठे रहने की प्रथा। ३. वह बिछौना जो मृत के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने को आने वालो के लिये बिछाया हुआ रहता है। सापड़। ४. लाशों का ढेर। शव-समूह।

साथळ—(ना०) जाँघ। जंघा।

साथ-साथ—दे० साथो-साथ।

साथ ही—(अव्य०) १. सिवा। अतिरिक्त। २. और भी। ३. अपरंच।

साथियो—दे० सातियो।

साथी—(न०) मित्र। दोस्त। सखा। (वि०) १. साथ मे काम करने वाला सहचर। २. साथ मे रहने वाला। साथीड़ो।

साथीड़ो—(न०) साथी।

साथी-संगी—दे० साथी।

साथे—(अव्य०) १. साथ में। संगाथे। २. से। सामिल। भेळो।

साथो—(न०) १. साथ। संग। २. साथ में रहने या चलने का भाव।

साथो-साथ—(अव्य०) १. साथ में। २. साथ ही में। साथ का साथ। लगते हाथ। ३. एक ही साथ में।

साद—(न०) १. शब्द। ध्वनि। आवाज। २. पुकार। बाँग। ३. आर्त पुकार। ४. मरने वाले के पीछे चिल्लाकर किया जाने वाला रुदन। ५. गले का सुर।

सादगी—(ना०) १. सादापन। सरलता। सादाई। २. निश्छलता। निष्कपटता। ३. तड़क-भड़क, कृत्रिमता तथा आडंबर रहित।

सादबैठणो—(मुहा०) सर्दी लगके गले का बैठ जाना। आवाज में भोंडा तथा मंद हो जाना।

सादड़ी—(ना०) चटाई। साथरी।

सादणो—(क्रि०) १. साद देना। पुकारना। २. किसी को दिये कर्ज की किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा चुकाने की जिम्मेवारी लेना।

सादत—(ना०) शहादत। गवाई। साक्षी।

साद-देणो—(मुहा०) १. पुकारना। आवाज देना। २. मृतक को रोना।

साद-बैठणो—(मुहा०) गले की आवाज का मोटा, भारी या कमजोर होना।

सादर—(अव्य०) आदर के साथ। सम्मान-पूर्वक।

सादवणो—(क्रि०) १. आवाज देना। पुकारना। २. याद करना।

सादाई—दे० सादगी। सादापणो।

सादाणा—दे० सादाना।

सादाना—(न०ब०व०) बाजे। वाद्य-समूह। विवाहादि की खुशी में बजने वाला बाजा। खुशी के बाजे। शादियाना।

सादापणो—(न०) सादापन। सादगी। सादाई।

सादाळो—(न०) १. रथ। २. योद्धा के बैठने का रथ। युद्धरथ।

सादी—(ना०) शादी। विवाह। (वि०) १. सीधी। सरल। २. कोरी। ३. साधारण बनावट की। ४. अकृत्रिम। ५. तड़क-भड़क से रहित।

सादूळ—(न०) शार्दूल। सिंह।

सादूळो—दे० सादूळ।

सादृश्य—(न०) सदृश्यता। समानता। तुल्यता। बराबरी।

सादो—(वि०) १. सादा। सीधा। सरल। २. कोरा। बेदाग। ३. बिना उलझन या झंझट का। ४. साधारण बनावट का। ५. जिसका कोई रंग न हो। ६. अकृत्रिम। ७. बनाव-सिंगार या तड़क-भड़क से रहित। ८. समझने में सरल। ९. भोला। मूर्ख।

साद्यंत—(वि०) आदि से अंत तक। सम्पूर्ण। पूरा।

साध—(न०) १. साधु। २. सज्जन। ३. एक जाति। ४. तीव्र या प्रबल आकांक्षा। ५. बहुत समय से चली आने वाली इच्छा। ६. गर्भवती स्त्री की इच्छा। दोहद। ७. गर्भवती स्त्री के छठे या सातवें महीने में मनाया जाने वाला एक उत्सव। गोद भराना। खोळ भराणो।

साधक—(वि०) १. साधना करने वाला। २. सिद्धि प्राप्त करने वाला। ३. किसी

बात या काम को साधने वाला। ४. सहायक। (न०) १. तपस्वी। २. योगी। ३. तांत्रिक।

साधण—दे० सावधण।
दे० साधाणी।
दे० साधन।

साधणो—(क्रि०) १. सिद्ध करना। साधना। २. पूरा करना। ३. अभ्यास करना। ४. निशान लगाना। ५. संतुलित या नियंत्रित करना। ६. वश में करना। ७. अपनी ओर मिलाना। ८. धातु में शुद्ध या परिष्कृत करना। शोधना। ९. प्रमाणित करना। १०. नकली को असली जैसा कर दिखाना।

साधन—(न०) १. आवश्यक, उपयुक्त या सहायक उपकरण, सामग्री या बातें आदि। २. औजार, हथियार आदि। ३. उपाय। युक्ति। ४. कारण। हेतु। ५. माध्यम या अभिकरण। ६. क्रिया सिद्धि के लिए उपाय, संयम-नियम अथवा पथ्य-परहेज इत्यादि। ७. वे वस्तुएँ जिनसे क्रिया सरल या संभव बने। ८. सहायता। ९. सिद्धि। १०. प्रमाण।

साधन-संपन्न—(वि०) १. साधनवाला। २. संपत्तिवाला। समृद्ध।

साधन-सामग्री—(ना०) साधन की सामग्री। साधन और सामग्री।

साधनहीण—(वि०) १. बिना साधन का। साधनरहित। २. दीन। गरीब।

साधना—(ना०) १. कार्य को सिद्ध करने की क्रिया। २. कार्य की सिद्धि। ३. निरंतर, नियमपूर्वक अभ्यास। ४. नित्य अनुष्ठान। ५. मनोयोगपूर्वक सतत कठोर प्रयत्न। ६. आराधना। ७. उपासना। ८. तपश्चर्या।

साधपणो—(न०) १. साधु बनने या होने का भाव। २. साधु के गुण। साधुता। ३. साधु के वेष। साधुपना। ४. सरलता।

साधर्मी—दे० सधर्मी।

साधव—(न०) १. साधु। संत। २. महात्मा। ३. त्यागी। साध। ४. सज्जन। ५. साधु जाति।

साधस—(न०) डर। भय।

साध-संगत—दे० साधु-संगति।

साधाणी—(ना०) १. स्त्री-साधु। साध्वी। २. साधु की स्त्री। साधण। ३. साधु जाति की स्त्री। ४. गृहस्थ जाति साधु की स्त्री।

साधार—(वि०) १. आधार युक्त। २. आधार वाला। ३. जिसका कुछ आधार हो। आधारपूर्वक।

साधारण—(वि०) १. मामूली। सामान्य। २. नहीं कम, नहीं अधिक। मध्यम। ३. जो सबके लिए समान हो। ४. सरल। सहज। ५. आम, सार्वजनिक।

साधारण-क्रिया—(ना०) १. क्रिया शब्द का वह रूप जो धातु के आगे 'णो' प्रत्यय लगने से बनता है, यथा—कर+णो=करणो। जा+णो=जाणो इत्यादि (व्या०)। २. शब्दकोश में लिखी जाने वाली क्रिया का साधित रूप। (व्या०) ३. अनिश्चयात्मक अर्थ सूचित करने वाले शब्द का क्रिया रूप। (व्या०)

साधारण गुण-धर्म—दे० साधारण धर्म।

साधारणतः—(अव्य०) साधारण तौर से। आम तौर पर।

साधारणतया—दे० साधारणतः।

साधारण धर्म—(न०) १.एक वर्ग के सभी पदार्थों में पाया जाने वाला गुण, धर्म, या सामान्य तत्व। २. साधारण अवस्था के कर्त्तव्य या कर्म। वह वाक्य।

साधारण वाक्य—(न0) एक कर्ता और एक क्रिया वाला वाक्य। जिसमें उप-वाक्य न हो (व्या०)।

साधारण सभा—(ना0) जिसमें संस्था के सभी सदस्य उपस्थित हों। आम सभा।

साधिकार—(अव्य0) १. अधिकारपूर्वक। २. आधिकारिक रूप से।

साधु—(न0) १. साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त पुरुष। संत। त्यागी। साध। २. धार्मिक जीवन बिताने वाला संत व्यक्ति। ३. सदाचारी पुरुष। ४.संन्यासी महात्मा। ५. भला आदमी। सत्पुरुष। (वि0) १. सज्जन। भला। २. स्तुत्य। प्रशंसनीय। ३ उचित। योग्य। ४. उत्तम। ५. धार्मिक। ६. ईश्वरभक्ति-परायण। ७. शुद्ध। शिष्ट (भाषा)। (अव्य0) धन्य। शाबास। वाह-वाह।

साधुता—(ना0) १. साधु होने की अवस्था, गुण, भाव या धर्म। २. साधुओं का आचरण। ३. भलाई। नेकी। ४. सीधापन। ५. सज्जनता।

साधु-संग—(न0) साधु-संगति। सत्संगति।

साधु-संगति—दे० साधु-संग।

साधु-संत—(न0) साधु अथवा संत (समूह-वाचक)।

साधु-साधु—(अव्य0) वाह-वाह। धन्य-धन्य।

साध्य—(वि0) १. जो सिद्ध हो सके। सरल। सुगम। २. सिद्ध करने योग्य। ३. साधना योग्य। ४. जिसका उपाय या प्रतिकार संभव हो। (न०) साधना-विषय। साधना-योग।

साध्र—(ना0) १. लालसा। कामना। २. मनोभाव। कोड। ३. गर्भवती स्त्री की इच्छा। दोहद। साध।

साध्वी—(ना0) १. साधु स्त्री। साधाणी। २. साधु स्वभाव वाली स्त्री। ३. जैन साधु स्त्री। ४. पतिपरायण स्त्री। (वि०) १. शुद्ध आचरण वाली। २. पतिपरायणा। पतिव्रता। ३. शील-वती।

सान—(ना0) १. प्रतिष्ठा। इज्जत। २. शान। छटा। ठाट-बाट। तड़क-भड़क। ३. बुद्धि। अक्ल। ४. विवेक। ५. संकेत। इशारा। ६. स्वमान। ७. एक वात रोग, जिसमें अंग सुन्न हो जाता है। ८. शाण। साण। ९. शीतला रोग। चेचक की बीमारी।

सान-रो-झोलो—(न0) १. वात रोग का आक्रमण। २. सन्निपात। ३. शीतला रोग। चेचक की बीमारी।

सानाकानी—(ना0) परस्पर इशारेबाजी।

सानी—(ना0) १. संकेत। इशारा। २. आँख का इशारा। ३. ढोरों के लिये भूसा मिली हुई खली, ग्वार इत्यादि का पकाया हुआ खाद्य। बांटो। (वि०) १. बराबरी का। मुकाबिले का। जोड़-रो। २. समान। ३. द्वितीय। दूसरा।

सानु—(न0) १.पर्वत की चोटी। शिखर। २. पर्वत की समतल भूमि। शिखर पर का मैदान। ३. किनारा। छोर। ४. वन। ५. मार्ग।

सानुकूल—*(वि०)* अनुकूल। पूरी तरह से अनुकूल।

सानुनासिक—*(वि०)* जिसके उच्चारण में *नाक से ध्वनि निकलती है (अक्षर)।*

सानुनासिक व्यंजन—*(न०)* ङ, ञ, ण, न तथा म।

सानुनासिक-स्वर—*(न०)* अं।

सानुप्रास—*(वि०)* अनुप्रास सहित।

सानुभव—*(वि०)* अनुभवयुक्त। अनुभव सहित।

सानुमान—*(न०)* पर्वत। *(अव्य०)* अनुमान से।

सानुवाळ—*(न०)* पर्वत।

सानुस्वार—*(वि०)* अनुस्वार वाला। अनुस्वार सहित।

सानू—दे० सानु.।

सान्निध्य—*(न०)* १. निकटता। समीपता। २. एक प्रकार की मुक्ति।

सान्वय—*(वि०)* १. अन्वयवाला। २. वंश वाला।

साप—*(न०)* १. सर्प। साँप। भुजंग। २. शाप।

साप उतारणो—*(मुहा०)* साँप के जहर का असर (मंत्र-तंत्र से) दूर करना।

सापणी—दे० सरपणी।

सापणो—*(क्रि०)* १. शाप देना। दुराशिष देना। २. भला-बुरा कहना।

सापित—*(वि०)* जिसको शाप दिया गया हो।

सा-पुरस—*(न०)* सत्पुरुष। भला मनुष्य। साधु पुरुष।

सापेक्ष—*(वि)* १. किसी से अपेक्षा रखने वाला। अपेक्षावाला। २. किसी बात अथवा परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य अथवा तुलना में। ३. जो विचार, निर्णय या आज्ञा की उपेक्षा में रुका या पड़ा हुआ हो (पेंडिंग)।

सापो—*(न०)* १. मरसिये की तर्ज में वृद्ध मृतक का गाया जाने वाला समधिनों द्वारा व्यंग्यात्मक विरुद। वृद्ध की मृत्यु पर स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला शोक-गीत। छेड़ो। धार। तियाणो। पल्लो लेणो। २. मृतक को रोना।

सापोळियो—*(न०)* १. साँप का बच्चा। २. छोटा साँप।

साफ—*(वि०)* १. स्वच्छ। निर्मल। सफा। २. शुद्ध। ३. स्पष्ट। विशद। ४. उज्ज्वल। ५. निष्कपट। निश्छल। ६. निष्कलंक। ७. सादा। कोरो। ८. समतल। ९. खाली। रिक्त। १०. जिसमें कोई झगड़ा टंटा न हो। ११. जो चुकता कर दिया गया हो (लेन-देन)। १२. कचरा रहित। *(अव्य०)* १. निश्चित रूप से। २. पूरी तरह। ३. बिलकुल। कतई।

साफ-दिल—*(वि०)* जिसके दिल में कपट न हो।

साफ-साफ—*(अव्य०)* स्पष्ट रूप से।

साफ-सुथरो—*(वि०)* १. स्वच्छ और सुन्दर। २. साफ किया हुआ।

साफ-सूफ—*(वि०)* १. बिना कचरे का। २. अच्छी तरह से साफ किया हुआ।

साफी—*(ना०)* १. चिलम की नली में लपेटा जाने वाला कपड़े का छोटा टुकड़ा। २. कंधे पर रखे जाता वाला रूमाल। ३. छानने का कपड़ा। गळणो। ४. मूल कीमत। ५. बिना नफे का भाव। *(वि०)* बिना कमीशन या दलाली का (भाव या कीमत)।

साफो—(न०) सिर पर लपेटा जाने वाला एक विशिष्ट व सुन्दर पहनावा। साफा। फेंटो। पोतियो।

साबण—दे० साबू।

साबत—(वि०) १. अखंड। अटूट। साबतो। २. समूचा। पूरा। ३. स्थिर। दृढ़। ४. दुरस्त। ठीक। साबुत।

साबतो—दे० साबत।

साबरमती—(ना०) राजस्थान और गुजरात की एक नदी का नाम।

साबळ—(न०) भाला।

साबास—दे० सँवास।

साबासी—दे० सँवासी।

साबिक—(वि०) पुराना। प्राचीन।

साबिक-दस्तूर—(न०) चलती आई हुई रीति। परम्परानुसार। पुराने रिवाज के अनुसार।

साबित—(वि०) १. प्रमाणित। सिद्ध। २ समूचा। पूरा।

साबुन—(न०) तेल कास्टिक सोडा इत्यादि के योग से बना एक रासायनिक पदार्थ जिससे (पानी की सहायता से) शरीर और कपड़े का मैल दूर किया जाता है।

साबू—दे० साबुन।

साबूगर—(न०) १. साबुन बनाने तथा बेचने वाला। २. एक मुसलमान जाति।

साबूत—(न०) १. स्वस्थ। नीरोग। २. मौजूद। ३. प्रचलित। चालू। ४. बिना टूटा हुआ। अखंड। साबत। साजो। (न०) सबूत। प्रमाण।

साबूती—(ना०) १. सबूत। प्रमाण। २. मजबूती। दृढ़ता।

साबूदाणा—(न०ब०व०) साबू के वृक्ष के गूदे से तैयार किये हुए दाने जो शीघ्र पाचक होने से रोगी को खिलाये जाते हैं और व्रत में फलाहार के रूप में भी खाये जाते हैं। साबूदाना। सागूदाणा।

साबूनी—(न०) एक व्यंजन। एक मिष्टान्न।

साभार—(वि०) आभार सहित। उपकार के साथ।

साभाव—(न०) स्वभाव। आदत। सुभाव।

साभिप्राय—(वि०) १. अभिप्राय सहित। २. अभिप्राय वाला। जिसका कुछ अभिप्राय या मतलब हो।

साभिमान—(वि०) अभिमान सहित।

साम—(ना०) १. खेत में हल चलाने के ऊपर सावर चलाने के बाद दूसरी बार हल चलाने की क्रिया। दूसरी बार की जाने वाली जुताई। २ सावर चलाने के बाद हल के चलाने से बनी रेखाएँ। ३. सामवेद। ४. गाये जाने वाले वेद मंत्र। ५. राजनीति के चार उपायों में से एक। मीठी बातें बनाकर के अपनी ओर मिलाने का उपाय या नीति। (साम, दाम, दंड, भेद)। ६. स्वामी। ७. पति। ८. श्रीकृष्ण। श्याम। (वि०) श्याम। काला।

सामखोर—(वि०) १. स्वामीभक्त। २. स्वामीद्रोही।

सामगरी—दे० सामग्री।

सामग्री—(ना०) १. उपयोगी सामान। किसी काम में उपयोगी अथवा साधन तरीके का सामान। २. आवश्यक सामान। असबाब। ३. साधन। उप-करण।

सामटो—दे० सौंवटो।

सामठो—दे० सांवटो।

सामण—(ना०) १. स्वामिनी। मालकिन। २. सामी (स्वामी) जाति की स्त्री। ३. सामी की स्त्री।

सामणी—(ना०) स्वामिनी।

सामत—(ना०) १. विपत्ति। दुर्दशा। २. बदकिस्मती। दुर्भाग्य। शामत।

साम-धरम—(न०) स्वामी-धर्म। स्वामी-भक्ति।

सामधरमाई—(ना०) स्वामी-भक्ति।

साम-धरमो—(ना०) १ स्वामी-भक्ति। २. स्वामी-भक्त।

सामध्रम—(ना०) १ स्वामी के प्रति अपने सेवा-धर्म को सत्यता से पालन करने वाला। २. स्वामी-धर्म। स्वामी-भक्ति।

सामने—(अव्य०) १. उपस्थिति में। २. मुकाबिले में। विरुद्ध। ३. प्रत्यक्ष। सामो। ४. आगे। समक्ष। सामां।

सामनो—(न०) १. मुकाबला। २. विरोध। ३. प्रतियोगिता। होड़।

सामरात—(न०ब०व०) 'समर' का बहुवचन रूप।

सामराथ—दे० सामर्थ्य।

सामरिक—(वि०) समर या युद्ध संबंधी।

सामर्थ—दे० सामर्थ्य।

सामर्थ्य—(ना०) १. कुछ करने की शक्ति। २. योग्यता। क्षमता। ३. बल। पराक्रम। ४. तेज।

सामयिक—(वि०) १. वर्तमान समय का। २. समय विषयक। ३. समय या परिस्थिति के अनुरूप।

सामयिक-पत्र—(न०) नियत समय पर निकलने वाला पत्र।

सामरथ—(ना०) १. शक्ति। सामर्थ्य। २. हैसियत।

सामरात—(न०) युद्ध।

सामरिक—(वि०) समर संबंधी।

सामळ—(वि०) श्यामल। सांवला। सांवळो।

सामळियो—(न०) श्रीकृष्ण। (वि०) काला। श्यामल।

सामलो—(वि०) १. सामने का। सामने वाला। २ मुकाबले वाला। प्रतिस्पर्धी।

सामळो—(न०) सांवला। श्रीकृष्ण। (वि०) १. श्यामल। थोड़ा काला। २. काला। काळो। सांवळो।

सामवेद—(न०) गेय मंत्रों वाला तीसरा वेद।

सामंग—(वि०) श्याम अंग वाला। श्यामांग। (न०) तलवार।

सामंत—(न०) १. सौ सैनिकों से अकेला युद्ध करने वाला वीर सैनिक। २. सैनिक। ३. सरदार। जमींदार। ४. वीर योद्धा।

सामंतवाद—(न०) सामंतों, जमींदारों द्वारा जमीन, संपत्ति इत्यादि के एकाधिकार एवं शोषण पर आधारित राज्य-व्यवस्था।

सामंतशाही—(ना०) राजाशाही। एकतंत्र राज्य।

सामंद—(न०) समुद्र।

सामंद्र—(न०) समुद्र।

सामाजिक—(वि०) १. समाज संबंधी। २. समाज का। ३. सारे समाज से संबंध रखने वाला।

सामान—(न०) १. सामग्री। उपकरण। २. चीज वस्तु। ३. असबाब।

सामानामा—*(अव्य०)* बराबर। सरीखा।

सामान्य—*(वि०)* १. जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली। २. किसी जाति या प्रकार की सब वस्तुओं में पाया जाने वाला एकसा गुण। ३. सार्वजनिक। आम। ४. जो अपनी साधारण अवस्था या स्थिति में हो। *(न०)* १ समानता। बराबरी। २. एक जाति या वर्ग की वस्तुओं का समान या साधारण गुण धर्म।

सामान्यतया—*(अव्य०)* सामान्यतः। साधारण तौर पर। मामूली तौर से।

सामायक—दे० समाई, ३, ४.

सामिणी—*(ना०)* स्वामिनी। मालकिन।

सामी—दे० स्वामी। दे० सामने।

सामो-छाती—*(अव्य०)* १. सामने। सम्मुख। २. हिम्मत से। साहसपूर्वक।

सामी-धरम—दे० सामधरम।

सामीनाई—*(ना०)* बराबरी। तुल्यता।

सामीनो—*(वि०)* १ समवयस्क। हम-उम्र। २. बराबर।

सामीप्य—*(न०)* १. समीपता। निकटता। नैड़ापणो। नैड़ापो। २. मुक्ति के चार प्रकारों में से एक। ३. ईश्वर के समीप होने की स्थिति।

सामुदायिक—*(वि०)* समुदाय का। सामूहिक।

सामुद्रिक—*(न०)* १. वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य के शारीरिक चिन्हों, विशेषतः हथेली-रेखाओं को देखकर शुभाशुभ फल बताये जाते हैं। २. इस विद्या का जानकार। *(वि०)* समुद्र संबंधी।

सामुहाँ—*(अव्य०)* १. सामने। सम्मुख। साम्हो। २. आगे।

सामुहे—दे० सामुहाँ।

सामुहो—*(न०)* १. अग्रभाग। सामना। २. मुकाबला। ३ प्रतियोगिता।

सामेळो—*(न०)* १. कन्या पक्ष के स्त्री-पुरुषों की ओर से गाजे-बाजे और मंगल गीतों से बरात की अगवानी या स्वागत करने की एक विधि और प्रथा। अगवानी। २ अगवानी का मंगल-कलश जिसे दूल्हे की सासू सिर पर उठाकर दूल्हे का स्वागत करती है। ३. बाजे-गाजे के साथ जुलूस बनाकर आगंतुक के सामने आकर स्वागत करना।

सामो—*(न०)* १. सामान। २. फलाहार का एक वन्य अनाज। साँवाँ।

साम्यवाद—*(न०)* मार्क्स द्वारा चलाया हुआ एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार ऐसे समाज की स्थापना, जिसमें शोषण की समाप्ति, उत्पादन साधनों पर सामाजिक स्वामित्व, सबको विकास की समान सुविधाएँ, सरकार की सम्पत्ति पर सबका समान अधिकार एवं वर्ग-भेद न हो।

साम्यवादी—*(वि०)* साम्यवाद सिद्धान्त को मानने वाला।

साम्राज्य—*(न०)* वह बड़ा राज्य जिसके आधीन बहुत से देश हों। सार्वभौम राज्य। महाराज्य।

साम्हाँ—*(अव्य०)* सम्मुख। सामने। संमुख।

सायक—*(न०)* बाण। तीर।

सायण—*(न०)* चारों वेदों और ब्राह्मण ग्रंथों आदि का वह प्रसिद्ध भाष्यकार। सायण माधव।

सायत—दे० सायद। *(न०)* सुसमय।

सायद—(अव्य०) १ कदाचित। शायद। २. संभव है। कदाच। कदास।

सायदी—(ना०) साक्षी। गवाही। शहादत।

सायधरण—(ना०) पत्नी। विवाहिता स्त्री। धण। साधण।

सायब—दे० साहब।

सायबरणी—दे० सायबाणी।

सायबाणी—(ना०) १. पत्नी। २. लोकगीतों की एक नायिका। ३. उच्च कुल की स्त्री।

सायबी—दे० साहबी।

सायबो—दे० साहबो।

सायर—(न०) १. सागर। समुद्र। २. सहेली। सँवर। ३. स्त्री। पत्नी। ४. माल की आवक-जावक पर कर वसूल करने वाला एक सरकारी विभाग। महकमा-सायर। ५. जाने-आने वाले माल पर लिया जाने वाला कर। ६. कवि। शायर। ७. बुद्धि। (वि०) १. बुद्धिमान। समझदार। २. सज्जन। ३. सरल। सीधा। ४. सरल स्वभाव का। भोला। ५. गंभीर।

सायर-थाणो—(न०) आने-जाने वाले माल पर कर वसूल करने की सरकारी चौकी। सायरथाना।

सायरी—दे० शायरी।

सायल—(न०) १ न्यायालय में प्रार्थनापत्र देने वाला। २. प्रार्थना करने वाला। ३. प्रश्नकर्त्ता। ४. उम्मीदवार। ५. फकीर। ६. भिखारी। मगतो।

सायलान—(न०) 'सायल' का बहुवचन।

सायं—(ना०) संध्या। शाम। सांझ।

सायंकाल—(न०) संध्याकाल। सांझ।

सायं-प्रातः—(अव्य०) सुबह-शाम। सवार-सांझ।

सायं-प्रार्थना—(ना०) संध्या समय की प्रार्थना। संध्यावंदन। सांझवांदणो।

सायं-भोजन—(न०) व्यालू। व्याळू।

सायं-संध्या—(ना०) सूर्यास्त के समय की जाने वाली संध्या।

सायुज्य—(न०) १ पूर्ण मिलन। मिलकर एक हो जाना। २. मुक्ति का एक भेद।

सायुज्य-मुक्ति—(ना०) ऐसी मुक्ति जिसमें अपने इष्टदेव के साथ तारतम्य का अनुभव हो। आत्मा का परमात्मा में अभेद विलय। मुक्ति के चार प्रकारों में से एक।

सार—(न०) १ तत्व। २. मूलभाग। ३. सत्त। कस। निचोड़। ४. यथार्थ बात। ५. बात का सारांश। ६. तात्पर्य। निष्कर्ष। ७. निगाह। सम्हाल। देखभाल। सुधि। ८. मज्जा। ९ शक्ति। १०. तलवार। ११. लोह। १२ फौलाद। १३. हीरा। १४. खबर। १५. चौपड़ की गोटी। सारी। १६ फल। परिणाम। १७. मलाई। थर। १८. मक्खन। माखण। १९. चंदन। २०. सहाय। मदद। २१. लाभ। २२. घृत। २३. सुराख। (वि०) १. उत्तम। २. दृढ़। (ना०) १. सुराख करने का औजार। सियार। २. प्रीति। ३. सुख। ४. याद। स्मृति। ५. होश।

सारक—(वि०) रेचक। दस्तावर।

सारखी—(वि०) समान। सरीसी। सरीखी।

सारखो—(वि०) १. सदृश। समान। सरीसो। सरीसो। २. एक सरीसा। ३. बराबर।

सारग्राही—(वि०) सार ग्रहण करने वाला।

सारज—(न०) एक प्रकार का वस्त्र। सरज।

सारझकोळा—(न०) युद्ध। लड़ाई।

सारड़ी—(ना०) सुराख करने का औजार। छोटा बरमा। स्यार।

सारण—(ना०) १. बैलों द्वारा कुएं में से चरसा निकालते समय उनके चलने के लिये बनाया जाने वाला मार्ग। २. टीबा। धोरो। (वि०) १. काम बनाने वाला। २. निभाने वाला। (न०) ३. रास्ता। ४. नहर।

सारणा—(न०ब०व०) १. मसालेदार व्यंजन। तेंतीस प्रकार के पकवान। पक्वान्न, मिष्टान्नादि (बत्तीस भोजन नै तेतीस सारणा)।

सारणी—(ना०) १. तालिका। कोष्ठक। बहुत से खाने, कोठे या स्तम्भ युक्त कागज। टेबल। २. रेलगाड़ी के स्टेशनों पर ठहरने, छूटने इत्यादि का ब्योरा देने वाली पुस्तिका। समय-सारिणी। टाइम टेबल। ३. नाली। ४. नहर। माळी।

सारणो—(क्रि०) १. बनाना। काम बनाना। २. सिद्ध करना। तैयार करना। ३. मरम्मत करना। दुरुस्त करना। ४. खेंचना। ५. पार लगाना। ६. याद करना। सम्हालना। ७. आंख में अजन-काजल लगाना। ८. श्राद्ध करना। सराना।

सारत—(न०) १. देखरेख। सार-सम्हाल। २. होश-हवास। सुधबुध। ३. देखरेख की जिम्मेवारी। ४. स्मृति। याद। ४. वृद्ध या बीमार की सार-सम्हाल। ६. ध्यान। खबर। ७. संकेत। इशारा।

सारथक—(वि०) १. सार्थक। अर्थसहित। २. सफल।

सारथी—(न०) रथ हांकने वाला। सागड़ी।

सारद—दे० सारदा।

सारद-माता—दे० सारदा।

सारदा—दे० शारदा।

सारदूल—दे० शार्दूल।

सारधू—(ना०) बेटी। पुत्री। डीकरी। डोकरी।

सार-भाग—(न०) १. वस्तु का मुख्य अंश। २. अच्छा भाग। सारांश।

सारभूत—(भू०कृ०) सार रूप में स्थित। (वि०) १. सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। २. सार-रूप।

सारमणी—(ना०) झाड़ू। बुहारी। सोहनी। सावरणी।

सारमणो—(न०) १. भंगी का झाड़ू। २. बड़ा झाड़ू। बुहारो। सावरणो।

सारमेक—(न०) स्वान। कुत्ता। कूतरो।

सारमेय—दे० सारमेक।

सार-रूप—(न०) संक्षिप्त आकार। (वि०) संक्षिप्त। (अव्य०) संक्षिप्त रूप में। (न०) तत्त्व वस्तु।

सार-रो-कोट—(वि०) लोहे के समान दृढ़ शरीर वाला। अत्यन्त दृढ़। (न०) १. लोहे का कोट या परकोटा। २. युद्ध। ३. युद्धस्थल।

सार-वार—(ना०) १. सेवा-चाकरी। २. देखरेख। सम्हाल। निगरानी। सार-समाळ।

सारविद—(न०) शिव।

सारस—(न०) जलाशयों के पास रहने वाला लंबी टाँगों वाला एक पक्षी।
सारसड़ी—(ना०) मादा सारस। सारसी।
सारस-प्रिया—(ना०) सारसी। सारस की मादा।
सार-संग्रह—(न०) कथानक, बातों इत्यादि का संक्षिप्त संग्रह।
सार-संभाळ—(ना०) देखभाल। देखरेख। सारवार।
सारसी—(ना०) १. क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद। २. सारस की मादा।
सारसुत—(न०) १. एक ब्राह्मण उपजाति। (वि०) सरस्वती से संबद्ध। दे० सारस्वत।
सारसुता—(ना०) यमुना। जमुना।
सारसुती—(ना०) सरस्वती।
सारसो—दे० सारखो।
सारस्वत—(वि०) १. सरस्वती संबंधी। २. सारस्वत प्रदेश का। ३. सरस्वती या विद्या से संबंधित। (न०) १. सरस्वती नदी के किनारे के एक प्रदेश का नाम। २. इस प्रदेश के निवासी। ३. इस प्रदेश में रहने वाले यहां वहां से अन्य प्रदेशों में फैले हुये ब्राह्मण। ४. एक ब्राह्मण उपजाति। ५. सरस्वती का उपासक। ६. साहित्यकार।
सारहीण—दे० सारहीन।
सारहीन—(वि०) १. तत्व रहित। २. सत रहित। ३. शक्ति रहित। निर्बल। ४. परिणाम रहित।
सारंग—(न०) १. विष्णु का धनुष। २. चंद्रमा। ३. एक प्रकार का मृग। ४. मृग। ५. बिजली। ६. मेघ। ७. एक रागिनी। ८. एक वाद्य। ९. शंख। १०. बाज। श्येन। ११. मोर। १२. सूर्य। १३. भौंरा। १४. हंस। १५. कमल। १६. कपूर। १७. घोड़ा। १८. हाथी। १९. सिंह। २०. सर्प। २१. पक्षी। २२. खंजन। २३. कोयल। २४. कबूतर। २५. चातक। २६. पानी। २७. बाण। २८. दीपक। २९. रात्रि। ३०. स्त्री। ३१. मेढ़क। ३२. केश। बाल। ३३. स्वर्ण। ३४. भूमि। ३५. कामदेव। ३६. कुच। स्तन। ३७. कागज। पत्र। ३८. शोभा। छटा। ३९. कांति। ४०. आकाश। ४१. पर्वत। ४२. देवता। ४३. बदर। ४४. तलवार। ४५. दर्पण। ४६. समुद्र। ४७. एक छंद। ४८. एक प्रसिद्ध कवि का नाम जिसने राजस्थानी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'क्रिसन रुकमणी री वेली' पर 'सुबोधमंजरी' नाम की टीका लिखी थी। यह कवि जालोर में हुआ था। परन्तु यह टीका उसने पालणपुर में वि० सं० १६७८ में लिखी थी। सारंग राजस्थानी। (मारवाड़ी भाषा) का मर्मज्ञ कवि था। (वि०) १. रंगीन। २. चितकबरा। ३. सुन्दर।
सारंगधर—(न०) १. विष्णु। २. राम।
सारंगधरण—दे० सारंगधर।
सारंगपाणि—(न०) १. विष्णु। २. राम।
सारंगलोचना—(वि०) मृगनयनी। हरिणाक्षी।
सारंगियो—(वि०) सारंगी बजाने वाला।
सारंगी—(ना०) १. एक प्रसिद्ध ततुवाद्य। २. हरिणी। मृगली। मिरगली। ३. सारंग धनुषधारी श्रीराम।
सारासार—(न०) १. सार और असार। २. अच्छा और बुरा।
सारांश—(न०) १. तात्पर्य। मतलब। निष्कर्ष। २. संक्षेप। सार। ३. भावार्थ। ४. परिणाम। नतीजा। ५. संक्षिप्त मय या कथन।

सारि—(ना०) १. घी। घृत। २. गोटी। सारी। (वि०) १. शतरंज, चौपड़ खेलने वाला। २. जुआ खेलने वाला।
सारिका—(ना०) मैना पक्षी।
सारिखो—(वि०) समान। सदृश।
सारी—(ना०) १. चौपड़ खेलने की गोट। गोटी। पासा। २. मैना। सारिका। (वि०ना०) समस्त। सब।
सारीखो—(वि०) १. एक समान। बराबर। २. समवयस्क।
सारीस—(वि०) समान।
सारीसो—दे० सरीखो।
सारू—(ग्रव्य०) १. वास्ते। लिये। २. करने के लिये। (न०) १. परिमाण। २. मैना। सारिका। (वि०) अच्छा। भला।
सारूप्य—(न०) १. समानता। सरूपता। एकरूपता। समान रूप वाला हो जाना। २. वह मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है।
सारैं—(ग्रव्य०) वश में। अधिकार में।
सारो—(न०) अधिकार। वश। (ग्रव्य०) १. सब। समस्त। २. ठीक।
सार्थ—(न०) १. वणिकों का एक वर्ग। २. व्यापारिक माल। ३. समूह। झुंड। ४. काफिला। (वि०) १. अर्थ, उद्देश्य या प्रयोजन से युक्त। अर्थ सहित। २. उपयोगी। हितकर। (ग्रव्य०) १. मतलब। स्वार्थ। २. धनमाल सहित।
सार्थक—(वि०) १. अर्थ सहित। सार्थ। २. सफल। ३. उपकारी। गुणकारी।
सार्थकता—(ना०) १. सार्थक होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सफलता।
सार्थपति—(न०) व्यापारी। वणिक।
सार्थवाह—दे० सार्थपति।
सार्वजनिक—(वि०) सब लोगों से संबंधित। सब लोगों का। आम।
सार्वभौम—(न०) १. चक्रवर्ती राजा। संपूर्ण पृथ्वी का स्वामी। २. हाथी। (वि०) १. सब देशों से सम्बद्ध। अखिल भूमण्डल विषयक। २. सर्व सत्ता सम्पन्न।
साल—(न०) १. शाल। दुशाला। २. वर्ष। बरस। ३. खाट के पाये का चौकोर सुराख। ४. छेद। सुराख। ५. एक वृक्ष। ६. पीड़ा। दुख। ७. चुभन। कसक। ८. अड़चन। रुकावट। बाधा।
साळ—(ना०) १. शाला। २. बरंडा। बरामदा। ३. एक प्रकार का धान। शालि। चावल। ४. वह स्थान जहाँ वस्त्र बुनने का औजार (करघा) लगा हो। वस्त्र बुनने का स्थान। ५. वस्त्र बुनने का औजार या करघा।
साळगराम—(न०) गंडकी नदी में से प्राप्त काले पत्थर की गोल बटियां जिसे विष्णु के रूप में पूजते हैं। शालिग्राम।
सालगिरह—(ना०) जन्म दिन। वर्षगांठ। बरसगांठ।
सालड़ो—दे० सांदड़ो।
सालणो—(न०) १. साग। सब्जी। २. रसेदार तरकारी। ३. मांस की तरकारी। सालन।
सालणा—(न०ब०व०) सभी प्रकार के व्यंजन (बत्तीस भोजन नै तैंतीस सालणा)।
सालणो—(क्रि०) १. सलना। दुख होना। २. कष्ट पाना। ३. कष्ट देना। ४.

खाट के पायो मे ईस और ऊपलो को बिठाने के लिये चौकोर सुराख बनाना। ५. सुराख करना।

सालभर—(अव्य०) पूरा वर्ष। आखो बरस। वर्ष भर।

सालम—(अव्य०) चिरायु। (वि०) १. अखंड। २. पूरा। पूर्ण। सालिम। (न०) एक कंद।

सालम-मिसरी—(ना०) एक पौष्टिक कंद। सुधामूली। सालम मिस्री।

सालमिली—(न०) गरुड़। सेंमल का वृक्ष। शाल्मली।

साळर—(न०) एक वृक्ष तथा उसकी लकड़ी।

सालरस—(न०) सालवृक्ष से निकलने वाला रस। राल।

सालवार—(अव्य०) वर्ष अनुक्रम से। बरसवार।

सालवाहन—(न०) शालिवाहन राजा जिसने शक सम्वत् चलाया था।

साळवी—(न०) १. वस्त्र बुनने का काम करने वाला, बुनकर। शालिक। बण-कर। २. एक जाति।

सालस—(वि०) १. भला। अच्छा। सालिस। २. विनयी। सैणो। ३. तीसरा। तृतीय। तीजो। (न०) पंच। मध्यस्थ।

सालसपणो—(न०) भलाई। भलपण। सालसाई।

सालसाई—दे० सालसपणो।

सालसो—(न०) खून साफ करने की एक औषधि। सालसा।

सालाणो—(वि०) सालाना। वार्षिक। सालियाणो।

सालाना—दे० सालाणो।

सालार—(न०) १. सेनापति। २. सरदार। नायक। ३. नेता। ४. मार्गदर्शक। ५. अगुआ।

सालार-जंग—(न०) सेनापति। सालारे-जंग।

साळा-सहेली—(ना०) साले की पत्नी। सरहज। साळासेली।

साळासेली—दे० साळासहेली।

साळाहेली—दे० साळासहेली।

साळिगराम—दे० साळगराम।

सालियाणं—(अव्य०) साल भर में। एक वर्ष मे।

सालियाणो—दे० १. सालाणो। २. एक साल का वेतन। ३. एक साल के वेतन की रकम। ४. भारत सरकार द्वारा राजाओं को राज्यों के बदले मे दिया जाने वाला प्रिवीपर्स।

सालियाना—दे० सालाणो।

साळी—(ना०) १. पत्नी की बहिन। २. एक गाली।

सालुर—(न०) मेंढक। दादुर। मींडको। डेडरियो।

सालुरणो—(क्रि०) मेंढक का टर्र-टर्र बोलना।

सालुळणो—(क्रि०) १. फूंक से बजने वाले बाजे का शब्द होना। २. मेंढक का टर्र-टर्र करना। सालुरणो। ३. धीरे-धीरे चलना। ४. समूह का शिस्टबद्ध चलना। ५. समूह का एक साथ चलना। ६. चलना। ७. उलटना। ८. रेंगना।

साळू—(न०) १. स्त्रियों के ओढ़ने का लाल रंग का एक वस्त्र। २. किसी वस्तु की तीखी नोक। शल्य। ३. लाल रंग का

एक कपड़ा । ४. लंबी वस्तु का तीक्ष्ण छोर । ५. चमड़े की रस्सी ।

साळूड़ो—दे० साळू सं० १.

सालूर—(न०) मेंढक । डेडरो ।

सालूरी—(ना०) मेंढकी । डेडरी । मींडकी ।

साळेवड़ो—दे० सळेवड़ो ।

सालो—(न०) १. खलिहान । खळो । २. पराल में अनाज निकालने और ऋणदाता को अनाज देने की क्रिया ।

साळो—(न०) १. पत्नी का भाई । २. एक गाली ।

सालोक्य—(न०) १. मोक्ष के चार प्रकारों में से एक । २. वह मुक्ति जिसमे प्राणी भगवान के लोक को प्राप्त होता है । भगवद् लोक मे लीन कर देने वाली एक मुक्ति ।

साळोतर—दे० शालिहोत्र ।

साळोतरी—दे० शालिहोत्री ।

साळोत्री—दे० शालिहोत्री ।

सालोसाल—(अव्य०) प्रतिवर्ष । हर साल । बरसो बरस ।

साल्ह—दे० साल्ह कुँवर ।

साल्ह-कुँवर—(न०) प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ढोला-मारू-रा-दूहा' मे वर्णित तथा वैवाहिक लोकगीतों मे गाया जाने वाला सुन्दर, रसिक और सर्व विदित नायक 'ढोला' का वास्तविक नाम ।

साव—(न०) १. स्वाद । जायका । सवाद । २. आनंद । मजा । ३. अपनी बात की दूसरे को होने वाली प्रतीति और आनंद । ५. बच्चा । बालक । ६. पुत्र । ७. शेर का बच्चा । (अव्य०) सर्वथा । बिलकुल । समूचो ।

सावक—(न०) १. पशु या पक्षी का बच्चा । शावक । २. शेर का बच्चा । ३. बच्चा । ४. श्रावक । जैन धर्म का अनुयायी । जैनी ।

सावकर्ण—(न०) १. काले कानों वाला सफेद घोड़ा । श्यामकर्ण । २. वह सफेद घोड़ा जिसके कान काले और उनकी नोकें (कनौती) परस्पर मिली रहती हैं । ३. वह सफेद घोड़ा जिसके कान और पूंछ काले होते है ।

सावकाश—(अव्य०) १. फुरसत से । अवकाश मिलने पर । २. सुभीते से । (न०) अवकाश । छुट्टी ।

सावकी—(ना०) सौत । माँईमाँ । (वि०) सौत की । अपर माता की (पुत्री) ।

सावको—(वि०) सौत का । अपर माता का (पुत्र) ।

सावचेत—(वि०) १. सावधान । सचेत । २. होशियार । सतर्क । हुँसियार ।

सावचेती—(ना०) सावधानी । सतर्कता । हुंसियारी । होशियारी ।

सावज—(न०) १. सिंह का बच्चा । २. सिंह ।

सावजळ—(न०) भाला ।

सावज-सूरो—(वि०) सिंह के समान शूरवीर ।

सावजोग—(वि०) १. दृढ़ । मजबूत । सेंठो । २. जो टूटा-फूटा नहीं हो । अखंड । अटूट । साजो । ३. सुन्दर । फूटरो । दे० शाहजोग ।

सावज्ज—दे० सावज ।

सावझड़ो—(न०) एक डिंगल गीत छंद ।

सावट्ट—(न०) १. जैसलमेर के पास निकलने वाला एक रंग-बिरंगा पत्थर । २. एक प्रकार का लाल रंग का मूल्यवान रेशमी कपड़ा । ३. विवाह के

समय वर पक्ष की ओर से वधू के लिये भेंट किये जाने वाले विशेष वस्त्र।

सावटू वेस—दे० सावटू सं० ३.

सावण—(न०) १. श्रावण मास। सावन। २. शकुन। सवण। सुकन।

सावणू-साख—(न०) बरसाती फसल। खरीफ।

सावध—दे० सावधान।

सावधान—(वि०) सावचेत। होशियार। जाग्रत। हुंसियार।

सावधानता—दे० सावधानी।

सावधानी—(ना०) सतर्कता। सावचेती। होशियारी। हुंसियारी।

सावयव—(न०) मुक्ति के चार प्रकारों में की एक। सारूप्य मुक्ति। (वि०) अवयव सहित।

सावर—(न०) १. हल चलाये हुए खेत को समतल करने का एक उपकरण। खावर। २. सावर चलाने की क्रिया। ३. एक औजार। ४. अपराध। ५. पाप। ६. लोध्र वृक्ष। (ना०) बरछी।

सावरणी—(ना०) झाड़ू। सारमणी। बुहारी।

सावरणो—दे० सारमणो।

सावरत—(वि०) १. लाल। २. रक्तरंजित। ३. ढका हुआ। सावृत। ४. ढक्कन सहित। साव्रत। ५. पत्र-पुष्प युक्त। (न०) १. सूर्य। २. शिव। ३. जनेऊ। ४. माला। हार। ५. शंख। ६. दोनों ओर।

सावळ—(वि०) ['कावळ' का उलटा] ठीक। अच्छा। (अव्य०) भलीभाँति। अच्छी प्रकार।

सावळसर—(वि०) १. ढंग का। २. अच्छा। ३. अनुकूल। फबतो। (अव्य०) १. ढंग से। २. अच्छा सा। ३. ठीक सर। ४. भलीभाँति।

सावळसूत—दे० सावळसर।

सावळियार—दे० सावळियाळ।

सावळियाळ—(वि०) ['कावळियाळ' का उलटा] १. अच्छे आचरण वाला। नेक। भला। २. विनम्र। ३. व्यवहार कुशल। ४. सरल स्वभाव का।

साव-सराधी अमावस—(ना०) सर्व श्राद्ध अमावस्या। आश्विन मास की अमावस्या।

साव-सामने—दे० साव सामां।

साव-सामां—(अव्य०) बिलकुल सामने।

साव-सामी—दे० साव सामां।

सावंत—दे० सामंत।

सावित्ति—दे० सावित्री।

सावित्री—(ना०) १. गायत्री। २. सरस्वती। ३. सूर्य की किरण। ४. सूर्य की पुत्री। ५. ब्रह्मा की पत्नी। ६. यमुना नदी। ७. सती-साध्वी। ८. सधवा स्त्री। ९. सत्यवान की पत्नी, जो अपने सतीत्व के कारण प्रसिद्ध है। १० गायत्री मंत्र। ११. आँवला। १२. गायत्री।

सावित्री-व्रत—(न०) जेठ मास में पति की दीर्घायु के लिये स्त्रियों द्वारा किया किया जाने वाला एक व्रत। सौभाग्य की रक्षा के लिए स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला वट-सावित्री व्रत।

सावेव—दे० सावयव।

सावो—दे० साहो।

सावो-सूभणो—(मुहा०) १. विवाह का शुभ दिन होना। २. पाणिग्रहण के दिन ज्योतिष के अनुसार वर-वधू के ग्रह, लग्न आदि का अनुकूल होना।

सांव्रत—(वि०) पत्र-पुष्प युक्त। फूल पत्तों से युक्त।

साष्टांग—(वि०) आठों अंगों सहित।

साष्टांग प्रणाम—(न०) जमीन पर औंधे लेट कर, सिर, हाथ, छाती, पैर, आँख, जाँघ, मन और वाणी से किया जाने वाला प्रणिपात।

साष्टांग-योग—(न०) वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि आठों अंग हों।

सास—(न०) १. श्वास। साँस। दम। २. जीव। प्राण। ३. पति या पत्नी की माता। सासु।

सास उपड़णो—(मुहा०) मृत्यु के समय (पहले) श्वास का खूब जोर से चलना।

सास-उसास—दे० सासोसास।

सास-खाणो—(मुहा०) विश्राम करना। थकावट दूर करना। थाक खाणो।

सास-खावणो—दे० सास खाणो।

सास चढणो—(मुहा०) दम चढ़ना। दम की बीमारी होना।

सासण—दे० सांसण। दे० शासन।

सासणो—(क्रि०) १. शासन करना। २. संधान करना। ३. सम्हालना। तैयार होना। सँभलना। ४. सम्हलाना। तैयार करना। ५. सम्हालना। गिरने नहीं देना। संभालना। ६. जिम्मेवारी लेना। भार ऊपर लेना।

सासतर—(न०) १. शास्त्र। २. विधि। रीति।

सासतर करणो—(मुहा०) विधि करना। रीति का पालन करना। रीति को जैसे-तैसे नाम मात्र से संपन्न करना।

सासतीक—(क्रि०वि०) १. निरंतर। २. लगातार। सदा।

सासतो—(वि०) १. शाश्वत। २. निरंतर।

सासत्र—दे० शास्त्र।

सासन—दे० शासन।

सासनभ—(न०) पवन। वायु।

सासरवाड़ो—(न०) ससुराल। सासरो।

सासरिया—(न० ब० व०) ससुराल का कुटुम्ब-परिवार। ससुराल वाले।

सासरियो—(न०) १. ससुराल। सासरो। २. सासरे वाला।

सासरो—(न०) ससुराल। सासरो।

सासा—(ना०) श्वास। साँस। सास।

सासु—(ना०) पति या पत्नी की माता। सास।

सासुजायी—(ना०) १. पत्नी। २. ननद। भगव।

सासुजायो—(न०) १. पति। साला। साळो। २. पत्नी का भाई।

सासू-री-जायी—दे० सासु जायी।

सासू-रो-जायो—दे० सासु जायो।

सासोसास—(न०) श्वासोच्छ्वास। श्वास लेना और छोड़ना।

सास्तर—दे० शास्त्र।

साह—(वि०) १. भला। २. साधु। सज्जन। ३. साखवाला। प्रतिष्ठित। ४. साहुकार। (न०) १. सज्जन पुरुष। २. बादशाह। ३. साहूकार। ४. धनी।

साहजादी—दे० शाहजादी।

साहजादो—दे० शाहजादो।

साहजोग—(अव्य०) १. हुंडी का एक पारिभाषिक शब्द। साहूकार जोग। २. हुंडी लेकर आने वाला वह साहूकार व्यक्ति जिसे हुंडी में अंकित रुपये चुकाये

जाते है। ३. जिसका नाम लिखा गया हो, उसी साहूकार (सही) व्यक्ति को मिले (हुंडी के रुपये)। नाम जोग। ४. वास्तविक व्यक्ति को। अधिकारी या वास्तविक व्यक्ति का पहचान करके। (वि०) १ प्रतिष्ठित। इज्जतदार। २. साहूकार। ३. ईमानदार। ४. प्रामाणिक।

साहण—(न०) १. हाथी। गज। २. घोड़ा। ३. रथ। साधन। (वि०) १. सहन करने वाला। २. गंभीर। ३. थामने वाला। ४. ग्रहण करने वाला।

साहण-समद—(न०) १. समुद्र पर पुल बांधने वाला (श्रीराम)। २. समुद्र के समान गंभीर।

साहणी—(न०) १. अश्वपाल। २. घुड़सवार। ३. सवार के आगे घोड़े की लगाम पकड़कर चलने वाला व्यक्ति। ४. मध्यकालीन भारत मे एक प्रकार के राजकर्मचारी। साहनी। ५. सेना।

साहणो—(क्रि०) १. उठाना। २. थामना। पकड़ना। झेलणो। ३. रोकना। ४. सहन करना।

साहब—(न०) १. परमात्मा। ईश्वर। २. मालिक। स्वामी। ३. पति। धणी। ४. मित्र। ५. अधिकारी। अफसर। ६. सम्मानसूचक एक संबोधन शब्द। ७. यूरोपियन व्यक्ति। गोरो। टोपी वाळो।

साहबजादी—(ना०) बड़े आदमी की लड़की।

साहबजादो—(न०)बड़े आदमी का लड़का। रईस का लड़का।

साहब-बहादुर—(न०) १. अंग्रेज अफसर। २. अंगरेज की तरह रहने वाला पदाधिकारी।

साहबी—(ना०) १. वैभव। प्रभुता। जाहोजलाली। सायबी। २. साहब होने का भाव। ३. बड़ाई। ४. अधिकार। ५. शासन। हुकूमत। (वि०) १. साहब का। २. साहब संबंधी।

साहबी-रो-धणी—(न०) १. राज्य का मालिक। २. वैभवशाली।

साहबो—(न०) स्वामी। पति। वर। सायबो।

साहबो—दे० सावो।

साहस—(न०) १. दुष्कर काम करने की वृत्ति। २. जोखिम के काम को निडरता से उठा लेने या कर लेने की मानसिक दृढ़ता। हिम्मत। ३. कोई बुरा काम। अविचारी काम। ४. धृष्टता।

साहस-वृत्ति—(ना०) साहस करने का स्वभाव। साहसी प्रकृति।

साहसियो—दे० साहसी।

साहसी—(वि०) साहसवाला। दिलेर। हिम्मती।

साहां-साल—(न०) १. बादशाहो को सलन वाला। २. बादशाहो का शत्रु।

साहिजादी—दे० शाहजादी।

साहिजादो—दे० शाहजादो।

साहित्य—(न०) १. सरस और ललित, कृतिया, लेख, ग्रन्थ इत्यादि। २. किसी वस्तु या विषय से संबंध रखने वाले सभी ग्रन्थों तथा लेखो इत्यादि का समूह। ३. प्राणी वर्ग तथा समाज के विचार, भावना, ज्ञान इत्यादि की किसी भी भाषा में लिपि बद्ध की हुई सामग्री।

वाङ्मय। ४. काव्य। ५. कार्य के लिये आवश्यक वस्तुएँ, उपकरण या सामग्री। ६. सहित या साथ होने का भाव।

साहित्यकार—*(न०)* वह जो साहित्य की रचना व सेवा करता हो।

साहित्य-शास्त्र—*(न०)* साहित्य के अंग, तत्व एवं शैली इत्यादि से संबंधित शास्त्र। साहित्य के विभिन्न अंगों की विवेचना का ग्रन्थ।

साहित्य-समालोचक—*(न०)* साहित्यिक कृति के गुण-दोषों का विवेचक।

साहित्य-समालोचना—*(ना०)* साहित्यिक कृति के गुण-दोषों का विवेचन।

साहित्यिक—*(वि०)* १ साहित्य संबंधी। २. साहित्य का ज्ञाता। ३. साहित्य रचयिता।

साहिब—दे० साहब।

साहिबी—दे० साहबी।

साहिल—*(न०)* १. समुद्र तट। २. नदी का किनारा।

साहुळी—*(ना०)* पुकार। अर्ज।

साहुलो—*(न०)* पूंछ तक लंबे सींगों वाला भैंसा।

साहू—*(न०)* १. सज्जन। २. बादशाह।

साहूकार—*(न०)* व्यापारी। *(वि०)* १. धनिक। संपत्तिवान। २. व्याहार का सच्चा। ३. ईमानदार। ४. विश्वास-पात्र।

साहूकारजोग—दे० साहजोग।

साहूकारणी—*(ना०)* साहूकार की स्त्री। *(वि०)* १. ईमानवाली। २. विश्वास वाली।

साहूकारी—*(ना०)* १. साहूकार का काम। २. साहूकार होने का भाव। ३. ईमानदारी। प्रामाणिकता। साहूकारपणो।

साहेबी—दे० साहबी।

साहो—*(न०)* १. विवाह का मुहूर्त। २. विवाह का शुभ दिन। सहालग। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार निश्चित की हुई विवाह की तिथियाँ। ४. विवाहादि की दृष्टि से शुभ दिन। ५. वर, कन्या के जन्माक्षरों (कुंडली) का मिलान करके निश्चित किया हुआ विवाह का दिन। ६. पाणिग्रहण का समय। साहवो। स्हावो। सावो।

सांइत—दे० सायत।

सांई—*(न०)* १. स्वामी। मालिक। २. पति। ३. ईश्वर। ४. मुसलमान फकीर। ५. फकीर।

सांईनी—*(वि०ना०)* समवयस्का। हमउम्र वाली।

सांईनो—*(वि०)* समवयस्क। हमउम्र।

सांईबाबो—*(न०)* मुसलमान फकीर। फकीर।

सांईयां—*(न०)* १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। सांई।

सांकड़—*(ना०)* १. सँकरापन। संकड़ापण। २. भीड़। ३. दिक्कत। परेशानी। ४. तकलीफ। कष्ट।

सांकड़-भीड़ो—*(न०)* १. अत्यन्त संकड़ाई। थोड़ी जगहों मे बहुतों का इकट्ठा होना। २. तंगी। ३. आर्थिक तंगी। संकड़ाटो।

सांकड़ी—*(वि०ना०)* १. संकरी। तंग। कमचौड़ी। *(ना०)* संकट। परेशानी।

सांकड़ी करणो—*(मुहा०)* १. तंग करना। हैरान करना। २. विपत्ति में डालना। ३. तंग बनाना।

सांकड़ीजणो—दे० संकड़ीजणो।

सांकड़ी बीतणी—*(मुहा०)* १. परेशानी होना। २. संकट में पड़ना। ३. संकट से गुजरना। ४. बुरी दशा होना।

सांकड़ीवार—*(ना०)* कठिन समय। विपत्ति काल। संकट का समय।

सांकड़ी होणी—दे० सांकड़ी होवणी।

सांकड़ी होवणी—*(मुहा०)* १. परेशानी होना। हैरानी होना है। २. संकट में पड़ना।

सांकड़े—*(क्रि०वि०)* १. पास। निकट। नजदीक। *(अव्य०)* १. सँकराई में। तंगी में। २. विपत्ति में। भीड़ में। *(ना०)* १. डांट-डपट। २. संकरापन।

सांकड़े आवणो—*(मुहा०)* १. विपत्ति में पड़ना। २. उलझन में पड़ना। ३. उलझना।

सांकड़े फँसणो—*(मुहा०)* संकट में पड़ना।

सांकड़ो—*(वि०)* १. सँकरा। तंग। कम-चौड़ा। २. थोड़ा। ३. निकट का। ४. संकुचित मन का।

सांकड़ो होणो—*(मुहा०)* १. लज्जित होना। शरमाना। २. तंग होना।

सांकड़ो होवणो—*(मुहा०)* दे० सांकड़ो होणो।

सांकणो—*(क्रि०)* डरना। भय खाना। संकित होना। संकीजणो।

सांकळ—*(ना०)* १. सांकल। जंजीर। २. एक आभूषण। ३. बंद किये हुए किवाड़ में लगाई जाने वाली सांकल। कोंढा। कड़नाळ। कड़नाळो। कूंठो। ४. जमीन मापने का अमुक लंबाई का लोहे की लंबी सांकल का माप।

सांकळणो—*(क्रि०)* १. सांकल से बांधना। २. हाथों, पांवों में हथकड़ी, बेड़ी डालना। ३. मिलाना। ४. पंक्ति रूप में संकलित करना। लांगरणो। ५. फँसाना।

सांकळियो—*(वि०)* सांकल में बंधा हुआ।

सांकळियोड़ो—*(वि०)* सांकल से बंधा हुआ।

सांकळी—*(ना०)* १. कान का एक गहना। २. सिर का एक गहना। ३. कंठी। लड़। माला। सर। ४. सांकल।

सांकळो—*(न०)* १. हाथ का गहना। हथ सांकळो। २. पांव का एक गहना लंगर।

सांकायत—*(वि०)* १. संशय वाला। २. डरा हुआ। भयभीत। भयान्वित। ३. शंका या संकोचवाला। शरम वाला।

सांकाळू—*(वि०)* लाज-शरम वाला। संकोचवाला। संकोची। संकाळू। शरमाळू।

सांकाळो—दे० सांकावाळो।

सांकावाळो—*(वि०)* शरम-संकोच वाला। सांकाळू।

सांकेतिक—*(वि०)* १. जो संकेत के रूप में हो। २. संकेत संबंधी। ३. संकेत वाला। ४. पारिभाषिक।

सांकेतिक-भाषा—*(ना०)* गूढ़ संकेतों वाली भाषा। कोड लैंग्वेज।

सांको—दे० संको।

सांखणो—*(क्रि०)* १. सहन करना। खमणो। २. क्षमा करना।

सांखळो—*(न०)* एक वृक्ष।

सांखलो करमसी रुणेचो—*(न०)* 'किसन जी-री-वेलि' का रचयिता एक क्षत्रिय भक्त-कवि। दे० करमसी सांखलो।

सांख्य-दर्शन—*(न०)* महर्षि कपिल प्रणीत एक दर्शन। छः दर्शनों में एक।

सांख्य-योग—(न०) १. वह योग जिसमें सांख्य दर्शन प्रधान हो। २ श्रीमद्-भगवद्‌गीता का दूसरा अध्याय।

सांग—(न०) १ किसी के अनुरूप धारण किया जाने वाला बनावटी रूप। स्वांग। २. परिहासपूर्ण खेल या तमाशा। ३. नकल। ४. आडम्बर। ५. एक कर। ६. पत्थर आदि भारी वस्तु को खिस-काने की लोहे की लम्बी मोटी छड़। ७. बरछी। ८. बरछी जैसा एक शस्त्र। ९. भाला। (वि०) १. अंगों सहित। सब अंगों से युक्त। २. संपूर्ण। पूरा। तमाम।

सांगड़ो—(न०) १. भाला। २. तारकशों का एक उपकरण।

सांगर—(ना०) शमी वृक्ष की फली। सांगरी।

सांगरी—(ना०) शमी (खेजड़ी) वृक्ष की लंबी फली। सांगर।

सांगवरा—(न०व०) यात्रा में बाईं ओर में होने वाला शकुन। सांगूणा।

सांगियांजी—(ना०) एक लोक देवी।

सांगूणा—दे० सांगवरा।

सांगो—(न०) १. साथ। २. सहवास। ३. संगति। ४. साहचर्य। ५. संपर्क। संसर्ग। ६. लोहे का मोटा छड़। सांग। ७. भाला। ८. एक औजार या उप-करण। ९. एक समान अनेक वस्तुओं को एक साथ बनाने का भाव या क्रिया। १०. संग्राम। युद्ध। ११. संग्रामसिंह का छोटा अथवा काव्य नाम। १२. झुंड। समुदाय। टोळो।

सांगोपांग—(वि०) अंग-उपांगों से युक्त। अंगोंपांगों सहित। २. खूब अच्छा। ३. पूरा। (क्रि०वि०) १. अच्छी तरह से। २. पूरी तरह से।

सांघणो—(वि०)१. सघन। घना। निबिड़। २. ठोस। भिड़मो।

सांघातिक—(वि०) प्राणघातक। हनन-कारी।

सांच—दे० साच।

सांचरणो—(क्रि०) १. उत्पन्न होना। सचरना। पैदा होना। २. आना या जाना। ३. प्रस्थान करना। विदा होना। ४. चलना। जाना। संचरणो।

सांचळा-मांचला—दे० साचमाच।

सांचली—(वि०) १. सच्ची। साचबोली। (क्रि० वि०) सचमुच। वस्तुतः।

सांचलो—(वि०) १. सच्चा। असल। २. सचबोला। सत्यवादी। (क्रि०वि०) सचमुच। वस्तुतः।

सांचै—(अव्य०) सत्य ही। साचाणी।

सांचो—(वि०) सच्चा। साचो। (न०) आटे की लोई। दे० सचो।

सांज—दे० सांझ।

सांजत—(ना०) १. साज-सज्जा। सजावट। २. तैयारी। ३. व्यवस्था। साजत।

सांजवरा—(ना०) किसी एक व्यक्ति के बाल बच्चे आदि। संतति। २. कुटुम्ब-कबीला। साजवण।

सांजी—दे० सांझी।

सांझ—(ना०) संध्या। सूर्यास्त का समय। संध्याकाल।

सांझवरा—दे० सांजवण।

सांझवेळा—(ना०) मध्या समय। सायं-काल।

सांझी—(ना०) १. सध्या। २. स्वाध्याय। ३. संध्या समय का प्रार्थना-गीत। ४. संध्या समय की प्रार्थना। ५. संध्या के समय गाये जाने वाले मांगलिक लोक-

गीत। ६. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर संध्या या रात्रि को स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले मांगलिक लोकगीत। संध्या को गाये जाने वाले विवाह-गीत। ७. ऐसे गीत गाये जाने की प्रथा। ८. वैष्णव मंदिरों में फूल-मंडली इत्यादि उत्सवों पर गाये जाने वाले भजन। हरजस। पद आदि। ९. वैष्णव मंदिरों के इस प्रकार के उत्सव। १०. प्राय: उत्सवों के समय मंदिरों में आंगन पर अनेक प्रकार के रंगीन चूर्णों से बनाये जाने वाले स्वस्तिक, बेल-बूंटे आदि मांगलिक चिन्हों की सजावट। ११. संध्या-समय गाये जाने वाले भजन, हरजस, पद आदि।

सांझीवार—*(ना०)* १. संध्या समय। २. सुअवसर। ३. समय-कुसमय।

सां-गांठ—*(ना०)* १. छिपी बात-चीत। २. छिपा संबंध। ३. दूषित संबंधी। ४. गुप्त और गूढ अभिसंधि। ५. मेल-जोल। मेल मिलाप।

सांठो—*(न०)* १. गन्ना। ईख। सेलड़ी। २. ज्वार के पौधे का मीठा डंठल। *(वि०)* दृढ। मजबूत। सेंठो।

सांड—*(न०)* १. बिना बधिया किया हुआ बैल। सांड-वृषभ। गोधो। सांडियो। २ बिना जिम्मेवारी के इधर-उधर डोलने-फिरने वाला मस्त व्यक्ति। ३. ऊँटनी। सांढणी। सांयड़। *(वि०)* अण्डयुक्त। जो बधिया न किया गया हो।

सांडड़ी—दे० सांढणी।

सांडणी—दे० सांढणी।

सांडसी—*(ना०)* एक औजार। पकड़। संडासी।

सांडसो—*(न०)* १. बड़ी संडासी। चोंच-वाली। सांडसी। २. लंबा चिमटा। साणसो। संडासो। संडावो।

सांडियो—*(न०)* १. ऊंट सवार। उष्ट्रा-रोही। २. छोटा ऊंट। ऊंट का बच्चा। ३. सांड। गोधो।

सांडो—*(न०)* छिपकली या गोह जाति का एक जंतु, जिसकी चरबी दवा के रूप में काम आती है।

सांडो-तेल—*(न०)* सांडे की चरबी जिसकी मालिश से नपुंसकता का मिटना कहा जाता है।

सांढ—*(ना०)* १. ऊंटनी। २. गाय का नर। सांड। गोधो। सांडियो।

सांढड़ी—दे० सांढणी।

सांढणी—*(ना०)* ऊंटनी। सांढ। सांयड़।

सांढियो - दे० सांडियो। ऊंट।

सांत—दे० सांत।

सांतर—*(अव्य०)* १. ही। परण। २ हुये भी। होते हुए भी। पांतर।

सांतरो—*(वि०ना०)* १. चंगी। स्वस्थ। २. अच्छी। ३ अधिक। खूब। ४. दृढ़। मजबूत। जबरी। ५ सुन्दर। ६. तेज। तीक्ष्ण। पैनी। ७. रोग-निवृत्ति। स्वास्थ्य-लाभ। ८. झगड़ालू।

सांतरो—*(वि०)* १. स्वस्थ। चंगा। २. दृढ़। मजबूत। ३. अच्छा। ४. खूब। ५. जबरदस्त। ६. तेज। ७. सुन्दर। ८. श्रेष्ठ। *(न०)* रोग निवृत्ति। स्वास्थ्य लाभ। १०. झगड़ालू।

सांती—दे० शांति।

सांतो—(न०) चोर द्वारा दीवाल को तोड़कर या सुराख कर बनाया गया रास्ता। सेंध।

सांत्वना—(ना०) आश्वासन। ढाढ़स। कुशल-क्षेम पूछना।

सांथरी—दे० साथरी।

सांदीपन—(न०) श्रीकृष्ण और सुदामा के गुरु। सांदीपनि।

सांध—(ना०) १. संधि। जोड़। सांधो। २. मेल। संयोग। ३. बनावट।

सांधणो—(क्रि०) १. दो वस्तुओं को टांका लगाकर जोड़ना। जोड़ना। सांधना। २. टूटे हुए या फटे हुये को जोड़ना। सांधो देणो। ३. संधान करना। निशाना लगाना। निशाने पर लगाना। ४. संधाना बनाना। पाक बनाना।

सांधो—(न०) १. वह भाग जहां दो वस्तुएं जोड़ी गई हों। संधि। सांध। फटे-टूटे का टांका लगाकर जोड़ा हुआ भाग। ३. किसी वस्तु की दरार या दरार की जोड़ाई। ४. दो वस्तुओं की जोड़ या सिलाई। ५. संयोग। अवसर। ६. प्राप्ति। ७. मिलन। मेळ।

सांधो देणो—(मुहा०) १. हानि में सहायता करना। २. बिगड़ी हुई बात या काम को सुधारना। ३. सांधा लगाना। जोड़ना। जोड़णो।

सांधो मारणो—(मुहा०) जोड़ लगाना। सांधना। जोडना। जोड़णो।

सांधो मिळणो—(मुहा०) १. सुअवसर प्राप्त होना। मौका मिलना। २. जोड़ बराबर लगना। बराबर जुड़ना।

सांप—(न०) सर्प। नाग। साप।

सांपड़—(ना०) १. किवाड़ में लगी रहने वाली खड़ी या आड़ी लकड़ी की पट्टी। २. प्राप्ति। ३. स्नान। ४ जन्म। ५. सहायता।

सांपड़णो—(क्रि०) १. स्नान करना। संपाड़ो करणो। २. प्राप्त होना। मिलना। ३. जनमना।

सांपणी—(ना०) सर्पिनी। नागिन। नागण।

सांपर—(ना०) १. सहायता। मदद। २. धाक। रोब। आतंक। ३. मृत्यु।

सांपरणो—(क्रि०) १. मदद करना। २. डराना। धमकाना। ३. मरना।

सांपरत—दे० सांपरते।

सांपरतक—दे० सांपरते।

सांपरतीक—दे० सांपरते।

सांपरते—(अव्य०) १. प्रत्यक्ष। सामने। २. अभी का। ३. वर्तमान समय में। सांप्रतिक। ४. अभी। संप्रति। इसी समय। अबार। हमार।

सांपो—दे० सापो।

सांप्रत—(अव्य०) १. अभी। तत्काल। इसी समय। अबार। हमार। २. साक्षात। प्रत्यक्ष। ३. निश्चय ही।

सांप्रदायिक—(वि०) १. संप्रदाय से संबंध रखने वाला। २. संप्रदाय संबंधी। ३. सम्प्रदाय का।

सांफळ—(ना०) १. मुठभेड़। झड़प। टक्कर। भिड़ंत। २. द्वन्द्व युद्ध। कुश्ती। ३. लड़ाई। ४. वेग से कूद कर आगे बढ़ना। ५. फर्लांग। कुदान। छलांग। ६. घबराहट।

सांफळणो—(क्रि०) १. खूब [illegible] जोद कर आगे बढ़ना। कूद [illegible] २. झड़प करना। फ[illegible] घबरा जाना। हांफ[illegible] करना। उतावला [illegible]

सांफळो—(वि०) १. मुठभेड़ करता हुआ। टक्कर लेता हुआ। २. वेग से कूद कर आगे बढ़ता हुआ। ३. कूदता हुआ। ४. घबराया हुआ। ५. उतावला।

सांब—(ना०) १. चांद, मूसल, डंडा, बल्ली आदि के किनारे पर लगी हुई लोहे की पट्टी या बंधन। २. खेत की (मावठ चलाने के बाद) दूसरी बार की जाने वाली जुताई। साम।

सांब—(न०) १. शिव। महादेव। २. पार्वती सहित महादेव। शिवाम्ब। शिव-पार्वती।

सांबीलो—(न०) मूगल।

सांभणो—(क्रि०) १. संभालना। सम्हालना। २. रखना। ३. रक्षा करना। ४. थामना। सहारा देना। ५. ठीक ढंग से रखना।

सांभर—(न०) १. अनेक शाखायुक्त सींगों वाला एक बड़ा हरिण। बारहसिंगा। २. राजस्थान का एक प्रसिद्ध नगर।

सांभर-झील—(ना०) सांभर के पास की नमक की झील।

सांभरणो—(क्रि०) १. याद आना। २. याद करना।

सांभरा देवी—(ना०) सांभर की प्रसिद्ध देवी। शाकंभरी देवी।

सांभरा माता—दे० सांभरा देवी।

सांभरियो—(न०) चौहान क्षत्री। (वि०) सांभर नगर का रहने वाला।

सांभरी—(ना०) शाकंभरी देवी। (वि०) १. शाकंभरी संबंधी। २. शाकंभरी का। ३. सांभर नगर संबंधी। ४. सांभर का।

सांभरो—(न०) १. चौहान क्षत्री। २. नमक निकालने की जगह। ३. सौंठ।

सांभळण—(न०) कान। कर्ण। श्रवणेन्द्रिय। (अव्य०) सुनने के लिये।

सांभळणो—(क्रि०) १. श्रवण करना। सुनना। २. ध्यान में लेना।

सांयड—(ना०) ऊंटनी। सांढ़। सुंभाळी। कमाळी।

सांयत—(ना०) १. शांति। धैर्य। २. तृप्ति। (वि०) १. शान्त। २. तृप्त।

सांवटणो—(क्रि०) १. समेटना। इकट्ठा करना। २. कपड़े, कागज इत्यादि की परत पर परत डालकर समेटना। ३. बिखरी हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना।

सांवटा-सांवटी—(ना०) सांवटने की क्रिया या भाव।

सांवटीजणो—(क्रि०) १. इकट्ठा होना। २. समेटा जाना। ३. संकोच में पड़ना। ४. सिकुड़ना।

सांवटो—(वि०) १. इकट्ठा। एक साथ। सम्मिलित। २. थोकबंध। ३. बहुत। (अव्य०) १. एक बार में। २. एक साथ में। ३. आवश्यकतानुसार सब का सब। ४. अधिक परिमाण या संख्या में। ५. एक साथ बहुत सा। (न०) इकट्ठा खरीदने या बेचने की वस्तु। २. इकट्ठा खरीदने या बेचने की क्रिया। ३. इकट्ठी वस्तु। ४. ढेर। राशि। थोक। (क्रि०वि०) १. एक बार में। २. अधिक मात्रा में। अतिशय।

सांवठो—दे० सांवटो।

सांवण—(न०) श्रावण मास।

सांवत—(न०) सामंत। शूरवीर।

सांवतदे—(ना०) सावित्री।

सांवरणो—(क्रि०) १. चक्की चलाना बंद करना। चक्की चलाने के काम को समाप्त करना। २. पीसा जा चुकना। चक्की चलाने के काम का समाप्त होना।

सांवरियो—(न०) श्रीकृष्ण। (वि०) श्यामल।

सांवरो—(न०) श्री कृष्ण। (वि०) श्यामल।

सांवळसा—(न०) नरसी भक्त की पुत्री नानीबाई के यहाँ माहेरा भरने को मुनीम का भेष धर कर आये हुए श्रीकृष्ण का नाम।

सांवळापणो—(न०) सांवला होने का भाव। सांवलापन।

सांवळियो—(न०) श्रीकृष्ण।

सांवळी—(ना०) १. चील पक्षी। सेंवळी। (वि०) काली। काले रंग की।

सांवळो—(वि०) १. कुछ हलके श्याम वर्ण का। २. काला। (न०) १. श्रीकृष्ण। २. अफीम। ३. शिकारी।

सांवों—(न०) फलाहार के काम में आने वाला एक जंगली अन्न। एक हलकी जाति का अन्न। लड़ धान।

सांस—(न०) १. श्वास। दम। सास। २. दमे का रोग। ३. प्राण। ४. जीवनी-शक्ति।

सांसण—(न०) राज्य की ओर से ब्राह्मण, साधु, चारण, भाट आदि को दान दी हुई करमुक्त भूमि या गाँव।

सांसणो—(क्रि०) १. सहन करना। २. संशय करना। ३. कष्ट पहुँचाना। ४. श्वास लेना।

सांसत—(ना०) कमी। न्यूनता। कृपणता।

सांसर—(ना०) १. रक्षा का भार। रक्षा की जिम्मेवारी। २. रक्षा व्यवस्था। रक्षा का प्रबंध। ३. जिम्मेवारी। भार। ४. जिम्मेवारी का परिणाम। ५. सहन। ६. धीरज। सब्र। ७. शक्ति। ८. गाय-भैंस आदि दुधारू पशु।

सांसरणो—(क्रि०) १. रक्षा की जिम्मेवारी लेना। २. जिम्मेवारी का परिणाम भुगतना। ३. सहना। ४. सब्र करना। ५. चलना।

सांसवणो—(क्रि०) १ सहन करना। २. प्रतीक्षा करना। ३. व्यर्थ गंवाना।

सांसा—(न०ब०व०) १ कठिनाई। तकलीफ। २. तंगी। ३. अभाव। कमी।

सांसा पड़णा—(मुहा०) १. ऐसी स्थिति पैदा होना जिससे मित्र, प्रेमी व आत्मीय इत्यादि का मिलना नहीं हो सकना। २. लंबे समय तक जुदाई भुगतने को विवश होना। ३. तकलीफ भुगतना। ४. आर्थिक तंगी होना।

सांसारिक—(वि०) संसार संबंधी। संसार का। लौकिक। ऐहिक।

सांसाळू—(वि०) संशयवाला।

सांसै—(अव्य०) १. विचार में। भ्रम में। २. संशय में। संकल्प-विकल्प में।

सांसो—(न०) १. संशय। २. संकल्प-विकल्प। ३. तंगी। ४ कठिनाई।

सांस्कारिक—(वि०) संस्कार संबंधी।

सांस्कृतिक—(वि०) १. संस्कृति संबंधी। २. संस्कृत भाषा संबंधी।

सांहण—दे० साहण।

सिकणो—(क्रि०) १. अग्नि पर सेका जाना। २. ताप प्राप्त करना। तपना। सिकना। ३. दुख देखना।

सिकता—(*ना०*) १. रेत। बालूरेत। सिकत। २. चीनी। शर्करा।

सिकताव—(*वि०*) १. सेक किया जा सके उतना गरम। २. छुआ जा सके या सहन किया जा सके उतना गरम। किसी वस्तु का ताप।

सिकत्तर—(*न०*) किसी संस्था या सभा का मंत्री। सेक्रेटरी।

सिकदार—(*न०*) १. राजकीय मोहर जिसके अधिकार में हो वह अधिकारी। सिक्का लगाने वाला अधिकारी। सिक्कादार। २. कोटवाल।

सिकरणो—(*क्रि०*) १. हुंडी का सिकारा जाना। २. स्वीकृत होना।

सिकराई—(*ना०*) १. हुंडी को स्वीकार करना। हुंडी का सिकारा जाना। २. उल्लिखित मुद्दत पर हुंडी के रुपये भर देना। हुंडी के रुपयों की अदायगी। ३. हुंडी को सिकारने की दलाली. भाव, बटाव या उजरत। बटाव। ४. दलाली के द्वारा हुंडी खरीदने-बेचने की दलाली।

सिकराणो—(*क्रि०*) हुंडी का सिकारा जाना। सिकारना।

सिकरामण—दे० सिकराई।

सिकरावणो—दे० सिकराणो।

सिकरो—(*न०*) एक शिकारी पक्षी। बाज पक्षी। सिचाणो।

सिकल—(*ना०*) शक्ल। शकल। चेहरा।

सिकलात—(*ना०*) १. रजाई। दुलाई। सकलात। २. एक मखमली कपड़ा।

सिकलीगर—(*न०*) १. तलवार, छुरी आदि शस्त्रों पर धार लगाने वाला व्यक्ति। २. [illegible]। लोहार।

[illegible] यूनान का एक प्रख्यात

सिकार—दे० शिकार।

सिकारणो—दे० सकारणो।

सिकारी—दे० शिकारी।

सिको—(*न०*) भिश्ती। पखाली। सक्का।

सिकोतरी—(*ना०*) १. स्यारी। २. प्रेतनी।

सिकोरो—(*न०*) सकोरा।

सिक्को—(*न०*) १. सिक्का। २. मोहर का ठप्पा। २. भिश्ती। पानी भरने वाला पखाली। कहार। ३. मुसलमान पखाली। सिको।

सिक्को जमाणो—(*मुहा०*) १. रोब जमाना। २. प्रभाव दिखाना। ३. अधिकार करना।

सिख—(*ना०*) शिक्षा। (*न०*) १. शिष्य। २. सिख जाति या संप्रदाय। ३. सिख जाति का व्यक्ति।

सिखर—(*न०*) १. क्षितिज में दिखाई देने वाले बड़े बादल। दे० शिखर।

सिखरण—(*न०*) श्रीखंड।

सिखरी—(*न०*) १. पर्वत। २. वृक्ष। (*वि०*) शिखर वाला।

सिखरबंध—(*वि०*) जिस पर शिखर बना हुआ हो (*मंदिर*)। शिखर वाला।

सिखंड—(*न०*) मयूर। मोर।

सिखंडी—(*न०*) १. बृहस्पति। २. मोर। ३. द्रुपद का पुत्र। शिखंडी।

सिखा—(*ना०*) १. शिखा। चोटी। २. मोर, मुर्गे आदि के सिर पर का पंख-गुच्छ। कलगी।

सिखाऊ—(*वि०*) १. सीखता हुआ। २. सीखने वाला।

सिखाड़णो—दे० सिखावणो।

सिखाणो—दे० सिखावणो।

सिखाणो-भखाणो—(क्रि०) १. बहकाना। भुलावा देना। २. चकमा देना।

सिखामण—(ना०) १. नेक सलाह। २. शिक्षा। उपदेश। सीख।

सिखावणो—(क्रि०) १. सिखाना। २. उपदेश देना। ३. पढ़ाना। ४. गलत या बुरी सलाह देना। ५. बहकाना।

सिखावळी—(न०) १. मोर। २. मुर्गा।

सिखावान—(ना०) १. अग्नि। २. दीपक। ३. मोर। ४. मुर्गा। (वि०) शिखा-वाला। चोटी वाला।

सिखी—(न०) १. मोर। शिखी। २. मुर्गा। कूंकड़ो। दे० सिखावान।

सिग—(ना०) १. दीपक की लौ। २. ढेर।

सिग-चढणो—(मुहा०) १. सफल होना। २. किसी काम का सफलतापूर्वक हो जाना या पार पड़ जाना। ३. प्रकाशित होना। ४. प्रकाशमान होना।

सिगड़ी—(ना०) अंगीठी। बोरसी।

सिगनल—(न०) १. रेलगाड़ी को रोकने या जाने का संकेत देने वाला यंत्र। २. संकेत। इसारो।

सिगरत—(वि०) कुटुंब सहित। सिगरी।

सिगरत-प्रामणो—(न०) १. सकुटुंब निमंत्रित पाहुना। २. बहुत प्यारा पाहुना। ३. मुख्य पाहुना। ४. जमाई। ५. जमाई का एक लोकगीत।

सिगरथ—दे० सिगरत।

सिगरथ-पांवणो—दे० सिगरत-प्रामणो।

सिगरी—(वि०) १. सब। संपूर्ण। २. सपरिवार। सिगरत। (भोजन निमंत्रण संबंधी। यथा-सिगरी नेतो = सपरिवार भोजन का निमंत्रण।

सिगरी नेतो—(न०) सपरिवार भोजन का निमंत्रण।

सिगरेट—(ना०) एक प्रकार की तमाखू की बीड़ी।

सिगळै—(भव्य०) सब ही। (वि०) सभी (जगह)।

सिगळो—(वि०) सब। तमाम।

सिचाणो—(न०) श्येन। बाज पक्षी। सिकरो।

सिजोवणो—(क्रि०) पकाना। सिझाना।

सिट—(ना०) १. इज्जत। आबरू। २. प्रशंसा। ख्याति। ३. शेखी। डींग। ४. होशियारी। पटुता। सिट्टी। ५. गर्व।

सिट निकळणो—(मुहा०) १. गर्व उतरना। २. होशियारी बताने की पोल खुल जाना। ३. शर्मिंदा होना। ४. दब जाना। ५. सकुचाना। ६. बेइज्जत होना।

सिट नहीं संघणो—(मुहा०) दे० सिट निकळणो।

सिट-पिट—(ना०) १. गुप्त मंत्रणा। कानाफूसी। २. किसी षड्यंत्र संबंधी गुप्त बातचीत। ३. विरुद्ध बातचीत।

सिटळियो—(वि०) १. वचन देकर बदल जाने वाला। प्रतिज्ञा करके पलट जाने वाला। २. कहकर नट जाने वाला। ३. अविश्वसनीय। विश्वास करने के अयोग्य।

सिटळो—दे० सिटळियो।

सिटियो—दे० सिट्टो।

सिटी—(न०) शहर। नगर।

सिट्टी—(ना०) सवा छः का पहाड़ा। सिठियां।

सिट्टो—(न०) १. ज्वार, मकई आदि की बाली। सिट्टा। सिटियो। सुट्टा। २. किसी लंबी वस्तु का किनारा या सिरा। चिट्टो।

सिड़—*(ना०)* १. पागल जैसा आचरण। सनक। सिरड़। २. किंचित उन्माद। झक। ३. आफत। संकट।

सिड़सट—*(न०)* सड़सठ की संख्या। *(वि०)* साठ और सात की संख्या। '६७'.

सिड़सटो—*(न०)* सदी का सड़सठवाँ वर्ष।

सिड़ी—*(न०)* सनकी। झक्की। सिरड़ी।

सिणगार—*(न०)* १. शृंगार। २. आभूषण। ३. पोशाक। ४. शोभा। ५. किसी वस्तु की सजावट। ६. शोभा की वस्तु।

सिणगारणो—*(क्रि०)* १. सुशोभित करना। २. शृंगार करना।

सिणलागर—*(न०)* सिणली (सिरड़ कोट, मारवाड़ ?) का इतिहास प्रसिद्ध तालाब, जहाँ से मांडू के बादशाह महमद बेगड़ा के आदमी तीजणियों को भगा कर ले गये थे। मल्लिनाथजी के पुत्र जगमाल महमद बेगड़ा की लड़की गींदोली के साथ सभी तीजणियों को वापस ले आये थे, जिसके लिये यहाँ कई बार युद्ध हुए थे।

सिणियो—*(न०)* टेढ़ी-मेढ़ी, लंबी-पतली अनेक शाखाओं वाला पत्तों रहित एक क्षुप।

सित—*(वि०)* १. उज्ज्वल। २. सफेद। ३. निर्मल।

सितछद—*(न०)* हंस।

सित-पक्ष—*(न०)* किसी मास का शुक्ल पक्ष।

सितम—*(न०)* जुल्म। क्रूर आचरण। अत्याचार। अनर्थ।

सितमगर—*(वि०)* १. अन्यायी। २. अत्याचारी। ३. दुखदायी।

सितवारण—*(न०)* १. श्वेत हाथी। २. इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

सितसठ—*(वि०)* साठ और सात। *(न०)* सड़सठ की संख्या। '६७'.

सितसठो—दे० सिड़सटो।

सितंतर—*(वि०)* सत्तर और सात। सतत्तर। *(न०)* सतत्तर की संख्या। '७७'.

सितंतरो—*(न०)* सदी का सतत्तरवाँ वर्ष।

सितंबर—*(न०)* १. ईसवी सन का नौवाँ महीना। सेप्टेम्बर। २. श्वेत वस्त्र। श्वेताम्बर।

सिता—*(ना०)* मिसरी। नबात।

सितार—*(ना०)* एक प्रकार का तार वाद्य।

सितारियो—*(न०)* सितार बजाने वाला।

सितारे-हिंद—*(न०)* अंग्रेजों के शासन में भारतीयों को दी जाने वाली सम्मानार्थ एक उपाधि।

सितारो—*(न०)* १. नक्षत्र। तारा। ग्रह। २. भाग्य। नसीब।

सितासित—*(न०)* १. श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम। *(वि०)* श्वेत और श्याम। सफेद और काला। सित और असित।

सितियासियो—*(न०)* सतासिवाँ सम्वत्। सदी का सतासिवाँ वर्ष।

सितियासी—*(वि०)* अस्सी और सात। *(न०)* सितासी की संख्या। '८७'.

सितोदर—*(न०)* कुबेर।

सित्यासी—दे० सितियासी।

सिदज्ज—*(न०)* स्वेदज।

सिद्ध—*(न०)* १. सिद्धि प्राप्त संत या योगी। २. ऋषि। मुनि। ३. अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त किया हुआ

पुरुष । ४. एक देव योनि । *(वि०)* १. साधित । अनुष्ठित । २. उपलब्ध । प्राप्त । ३. सफल । ४. सार्थक । ५. तर्क, प्रमाण इत्यादि से सत्य साबित । ६. प्रमाणित सिद्धांत । ७. शोधित । ८. तपश्चर्या द्वारा ईश्वर तक पहुँचा हुआ । ९. पूर्ण । पूरा ।

सिद्ध आपगा—*(ना०)* गंगा नदी ।

सिद्ध करणो—*(मुहा०)* प्रमाणित करना । दे० सिध करणो ।

सिद्ध क्षेत्र—*(न०)* वह पवित्र स्थान जहाँ भक्ति, योग इत्यादि के करने से जल्दी सिद्धि मिले । २. सिद्ध-महात्मा का स्थान ।

सिद्ध जल—*(न०)* १. मंत्रित जल । २. औटाया हुआ पानी ।

सिद्ध जसनाथ—*(न०)* कतरियासर (बीकानेर) निवासी जसनाथी सम्प्रदाय का प्रवर्तक १६ की शती का एक सिद्ध संत ।

सिद्ध-पीठ—दे० सिद्ध क्षेत्र ।

सिद्ध योग—*(न०)* पूर्ण सफलता का योग (ज्योतिष) ।

सिद्ध योगी—*(न०)* १. सिद्ध महात्मा । २. शिव ।

सिद्धरस—*(न०)* पारा ।

सिद्धराज जयसिंह—*(न०)* पाटण (गुजरात) का प्रसिद्ध शासक जिसने सिद्धपुर मे इतिहास प्रसिद्ध ११ मंजिल का रुद्रमहालय और पाटण मे विशाल और अद्भुत सहस्रलिंग सरोवर बनाये थे ।

सिद्ध विनायक—*(न०)* गणेशजी की एक मूर्ति ।

सिद्धश्री—*(अव्य०)* प्राचीन पत्र लेखन परिपाटी के अनुसार स्थान (ग्राम) नाम के पूर्व लिखा जाने वाला एक विशेषण पद । २. सिद्धि और श्री से सम्पन्न ।

सिद्ध हस्त—*(वि०)* १. काम में कुशल । मँजा हुआ । हथोटी वाली । २. अभ्यस्त ।

सिद्धा—*(ना०)* १. सिद्ध स्त्री । २. सिद्ध की स्त्री । ३. देवांगना ।

सिद्धाई—*(ना०)* १. सिद्धियाँ दिखाने की कला । करामात । चमत्कार । २. तप और भक्तिद्वारा प्राप्त की हुई सिद्धियाँ । ३. सिद्धियाँ प्राप्त किये हुए पुरुषों की शक्ति । ४. योग साधना से प्राप्त दिव्य शक्ति । ५. सफलता । सिद्धपना ।

सिद्धार्थ—*(न०)* गौतम बुद्ध ।

सिद्धासन—*(न०)* योग का एक आसन ।

सिद्धांगना—*(ना०)* १. सिद्ध स्त्री । २. देवांगना ।

सिद्धांत—*(न०)* १. तर्क-वितर्क पर पूरी तरह प्रमाणित बात । २. विचार और तर्क द्वारा निश्चित मत । पूरी तपास और विचारणा के बाद जो सच्चा प्रमाणित हो गया हो ऐसा निश्चित मत या निर्णय । ३. निश्चित मत जो प्रयोग और अनुभव के आधार पर बना हो । ४. ऋषियों के मान्य उपदेश । ५. उपपत्ति युक्त ग्रंथ ।

सिद्धांतवादी—*(वि०)* १. सिद्धान्त को मानने वाला । २. सिद्धान्त का समर्थक ।

सिद्धांती—*(वि०)* १. सिद्धान्त व तत्व को मानने वाला । २. सिद्धान्तवादी ।

सिद्धि—*(ना०)* १. सफलता । २. फल प्राप्ति । ३. योग द्वारा प्राप्त अणिमा-गरिमा आदि अलौकिक शक्ति ।

सिद्धो वर्ण—दे० सिध्धो ।
सिध—(न०) १. सिद्ध पुरुष । महात्मा । २. सफल, पूर्ण । दे० सिद्ध । (क्रि०वि०) कहाँ । [किसी के कहीं जाते समय अपशकुन तथा अशुभ समझा जाने वाला शब्द 'कठै' प्रश्न रूप में नहीं कहकर उसकी जगह प्रयोग किया जाने वाला यह मंगल रूप प्रश्न शब्द । जैसे— सिध पधारो सा ?] अन्यत्र इसका प्रयोग नहीं । कठै ।
सिध करणो- (मुहा०) १. प्रस्थान करना । रवाना होना । २. किसी मंत्र या देवता को साधना या वश मे करना। साधना। ३. प्रमाणित करना । सिद्ध करना । ४. कार्य प्रारम्भ करना । नया काम हाथ मे लेना । ५. कोई मांगलिक काम शुरू करना । ६. तैयार करना ।
सिध जाणो—(मुहा०) कहाँ जाना । किस स्थान के लिये प्रस्थान करना है । कठै जाणो ।
सिधणो—(क्रि०) जाना ।
सिधराज—(न०) १. सिद्ध । महात्मा । २. अणहलवाड़ा पाटण के अधिपति जयसिंह का विरुद । ३. सिद्धराज जयसिंह ।
सिध-साधक—(न०) १. अपने-अपने बुद्धि-बल और साधनों के उपयोग से मिल-करके काम करने वालों की जोड़ी । २. आपस में मिल करके पाखंड, ढोंग या छल-कपट करके काम बनाने वालों की जोड़ी ।
सिधाई—दे० सिद्धाई ।
सियाणो—दे० सिधावणो ।
सिधारणो—(क्रि०) १. जाना। २. प्रस्थान करना । ३. मृत्यु होना ।
सिधावणो—(क्रि०) १. किसी कार्य को सिद्ध करने के लिये जाना । २. प्रस्थान करने का मंगलसूचक पर्याय, रवाना होना, प्रस्थान करना । सिधाणो ।
सिधासण—दे० सिद्धासन ।
सिधू—दे० साधू ।
सिधेव—(क्रि०भू०) चले गये । गये । (अव्य०) १. जाना चाहिये । २. सिद्ध या सिद्धों से । ३. सिद्धों की ।
सिध्धाई—दे० सिद्धाई ।
सिध्धो—(न०) १. वाणिकी पाठशाला मे पढ़ाया जाने वाला एक व्याकरण-पाठ । २. व्याकरण पाठ का अपभ्रंश रूप ।
सिध्धो वरण—दे० सिध्धो ।
सिनकारणो—(क्रि०) इशारा करना ।
सिनकारी—(ना०) इशारा । संकेत ।
सिनकारो—(न०) इशारा । संकेत ।
सिनान—(ना०) स्नान ।
सिनान-पूजा—(ना०) प्रातःकालीन धार्मिक कृत्य । स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म ।
सिनान-संध्या—दे० सिनान पूजा ।
सिनान-संपाड़ा—(न० ब० व०) महाना-धोना । स्नान ।
सिनानी—(न०) १. विसनोई जाति । २. विसनोई जाति का मनुष्य । दे० विस-नोई ।
सिनावड़ी—(ना०) एक घास ।
सिनेमा—(न०) १. चलचित्र । २. जहाँ चलचित्र प्रदर्शित किये जाते हों, वह स्थल । चलचित्रगृह ।
सिपाई—(न०) १. सैनिक । २. पुलिस-विभाग का एक छोटा कर्मचारी । सिपाही ।
सिपाईगिरी—(ना०) १. सिपाही का कार्य । २. सिपाही की नौकरी ।

सिपहसालार—*(न०)* सेनापति ।
सिफत—*(ना०)* १. गुण । २. विशेषता ।
सिफारस—*(ना०)* १. किसी के बारे में (किसी के पास) किया जाने वाला हेतुपूर्वक अनुरोध : भलामण । लागवग ।
सिबी—*(ना०)* १. छवि । तसवीर । छिब । २. शोभा ।
सिमटणो—*(क्रि०)* सिमटना । सिकुड़ना । २. इकट्ठा होना । भिळणो । मिळणो ।
सिमरथ—दे० समर्थ ।
सिमरिख—*(ना०)* मेघविद्युत । बिजली ।
सिमी—*(ना०)* फली । छीमी । शिंबी ।
सिमेंट—*(न०)* ईंट, पत्थर आदि की जोड़ाई, चिनाई व प्लास्तर में प्रयुक्त एक बारीक चूर्ण ।
सिया—*(ना०)* १. सीता । जानकी । २. एक मुसलमान संप्रदाय । शिया ।
सियाड़ो—*(न०)* चिल्लाहट ।
सियापति—*(न०)* श्रीराम । सियावर ।
सियापो—दे० सापो ।
सियार—*(न०)* १. गीदड़ । २. सुराख करने का एक औजार । सियारड़ी ।
सियारड़ी—दे० सियार सं० २.
सियारी—*(ना०)* गीदड़ी । शृगाली ।
सियाळ—*(न०)* सियार । गीदड़ । शृगाल ।
सियाळू—*(वि०)* १. शीतकाल संबंधी । २. शीत ऋतु का ठंडा पवन ।
सियाळू बाजणो—*(मुहा०)* उत्तर दिशा की ओर का शीत पवन चलना ।
सियाळू साख—*(ना०)* रवी की फसल ।
सियाळो—*(न०)* शीतकाल, जाड़े का मौसम ।
सियावर—दे० सियापति ।

सिर—*(न०)* १. मस्तिष्क । सर । उत्तमांग । माथो । २. मुंड । कपाल । खोपड़ी । ३. शिखर । चोटी । ४. सिरा । छेड़ो । *(वि०)* श्रेष्ठ । उत्तम । बढ़िया ।
सिरकणो—दे० सरकणो ।
सिरकत—*(ना०)* शिरकत । साझेदारी । सीर ।
सिरकार—दे० सरकार ।
सिरकारी—दे० सरकारी ।
सिरकारू—दे० सरकारी ।
सिरकावणो—*(क्रि०)* सरकाना । हटाना ।
सिरकी—*(ना०)* सरकंडे की बनी हुई टट्टी ।
सिरकी पासो—*(न०)* रस्सी में लगाई जाने वाली सिरकने वाली गाँठ ।
सिरकी पाहो—दे० सिरकी पासो ।
सिरखो—*(वि०)* समान । एक जैसा ।
सिरगाह—*(न०)* १. सिरबंधी । २. शिरस्त्राण । माथे का लोहे का टोप ।
सिर-गूंथी—*(ना०)* विवाह की एक प्रथा, जिसमें प्रथममिलन के दिन वधू का सिर गूंथने के लिए स्त्रियां गीत गाती हुईं, वधू को जनिवासे ले जाती हैं ।
सिरजणहार—*(न०)* सृष्टि की रचना करने वाला । परमेश्वर । सिरजनहार । सृजनकर्ता ।
सिरजणहारो—दे० सिरजणहार ।
सिरजणो—*(क्रि०)* १. रचना । बनाना । सिरजना । सर्जना । सजणो । २. उत्पन्न करना । ३. संचय करना ।
सिरजाणो—*(क्रि०)* सर्जाना । बनवाना । रचवाना । उत्पन्न करवाना ।
सिरजियोड़ो—*(वि०)* सिरजा हुआ । रचा हुआ । सिरजित ।

सिरजोर—(वि०) १. उद्दंड। उच्छृंखल। २. बलवान। जबरदस्त। ३. जुल्मी।
सिरजोरी—(न०) १. उद्दंडता। २. उच्छृंखलता। ३. जबरदस्ती। ४. जुल्म।
सिरटियो—(न०) अनाज की बाली। बाजरी जुआर आदि का सिट्टा। पूंख।
सिरटो—दे० सिरटियो।
सिरड़—दे० सिड़।
सिरड़ी—दे० सिड़ी।
सिरताज—(वि०) १. शिरोमणि। २. सबसे अच्छा। (न०) १. पति। स्वामी। २. सरदार। ३. शिरोमणि। ४. मुकुट।
सिरत्राण—(न०) सिर पर पहिनने का सैनिकों का लोहे का टोप।
सिरनामो—(न०) १. पुस्तक के मुख पृष्ठ पर लिखा नाम। पुस्तक का नाम। २. पत्र पर लिखा जाने वाला पता ठिकाना। सरनामो। सरनांवो। ३. निबंध या लेख का नाम। शीर्षक। ४. नाम सूची में सबसे पहले (सबसे ऊपर) लिखा जाने वाला नाम। सिरेनाम।
सिरपाव—(न०) समस्त अंग के वस्त्र व आभूषण जो राज दरबार से किसी को सम्मान के रूप में दिये जाते हैं। सिरोपाव। खिलअत।
सिरपेच—(न०) १. सिर का एक गहना। २. कलगी। ३. तुर्रा।
सिरपोस—(न०) १. शिरोभूषण। २. पगड़ी। साफा।
सिरफ—(अव्य०) केवल। मात्र। सिर्फ। फगत। बस। इतना ही। (वि०) १. खालिस। २. अकेला।
सिरमंड—(न०) १. केश। २. मुकुट। ३. शिरोभूषण।
सिर-मुंडाई—(ना०) १. सिर के बाल काटने की क्रिया या भाव। २. उक्त का पारिश्रमिक।
सिर-मूंडणो—(क्रि०) १. माथे के बाल काटना। २. ठगना। धोखा देना। मायो मूंडणो।
सिरमोड़—(न०) शिरोमणि। सिरताज।
सिरसो—(वि०) १. समान। बराबर। २. जैसा।
सिरहर—(न०) १. शिरोधर। ताज। मुकुट। २. शिखर। ३. शिरोमणि। (वि०) शिरोधार्य। मान्य। सिरधर।
सिरहाणो—(न०) खाट या पलंग का वह भाग, जिस ओर सोते समय सिर रहता है। सिरहाना। सिराणो।
सिरस्तेदार—(न०) १. विभागीय प्रधान अधिकारी। २. मुकदमों की मिसल रखने वाला मुख्य कर्मचारी। सरिश्तेदार।
सिरंग—(न०) १. शृंग। शिखर। २. श्रीरंग।
सिराणो—(न०) सिरहाना।
सिरामण—(न०) कलेवा। भारो। सिरावण।
सिरावड़ो—दे० सळेवड़ो।
सिरावण—दे० सिरामण।
सिरावणी—(न०) १. कलेवा। २. मृतक को ग्यारह दिन तक दिया जाने वाला क्षीर-पिंड।
सिरांयियो—दे० सिरहाणो।
सिरी—(ना०) श्री। लक्ष्मी। (सर्व०) आप।

सिरीरंग— दे० श्रीरंग।

सिरीसो—(वि०) समान। बराबर।

सिरू—(ना०) वृद्धि। बरकत।

सिरे—(वि०) १. श्रेष्ठ। २. ऊंचा। ३. शीर्ष। सर्वोपरि। ४. प्रथम। पहला।

सिरेकार—(वि०) १. अच्छा। भला। २. शुभ। मांगलिक। दे० श्रीकार।

सिरे चढ़णो—(मुहा०) १. सिद्ध होना। २. घटित होना। ३. पार जाना। ४. संपूर्ण होना। ५. पेटे की रकमों का सिरे में टोटल लगना (बहीखाता)।

सिरे दरबार—(न०) राजा या बादशाह का खास दरबार।

सिरे-नाम—(वि०) १. प्रसिद्ध। मशहूर। २. मुख्य। प्रधान। अग्रणी। दे० सिरनामो।

सिरे-नांव—दे० सिरनामो।

सिरे-मंदिर—(न०) जालोर के पास एक प्रसिद्ध और ऐतिहासिक स्थान जो नाथ सन्यासियों का निवास स्थान था।

सिरो—(न०) १. धान की बाल। सिट्टो। २. किनारा। सिरा। छेड़ो। ३. किसी वस्तु के ऊपर का या किनारे का भाग। ४. ऊंचापन। बड़प्पन। ५. श्रेष्ठता। ६. सर्वोपरि नाम। ७. वह व्यक्ति, जिसका समाज में सर्वोपरि नामोल्लेख होता हो। ८. सिरा। मथारो। ९. भाला। सांग। (वि०) १. सर्वोपरि। २. सर्वोपरि नाम वाला।

सिरोपा—दे० सिरोपाव।

सिरोपाव—(न०) १. बादशाह या राजा की ओर से सम्मान में मिलने वाली सिर से पैर तक की पूरी पोशाक। २. सिरोपाव मिलने का सम्मान।

सिरोमणि—(वि०) सर्वोच्च। शिरोमणि। (न०) सिर पर धारण किया जाने वाला रत्न।

सिरोमणिराय- (न०) श्रीकृष्ण।

सिरोही—(न०) १. राजस्थान का एक नगर। २. राजस्थान की एक भूतपूर्व रियासत। ३. सिरोही में बनी तलवार।

सिल—दे० सिला।

सिलक—(ना०) पोतेबाकी। बैलेंस। (न०) रेशम।

सिळकणो—(क्रि०) (बादल में) बिजली चमकना।

सिळगणो—(क्रि०) १. आग लगना। २. ज्वाला उठना। ३. अत्यधिक ताप लगना। ४ अत्यन्त क्रोध करना। ५. झगड़ा होना।

सिळगाणो—दे० सिळगावणो।

सिळगावणो—(क्रि०) १. आग लगाना। २. झगड़ा लगाना। ३. गुस्सा दिलाना।

सिलसिलो—(न०) १. क्रम। परम्परा। सिलसिला। २. यथानुक्रम। ३. पंक्ति। कतार। ४. तरतीब। सलीका।

सिलह—(न०) १. कवच। २. शस्त्र। ३. कटारी।

सिलह-खानो—(न०) शस्त्रागार। सिलेगार।

सिलह-पोस—(न०) कवचधारी सैनिक।

सिला—(ना०) १. शिला। प्रस्तर खंड। २. पत्थर की पट्टी। ३. मसाले पीसने की शिला।

सिळाउ—(ना०) १. बिजली। २. बिजली की चमक।

सिलाजीत—(न०) शिलाजीत।

सिलाटण—*(ना०)* १. सिलावट जाति की स्त्री। २. सिलावट की पत्नी।

सिलाटणो—*(क्रि०)* पत्थर को घड़ना। शिला को टाँचना।

सिलाड़ी—*(ना०)* शिला। दे० सिला। सं० ३.

सिलालेख—*(न०)* पत्थर पर खुदा हुआ लेख। शिला-लेख।

सिला-लोडी—*(ना०)* मंग, मसाला आदि पीसने का सिलबट्टा। सिलोटा।

सिळाव—*(ना०)* १. प्रकाश रेखा। २. विद्युत प्रकाश।

सिलावट—दे० सिलावटो। दे० सिलाई।

सिलावटो—*(न०)* पत्थर का काम करने वाला। शिलाकार। सिलावट।

सिळावणो—*(क्रि०)* शीतल करना।

सिळासणो—*(क्रि०)* ग्रहण करना।

सिलासार—*(न०)* १. लोहा। २. शिला-जीत।

सिली—दे० सिल्ली।

सिळी—*(ना०)* १. शलाका। २. नाक का एक आभूषण। फूली। लूंग। तणको। ३. तिनका। तृण। तिणको। ४. फांस। फां। कूळी।

सिळीमुख—*(न०)* १. भौंरा। २. बाण। *(वि०)* मूर्ख।

सिलूप—*(न०)* नारियल।

सिलेगार—दे० सिलहखानो-[illegible]

सिलेट—*(ना०)* पाठश[illegible] लिखने की एक पत[illegible] पाटी।

सिलेट-पैण—*(ना०)* १. [illegible] की लड़िया मिट्टी की [illegible] ग्रोर [illegible]

सिलेदार—*(न०)* १. घुड़सवार सिपाही। २. शस्त्रसज्ज योद्धा।

सिलोक—*(न०)* १. श्लोक। २. यश। कीर्ति।

सिलोको—*(न०)* विवाह में बरात चढ़ने के पूर्व बंदोळी के जुलूस के रूप में दुल्हे और दुल्हिन का मंदिरों में जाना और वहां पर गाई जाने वाली देवी-देवताओं की प्रार्थना।

सिलोचय—*(न०)* पर्वत। सिलोच्च।

सिल्ली—*(ना०)* उस्तरे की धार तेज करने की पत्थर की संकड़ी छोटी पट्टी।

सिव—*(न०)* शिव। महादेव।

सिवड़ाई—दे० सिवाई।

सिवड़ावणो—दे० सिवावणो।

सिवढाण—*(न०)* १. मोक्ष। २. श्मशान। श्मशान भूमि। ३. सिद्ध पुरुष और फकीरों के रहने की जगह।

सिव-मारग—*(न०)* १. देश, धर्म और जाति के लिए किया गया बलिदान। शिवमार्ग। २. वीरगति। ३. मोक्ष। ४. मृत्यु।

सिवरात—*(ना०)* शिवरात्रि।

सिवा—*(ना०)* १. हर्र। २. पार्वती। शिवा। *(अव्य०)* अतिरिक्त। सिवाय।

सिवाई—*(ना०)* १. सिलाई। सीने का काम। २. सीने की मजदूरी। सिलाई।

[illegible]—दे० सिवावणो।

[illegible]ची—*(ना०)* १. सिवाणा नगर [illegible]) के सूर्य [illegible] तरफ के [illegible] का प्रदे[illegible] [illegible]सी [illegible] नाम से [illegible] है। [illegible] की

सिवाणची का सामाजिक संगठन। ३. सिवाणा नगर से संबंधित। सिवाणे का।

सिवाणो—(न०) १. मारवाड़ का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर। २. दे० सिवावणो।

सिवाय—(अव्य०) अतिरिक्त। बिना। रहित। सिवा।

सिवालो—(न०) शिवालय। शिव मंदिर।

सिवावणो—(क्रि०) सिलवाना। सिलाई करवाना।

सिवियाणो—दे० सिवाणो सं० १.

सिविर—(न०) १. तंबू। २. शिविर।

सिस—(न०) १. शशि। चंद्रमा। २. शिष्य। चेलो।

सिसकारणो—(क्रि०) सीत्कार करना।

सिसकारी—दे० सिसकारो।

सिसकारो—(न०) १. निःश्वास। सिसकार। २. मुँह से किया जाने वाला 'सिस' या सिटी जैसा शब्द। सिसकारी।

सिसगोली—(न०) मोली।

सिसपाळ—(न०) शिशुपाल। (वि०) शिशु का पालन करने वाला।

सिसप्रिया—(ना०) रात। शशिप्रिया।

सिसमरथ—(न०) महादेव।

सिसहर—(न०) चंद्रमा। शशिहर।

सिसिर—(ना०) शिशिर ऋतु।

सिसुता—(ना०) १. शिशु अवस्था। शिशुता। (वि०) शिशु संबंधी। शिशुपना।

सिसुपाळ—(न०) चंदेरी का राजा, शिशुपाल।

सिसुपाळो—दे० सिसुपाळ।

सिसुमार—(न०) एक जल प्राणी। शिशुमार।

सिसोदियो—(न०) सीसोदा गांव से संबंधित मेवाड़ के गहलोत राजपूतों का एक नाम। सिसोदो।

सिसोदो—दे० सिसोदियो।

सिस्ट—(ना०) १. सृष्टि। संसार। २. सभ्य। शिष्ट।

सिस्टाचार—दे० शिष्टाचार।

सिस्टी—(ना०) संसार। सृष्टि।

सिहर—(न०) १. हाथी। २. शिखर। शृंग। ३. मेघ-शिखर।

सिहंड—(न०) मोर। शिखंडी।

सिंआर—(ना०) लकड़ी आदि में छेद करने का एक औजार। छोटा बरमा।

सिंआरड़ी—दे० सिंआर।

सिंगण—(न०) धनुष।

सिंगळ—दे० सिगनल। (वि०) अकेला।

सिंगार—(न०) शृंगार। सिणगार।

सिंगाळ—(वि०) १. वीर। बहादुर। २. श्रेष्ठ। उत्तम।

सिंघ—(न०) सिंह। सींह।

सिंघण—(ना०) सिंहनी। बाघण। दे० सेडो सं. ४.

सिंघणी—(ना०) १. सिंह की मादा। सिंहनी। २. सिंहनी के समान शक्तिशाली स्त्री। वीरांगना।

सिंघल—(न०) सिंहल। लंका। श्रीलंका। लंका टापू।

सिंघल-दीप—दे० सिंघल।

सिंघळी—(न०) हाथी।

सिंघ-वाहणी—(ना०) १. देवी। सिंहवाहिनी। सिंहवाहिनी देवी। २. पार्वती। ३. दुर्गा।

सिंघाड़ो—(न०) चार या पांच (तेरापंथी) जैन साधु या साध्वियों का साथ में रह कर विहरण करने वाला समुदाय।

सिघार—(न०) नाश। संहार।
सिघासण—दे० सिंहासन।
सिघारणो—(क्रि०) संहार करना। नाश करना।
सिंघाळो—(वि०) वीर। बहादुर।
सिंघोड़ो—(न०) पानी में होने वाली एक लता का फल। सिंघाडा।
सिंच—(न०) १. जिसके द्वारा शरीर का सिंचन होता हो। सिर। २ मुँह। मुख।
सिंज्या—(ना०) साँझ। संध्या।
सिझ्या—(ना०) साँझ। संध्या।
सिंडीकेट—(ना०) यूनिवर्सिटी की कार्य-वाहक समिति।
सित्तर—(वि०) साठ और दस। (न०) सत्तर की संख्या। '७०'.
सित्तरसौ—(न०) पहाड़े में बोली जाने वाली '१७०' की संख्या।
सित्तरो—(न०) सदी का सत्तरवाँ वर्ष।
सिंदन—(न०) स्यंदन रथ।
सिंदूर—(न०) ईंगुर (पारा, शीशा और गंधक का मिश्रण) से बना एक मांग-लिक चूर्ण।
सिंदूरो—(ना०) मकराह। २. कुल्वाति। (वि०) १. सिंदूर रंग की। २. सिंदूर संबंधी।
सिंध—(न०) सिंध प्रदेश। भारत का सिंधु प्रान्त जो अब पाकिस्तान में है।
सिंधण—(ना०) १. सिंध प्रदेश की स्त्री। २. सिंधी की स्त्री। (वि०) १. सिंध देश की। २. सिंध देश से संबंधित।
सिंधव—(न०) १. घोड़ा। सेंधर। २. सेंधव नमक।
सिंधी—(वि०) १. सिंध प्रांत का रहने वाला। २. सिंध से संबंधित। सिंध का। (ना०) सिंधी भाषा।
सिंधु—(न०) १. समुद्र। २. भारत की पश्चिम वाहिनी प्रसिद्ध महानदी। मीठो महराण।
सिंधु-कुल्या—(ना०) नदी। सरिता।
सिंधु-जात—(न०) घोड़ा। अश्व।
सिंधुभव—(न०) १. लक्ष्मी। २. चंद्रमा। ३. शंख। ४. सीप। शुक्ति।
सिंधुर—(न०) हाथी।
सिंधुव—(न०) सिंधु। समुद्र।
सिंधु-सुता—(ना०) लक्ष्मी। सिंधुजा। कमला। लिछमी।
सिंधु-सुवण—(न०) चंद्रमा। शशांक। एणांक। शशि।
सिंधू—(न०) १. युद्ध का ढोल। २. युद्ध का ढोल बजाना। ३. एक राग जो युद्ध के समय गाई जाती है।
सिंधू-राग—(ना०) युद्ध को प्रोत्साहित करने वाली रागिनी। सिंधूड़ो।
सिंबा—(ना०) फली। छीमी।
सिंबी—(ना०) फली। सिंबा।
सियाळ—(न०) सियार। स्यार। गीदड़।
सियाळणी—दे० सियाळी। स्यारी।
सियाळियो—दे० सियाळ।
सियाळी—(ना०) सियार की मादा। सियारी। स्यारी।
सिवरणो—दे० सिमटणो।
सिवरणी—(ना०) जपमाला। सुमिरणी।
सिवरणो—(क्रि०) सुमिरण करना। सुमरणो।
सिंह—दे० सिंघ।
सिंहणी—(ना०) सिंहनी। सिंह की मादा।
सिंहल—(ना०) लंका।

सिंहल दीप—दे० सिंहल ।

सिंह संवत—*(न०)* वि० सं० ११७० में सोरठ के प्रतापी राजा सिंह द्वारा प्रवर्तित संवत । (सिंह ने संवत को चैत्र वदी १ से चलाया था इसलिये सोरठ में भी उस समय पौर्णमासिक मास प्रवर्तमान हो गया था) ।

सिंहासन—*(न०)* १. देव, आचार्य, राजा आदि के बैठने का आसन । २. सिंह की आकृति वाला ऊंचा आसन ।

सी—*(न०)* १. सिंह । २. ठंड । शीत । ३. एक प्रत्यय जो पुरुष नाम के अन्त में 'सिंह' शब्द के संक्षिप्त या अपभ्रंश रूप में लगता है । जैसे—नैणसी, प्रतापसी । *(ना०)* ठंड के कारण सी सी की आवाज । *(वि०)* जैसी । समान । सदृश ।

सी. आई. डी.—*(ना०)* खुफिया पुलिस विभाग । 'क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट' का संक्षिप्त रूप ।

सीओ-ताव—*(न०)* ठंड लग कर के आने वाला ज्वर । शीतज्वर । मेलेरिया । टाडोताव ।

सीक—*(ना०)* १. नीम, पीपल आदि वृक्षों की वह डंडी जिसमें पत्ते लगते हैं । २. तीली । ३. जंगल का एक फल । ४. फरेरी ।

सीकड़—*(वि०)* १. वीर । बहादुर । २. सम्पन्न । ३. प्रतिष्ठित । ४. दृढ । मजबूत । *(ना०)* सांकल । जंजीर । सिकड़ी ।

सीकर—*(न०)* १. बिंदु । २. जलकण । ३. राजस्थान का एक नगर ।

सीकी—*(ना०)* १. किसी आभूषण का सांकलनुमा भाग । २. सांकल ।

सीको—दे० छींको ।

सीकोतरी—दे० सिकोतरी ।

सीख—*(ना०)* १. आज्ञा । इजाजत । छुट्टी । २. उपदेश । शिक्षा । ३. प्रस्थान करने की आज्ञा । ४ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर दी जाने वाली भेंट । ५. विदाई के अवसर पर दी जाने वाली भेंट । ६. सजा । दंड ।

सीख करणो—*(क्रि०)* १. रवाना होने की आज्ञा मांगना । २. रवाना होना ।

सीखणो—*(क्रि०)* १. सीखना । २. पढना ।

सीखतोड़ो—*(वि०)* १. सीखने वाला । २. सीखता हुआ ।

सीख देणी—*(मुहा०)* १. शिक्षा देना । उपदेश देना । २. समझाना । ३ जाने की आज्ञा देना । ४. विदाई के समय भेंट देना । ५. विवाहोपरांत बारात को विदा देना । ६. कमीण-कारू इत्यादि को नेग चुकाना । ७. बहीवंचा भाट को अपने पुरखाओं की वंशावली पढने का नेग चुकाना ।

सीख-मत—*(ना०)* १. उपदेश । शिक्षा । २. दंड । ३. सजा ।

सीख-लेणी—*(मुहा०)* १ जाने की आज्ञा लेना । २. उपदेश लेना ।

सीख-लेणो—*(मुहा०)* १. उपदेश ग्रहण करना । २. जाने की इजाजत लेना ।

सीखां—*(ना०)* बरात को विदाई देने की तैयारियां । वे रीति-रस्म जो कन्या को बरात के साथ विदा करने के समय सम्पन्न की जाती हैं । २. बरात को दी जाने वाली विदाई ।

सीखां-देणी—*(मुहा०)* बरात को दहेज आदि देकर रवाना करना । विदा ।

सीखां-लेणी(मुहा०) बारातियों का बारात को रवाना करने की कन्यापक्ष से सीख मांगना। सीख प्राप्त करना।

सीगो—(न०) १. तरीका। २. विश्राम। सीगा।

सीचाणो—(न०) बाज पक्षी। श्वेन।

सीजणो—दे० सीझणो।

सीझणो—(क्रि०) १. पकना। किसी खाद्य पदार्थ का अग्नि की आंच से पक जाना। २. संताप होना। ३. संताप करना। ४. सिद्ध होना।

सीट—(ना०) १. बैठक। २. बैठने की जगह।

सीटी—(ना०) १. ओठों या किसी साधन विशेष मे फूंक मारने से उत्पन्न आवाज। सीसोटी। पीपी। २. उक्त उपकरण। व्हिसल।

सीठ—(वि०) शिष्ट। सभ्य। (ना०) सृष्टि।

सीठचार—(न०) १. शिष्टाचार। २. अशिष्टाचार।

सीठणा—(न०ब०व०) स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले अश्लील गायन। विवाहादि के गाली-गायन। सींठणा।

सीडी—(ना०) अरथी। रथी। जनाजा। झोली। रामझोली। सीडो।

सींढी—(ना०) १. अरथी। ठाठडी। २. मकानादि में ऊपर चढ़ने या नीचे उतरने के लिये बना पायरियों का क्रम। श्रीसरणी।

सीढी काढियो—(अव्य०) एक गाली (मरने की)।

सीढी काढयो—दे० सीढी काढियो।

सीणकी—दे० सीणो।

सीणको—दे० सीणो। (वि०)

सीणी—(वि०) १. सफेद और काले बालों वाली (गाय)। (ना०) २. काले रंग की गाय। सीणकी। सोकन।

सीणो—(वि०) १. काले रंग का (बैल या सांड)। २. काले और सफेद बालों वाला (बैल)। (न०) वह बैल जिसका रंग कालापन लिये सफेद हो। (क्रि०) सीना (कपड़ा, चमड़ा आदि)। सीवणो।

सीत—(वि०) शीत। ठंडा। (न०) १. ठंड। शीत। २. शीतलता। ३. सीता। जानकी।

सीत अंसु—(न०) चंद्रमा। शीतांशु।

सीत-गंध—(न०) चंदन।

सीतपत—(न०) सीतापति। श्रीरामचंद्र।

सीत-मीत—(अव्य०) योंही। फालतू। (वि०) मुफ्त का।

सीत-रूंख—(न०) चंदन वृक्ष। मलयागिरी श्रीखंड।

सीतळ—(वि०) शीतल। ठंडा। (ना०) शीतला।

सीतळता—(ना०) शीतल होने का भाव या अवस्था। ठंडक।

सीतळ-पुहण—(न०) शीतला का वाहन गदहा। गधो।

सीतळ-रूंख—(न०) चंदन वृक्ष। मलयतरु।

सीतळा—(न०) १. शीतला देवी। २. चेचक रोग। माता।

सीतळावाह—(न०) गदहा। खर। गधो।

सीतळा-वाहण—(न०) गदहा। अधेड़ो।

सीतळा-सातम—(ना०) होली के सात दिन बाद पड़ने वाला शीतला सप्तमी का त्योहार। सीळ सातम।

सीतहर—*(न०)* १. सूर्य । २. रावण ।

सीतंसु—*(न०)* १. चंद्रमा । शीतांशु । २. कपूर ।

सीता—*(न०)* १. जानकी । जनक की पुत्री । २. हल की नोक ।

सीतापति—*(न०)* श्रीरामचंद्र ।

सीताफळ—*(न०)* १. एक फल । शरीफा । २. कुम्हड़ा ।

सीतारवण—*(न०)* सीतापति । सीता-रमण ।

सीताराम—*(न०व०व०)* १. सीता और राम । *(अव्य०)* भिक्षा माँगते समय साधु द्वारा उच्चारण किया जाने वाला शब्द ।

सीदड़ो—*(न०)* १. तैल भरने का ऊँट के चमड़े का बना हुआ पात्र । २. बूढ़ा ऊँट । रड़को ।

सीदवो—*(न०)* गाडी को ऊँची उठाये रखने के लिये पहिये की जगह (जब पहिये को धुरी में से निकालते हैं) रखने का एक उपकरण । जैक ।

सीध—*(ना०)* १. सीधापना । सरलता । २. सीधापन । अवक्रता ।

सीधर—*(न०)* श्रीधर । लक्ष्मीनाथ । विष्णु ।

सीधो—*(वि०)* १. सरल । आसान । २. सीधा । अवक्र । ३. सीधा । भोला । *(न०)* १. भोजन बनाने के लिये दिया जाने वाला आटा दाल आदि सूखा सामान । २. ब्राह्मण या साधु को दान में दिया जाने वाला आटादाल आदि सूखा सामान । ३. भोजन की सूखी सामग्री । दे० सिध्धो ।

सीधो देणो—*(मुहा०)* १. साधु, ब्राह्मण आदि को भोजन बनाने के लिये आटा, दाल, घी इत्यादि देना । २. हानि पहुँचाना ।

सीधोरो—*(न०)* १. बारात के लौटने के समय रास्ते में नास्ते के लिये कन्या के माता-पिता की ओर से दी जाने वाली भोजन सामग्री (पूरियाँ और करबा आदि) ।

सीधो सरणक—*(अव्य०)* बिलकुल सीधा । सांवसीधो ।

सीधो-सादो—*(वि०)* १. सरल । सुगम । २. अति सुगम । बिलकुल सरल । ३. जिसमें तड़कभड़क न हो । ४. भोला-भोला ।

सीधो-सीध—*(वि०)* बिलकुल सीधा ।

सीन—*(न०)* १. दृश्य । नाटक का दृश्य । २. यवनिका ।

सीनो—*(न०)* छाती । सीना । वक्षस्थल ।

सीप—*(ना०)* शुक्ति ।

सीपसुत—*(न०)* मोती ।

सीवी—*(ना०)* छवि । तसबीर ।

सीवी-सॉकळ—*(ना०)* एक आभूषण ।

सीम—*(ना०)* १. सीमा । सींव । २. जंगल । वन ।

सीमळो—*(न०)* १. एक बरतन । २. शमी-वृक्ष । खेजड़ी । जांट । ३. सेमल वृक्ष ।

सीमंग—*(न०)* चंद्रमा ।

सीमंत—*(न०)* १. स्त्रियों के सिर की मांग । २. पहला गर्भ । अघरणी ।

सीमंतिनी—*(ना०)* १. स्त्री । २. सौभाग्य-वती स्त्री । ३. वह स्त्री जिसका सीमंत संस्कार हुआ हो या होने वाला है ।

सीमंतोन्नयन—*(न०)* १. गर्भवती स्त्री का चौथे, छठे या आठवें मास का एक संस्कार । २. मांग भरने का संस्कार ।

सीमा—*(ना०)* १. हद। २. सरहद। ३. मर्यादा।

सीमाड़ो—*(न०)* १. सीमा-चिन्ह। सेढो। २. सीमा। हद। ३. अन्त। आखिर। छेह।

सीयळ—*(वि०)* १. शीतल। ठंडा। *(न०)* शीलव्रत। ब्रह्मचर्य।

सीयळी—*(वि०)* १. शीलव्रत वाली। २. अशक्त। ३. सुस्त। ४. शीतल। ठंडी।

सीयळो—*(वि०)* १. सुस्त। धीमा। २. ठंडा। शीतल। ३ कायर। ४. अशक्त। असमर्थ।

सीया—दे० सीता।

सीयो—*(न०)* सीसा।

सीर—*(न०)* १. भाग। हिस्सा। साझो। २. भाग्य। ३. जमीन के अन्दर बहने वाली पानी की धारा। सेजो। ४. आमदनी का नित्य साधन। *(वि०)* मीठा।

सीरख—*(न०)* १. मस्तिष्क। शीर्ष। माथो। २. सूर्य। सूरज। *(ना०)* १. शीतरक्षक। २. बिना मगजी की, रजाई से अधिक रूई भरी हुई छपे हुए मोटे वस्त्र की शीत ऋतु मे ओढने की लंबी खोळ।

सीरखो—*(न०)* शीत या शीत वायु से रक्षा का स्थान या साधन। सी-रखो। दे० सीरख। दे० सरीखो।

सीरण—*(न०)* यम।

सीरणी—*(ना०)* शीरनी। मिठाई। सीरनी।

सीरप—दे० सीरपो।

सीरपण—दे० सीरपो।

सीरपणो—दे० सीरपो।

सीरपाण—*(न०)* बलिभद्र।

सीरपो—*(न०)* १. भाग। हिस्सा। सीर। सेणियो। २. सीर होने या सीरपने का भाव। ३. पूर्वजन्म का ऋणानुबंध।

सीरवियो—दे० सीरवी।

सीरवी—*(न०)* १. राजस्थान की एक कृषक जाति। २. भागीदार व्यक्ति। ३. मिट्टी की परीक्षा द्वारा यह बताने वाला व्यक्ति कि कुआं खोदने की जगह पर खारा या मीठा पानी निकलेगा। ४. भूमि परीक्षा द्वारा जमीन के नीचे के पानी की परीक्षा करने वाला विशेषज्ञ।

सीरसक—*(न०)* १. लोहे का टोप। २. शीर्षक।

सीराणो—*(क्रि०)* भोजन करना। जीमणो।

सीरावोडी—दे० सीरावडी।

सीरावड़ी—*(ना०)* ज्वार के आटे को छाछ मे औटाने से बनी राब को पतली परत के रूप में सालड़ी पर फैला और सुखा कर बनाया गया एक तीवण। इसे प्रायः शीत ऋतु में बनाया जाता है, इसलिये इसे सी-रावोड़ी भी कहते हैं।

सीरावण—दे० सिरावण।

सीरावणो—*(क्रि०)* भोजन करना। जीमणो। सीराणो।

सीरी—*(वि०)* १. सहायक। २. भागीदार। हिस्सेदार।

सीरो—*(न०)* हलुवा। सीरा।

सीरोळियो—*(न०)* भागीदार। हिस्सेदार। सीरवाळो।

सीरोळी—*(अव्य०)* भागीदारी में। हिस्सेदारी मे।

सीरोळो—*(न०)* भागीदारी। *(अव्य०)* १. भागीदारी मे। २. भागीदारी का।

सील—*(ना०)* १. गाय की कामेच्छा। २. मुहर, छाप या मुद्रा। ३. एक बड़ी मछली। ४. दीवाल आदि में लगने वाली पानी की नमी। मेज।

सीळ—*(ना०)* १. ठंडक। २. शीतला देवी। ३. ब्रह्मचर्य। शीत। ४. ठंड। सर्दी।

सील-कौल—*(न०)* १. परस्पर की गई प्रतिज्ञा की लिखावट। २. दुतरफी प्रतिज्ञा। ३. प्रतिज्ञा। कौल।

सीलणो—*(क्रि०)* १. नुकसान या हरजाना भरना। २. कर्जा चुकाना। ३. किसी के कर्ज का उत्तरदायित्व लेना और चुकाना। *(न०)* ऋण।

सीलवाड—दे० रोहाड़।

सीळव्रत—*(न०)* ब्रह्मचर्यव्रत। शीलव्रत।

सीळसातम—दे० सीतळा सातम।

सीळाई—*(ना०)* १. ठंडक। ठंडापना। २. ठंड। सर्दी।

सीलाड़णो—दे० सीलावणो।

सीलाणो—दे० सीलावणो।

सीलावणो—*(क्रि०)* हानि का एवजाना प्राप्त करना। २. हरजाना वसूल करना।

सीळी—*(वि०)* १. ठंडी। शीतल। २. नमी वाली। जिसमें कुछ गीलापन रह गया है। दे० सीणी।

सीळूंडो—*(न०)* शीतला का त्योहार और उस दिन खाया जाने वाला ठंडा और बासी भोजन। बासेड़ा।

सीळो—*(वि०)* १. ठंडा। २. सुस्त। आलसी। ३. निकम्मा। ४. जिसमें कुछ नमी रह गई हो। नमीवाला (कपड़ा)। दे० सीणो सं० १, २.

सीळो-पेट—*(न०)* १. पुत्रोत्पत्ति। पुत्र-जन्म। २. पुत्र उत्पन्न होने का आशीर्वाद। ३. अखंड सौभाग्य और पुत्रवान होने की आशिष।

सीव—*(न०)* पुत्र। होव।

सीवणी—*(ना०)* सूई। सूवी।

सीवणो—*(क्रि०)* सीना। सिलाई करना। टाँका मारना।

सीस—*(न०)* मस्तक। माथो। शीश।

सीसथंभ—*(ना०)* गरदन। गाबड़।

सीसफूल—*(न०)* १. स्त्रियों का एक सिरो-भूषण। २. रखड़ी। बोर।

सीसम—*(न०)* शीशम का वृक्ष और उसकी लकड़ी।

सीस-महल—*(न०)* शीशमहल।

सीसवद—दे० सीसोदिया।

सीसा-पैण—*(ना०)* पेंसिल। लीड पेंसिल।

सीसी—*(ना०)* काँच की छोटी बोतल। शीशी।

सीसो—*(न०)* १. रांगा। २. काँच की बड़ी बोतल। बोतल।

सीसोटी—*(ना०)* सीटी। पीपी।

सीसोद—दे० सीसोदिया।

सीसोदा—दे० सीसोदिया।

सीसोदिया—*(न०)* मेवाड़ के गहलोत वंश के क्षत्रियों का एक नाम। सीसोदा गाँव से संबंधित उक्त नाम।

सीह—*(न०)* सिंह।

सीहगोस—*(ना०)* एक पशु। स्याहगोश पशु।

सीहण—*(ना०)* सिंह की मादा। सिंहनी।

सीहणी—*(ना०)* सिंहनी। शेरनी।

सीह-लंकणी—दे० सीह लंकी।

सीहलंकी—*(वि०)* सिंह के समान पतली कमर वाली।

सीह-विक्रमो—*(न०)* १. एक जाति का श्रेष्ठ घोड़ा। २. घोड़ा। ३. एक छंद। *(वि०)* सिंह के समान शक्तिशाली।

सीहासण—*(न०)* सिंहासन।

सींक—दे० सीक।

सींकणो—*(क्रि०)* हवा का जोर देकर नाक से रेंट को बाहर निकालना। नाक साफ करना। रेंट निकालना। सेडो काढणो।

सींकी—*(ना०)* जड़ाऊ आभूषणों का लंबोतरा खाना जिसमें रत्न जड़ा जाता है।

सींको—*(न०)* छीका।

सींग—*(न०)* १. बीच में से फटे खुरों वाले पशुओं के सिर में उगने वाले दो कठोर, लंबे और नुकीले अवयव। सिंगाण। २. तुरही। ३. सींग का बना फूंक वाद्य। सींगी।

सींगडमल—*(न०)* वीर पुरुष। *(वि०)* वीर। बहादुर।

सींगड़ियो—*(न०)* १. युद्ध में हरोल में रहने वाला वीर सैनिक। २. सींग। ३. तीक्ष्ण नोक वाला एक शस्त्र। *(वि०)* सींगवाला।

सींगड़ी—*(ना०)* १. शरीर में से खून खींच कर निकालने का नली जैसा एक छोटा सींग। २. हरिण के सींग का एक फूंकवाद्य। सींग। सींगी।

सींगड़ी देणी—*(क्रि०)* सींगड़ी द्वारा विकृत खून खींच कर निकालना।

सींगड़ी लगाणी—दे० सींगड़ी देणी।

सींगड़ी वाळो—*(न०)* १. सींगड़ी लगाने वाला। २. एक अस्पृश्य जाति का व्यक्ति।

सींगड़ो—दे० सींग सं० १.

सींगळी—*(ना०)* गाय (संकेत शब्द)। *(वि०)* सुन्दर सींगों वाली।

सींगाळ—*(न०)* बैल। बळद।

सींगाळी—*(ना०)* गाय। *(वि०)* सींगों वाली।

सींगाळो—*(न०)* १. सींगोंवाला पशु वर्ग—गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि। २. बैल। बळद। *(वि०)* १. उच्चाशय। २. वीर श्रेष्ठ। ३. सींगों वाला।

सींगी—*(ना०)* १. हरिण के सींग का फूंक से बजाने का एक वाद्य। २. योगियों के कंठ में धारण की जाने वाली माला में सींग का बना एक विशेष चिह्न।

सींगोटी—*(ना०)* १. सींगों की सुन्दरता। २. सींगों की सुन्दर आकृति। ३. दोनों सींग। ४. सींगों पर पहनाई जाने वाली चाँदी सोने की खोल।

सींगोड़ो—*(न०)* सिंघाड़ा।

सींघळी—*(न०)* सिंह।

सींघळो—*(न०)* १ अग्रज। २. पुत्र। ३. सिंह। *(वि०)* वीर।

सींचणियो—*(न०)* १. कुँए से पानी निकालने के लिये डोल के बाँधी जाने वाली रस्सी। पानी खींचने का रस्सा। *(वि०)* सींचने वाला। कुँए में से पानी खींचने वाला।

सींचणो—*(क्रि०)* १. छिड़काव करना। २. खेत में पानी देना। ३. कुँए में से पानी निकालना।

सींचो—*(न०)* १. अस्पृश्य से छू जाने वाले पर शुद्ध होने के लिये सोने को घुमाकर चुल्लू भर कर डाले जाने वाले पानी के छींटे। २. परहेज। अलगाव। ३. घृणा। [illegible]

५. शुद्धि के लिये छाँटा जाने वाला पानी। ६. पानी के छींटे।

सींठ—(न०) गुप्तांग के बाल। उपस्थ कच। घुसो। झाँट। गुहा।

सींठणा—(न०ब०व०) १. विवाहादि मे स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले अश्लील गीत। २. उपस्थ कच। सींठ।

सींठजी—(न०) १. एक गाली। २. सीठ जैसा हलका व्यक्ति (व्यंग्य मे)।

सीठ तोड़णियो—(वि०) १. उपस्थ कच तोड़ने वाला। २. बहादुर (व्यग्य मे)। (न०) एक गाली। सींठतोड़ो।

सींठ तोड़ो—दे० सीठ तोड़णियो।

सीठाणो—दे० सीठावणो।

सीठावणो—(क्रि०) १. धोखा देना। भरोसा देकर फिर जाना। २. ठगना। ३. भुलावे मे डालना। भुलाना। भ्रम मे डालना। ४. लालच दिखाना।

सीठोळियो—(वि०) १. अयोग्य मित्र। निकम्मा मित्र। २. नालायक। हलके दर्जे का। नीच। (न०) एक गाली।

सीड—(न०) रेंट। सेंडो। सिम्पण।

सीड-साँड—(भा०) रेंट और लार। सेडो-लाळ।

सीदड़ो—दे० रड़बो।

सीदरो—(न०) चरस का एक उपकरण।

सींव—(न०) १. सीमा। हद। कांकड़। २. जंगल। जंगळ। सीम।

सीवाड़ो—(न०) सीमा। सीमाड़ो। हद। कांकड़।

सीह—दे० सीह।

सु—(सर्व०) १. वह। २. वह का विभक्ति लगने का पूर्व रूप। उस। ३. उसे। (अव्य०) १. अतः। इसलिये। २. सो। ३. सो अब। ४. लेकिन अब। ५. और। ६. फिर। (वि०) १. सुंदर। २. अच्छा। ३. उत्तम। (उप०) शब्दारंभ मे सौंदर्य और भद्रता आदि के अर्थ मे प्रयुक्त उपसर्ग।

सुग्ररड़ी—दे० सुरड़ी।

सुग्रवसर—(न०) अच्छा मौका। अच्छा अवसर।

सुग्रागण—(वि०) सुहागिन। सौभाग्यवती।

सुग्राड़—दे० सुग्रावड़।

सुग्रान—(न०) कुत्ता। स्वान। कूतरो।

सुग्रारथ—दे० सवारथ।

सुग्रारथी—सवारथी।

सुग्रा-रोग—(न०) प्रसूति के समय होने वाला स्त्री रोग। २. प्रसूति जन्य रोग।

सुग्रावड़—(ना०) १. प्रसव। बच्चे का जन्म। २. प्रसूति। सुग्राड़। ३. प्रसूता के लिये बनाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ। ४. जननाशौच। सूतक।

सुग्रावड़ करणो—(मुहा०) प्रसूता की सेवा करना।

सुग्रावड़ कराणो—(मुहा०) १. प्रसव संबंधी काम कराना। २. प्रसव के लिये पुत्री को पीहर बुलाना। ३. प्रसव करना।

सुग्रावड़ खाणो—(मुहा०) बच्चा जनना और पौष्टिक पाक खाना।

सुग्रावड़ सांधणो—(मुहा०) प्रसूता के लिये पौष्टिक पाक आदि बनाना।

सुग्रावड़ी—(ना०) प्रसव करने वाली स्त्री। प्रसूता। (वि०) प्रसव करने वाली। प्रसवा। जच्चा।

सुग्रासरण—(न०) बैठने का सुन्दर ग्रासन। (ना०) सुहासिनी। सुग्रासरणी।

सुग्रासरणी—दे० सुहासिरणी। सुवासरणी।

सुइयो—(न०) १. घड़ी का काँटा। २. टाट, थैला ग्रादि सीने की मोटी लंबी सुई।

सुई—(न०) लोहे का एक पतलः उपकरण जिसके एक सिरे मे धागा पिरो कर कपड़ा सीया जाता है। सूचि।

सुग्रो—(न०) १. एक सब्जी ग्रौर उसके बीज। २. प्रसव ग्रशौच। सूतक। ३. बोरी, टाट ग्रादि सीने का सुइया। सुइयो।

सुक—(न०) १. तोता। शुक। २. श्रीमद्-भागवत के कथाकार व्यासजी के पुत्र-शुकदेव मुनि।

सुकच—(न०) सुन्दर केश। काले केश। भमराळा केश।

सुकचा—(ना०) सुन्दर केशों वाली स्त्री। सुकेशी। सुकेशा।

सुकची—दे० सुकचा।

सुकतिज—(न०) मोती। शुक्तिज।

सुकदेव—(न०) व्यास मुनि के पुत्र शुकदेव।

सुकन—(न०) सुगन। शकुन।

सुकन-चिट्ठी—दे० रूपारेल।

सुकनावळी—(ना०) शकुन शास्त्र ग्रथवा उसका ग्रन्थ।

सुकनी—(वि०) १. शकुनशास्त्र को जानने वाला। २. शकुन के ग्राधार पर काम करने वाला। ३. शकुन देखने तथा उसका फल बताने वाला। (न०) एक पक्षी।

सुकप्रिय—(न०) १. दाड़िम। २. हरी मिर्च। शुकप्रिय।

सुकर—(वि०) सुगम। (न०) १. शुक्र। धन्य। २. शुक्रग्रह। ३. शुक्रवार।

सुकरत—दे० सुकरित।

सुकराणो—(न०) १. उपकार। शुकाना। २. जमीन, मकान ग्रादि का पट्टा बना कर देने की रियासतों के जमाने में ली जाने वाली एक सरकारी फीस। स्टाम्प, रजीस्ट्री, बेचान ग्रादि की फी के ग्रति-ग्रतिरिक्त पट्टा बनवाने का एक कर विशेष।

सुकरात—(न०) यूनान देश का एक प्रसिद्ध दार्शनिक।

सुकरित—(वि०) सुकृत्य। सुकार्य। शुभ काम।

सुकर्म—(न०) १. ग्रच्छा काम। २. उप-कार।

सुकर्मी—(वि०) १. ग्रच्छा काम करने वाला। सदाचारी। २. भाग्यशाली। सकर्मी। (ग्रकर्मी या कुकर्मी का उलटा)। पुण्यशाली। ३. उपकारी।

सुकळ—(वि०) १. श्वेत। शुक्ल। २. उज्ज्वल। (न०) ब्राह्मणों की एक ग्रल्ल।

सुकवि—(न०) १. उत्तम कवि। २. ख्याति प्राप्त कवि। ३. श्रेष्ठ कवि। ४. भक्त कवि। ५. ग्राशु कवि।

सुकंठ—(न०) १. मधुर कंठ। २. सुग्रीव वानर। ३. कोयल। (वि०) मधुर कंठ वाला।

सुकंठी—(न०) सुग्रीव। (ना०) १. कोयल। २. स्त्री। (वि०) मधुर कंठ वाली।

सुकंत—(न०) १. प्रिय पति। २. सुन्दर पति। ३. ईश्वर।

सुकाई—दे० सुखाई।
सुकाज—दे० सुकाम।
सुकाठ—*(न०)* चंदन।
सुकाणो—दे० सुकावणो।
सुकाम—*(न०)* सुकृत्य।
सुकाळ—*(न०)* १. अच्छा समय। २. सस्ती का समय। ३. अच्छी फसल का समय। सुभिक्ष। सुगाळ। ४. पुष्कलता।
सुकावणो—*(क्रि०)* सुखाना। पदार्थ का गीलापन दूर करना।
सुकीरत—*(ना०)* सुकीर्त्ति। सुयश।
सुकेशी—*(वि०)* लंबे सुन्दर केशों वाली।
सुकुमार—*(वि०)* १. नाजुक। कोमल। २. कोमल अंगों वाला बालक।
सुकुमारी—*(वि०)* कोमलांगी। *(ना०)* बच्ची।
सुकुलीण—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल वाला।
सुकुलीणी—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल वाली। खानदान वाली। सुकुलीना।
सुकुलीणो—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल वाला। खानदान वाला।
सुकृत—*(न०)* १. सत्कर्म। पुण्य काम। २. धर्म। *(भू०कृ०)* अच्छी प्रकार किया हुआ। *(वि०)* सत्कर्म करने वाला।
सुकृती—*(वि०)* पुण्य कर्म वाला। *(न०)* अच्छा काम।
सुकृतीजन—दे० सुकृती पुरुष।
सुकृती-पुरुष—*(न०)* १. भाग्यशाली। २. पुण्यशाली।
सुकेशी—*(ना०)* लंबे, काले और सुन्दर बालों वाली स्त्री।
सुकोमल—*(वि०)* १. बहुत मुलायम। नरम। २. संवेदनशील।
सुकोमळी—*(ना०)* कोमल अंगों वाली स्त्री। कोमलांगिनी।
सुक्रम—दे० सुकर्म।
सुक्रसिख—दे० सुक्रसिस।
सुक्रसिस—*(न०)* १. दैत्य। शुक्राचार्य के शिष्य। २. महादानी बलि राजा।
सुक्राचारज—*(न०)* दैत्यगुरु। शुक्राचार्य।
सुक्रियथ—*(न०)* सुकृतार्थ।
सुख—*(न०)* १. तन और मन को अच्छा लगे, ऐसा अनुभव। २. किसी कामना की सिद्धि का आनंद। ३. आत्मानंद। ४. प्रीति। स्नेह। ५. सहवास। संभोग।
सुख करणो—*(मुहा०)* १. आराम करना। २. सोना।
सुख-कंद—*(वि०)* सुखों का मूल।
सुखकारी—*(वि०)* सुख देने वाला। आनंदकारी।
सुख-चैन—*(न०)* सुख और आराम। मौज-मजा।
सुखड़—*(न०)* चंदन। मलय।
सुखड़ी—*(ना०)* एक मिठाई।
सुखड़ो—*(न०)* सुख। 'दुखड़ो' का उलटा।
सुखदा—*(ना०)* १. हरें। २. गंगा। ३. पत्नी। ४. अप्सरा। *(वि०)* सुख देने वाली। *(न०)* एक छंद।
सुखदाई—*(वि०)* १. सुख देने वाला। सुखदायी। २. जिस वस्तु, बात या काम से सुख मिले।
सुखदाता—*(वि०)* सुख देने वाला। *(न०)* प्रियतम।
सुखदायक—दे० सुखदाता।
सुखदायी—दे० सुखदाता।

सुख-दुख—(न०) १. आराम और कष्ट। सुख और दुख। २ समय का परिवर्तन। ३. सुख और दुख की स्थिति।

सुखधाम—(न०) १. वह स्थान जहां सब प्रकार का सुख हो। स्वर्ग। २. सब सुखों का देने वाला। ईश्वर। परमेश्वर।

सुखपाल—(ना०) एक प्रकार की पालकी।

सुखप्रद—दे० सुखदाता।

सुखभर—(वि०) आनंददायक। (अव्य०) सुख में।

सुखभात—(न०) १. विवाह का एक भोज। २. एक प्रकार का चावल।

सुखम—(वि०) १. सुन्दर। २. सुख। ३. आराम। (वि०) सूक्ष्म।

सुखमणा—(ना०) सुषुम्ना नाड़ी।

सुखमा—(ना०) १. अतिशय शोभा। २. नैसर्गिक सौंदर्य। सुषमा। ३. सुन्दरता।

सुखमासदन—(न०) चंद्रमा। सुषमा सदन।

सुखयाम—(न०) १. कुशल। २. सुख का समय। दे० सुखरात।

सुख-रात—(ना०) १. सुहाग रात। प्रथम मिलन रात्रि। २. दीपावली की रात।

सुखरास—(न०) १. भांति-भांति के आराम के साधन। २. आनंद केलि। ३. सुखधाम। ४. सुखराशि।

सुखवास—(न०) सभी प्रकार का सुख। आनंद। मौज-मजा। २. महल।

सुखवासी—(वि०) १. सुख प्राप्त। २. सुख में रहने वाला। सुखी। ३. मायिक झंझटों से अलिप्त। मुक्त।

सुख-सज्या—(ना०) १. मृतक के पीछे ब्राह्मण को दी जाने वाली शैया। २. शय्या। सुख शय्या।

सुख-संपत—(न०) सुख और संपत्ति।

सुख-सागर—(न०) सुख का सागर। ईश्वर। परमेश्वर।

सुख-साता—(ना०) १. सुख और शांति। २. रोगनिवृत्ति। ३ आरोग्य। निरोग। ४. सुख और स्वास्थ्य। ५. स्वास्थ्य लाभ। ६. स्वास्थ्य-पृच्छा।

सुख-सांयत—(ना०) सुख और शांति।

सुख-सारण—(वि०) १. सुख को कायम रखने वाला। २. सुखकारी। आनंदकारी।

सुख-सीरी—(वि०) सुख का भागीदार। सुखमें काम आने वाला।

सुख-सेरी—(ना०) सुख का मार्ग। सुख।

सुख-सोरप—(ना०) १. आनंद-मंगल। २. सुख-चैन। ३. सुख-आराम। अतिसुख।

सुखाई—(ना०) सुकाने की क्रिया या भाव।

सुखाकार—(न०) सुख ही सुख।

सुखाकारी—(ना०) आराम। स्वास्थ्य लाभ। सुख। (वि०) सुखकारी।

सुखासण—(न०) १. आराम से बैठने की मुद्रा। पलथी। २. चोरासी योगासनों में का एक आसन। सुखासन। ३. पालकी।

सुखांत—(वि०) वह नाटक जिसका अन्त सुखमय हो।

सुखियारण—दे० सुखियारी।

सुखियारी—(वि०) १. सुखी। २. सुख देने वाली। ३. सुख से रहने वाली। ४. सुख की इच्छा करने वाली। सुख चाहने वाली।

सुखियारो—(वि०) १. सुखी। २. सुख देने वाला। ३. सुख चाहने वाला। ४. सुख

से रहने वाला। मौजी। ५. सभी प्रकार सुखी।

सुखियो—*(वि०)* सुखी। दुख रहित। आनंदी।

सुखी—*(वि०)* जिसको सब प्रकार का सुख हो। सुखवाला।

सुखेत—*(न०)* १. संस्कारी संतान उत्पन्न करने वाली कुलवान स्त्री। २. सुलक्षणों वाली स्त्री। सुलक्षणा। ३. उच्चकुल। ४. संस्कारी कुल। ५. अच्छी उपजाऊ भूमि का खेत।

सुखेन—*(अव्य०)* सुखपूर्वक। सुख से।

सुखोदक—*(न०)* गरम पानी। स्नान करने योग्य गरम पानी। निवायो पाणी।

सुख्यात—*(वि०)* जिसकी अच्छी ख्याति हो। सुप्रसिद्ध। *(ना०)* १. यश। कीर्त्ति। २. प्रसिद्धि।

सुख्याति—दे० सुख्यात।

सुगठ—*(वि०)* १. सुगठित। २. सुरूपवान। *(न०)* सुरूप। सुन्दराकृति।

सुगरण—*(न०)* शकुन। सगुन।

सुगणी—*(ना०)* १. गुणवती स्त्री। सगुणी। २. भाग्यशालिनी। ३. भाग्यशाली। दे० सुगणी। ४. पत्नी। स्त्री।

सुगणो—*(वि०)* १. गुणी। गुणों वाला। २. बुद्धिमान।

सुगत—*(वि०)* अच्छी गति वाला। *(न०)* भगवान बुद्ध। *(ना०)* मृत्यु होने पर स्वर्ग अथवा मोक्ष की प्राप्ति। सुगति।

सुगन—*(न०)* शकुन।

सुगन-चिड़ी—*(ना०)* सुकन चिड़ी।

सुगनियो—*(वि०)* शकुन विशारद। सुकनियो।

सुगनी—दे० सुकनी।

सुगम—*(वि०)* आसान। सरल।

सुगरी—*(ना०)* १. बया पक्षी। सुग्रीवा। सुगृही। २. छोटा शिकंजा।

सुगरो—*(वि०)* 'नुगरो' का उलटा। १. गुरु वाला। २. जिसने धर्म गुरु से दीक्षा ली हो। ३. जिसने गुरुमंत्र लिया हो। ४. अहसान मानने वाला। *(न०)* लुहार का एक औजार। शिकंजा।

सुगह—*(वि०)* जो अच्छी तरह कूटा या मथा गया हो।

सुगंध—*(ना०)* १. महक। खुशबू। सौरभ। खुसबो। २. कीर्ति। यश।

सुगंधक—*(न०)* पुष्प। फूल।

सुगंध-धर—*(न०)* १. केशर। २. चंदन। ३. पुष्प।

सुगंधि—दे० सुगंध।

सुगंधी—दे० सुगंध।

सुगाणो—*(क्रि०)* घृणा करना। सूग करणो।

सुगामण—दे० सूगामण।

सुगामणी—दे० सूगामणी।

सुगामणो—दे० सूगामणो।

सुगाळ—*(न०)* सुभिक्ष। सुकाल। सुकाळ।

सुगाळी—*(ना०)* १. दुर्गंध। २. घृणा। सूग।

सुगायोड़ो—*(भू०कृ०)* १. जिसके प्रति सूग की गई हो। घृणित। २. उपेक्षित।

सुगाव—दे० सूग।

सुगावणो—*(क्रि०)* १. घृणा करना। नफरत करना। २. ठुकराना। ३. तिरस्कार करना।

सुगावो—*(न०)* १. घृणा। सूग। २. उपेक्षा।

सुगुणी—दे० सुगणी ।
सुगुणो—(वि०) अच्छे गुणों वाला । गुणी । (न०) १. गुणीजन । २. सज्जन ।
सुगो—दे० सुग्गो ।
सुग्गो—(न०) १. चोंचदार छोटी सँडासी । सुग्गा । २. तोता । शुक । सूवटो ।
सुग्या—(ना०) घृणा । नफरत । घिरणा । सूग ।
सुग्रीव—(न०) वानरराज वाली का छोटा भाई । (वि०) सुन्दर ग्रीवा वाला ।
सुग्रीवसेन—(न०) श्रीकृष्ण के एक घोड़े का नाम ।
सुघट—(वि०) १. सुन्दर । सुडौल । सुघड़ । २. सुघटित ।
सुघड़—(वि०) १. सुन्दर । २. अच्छा । ३. स्वच्छ । ४. चतुर । निपुण । ४. अच्छी तरह से गढ़ा या बना हुआ ।
सुघड़ाई—(ना०) १. सुघड़पन । सुन्दरता । २. चतुरता । निपुणता ।
सुघड़ी—(ना०) १. शुभ घड़ी । शुभ मुहूर्त । २. सुघड़ स्त्री ।
सुघरी—(ना०) बया नाम की एक चिड़िया । सुगरी । बया ।
सुचंग—(वि०) १. सुन्दर । रूपाळो । फूटरो । २. स्वस्थ । साजो । ३. अच्छा । चोखो । ४. मधुर ।
सुचाळी—(ना०) पृथ्वी ।
सुचि—(वि०) १. उज्ज्वल । २. सफेद । ३. पवित्र ।
सुचिमारो—(वि०) १. पवित्र मन वाला । २. सच्चा । (न०) शुचिजन ।
सुच्छ—(वि०) साफ । स्वच्छ ।
सुच्छम—दे० सूछम ।
सुच्छंद—(न०) स्वच्छंद । अंकुश रहित ।
सुछम—दे० सूछम ।
सुज—(सर्व०) १. उस । २. वह । (अव्य०) पुनः । फिर ।
सुजड़—(न०) तलवार ।
सुजड़ी—(ना०) कटारी ।
सुजण—दे० सुजन ।
सुजन—(न०) १. सज्जन । २. स्वजन । ३. बांधव ।
सुजनी—(ना०) १. मोटी चादर । २. जाजम ।
सुजस—(न०) १. सुयश । सुकीर्ति । २. अच्छी ख्याति । नामवरी ।
सुजसी—(वि०) १. यशस्वी । सुकीर्ति वाला । ख्याति वाला । २. प्रसिद्ध । ख्यातो ।
सुजाण—(वि०) १. निपुण । २. चतुर । ३. पंडित । सुज्ञ । सुजान ।
सुजाणो—(न०) बाज पक्षी की जाति का एक पक्षी ।
सुजात—(वि०) कुलीन । (न०) अच्छी जाति । 'कुजात' का उलटा ।
सुजाव—(न०) पुत्र । बेटो ।
सुजि—(सर्व०) निश्चित रूप से परोक्ष व्यक्ति या निर्दिष्ट वस्तु की ओर संकेत करने वाला सर्वनाम । वही । सुज । वो । (वि०) निश्चित । (अव्य०) १. फिर । पुनः । २. बाद में । पछे ।
सुजोग—(न०) अच्छा संयोग । सुयोग ।
सुझाको—(न०) सूर्योदय के पहिले का वह समय, जब दिखाई देने लगता है । उषाकाल । झांझरको ।
सुझाणो—दे० सुझावणो ।
सुझापो—दे० सुझाको । (न०) दृष्टि ।
सुझाव—(न०) १. किसी को कोई वस्तु सुझाना । २. प्रस्ताव में सुधार । सुधारो । ३. परामर्श । सलाह ।

सुझावणो—*(क्रि०)* १. निर्देश करना। २. दिखलाना। बताना। बतावणो। ३. ध्यान दिलाना। ४. सलाह देना। ५. सुझाना। ६. सूचित करना।

सुझावो—दे० सुझापो।

सुटेव—*(ना०)* अच्छी आदत। ('कुटेव' का उलटा)।

सुठ—दे० सुठि।

सुठरी—*(ना०)* सुन्दरी। सुन्दर स्त्री।

सुठि—*(वि०)* १. सुन्दर। २. बढ़िया। उत्कृष्ट। ३. अतिशय। घणो।

सुठो—*(क्रि०वि०)* १. सम्यक्। सब प्रकार से। २. सपूर्णतया। दे० सुट्ठो।

सुट्ठो—*(वि०)* सुष्ठु। सुन्दर। अच्छा। *(अव्य०)* अस्तु। खैर।

सुड़क—*(ना०)* १. जल आदि को पीते हुये ओठों द्वारा होने वाला शब्द। चुस्की। २. ओठों द्वारा खींच कर एक बार में जितना पिया जाय उतने पेय का परिमाण।

सुड़कणो—*(क्रि०)* किसी पतली खाद्य-पदार्थ को ओठों से सुड़-सुड़ की आवाज करते हुए खाना या पीना।

सुड़भक—*(क्रि०वि०)* शिष्टता से। अच्छे ढंग से। *(वि०)* शिष्ट। सभ्य।

सुडोळ—*(वि०)* १. सुगठित। सुडौल। २. सुंदर शरीर वाला। सुरूपवान। रूपाळो।

सुढाळो—*(वि०)* १. सुन्दर। २. सरल। सीधो। ३. अनुकूल। ४. हितकर। ५. सरल स्वभाव का। ६. सरलता से बनने वाला। सोरो।

सुणणो—*(क्रि०)* १. सुनना। श्रवण करना। सांभळणो। २. किसी की प्रार्थना पर ध्यान देना।

सुणतर—*(न०)* सिरोही तथा साचोर से लगता उत्तर गुजरात का भाग।

सुणतरियो—*(वि०)* सुणतर का रहने वाला।

सुणवाळो—*(वि०)* सुनने वाला।

सुणवाई—*(ना०)* १. सुनने की क्रिया या भाव। २. मुकदमा आदि का विचार के लिये सुना जाना। पेसी। ३. पहुँच। सुणाई।

सुणाई—दे० सुणवाई।

सुणाणो—*(क्रि०)* १. सुनाना। २. भला बुरा कहना। ३. जताना।

सुणायोड़ो—*(भू०कृ०)* सुनाया हुआ।

सुणावणी—*(ना०)* १. मृत्यु-सदेश। २. ग्रामेतर मृत्यु संदेश। ३. मृत्यु समाचार के कारण किया जाने वाला सामूहिक शोक स्नान।

सुणावणो—दे० सुणाणो।

सुणियोड़ो—*(भू०कृ०)* सुना हुआ।

सुणीजणो—*(क्रि०)* सुना जाना। सुनाई देना।

सुणी-सुणाई—*(वि०)* १. सुनी हुई। सुनी-सुनाई। २. अविश्वसनीय।

सुत—*(न०)* पुत्र। बेटो। आत्मज।

सुतण—दे० सुतन।

सुतन—*(न०)* बेटा। पुत्र। सुतनु। डीकरो।

सुतपावाहण—*(न०)* गरुड़।

सुतर-फीणी—*(ना०)* मैदे से बनी महीन सूत के लच्छे वाली मिठाई। फेनी। फीणी।

सुतराऊ—*(वि०)* १. रूई से बना। २. सूत से संबंधित। सूत का।

सुतरखानो—*(न०)* १. सवारी के ऊँटों को रखने-बाँधने की जगह। २. ऊँट के ऊपर रहने वाली बंदूक।

सुतर-सवार—*(न०)* ऊँट सवार। उष्ट्रारोही। शुतुर सवार।

सुतळ—*(न०)* तीसरा पाताल लोक। सुतल।

सुतळी—*(ना०)* सन के रेशों से बनी हुई डोरी। सुतली। सूतळी।

सुत-वसुदेव—*(न०)* वसुदेव सुत श्रीकृष्ण।

सुतंतर—*(न०)* स्वतंत्र। आजाद।

सुतंत्र—दे० स्वतंत्र।

सुता—*(ना०)* पुत्री। बेटी।

सुथणो—*(न०)* सुथना। पाजामा। सूथण।

सुथराई—*(ना०)* १. अच्छापन। २. स्वच्छता।

सुथरी—*(वि०ना०)* १. अपेक्षाकृत अच्छी। २. सुन्दर। ३ स्वच्छ। चोखी।

सुथरो—*(वि०)* १. अपेक्षाकृत अच्छा। अच्छा। ३. सुन्दर। चोखो। ४. स्वच्छ। निर्मल। ५. तुलना में अच्छा।

सुथळ—*(न०)* सुन्दर स्थान। सुस्थल।

सुथान—*(न०)* १. श्रेष्ठ स्थान। २. स्थान। ३. सुन्दर स्थान। ४. दर्शनीय स्थान।

सुथानक—*(न०)* १. घर। २. सब प्रकार के आराम का स्थान। ३. सुन्दर स्थान।

सुथान वासो—दे० संथान वासो।

सुथानै—(अव्य०) जिस स्थान को भेजना है उस स्थान को। स्थान। शुभ स्थान को।

सुथार—*(न०)* बढ़ई। खाती।

सुथारण—*(ना०)* १. सुथार जाति की स्त्री। २. सुथार की स्त्री। खातण।

सुथारी—*(ना०)* १. सुथार जाति की स्त्री। खातण। २. सुथार की स्त्री। *(वि०)* सुथार का। सुथार से संबंधित।

सुथिर—*(ना०)* पृथ्वी। *(वि०)* १. दृढ़। २. सुस्थिर।

सुद—*(ना०)* शुक्ल पक्ष। सुदि। सुदी। *(वि०)* उक्त पक्ष की या उससे संबंधित (तिथि)।

सुदत—*(न०)* १. दान। २. सात्विक दान। ३. सुपात्र दान।

सुदतपण—*(न०)* दातृत्व।

सुदतपणो—दे० सुदतपण।

सुदता—*(वि०)* १. सुदानी। सुदतार। २. दानी।

सुदतार—*(वि०)* १. सुदानी। सुदातार। २. दानी।

सुदन—*(न०)* दान। *(वि०)* दानी।

सुद-पख—*(न०)* चंद्र मास का शुक्ल पक्ष। अजवाळियो पख।

सुदरसण—*(वि०)* दिखने में शुभ या सुन्दर। सुदर्शन। *(न०)* १. भगवान विष्णु के चक्र का नाम। २. एक औषधि। ३. शिव। ४. मछली।

सुदर्शन—दे० सुदरसण।

सुदर्शन-चक्र—*(न०)* विष्णु का चक्राकार अस्त्र।

सुदंत—*(वि०)* सुन्दर दाँतों वाला। *(न०)* १. हाथी। २. सुन्दर दाँत।

सुदंती—*(वि०)* सुन्दर दाँतों वाली। *(न०)* हाथी। *(ना०)* हथिनी।

सुदान—*(न०)* सुपात्र को दिया जाने वाला दान।

सुदानी—दे० सुदतार।

सुदामा—*(न०)* श्रीकृष्ण के एक ब्राह्मण सहपाठी और मित्र।

सुदामापुरी—*(ना०)* सौराष्ट्र का एक नगर। सुदामा की नगरी। पोरबंदर।

सुदि—दे० सुदी।

सुदी—*(ना०)* शुक्ल पक्ष। सुद। *(वि०)* शुक्ल पक्ष की या उससे संबद्ध (तिथि इत्यादि)।

सुदीठ—*(ना०)* १. शुभ दृष्टि। सुदृष्टि। २. अच्छी तरह दिखाई देना। ३. कृपा दृष्टि।

सुदूर—*(वि०)* बहुत दूर। घणो आघो।

सुदृढ—*(वि०)* बहुत मजबूत। खूब दृढ।

सुदृष्टि—*(ना०)* १. तेज नजर। २. उत्तम दृष्टि। ३. गिद्ध। *(वि०)* दूर दृष्टि।

सुदेश—*(न०)* १. सुन्दर देश। २. अपना देश। स्वदेश। ३. उपयुक्त स्थान। *(वि०)* सुन्दर।

सुदेसी—*(वि०)* स्वदेशी।

सुद्ध—*(वि०)* १. स्वच्छ। चोखो। २. पवित्र। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध। सुध।

सुद्रस्ट—*(ना०)* दया। सुदृष्ट। मीठी नजर। कृपा दृष्टि।

सुध—*(न०)* १. सुधि। खबर। पता। २. होश। भान। ३. स्मृति। याद। ४. सम्हाल। संभाळ। ५. विवेक। ढंग। *(वि०)* १. शुद्ध। २. सच्चा। ३. निस्वार्थी। ४. निष्पक्ष।

सुधकर—*(ना०)* मिर्च।

सुधण—*(ना०)* १. पत्नी। धण। २. पतिव्रता। सुकुली। सुकुलीणी।

सुधता—*(न०)* शुद्धता। स्वच्छता।

सुधताई—दे० सुधता।

सुध-बुध—*(ना०)* १. ज्ञान कराने वाली मानसिक शक्ति। चेतना। होश। २. विवेक। तमीज। ३. समझ।

सुधमनो—*(वि०)* १. विवेकी। २. निश्चित मति वाला। ३. सच्चा।

सुधरणो—*(क्रि०)* १. शुद्ध होना। दोष रहित होना। २. अशुद्धि का शुद्धिकरण होना। ३. कार्य का सुव्यवस्थित रूप से संपादित होना।

सुधरमा—दे० इंद्र सभा।

सुधराई—*(ना०)* १. सुधारने का काम। २. सुधारने की मजदूरी। ३. म्युनिसीपेलेटी।

सुधराणो—दे० सुधरावणो।

सुधरावणो—*(क्रि०)* सुधरवाना। सुधराना।

सुधवट्टी—*(ना०)* तलवार। तरवार।

सुधहीणो—*(वि०)* सुधि रहित।

सुधा—*(न०)* १. अमृत। २. मधु। ३. दूध। ४. जल। ५. आंवला। ६. पृथ्वी। ७. पुत्री। ८. घर। ६. वधू। १०. बिजली।

सुधाकर—*(न०)* चंद्रमा।

सुधाकंठ—*(ना०)* कोयल।

सुधागेह—*(न०)* चन्द्रमा।

सुधा-घट—*(न०)* चन्द्रमा।

सुधाचरण—*(न०)* गरुड़।

सुधात—*(ना०)* सुधातु। सुवर्ण। सोना।

सुधा-दृष्टि—*(ना०)* दया। सुधानजर।

सुधाधर—*(न०)* चंद्रमा। सुधाधारण।

सुधा-धरण—*(न०)* चंद्रमा। चांद। शशि। मृगांक।

सुधा-नजर—*(ना०)* दया। कृपा। सुधा-दृष्टि।

सुधा-निधि—*(न०)* १. चंद्रमा। २. समुद्र।
सुधाभख—*(न०)* देवता। सुर।
सुधा-भुक्—*(न०)* देवता।
सुधाभुज—*(न०)* देवता। सुधाभख।
सुधा-भोजी—*(न०)* देवता।
सुधामय—*(वि०)* अमृत से भरा हुआ।
सुधा-मयूख—*(न०)* चंद्रमा।
सुधार—दे० सुधारो सं० १ और २.
सुधारक—*(वि०)* १. सुधार करने वाला। २. संशोधक।
सुधारणो—*(क्रि०)* सुधारना।
सुधारस—*(न०)* १. अमृत। २. दूध। ३. चूना। चूनो। ४. कौमुदी। ज्योत्स्ना चांदनी।
सुधारो—*(न०)* १. बुराई, कुसंस्कार, गलतियाँ और कुरीतियों को दूर करने की क्रिया। २. संस्कार। ३ उक्त क्रिया का परिणाम। ४. किसी प्रस्ताव को सुधारने के लिए रखा गया अन्य प्रस्ताव एमेन्डमेंट।
सुधारो-वधारो—*(न०)* १. किसी प्रस्तावादि में घटाने-बढ़ाने की क्रिया। २. परिवर्तन-परिवर्धन। संशोधन-परिवर्धन।
सुधास्रव—*(न०)* चंद्रमा। अमृत बरसाने वाला।
सुधांशु—*(न०)* चंद्रमा।
सुधि—दे० सुध।
सुधियाँ—*(क्रि०वि०)* १. तुरंत। २. तुरंत ही। शीघ्र ही। वेगो।
सुधीमणो—दे० सुधमणो।
सुधीर—*(वि०)* धैर्यवान। धीरजवाळो।
सुधीरो—*(वि०)* १. धैर्यवान। २. बुद्धिमान।

सुन—*(ना०)* शून्य। बिंदु। मींडो। सुम। *(न०)* १. खाली स्थान। २. आकाश। ३. अभाव। ४. कुत्ता। श्वान। *(वि०)* खाली।
सुन आंक—*(न०)* आगे शून्य लगा हुआ अंक, यथा—१०, ५०, १००.
सुनखी—*(ना०)* चील पक्षी। सांवळी।
सुनजर—*(ना०)* १. दया। २. सुदृष्टि। शुभ नजर।
सुनयना—*(वि०)* सुन्दर व बड़े नेत्रों वाली। सुनेणी।
सुनसान—*(वि०)* १. निर्जन। २. एकांत। ३. बीहड़।
सुनाम—*(न०)* १. कीर्ति। २. प्रसिद्धि। ख्याति।
सुनार—*(न०)* स्वर्णकार। *(ना०)* सुन्दर स्त्री।
सुनारण—दे० सुनारी १ और २.
सुनारी—*(ना०)* १. सुनार की स्त्री। २. सुनार जाति की स्त्री। सुनारण। ३. सुनारी का काम। स्वर्णकारी। ४. सुन्दर नारी। गुणवती स्त्री।
सुनावणी—दे० सुणावणी।
सुनासीर—*(न०)* इंद्र। सुनाशीर।
सुनेणी—दे० सुनयना।
सुनेपत—*(न०)* अच्छी उपज। अच्छी फसल।
सुन्न—*(वि०)* शून्य। *(न०)* १. शून्य स्थान। निर्जन स्थान। २. बिंदी। शून्य। मींडो।
सुन्नत—*(ना०)* मुसलमान धर्म की एक रस्म। मुसलमानी।
सुन्न-सिखर—दे० शून्य शिखर।
सुन्याड़—दे० शून्याड़।

सुपच—(वि०) शीघ्र और भली प्रकार पचने वाला। (न०) श्वपच। चांडाल।

सुपणखा—(ना०) रावण की बहिन। शूर्पणखा। पौलस्ती।

सुपनक—(वि०) सोने वाला।

सुपनो—(न०) स्वप्न। सपना।

सुपथ—(न०) १. श्रेष्ठ मार्ग। नीति का मार्ग। २. सद्गुण से युक्त आचरण। ३. जीवन यापन करने का सुन्दर और श्रेष्ठ मार्ग।

सुपरडंट—(न०) निरीक्षण करने वाला ऊपरी अधिकारी। (पुलिस, छात्रावास, कार्यालय आदि में) सुपरिनटेनडेन्ट। सुपडंट।

सुपरण—(न०) गरुड़। सुआचरण।

सुपरणेय—(न०) गरुड़।

सुपरत—(वि०) सौंपा हुआ। सुपुर्द। सुपरद।

सुपरद—दे० सुपरत।

सुपरवाइजर-(न०) निरीक्षक।

सुपर-वाण—(न०) देवता। सुपर्ण।

सुपर-वाह—(न०) १. सात्विक दान। २. सुपात्र दान। ३. नेग। ४. भेंट। ५. देखरेख। ६. दान।

सुपरस—(न०) पवन। सुस्पर्श। वायरो। हवा।

सुपरसन—(न०) १. पवन। सुस्पर्शन। २. सुप्रसन्न।

सुपरसाद—(अव्य०) बड़ी कृपा। सुप्रसाद। (राजाओं की ओर से चिट्ठी-पत्रियों में लिखा जाने वाला पत्र पाने वाले को अभिवादन-आशीर्वादात्मक पद, जैसे महाराजा जी श्री... सुप्रसाद वांचजो।

सुपह—(वि०) १. वीर। २. दातार। दानी। (न०) १. स्वामी। मालिक। २. राजा। सुप्रभ। नृप।

सुपंख—(न०) १. एक डिंगल छंद। २. सुन्दर पंखों से युक्त।

सुपंथ—(न०) १. ऊंट। २. सरल मार्ग। ३. सदाचार।

सुपाकी—(वि०) स्वपाकी।

सुपातर—(न०) योग्य व्यक्ति। सुपात्र।

सुपान—(न०) मधुर पेय।

सुपायण—(वि०) प्राप्त कराने वाला या करने वाला। (भू०कृ०) प्राप्त किया हुआ। (न०) निमित्त। हेतु।

सुपारस—(ना०) सिफारिश।

सुपारी—दे० सोपारी।

सुपुत्र—(न०) योग्य और बुद्धिमान पुत्र। सपूत।

सुपुत्री—(ना०) योग्य और बुद्धिमान पुत्री। डाही बेटी। सपूती।

सुपेत—दे० सफेद।

सुपेती—(ना०) १. सफेदी। २. दीवाल आदि पर की जाने वाली चूने की पुताई। ३. सोमरोग। श्वेत प्रदर। धोळो।

सुपेतो—दे० सफेदो।

सुप्रत—दे० सुपरत।

सुप्रभ—(न०) राजा। (वि०) सुन्दर प्रभा या प्रकाशवाला।

सुप्रभात—(वि०) मंगल प्रभात।

सुप्रसन्न—(वि०) खूब प्रसन्न। राजी।

सुप्रिटेन्डेंट—दे० सुपरडंट।

सुप्रीमकोर्ट—(ना०) सर्वोपरि न्यायालय। सबसे ऊंची अदालत।

सुफल—*(न०)* उत्तम परिणाम। शुभ फल। *(वि०)* १. सफल। २. शुभफल वाला।
सुफारस—दे० सुपारस।
सुफेद—*(वि०)* श्वेत। सफेद। धवल। धोळो।
सुबह—*(न०)* प्रभात। सवेरा। तड़का। विहाण। २. दिन में १२ बजे के पहले का समय।
सुबंग—(अव्य०) १. सुव्यवस्था से। २. सुविधा से। (न०) यवन सेनापति।
सुबाह—*(अव्य०)* हाथ से। *(न०)* हस्त कौशल।
सुबीतो—*(न०)* सुगमता। आसानी। सुभीतो।
सुबीर—*(ना०)* रावड़ी।
सुबोध-मंजरी—*(ना०)* कवि सारंग द्वारा रची हुई 'क्रिसन रुकमणिरी वेली' की संस्कृत टीका का नाम। कवि सारंग सत्रहवीं सदी में जालोर में हुआ था।
सुब्रीड़ित—*(वि०)* १. लज्जायुक्त। २. लज्जावान। लजाळू।
सुबो—*(न०)* १. शक। संशय। २. आरोप।
सुभ—*(वि०)* शुभ। मांगलिक। *(ना०)* शून्य। बिन्दु। मींडो।
सुभख—दे० सुभिक्ष।
सुभग—*(वि०)* १. सुन्दर। मनोहर। फूटरो। २. प्रिय। ३. ऐश्वर्यवान। समृद्ध। *(न०)* सौभाग्य।
सुभगा—*(ना०)* १. सौभाग्यवती। २. सधवा। ३. पति की प्यारी स्त्री। ४. सुन्दरी।
सुभट—*(वि०)* १. स्पष्ट। साफ। २. निर्बाध। पूरी तरह। ३. स्वच्छ। निर्मल। ४. वीर। बहादुर। झूझार। सुहड़।
सुभड़—दे० सुभट सं० ४.
सुभद्रा—*(ना०)* १. श्रीकृष्ण की बहिन तथा अर्जुन की पत्नी का नाम। २. सुन्दर स्त्री।
सुभराज—*(न०)* मंगत जातियों की ओर से दाताओं को दिया जाने वाला एक प्रकार का आशीर्वाद। शुभराज। २. शुभ कामना।
सुभरी—*(वि०)* गर्भवती। (व्यंग्य में)
सुभवयण—*(न०)* १. शुभ वचन। २. कविता में सुन्दर शब्दों की योजना। ३. स्तुति।
सुभवयणा—*(ना०)* १. मधुर शब्दों वाली भाषा या कविता। २. राजस्थानी भाषा। मरुवाणी।
सुभसयाने—दे० शुभ स्याने।
सुभाउ—*(न०)* स्वभाव। आदत। सुभाव।
सभागण—*(वि०)* सौभाग्यशालिनी। सुहागिन।
सुभाव—*(न०)* १. स्वभाव। आदत। २. प्रीति। सुभाव।
सुभाय—*(न०)* स्वभाव। सुभाव।
सुभाषिणी—*(वि०)* प्रिय भाषिनी। मीठी भाषिनी।
सुभाषित—*(वि०)* सुन्दर ढंग से कही हुई उक्ति। सूक्ति।
सुभिख—*(न०)* सुभिक्ष। सुभख।
सुभियाण—*(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. उदार। ३. पराक्रमी। ४. श्रेष्ठ काम करने वाला। *(न०)* बादशाह। सम्राट।
सुभीतो—*(न०)* १. सुविधा। सहूलियत। २. सुख। आराम। ३. अनुकूल स्थिति। सुविधा जनक परिस्थिति।

सुभ्र—(ना०) चांदी। (वि०) स्वच्छ। शुभ्र।

सुभ—(न०) १. पुष्प। २. [illegible]। ३. चन्द्रमा। ४. घोड़े के [illegible] का सुर। सुर।

सुमत—(ना०) अच्छी मति। सुबुद्धि।

सुमत-कुमत—(ना०) सुमति और कुमति।

सुमता—(ना०) १. अच्छी मति। २. नेक कमाई का धन। ईमानदारी का पैसा। ३. सुमति देने वाली एक देवी। ४. लोकगीतों की एक नायिका। (वि०) सुमति देने वाली।

सुमति—(ना०) १. अच्छी मति। २. सद्भाव। (वि०) अच्छी मति वाला।

सुमतियाण—(वि०) १. सुमति वाला। अच्छी समझ वाला। २. सुमति देने वाला।

सुमधुर—(वि०) बहुत मधुर या मीठा।

सुमन—(न०) १. पुष्प। २. यम। ३. गेहूँ। ४. हित चाहने वाला। मन। ५. सुहृदय। दयालु। दयालुता। दया।

सुमन चाप—(न०) कामदेव।

सुमनस—(न०) १. देवता। २. पंडित। ३. महात्मा। ४. फूल।

सुमनसधुज—(न०) कामदेव।

सुमनसायक—(न०) कामदेव।

सुमरणी—(ना०) माला। जपमाला। सुमिरनी। माळा।

सुमरणो—(क्रि०) १. सुमिरण करना। भजन करना। सिमरणो। २. स्मरण करना। याद करना।

सुमंगळ—(न०) विशेष मंगल। मंगल।

सुमंत—(न०) महाराज दशरथ का मंत्री तथा सखा।

[illegible]—दे० सुमार।

सुमाड़ो—(वि०) [illegible]। [illegible]। सुमाड़ों का [illegible]।

सुमार—([illegible]) १. [illegible]। [illegible]। २. [illegible]। सुमार।

सुमारग—(वि०) [illegible]। [illegible]। सुमार्ग। सुमारग।

सुमाळी—(वि०) हरे।

सुमित्रा—(ना०) राजा दशरथ की पत्नी और लक्ष्मण की माता।

सुमित्रासुत—(ना०) लक्ष्मण।

सुमिरण—(न०) १. रटन। २. स्मरण।

सुमुखी—(वि०) सुन्दर मुखवाली। सुवदना।

सुमेर—दे० सुमेरु।

समेरु—(न०) १. सुमेरु नामक पर्वत। २. पर्वत। ३. एक तंत्र। ४. जपमाला का बड़ा मनका। मेर। (वि०) १. उन्नत। २. ऊँचा।

सुमेळ—(न०) १. परस्पर का सुन्दर संबंध। २. मित्रता। ३. दो या दो से अधिक चीजों की बराबरी। ४. अलग-अलग होने पर भी एक मत।

सुमोज—(ना०) १. दान। २. सुपात्र दान। ३. उपहार। इनाम।

सुयण—दे० सुजण।

सुयश—दे० सुजस।

सुयंवर—दे० स्वयंवर।

सुयंभू—(न०) ब्रह्मा। स्वयंभू।

सुयो—दे० सुद्यो।

सुयोग—(न०) अच्छा अवसर। शुभवसर।

सुयोधन—(न०) दुर्योधन का एक शुभ नाम।

सुर—(न०) १. देवता। २. स्वर। ध्वनि। ३. मुनि। ४. पंडित।

सुर-अागीवाण—(न०) देवताओं में अग्रणी। श्रीगणेश।

सुर आलय—(न०) १. स्वर्ग। सरग। २. देवालय। मंदिर।

सुरईश—(न०) १. विष्णु। २. सुरेश। इन्द्र।

सुरईस—दे० सुरईश।

सुर-अोक—(न०) स्वर्ग। अमरावती।

सुरक्षा—(ना०) १. भली-भांति की हुई रक्षा या हिफाजत। २. आक्रमण के विरुद्ध किया गया उपाय।

सुरक्षित—(भू०कृ०) भली प्रकार रक्षा किया हुआ। २. हिफाजत से रखा हुआ। ३. अलग रखा हुआ। ४. आक्रमण के विरुद्ध व्यवस्था या प्रबंध किया हुआ।

सुरख—(वि०) १. लाल। सुर्ख। २. भली प्रकार रखा हुआ। सुरक्षित। (न०) लाल रंग।

सुरखाब—(न०) चकवा नामक पक्षी।

सुरखी—(ना०) १. लाली। २. खून। लोही। ३. क्रोध।

सुरग—(न०) स्वर्ग। देवलोक।

सुरगज—(न०) इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

सुरग जाणो—(मुहा०) मर जाना।

सुरग-नदी—(ना०) गंगा।

सुरगपत—(न०) इंद्र। स्वर्गपति।

सुरग पधारणो—दे० सुरग जाणो।

सुरगपुर—दे० सुरग।

सुरग पूगणो—दे० सुरग जाणो।

सुरगवास—(न०) मृत्यु। स्वर्गवास।

सुरगवास करणो—(मुहा०) मृत्यु होना।

सुरगवासी—(वि०) जो मर गया हो। स्वर्गवासी।

सुरगवासी होणो—(मुहा०) मृत्यु होना।

सुरग सिधारणो—(मुहा०) मृत्यु होना। मर जाना।

सुरगापत—(न०) स्वर्ग।

सुरगापुर—(न०) स्वर्ग। अमरपुरी।

सुरगाय—(ना०) १. देवताओं की गाय। कामधेनु। २. सुरागाय।

सुरगायक—(न०) स्वर्ग के गायक तथा वादक देवता। गंधर्व।

सुरगिर—(न०) सुमेरु पर्वत।

सुरगी—देवता।

सुरगुरु—(न०) देवताओं के गुरु। बृहस्पति।

सुरघाती—(न०) दैत्य। दानव।

सुरचाप—(न०) इन्द्रधनुष।

सुरजेठ—(न०) १. ब्रह्मा। २. इन्द्र।

सुरड़णो—(क्रि०) १. एक सांस में मात्रा से अधिक पी जाना। २. सब का सब पी जाना। ३. मारना-पीटना (बेंत से)। ४. एक साथ एक झटके से खींचकर शाखा आदि के पत्ते तोड़ना।

सुरणाई—दे० शहनाई।

सुरणो—(क्रि०) अधोवायु का निकलना। पादणो। वा सरणो।

सुरत—(न०) कामक्रीड़ा। संभोग। सुरति।

सुरत-निरत—(ना०) १. अन्तर्नाद सुनना तथा उसमें डूब जाना। २. हठ योग में अन्तर्नाद की एक क्रिया। सुरति-निरति।

सुरतर—दे० सुरतरु।

सुरतरु—(न०) कल्पवृक्ष। कल्पतरु।

सुरता—(ना०) १. इच्छा। २ ध्यान। ३. याद। ४. सुधि। ५. समाधि।

सुरताण—दे० सुलताण ।
सुरत्राण—(न०) १. विष्णु । २. इन्द्र ।
सुरतिया—(ना०) १. देव पत्नी । २. अप्सरा । अपच्छरा ।
सुर-ती—दे० सुरतिया ।
सुर-त्री—दे० सुरतिया ।
सुरथान—(न०) १. स्वर्ग । सुरस्थान । २. देवस्थान । मंदिर ।
सुरदेवी—(ना०) १. योगमाया । २. दुर्गा । ३. देवी ।
सुरदोखी—(न०) दैत्य । राक्षस । राखस ।
सुर-द्रंग—(न०) १. देवगिरि । २. स्वर्ग । सुरग ।
सुर-द्रंगड़ो—दे० सुरद्रंग ।
सुरद्रोही—(न०) दैत्य । राक्षस । राखस ।
सुरधारा—(ना०) गंगा । देव नदी । मंदाकिनी । सरगतरंगण ।
सुरधुनी—(ना०) १. गगानदी । जाह्नवी । खापगा ।
सुर-नदी—(ना०) गंगा । जाह्नवी । देव नदी । रिखधुनि ।
सुर नायक—(न०) १. श्रीकृष्ण । २. इंद्र । ३. श्रीराम ।
सुरप—(न०) इन्द्र । सुरपति ।
सुरपणखा—दे० सूरपणखा ।
सुरपति—(न०) १. इन्द्र । सुरप । २. विष्णु ।
सुरपथ—(न०) आकाश । आसमान । गगन । आभो ।
सुरपथनाथ—(न०) इन्द्र ।
सुरपुर—(न०) देवलोक । स्वर्ग ।
सुरबाळा—(ना०) देवकन्या ।
सुरबाळो—(ना०) पृथ्वी ।
सुरभाखा—(ना०) संस्कृत भाषा । देवभाषा । सुरभाषा ।
सुरभिलेख—दे० सुरह लेख ।
सुरभी—(ना०) १ चंदन । सुखड़ । २. हर्रे । हरड़ । ३. नारियल । नाळेर । ४. बसंत । ५. गाय ।
सुरभीलो—(वि०) सुगंधित ।
सुर-मंडळ—(न०) एक वाद्य ।
सुरमारग—(न०) आकाश । सुरपथ । आभो ।
सुरमुख—(न०) अग्नि । आग । वासदी ।
सुरमो—(न०) आँख का एक अंजन । सुरमा । (एक खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखों में अंजन की तरह लगाया जाता है) ।
सुरमो आँजणो—दे० सुरमो सारणो ।
सुरमो सारणो—(मुहा०) १ आँख में अंजन (सुरमा) डालना । २. शृंगार करना । ३. धोखा देना ।
सुरयंद—(न०) इन्द्र ।
सुरराज—(न०) इन्द्र ।
सुरराणी—(ना०) १. ऋद्धि । २. सिद्धि । ३. सरस्वती । ४. दुर्गा ।
सुरराया—(न०) १. शक्ति । देवी । दुर्गा । सुरांराय । २. सरस्वती ।
सुररिपु—(न०) देवताओं के शत्रु । राक्षस । दैत्य ।
सुररूंख—(न०) कल्पवृक्ष ।
सुरलियो—(न०) एक गहना ।
सुरळी—(ना०) एक घास ।
सुरलोक—(न०) स्वर्ग । देवलोक ।
सुरवास—(न०) १. स्वर्ग । २. मृत्यु । सरगवास ।

सुराट—*(न०)* इन्द्र ।

सुराण—*(न०)* १. देवता । २. देवगण । ३. अच्छा राजा ।

सुरापान—*(न०)* मदिरापान । मद्यपान ।

सुरार—दे० सुरारि ।

सुरारि—*(न०)* देवताओं का शत्रु । दैत्य । राक्षस ।

सुरालय—*(न०)* १. स्वर्ग । २. शराबघर । ३. देवालय ।

सुरासण—*(न०)* १. इंद्रासन । २. सुराशन । अमृत ।

सुरासुर—*(न०ब०व०)* सुर और असुर । देवदानव ।

सुराह—दे० सुमारग ।

सुराही—*(ना०)* जल रखने का लंबी गरदन वाला मिट्टी या धातु का पात्र । मुडको । चंबू । कुंजो ।

सुराँगुर—दे० सुरगुर ।

सुराँ-मुख—*(ना०)* अग्नि ।

सुराँमुर—*(न०)* त्रिदेव । ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

सुराँराय—*(ना०)* शक्ति । दुर्गा । महामाया ।

सुराँसुर—*(न०)* १. इन्द्र । २. देव-दानव । सुर और असुर ।

सुरिजण—दे० सुरीयण ।

सुरिंद—*(न०)* इंद्र ।

सुरीयण—*(न०)* देवता लोग । देवसमूह ।

सुरीस—दे० सुरेश ।

सुरूंख—*(न०)* चंदनवृक्ष ।

सुरेख—*(वि०)* सुन्दर । मनोहर ।

सुरेव—*(अव्य०)* १. देवताओं ने । २. देवताओ को । *(न०)* देवगण ।

सुरेश—*(न०)* इन्द्र ।

सुरेसर—*(न०)* इन्द्र ।

सुरेंद्र—दे० सुरिंद ।

सुरै—*(ना०)* १. दान मे दी हुई भूमि पर या उसके सीमाकन पर रोपा जाने वाला तत्संबधी शिलालेख जिस पर गाय और बछड़े का अंकन किया हुआ होता है । सुरभि पुत्तलिका शिलालेख । सुरह लेख । २. सीमा प्रस्तर । ३. गाय । दे० सुरह ।

सुरुपोत—*(अव्य०)* पहले-पहल । शुरू-शुरू में ।

सुर्खी—*(ना०)* १. ललाई । रातापणो । २. क्रोध, नशा आदि से आंख मे आने वाली ललाई । रतास । ३. क्रोध । ४. विवाद मे आने वाली तेजी या उग्रता । ५. वस्तु के भाव का बढ़ना । भाव में आने वाली तेजी । ६ महँगाई ।

सुलखण—*(न०)* सुलक्षण । अच्छा गुण ।

सुलखणी—*(वि०)* अच्छे लक्षणों वाली ।

सुलखणो—*(वि०)* अच्छे लक्षणों वाला ।

सुलखो—*(वि०)* १. प्रसन्न । २. अच्छे लक्षणों वाला । 'बिलखो' का उलटा ।

सुळगणो—दे० सळगणो ।

सुलगन—*(न०)* शुभ मुहूर्त ।

सुळझणो—*(क्रि०)* १. सुलझना । २. निपटारा होना । ३. किसी वस्तु या बात की उलझन का मिटना ।

सुळझारो—*(न०)* निपटारा । फैसला । तसफियो ।

सुळझावणो—*(क्रि०)* १. सुलझा देना । २. (ऋण) चुका देना । ३. मारना । ४. निबटाना । ५. झगड़ा टंटा मिटाना । ६. बदला लेना ।

सुलटी—*(वि०)* उलटी नहीं । सीधी ।

सुर वाह—(न०) १. अग्नि। २. पवन। स्वर वाह।

सुर वेस्या—(ना०) अप्सरा।

सुरसत—(ना०) सरस्वती। वरदा। शारदा।

सुरसतजनक—(न०) ब्रह्मा।

सुरसती—दे० सरस्वती।

सुरसरी—(ना०) गंगा। भागीरथी।

सुरसत्र—(न०) राक्षस। सुर-शत्रु।

सुर-संपत्ति—(न०) कल्पवृक्ष।

सुर-सामरणी—(ना०) १ पार्वती। सुर स्वामिनी। २. सरस्वती।

सुर-सिंगार—(न०) १. विष्णु। २. एक वाद्य।

सुरसुरही—(ना०) कामधेनु। सुर-सुरभि।

सुरसुराट—(ना०) १. सुर सुर करते रेंगना। २. शरीर में हलकी सुरसुरी मालूम होना। ३. सुरसुर की आहट। ४. कानाफूंसी। सुरसुराट।

सुरसुराटो—दे० सुरसुराट।

सुर-सोटो—(न०) एक वाद्य।

सुर-स्वामी—(न०) १. विष्णु। २. इन्द्र।

सुरह—(ना०) १. दान में दी हुई भूमि का सीमा पत्थर, जिस पर गाय (सुरभि) अंकित की हुई होती है जिससे कोई उसे अन्य हथियाये नहीं। (गो हत्या का पाप न लगे)। २. उक्त उल्लेख और चिन्ह का शिलालेख।

सुरहरी—(ना०) गाय। सुरहल।

सुरहल—(ना०) गाय। सुरहरी। सुरहलो। दे० सुरहलिया।

सुरहलिया—(न०) एक कर्णाभूषण।

सुरहली—दे० सुरहल।

[illegible]—(न०) दान में दी हुई भूमि का वह सीमा-प्रस्तर, जिस पर गाय की मूर्ति के नीचे दान में दी हुई भूमि को छीन लेने वाले को गौहत्या का पाप लगने संबंधी लेख होता है। सुरभि-लेख।

सुरही—(ना०) गाय। गौ। सुरभि।

सुरंग—(न०) १. बढ़िया रंग। २. लाल रंग का एक घोड़ा। ३. जमीन या पर्वत के भीतर का मार्ग। ४. बारूद से पहाड़ तोड़ने की एक युक्ति। ५. खानों में पत्थर तोड़ने का एक बारूदी उपकरण। डाइनेमाइट। ६. युद्ध में शत्रुसेना को तहस-नहस करने के लिये जमीन और पानी में बिछाई जाने वाली बारूदी वस्तु। ७. उत्सव। (वि०) १. सुन्दर रंगवाला। २. आंखों को तृप्तिदायक।

सुरंगी—(वि०) १. सुंदर। मनोहर। २. अच्छे रंग वाली। ३ लुभावनी।

सुरंगो—(वि०) १. सुंदर रंगों वाला। २. रम्य। सुन्दर। ३. सुहावना। लुभावना।

सुरा—(ना०) शराब। दारू।

सुराख—(न०) छिद्र। छेद। सोरणो। ठोंडो।

सुराग—(न०) षड्यंत्र आदि की जानकारी देने वाला तत्व। गुप्त बात, रहस्य या अपराधी का पता देने वाला सूत्र। (ना०) अच्छी रागिनी।

सुराग-मिलणो—(मुहा०) रहस्य या षड्यंत्र का पता लगना।

सुरा-गाय—(ना०) हिमालय क्षेत्र की गुच्छेदार पूंछ वाली एक गाय, जिसकी पूंछ के बालों के चंवर बनते हैं।

सुराज—(न०) १. स्वराज्य। २. अच्छा राज्य।

सुराट—*(न०)* इन्द्र ।

सुराण—*(न०)* १. देवता । २. देवगण । ३. अच्छा राजा ।

सुरापान—*(न०)* मदिरापान । मद्यपान ।

सुरार—दे० सुरारि ।

सुरारि—*(न०)* देवताओं का शत्रु । दैत्य । राक्षस ।

सुरालय—*(न०)* १. स्वर्ग । २. शराबघर । ३. देवालय ।

सुरासण—*(न०)* १. इंद्रासन । २. सुराशन । अमृत ।

सुरासुर—*(न०ब०व०)* सुर और असुर । देवदानव ।

सुराह—दे० सुमारग ।

सुराही—*(ना०)* जल रखने का लंबी गरदन वाला मिट्टी या धातु का पात्र । भुड़को । चंबू । कुंजो ।

सुरांगुर—दे० सुरगुर ।

सुरां-मुख—*(ना०)* अग्नि ।

सुरांमुर—*(न०)* त्रिदेव । ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

सुरांराय—*(ना०)* शक्ति । दुर्गा । महामाया ।

सुरांसुर—*(न०)* १. इन्द्र । २. देव-दानव । सुर और असुर ।

सुरिजण—दे० सुरीयण ।

सुरिंद—*(न०)* इंद्र ।

सुरीयण—*(न०)* देवता लोग । देवसमूह ।

सुरीस—दे० सुरेश ।

सुरूंख—*(न०)* चंदनवृक्ष ।

सुरेख—*(वि०)* सुन्दर । मनोहर ।

सुरेव—*(अव्य०)* १. देवताओं ने । २. देवताओं को । *(न०)* देवगण ।

सुरेश—*(न०)* इन्द्र ।

सुरेसर—*(न०)* इन्द्र ।

सुरेंद्र—दे० सुरिंद ।

सुरै—*(ना०)* १. दान में दी हुई भूमि पर या उसके सीमाकन पर रोपा जाने वाला तत्संबधी शिलालेख जिस पर गाय और बछड़े का अंकन किया हुआ होता है । सुरभि पुत्तलिका शिलालेख । सुरह लेख । २. सीमा प्रस्तर । ३. गाय । दे० सुरह ।

सुरुपोत—*(अव्य०)* पहले-पहल । शुरू-शुरू में ।

सुर्खी—*(ना०)* १. ललाई । रातापणो । २. क्रोध, नशा आदि से आंख में आने वाली ललाई । रतास । ३. क्रोध । ४. विवाद में आने वाली तेजी या उग्रता । ५. वस्तु के भाव का बढ़ना । भाव में आने वाली तेजी । ६ महंगाई ।

सुलखण—*(न०)* सुलक्षण । अच्छा गुण ।

सुलखणी—*(वि०)* अच्छे लक्षणों वाली ।

सुलखणो—*(वि०)* अच्छे लक्षणों वाला ।

सुलखो—*(वि०)* १. प्रसन्न । २. अच्छे लक्षणों वाला । 'विलखो' का उलटा ।

सुळगणो—दे० सळगणो ।

सुलगन—*(न०)* शुभ मुहूर्त ।

सुळझणो—*(क्रि०)* १. सुलझना । २. निपटारा होना । ३. किसी वस्तु या बात की उलझन का मिटना ।

सुळझारो—*(न०)* निपटारा । फैसला । तसफियो ।

सुळझावणो—*(क्रि०)* १. सुलझा देना । २. (ऋण) चुका देना । ३. मारना । ४. निबटाना । ५. झगड़ा टंटा मिटाना । ६. बदला लेना ।

सुलटी—*(वि०)* उलटी नहीं । सीधी ।

सुलटो—(वि०) १ सीधा। समो। 'उलटो' के विरुद्ध। २. अनुकूल।

सुळणो—(क्रि०) लकड़ी आदि किसी वस्तु मे ऐसा विकार पैदा होना जिससे वह निःसत्व और निर्वीर्य होकर निर्बल एवं खोखली हो जाती हैं। सड़ना। जीर्ण होना। क्षीण होना। लकड़ी अनाज आदि मे कीड़ा लगना।

सुलताण—(न०) बादशाह। मुसलमान बादशाह। सुरताण।

सुलफी—(ना०) १. तम्बाकू गांजा आदि पीने की चिलम। २. छोटी चिलम।

सुलफो—(न०) १. सुलफी (चिलम) मे पीने का एक मादक द्रव्य। चरस। २. तमाकू। जरदो।

सुलभ—(वि०) आसानी से उपलब्ध। आसान।

सुलव—(न०) नमक।

सुलह—(ना०) १. मेल मिलाप। २. संधि। सुलेह।

सुलहनामो—(न०) संधिपत्र।

सुलंक—(ना०) सुंदर कटि। पतली कमर। भींभू लंक।

सुलंकी—(वि०) सुंदर कटि वाली। पतली कमर वाली। (ना०) सुंदर कटि वाली स्त्री। भींभूलंकी। सीहलंकी।

सुळियोड़ो—(वि०) १. निःसत्व। क्षीण। २. जीर्ण। ३. विकारग्रस्त। ४. सड़ा हुआ। जिसमे 'सुळो' लग गया हो।

सुलेमान—(न०) १ एक पर्वत। २. यहूदियो का बादशाह।

सुलेमानी—(वि०) १. सुलेमान का। २. एक पाचक नमक।

सुळो—(न०) १. क्षीणता। २. जीर्णता। ३. रोग। ४. सड़ान। ५. वल्मीक दीमक। उदई। ६. बीमारी का घर कर जाना। लंबी बीमारी। ७. लकड़ी आदि का वह खोखलापन जो पानी, दीमक आदि लगने से बन जाता है। ८. सुळने की क्रिया या भाव।

सुलोचना—(वि०) सुंदर नेत्रो वाली। (ना०) सुंदर स्त्री। सुंदर नेत्रों वाली स्त्री।

सुलोयणी—दे० सुलोचना।

सुल्टो—दे० सुलटो।

सुव—(न०) पुत्र। बेटो।

सुवचन—(न०) १. शुभ या कल्याणकारी वचन। २. सुभाषित।

सुवदनी—(वि०) सुंदर मुखवाली। सुवदना। सुमुखी।

सुवप—(न०) १. शरीर। सुंदर शरीर। (वि०) सुन्दर।

सुवरण—दे० सुवर्ण।

सुवर्ण—(न०) १. सोना। स्वर्ण। कनक। २. संपत्ति। ३. धतूरा। ४. सोलह माशे का एक मान। ५. सुनहला रंग। ६. सुंदर रंग। ७. उच्चवर्ण। श्रेष्ठ वर्ण। ८. ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण। ९. द्विजवर्ण। (वि०) १. सुंदर रंग वाला। २. सुनहला।

सुवर्ण-माक्षिक—(ना०) एक धातु। दे० सोनामाखी।

सुवंग—(अव्य०) १. ढंग से। सुव्यवस्था से। २. सुविधा से। ३. भली प्रकार से। (न०) अच्छा ढंग।

सुवागण—(ना०) सुहागिन। सौभाग्यशालिनी।

सुवागो—(न०) स्त्री की सौभाग्यसूचक मंगल सामग्री।

सुवाट—*(न०)* सन्मार्ग। सुमारग।
सुवाड़—दे० सुग्रावड़।
सुवाड़ी—दे० सुवावड़ी।
सुवाण—*(ना०)* अच्छी वाणी। मीठी बोली। मिष्ट भाषण।
सुवाणी—*(ना०)* १ सरस्वती। २. दे० सुवाण।
सुवाद—दे० स्वाद।
सुवारोग—दे० सुग्रा-रोग।
सुवावड़—*(ना०)* १. प्रसूति। सुग्रावड़। २. प्रसव। ३. प्रसूता के लिये बनाया जाने वाला सुंठि पाकादि पौष्टिक पदार्थ।
सुवावड़ी—*(ना०)* प्रसूता।
सुवास—*(ना०)* १. सुगंधी। सुसबो। २. यश। कीर्ति। ३. सुंदर घर। ४. सुंदर वस्त्रादि से युक्त।
सुवासण—दे० सुवासणी।
सुवासणी—*(ना०)* १.सौभाग्यवती बहिन-बेटी। २. बहिन-बेटी। ३. सौभाग्यवती स्त्री। ४. कुमारी कन्या।
सुवासणो—*(न०)* १. बहिन या बेटी का पुत्र। *(वि०)* सुवासित। २. अच्छी सुगंध वाला।
सुवासियो—*(वि०)* सुवासित।
सुवो—*(न०)* तोता।
सुव्रख—*(न०)* १. पीपल वृक्ष। सुवृक्ष। २. चंदन वृक्ष।
सुश्रेय—*(न०)* कुशल।
सुसकल्यो—*(न०)* खरगोश।
सुसणो—*(क्रि०)* १. सोखना। पानी या नमी का सूख जाना या कम हो जाना। २. चूसना।
सुसनेही—*(वि०)* १. सच्चा। स्नेही। २. मित्र। दोस्त। ३. समधी। बेवाई।
सुसबद—*(न०)* १. कीर्त्ति। यश। जस। २. मधुर शब्द। ३. उत्तम कविता। कविता।
सुसमो—*(क्रि०वि०)* १. सावधान। होशियार। २. तैयार। *(वि०)* १. फुरती वाला। फुर्तीला। २. संपन्न। *(न०)* अच्छा समय।
सुसर—*(न०)* १. पवन। २. सुस्वर। ३. ससुर। ससुरा।
सुसरनंद—*(न०)* हनुमान।
सुसरी—*(ना०)* पत्नी या पति की माता। ससुरी।
सुसरो—*(न०)* ससुर। पति या पत्नी का पिता।
सुसल्यो—*(न०)* खरगोश। सुसियो।
सुसा—*(ना०)* बहिन।
सुसाणी देवी—*(ना०)* ओसवालों की सुराणा और दूगड़ खाँप वालों की एक देवी। (नागोर के सतीदास सुराणा की बेटी सुसाणी जिसकी सगाई एक दूगड़ के यहाँ की थी। कहा जाता है कि सुसाणी मोरखाणा गाँव में कँवारी ही जमीन में प्रवेश कर गई थी।
सुसियो—*(न०)* खरगोश। सुसल्यो।
सुसी—*(ना०)* १. सुसियो। (सुसो की मादा)। २. एक प्रकार का वस्त्र।
सुसेय—दे० सुश्रेय।
सुसो—*(न०)* खरगोश। सुसियो।
सुस्त—*(वि०)* आलसी।
सुस्तावणो—*(क्रि०)* १. ठहरना। २. विश्राम लेना। ३. धीरे चलना। ४. धीरज रखना। ५. प्रतीक्षा करना।
सुस्ती—*(ना०)* आलस्य। आळस।
सुहड़—*(न०)* सुभट। शूरवीर। सुभड़।

सुहड़ाभरण—*(वि०)* सुभट शिरोमणि ।

सुहाग—*(न०)* १. स्त्री के सधवा रहने की स्थिति या अवस्था । सौभाग्य ।

सुहागण—*(वि०)* १. सधवा, सौभाग्यशालिनी । २. अनेक पत्नियों में से वह पत्नी जिस पर पति की अधिक कृपा व प्रेम हो, समादृता । कृपापात्री । 'दुहागण' का उलटा ।

सुहागता—*(ना०)* १ सौभाग्य । २. सुहाग ।

सुहाणो—*(वि०)* सुहावना । *(क्रि०)* अच्छा लगना । सुहाना ।

सुहामणो—*(वि०)* १. सुहावना । अच्छा । २. सुन्दर । सुहाणो ।

सुहावउ—*(वि०)* १. सुहावना । २. सुंदर । सुहावो । २. सुशोभित ।

सुहावो—दे० सुहावउ ।

सुहावणो—*(क्रि०)* १. अच्छा लगना । मन लगना । २. शोभित होना । *(वि०)* १. सुहावना । सुंदर । २. अच्छा ।

सुहासणी—*(ना०)* १. बहिन व बेटी । २. बहिन व बेटी की सौभाग्य सूचक संज्ञा । सुभ । बहिन व बेटी की पुत्रियाँ-पौत्रियाँ । २. दे० सुवासणी । ३. मधुर हास्यवाली होने के कारण विवाह के समय कन्या को सुहासिनी नाम से अभिहित करके माता-पिता उसका दान करते हैं । अतः वह 'सुहासणी' कहलाती है । माता-पिता 'सुहासणी' के यहाँ भोजन नहीं करते । *(वि०)* मधुर मुसकान वाली । सुंदर हास्यवाली ।

सुहासणो—*(न०)* बहिन व बेटी के पुत्र-पौत्र ।

सुहिणो—*(न०)* स्वप्न ।

सुहो—दे० सुहो ।

सुहृद—*(न०)* मित्र । सखा । भायलो । साथी ।

सुंआर—दे० स्वांर ।

सुंआळो—दे० सुआळो ।

सुंआळो—*(वि०)* १. सुकोमल । मुलायम । २. नरम । ३. सचिक्कन । जो खुरदरा न हो ।

सुंई—*(ना०)* १. अनुकूल । २. सुलटी । सधी । ३. एक समान ।

सुंओ—*(वि०)* १. सीधा । सुलटा । सधो । २. व्यवस्थित । ३. दुरुस्त । ४. एक समान । ५. अनुकूल ।

सुंडा—*(ना०)* शराब । मद्य । दारू ।

सुंडाडंड—*(न०)* १. हाथी । २. गणेश । ३. हाथी की सूंड ।

सुंडाळ—दे० सुंडाडंड ।

सुंडाळो—दे० सुंडाडंड ।

सुंदर—*(वि०)* १. रूपवान । २. खूबसूरत । ३. अच्छा । भला ।

सुंदरडी—*(ना०)* एक घास ।

सुंदरता—*(ना०)* १. सौंदर्य । खूबसूरती । २. रूप ।

सुंदरदास—*(न०)* धौसा (जयपुर) के निवासी दादूदयाल के शिष्य । यह बड़े विद्वान संत थे । 'सुन्दर विलास' के रचयिता प्रसिद्ध संत कवि ।

सुंदरी—*(वि०)* सुंदर स्त्री ।

सुंवारणो—दे० संवारणो ।

सुंवाळो—*(वि०)* १. चिकना । २. कोमल ।

सुंवो—दे० सुंओ ।

संहणो—*(वि०)* सस्ता । पूंघो । सोंघो ।

सुंहाळी—*(न०)* १. एक फल । २. एक पकवान । खाजो । ३. पुरी । ४. सुपारी । *(वि०)* १. सचिक्कन । २. मुलायम ।

सू—*(प्र०)* शब्दांत में लग कर उत्पन्न करने वाला अर्थसूचक प्रत्यय।

सूअर—*(न०)* १. वराह। सूकर। शूकर। सूर। २. एक गाली। *(वि०)* १. नीच। २. नालायक।

सूअरड़ी—*(ना०)* सूअर की मादा। शूकरी। सूअरी।

सूई—*(ना०)* १. सीने का एक पतला, नुकीला लोहे का उपकरण, जिसके एक सिरे के छेद मे धागा पिरो कर कपड़ा आदि सिया जाता है। सूची। शूची। २. घड़ी का कांटा। ३. बहुत बारीक सूई जैसी पतली नली वाला उपकरण जिसको शरीर मे चुभा कर भीतर दवा पहुँचाई जाती है। इंजेक्शन।

सूई-डोरो—*(न०)* १. सूई और तागा। २. मलखंभ की एक कसरत।

सूईधार—*(न०)* दरजी। शूचीधर।

सूई-री-अणी—*(ना०)* १. सूई की नोक। २. अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु। ३. बहुत थोड़ी वस्तु।

सूई लगावणो—*(मुहा०)* इंजेक्शन देना।

सूक—*(ना०)* नमी का अभाव। सूखापन।

सूकड़ी—*(ना०)* राजस्थान की एक नदी जो जालोर के पास लूनी मे मिलती है।

सूकणो—दे० सूखणो।

सूकमांज—*(ना०)* बरतनों को साफ करने का एक प्रकार, जिसमे मिट्टी या राख से साफ करने के बाद उनको पानी से धोया नहीं जाता।

सूकर—*(न०)* सूअर। शूकर। वराह।

सूकर-क्षेत्र—*(न०)* एक प्राचीन तीर्थ का नाम। शूकर क्षेत्र।

सूकरी—*(ना०)* मादा सूकर। शूकरी। सूअरी। सुअरणी। सूअरड़ी।

सूकल—*(न०)* अच्छी चाल न चलने वाला घोड़ा। *(वि०)* सूखा हुआ।

सूकलकड़ी—*(वि०)* १. लकड़ी की तरह सूखा हुआ। दुर्बल। अशक्त। २. दुबला-पतला। पतला।

सूकी खाज—*(ना०)* खुजली जिसमे फुंसी नही उठती, केवल खुजली चलती है।

सूकी खांसी—*(ना०)* खांसी जिसमे बलगम नहीं निकलता।

सूकी तनखा—*(ना०)* तनख्वाह जिसके साथ भोजन, कपड़ा, महँगाई इत्यादि का भत्ता नही मिलता। केवल वेतन। मुकर्रर तनख्वाह।

सूकी तरकारी—*(ना०)* तरकारी जिसमे रसा नही होता।

सूकी दैणगी—*(न०)* दैनिक पारिश्रमिक जिसके साथ भोजन या चिलम-बीड़ी नही दिया जाता। केवल मजदूरी के निश्चित पैसे।

सूकी भाखरी—दे० सूकी मगरी।

सूकी मगरी—*(ना०)* पहाड़ी जिस पर हरियाली न हो। सूकी डूंगरी।

सूकी मजूरी—दे० सूकी दैणगी।

सूकी-मिरच—*(ना०)* सूखी हुई लाल मिर्च जिसको पीस कर साग मे डालते है।

सूकी-रोटी—*(ना०)* १. बासी और सूखी रोटी। २. गरीबी खाना।

सूकी-लकड़ी—दे० सूक लकड़ी।

सूको—*(न०)* तम्बाकू का सूखा पत्ता। जरदा। चूको। दे० सूखो। *(वि०)* १. सूखा हुआ। जल, रस, नमी आदि से रहित। *(न०)* दुष्काल। काळ।

सूको-काळ—*(न०)* वर्षा के अभाव में पड़ा हुआ दुष्काल। अकाळ। दुकाळ।

सूको-खड़—*(न०)* सूखा हुआ घास।

सूको-खणक—*(वि०)* बिलकुल सूखा हुआ।

सूको-घा—दे० सूको घास।

सूको-घास—दे० सूको खड़।

सूको-चारो—दे० सूको खड़।

सूको-जवाब—*(न०)* साफ इनकार।

सूको-टुकड़ो—*(न०)* १ निर्धन का भोजन। २. रोटी का सूखा और बासी टुकड़ा।

सूकोड़ी—*(भू०कृ०)* १. सूखी हुई। २. निर्बल। पतली।

सूको डूंगर—*(न०)* पानी और हरियाली रहित पहाड़।

सूकोड़ो—*(भू०कृ०)* १. सूखा हुआ। २. निर्बल। पतला।

सूको-दुकाळ—*(न०)* अनावृष्टि जनित दुष्काल। सूखा दुकाल। सूको काळ।

सूको-परवत—दे० सूको डूंगर।

सूको पड़णो—*(मुहा०)* दुष्काल होना। काळ पड़णो।

सूको-बासी—*(वि०)* सूखा और बासी (भोजन)।

सूको भाखर—दे० सूको डूंगर।

सूको मगरो—दे० सूको डूंगर।

सूको-मेवो—*(न०)* बादाम, पिस्ता, किसमिस इत्यादि सूखे फल।

सूको-राट—दे० सूको खणक।

सूको-साग—*(न०)* उबाल कर सुखाई हुई सांगरी, ग्वारफली, कैर, हेलारिया इत्यादि।

सूको-हेत—*(न०)* ऊपर-ऊपर का हेत। मुंह देखा स्नेह। छोटा प्यार।

सूक्ति—*(ना०)* उत्तम या सुन्दर पद, वाक्यादि। सुभाषित।

सूक्ष्म—*(वि०)* सूक्ष्म। बहुत छोटा, बारीक या महीन। *(न०)* १. अणु। परमाणु। २. एक काव्यालंकार। ३. परब्रह्म।

सूख-चमड़—*(वि०)* १. सूखी चमड़ी वाला। जिसकी चमड़ी में खून न हो। दुबला-पतला। २. वृद्ध।

सूखणो—*(क्रि०)* १. शुष्क होना। २. किसी वस्तु से गीलापन, आर्द्रता आदि का मिट जाना। ३. दुर्बल होना। ४. निस्तेज होना या निःसत्व होना। जलाभाव में पेड़ आदि का सूखना। सूकणो।

सूखा टुकड़ा—*(न०ब०व०)* १. रोटी के सूखे टुकड़े। २. निर्धन का भोजन।

सूखाणी—*(वि०)* सूखी हुई। *(भू०क्रि०)* सूख गई। सूकाणी।

सूखी-खाज—*(ना०)* एक प्रकार की सूखी खुजली।

सूखी-तनखा—*(ना०)* वह वेतन जिसके साथ भोजन, कपड़ा, महंगाई इत्यादि का भत्ता न हो। सिर्फ तनख्वाह।

सूखी तरकारी—*(ना०)* बिना रसे की तरकारी।

सूखो—*(वि०)* १. जिसमें जल तत्व न हो। सूखा हुआ। सूखा। २. निस्तेज। ३. हरेपन या जीवन शक्ति से रहित। ४. नीरस। ५. दुबला। कृशांग। *(न०)* १. शरीर सूखने का रोग। २. अनावृष्टि। ३. दुकाल। अकाल। काळ। ४. सूखी तम्बाकू। जरदा। सूको।

सूखो जवाब—*(न०)* साफ इनकार।

सूग—(ना०) १. घृणा। नफरत। घिरणा। २. अरुचि। ३. दुर्गंध। ४. उपेक्षा।

सूग-आणो—दे० सूग आवणो।

सूग आवणी—(मुहा०) घृणा होना।

सूगल—दे० सूगलो।

सूगलपणो—(न०) १. गंदगी। मैलापन। घृणित काम।

सूगलवाड़ो—(न०) १. गंदा स्थान। २. मैली सड़ी गली वस्तुएँ। ३. अपवित्रता। अस्वच्छता। अशुद्धता। ४. मल। ५. अव्यवस्था। ६. भ्रष्टाचार। ७. रिश्वतखोरी।

सूगलाई—दे० सूगलपणो।

सूगलियाड़ो—सूगलवाड़ो।

सूगली—(वि०) १. घृणित। २. गंदी। ३. कुलटा।

सूगलो—(वि०) १. घृणित। २. दूषित। ३. मैला। गंदा। खराब। ४. निंदनीय। गर्हित। ५. घृणा के योग्य।

सूगसाग—(ना०) १. सूग और सूग जैसी कोई वस्तु। २. घृणा, उपेक्षा, दुर्गंध आदि।

सूगामण—(ना०) १. उपेक्षा। नफरत। २. घृणा। सूग। ३. दुर्गंध।

सूगामणी—दे० सूगामण।

सूगामणो—(क्रि०) १. नफरत करना। घृणा करना। २. उपेक्षा करना। ३. दुर्गंध पैदा करना। बदबू आना। (वि०) १. घृणा युक्त। २. उपेक्षित। ३. नफरत वाला।

सूगावणो—(क्रि०) १. ठुकराना। २. तिरस्कार करना। ३. अवज्ञा करना। ४. घृणा करना।

सूगीजणो—(क्रि०) १. घृणापात्र होना। २. दुर्गंधयुक्त होना। वासना।

सूचन—(न०) १. जताने या जनाने की क्रिया। २. संकेत से बताना। ३. ध्यान दिलवाना। सूचना।

सूचना—(ना०) १. खबर। २. चेतावनी। ३. जानकारी। ४. पूर्व जानकारी। ५. विज्ञप्ति। इश्तहार। ४. खबर।

सूची—(ना०) १. वस्तुओं की नामावली। फहरिस्त। टीप। लिस्ट। २. चीजों या नामों इत्यादि का क्रमबद्ध विवरण। अनुक्रमणिका।

सूची-पत्र—(न०) वह पुस्तिका जिसमें कई वस्तुओं की नामावली, विवरण और मूल्य इत्यादि दिये हुए हों।

सूची-मुख—(न०) १. चूहा। मूषक। २. सुई का छेद।

सूज—दे० साजो।

सूजणो—(क्रि०) विकार के कारण शरीर या उसके किसी अंग का फूल जाना। सूजन होना। सूजना।

सूजन—(ना०) अंग के सूजे या फूले जाने की (होने की) अवस्था, स्थिति या भाव। शोथ। सूज। सोजो।

सूजाक—(न०) मूत्रेन्द्रिय का एक रोग।

सूजाको—दे० सूझाको।

सूजियोड़ो—दे० सूज्योड़ो।

सूजी—(ना०) गेहूं का दरदरा आटा। मोटा आटा। रवो। हलवा बनाने के लिये बनाया हुआ गेहूं का रवा।

सूज्योड़ो—(भू०कृ०) सूजा हुआ। सूजन वाला।

सूझ—(ना०) १. बुद्धि। २. उपज। ३. सूझने का भाव या क्रिया। ४. कल्पना। ५. दृष्टि।

सूभरणो—(क्रि०) १. समय या मुहूर्त का अनुकूल होना। २. ग्रहों का अनुकूल होना। ३. सूभना। दिखाई देना। ध्यान में आना।

सूभ-बूभ—(न०) १. देखने या समझने की शक्ति। २. अक्ल। ३. समभ।

सूभवाळो—(वि०) १. बुद्धिमान। २. अक्लमंद। ३. कल्पनाशील।

सूभाको—(न०) १ प्रभात। उषाकाल। सुभाको। जांभरको। २. दृष्टि। नजर। दीठ।

सूभाणो—(क्रि०) १. बताना। २. सुझाव देना। ३. सूचित करना। ध्यान में लाना।

सूभापो—(न०) दीखने का भाव। दृष्टि।

सूभियोड़ो—(भू० कृ०) देखा हुआ। जोयोड़ो।

सूझ्योड़ो—दे० सूभियोड़ो।

सूट—(न०) १. पेंट और कोट। (एक ही कपड़े के)। २. ओढ़ना, ब्लाउज और लहंगा इत्यादि पहनने के सभी कपड़े। पोशाक। बेस।

सूटकेस—(न०) कपड़े रखने की चमड़े की पेटी।

सूड़—(न०) खेत बोने के पहिले खेत में उगे भाड़-भंखाड़ को काट कर जमीन को साफ करने की क्रिया।

सूड़णो—(क्रि०) १. खूब मार मारना। बेंत से मारना। २. खेत में सूड़ करना। ३. क्षुप, घास आदि को जड़ से उखाड़ना।

सूड़ी—(ना०) सरोता। सुपारी काटने का उपकरण।

सूड़ो—(न०) १. तोता। २. मोटा सरोता।

सूण—(न०) १. शकुन। २. शयन। ३. शून्य। सुन।

सूणघर—(न०) शयनगृह।

सूणहर—(न०) शयनगृह। शयनागार। सोवणघर।

सूणो—(क्रि०) सोना। लेटना। सूवणो।

सूत—(न०) १. रुई को बुन कर बनाया हुआ धागा। सूत्र। २. सारथी। ३. यज्ञोपवीत। ४. यश गाने वाले चारण-भाटादि। ५. क्षत्रिय पुरुष और ब्राह्मण स्त्री से उत्पन्न संतान। ६. आभूषण। गहना। ७. एक मुनि का नाम जिन्होंने नैमिषारण्य में अठासी हजार ऋषियों को महाभारत की कथा सुनाई थी।

सूतक—(न०) १. जन्म अशौच। २. मरण अशौच। ३. सूर्य-चंद्र ग्रहण अशौच।

सूतक-घर—(न०) सूतिकागृह।

सूतड़लो—(न०) आभूषण। गहना। (ऊनवाचक) गेहणो। सूत।

सूतपाळ—(न०) महादानी कर्ण। सूतजी द्वारा पालित सूर्य पुत्र कर्ण।

सूत-पुत्र—(न०) कर्ण। दे० सूतपाळ।

सूतवध—(वि०) व्यवस्थित।

सूत-मुनि—दे० सूत स० ७.

सूतर—(न०) धागा। सूत्र। सूत।

सूतराऊ—(वि०) १. सूत का बना हुआ। सूती। २. सूत संबंधी।

सूतरियो—(न०) १. सूत का व्यापार करने वाला। २. दर्जी। ३. बुनकर।

सूतळी—(ना०) सुतली।

सूती—(वि०) १. सूत से बना हुआ। २. सूत का। सूतराऊ। (भू०कृ०) सोई हुई।

सूती-गंगा—*(अव्य०)* १. कोई हलचल नहीं। शांत वातावरण। २. शान्ति। ३. हस्ब मामूल।

सूतो—*(भू०कृ०)* सोया हुआ। *(क्रि०भू०)* सो गया।

सूतोड़ी—*(भू०कृ०)* सोई हुई।

सूतोड़ो—*(भू०कृ०)* सोया हुआ।

सूत्यो—दे० सूतो।

सूत्र—*(न०)* १. सूत। धागा। २. किसी सिद्धान्त का संक्षिप्त मे किया गया कथन, वाक्य आदि।

सूत्रधर—*(न०)* १ नाट्यशाला का सचालक। २. नाटक के कथासूत्र की ओर संकेत करने वाला प्रारंभिक पात्र। ३. दरजी। ४. बढ़ई। ५. कठपुतली नचाने वाला।

सूत्रधार—*(न०)* १. सुथार। रथकार। २. राजगीर। ३. नाटक का प्रधान नट। ४. कठपुतलियां नचाने वाला।

सूत्राड़—दे० सूथराड़।

सूथण—*(न०)* पाजामा।

सूथराड़—*(न०)* १. सुथारों के मोहल्ले का वह चौक जहां बैठकर सुथार लोग अपना काम करते है। २. सुथारो का मोहल्ला। खातरोड़।

सूद—*(न०)* १. ब्याज। २. लाभ। ३. रसोइया। ४. व्यंजन।

सूदक-घर—*(न०)* रसोईघर। रसोड़ो।

सूदखोर—*(वि०)* १. अधिक व्याज लेने वाला। २. व्याज से जीविका चलाने वाला। व्याज का धंधा करने वाला। ३. व्याज खाऊ।

सूदखोरी—*(ना०)* सूदखोर का धधा।

सूद-दर-सूद—*(न०)* व्याज पर व्याज। चक्रवृद्धि व्याज।

सूदो—*(अव्य०)* १. शात। २. शाति से। *(वि०)* १. सरल। सीधा। सूधो। २. शांत।

सूद्र—*(न०)* शूद्र। *(वि०)* नीच।

सूद्रक—*(न०)* शूद्र।

सूध—*(ना०)* मार्गदर्शन। दे० सीध।

सूधावाणो—*(वि०)* सीधा। सुलटा।

सूधी—*(वि०)* १. वक्रता रहित। सीधी। २. सरल स्वभाववाली। पाधरी। ३. भोली। *(अव्य०)* १. सहित। समेत। २. तक। लग। ताईं।

सूधो—*(वि०)* १. सीधा। सरल। अवक्र। पाधरो। २. निष्कपट। सीधा-सादा। भोला-भाला। ३. शांत प्रकृति का। ४. आसान। सरल। ५. अनुकूल। ६. ६. दाहिना। *(अव्य०)* सहित। समेत। साथ।

सूधो-सणंक—दे० सीधो सणक।

सून—*(ना०)* १. शून्य स्थान। २. बिंदी। मींडो। ३. पुत्र। बेटो। *(न०)* पुष्प। *(वि०)* निर्जन। उजाड़। सुनसान। सूना। सूनो।

सूनवाड़—*(ना०)* निर्जन स्थान। जनशून्य। सून्याड़।

सूनवेड़—दे० सूनवाड।

सूनियाड़—दे० सूनवाड़।

सूनु—*(न०)* पुत्र। सुत। बेटो।

सूनेड़—*(वि०)* सुनसान। निर्जन। सूनवाड़।

सूनो—*(वि०)* १. निर्जन। २. उजड़। ३. रिक्त। खाली। ४. प्रिय या आवश्यक वस्तु के अभाव में होने वाली खटक।

सून्याड़—*(न०)* जनशून्य। निर्जन स्थान। एकान्त स्थान। सूनवाड़।

सून्याळ—दे० सून्याड़।

सून्यो—दे० सूनो।

सूप—(न०) १ दाल या तरकारी का पानी। रस। झोळ। २. मांस, फल आदि का रस। ३. छाज। सूपड़ो।

सूपकार—(न०) १ रसोइया। २ छाज बनाने वाला। सूपड़ियो।

सूपडी—(ना०) छोटा छाज। छाजळी।

सूपडो—(न०) छाज। सूप। शूर्प। छाजळो।

सूफ—(न०) १ एक फल। २ ऊन। ३. काली स्याही में डाला जाने वाला चिथड़ा।

सूफी—(न०) १. सूफी सम्प्रदाय का अनुयायी। सूफी मत सबधी।

सूवायत—दे० सोवायत।

सूबेदार—(न०) १ प्रांत का प्रधान शासक। २ सेना में एक पद। ३ भारतीय पदाति सेना में एक जूनियर कमीशण्ड आफिसर का पद। ४ इस पद पर रहने वाला अधिकारी।

सूबेदारी—(ना०) सूबेदार का पद या काम।

सूबो—(न०) १ सूबा। प्रान्त। २. सूबे का अधिकारी।

सूभर—(ना०) १. गर्भवती घोड़ी। २. गर्भवती मादा पशु। (वि०) सुन्दर।

सूम—(वि०) कृपण। कजूस। मूंजी।

सूमड़ो—(वि०) १. कपटी। छली। २. अपने मनोभावों को प्रगट नहीं करने वाला। घुन्नो।

सूमण—(ना०) १. सूम की स्त्री। २. कजूस स्त्री।

सूयां—(न०) सूदरा। तारवाना आदि सीने का सूवा।

सूर—(न०) १. सूर्य। २. पंडित। ३. सूअर। ४. श्रीकृष्ण का भक्त सूरदास। (वि०) शूर वीर।

सूरकांत—(ना०) सूर्यकान्त मणि। सूरज-असम।

सूरकुळ—(न०) सूर्यवंश।

सूरश्रष्ट—(न०) कवि।

सूरज—(न०) सूर्य। रवि। सूरजी।

सूरज-असम—(ना०) सूर्यकांतमणि।

सूरज-उगाळी—(ना०) सूर्योदय। प्रातःकाल। भोर।

सूरज-कूंडाळो—(न०) १. सूर्य मंडल। सूर्य बिंब। २. गेंद का एक खेल।

सूरज-ग्रहण—(न०) पृथ्वी और सूर्य के मध्य चंद्रमा के आजाने तथा उसकी छाया से पड़ने वाला एक ग्रहण। सूर्य का ग्रहण।

सूरज-चांद—(न०) १. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। २. सूरज और चांद। ३. पुत्र और पुत्र वधू।

सूरज-जा—(ना०) यमुना। जमना।

सूरज-नाड़ी—(ना०) पिंगला नाडी।

सूरजपसाव—(न०) जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के घोड़े का नाम।

सूरज-पुत्र—(न०) १. शनि। २. यम। ३. कर्ण। ४. सुग्रीव।

सूरज-पुत्री—(ना०) यमुना। जमनाजी।

सूरज पुराण—(न०) एक ग्रंथ का नाम।

सूरज-पूजा—(ना०) सूर्यनारायण की पूजा।

सूरज-प्रकाश—(न०) सूर्य की रोशनी।

सूरजमुखी—(न०) १. पीले रंग का एक फूल जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक निरंतर सूर्य की ओर मुख किये रहता है। २. एक पौधा, जिस पर सूर्यमुखी के फूल लगते हैं।

सूरजमल मीसण—(न०) वंश भास्कर, वीरसतसई के रचयिता बूंदी (राजस्थान) के प्रसिद्ध चारण कवि ।

सूरज-री-साख—(ग्रव्य०) सूर्य के होते-होते । दिन थके । (न०) दिन ।

सूरजवंस—दे० सूर्यवंश ।

सूरजवंसी—दे० सूर्यवंशी ।

सूरजवार—(न०) रविवार । ग्रदीतवार ।

सूरज-सुत—(न०) १. सुग्रीव । २. कर्ण । ३. शनि । ४. यम ।

सूरजसुता—(ना०) यमुना नदी । जमना ।

सूरजा—(ना०) यमुना । जमना । सूर्यजा ।

सूरजी—दे० सूरज ।

सूरजी-रो-सांड—(न०) सूर्य चिन्ह से दग्ध किया हुग्रा सांड । गोधो ।

सूर झटका करण—(ना०) तलवार ।

सूरड़ी—(ना०) १. सुग्रर की मादा । शूकरी । सुग्ररड़ी । २ एक गाली ।

सूरड़ो—दे० सूग्रर ।

सूरण—(न०) जमीकंद । सूरन ।

सूरत—(न०) १. शकल । २ ग्राकृति । ३. युक्ति । उपाय । ४. होश । चेत । चेतो । ५. छवि । सौंदर्य । ६. याद । स्मरण । ७. गुजरात का ऐतिहासिक नगर ।

सूरतशाही—(न०) बीकानेर के राजा सूरतसिंह द्वारा प्रवर्तित रुपया ।

सूरती—(ना०) १. खाने की तमाकू । सुरती । खैनी । (वि०) १. सूरत संबंधी । २. सूरत का रहने वाला ।

सूरदास—(न०) १. ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवि जो प्रज्ञाचक्षु थे । २. ग्रंधा । ग्रांधो ।

सूरपण—(न०) वीरत्व । शौर्य । सूरपणो ।

सूरपणखा—(ना०) बड़े नखों वाली रावण की बहिन । शूर्पनखा ।

सूरपणो—(न०) शूरत्व । शूरता । शूर वीरता । शौर्य ।

सूरपति—(न०) १. राजा । २. बलवानों का बलवान । शूरपति । महायोद्धा ।

सूर-प्रथमाण—(वि०) शूरवीरों में प्रथम । शूरवीरो मे प्रथम गिनती में ग्राने वाला । शूराग्रणी ।

सूर-मंडळभिद—(न०) योद्धा ।

सूरमी—(वि०) शौर्यशाली । शूरवीर । वीरांगना ।

सूरमो—(न०) १. सौ सामंतों से ग्रकेला युद्ध करने वाला महाशक्तिशाली सैनिक । २. शूरवीर । योद्धा ।

सूरवीर—(वि०) सूरमा । बड़ा वीर । शूरवीर । योद्धा ।

सूर-सागर—(न०) श्रीकृष्णभक्त कवि । सूरदास के पदों का प्रसिद्ध संग्रह-ग्रंथ ।

सूरात—(ना०) शूरता । शूरवीरता ।

सूरातण—(न०) शौर्य । सूरात । शूरवीरता ।

सूरातन—दे० सूरातण ।

सूरापण—(न०) शौर्य । शूरवीरता ।

सूरापणो—दे० सूरापण ।

सूरापो—(न०) १ शूरत्व । शूरवीरता । बहादुरी । २. पराक्रम ।

सूरियो—(न०) उत्तर दिशा का पवन ।

सूरो—(न०) शूरवीर । बहादुर ।

सूरो-खार—(न०) १. सुहागा । २. शोरा क्षार ।

सूरो-पूरो—(वि०) १. वीर ग्रौर उदार । २. पूर्ण शूरवीर । ३. दानी । दातार ।

सूर्य—(न०) पृथ्वी को प्रकाश, ताप इत्यादि देने वाला एक ग्रह या गोला । रवि भानु । ग्रादित्य । सूरज ।

सूर्य-कन्या—*(ना०)* १. यमुना । जमुना । २. बिजली ।

सूर्यकांत—*(ना०)* एक मणि ।

सूर्य-कांति—*(ना०)* सूर्य का तेज ।

सूर्य ग्रहण—*(न०)* सूर्य का ग्रहण ।

सूर्यजा—*(ना०)* १. यमुना । २. बिजली ।

सूर्य-नमस्कार—*(न०)* सूर्याभिमुख एक कसरत ।

सूर्य-नाडी—*(ना०)* पिंगला नाड़ी ।

सूर्यनारायण—*(न०)* सूर्य देव ।

सूर्य-पुत्र—*(न०)* १. शनि । २. यम । ३. कर्ण । ४. सुग्रीव ।

सूर्य पुत्री—*(ना०)* यमुना ।

सूर्य-पूजा—*(ना०)* सूर्यनारायण की पूजा ।

सूर्य-मंडल—*(न०)* १. सूर्य की परिधि । २ सूर्य बिंब ।

सूर्य-मंदिर—*(न०)* सूर्य का मंदिर ।

सूर्य-मुखी—दे० सूरजमुखी ।

सूर्य लोक—*(न०)* सूर्य का लोक ।

सूर्य वंश—*(न०)* एक प्रधान क्षत्रिय वंश।

सूर्य वंशी—*(वि०)* १. सूर्यवंश में उत्पन्न । २ सूर्य वंश का । ३. सूर्य वंश से संबंधित ।

सूर्य वार—*(न०)* रविवार । सूरजवार ।

सूर्य-संक्रांति—*(ना०)* सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि में संक्रमण या प्रवेश । संक्रांति ।

सूर्य-सारथि—*(न०)* अरुण ।

सूर्य सुत—दे० सूर्य पुत्र ।

सूर्य-सुता—दे० सूर्य पुत्री ।

सूर्य-सूक्त—*(न०)* सूर्य की स्तुति का एक वैदिक सूक्त ।

सूर्या—*(ना०)* सूर्य की पत्नी । छाया ।

सूर्याणी—सूर्या ।

सूर्यास्त—*(न०)* १. सूर्य का अस्त होना । २ संध्याकाल । साँझ ।

सूर्योदय—*(न०)* १. सूर्य का उदय होना । २. प्रातःकाल । प्रभात ।

सूर्योपस्थान—*(न०)* सूर्य की उपासना ।

सूर्योपासना—*(ना०)* सूर्य की उपासना या पूजा ।

सूल—*(न०)* १. त्रिशूल । पाशुपतास्त्र । २. भाला । ३. दुःख । ४. दर्द । पीड़ा । शूल । ५. व्यवस्था । ६. दशा । ७. सलीका । शऊर । योग्यता । *(अव्य०)* १. प्रकार । भाँति । २. ढंग । प्रणाली । शैली । ३. भली प्रकार । अच्छे ढंग से । व्यवस्था से ।

सूळ—*(न०)* १. बबूल का लंबा काँटा । २. काँटा । ३. त्रिशूल । ४. रह-रह कर पेट या छाती में उठने वाला दर्द । पीड़ा ।

सूलधारी—*(न०)* महादेव ।

सूलपाणि—*(न०)* महादेव । शूलपाणि । सूलधारी ।

सूळहथ—*(न०)* महादेव । शंकर ।

सूळहथी—*(ना०)* १. दुर्गा । २. पार्वती ।

सूळिक—*(न०)* खरगोश ।

सूळी—*(न०)* लोहे की नुकीली छड़ या खंभे से प्राणदंड देने का एक प्रकार । लोहे का नुकीला छड़ या खंभा जिसको मनुष्य के पेट या हृदय में घुसेड़ कर मृत्युदंड दिया जाता था । सूली ।

सूळो—*(न०)* १. माँस से बना एक व्यंजन । २. लोह सींक पर सेका जाने वाला एक व्यंजन ।

सूलो—(वि०) सरल। सीधा। पाधरो। (अव्य०) भली प्रकार। अच्छे ढंग से। व्यवस्था से।

सूवटियो—(न०) १. तोता। २. एक लोक गीत। ३. एक खिलौना।

सूवटो—दे० सुवटियो।

सूवणो—(क्रि०) शयन करना। नींद लेना। सोना। सूणो।

सूवर—(न०) सूअर। शूकर।

सूवरी—(ना०) सूअर की मादा।

सूवो—(न०) तोता। सुग्गा।

सूसी—(ना०) एक प्रकार का कपड़ा। सूसी।

सूहव—(ना०) १. सधवा नारी। सौभाग्यवती। सुभगा। २. एक रागिनी।

सूहो—(न०) १. एक रागिनी। २. एक लोकगीत। ३. तोता।

सूं—(प्रत्य०) (अव्य०) १. तृतीय विभक्ति। करण या अपादान कारक का चिन्ह। 'से'। 'द्वारा'। २. क्यों। ३. 'क्यों कर'। ४. 'प्रारंभ करके'। ५. 'पूर्वक'। ६. 'की अपेक्षा' अर्थों के संबंध में प्रयुक्त। (न०) शपथ। सौगंध। आण। सौगन। (सर्व०) क्या। कांसू। कांई।

सूंक—(ना०) १. रिश्वत। २. झगड़े लगा कर मिटाने की दलाली।

सूंकप्रियो—(वि०) रिश्वतखोर। रिश्वत लेने वाला।

सूंखड़ी—(ना०) १. त्रिघोटी करके ऊपर लिया जाने वाला कर। २. कर की रकम के ऊपर लिया जाने वाला कर। सरचार्ज। ३. दस्तूरी। ४. दलाली। आढ़त। ५. रिश्वत। घूंस। सूंक। ६. मिठाई। सुखड़ी।

सूंगणी—(ना०) तिल की फली।

सूंगो—(न०) एक हिंदू जाति अथवा उक्त जाति का व्यक्ति। (वि०) सस्ता।

सूंघणी—(ना०) सुंघनी। नसवार। हुलास। सूंघने की तमाकू। तपकीर। छींकणी। नाहुका।

सूंघणो—(क्रि०) नाक से गंध का अनुभव करना। सूंघना।

सूंघवाड़ो—(ना०) सस्तापन।

सूंघो—(वि०) सस्ता।

सूंटी—(ना०) नाभि। टुंडी।

सूंटो—(न०) बाहर निकली हुई या उपसी हुई नाभि।

सूंठ—(ना०) सोंठ। शुंठि। सूखा हुआ अदरक।

सूंठियो—(न०) सोंठ का हलवा। सूंठ रो सीरो।

सूंड—(ना०) हाथी का नाक वाला लंबा अवयव। शुंड।

सूंडहळ—(न०) १. हाथी। २. सूंड।

सूंडलो—(न०) टोकरी। ओडो।

सूंडाडंड—(न०) १. हाथी। २. गणेश। ३. सूंड।

सूंडाळ—(न०) १. श्रीगणेश। २. हाथी। (वि०) सूंड वाला।

सूंडाळो—(न०) १. गणेश। गजानन। २. हाथी। (वि०) सूंडवाला।

सूंडाहळ—(न०) १. श्रीगणेश। गजानन। २ हाथी।

सूंडियो—(न०) सूंडवाला चमड़े का चरस। कोस। कोह। मोट।

सूंडी—(ना०) नाभि। सूंटो।

सूंतणो—(क्रि०) १. खींचना। २. खींच कर निचोड़ना। ३. प्रहार पर प्रहार

करना । ४. खूब मार-पीट करना । ५. जबरदस्ती किसी को अपनी ओर खींच कर मारना । ६. पतंग उड़ाने के लिये धागे पर काच की लुगदी लगाकर मांजा तैयार करना । ७. धागों में बल देकर बुनी हुई रस्सी के बल को जमाने के लिये गीले कपड़े से रगड़ना । ८. सांकल या कोड़े से मार मारना ।

सूंतमी—*(वि०)* १. मोड़ी हुई । २. खींची हुई । ३. नोकवाली ।

सूंतमो—*(वि०)* १. मोड़ा हुआ । २. खींचा हुआ । ३. नोकवाला ।

सूंथण—दे० सूथण ।

सूंथळ—दे० सूथण ।

सूंधी—*(अव्य०)* १. सहित । साथ । २. तक । लग । लौं । ताईं ।

सूंधो—*(अव्य०)* १. सहित । साथ । *(न०)* १. सुगंध । २. अंतर । ३. तक । लग ।

सूंपणो—*(क्रि०)* १. सौंपना । सम्हलाना । २. देना ।

सूंपियोड़ो—*(भू०कृ०)* सौंपा हुआ । सुपुर्द किया हुआ ।

सूंपीजणो—*(क्रि०)* १. सौंपा जाना । २. दिया जाना । विरीजणो ।

सूंफ—*(ना०)* सौंफ । विरियाळी ।

सूंब—दे० सूम ।

सूंस—*(ना०)* १. सौगंध । २. प्रतिज्ञा । *(वि०)* १. नाराज । बेराजी । घूंच । २. क्रुद्ध ।

सूंसाड़—दे० सूंसाड़ो ।

सूंसाड़ करणो—*(मुहा०)* पवन का सूंसूं करते हुए वेग से चलना ।

सूंसाड़ो—*(न०)* १. पवन के वेग का शब्द । २. बहुत धीरे बोलने की आवाज ।

सूंसूं—*(अव्य०)* पवन के जोर से चलने की आवाज । पवन के वेग का शब्द । सूंसाड़ो ।

सूंह—*(ना०)* सौं । सौंह । शपथ । सम ।

सूंहरो—*(क्रि०वि०)* १. आरपार । २. ऊपर की तह से नीचे की तह को भेद कर । *(न०)* बड़ा छेद ।

सूंह-सपथ—*(ना०)* सौगंध करार ।

सृष्टा—*(न०)* जगत का रचने वाला । ईश्वर ।

सृष्टि—*(ना०)* विश्व । जगत ।

से—*(सर्व०)* १. उस । २. वह । ३. वे । *(क्रि० वि०)* जैसे । जिस प्रकार । *(वि०वहु०)* जैसे, समान ।

सेक—*(न०)* सेंकने की क्रिया या भाव । ताप । गरमी । दे० सिकाव ।

सेकणो—*(क्रि०)* १. आग पर रख कर किसी वस्तु को तपाना । सेकना । २. गरम वस्तु से शरीर को तपाना । सेक करना । ३. दुख देना ।

सेकंड—*(न०)* एक मिनट का साठवां भाग । *(वि०)* द्वितीय ।

सेकाई—*(ना०)* सेकने की क्रिया या भाव ।

सेकाणो—*(क्रि०)* १. भड़भूंजे से चने आदि सिकवाना । २. सेक करवाना ।

सेकावणो—दे० सेकाणो ।

सेक्रेटरी—*(न०)* १. सचिव । २. मंत्री ।

सेख—दे० शेख ।

सेखसाई—*(न०)* शेषशायी विष्णु भगवान ।

सेखाई—*(ना०)* १. गर्व । घमंड । शेखी । २. आत्म प्रशंसा । ३. डींग । ४. ऊपरी दिखावा ।

सेखावाटी—दे० शेखावाटी ।

सेखावत—*(न०)* कछवाहा राजपूतों की एक शाखा । शेखावत ।

सेखावतजी—दे० शेखावतजी ।
सेखी—दे० सेखाई ।
सेखी वधारणो—*(मुहा०)* अभिमान की बातें करना ।
सेखी हांकणो—*(मुहा०)* अभिमान भरी बातें करना ।
सेगव—*(न०)* सेवग का उलटा ।
सेगवण—*(ना०)* सेवगण का उलटा ।
सेज—दे० सेझ ।
सेजवाळ—*(ना०)* १. एक प्रकार की पालकी । २. एक प्रकार की परदावाली बहली । ३. शय्या सजाने या बिछाने वाला । ४. शयनागार का रक्षक । ५. शयनागार या शय्या को सजाने वाला ।
सेजो—*(न०)* १. स्रोत । २. निरंतर बहकर जाने वाली पानी की धारा । सीर । ३. जमीन के भीतर से आने वाली पानी की धारा । सीर । ४. आमदनी का साधन ।
सेझ—*(ना०)* शय्या । पलंग बिछौना आदि । सज्या । सेज ।
सेझवाल—दे० सेजवाळ ।
सेठ—*(न०)* १. कलार । शराब बनाने-बेचने वाला । कलाल । २. प्रतिष्ठित व्यापारी । ३. धनी मनुष्य । ४. बड़ा साहूकार ।
सेठपणो—दे० सेठाई ।
सेठ-साहुकार—*(न०)* १. सेठ और साहुकार । २. प्रामाणिक व्यापारी ।
सेठाई—*(ना०)* १. जिसमें सेठ के गुण हों। सेठपना । सेठपणो । २. दान-शीलता । उदारता । ३. रूआब । सान शौकत ।
सेठाणी—*(ना०)* सेठ की स्त्री ।
सेड़—*(ना०)* १. दोहते समय स्तन में से निकलने वाली दूध की धारा । स्तन में से निकलती हुई दूध की धारा । २. धाराप्रवाह ।
सेड़कढ—*(वि०)* थन में से निकला हुआ ताजा (दूध) । धारोष्ण ।
सेड़ळ—*(ना०)* शीतला देवी । सेढळ ।
सेड़ावू दूध—*(न०)* धारोष्ण दूध । सेड़-कढियो-दूध ।
सेडो—*(न०)* १. सिंघण । रेंट । शिघाण । नाक का मल । श्लेष्मा । सींड । २. सीमा । ३. सीमा-चिन्ह । ४. अन्त । छेह ।
सेढळ—*(ना०)* शीतला देवी । सेडळ ।
सेढो—*(न०)* १. खेत की सीमा । २. गाँव की गोचरभूमि और गाँव से संबंधित खेत आदि भूमि की सीमा । ३. सीमा का पत्थर और कोई निशान । सीमा-चिन्ह । ४. सीमा । हद । ५. अंन्त । आखिर । छेड़ ।
सेत—*(वि०)* सफेद । श्वेत । *(न०)* १. सेतु । २. पुल ।
सेतकिरण—*(न०)* चंद्रमा । श्वेतकिरण ।
सेतखानो—*(न०)* शौचालय । पाखाना । सेहतखाना ।
सेत-तरंग—*(ना०)* गंगा ।
सेतद्युति—*(न०)* चंद्रमा । श्वेतद्युति ।
सेतवाह—*(न०)* अर्जुन ।
सेतरी—*(ना०)* १. चड़स खींचने की दो रस्सियों में से सूंड में बंधी रहने वाली रस्सी । २. रस्सी ।
सेतवाह—*(न०)* चंद्रमा ।
सेतंवळ—*(न०)* पानी । जल ।
सेतान—दे० संतान ।
सेती—(प्रत्य०) करण तथा अपादान का चिन्ह । से । द्वारा । सूं । या । यो ।

सेतु—(न०) पुल । बाँध ।
सेतुबंध—(न०) १ सेतु-निर्माण । पुल बनाना । २. दक्षिण समुद्र में रामेश्वर के पास लंका की ओर बना पथरीला मार्ग या पुल ।
सेतुबंध-रामेश्वर—(न०) भारत के दक्षिण तट पर सेतुबंध के पास श्रीराम द्वारा स्थापित एक ज्योतिलिंग (शिव-तीर्थ) ।
सेत्रुंजो—(न०) सौराष्ट्र में एक प्रसिद्ध जैन-तीर्थ । शत्रुंजय ।
सेन—(ना०) सेना । (न०) १. इशारा । २. बंगालियों का एक अल्ल ।
सेनथंभ—(न०) १. सेनापति । २. बहुत बड़ा वीर । ३. अडिग वीर । ४. साहस और पराक्रम का प्रतीक ।
सेनप—(न०) सेनापति । सेनपत ।
सेनपत—(न०) सेनापति । सेनप ।
सेना—(ना०) फौज । सैन्य । थाट ।
सेनाणी—(ना०) १. निशानी । सेलाणी ।
सेनानायक—(न०) सेनापति ।
सेनानी-रथ—(न०) मोर ।
सेनापति—(न०) सेना का अफसर । सेनाध्यक्ष । सिपहसालार ।
सेनावेध—(न०) शूरवीर ।
सेनेट—(ना०) १. विश्वविद्यालय की प्रबंधकारिणी समिति । २. अमेरिका की संसद । ३. किसी राज्य की संसद ।
सेपटी रेजर—(न०) विलायती उस्तरा ।
सेमीनार—(न०) निश्चित विषय पर परिसंवाद ।
सेर—(न०) १. एक तोल । मन का चालीसवाँ भाग । २. शेर । सिंह ।
सेरा हाकणो—(मुहा०) कुमार्ग चलना ।
सेरियो—(न०) १. झाड़ियों और वृक्षों से सीमित हुआ खेतों के बीच का (संकड़ा) मार्ग । २. एक सेर का तौल ।
सेरी—(ना०) १. संकड़ी गली । २. गली ।
सेरू—(न०) खाट का उपल । ऊपळो ।
सेरो—(न०) १. हुंडी की रकम हुंडी लिखने वाले के लेने पेटे की रकम के अन्तर्गत है, ऐसा हुंडी की पिछली ओर हुंडी लिखने वाले की ओर से की जाने वाली हस्ताक्षर सहित नोंध ।(Endorsement) २. रास्ता । मार्ग । ३. ऊपरवाड़े का मार्ग । ४. ऊपरवाड़े मार्ग का स्रोत । ५. उधार दी हुई रकम या वस्तु की बही में की हुई नोंध । ६. किसी वाड़े या खेत की बाड़ को (प्रवेश करने के लिये) हटाकर बनाया गया (प्रनधिकारपूर्ण) मार्ग । बगदट ।
सेरो मारणो—(मुहा०) हुंडी की पिछली ओर हुंडी लिखने वाले की ओर से किसी विशेष बात का संकेत करना । हवाला देना । नोंध करना ।
सेल—(न०) १. छेद । सुराख । वेध । २. भाला । भालोड़ ।
सेलको—(न०) सुराख । रंध्र । छेद । ठोंठो । वेध ।
सेलडी—(ना०) गन्ना । ईख । सेरड़ी ।
सेळभेळ—(वि०) मिला हुआ । मिश्रित । मिलावटी । (न०) दो या दो से अधिक प्रकार के वस्तु-समूहों का बना हुआ मिश्रण ।
सेलार—(वि०) भालाधारी ।
सेली—(ना०) १. बड़ी माला । हार । २. गले में पहिनने की काले धागे की बटी । ३. भामी । रास । ४. फूंदादार

या खिड़किया पायके ऊपर बांधी जाने वाली सलमे-सतारे के तारों की पट्टी।

सेली—(ना०) सेले की मादा।

सेलीवाळो—(वि०) जिसने सेली पहिन रखी हो। (न0) एक लोकगीत।

सेलूको—दे० सेलको।

सेलो—(न0) १. साफा। फेंटो। २. दुपट्टा। (वि०) आसान। सुगम। सोरो।

सेळो—(न०) कांटों वाला एक जानवर। (वि०) १. कपटी। छली। २. मुंडा।

सेळी—(ना0) 'सेळो' की मादा। (वि०) कपटी।

सेलोत—(वि0) भाला धारण करने वाला। जिसके पास भाला हो। (न0) चौहानों की एक शाखा।

सेव—(ना0) १. एक फल। २. सेवँई। ३. नमकीन सेव।

सेवक—(न०) सेवा करने वाला। नौकर।

सेवकाई—(ना0) १ सेवा। २. सेवावृत्ति।

सेवकी—दे० सेवकाई।

सेवग—(न0) १. मंदिरो मे सेवा पूजा करने वाली एक ब्राह्मण जाति। शाकद्वीपीय ब्राह्मण। भोजक। २. भक्त। ३. नौकर।

सेंवगरा—(ना0) १. सेवग की पत्नी। २. भक्तिन। ३. नौकरानी। सेविका।

सेंवगर—(न0) १. चाकर। २. सेवक। (वि0) सेवा करने वाला। सेवाभावी।

सेंवगाँ-साधार—(न0) १. भगवान। २. श्रीकृष्ण।

सेंवट—(भव्य0) अंत में। आखिर। छेवट।

सेवड़ो—(न0) १. जैन जती। जैन साधु। २. संन्यासी। साधु।

सेवरण—(न0) एक घास।

सेवरणो—(क्रि0) १. सेवा करना। २. पालन-पोषण करना। ३. बहुत संग करना। ४. काम में लाना। व्यवहार मे लेना। ५. पक्षियों का अंडे सेना। ६. खुशामद करना।

सेवती—(न0) सफेद गुलाब।

सेवन—(न0) १. किसी वस्तु का नियमित रूप से किया जाने वाला उपयोग। २. उपभोग। ३. एक घास। सेवण।

सेवन करणो—(मुहा0) १. उपयोग करना। उपभोग करना। २. काम में लाना। काम मे लेना।

सेवरो—(न0) सेहरा। दूल्हे का मुकुट। मौड़। सेहरा। २. विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला एक मांगलिक गीत। ३. पुष्प माला।

सेवळणी—(ना0) नदी। सरिता।

सेवळी—(ना0) सेही नामक एक जंतु जिसकी पीठ पर लंबे-लंबे कांटे होते हैं। साही। शल्यकी। सेळी।

सेवा—(ना0) १. चाकरी। नौकरी। २. मंदिर में की जाने वाली मूर्त्ति की पूजा-अर्चा। ३. टहल। परिचर्या। ४. निःस्वार्थ-भाव से जन कार्य करने की वृत्ति।

सेवा करणो—(क्रि0) १. सार्वजनिक उपकारक काम करना। २. परिचर्या करना। ३. सेवा-पूजा करना।

सेवा-काल—(न०) नौकरी की अवधि।

सेवा-चाकरी—(न0) सेवा। बंदगी।

सेवा-टहल—(ना०) १. सेवा। खिदमत। परिचर्या। २. सेवा-सुश्रुषा।

सेवादार—(न0) गुरुद्वारा में पूजा के लिये नियत सिक्ख।

सेवादारी—(ना०) सेवादार का काम ।

सेवा-दासी—(ना०) साधुओं द्वारा सेवा के लिये रखी हुई दासी ।

सेवा-धर्म—(न०) निःस्वार्थ भाव से प्राणी-मात्र की सेवा करने का कार्य ।

सेवा-निष्ठ—(वि०) १. सेवा में निष्ठा वाला । २. सेवाभावी ।

सेवा-निष्ठा—(ना०) १. सेवा में निष्ठा । २. सेवाभाव ।

सेवा-पूजा—(ना०) १. सेवा और पूजा । २. देव-मूर्त्ति का स्नान, पूजा, आरती इत्यादि ।

सेवा-बंदगी—(ना०) सेवा, आराधना, हाजरी इत्यादि ।

सेवा-भाव—(न०) १. निःस्वार्थ सेवा का भाव । २. सेवा करने की भावना ।

सेवा-भावी—(वि०) निःस्वार्थ सेवा भाव वाला ।

सेवा-मार्ग—(न०) सेवा का मार्ग । सेवा ।

सेवार्थी—(वि०) निःस्वार्थ सेवा करने के उद्देश्य वाला ।

सेवाश्रम—(न०) सेवानिष्ठ सदस्यों का आश्रम या दफ्तर ।

सेवा-सदन—दे० सेवाश्रम ।

सेविका—(ना०) २. स्त्री-सेवक । २. सेवा करने वाली । सेवगण ।

सेवी—(वि०) १. सेवा करने वाला । २. पूजा करने वाला । ३. सेवन करने वाला । उपभोगी ।

सेवो—(न०) १. पानी का सोता । २. जहाँ जमीन में पानी ऊंचा हो । ३. कपड़े का टांका । सिलाई । सीवन ।

सेस—(न०) १. शेष नाग । २. शेष । बाकी ।

सेसनाग—(न०) शेषनाग ।

सेसू—(न०) भेदिया । गुप्तचर । जासूस ।

सेहठो—(वि०) दृढ़ । मजबूत ।

सेहर—(न०) १. मेघ शिखर । २. शिखर । शृंग ।

सेहरो—दे० सेवरो ।

सेही—दे० सेवळी ।

सेहुर—(न०) शिखर । सिखर । सेहर । टूंक ।

सैंग—(वि०) सब । समस्त । सभी ।

सैंगचो—दे० सेंगठी । (ना०)

सैंगठी—(ना०) बाजरी की खिचड़ी । (अव्य०) सभी जगह ।

सैंगू—(वि०) वह जिस पर भरोसा किया जाय । भरोसा वाला ।

सैंगू साथ—(अव्य०) ग्रामान्तर (मुसाफिरी) करने वाले विश्वसपात्र मनुष्य के साथ । (न०) विश्वासपात्र मनुष्य का साथ (यात्रा में) ।

सेंट—(न०) इत्र । अंतर ।

सैंठी—(वि०) १. मजबूत । २. पक्की । चालाक । ३. कठोर । कड़ी । ४. पुष्ट । मातो ।

सैंठो—(वि०न०) १. दृढ़ । मजबूत । २. बली । बलवान । ३. पक्का । चालाक । ४. ठोस । ५. कठोर । कड़ा । ६. हृष्ट-पुष्ट । मातो ।

सैंताळीस—(वि०) चालीस और सात । (ना०) चालीस और सात की संख्या । '४७'.

सैंतीस—(वि०) तीस और सात । (ना०) तीस और सात की संख्या । '३७'.

सैंसर—(न०) डाक, तार, सिनेमा अश्लीलता आदि पर प्रतिबंध ।

सै—*(वि०)* सब । समस्त । सह ।
सैकड़ा—*(न०)* सो का समूह ।
सैकड़े—*(भ्रव्य०)* प्रति सो के हिसाब से। प्रतिशत ।
सैकड़े सो टका—*(भ्रव्य०)* शतप्रतिशत ।
सैचन्नण—*(न०)* १. सर्वत्र प्रकाश । २. खूब प्रकाश ।
सैची—*(ना०)* मकान का भाग ।
सैजगाडी—*(ना०)* १. जनाना गाड़ी । २. सोने की गाड़ी । शय्यागाड़ी ।
सैजवाळ—*(ना०)* १. परदे वाली गाड़ी । २. एक प्रकार की पालकी । दे० सेज-वाळ ।
सैजोरो—दे० सजोरो ।
सैण—*(न०)* १. सज्जन । मित्र । २. संबंधी । ३. हितु । ४. शिष्ट पुरुष । ५. 'पणिहारी' लोकगीत का नायक ।
सैणप—*(ना०)* १. होशियारी । २. चातुरी । ३. चालाकी । ४. सज्जनता । ५. सरलता ।
सैणियो—*(वि०)* १. नायक । २. सज्जन ।
सैणी—*(वि०)* १. भली । २. सरल । सीधी । ३. विवेक वाली । डाही । *(ना०)* एक लोक देवी ।
सैणो—*(वि०)* १. भला । सज्जन । २. बुद्धिमान । ३. धीर । गंभीर । ४. विवेकी । ५. काबिल । योग्य । ६. सरल । सीधा । ७. भोला । भोळो ।
सैतान—दे० शैतान ।
सैतानी—दे० शैतानी ।
सैतीर—*(न०)* शहतीर । लकड़ी का लंबा लट्ठा ।
सैदाना—*(न०ब०व०)* वाद्य समूह । बाजे । विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र ।
सैन—*(वि०)* सभी । *(न०)* इशारा ।
सैनाण—*(न०)* १. चिन्ह । निशान । २. पहचान । श्रोळखाण ।
सैनाणी—*(ना०)* निशानी । स्मृति-चिह्न ।
सैवास—*(न०)* शाबास । धन्यवाद । वाह-वाह । बहुत अच्छा । दे० शाबास ।
सैवासी—*(ना०)* शाबासी । वाह-वाही । दे० शाबासी ।
सैमुख—*(क्रि०वि०)* सामने । सन्मुख ।
सैमूदो—*(भ्रव्य०)* १. कुछ भी छोड़े बिना । पूरा का पूरा । २. सर्वथा । बिलकुल । ३. निपट । समूधो ।
सैयर—*(ना०)* सखी । सहेली । साथण । सहियर ।
सैर—*(ना०)* १. भ्रमण । हवाखोरी । विहार । २. मनोरंजन ।
सैर-सपाटो—*(न०)* मन बहलाव के लिए घूमने फिरने को जाना ।
सैल—*(न०)* १. भ्रमण । सैर । २. मौज । ३. सफर का आनद । ४. पर्वत । शैल। *(वि०)* आसान । सरल ।
सैलको—*(वि०)* आसान । सरल । सैल ।
सैलाजा—*(ना०)* पार्वती । शैलजा ।
सैलाणी—*(ना०)* १. तिल और शक्कर (गड़गड़ खांड) को कूट कर बनाया हुआ एक व्यंजन । २. निशानी । ३. स्मृति चिन्ह । ४. मृत सधवा के पीछे प्रथम मकरसंक्रांति के दिन सगे संबंधियों में बांटी जाने वाली सैलाणी (खंडसारी और तिल) । ५. गाय के लिये बनाया जाने वाली एक पौष्टिक खुराक । बांटो ।
सैलानी—*(वि०)* १. सैर करने वाला । २. मस्त घूमने-फिरने वाला ।

सैंव—(न०) शैव।
सैंसू—(न०) १. गुप्तचर। भेदिया। भेदू।
सैंहीं—(वि०) १. समस्त। सबही। सभी। २. पूरी। भरपूर।

सैंग—(वि०) सभी। समस्त। सब।
सैंग-वेग—(क्रि०वि०) अवाक। भौचक्का। हक्का-बक्का।
सैंगोठ—(न०) सगठन। दल।
सैंजणो—(न०) एक वृक्ष।
सैंठी—(वि०) १. दृढ़। मजबूत। २. मोटी।
सैंठो—(वि०न०) १. दृढ़। मजबूत। २. मोटा।
सैंत-वैंत—दे० संत-मैंत।
सैंत-मैंत—(ना०) घबराहट।
सैंतो—(न०) सैंतीस की संख्या। (वि०) तीस और सात। '३७'.
सैंतीस—दे० सैंतो।
सैंतीसो—(न०) सदी का सैंतीसवां वर्ष।
सैंताळी—(न०) सैंतालीस की संख्या। (वि०) चालीस और सात। '४७'
सैंताळीस—दे० सैंताळी।
सैंताळीसो—(न०) सदी का सैंतालीसवां वर्ष।
सैंधळ—(न०) हलवा बनाते समय प्रचुर घी में सिका हुआ आटा।
सैंद्रूप-नाळेर—(न०) १. बिना तोड़ा-फोड़ा चोटी वाला नारियल। २. नारियल के मूल्य या प्रतीक को काम में लेने के स्थान पर नारियल ही से काम लिया जाना। ३. भेंट या पूजा में नारियल के रूप में रुपया-पैसे के स्थान में काम में लिया जाने वाला नारियल।
सैंध—(ना०) पहिचान। परिचय। ओळखाण।

सैंधणी—(न०) असली मालिक। जो खास मालिक हो वही। स्वामी।
सैंध-पिछाण—(ना०) १. जान-पहिचान। २. पहिचान। ओळखाण।

सैंधव—(न०) १. घोड़ा। २ सैंधव नमक।
सैंधो-लूण। (वि०) १. सिंध का निवासी। सिंधी। २. सिंध देश का।
सैंधो—(वि०) परिचय वाला। पहिचान वाला। (न०) नमक।
सैंपट्टी—(क्रि०वि०) पुर-तेजी से। सपाटा-बद।
सैं विचै—(अव्य०) १. बीचो बीच। ठीक बीच में। २. सबके बीच में।
सैंवज—(न०) बिना सिंचाई के मात्र वर्षा की नमी होने वाली गेहूं, जौ, चने आदि फसल।
सैंवज-खेत—(न०) वह खेत जिसमें सैंवज गेहूं, जौ, चने आदि की फसल होती है। ऐसी फसल के लिये नमी वाली भूमि। ओर-ऊमरो।
सैंसार—(न०) संसार। दुनिया।
सो—(सर्व०) वह। (अव्य०) १. अतः। इसलिये। २. जैसा।
सोइज—(वि०) वही। सोहिज।
सोई—(ना०) १. खबर। पता। तलाश। २. गुप्त तलाश।
सोईज—(सर्व०) वही। सोइज।
सोक—(ना०) १. सोक। सौत। सपत्नी। २. जोर की हवा से होने वाला शब्द। ३. निकट में जोर की बरसती हुई वर्षा की आवाज। ४. बाण आदि शस्त्र चलाने की ध्वनि। (न०) शोक। अफसोस।
सोकड़—(ना०) १. वर्षा या पवन की आवाज। २. शोक। सौत। सपत्नी

(ऊन शब्द) । ३. भय से भाग जाने की क्रिया। डर कर दौड़ जाने का भाव।

सोकलो—(न०) १. शस्त्र का अग्र व तीक्ष्ण भाग। २. एक शस्त्र।

सोख—(न०) शोषण। (वि०) १. शोषण करने वाला। २. सोखने वाला।

सोखण—(ना०) १. काम का एक बाण। २. शोषण।

सोखणो—(क्रि०) १. जल या नमी को चूसना। २. शोषण करना।

सोखता—(ना०) एक प्रेतनी जो धन-धान्य और स्वास्थ्य का शोषण करने वाली मानी जाती है। एक कल्पित प्रेतनी जिसके लग जाने से शरीर का शोषण होता रहता है। शोषयिता प्रेतनी।

सोखी—(वि०) १. हित करने वाला। हितु। २. सुखेच्छु। ३. ('दोखी' का विरुद्ध शब्द) दूसरे के सुख में सुखी तथा दुख में दुखी होने वाला। (न०) मित्र।

सोखो—(वि०) १. सुखदायक। २. सहज। आसान।

सोग—(न०) १. मरे हुए का शोक पालन। २. शोक। दुख।

सोगटणो—(न०) १. सुगंधित लेप। उबटन। पीठी। २. वर-वधू के पीठी करने के समय गाया जाने वाला एक लोक गीत। पीठी-गीत।

सोगन—(न०) शपथ। सौगंध। सोंस। सम।

सोगन खाणो—(मुहा०) शपथ लेना।

सोगन दिराणो—दे० सोगन देरावणो।

सोगन देरावणो—(मुहा०) शपथ दिलवाना।

सोगन-सपथ—(ना०) १. सौगंध-शपथ। २. कौल-इकरार।

सोगर—दे० सोगरो।

सोगरो—(न०) बाजरी की मोटी रोटी।

सोगायत—(वि०) सोगवाला।

सोगाळो—(न०) १. मृत्यु शोक पालन करने का समय। २. मृत्यु शोक पालन करने की सामाजिक अवधि। ३. शोकाकुल।

सोगी—(ना०) सुहागा। (वि०) सोग-वाला।

सोच—(न०) १. विचार। २. विचार-विमर्श। ३. चिंता। फिक्र। फिकर। ४. दुख। रंज। ५. विषाद। शोक। ६. पश्चात्ताप। पछतावो।

सोचकरणो—(मुहा०) १. चिंता करना। २. पछताना।

सोच कराणो—(मुहा०) दुख या हानि की बात सुनाना। २. कोई ऐसी बात कहना जिससे किसी को चिंता हो।

सोचकेस—(न०) अग्नि। आग। वाहुवे।

सोचणो—(क्रि०) १. विचार करना। २. किसी बात को गहराई से मन-ही-मन तोलना। ३. विचार करते-करते किसी कल्पना या निर्णय तक पहुँचना।

सोचणो-विचारणो—(क्रि०) १. गहराई से सोचना। २. विचार-विमर्श करना।

सोच-फिकर—(न०) १. चिंता। २. दुख। रंज। ३. पछतावा।

सोच-विचार—(न०) १. गहराई से सोचना। २. विचार-विमर्श। ३. सोचने समझने का भाव। ४. विचार-मंथन। घादघड़। मथामण। ५. खेद। सोस।

सोचाड़णो—दे० सोचाणो ।

सोचाणो—(क्रि०) १. सोचने मे प्रवृत्त करना । सोचाना । २. सुझाना । दिखाना । ३. समझाना । ४. बताना ।

सोचावणो—दे० सोचाणो ।

सोचा-सोची—(ना०) १. सोचते रहने की क्रिया या भाव । २. बार-बार सोचना ।

सोचीजणो—(क्रि०) सोचा जाना ।

सोचू—(वि०) सोचने वाला । विचार करने वाला ।

सोचू-समझू—(वि०) १. समझदारी से सोचने वाला । २. समझदार ।

सोज—(ना०) १. सूजन । सोजो । २. तलाश । ३. विचार मंथन । मथामण । ४. निष्कर्ष । ५. खबर । पता । ६. व्यवस्था । ७. प्रबंध । ८. तैयारी । ९. निर्माण । १०. सामर्थ्य । हैसियत । ११. सामान । सामग्री । (सर्व०) वही ।

सोजत—(न०) मारवाड़ का एक ऐतिहासिक नगर ।

सोजतियो—(वि०) १. सोजत संबंधी । २. सोजत का निवासी । ३. सोजत का । (न०) सोजत की प्रसिद्ध अजवाइन ।

सोजतियो अजमो—(न०) सोजत की प्रसिद्ध ऊँची किस्म की अजवाइन । २. प्रसूता संबंधी एक लोकगीत ।

सोजाको—दे० सोझाको ।

सोजी—दे० सोज (ना०) ।

सोजो—(न०) सूजन । शोप । सोजो ।

सोझ—(ना०) १. शोध । खोज । जाँच । अनुसंधान । २. शुद्धि ।

सोझणो—(क्रि०) १. संशोधन करना । २. तलाश करना । ३. मिलावट वाले सोना-चाँदी को ताप द्वारा शुद्ध करना ।

सोझाको—दे० सुझाको ।

सोझी—दे० सोजी ।

सोट—दे० सोटो ।

सोटी—(ना०) छड़ी ।

सोटो—(न०) मोटा डंडा । सोंटा ।

सोड़—(ना०) १. सोते हुए के लिये ओढ़ने का वस्त्र । रजाई या सीरख । २. अंचल । खोळो ।

सोड़-सोड़िया—(न०ब०व०) गद्दे, रजाई, तकिये आदि ओढ़ने-बिछाने की सामग्री ।

सोडावाटर—(न०) सोडा से बनाया जाने वाला पीने का एक पाचक पेय ।

सोडो—(न०) १. खाने की अमुक वस्तुओं में मिलाया जाने वाला क्षार जो सज्जी को रासायनिक प्रक्रिया द्वारा शुद्ध करके बनाया जाता है । एक पाचक क्षार । २. कपड़े धोने का सोडा ।

सोढण—(ना०) १. सोढा जाति की राजपूत स्त्री । सोढी । २. पुरोहित ब्राह्मणों की सोढा जाति की स्त्री ।

सोढाण—(न०) १. सोढा राजपूतों का प्रदेश । उमरकोट, थरपारकर प्रदेश । धाट प्रदेश ।

सोढी—(ना०) सोढा जाति की स्त्री ।

सोढो—(न०) १. सोढा जाति का क्षत्रिय । २. पुरोहित ब्राह्मणों की एक अल्ल या विभाग ।

सोण—(न०) १. शकुन । २. रक्त । खून । सोहो ।

सोणक—(न०) लाल रंग ।

सोणघर—दे० सोवणघर।

सोण-चिड़ी—दे० सोन चिड़ी।

सोणत—(न०) रक्त। लोहो। शोणित।

सोणलो—(न०) स्वप्न। सुपनो।

सोणित—(न०) रक्त। लोहो। सोणत। शोणित।

सोणो—(न०) शकुनी। सवलो। (ना०) नींद। ऊंघ। (न०) शयनागार। सोणघर।

सोत—(न०) १. स्रोत। सोता। झरना। २. धारा।

सोतो—दे० सोत।

सोथ—(ना०) सोजन। शोथ। सोजो। सूजन।

सोदरा—(ना०) १. बहिन। सहोदरा। २. श्रीकृष्ण की बहिन, सुभद्रा। अर्जुन की पत्नी। (वि०) एक ही माता के उदर से उत्पन्न। सगी।

सोदरी—(ना०) सगी बहन। भाण। भेंण।

सोध—(ना०) १. खोज। तलाश। २. संशोधन। (न०) महल।

सोधणो—(ना०) झाड़ू।

सोधणो—दे० सोझणो।

सोनगिर—(न०) १. स्वर्णगिरि। २. जालोर का पर्वत। ३. जालोर के पर्वत पर बना हुआ दुर्ग।

सोन-चंपो—(न०) १. पीला चंपा। २. पीले चंपे का पुष्प।

सोन-चिड़कली—(ना०) १. शकुन चिड़िया। २. सोनचिड़ी। स्वर्ण रंग की चिड़िया।

सोन-चिड़ी—दे० सोन चिड़कली।

सोनल—(वि०) १. स्वर्ण निर्मित। सोने का। सोनेरी। २. वह कन्या जिसके केश सोने जैसे हों। ३. वह कन्या या स्त्री जिसका वर्ण सोने जैसा हो। स्वर्णिम। स्वर्णांगी।

सोनवाणी—(न०) सोना बुझाया हुआ या सोने से स्पर्श किया हुआ पानी।

सोनवाणी-सीचो—(न०) अस्पृश्य से छू जाने पर शुद्ध होने के लिये लिया जाने वाला सोनवाणी का सीचा।

सोनहरी—(वि०) स्वर्ण निर्मित। स्वर्ण-मंडित। सुनहरी। (न०) सोनचिड़िया।

सोना-गेरू—(न०) एक प्रकार की अधिक लाल तथा मुलायम मिट्टी। गेरू।

सोना नवेस—(वि०) १. राजा या राज्य की ओर से जिसे पैर में सोना पहनने की इज्जत मिली हो। २. पांव में सोना (पहनने) बख्शने की ताजीम। ३. पांव में सुवर्ण धारण करना तथा धारण करने की प्रतिष्ठा। ४. वह जो पांव में सोना पहनता है।

सोनानामी—(न०) रुक्मिणी का भाई। रुक्मकुमार।

सोनापाणी—दे० सोनवाणी।

सोनामखी—(ना०) १. एक प्रकार की रेचक वनस्पति। सनाय। २. सोना-मुखी के पत्ते। दे० सोनामाखी।

सोना-माखी—(ना०) १. एक रेचक वन-स्पति। सोनामखी। २. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा। ३. एक धातु। स्वर्ण माक्षिक। धापोत। सोनामुखी।

सोना-मुखी—दे० सोना माखी।

सोना-मोहर—(ना०) सोने का सोनैयो।

सोनार—(न०) सोने का काम ... पुरुष। स्वर्णकार। सोनी।

सोना-रा-नलिया करणा— *(मुहा०)* १. खूब धनवान बनना । २. खूब कमाना ।

सोना-री-गारथी नीपणो—*(मुहा०)* अत्यंत सुशोभित बनाना । खूब सुंदर सजाना ।

सोना-री-थाळी में लोह-री-मेख–*(मुहा०)* सभी सुलक्षण किन्तु एक कुलक्षण । सभी अच्छाइयों मे एक बुराई ।

सोना-री-पळ— *(ना०)* वार-वार नही मिले ऐसा सुंदर मौका । स्वर्ण अवसर । अमूल्य अवसर ।

सोना-री-लंका लुंटाणी—*(मुहा०)* अमूल्य वस्तुओ को योंही लुटा देना ।

सोना-रै-पाळणै भूलणो--*(मुहा०)* खूब ऐश्वर्य मे पालन-पोषण होना ।

सोना-रो-मेह वरसणो—*(मुहा०)* खूब आमदनी होना । खूब कमाना ।

सोना-रो-सूरज ऊगणो—*(मुहा०)* १. पुत्र जन्म तथा पुत्र विवाह जैसे बधाई के मांगलिक प्रसगो का प्राप्त होना । २. खूब संपत्ति, पुत्र, पौत्र इत्यादि सुखों की प्राप्ति होना । ३. वैभवशाली एवं पुण्यशाली होना ।

सोना-वरणी—*(वि०)* स्वर्ण के समान वर्ण वाली । सोनाहरणी ।

सोनासळी—*(ना०)* स्त्रियो के नाक मे पहनने की सिली । सिळी ।

सोनाहरणी—दे० सोनावरणी ।

सोनिक—*(न०)* कसाई ।

सोनी—*(न०)* सुनार । स्वर्णकार ।

सोनी-महाजन— *(न०)* सोने-चाँदी के आभूषण बनाने तथा बेचने वाला । २. सोनो का एक विरुद ।

सोनी महाराज—*(न०)* सोनी का एक विरुद ।

सोनी-राजा—*(न०)* स्वर्णकार का विरुद ।

सोनेरी—*(वि०)* १. स्वर्ण निर्मित । २. सुनहला । ३. सोने का झोल चढ़ा हुआ । ४. सोने के जैसा पीले रंग का ।

सोनेलो—*(ना०)* १. सोनजूही । पीले फूलो की एक वनस्पति ।

सोनैयो—*(न०)* सोने का सिक्का । स्वर्ण-मुद्रा ।

सोनो—*(न०)* स्वर्ण । सोना । कनक ।

सोपान—*(न०)* सीढ़ी । निसरणी ।

सोपारी—*(न०)* सुपारी । पुंगीफल ।

सोपी—दे० सोफी ।

सोपो—*(न०)* रात का शांत वातावरण ।

सोफी—*(वि०)* १. जिसको अफीम का व्यसन नही हो । २. निर्व्यसनी ।

सोवत—*(ना०)* १. सगति । सहवास । साथ । सोहवत । २. संभोग । *(न०)* १. काफिला । २. घोड़ों का काफिला ।

सोवती—*(न०)* साथी । मित्र । हम-सोहबत ।

सोवदो—*(न०)* १. बाजीगरी का खेल । २. जादू का खेल । करिश्मा ।

सोवायत—*(न०)* सूबेका अधिकारी ।

सोवो—*(न०)* १. शक । सशय । २. आरोप ।

सोभ—*(ना०)* १. पिता आदि पितृपक्ष वालो का कुछ रुपये देकर प्रथम बार पुत्री के ससुराल मे भोजन करने की रीति । २. उक्त रीति का समारोह । ३. सोभ का जीमन । ४. शोभा । ५. शोभा (कीर्ति) प्राप्त करने के लिये किया जाने वाला काम । ६. प्रशंसा । ७. शोभ । ८. शोभा का संक्षिप्त ।

सोनरो—(क्रि०) सोना देना । सोना धरना । [illegible] ।

सोनल—(न०) १. सरल । २. चंद्रमा । ३. [illegible] ।

सोनवान—(वि०) १. सोने-जैसा । २. सोने का बना ।

सोना—(न०) १. सुवर्ण । सोना । २. कांति । ३. [illegible] । ४. वर्ण । रंग । [illegible] । ५. [illegible] ।

सोनाकवरी—(वि०) १. सोने-जैसी कांति वाली । २. [illegible] ।

सोनाखलान—(वि०) सोने-जैसा । सुंदर । बना हुआ ।

सोनित—(वि०) सुन्दर ।

सोम—(वि०) सौम्य । (न०) १. चंद्रमा । २. सोमवार । ३. कपूर । ४. एक पार्वत्य लता, जिसके रस का देवता और ऋषिगण पान करते थे ।

सोमधान—(न०) १. [illegible] । २. [illegible] । [illegible] ।

सोमनाथ—(न०) १. द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक । २. शिव । ३. सौराष्ट्र में इतिहास प्रसिद्ध सोमनाथ शिव का मंदिर । ४. इस नाम का तीर्थ स्थान । [illegible] ।

सोमपान—(न०) सोम रस का पान ।

सोमलता—(न०) [illegible] ।

सोमल—(न०) एक प्रकार का विष ।

सोमवती अमावस्या—(ना०) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या और पर्व ।

सोमवंश—(न०) १. चंद्रवंश । २. एक [illegible] ।

सोमवंशी—(न०) यादव क्षत्री । चंद्रवंशी क्षत्री । (वि०) चंद्र वंश का ।

सोमवार—(न०) [illegible] ।

सोमवारी अमावस्या—[illegible] ।

सोमस—(वि०) [illegible] ।

सोमसर—[illegible] ।

सोमेसर—[illegible] ।

सोय—(न०) १. [illegible] । २. [illegible] । ३. [illegible] । (सर्व०) १. [illegible] । २. [illegible] । ३. [illegible] ।

सोयलिंग—(वि०) १. [illegible] । २. [illegible] ।

सोयरो—(न०) [illegible] एक [illegible] । [illegible] ।

सोयल—(वि०) [illegible] ।

सोर—(न०) शब्द ।

सोरठ—(न०) १. सौराष्ट्र देश । २. काठी जाति के लोगों द्वारा गाई जाने वाली एक राग । सोरठ राग । ३. इस नाम की एक रागिनी ।

सोरठियो—(न०) १. एक प्रकार का घोड़ा । २. सोरठा छंद । (वि०) १. सौराष्ट्र प्रदेश से संबंधित । २. [illegible] का ।

सोरठिये दूहे—[illegible] ।

सोरठो—(न०) [illegible] एक [illegible] ।

सोरपो दूहरपो—(वि०) [illegible] ।

सोरापो-दोरापो—(वि०) [illegible] ।

सोराप्तो-आसप्तो—(वि०) [illegible] ।

सोरप—(न०) १. सुख। २. आराम। ३. प्रसन्नता। ४. सुखावस्था। दे० सोहराई। ५. 'दोरप' का विरुद्ध।

सोरपण—दे० सोरप।

सोर-भखी—(ना०) १. तोप। २. बंदूक।

सोरम—(ना०) १. सुगंध। २. सुखावस्था। सोरप। सोराई।

सोरंभ—(ना०) सुगंध। सुवास।

सोरंभचर—(न०) भौंरा। भ्रमर। भमरो।

सोरंभ-मूळ—(ना०) चंदन।

सोराई—(ना०) १. तंदुरस्ती। स्वस्थता। २. चैन। आराम। सुख। सोरप। ३. आसानी। सुगमता। 'दोराई' का उलटा।

सोरै-सास—(अव्य०) १. झटपट। २. आसानी से। विना तकलीफ उठाये।

सोरो—(वि०) १. सुगम। आसान। २. तंदुरस्त। नीरोग। स्वस्थ। (न०) १. चैन। आराम। सुख। २. कलमीशोरा। शोरा। (वि०) १. सुखी। २. प्रसन्न। राजी-खुशी।

सोरो-दोरो—(क्रि०वि०) १. बहुत कठिनता से। २. जैसे-तैसे। ज्यों-त्यों करके। ३. सुख-दुख से।

सोरो-सांतरो—(वि०) सुखी और निरोग।

सोरो-सुखो—(वि०) खूब सुखी।

सोळ—(वि०) सोलह।

सोळ-कळा—(न०) संपूर्ण रूप से प्रकाशमान एवं ऐश्वर्यवान पुरुष का एक विशेषण। दे० षोडश कला।

सोहल-कळा—(ना०) चन्द्रमा की सोलह कलाएं। दे० षोडश कला।

सोळ-पगो—(न०) केंकड़ा।

सोळ-भांत—(न०) पूजा के षोडश प्रकार। षोडशोपचार।

सोळमो-सोनो—(वि०) १. शुद्ध। २. असली। ३. श्रेष्ठ। उत्तम। (न०) पूर्व मध्यकाल में सोने का मूल्य चाँदी से सोलह गुना अधिक होने से 'सोळमो-सोनो' कहलाया, जो आज सोना अथवा किसी वस्तु की उत्तमता के प्रतीक रूप में लोकोक्ति का रूप बन गया। रजतं षोडशगुणं भवेत स्वर्णस्य मूल्यकम्'। शुक्रनीति। ४/२/९२.

सोळंकणी—(न०) १. सोळंकी राजपूत की स्त्री। २. सोळंकी जाति की स्त्री।

सोळंकी—(न०) राजपूतों की एक जाति।

सोळंतरसो—(न०) पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ सोलह (११६) की संख्या।

सोळाना—(न०) १. सोलह आना। २. शतप्रतिशत। पूर्ण रूप से।

सोलाळी—(ना०) पृथ्वी। भूमि। जमीं।

सोळै—(वि०) दस और छः। (न०) सोलह की संख्या। '१६'

सोळो—(न०) १. सदी का सोलहवाँ वर्ष। २. उन्माद। ३. उत्साह। ४. शोला।

सोलो—दे० सोहलो।

सोवणघर—(न०) शयनगृह। सूणहर।

सोवणहार—दे० सोवणहारो।

सोवणहारो—(वि०) सोने वाला। सोवणियो।

सोवणी—(ना०) झाड़ू। बुहारी। (वि०) सुहावनी।

सोवणो—(क्रि०) १. नाज को छाज में डालकर साफ करना। २. सोना। शयन करना। (वि०) शोभाप्रद। सोहना। सुंदर। सुहावना।

सोवतड़ी—(अ०क्रि०) सोती हुई। सोई हुई। सूतोड़ी।

सोवतां—(अव्य०) सोते समय। सूवतां।

सोवतां-जागतां—(अव्य०) सोते हुए और जागते हुये। सोते-जागते। सूतां-जागतां।

सोवन—(न०) १. सोन चमेली का फूल। २. स्वर्ण। सोना। सोनो।

सोवनगिर—(ना०) १. जालोर का पर्वत। सुवर्णगिरि। २. जालोर का किला। ३. जालोर नगर।

सोवन-चूड़—(ना०) स्त्रियों के हाथ में पहनने की सोने की चूड़ी।

सोवनतन—(न०) १. गरुड़। २. सुवर्ण के समान गौर वर्ण। गौरवर्ण शरीर।

सोवन-थाळ—(न०) सोने की थाळी। सुवर्ण थाल।

सोवन-पाणी—(न०) स्वर्ण स्पृष्ट जल। सोनपाणी।

सोवन पाणी-री सीचो—दे० सोन पाणी-सींचो।

सोवो—(न०) शोभा।

सोव्रण—(न०) सोना। स्वर्ण। सुवर्ण।

सोव्रणकार—(न०) सुवर्णकार। सोनी।

सोसणारी—(वि०) शोषण करने वाली।

सोसणियो—(वि०) शोषण करने वाला। शोषक। चूसणियो।

सोसणो—(क्रि०) सोखना। शोषण करना। चूसणो।

सोसनी—(वि०) लालीयुक्त नीले रंग का। बैंगनी।

सोसनी-रंग—(न०) लाली लिये हुए नीला रंग। बैंगनी रंग।

सोसन्यो—दे० सोसनी।

सोसित—(वि०) शोषित।

सोह—(वि०) १. सब। समस्त। सगळो। सँग। २. शोभा। छबि। कान्ति।

सोह क्यु—(अव्य०) सब कुछ।

सोहजाण—(वि०) सब जानने वाला। (न०) सर्वज्ञ। सहजाण।

सोहड़—दे० सुहड़।

सोहणो—(वि०) सुहावना। (क्रि०) १. शोभित होना। २. अनाज को सूप द्वारा झटक कर साफ करना। सोवणो।

सोहन हलवो—(न०) एक प्रकार की मिठाई।

सोहबत—(ना०) १ कारवाँ। कतार। २. संगति। सोबत। ३. संभोग। मैथुन।

सोहमस्मि = वह मैं हूं। मै ब्रह्म हूं।

सोहम—दे० सोह।

सोहर—दे० सोहळो।

सोहरत—(ना०) १. प्रशंसा। तारीफ। २. ख्याति।

सोहराई—(ना०) १. आराम। सुख। २. स्वास्थ्य लाभ। ३. स्वास्थ्य। ४. सम्पन्नता। सोराई। 'दोराई' का उलटा।

सोहरो—दे० सो'रो।

सोहलाळी—(ना०) पृथ्वी। सोलाळी। भूमि। धरती।

सोहलो—(न०) १. बधाई का गीत। मंगल गीत। पुत्र जन्मोत्सव का गीत। सोहर। २. सुखी।

सोहं—(अव्य०) 'वह मैं हूं।', 'ब्रह्म मैं हूं' अर्थ वाला एक महावाक्य। सोहम्।

सोहा—(ना०) शोभा।

सोरप—(न०) १. सुख। २. आराम। ३. प्रसन्नता। ४. सुखावस्था। दे० सोहराई। ५. 'दोरप' का विरुद्ध।

सोरपणो—दे० सोरप।

सोर-भखी—(ना०) १. तोप। २. बंदूक।

सोरम—(ना०) १. सुगंध। २. सुखावस्था। सोरप। सोराई।

सोरंभ—(ना०) सुगंध। सुवास।

सोरंभचर—(न०) भौंरा। भ्रमर। भमरो।

सोरंभ-मूळ—(ना०) चंदन।

सोराई—(ना०) १. तंदुरुस्ती। स्वस्थता। २. चैन। आराम। सुख। सोरप। ३. आसानी। सुगमता। 'दोराई' का उलटा।

सोरै-सास—(अव्य०) १. झटपट। २. आसानी से। बिना तकलीफ उठाये।

सोरो—(वि०) १. सुगम। आसान। २. तंदुरुस्त। नीरोग। स्वस्थ। (न०) १. चैन। आराम। सुख। २. कलमीशोरा। शोरा। (वि०) १. सुखी। २. प्रसन्न। राजी-खुशी।

सोरो-दोरो—(क्रि०वि०) १. बहुत कठिनता से। २. जैसे-तैसे। ज्यों-त्यों करके। ३. सुख-दुख से।

सोरो-सांतरो—(वि०) सुखी और निरोग।

सोरो-सुखी—(वि०) खूब सुखी।

सोळ—(वि०) सोलह।

सोळ-कळा—(न०) संपूर्ण रूप से प्रकाशमान एवं ऐश्वर्यवान पुरुष का एक विशेषण। दे० षोडश कला।

सोहल-कला—(ना०) चन्द्रमा की सोलह कलाएँ। दे० षोडश कला।

सोळ-पगो—(न०) केंकड़ा।

सोळ-भांत—(न०) पूजा के षोडश प्रकार। षोडशोपचार।

सोळमो-सोनो—(वि०) १. शुद्ध। २. असली। ३. श्रेष्ठ। उत्तम। (न०) पूर्व मध्यकाल में सोने का मूल्य चाँदी से सोलह गुना अधिक होने से 'सोळमो-सोनो' कहलाया, जो आज सोना अथवा किसी वस्तु की उत्तमता के प्रतीक रूप में लोकोक्ति का रूप बन गया। रजतं षोडशगुणं भवेत स्वर्णस्य मूल्यकम्'। शुक्रनीति। ४/२/९२.

सोळंकणी—(न०) १. सोळंकी राजपूत की स्त्री। २. सोळंकी जाति की स्त्री।

सोळंकी—(न०) राजपूतों की एक जाति।

सोळंतरसो—(न०) पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ सोलह (११६) की संख्या।

सोळाना—(न०) १. सोलह आना। २. शतप्रतिशत। पूर्ण रूप से।

सोलाळी—(ना०) पृथ्वी। भूमि। जमीं।

सोळै—(वि०) दस और छः। (न०) सोलह की संख्या। '१६'

सोळो—(न०) १. सदी का सोलहवाँ वर्ष। २. उन्माद। ३. उत्साह। ४. शोला।

सोलो—दे० सोहलो।

सोवणघर—(न०) शयनगृह। सुखहर।

सोवणहार—दे० सोवणहारो।

सोवणहारो—(वि०) सोने वाला। सोवणियो।

सोवणी—(ना०) झाड़ू। बुहारी। (वि०) सुहावनी।

सोवणो—(क्रि०) १. नाज को छाज में डालकर साफ करना। २. सोना। शयन करना। (वि०) शोभाप्रद। सोहना। सुंदर। सुहावना।

सोवतड़ी—(भ०कृ०) सोती हुई। सोई हुई। सूतोड़ी।

सोवताँ—(अव्य०) सोते समय। सूवतां।

सोवताँ-जागताँ—(अव्य०) सोते हुए और जागते हुये। सोते-जागते। सूतां-जागतां।

सोवन—(न०) १. सोन चमेली का फूल। २. स्वर्ण। सोना। सोनो।

सोवनगिर—(ना०) १. जालोर का पर्वत। सुवर्णगिरि। २. जालोर का किला। ३. जालोर नगर।

सोवन-चूड़—(ना०) स्त्रियों के हाथ में पहनने की सोने की चूड़ी।

सोवनतन—(न०) १. गरुड़। २. सुवर्ण के समान गौर वर्ण। गौरवर्ण शरीर।

सोवन-थाळ—(न०) सोने की थाली। सुवर्ण थाल।

सोवन-पाणी—(न०) स्वर्ण स्पृष्ट जल। सोनपाणी।

सोवन पाणी-रो सींचो—दे० सोन पाणी-सीचो।

सोवो—(न०) सोभा।

सोव्रण—(न०) सोना। स्वर्ण। सुवर्ण।

सोव्रणकार—(न०) सुवर्णकार। सोनी।

सोसणारी—(वि०) शोषण करने वाली।

सोसणियो—(वि०) शोषण करने वाला। शोषक। चूसणियो।

सोसणो—(क्रि०) सोखना। शोषण करना। चूसणो।

सोसनी—(वि०) लालीयुक्त नीले रंग का। बैंगनी।

सोसनी-रंग—(न०) लाली लिये हुए नीला रंग। बैंगनी रंग।

सोसन्यो—दे० सोसनी।

सोसित—(वि०) शोषित।

सोह—(वि०) १. सब। समस्त। सगळो। सँग। २. शोभा। छबि। कान्ति।

सोह क्यु—(अव्य०) सब कुछ।

सोहजाण—(वि०) सब जानने वाला। (न०) सर्वज्ञ। सहुजाण।

सोहड़—दे० सुहड़।

सोहणो—(वि०) सुहावना। (क्रि०) १. शोभित होना। २. अनाज को सूप द्वारा झटक कर साफ करना। सोवणो।

सोहन हलवो—(न०) एक प्रकार की मिठाई।

सोहबत—(ना०) १. कारवाँ। कतार। २. संगति। सोबत। ३. संभोग। मैथुन।

सोहमस्मि = वह मैं हूं। मै ब्रह्म हूं।

सोहम—दे० सोह।

सोहर—दे० सोहळो।

सोहरत—(ना०) १ प्रशंसा। तारीफ। २. ख्याति।

सोहराई—(ना०) १. आराम। सुख। २. स्वास्थ्य लाभ। ३. स्वास्थ्य। ४. सम्पन्नता। सोराई। 'दोराई' का उलटा।

सोहरो—दे० सो'रो।

सोहलाळी—(ना०) पृथ्वी। सोलाळी। भूमि। धरती।

सोहलो—(न०) १. बधाई का गीत। मंगल गीत। पुत्र जन्मोत्सव का गीत। सोहर। २. सुखी।

सोहं—(अव्य०) 'वह मैं हूं।' 'ब्रह्म मैं हूं' अर्थ वाला एक महावाक्य। सोहम्।

सोहा—(ना०) शोभा।

सोहाग—दे० सुहाग ।
सोहागण—दे० सुहागण ।
सोहामणो—दे० सुहामणो ।
सोहावणो—दे० सुहावणो ।
सोहासण—दे० सुहासणी ।
सोहासणी—दे० सुहासणी ।
सोहासणो—दे० सुहासणो ।
सोहारद—(न०) १. मित्र । २ मित्रता । सौहार्द । दोस्ती ।
सोहिज—(सर्व०) वही । सोइज । वोही ।
सोहितो—(न०) मांस से बना एक खाद्य पदार्थ । सोवतो ।
सोहिलो—(वि०) सुगम । सुसाध्य । सेलो ।
सोही—(सर्व०) वही । (वि०) सब ही । सभी ।
सों—दे० सूं । सं० १, २. (ना०) शपथ । सौगंध ।
सोंस—(ना०) शपथ । सौगंध । सोगन ।
सोंहुगो—दे० सूंघो ।
सौ—(न०) १. एक सौ । २ सौ की संख्या । (वि०) समस्त ।
सौ-अधियाळ—(वि०) सौ का आधा । पचास ।
सौ क्युं ही—(अव्य०) १ सब कुछ भी । २ सब कुछ ।
सौख—(न०) १. व्यसन । चस्का । २. मौज । शौक ।
सौखीन—(वि०) वह, जिसे किसी बात का शौक हो, शौकीन । छैला ।
सौगंद—(ना०) १. शपथ । कसम । २. प्रतिज्ञा । पण ।
सौगंध—(ना०) १. सुगंध । खुशबू । २. सौगंध ।
सौगात—(ना०) १. भेंट । उपहार । [illegible] । २. पाथेय । सबल । संबाळ ।
सौड़—(न०) रिजाई ।
सौण—दे० सवण ।
सौणहर—(न०) १. शयनघर । २. स्वप्न-घर ।
सौणी—दे० सवणी ।
सौदागर—(न०) १. व्यापारी । बेपारी । वणिक । २. कसाई । ३. चमड़ा या शराब बेचने वाला । सटोक ।
सौदागरी—(ना०) १. सौदागर का काम । व्यापार । २. प्रपंच । ३. खटपट । ४. छोटी पंचायती ।
सौदामणी—(ना०) बिजली । सौदामिनी । (बादलों की) ।
सौदो—(न०) १. व्यापार । बेपार । २. सट्टो ।
सौदो-सूत—(न०) १. बाजार से खरीदने की वस्तुएं । माल-सामान । खरीदी का सामान । २. खरीदी ।
सौभाग्य—(न०) १. अच्छा भाग्य । २. सुहाग । सधवापन । ३. ऐश्वर्य । वैभव । ४. मंगल । कल्याण । ५. सुख । आनंद । ६. अनुराग । ७. सुन्दरता । ८. सफलता । ९. सिंदूर ।
सौभाग्य-चिह्न—(न०) सौभाग्यवती स्त्री के बिंदिया, सिंदूर, नथ, मंगलसूत्र, रखड़ी इत्यादि सौभाग्य चिह्न ।
सौभाग्य तृतीया—(ना०) भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो बड़ी पवित्र मानी जाती है । बड़ी तीज । सुहाग तीज ।
सौभाग्यवती—(ना०) १. अच्छे भाग्य वाली । २. सुहागन ।
सौभाग्यवान—(वि०) अच्छे भाग्य वाला । भाग्यवान । खुशनसीब ।

सौभाग्यशालिनी—दे० सौभाग्यवती ।
सौभाग्यशाली—दे० सौभाग्यवान ।
सौमित्र—(न०) महाराज दशरथ की पत्नी (द्वितीय रानी) सुमित्रा के पुत्र—लक्ष्मण और शत्रुघ्न ।
सौम्य—(वि०) १. सोम संबंधी । २. शीतल । ठंडा । ३. शान्त । ४. कोमल । ५. नम्र । ६. कोमल प्रकृति वाला । ७. प्रसन्न । खुश । (न०) बुध ।
सौर—(वि०) १. सूर्य का । २. सूर्य संबंधी । (न०) १. शनि । थावर । २. यम । जमराज ।
सौरभ—(ना०) सुगंध । सुवास । खुशबू ।
सौरभेय—(न०) बैल ।
सौराष्ट्र—(न०) गुजरात का एक प्रदेश । काठियावाड़ । सोरठ ।
सौ-वर—(अव्य०) सौ वार ।
सौं—(ना०) शपथ । सौगंध ।
सौंदर्य—(न०) सुन्दरता । खूबसूरती ।
सौळी—दे० सँवळी ।
सौळो—दे० सँवळो ।
स्कूटर—(न०) पेट्रोल से चलने वाला एक द्विचक्री वाहन ।
स्कूल—(न०) विद्यालय । पाठशाला ।
स्कूल-मास्टर—(न०) पाठशाला का शिक्षक ।
स्क्रू—(न०) पेच ।
स्टाफ—(न०) किसी कार्यालय आदि के अधिकारियों का समूह ।
स्टांप—(न०) मोहर । ठप्पा । सरकारी ठप्पा लगा कागज ।
स्टीमर—(न०) भाप, तेल आदि ऊर्जा से चलने वाला जहाज ।
स्टील—(न०) १. लोहा । २. कभी काट न लगे ऐसा लोहा ।
स्टूडेंट—(न०) विद्यार्थी ।
स्टेज—(न०) रंगमंच ।
स्टेट—(ना०) राज्य । प्रांत । प्रदेश ।
स्टेशन—(न०) १. स्थान । २. रेलगाड़ी, बस आदि के ठहरने का स्थान ।
स्टेशन मास्टर—(न०) स्टेशन का सर्वोपरि अधिकारी ।
स्टेशनरी—(ना०) कार्यालय के कर्मचारियों के लिए आवश्यक कागज, पेंसिल, कलम, रबर आदि ।
स्टेंड—(न०) वह स्थान जहाँ बस-मोटरें मुसाफिरों को लेने-छोडने के लिए ठहरती है ।
स्टॉक—(न०) किसी दुकान, कार्यालयादि में स्थित सामग्री या धन आदि ।
स्तर—(न०) १. ऊपर का थर । २. परत । तह । ३ तल । ४. सतह ।
स्तवन—(न०) स्तुति करना ।
स्तुति—(ना०) प्रार्थना ।
स्तोत्र—(न०) देवतादि की स्तुति के संस्कृत भाषा के छंद ।
स्त्री—(ना०) १. नारी । लुगाई । बैर । २. पत्नी । जोरू । जोड़ायत । ३. किसी जीव-जंतु की मादा ।
स्त्री-कुसुम—(न०) १. रज । २. रजःस्राव ।
स्त्री-केशर—(ना०) पुष्प का नारी बीज वाला रेशा या केशर । पुंकेशर की मादा ।
स्त्री-गमन—(न०) स्त्री से मैथुन । संभोग ।
स्त्री-ग्रह—(न०) चंद्र, बुध और शुक्र ग्रह (ज्योतिष) ।
स्त्री-चरित्र—(न०) स्त्रियों के कर्म, आचार, व्यवहार इत्यादि । १. पाखंड । ढोंग । २. धूर्तता ।

स्त्रीजित—(वि०) जोरू का गुलाम। स्त्रैण। लुगाईक्ड्यो। बेरियो। २. स्त्री के वश में नहीं होने वाला।

स्त्रीत्व—(न०) १. स्त्री होने का गुण, भाव, अवस्था इत्यादि। २. स्त्रियों का स्वभाव।

स्त्री-धन—(न०) १. स्त्री का वह धन जिस पर उसके पति का भी अधिकार न हो। २ पीहर से मिला हुआ माल-सामान और धन इत्यादि।

स्त्री-धर्म—(न०) १. रजोदर्शन। २. मैथुन। ३. स्त्री से संबंधित आचरण, नियम, कर्त्तव्य इत्यादि।

स्त्री-धर्म में आणो—(मुहा०) १. प्रथम रजोदर्शन होना। २. मासिक रजोदर्शन होना।

स्त्री-पुह्प—दे० स्त्री-कुसुम।

स्त्री-प्रसग—(न०) मैथुन। संभोग।

स्त्री-रत—(वि०) जो स्त्री में बहुत अनुराग रखता हो।

स्त्री-रत्न—(न०) १. स्त्री रूपी रत्न। २. स्त्रियों में श्रेष्ठ। ३. पतिव्रता। ४. सुशील, कुलीन स्त्री।

स्त्री-रंजन—(न०) पान।

स्त्री-लंपट—(वि०) १. कामी। २. व्यभिचारी। लंपट।

स्त्रीलिंग—(न०) १. राजस्थानी व्याकरण के दो लिंगों में से एक जो स्त्री जाति के रूप का वाचक होता है। नारी जाति (व्याकरण)। २. योनि। भग। ३. स्त्री का चिन्ह।

स्त्री-समागम—(न०) संभोग। मैथुन।

स्त्री-संग—(न०) मैथुन। संभोग।

[स्त्र]ी-संभोग—(न०) मैथुन। स्त्री संग।

स्त्री-सुख—(न०) १. संभोग। मैथुन। २. स्त्री की विद्यमानता होने का योग (ज्योतिष)। ३. स्त्री से प्राप्त होने वाला सुख, आनंद, भोग इत्यादि।

स्त्री-स्वभाव—(न०) १. जिसका स्वभाव स्त्रियों के जैसा हो। २. स्त्रियों की प्रकृति।

स्त्री-स्वातंत्र्य—(न०) स्त्रियों की स्वतंत्रता।

स्त्री-हट—(ना०) १. स्त्री की हठ। २. बहुत भारी हट। जबरदस्त जिद।

स्त्री-हत्या—(ना०) १. स्त्री की हत्या। २. स्त्री हत्या का पाप।

स्त्रैण—(वि०) १. स्त्री के वश में रहने वाला। स्त्री का गुलाम। २. स्वभाव, आचरण इत्यादि में स्त्री जैसा। ३. स्त्री संबंधी।

स्थान—(न०) १. जगह। स्थल। भूमि। २. घर। आवास। ३. पद। ओहदा। ४. प्रदेश।

स्थानकवासी—(न०) एक जैन संप्रदाय। बाइस टोळा।

स्थान-निमड़—(वि०) मूर्ख।

स्थान-भ्रष्ट (भू०कृ०) स्थान या पद से हटाया हुआ। २. अपने स्थान से भ्रष्ट। ३. पदभ्रष्ट।

स्थानापन्न—(वि०) १. स्थान या पद पर अस्थाई रूप से काम करने वाला। २. प्रतिष्ठित।

स्थानांतर—(न०) (नौकरी करने वाले को) एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलना। बदली।

स्थाने—दे० मुथाने।

स्थिति—(ना०) १. अवस्था। दशा। २. संयोग। मौका। ३. किसी व्यक्ति या

संस्था की मर्यादा, मान आदि की सूचक दशा। ४. एक ही स्थान पर एक रूप में बने रहना।

स्नान—*(न०)* नहान। सिनान।

स्नेह—*(न०)* १. प्यार। दुलार। अनुराग। २ घी, तेल आदि चिकनाहट या चिकनाहट वाले पदार्थ।

स्पर्श—*(न०)* १. त्वचा का वह गुण जिससे छूने दबने आदि का अनुभव होता है। २. स्पर्शेन्द्रिय से होने वाला ज्ञान। ३. ३. दो वस्तुओं का आपस में छूना या भिड़ना।

स्पेन—*(न०)* यूरोप का एक देश।

स्मर—*(न०)* कामदेव।

स्मरधुज—*(न०)* स्मरध्वज। पुरुष की लिंगेन्द्री।

स्मरागार—*(न०)* भग। योनि।

स्मरारि—*(न०)* महादेव। शिव।

स्यंदन—*(न०)* १. रथ। २. घोड़ा। ३. विष्र। ४. जल। पानी। ५. गमन।

स्यंदना-रूढ—*(वि०)* वह जो रथ में सवार हो। संदणारोही।

स्यध—*(न०)* सिंधु। समुद्र।

स्याणी—*(वि०न०)* १. सयानी। समझदार। अनुभवी (स्त्री)। सैणी। २. बड़ी उमर की।

स्याणो—*(वि०)* १. समझदार। सयाना। सेणो। २. भला। विनम्र। *(न०)* जादू-टोना करने वाला। झाड़ा झपटा देने वाला। टोना-टोटका करने वाला।

स्यात—*(अव्य०)* १. ही। २. शायद। कदाचित। कवाच।

स्यान—*(ना०)* १. तड़क-भड़क। ठाट-बाट। २. शान। ३. होश।

स्यापो—दे० सापो।

स्यावास—दे० सँबास।

स्याम—*(वि०)* १. काला। २ नीला। *(न०)* १. श्याम रंग। २. श्रीकृष्ण। ३ अंधेरा। ४. कृष्ण पक्ष। वदपख।

स्यामखोर—*(वि०)* स्वामिभक्त।

स्याम-धरम—*(न०)* स्वामीधर्म। स्वामीभक्ति। स्यामध्रम।

स्यामध्रम—दे० स्यामधरम।

स्यामा—*(ना०)* १. रात। २. रुक्मिणी। ३. राधा। ४. श्यामा स्त्री।

स्यारी—*(ना०)* १. रहँट या बैलगाड़ी का एक उपकरण। २ छेद करने का एक औजार। छोटी स्यार। ३. एक प्रेतनी। ४. शृगाली। स्याळी। ५. वारी। पारी।

स्याळ—*(न०)* शृगाल। सियार। गीदड़। सियाळ। गादड़ो।

स्याळियो—दे० स्याळयो।

स्याळी—*(ना०)* शृगाली। सियारी। गीदड़ी।

स्याळो—*(न०)* शीत ऋतु। सरदी। सियाळो।

स्याळ्यो—*(न०)* गीदड़। सियाळियो।

स्याही—*(न०)* रोशनाई।

स्याही-चूस—*(न०)* स्याही चूसने वाला कागद। ब्लाटिंग पेपर।

स्याही-सोख—दे० स्याहीचूस।

स्रग—*(न०)* स्वर्ग।

स्रगलोक—*(न०)* स्वर्गलोक।

स्रगवास—*(न०)* मृत्यु। स्वर्गवास। सुरगवास।

स्रगविहार—*(न०)* मृत्यु। स्वर्गविहार सुरग सिधारणो।

स्रगविहारी—(न०) देवता।
स्रगसुखदा—(न०) कल्पवृक्ष।
स्रगाळ—(न०) गीदड़। शृगाल।
स्रणिका—(ना०) लार। लाळ।
स्रप—(न०) सर्प। साप।
स्रपाटो—(ना०) चोंच। चूंच।
स्रब—(वि०) सब। समस्त। सकल। सँग। सरब।
स्रबभखी—(वि०) १. सर्वभक्षी। २. अग्नि।
स्रबभोगी—(न०) अग्नि।
स्रब्ब-निवास—(न०) सर्व भूतों में निवास करने वाला। सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा।
स्रब्बवियाप—(न०) सर्वव्यापक। परमात्मा।
स्रम—(न०) १ शर्म। २. श्रम। परिश्रम।
स्रव—दे० श्रव। (न०) १. प्रवाह। २. झरना। (वि०) सर्व। सब।
स्रवण—(न०) १. कान। २ पसीना। ३. झरना। दे० श्रवण।
स्रवदायक—(न०) कल्पवृक्ष।
स्रवंती—(ना०) नदी।
स्रवै—(वि०) सर्व। सब। (अव्य०) सब ओर। सर्वे।
स्रंग—(न०) १. सींग। शृंग। २. पर्वत की चोटी।
स्राझणो—(क्रि०) १. धारण करना। २. सज्ज होना। ३. कार्य सिद्ध करना। ४. मारना। नाश करना। साझणो।
स्राध—दे० श्राद्ध।
स्राप—(न०) शाप।
स्राव—(न०) १. बहाव। २. गर्भपात। ३. रक्तस्राव।
स्रावक—(न०) १. जैन धर्मानुयायी गृहस्थ। श्रावक। सावग।
स्रावकणी—(ना०) श्रावक की पत्नी।
स्रावग—दे० स्रावक।
स्रिया—(न०) १. लक्ष्मी। २. स्त्री।
स्रुत—(न०) कान। श्रुत।
स्रुति—(न०) १. श्रुति। वेद। २. कान।
स्रोण—(न०) रुधिर। रक्त। श्रोण। लोही।
स्रोणि—(न०) नितंब।
स्रोणित—(न०) रक्त। श्रोणित।
स्रोणी—(ना०) धरती।
स्रोतपत—(न०) समुद्र।
स्रोयण—(न०) रक्त। खून। श्रोण।
स्रोवन—(न०) स्वर्ण। सोना।
स्वतंत्र—(वि०) स्वाधीन।
स्वतंत्रता—(ना०) स्वाधीनता।
स्वदत्तं—(अव्य०) १. अपनी ओर से दान में दिया हुआ। २. ताम्रपत्र, राजआज्ञापत्र, दानपत्र और भूमि के पट्टों इत्यादि में उत्तरपर्यंक के साथ में (पहले) लिखा जाने वाला एक पारिभाषिक शब्द। (स्वदत्तं-परदत्तं)।
स्वपाकी—(वि०) अपने हाथ से ही भोजन बनाकर खाने वाला।
स्वप्न—(न०) नींद में भासित होने वाला दृश्य। नींद में दिखाई देने वाली घटनाएँ। सपना। सपनो।
स्वभाव—(न०) १. प्रकृति। २. आदत। ३. मुख्य गुण।
स्वमेव—(अव्य०) १. स्वयमेव। स्वयं ही। २. आप ही आप।
स्वयंभू—(न०) १. ब्रह्मा। विधाता। २. शिव। ३. वेद। (वि०) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंवर—*(न०)* १. प्राचीन कालीन एक प्रथा जिसमें कन्या अपने पति का चुनाव स्वयं करती थी। कन्या द्वारा स्वयं अपने पति को चुनना। २. वह स्थान जहाँ कन्या वर को चुने। ३. स्वयंवर चुनने की पद्धति या रिवाज।

स्वयंवरा—*(ना०)* पति का चुनाव अपने आप करने वाली कन्या।

स्वयंसिद्ध—*(वि०)* १. जो बिना किसी प्रमाण या तर्क के अपने आप ही ठीक हो। आपोआप सिध। २. सर्वमान्य।

स्वयंसेवक—*(न०)* अपनी इच्छा या प्रेरणा से सेवा करने वाला। वालंटियर।

स्वयंसेविका—*(ना०)* स्त्री-स्वयंसेवक।

स्वर—*(न०)* ध्वनि। आवाज। १. नाक से निकलने वाला स्वास। २. संगीत के स्वर। सरगम। ३. वाद्य के विभिन्न स्वर। बोल। ४ सात की संख्या। ५. श्वास। ६. उच्छ्वास। ७. वह वर्ण जिसका पूरा उच्चारण अन्य वर्ण की सहायता के बिना हो सके। स्वतंत्र रूप से पूर्णरूपेण उच्चरित अ, आ आदि वर्ण *(व्या०)*। ८. उक्त ध्वनियाँ *(व्या०)*। ९. सुर। तान। लय। १०. प्राणियों के गले की आवाज।

स्वर-ग्राम—*(न०)* संगीत में 'सा' से 'नी' तक के सात स्वरों का समूह।

स्वर मात्रा—*(ना०)* उच्चारण की मात्रा।

स्वर विज्ञान—*(न०)* वह विद्या जिसमें स्वर संबंधी सभी बातों का विवेचन हो। स्वर विद्या।

स्वरस—*(न०)* पत्तों को कूट-पीसकर निकाला हुआ रस।

स्वरसंधि—*(ना०)* स्वर वर्णों में स्वर के अन्त और स्वर के पहले पदों में होने वाली संधि। स्वरों की संधि।

स्वरागम—*(न०)* दो वर्णों के बीच मे नए स्वर का आना। *(व्या०)*।

स्वराघात—*(न०)* उच्चारण मे स्वर विशेष पर लगने वाला जोर।

स्वराज—*(न०)* कोई देश किसी के अधीन न होकर स्वतन्त्र हो। देश में देश के लोगों का राज्य। अपना राज्य।

स्वराज्य—दे० स्वराज।

स्वराट—*(न०)* १. इन्द्र। २. ब्रह्म। ईश्वर।

स्वरूप—*(न०)* १. व्यक्ति, पदार्थ आदि की आकृति। २. मूर्त्ति, चित्रादि। ३. वह जिसने देवता का रूप धारण किया हो।

स्वरूपश्री—दे० सरूपश्री।

स्वरोदय—*(न०)* स्वर या श्वास से सब प्रकार के अशुभ या शुभ फल जानने की विद्या। सरोदो।

स्वरोदय विज्ञान—*(न०)* स्वरोदय जानने का विज्ञान।

स्वर्ग—*(न०)* देवलोक। अमर लोक। अमरावती।

स्वर्गपति—*(न०)* १. इन्द्र। २. धर्मराज।

स्वर्ण जयंती—*(ना०)* संस्था या व्यक्ति की पचासवीं वर्षगाँठ।

स्वर्ण-पदक—*(न०)* सोने का पदक। सोने-रो-तुकमो।

स्वसन—*(न०)* पवन। वायु। वायरो।

स्वस्ति—*(अव्य०)* 'कल्याण हो' (आशीर्वाद)। *(ना०)* कल्याण। मंगल।

स्वस्तिक—(न०) एक मंगल सूचक चिन्ह। सातियो। साथियो।

स्वस्ति-वचन—(न०) आशीर्वचन।

स्वस्तिवाचन—(न०) कार्यारंभ का मंगल पाठ।

स्वस्ति श्री—(वि०) १. कल्याण और श्रीयुक्त। २. पत्र लेखन में जिसको पत्र लिखा जाय उसके स्थान (तथा व्यक्ति) का विशेषण पद।

स्वस्थ—(न०) १. नीरोग। २. जिसमें कोई दोष न हो। निरोगो।

स्वागण—दे० सुहागण।

स्वागत—(न०) १. अभिवादन। २. अभ्यर्थना। ३. आगत व्यक्ति का सम्मान। अगवानी। आवभगत।

स्वागत करणो—(मुहo) कोई बात, सुझाव आदि का सहर्ष स्वीकार करना। (क्रि०) आगमन पर सत्कार करना।

स्वागत-कारिणी—(ना०) आगत-स्वागत के लिए गठित समिति।

स्वागत-मंत्री—(न०) स्वागत-समिति का मंत्री।

स्वागत-सत्कार—(न०) आगंतुक का आदर-सम्मान।

स्वागताध्यक्ष—(न०) स्वागत-समिति का अध्यक्ष।

स्वाड़—दे० सुआवड़।

स्वाद—(न०) १. पदार्थ के खट्टे, मीठे, कड़ुए आदि का जीभ को होने वाला अनुभव। जायका। २. किसी बात में मिलने वाला आनंद। मजा।

स्वादिष्ट—(वि०) १. अच्छे स्वाद वाला। २. रुचिकर। ३. सरस। ४. मधुर।

स्वादी—(ना०) दाख। द्राक्षा। दाख। (वि०) स्वाद लोलुप। सवादियो।

स्वादेन्द्रिय—(ना०) जीभ।

स्वाधिकार—(न०) १. अपना अधिकार। हक। २. अपनी सत्ता।

स्वाधीन—(वि०) १. स्वतंत्र। २. आत्मनिर्भर।

स्वाध्याय—(वि०) १. सतत अध्ययन करने की क्रिया या भाव। २. वेद या धर्मशास्त्रों का नियमित पाठ। ३. प्रणव-मंत्र का जप।

स्वान—(न०) कुत्ता। कूतरो।

स्वानुभव—(न०) अपना अनुभव।

स्वाप—(ना०) नींद। ऊंघ।

स्वाभाविक—(वि०) १. प्राकृतिक। नैसर्गिक। २. अकृत्रिम। ३. सहज। ४. स्वभावसिद्ध। ५. अपने आप होने वाला। सामान्यतया। ६. स्वभाव से संबंधित।

स्वाभिमान—(न०) १. अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान। २. आत्मगौरव।

स्वाभिमानी—(वि०) स्वाभिमान रखने वाला।

स्वामी—(न०) १. धनी। मालिक। धणी। २. राजा। ३. पति। शौहर। धणी। ४. ईश्वर। ५. साधु। संन्यासी।

स्वामी-धर्म—(न०) १. पातिव्रत धर्म। २. स्वामिभक्ति। साम‌धरम।

स्वामीनारायण—(न०) महात्मा रामानंद के शिष्य तथा स्वामीनारायण सम्प्रदाय के प्रवर्तक भक्त सहजानंद स्वामी।

स्वार्थ—(न०) १. अपना मतलब। गरज। प्रयोजन। ३. अपना लाभ। ४.

वाच्यार्थ। मूल या नियत अर्थ। ५. स्वयं के लाभ की बात।

स्वाळख—(न०) मारवाड़ में नागोर नगर के आसपास का प्रदेश। भारत में उत्पन्न होने वाले बैलों की नस्ल का एक प्रसिद्ध देश। सपादलक्ष (मारवाड़ का)।

स्वाळखियो बळद—(न०) स्वाळख प्रदेश या नसल का प्रसिद्ध बैल। नागोरी बैल।

स्वास—(न०) दे० स्वास।

स्वाहा—(ना०) अग्नि पत्नी। (न०) १. होम में आहुति-मंत्र के अन्त में उच्चरित एक शब्द। २. हवि-प्रदान का मंत्र शब्द। ३. एक अग्नि मंत्र।

स्वाहाप्रसण—(न०) देवता।

स्वाहापति—(न०) अग्नि।

स्वांग—(न०) १. मनोरंजन, नाटक आदि में किसी के अनुरूप धारण किया जाने वाला वेष। २. परिहासपूर्ण खेल-तमाशा। ३. नकल।

स्वांतःसुखाय—(अव्य०) अपने सुख के लिये। अपनी शांति के लिये। आत्म-सुख। आत्मानंद।

स्वांर—(ना०) हजामत। खिजमत।

स्वीकार—(न०) ग्रहण या अंगीकार करने की क्रिया। अपनाना। मंजूरी।

स्वीजरलैंड—(न०) यूरोप का एक देश।

स्हावो—(न०) विवाह का दिन। विवाहादि की दृष्टि से शुभ दिन। सहालग। सावो। साहो। दे० साहो।

स्होवणी—(वि०) सुहावनी।

ह

ह—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण-माला का अंतिम कण्ठ्य ऊष्म व्यंजन वर्ण।

हउग्रो—(अव्य०) १. बस। बस करो। रुको। बस इतना ही। हउँ। २. हाँ।

हउँ—दे० १. हाँ। २. दे० हउग्रो।

हक—(न०) १. स्वत्व। अधिकार। दावा। २. फर्ज। कर्त्तव्य। ३. नेग। दस्तूरी। लाग। ४. मुआवजा। ५. पक्ष। ६. धर्म। ७. परमेश्वर। ८. सत्य। ९. न्याय। (वि०) १. उचित। ठीक। सही। समुचित। २. यथा-न्याय। ३. प्राप्य।

हक छोड़णो—(मुहा०) स्वत्व छोड़ना। अधिकार त्यागना।

हक ढूकणो—(मुहा०) १. अधिकार लगना। २. अधिकार मिलना।

हकणो—(क्रि०) १. हाँका जाना। २. रवाना होना। ३. रेल या बैलगाड़ी का चलना।

हकतलफी—(ना०) किसी के हक को मारने का गुनाह या अन्याय।

हकताला—(न०) खुदाताला। ईश्वर।

हक त्यागणो—दे० हक छोड़णो।

हकदार—(वि०) १. हक रखने वाला। स्वत्व या अधिकार रखने वाला। २. जिसका हक हो।

हकदारण—(वि०) जिसका हक लगता हो वह (स्त्री)।

हकदारी—(ना०) १. हकदारपना। हक-पणो। २. अधिकार। दावा। दावो।

हकदावो—(न०) १. हक का दस्तावेज। २. हक प्राप्त करने के लिये संबंधित अदालत में की जाने वाली दरख्वास्त।

हक धरणो—(न०) हक लगाना।

हकनाक—(अव्य०)१. बिना कारण या हक के। हकनाहक। २. व्यर्थ। ३. जबरदस्ती।

हकनामो—(न०) हक का दस्तावेज। हक-पत्र।

हक नाहक—दे० हकनाक।

हकफरामोश—(वि०) १. हक छीनने वाला। २. नमक हराम। कृतघ्न।

हक-बेहक—(अव्य०) अधिकार और अन-धिकार।

हकमार—(न०) किसी का हक छीनना। (वि०) हक छीनने वाला।

हक मारणो—(मुहा०) स्वत्व हनन करना। अधिकार छीनना।

हक मारी—(ना०) हक छीनने का काम।

हक-मिटणो—(मुहा०) १. अधिकार न रहना। २. अधिकार छूटणो। अधि-कार छूटना।

हक मे—(अव्य०) १. पक्ष में। २. लाभ में।

हक मौरूसी—(न०) पैतृक अधिकार।

हकल—(अव्य०) १. चाहिये जिससे थोड़ा अधिक। २. तौल में बराबर से कुछ अधिक। (वि०) अधिक। ज्यादा। वत्तो।

हक लगणो—(मुहा०) किसी वस्तु पर अधिकार होना या बनाना। हक लागणो।

हक लागणो—(मुहा०) दे० हक लगणो।

हकवार—(अव्य०) हक के अनुसार।

हकसफो—(न०) मकान, भूमि आदि खरी-दने का वह हक जो पड़ोसी कुटुम्बीजन या लेनदार को प्राप्त होता है। हक-शुफा।

हक-सरूपी—(अव्य०) १. ईश्वर को साक्षी मान कर। २. ईमानदारी से।

हकसाई—(वि०) हक की। हक सरूपी। (ना०) एक कर। दस्तूरी।

हक हालणो—(मुहा०) १. सन्मार्ग पर चलना। २. सत्याचरण करना। सद्-व्यवहार का पालन करना। नीति नहीं छोड़ना। ४. हक लगना।

हकाणो—(क्रि०) १. चलाना। २. हँकाना।

हकायत—(अव्य०) १. हक से। २. ईमान-दारी से। धर्म से। हक सरूपो। (वि०) सच्चा। (क्रि०वि०) निश्चय।

हकार—(न०) 'ह' अक्षर। (अव्य०) १. स्वीकृति। २. हाँ।

हकारणो—(क्रि०) १. बुलाना। २. चलाना। हाँकना। हाँकणो। ३. हाँ करना। स्वीकारना।

हकारात्मक— १. स्वीकृति सूचक। २. निश्चयात्मक।

हकाळणो—(क्रि०) १. ललकारना। बका-रणो। २. चलाना। ३. धिक्कारना।

४. बुलाना। ५. भगा देना। निकालना।

हकाळी—(ना०) १. हाँकने की क्रिया। २. भगा देने की क्रिया।

हकावणो—(क्रि०) १. गाड़ी आदि को चलाना। २. चलने को प्रेरित करना।

हकी—(प्रव्य०) १. हक से। २. अधिकार से। (वि०) हक की।

हकीकत—(ना०) १. सच्चा वृत्तान्त। २. वास्तविक बात। असलियत। ३. हालत। ४. हाल। दशा। ५. राजस्थानी साहित्य का एक गद्य प्रकार। हकीगत। ६. स्थान विशेष की स्थिति का वर्णन। ७. ख्यात। इतिहास। जैसे—मारवाड़-री-हकीकत।

हकीकी—(वि०) १. वास्तविक। असली। २. सच्चा। यथार्थ। ३. सगा। संबंधी। ४. ईश्वरीय।

हकीको—(वि०) १. विश्वस्त। विश्वास के योग्य। ठावो। २. वास्तविक।

हकीगत—दे० हकीकत।

हकी-नकी—(प्रव्य०) १. हाँ या ना। २. निश्चयपूर्वक। ३. निश्चयात्मक उत्तर।

हकीम—(न०) १. यूनानी चिकित्सक। २. डाक्टर। ३. वैद्य। ४. मुसलमान वैद्य।

हकीमात—(ना०) १. यूनानी चिकित्सा पद्धति। २. हकीम का काम। हकीमी। (वि०) हकीम या हकीमात संबंधी।

हकीमी—दे० हकीमात।

हकीर—(वि०) १. तुच्छ। क्षुद्र। ओछो। नीच। २. अल्प। थोड़ो।

हकूमत—(न०) १. हुकूमत। शासन। अधिकार। सत्ता। २. हाकिम का कार्यालय। कचहरी। कचेड़ी। हुकमत।

हक्क—(न०) हक। अधिकार।

हक्को-बक्को—(वि०) घबराया हुआ। हाकबाक।

हग—(न०) १. मक्खी मच्छर की विष्टा। हगार। २. विष्टा। गू।

हगणो—दे० हँगणो।

हगजारमर—(न०ब० व०) [हींग, जीरा, मिर्च] मात्राओं बिना का लेखन।

हगाणो—(क्रि०) १. शिशु के हगने के लिए दोनो पाँवो के आधार पर (टट्टी फिरने को) बिठाना। २. हगने को प्रवृत्त करना। ३. डराना।

हगाम—(न०) १. भीड़भाड़। २. बड़ी सभा। ३. उत्सव। हगामो।

हगामी—(वि०) १. उत्साह वर्धक। २. उत्सव वाला। उत्सवमय।

हगामो—दे० हगाम।

हगार—दे० हंगार।

हगावणो—दे० हंगावणो।

हचको—दे० हिचको।

हचमच—(न०) १. धक्का। धक्कामुक्की। २. शोरगुल। ३. भय। ४. घबराहट।

हचमचणो—(क्रि०) १. हिल उठना। डिग जाना। डिगमगाना। डगमगणो। २. घबराना। ३. भय उत्पन्न होना।

हचमचाट—(न०) १. घबराहट। २. भय। डर। भो।

हचमचाणो—(क्रि०) १. हिलाना। डिगाना। डगमगावणो। २. घबराहट पैदा करना। ३. भय उत्पन्न करवाना।

हचमचावणो—दे० हचमचणो।

हचीड़ो—(न०) धक्का। जोर की टक्कर। मचीड़ो।

हज—(अव्य०) १. अजी । २. अरे । अरी ! (ना०) मुसलमानों की मक्के मदीने की यात्रा ।

हजम—(न०) १. पचने की क्रिया या भाव । पाचन । २ हथियाना । (अनुचित रूप से) । (वि०) पचा हुआ ।

हजम करणो—(मुहा०) १. किसी की वस्तु लेकर वापस नहीं देना । २. दूसरे की वस्तु को दबा लेना । ३. खाये हुये को पचाना ।

हजमत—दे० हजामत ।

हजम-होणो—(मुहा०) पचना ।

हजरत—(न०) १. सम्मानार्थ प्रयुक्त संबोधन । २. महात्मा । ३. बादशाह । (वि०) १. बदमाश । २. चालाक ।

हजाम—(न०) नाई । नापित । खवास ।

हजामत—(ना०) १. सिर और दाढ़ी के बाल मुँडवाना । २. क्षौर । खिजमत । सँवार । स्वाँर । ३. पिटाई । ४. निरर्थक परिश्रम ।

हजामत करणो—(मुहा०) १. ठगना । २. सिर दाढ़ी के बाल काटना । ३. दाढ़ी बनाना । ४. मारना । पिटाई करना । मारणो । ५. निरर्थक परिश्रम करना ।

हजाम-पट्टी—(ना०) १. हजाम का काम । हजामत । २. हलका काम । ३. निकम्मापन ।

हजार—(वि०) सहस्र । दस सौ । (न०) हजार की संख्या । १०००।

हजारहाथां-रो-धणी—(पद०) परमेश्वर । ईश्वर ।

हजार हाथां वाळो—(पद०) परमेश्वर । ईश्वर ।

हजारी—(न०) १. एक पुष्प । गेंदा । २. एक शाही मनसब । ३. लोकगीतों का एक नायक ।

हजारी-ऊमर—(अव्य०) १. आशीर्वादात्मक शब्द । २. हजार वर्ष की उम्र ।

हजारी गुल-रो-फूल—(पद०) लोकगीतों का एक नायक ।

हजारी ढोलो—(न०) १. विवाह का एक लोकगीत । २. इस लोकगीत का नायक ।

हजी—(न०) १. हज करने वाला । हाजी । २ मुसलमान ।

हजी—दे० हजे ।

हजूर—(न०) १. राजसभा । दरबार । २. राजा । ३. बड़ों के लिए संबोधन शब्द । (सर्व०) आप ।

हजूरण—(ना०) १. दासी । हजूरणी । २. सेविका ।

हजूरणी—दे० हजूरण ।

हजूरियो—(न०) १. सेवक । २. दास । ३. हज्जाम के कंधे पर रहने वाला अंगोछा या रूमाल ।

हजूरी—(न०) १. सेवक । २. दास । (वि०) हजूर का । हजूर से संबंधित ।

हजे—(क्रि०वि०) अभी तक । अजे । हजी । अजेतांई ।

हट—(ना०) १. हटने की क्रिया या भाव (तुच्छता) । २. दुराग्रह । जिद्द । ३. दुकान । हाट ।

हटक—(ना०) १. वर्जन । रोक । अटक । २. डर । भय । ३. जिद्द । हठ । ४. प्रतिज्ञा । प्रण । ५. मन की दृढ़ता । ६. संयम ।

हटकणो—(क्रि०) १. रुकना । अटकणो । २. मन का वश में करना ।

हटकाणो—(क्रि०) १. रोकना । २. मना करना । अटकाणो ।

हटकारणो—(क्रि०) १. संयम रखना । मन को वश में रखना । २. दुत्कारना । ३. सचेत करना । ४. रोकना । अटकावणो । ५. रखना । अटकावणो ।

हटकीलो—(वि०) १. हठी । जिद्दी । २ मन को वश में रखने वाला ।

हटको—(न०) १. भय । डर । २ डांट ।

हटड़ो—(ना०) पीसे हुये नमक, मिर्च, हलदी आदि को रखने के लिये खानों वाली पेटी । चमक । चार छः खानों वाली एक पेटी, जिसमें साग-सब्जी बनाने के लिए मसाले भरे रहते हैं ।

हटणो—(क्रि०) १. हटना । खिसकना । २. विमुख होना । ३. प्रतिज्ञा से विचलित होना ।

हट-ताणो—(ना०) हठ को खींचे रखना । हठ को दृढ़ता से पकड़े रहना । हठ को नहीं छोड़ना ।

हटताळ—दे० हड़ताळ ।

हटनाळ—दे० हड़ताळ ।

हटवाड़ो—(न०) १. बाजार । २. नियत दिवस पर लगने वाला अस्थाई बाजार । ३. मेले में लगने वाला बाजार ।

हटवाणियो—(न०) बनिया । दूकानदार ।

हटवाणो—दे० हटाणो ।

हटाड़णो—दे० हटावणो ।

हटाणो—(क्रि०) १. दूर करना । २. अवरोध दूर करना । ३. पीछे हटाना । ४. पद या काम से अलग करना । ५. विरक्त करना । ६. निरस्त करना ।

हटावणो—दे० हटाणो ।

हटै—(क्रि०) १. हटे । दूर । २. बाहर ।

हटै-हटै—दे० हटे-हटे ।

हट्टो—(वि०) १. हट्टा । मजबूत । २. सौष्ठव । ३. शरीर की सुन्दरता और [illegible] । ४. शरीर की बनावट । (क्रि० [illegible]) मजबूत (रखो) ।

हट्टो—(वि०) दृढ़ । मजबूत ।

हट्टो-कट्टो—(वि०) १. दृढ़ । मजबूत । २. स्वस्थ । तंदुरुस्त । ३. जवान । युवा । ४ हृष्ट-पुष्ट । मोटा-ताजा । सैंठो ।

हठ—(ना०) १. जिद । आग्रह । अड़ । २. दृढ़ प्रतिज्ञा । ३ दुराग्रह । ४. जबरदस्ती ।

हठ करणो—(मुहा०) जिद करना । हठ । झालणो ।

हठ झालणो—(मुहा०) हठ पकड़ना । जिद करना । हठ करणो ।

हठ-झेलणो—दे० हठ झालणो ।

हठता—(ना०) आग्रह । जिद । हठ ।

हठधर्मी—(ना०) १ हठ को न छोड़ने का दुराग्रह । २. झूठी हठ । (वि०) दुराग्रही । जिद्दी ।

हठयोग—(न०) आसन, प्राणायाम द्वारा किया जाने वाला योग का एक प्रकार ।

हठागरो—(वि०) दुराग्रही । हठी ।

हठात—(अव्य०) १. बलात् । जबरन । २. जबरदस्ती से । ३. विवश होकर ।

हठायत—(वि०) १. हठाने वाला । २. हटने वाला । ३. हठात ।

हठाळ—(वि०) १. हठ वाला । हठाळो । २. वीर । ३. युद्ध में पीछे नहीं हटने वाला । रणह

हुठाळी—(वि०ना०) हठवाली । हठीली । जिद्दी । (वि०न०) हठवाला । हठीला । जिद्दी ।
हुठाळो—दे० हुठाळ ।
हुठी—(वि०) १. दुराग्रही । २. जिद्दी ।
हुठीली—(वि०ना०) जिद्दी । हठवाली ।
हुठीलो—(वि०) १. जिद्दी । हठीला । हठीलो । २. दुराग्रही । ३. दृढ़प्रतिज्ञ ।
हुठेत—दे० हुठायत ।
हुठोती—दे० हुथोटी ।
हुड—(न०) हड्डी । अस्थि । हाडको । हाडकी ।
हुड़क—दे० हिड़क ।
हुड़कणी—(वि०) १. पागल (स्त्री) । २. उत्पाती । उपद्रवी (स्त्री) । ३. कलहकारिणी । झगड़ालू । ४. जिसको पागल कुत्ते ने काट खाया हो । ५. जिसको हड़किया रोग हो गया हो ।
हुड़कणो—(वि०) १. पागल । २. उत्पाती । ३. कलहकारी । ४. जिसको पागल कुत्ते ने काट खाया हो । ५. जिसको हड़किया रोग हो गया हो । (क्रि०) १. हिड़किया होना । २. कलह करना ।
हुड़कवा—दे० हिड़कवा ।
हुड़कायलो—दे० हड़कायो ।
हुड़कायो—(वि०) १. पागल । २. पागल कुत्ते के काटने से हुआ पागल । हिड़कायो । ३. उत्पाती । उपद्रवी ।
हुड़कार—दे० डकार ।
हुड़कियो—दे० हड़कायो ।
हुडकी—दे० हाडकी ।
हुड़कीजणो—(क्रि०) १. पागल कुत्ते के काटने से पागल होना । २. पागल होना ।
हुड़केड़ो—दे० हुड़कायो सं० १, २.
हुड़को—(न०) भय । डर ।
हुडको—दे० हाडको ।
हुड़को-धड़को—(न०) १. भय । डर । सको । २. लाज । शर्म । सरम ।
हुड़गड़ियां खाणी— (मुहा०) बार-बार आना । बार-बार आना-जाना ।
हुड़गड़ियो—(वि०) १. भागदौड़ करने वाला । २. बार-बार आने वाला ।
हुड़गड़ी—(ना०) १. दौड़ादौड़ । भागादौड़ । २. ऊधम ।
हुड़जोड़ो—दे० हाडबंद ।
हुड़ताळ—(ना०) १. अन्याय-अत्याचार आदि के विरोध में दुकानों आदि में ताले लगा कर काम काज बंद कर देना । हड़ताळ । २. पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो दवा के काम आता है । ३. संखिया और गंधक के योग से बना एक पदार्थ । हरताल ।
हुडताळ पाड़णी—(मुहा०) बाजार या कारखानों आदि के बंद होने की स्थिति । हड़ताल रखना ।
हुड़दड़ो—(न०) गेंद का एक खेल ।
हुड़दो—(न०) १. किसी भोज आदि में कई प्रकार की सामग्री तैयार करने और अधिक व्यक्तियों को निमंत्रण देने से होने वाली परेशानी । २. एक साथ अधिक कार्यभार से होने वाली व्यग्रता या हैरानी । ३. झंझट । ४. काम का बोझ ।
हुड़धूत—(वि०) १. मैला-कुचैला । धूल से भरा । २. उपद्रवी । ३. अपमानित ।
हुड़प—(न०) १. लूट-खसोट । २. लेकर वापस नहीं देना ।

हड़पणो—*(क्रि०)* १. अनुचित रूप से ले लेना। हड़पना। दबा लेना। हजम कर लेना। २. छीन लेना। ३. लेकर वापस नहीं देना। हजम करणो।

हड़पखोर—*(वि०)* १. मांगी हुई वस्तु या उधार लेकर वापस नहीं देने वाला। हड़पने वाला। २. लुच्चा।

हड़पी—*(ना०)* जवाहरात आदि कीमती वस्तुओं को तोलने की कांटी रखने की पेटी।

हड़बड़—*(ना०)* १. भागदौड़। २. घबराहट। ३. खलबली।

हड़बड़ाट—*(ना०)* घबराहट। हड़बड़।

हड़बड़ाणो—*(क्रि०)* १. घबराना। २. भौचक्का होना।

हड़बड़ी—*(ना०)* १. व्यग्रता। २. उतावल। ३. भागादौड़। भगदड़। ४. रौला। उपद्रव। ५. घबराहट।

हड़बू—*(न०)* एक लोक देवता। *(वि०)* मूर्ख।

हड़मत—दे० हड़मान।

हड़मान—दे० हनुमान।

हड़वाय—*(ना०)* दक्षिण दिशा की वायु। लंकाऊ पवन।

हड़ावणो—*(क्रि०)* १. धमकाना। डाँटना। २. धक्का देना। ३. खिसकाना।

हड़ीलो—दे० हड़ेलो।

हड़ींदो—*(न०)* बच्चों का एक खेल।

हड़मान—दे० हनुमान।

हड़लणो—*(क्रि०)* धक्का मारना। धक्का मार कर दूर करना।

हड़ेलो—*(न०)* १. धक्का। टक्कर। २. कोहनी या हाथ से टक्कर देने की क्रिया या भाव। हड़ीलो।

हड्ड—*(न०)* हड्डी। हाड़। अस्थि।

हड्डी—दे० हाडकी।

हण—*(ना०)* हत्या। हनन।

हणणो—*(क्रि०)* १. मारना। हत्या करना। हनन करना। २. खोसना।

हणमंत—दे० हनुमान।

हणवंत—दे० हनुमान।

हणाव—*(न०)* हानि। नुकसान।

हणां—दे० हणैं।

हणुमान—दे० हनुमान।

हणू—*(न०)* हनुमान।

हणूफाळ—*(न०)* एक राजस्थानी छंद।

हणूमान—*(न०)* हनुमान।

हणैं—*(अव्य०)* १. अब। हैणां। २. अभी। हैणां। हमै। अबार।

हणैंताई—*(क्रि०वि०)* १. अभी तक। २. अब तक। अबार ताई।

हत—*(ना०)* हत्या। कत्ल। *(भू०कृ०)* १. मारा या वध किया हुआ। २. रहित। *(न०)* एक उपसर्ग, यथा हतप्रभ।

हतक—*(ना०)* १. बदनामी। बेइज्जती। २. तोहीन। अपमान।

हतकणो—*(क्रि०)* अप्रतिष्ठित करना। हतक करणो। माजनो पाड़णो।

हतकंडो—*(न०)* १. चालाकी। २. धूर्तता। ३. षड्यंत्र। हथकंडो।

हतणो—*(क्रि०)* हत्या करना। मारना।

हतप्रभ—*(वि०)* निस्तेज। कांतिहीन।

हत-बुद्धि—*(वि०)* १. जिसकी बुद्धि मारी गई हो। २. मूर्ख।

हतभागी—*(वि०)* हतभाग्य। भाग्यहीन। निरभागी। अभागियो।

हतवेळो—दे० हथवेळो।

हताश—(वि०) जिसकी आशा नष्ट हो गई हो। निराश। हतास।
हतास —दे० हताश।
हती—(भू०क्रि०) 'है' क्रिया के भूतकाल का स्त्रीलिंग रूप; थी।
हतो—(भू०क्रि०) 'है' क्रिया का भूतकालिक पुल्लिंग रूप; था।
हतोत्साह—(वि०) जिसका उत्साह नष्ट होगया हो।
हनो राम—(अव्य०) १. मृत्यु। २. मर गया।
हत्तो—(न०) डंडा। दस्ता। मूठ। हत्थो। हथ्थो।
हत्थ—(न०) हाथ।
हत्थळ—(न०) १ हिंसक पशु का पंजा। २. हथेली।
हत्था—(अव्य०) हाथों से।
हत्थो —दे० हत्तो।
हत्या—(ना०) १. वध। खून। कत्ल। २. हत्या का दोष।
हत्या करणी—(मुहा०) वध करना। कत्ल करना। खून करना।
हत्यारी—(वि०) हत्या करने वाली। हत्यारिणी। हत्यारण।
हत्यारो—(वि०) हत्या करने वाला। हत्यारा।
हत्या लागणी—(मुहा०) हत्या का पाप लगना।
हथ—(न०) हाथ। हाथ का संक्षिप्त रूप।
हथकड़ी—(ना०) अपराधी के हाथों को सामिल बाँधने के लिए दोनों कलाइयों में पहिनाई जाने वाली एक लोहे की साँकल।
हथ-करोत—(ना०) लकड़ियाँ चीरने की आरी। करवत। करपती।
हथकंडो —दे० हतकंडो।
हथणापुर—(न०) हस्तिनापुर। दिल्ली।
हथणी—(ना०) १. हाथी की मादा। हस्तिनी। २. दीवाल में बना हुआ एक ऐसा साधन, जिस पर कपड़े, वस्तुएँ आदि रखी जाती हैं या टाँगी जाती हैं। ३. घर की साळ के द्वार पर दीवाल के छोरों में बैठने या वस्तुएँ रखने की बनी जगह।
हथनाळ—(ना०) १. बंदूक। २. हाथी पर रख कर छोड़ी जाने वाली तोप।
हथपान—दे० हथफूल।
हथफूल—(न०) हथेली के पृष्ठ पर पहिना जाने वाला स्त्रियों का एक आभूषण। हथपान। हथसाँकळो।
हथमार—(वि०) १. लुटेरा। खोसने वाला। हाथ मारने वाला। २. चोर।
हथमारी—(न०) हथमार का काम। लूट। खसोट।
हथमूळ—(न०) काँस। कास।
हथळेवो—(न०) पाणिग्रहण। हस्तमिलाप। विवाह में वर द्वारा कन्या का हाथ पकड़ने की रसम।
हथळ्यो—दे० हथळेवो।
हथवा—दे० हथवार। दे० हथवाह।
हथवाण—दे० हथवार।
हथवार—(वि०) एक ही व्यक्ति के हाथ से दुहने की आदत वाली (गाय, भैंस)। हथवाळी। हथवाह।
हथवारू—दे० हथवार।
हथवाळ—दे० हथवार।
हथवाह—(न०) १. प्रहार। २. प्रहार की दूरी। ३ शस्त्र चलाने का हस्तकौशल।

४. दूर से प्रहार करने का [illegible] शक्ति। ५. मारामारी। [illegible]। हाथापाई। दे० हथवार।

हथवाहो—(ना०) १. [illegible]। २. [illegible]। ३. प्रहार। ४. [illegible]। ५. तलवार। दे० हथवाह।

हथवेळो—(न०) विवाह की एक मुख्य विधि। हस्तमिलाप। [illegible]। 'हथलेवो' का विशेष।

हथ-सांकळो—दे० हथांकळो।

हथहाळ—दे० हथवाळ।

हथा—(भू०कि०) 'हथो' का बहुवचन रूप।

हथाई—(ना०) १. [illegible] का काम। गप्पें मारने का काम। २. वह स्थान जहाँ हथाई की जाती है।

हथाळी—दे० हथेळी।

हथाळो—(वि०) १. दूर हाथों चलाने [illegible]। जिसके हाथों में अपार शक्ति हो। २. शस्त्र चलाने में प्रवीण। ३. वीर। बहादुर। ४. [illegible]।

हथांकळो—दे० हथवाळ।

हथियार—(न०) १. शस्त्र। आयुध। २. औजार। ३. साधन।

हथियार चलावणो—(मुहा०) १. प्रहार करना। २. हथियार से मारना।

हथियारबंध—(वि०) शस्त्रसज्ज। सशस्त्र।

हथियार-बंधी—(ना०) हथियार रखने की पाबंदी या रोक। हथियारबंदी।

हथी—(भू०कि०) 'हुं' [illegible] क्रिया का स्त्रीलिंग भूतकालिक रूप। थी। [illegible]

हथीको—दे० [illegible]

हथीनी—(ना०) [illegible]

हथेवो—[illegible] १. [illegible] २. [illegible] [illegible]

हथेरो—(कि०) १. [illegible] २. [illegible]

हथेळो—(ना०) कलाई के आगे का [illegible] [illegible]। हथाळी।

हथै—[illegible] १. [illegible] का एक [illegible] रूप। २. [illegible]

हथोटी—(ना०) १. हाथ का [illegible]। [illegible]। २. [illegible] की [illegible] विशेषता। ३. काम करने का ढंग। ४. हाथ के काम का [illegible] या अंदाज। ५. [illegible]। टेव।

हथोड़ो—(न०) बड़ा हथोड़ा।

हथौड़ो—(न०) लोहे का एक औजार। हथोड़ा।

हथ्थ—दे० हत्थ।

हथ्थड़—दे० हत्थड़।

हद—(ना०) १. सीमा। २. मेड़। ३. [illegible]। ४. पराकाष्ठा। ५. किनारा। ६. [illegible]।

हद करणी—(मुहा०) १. कमाल करना। २. आश्चर्य हो ऐसा करना। ३. अपना या दूसरा कोई काम उससे परे जो न हो सके। ४. नहीं किया जा सके या नहीं करना चाहिये, उसको करना।

हद तोड़णी—(मुहा०) मर्यादा का [illegible] करना। २. सीमा पार करना।

हद तोड़णी—(मुहा०) [illegible] विचारों को तोड़ना या [illegible] कार्य करना। २. [illegible]

हदनीरोहर—*(न०)* १. महासागर। २. सागरतट।

हद-पार—*(अव्य०)* १. नगर या राज्य की सीमा के बाहर। २. देश निकाला। ३. ज्यादा। असीम। अपार।

हद-फूटरी—*(ना०)* १. सुन्दरता की सीमा (नारी जाति या नारी जाति की वस्तु के लिये)। २. अत्यन्त सुंदरी। *(वि०)* अत्यन्त सुंदर।

हद-फूटरो—*(न०)* हद फूटरी का नर रूप।

हद-बारै—*(अव्य०)* १. सीमा के बाहर। सीमोल्लंघन। २. शक्ति के बाहर। दे० हदबाहर।

हद बाहर—(अव्य०) १. मर्यादा से आगे। सीमा के बाहर। शक्ति उपरान्त। २. हैसियत से आगे बढ़कर। हैसियत छोड़कर।

हद-बाट—दे० दहबाट।

हदीस—*(न०)* मुसलमानों का स्मृति ग्रंथ।

हन—*(अव्य०)* १. नहीं। २. नहीं तो। ३. नह का वर्ण विपर्यय।

हनन—*(न०)* वध करना। हत्या।

हनुमान—*(न०)* अंजनी के गर्भ से उत्पन्न पवन के पुत्र, राम के प्रसिद्ध भक्त और वीर वानर। सात चिरजीवित भक्तों मे से एक। शीघ्र प्रसन्न होकर मनवांछित फल देने वाले। नैवेद्य के साथ तेल और सिंदूर पूजा में इन्हें चढ़ाये जाते हैं।

हनोज—*(क्रि०वि०)* १. अभी। इसी समय। २. अभी तक। *(अव्य०)* कदाचित। संभव है। शायद। कदास।

हफतो—*(न०)* सप्ताह।

हफ्तेवार—*(वि०)* हर सप्ताह में एक बार किया जाने वाला। साप्ताहिक।

हब—*(अव्य०)* एकाएक। *(ना०)* अग्नि की ताप।

हब करतो—*(अव्य०)* १. एकाएक। हब देतांणी। २. अचानक।

हबड़क—*(ना०)* १. उलटी होने की आवाज। २. उलटी से पेट में लगने वाला धक्का।

हबधड़—*(ना०)* हलचल। हल्ला-गुल्ला। शोरगुल। हड़बड़।

हब देतांणी—दे० हब करतो।

हबशी—*(न०)* १. अफ्रीका निवासी। २. बहुत काला मजबूत व्यक्ति।

हबहब—*(अव्य०)* एक अनुकरण शब्द।

हबास—*(न०)* एक पुष्प।

हबीड़—*(ना०)* १. मार। २. धक्का। ३. हानि। नुकसान। ४. किसी भारी वस्तु का ऊपर से गिरने का शब्द। ५. दीवाल आदि किसी वस्तु को तोड़ने का शब्द। हबीड़ो।

हबीड़णो—*(क्रि०)* १. मारना। २. टक्कर देना। ३. नुकसान पहुँचाना।

हबीड़ो—दे० हबीड़।

हबोड़णो—दे० सबोड़णो।

हबोळणो—*(क्रि०)* १. धक्का मारना। २. गड़बड़ पैदा करना। ३. उलझन मे डालना।

हबोळो—*(न०)* १. पानी का धक्का। २. बड़ी लहर। ३. मन में उठने वाली तरंग। ४. उलझन। ५. गड़बड़।

हब्ब—*(न०)* १. मेघ। बादल। अभ्र। बादळो। २. आकाश। आभो।

हम—(सर्व०) 'मैं' का बहुवचन। हमाँ। अमाँ। (उप०) समान, साथ, साथ वाला या बराबर वाला के अर्थ मे प्रयुक्त। यथा—हम सेफर।
हमकरणो—(क्रि०) भय खाना। डरना।
हमक-धमक—(ना०) घूमधाम।
हमकलै—दे० हमकै।
हमकाळै—दे० हमकै।
हमकी—दे० हमकै।
हमकै—(अव्य०) १. इस बार। अबकै। हमकी। हमकलै। २. अगली बार। ३. जब कभी। ४. भविष्य में। ५. अब और।
हमगीर—(वि०) सहायक। (न०) साथी। मित्र।
हमगीरी—(ना०) १. अपनापना। अपनत्व। २. सहायता।
हमचड़ी—(न०) एक लोक नृत्य। घूमरड़ो।
हमजोळी—(वि०) १. साथ-साथ रहने, खेलने या काम करने वाला। साथी। २. समवयस्क।
हमणाँ—(क्रि०वि०) १. इसी समय। अभी। हमार। २. शीघ्र।
हमदर्द—(वि०) सहानुभूति बतलाने वाला।
हमदर्दी—(ना०) सहानुभूति।
हमरकै—(अव्य०) १. इस बार। अबकै। हमकै। २. अगली बार। आने वाले समय पर।
हमल—(ना०) १. सेना। (न०) २. गर्भ। ३. धक्का। टक्कर।
हमलावर—(वि०) हमला करने वाला। आक्रमणकारी।
हमलो—(न०) चढ़ाई। आक्रमण। हमला।
हमस—(ना०) १. भीड़ की अधिकता। २. भीड का शोरगुल। ३. समूह ४. आक्रमण। ५. घोडों की भीडभाड़ औ हिनहिनाहट आदि। सेना। हसम।
हमाम—(न०) १. गरम पानी से स्नान करने का बंद कमरा। हम्माम। २ स्नानागार।
हमामदस्तो—(न०) लोहे या पीतल का खलबट्टा। इमामदस्ता।
हमार—(क्रि०वि०) १. इस समय। अभी। अबार। २. तुरत। शीघ्र। वेगो।
हमारू—दे० हमार।
हमाल—(न०) १. बाजार में मजदूरी करने वाला मजदूर। बाजार का मजदूर। २. बोझा ढोने वाला मजदूर। हमाली।
हमाली—(ना०) १. हमाल का काम। मजदूरी। २. हमाली का पारिश्रमिक मजूरी। (न०) मजदूर। हमाल।
हमाली काम—(न०) १. हमाल का काम। २. मजदूरी। परिश्रम। ३. सख्त परिश्रम।
हमाव—(न०) एक बड़ा पक्षी।
हमाहमी—(ना०) १. आपस की जिद। २ अहमन्यता।
हमाँ—(सर्व०) १. 'मैं' का बहुवचन। २. 'हम' का बहुवचन रूप। प्राय: बडों द्वारा इसका प्रयोग एक वचन मे भी किया जाता है। ३. हम लोग। हम।
हमाँ-गाळै—(अव्य०) १. हमारे पास में। २. हमारे पास।
हमाँ-टाळ—दे० हमाँ टाळू।
हमाँ-टाळू—(अव्य०) हमारे सिवाय। हमारे बिना। हमाँ वगर।

हमां-तीरे—*(अव्य०)* १. हमारे पास । २. हमारे यहां ।
हमांनै—*(सर्व०)* हमको ।
हमां-पूरतो—*(अव्य०)* १. हमारी जरूरत का । हमारे चाहिये जितना । २. हम तक ।
हमांरै—*(सर्व०)* हमारे ।
हमां-वळू—*(अव्य०)* हमारे पक्ष में ।
हमीणी—*(सर्व०)* हमारी । अणीरी । म्हांरी ।
हमीणो—*(सर्व०)* हमारा । अमीणो । म्हांरो ।
हमीर—*(न०)* रणथंभोर का एक प्रसिद्ध प्रणवीर राजा । *(ना०)* एक राग । *(वि०)* वीर । बहादुर ।
हमीर नाम माळा—*(ना०)* हमीरदान रतनू द्वारा रचा हुआ राजस्थानी का पर्यायवाची शब्दकोश ।
हमीरल - *(न०)* हमीर का काव्यनाम ।
हमीर हठ — दे० हम्मीर हठ ।
हमें—*(सर्व०ब०व०)* हम लोग । हमां ।
हमेल—*(न०)* एक आभूषण । दे० हमेळ ।
हमेळ—*(ना०)* १. जुए के सधोल के पास के सुराख में लगी हुई लकड़ी की कील या खूंटी । २. एक कंठाभूषण । ३. कलदार रुपयों के नाके लगवाकर बनवाया हुआ गले का हार ।
हमेश—*(अव्य०)* १. नित्य । सदा । सर्वदा । २. लगातार । निरंतर । हमेसां ।
हमेसां—*(अव्य०)* १. नित्य । रोज । २. लगातार । निरंतर । हमेश ।
हमैं—*(अव्य०)* १. अभी । इसी समय । हमार । २. अब । इस समय । अबार ।
हम्मीर हठ—*(ना०)* १. रणथंभोर के पराक्रमी हम्मीर की प्रतिज्ञा जो लोकोक्तियों के रूप में प्रसिद्ध है । २. कवि चंद्रशेखर का हम्मीर और अलाउद्दीन के युद्ध वर्णन का एक ग्रन्थ ।
हम्मीरायण—*(न०)* मांडो व्यास कृत हम्मीर और अलाउद्दीन के युद्ध वर्णन का एक ग्रंथ । इसी नाम का दूसरा ग्रंथ खेम कवि का भी है ।
हय—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।
हयग्रीव—*(न०)* १. विष्णु का एक अवतार । २. एक दैत्य । ३. एक राजर्षि । ४. अथर्वण वेद का एक उपनिषद् ।
हयग्रीवा—*(ना०)* दुर्गा ।
हय-दळ—*(न०)* अश्वसेना । घुड़सेना । हैदळ ।
हयनाळ—*(ना०)* १. घोड़े की पीठ पर कसी जाने वाली एक बंदूक । २. घोड़े के खुर में लगाई जाने वाली नाल ।
हयराज—*(न०)* १. श्रेष्ठ घोड़ा । हयांराज । २. उच्चैश्रवा ।
हयवै—*(न०)* १. अश्वपति । २. राजा । हैवै ।
हया—*(ना०)* शर्म । लज्जा । लाज ।
हयाण—*(न०ब०व०)* १. घोड़े । अश्वसमूह । *(न०)* घोड़ा ।
हयात—*(ना०)* जीवन । जिंदगी । *(वि०)* जीवित । मौजूद ।
हयाती—*(ना०)* १. विद्यमानता । २. अस्तित्व । ३. जीवितावस्था ।
हया-दया—*(ना०)* १. लाज और शर्म । २. लज्जा और दया ।
हयाणण—दे० हयानन ।

हयानन—*(न०)* १. विष्णु भगवान का हयानन अवतार। हयग्रीवावतार। २. हयग्रीव नाम का दैत्य।

हयांराज—*(न०)* १. श्रेष्ठ घोडा। हयराज। २. उच्चैश्रवा।

हयी—*(ना०)* घोड़ी। अश्वी।

हर—*(ना०)* १. हठ। जिद। २. इच्छा। उत्कंठा। ३. अकड़ाई। ४. प्रीति। ५. आकर्षण। खिचाव। *(न०)* १. पौत्र। पोतो। २. घोडा। ३. महादेव। शंकर। *(वि०)* हरेक। प्रत्येक।

हरउत—*(न०)* गणेश। गजानन।

हरग्रेक—दे० हरेक।

हरकत—*(ना०)* १. चेष्टा। २. हिलना-डुलना। ३. हानि। नुकसान। ४. अड़चन। आपत्ति। बाधा। वांधो। ५. तकलीफ। कष्ट। ६. शरारत। ७. चालाकी। चालबाजी। ८. बेईमानी।

हरकती—*(वि०)* १. हरकत करने वाला। २. शरारती

हर-कदै-ही—*(अव्य०)* जब कभी भी। किसी भी दिन।

हरकरणो—*(मुहा०)* १. इच्छा करना। उत्कंठित होना। २. हठ करना। ३. याद आना।

हर-करां-ही—दे० हर-करै-ही।

हर-करैही—*(अव्य०)* हर किसी समय। (दिन हो या रात)।

हरकोई—*(वि०)* चाहे जो। कोई एक। हरेक। प्रत्येक व्यक्ति।

हरख—*(न०)* १. हर्ष। खुशी। प्रसन्नता। २. उत्सव। उच्छव।

हरख ओछाह—*(न०)* १. उत्सव। २. हर्ष और उत्सव। हर्षोत्सव।

हरख-कोड—*(न०)* १ हर्ष और उत्साह। हर्षोत्साह। २. खुशियाँ। ३. उत्सव।

हरख गहलो—दे० हरख गेलो।

हरखगेलो—*(वि०)* अतिशय हर्ष से पागल बना हुआ। हर्षोन्मादित।

हरखणो—*(क्रि०)* हर्षित होना। प्रसन्न होना।

हरखभाए—*(वि०)* हर्षित। खुशी।

हरख वधामणा—*(न०ब०व०)* स्वागतोत्सव।

हरखवंत—*(न०)* हर्षित। खुशी। हरखमाण। हरखवान।

हरखवान—दे० हरखवंत।

हरखाणो—*(क्रि०)* १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरखायत—*(न०)* प्रसन्न। खुश। हरखायतो।

हरखायतो—दे० हरखायत।

हरखायमान—*(न०)* प्रसन्न। खुश। हरखमाण।

हरखाळू—*(वि०)* प्रसन्नचित्त।

हरखाव—*(न०)* हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। हरख।

हरखावणो—दे० हरखाणो।

हर खास व आम—*(पद०)* प्रत्येक मुख्य तथा सर्वसाधारण। (व्यक्ति)।

हरखित—दे० हर्षित।

हरखीजणो—*(क्रि०)* हर्षित होना। राजी होणो। हरखाणो।

हरखीलो—*(वि०)* १. हर्षवत। २. उत्साही। ३. हर्ष उमग वाला। ४. विवाहोत्सक। कोडीलो। ५ रंगीलो।

हरखे-हरखे—(पद) प्रसन्न होकर। राजी-राजी।

हरगत—दे० हरकत।
हरगिज—(ग्रव्य०) १. कभी। कदापि। किसी हालत में। २. बिलकुल।
हरगिरि—(न०) कैलाश पर्वत।
हरगौरी—(न०) १. शिव और पार्वती की संयुक्त मूर्ति तथा चित्र। २. शिव-पार्वती।
हर-घड़ी—(ग्रव्य०) प्रत्येक घड़ी। घड़ी-घड़ी में। बार-बार।
हर चनण—दे० हरि चदन।
हरचंद-वारो—(न०) १. सत्यवादी हरिश्चन्द्र का समय। २. सत्याचरण।
हरज—(न०) १. नुकसान। हानि। हर्ज। २. अड़चन। बाधा। ३. कमी। हरजो।
हरजत—दे० हरकत।
हर-जरां-ही—दे० हर-जरैं-ही।
हर-जरैं-ही—(ग्रव्य०) चाहे जब। हर जिस समय। जब कभी।
हरजस—(न०) १. हरि का यश। २. हरि के यश का पद, भजन या गायन।
हरजाणो—दे० हरजानो।
हरजानो—(न०) १. नुकसान। हानि। २. क्षतिपूर्ति। ३. दंड। जुर्माना।
हरजी—(न०) १. श्रीकृष्ण। २. महादेव। ३. परमेश्वर। ४. रामदेवजी का एक भक्त (हरजी भाटी)।
हरजी-रो-ब्यावलो—(न०) महादेव-पार्वती के विवाह का एक ग्रंथ।
हरजो—दे० हरज।
हरझेलू—दे० हरझेलो।
हरझेलो—(वि०) हठ पकड़ने वाला। हठीलो।
हरड़ियो—(न०) गले का एक आभूषण।
हरड़ी—(ना०) छोटी हर्रे। हीमज।
हरड़े—(ना०) हर्रे। हरीतकी। हीमज।
हरण—(न०) दे० १. हिरण। २. दूरीकरण। दूर करना। ३. हरण करने की क्रिया। ले भागने का काम।
हरणकी—(ना०) हरिणी। हिरण की मादा। मृगी। मिरगली।
हरणफाळ—(न०) १. एक डिंगळ छंद। हरणफाळ। २. हरिण की छलांग।
हरणाख—(न०) हिरण्याक्ष दैत्य।
हरणाखी (ना०) हरिणाक्षी। मृगनयनी। मिरगानैणी। डाबरनैणी।
हरणार—(वि०) हरण करने वाला। भगा कर ले जाने वाला।
हरणारी—(वि०) हरण करने वाली।
हरणाह—(न०ब०व०) हरिण-समूह।
हरणियो—(न०) हिरन। (वि०) १. हरण करने वाला। २ लूटपाट करने वाला।
हरणी- (ना०) हिरणी। (न०) मृग नक्षत्र।
हरणो—(क्रि०) हरण करना। छीनना। २. ले भागना। हरण करना। (वि०) हरण करने वाला।
हरणो-फिरणो—(क्रि०) चलना-फिरना।
हर तरह—(ग्रव्य०) सभी प्रकार।
हरताळ—(ना०) पीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ। गोदंत।
हरतो-फरतो—दे० हिरतो-फिरतो।
हरथान—(न०) १. कैलाश। २. महादेव मंदिर। शिवालय। सिवाळो।
हरद—(ना०) हलदी। हळदर।
हरदम—(ग्रव्य०) हर समय। प्रत्येक समय।

हरदोखो—*(न०)* कामदेव ।
हरद्वार—*(न०)* गंगा के तट पर स्थित हिन्दुओं का पवित्र तीर्थस्थान ।
हरधाम—*(न०)* शिवलोक । कैलाश । कैलाशपुरी । कैलाश पर्वत ।
हरनंद—*(न०)* गणेश । विनायक ।
हरनाट—*(न०)* शिव नृत्य ।
हर-निवास—*(न०)* कैलाश । हरधाम ।
हर-प्रिय—*(न०)* १. बिल्व पत्र । २. शिव-भक्त । ३. धतूरा ।
हरप्रिया—*(ना०)* १. पार्वती । २. दुर्गा । ३. भंग । भांग ।
हरफ—*(न०)* १. शब्द । २. अक्षर । हर्फ । ३. वचन । बोल ।
हरफन—*(न०)* हर एक कार्य ।
हरफन-मौला—*(वि०)* १. हर एक फन जानने वाला । २. उस्ताद ।
हरफर—*(ना०)* बार बार आना जाना ।
हरबात—*(अव्य०)* १. सभी तरह से । २. प्रत्येक बात में ।
हर बार—*(अव्य०)* १. प्रत्येक समय । प्रत्येक अवसर पर । हर मौके । २. जब कभी ।
हरभजन—*(न०)* १. हरि या ईश्वर का भजन । २. पूजा या भक्ति ।
हर भोग—*(न०)* १. विजया । भंग । २. निर्माल्य । ३. शिवजी का प्रसाद ।
हरम—*(न०)* १. महल । हर्म्य । २. रनिवास । *(ना०)* १. दासी । २. रखैल स्त्री ।
हरमसरा—*(न०)* जनानखाना । रनिवास ।
हरमाळ—दे० हरहार ।
हरयेक—दे० हरेक ।
हर-रोज—दे० हरहमेशा । हरहमेश ।
हर-लोक—*(न०)* शिवलोक । कैलाश ।
हर-वक्त—*(अव्य०)* प्रत्येक समय ।
हरवल—*(क्रि०वि०)* १. मिल-जुल करके । एक दूसरे को सहारा देकर के । सहयोग से । २ आगे होकर के । ३. साथ-साथ । ४. मेल-मिलाप । *(ना०)* सेना का अगला भाग । हरावळ । हरोळ । २. मददगार । सहायक । *(अव्य०)* आगे । पहले । प्रथम ।
हर-वाम—*(ना०)* १. गंगानदी । २. पार्वती ।
हर वाहण—*(न०)* १. वृषभ । नंदी । नांदियो । धोटियो । २. बैल । बळद ।
हरस—*(न०)* १. अर्श । मसो । २. हर्ष । खुशी । हरख । दे० हर्ष ।
हरस-जीण—*(न०)* हरस भाई और जीण दोनो लोक-देवता की भांति पूजे जाते हैं । ये चूरू (राजस्थान) जिले के घांघू गांव के चौहान राजपूत थे । इनके स्थान हर्षगिरि के निकट बने हुए हैं ।
हरसणो—*(क्रि०)* हर्षित होना । प्रसन्न होना । हरखणो ।
हरसाणो—*(क्रि०)* १. हर्षित करना । प्रसन्न करना । २. हर्षित होना । हरखाणो ।
हरसाल—*(न०)* प्रत्येक वर्ष । प्रति वर्ष ।
हरसाळू—*(वि०)* हर्षवंत । हरखाळू ।
हर-सिद्ध—*(ना०)* १. एक देवी । २. एक, तीर्थ स्थान । ३. सौराष्ट्र का एक पर्वत जिस पर हरसिद्ध माता का मंदिर है ।
हरसिरा—*(ना०)* गंगा नदी । हरसेखरा ।
हरसुत—*(न०)* १. गणेश । २. स्वामी कार्तिकेय ।

हरसुवन—*(न०)* गणेश । गजानन ।
हरसेखरा—*दे०* हरसिरा ।
हरहमेस—*(अव्य०)* नित्यप्रति । प्रतिदिन । सदैव ।
हर हर महादेव—(पद०) १. उत्साहवर्धक एक मगल उद्गार । २. रणहाक । युद्धोद्गार ।
हरहार—*(न०)* १. शिवजी के गले का हार । २. साँप । सर्प ।
हरा—*(ना०)* पार्वती । उमा ।
हराज—*(न०)* नीलाम ।
हराजो—*दे०* हरजो ।
हराणो—*(क्रि०)* १. हराना । परास्त करना । पछाड़णो । २. थकाना । ३. शत्रु को विफल मनोरथ करना । ४. कामयाब नहीं होने देना ।
हराम—*(वि०)* १. वर्जित । २. दूषित । *(न०)* १. अधर्म । पाप । २. व्यभिचार । ३. इस्लाम के मतानुसार वर्जित ।
हरामखाऊ—*दे०* हरामखोर ।
हरामखोर—*(वि०)* १. हराम का खाने वाला । मुफ्त खाने वाला । २. पैसे लेकर भी काम नहीं करने वाला । हराम की कमाई खाने वाला । हरामखाऊ । ३. कामचोर । ४. नमकहराम । ५. कृतघ्न । ६. चोर । ७. रिश्वतखोरी, चोरी, जुआ आदि कामो से पैसा कमाने वाला ।
हरामखोरी—*(ना०)* १. हरामखोर बने रहने की क्रिया या भाव । २. कृतघ्नता । ३. नमकहरामी ।
हरामजादगी—*दे०* दोगलापना ।
हरामजादी—*(ना०)* १. दोगली स्त्री । २. व्यभिचारिणी स्त्री । ३. दुष्टा । ४. वर्णसंकर । ५. पापिनी ।
हरामजादो—*(वि०)* १. हराम से उत्पन्न । २. व्यभिचार से उत्पन्न । ३. वर्णसंकर । ४. बड़ा पापी । ५. दुष्ट ।
हरामणी-रो—*(वि०)* १. हराम से उत्पन्न । २. हरामी । *(न०)* एक गाली ।
हरामी—*(वि०)* १. दुष्ट । पाजी । २. व्यभिचार से उत्पन्न । दोगला । हरामजादो ।
हरारत—*(ना०)* १. ज्वर । ताप । बुखार । ताव । २. हलका बुखार । जुर । ३. गरमी ।
हरावणो—*दे०* हराणो ।
हरावळ—*(ना०)* १. व्यूह रचना का अग्रवर्ती भाग । २. सेना का आगे रहने वाला भाग । हरवळ । हरोळ ।
हरावो—*(न०)* प्रति वर्षा, प्रति ठंड या और किन्हीं कारणों से फसल में होने वाली हानि । किसी क्षति के कारण अनुमान से कृषि की उपज मे कमी होने का भाव । २. हानि । नुकसान । घाटो । खोट । हराहो ।
हराहो—*दे०* हरावो ।
हरि—*(न०)* १. श्री कृष्ण । २. भगवान । ३. कपि । बांदरो । ४. सिंह । ५. घोड़ा । केकाण । ५. अरविंद । कमल । ७. अलि । अलियद । भमरो । ८. हाथी । ९. हरिण । १०. वन । ११. आकाश । १२. सोना । १३. चंद्रमा । १४. अग्नि । १५. पानी । १६. दूध । १७. पवन । १८. नाग । १९. राजा । २०. पर्वत । २१. मेढक । डेडरियो । २२. मोर । २३. तोता । सुवटो । २४. विष्णु । २५. एक ऋषि ।

हरि ॐ—(पद०) १. हरि का एक नाम। २. वेद मंत्रोच्चारण के पूर्व बोला जाने वाला पद।

हरि ॐ तत्सत—(पद०) हरि ओम् ही तात्विक रूप से सत्य है।

हरिकथा—(ना०) भगवान के अवतारो के चरित्रो का वर्णन।

हरि-कीर्तन—(न०) १. भगवान के अवतारो के गुणो का गान। २. भगवद् भजन, स्तुति आदि।

हरिकेतन—(न०) १. अर्जुन। २. कपिध्वज।

हरिकेश—(न०) शिव।

हरिगुण—(न०) १. हरिमहिमा। २. हरि के नाम की महिमा। ३. हरि चरित्र। ४. हरि के भजन (पद) तथा काव्य। ५. हरि के उपकार।

हरिचद—दे० हरिश्चंद्र।

हरिचंदन—(न०) १. पीला चदन। २. केसर। ३. चादनी।

हरिजन—(न०) १. भगवान का भक्त। २. अस्पृश्य। अत्यज।

हरिण—(न०) मृग। हिरण।

हरिणाखी—(ना०) मृगनयनी। मिरगानैणी।

हरिणी—(ना०) हरिन की मादा। मृगी।

हरित—(वि०) १. हरा। लीलो। २. हरियाली युक्त। ३. हराभरा।

हरिद्वार—दे० हरद्वार।

हरिद्वारो—(न०) १. देवमंदिर। मंदिर। २. हरिद्वार।

हरिधाम—(न०) १. वैकुंठ। २. स्वर्ग। हरिनिवास।

हरि नाम वत्तीसी—(ना०) हरिभक्त पं० मगनीराम साकरिया की एक रचना। (जिसमे हरि के बत्तीस नामों तथा गुणों का बत्तीस दोहों में वर्णन किया है।)

हरि-निवास—दे० हरिधाम।

हरि-पदी—(ना०) गगा। हरसिरा।

हरि-प्रिया—(ना०) १. लक्ष्मी। रमा। २. तुलसी। ३. पृथ्वी। ४. लाल चंदन।

हरि-भक्त—(न०) १. हरि का भक्त। २. सत।

हरि-भक्ति—(ना०) हरि की भक्ति।

हरि-मंथक—(न०) एक द्विदल धान्य। चना। चणो।

हरियल—(वि०) हरा। लीलो।

हरिया—(न०व०व०) एक द्विदल धान्य। मूंग।

हरियान—(न०) गरुड़।

हरियाळी—(वि०) १. प्रफुल्लित। आनंदित। २. प्रसन्नवदन। ३. हरीभरी। ४. हरित। (ना०) १. पेड़-पौधों और घास का विस्तार। २. युवती। ३. दूब वाली जमीन। ४. आनंद और प्रसन्नता का वातावरण।

हरियाळी-अमावस—(ना०) श्रावण कृष्णा अमावस्या।

हरियाळी-तीज—(ना०) १. भादों सुदी तीज। २. भादों सुदी तीज का त्योहार या व्रत। हरितालिका तीज।

हरियाळी-वनड़ी—(ना०) १. अतिप्रसन्न दुलहिन। २. विवाह का एक गीत। हरियाळी वनी।

हरियाळी वनी—दे० हरियाळी व०।

हरियाळो—(वि०) १. हरा। लीलो। २. प्रफुल्ल। प्रफुल्लित। आनंदित। प्रसन्न। ३. उत्साहवाला। ४. बना-ठना। सजा हुआ। ५. प्रफुल्लवदन। प्रसन्नमुख। ५. हराभरा।

हरियाळो बनड़ो—(न०) १. खूब प्रफुल्लित दूल्हा। अतिप्रसन्न वर राजा। २. विवाह का एक लोकगीत। हरियाळो बनो।

हरियाळो बनो—दे० हरियाळो बनड़ो।

हरियो—(वि०) १. हरे रंग का। सब्ज। २. नीला। लीलो। (न०) १. घास। चारो। २. हरियाली।

हरियो-भरियो—(वि०) १. हरियाली से आच्छादित। हराभरा। २. सुखी, समृद्ध और प्रफुल्लित। ३. समृद्ध, सुखी और बड़े कुटुंब वाला।

हरिरस—(न०) १. भक्त कवि ईसरदास बारहठ के रचे हुए अनेक भक्ति रस के डिंगळ ग्रन्थों में का अति प्रसिद्ध भक्ति ग्रन्थ। २. हरि की भक्ति। ३. हरि भक्ति का आनंद।

हरि-लीला—(ना०) १. हरि की लीला। २. ईश्वर के अवतारों का मानवोचित आचरण आदि।

हरि-लोक—(न०) वैकुंठ। हरिधाम।

हरि वल्लभा—(ना०) १. लक्ष्मी। रमा। हरिवाम। २. तुलसी। ३. पृथ्वी।

हरि वाम- (ना०) लक्ष्मी। रमा।

हरि-वासर—(न०) १. एकादशी। २. एकादशी का दिन।

हरि-वाह—(न०) गरुड़। हरिवाहण।

हरि-वाहण—दे० हरिवाह।

हरिश्चंद्र—(न०) सूर्यवंशीय एक प्रसिद्ध सत्यवादी राजा।

हरिहर—(न०) १. विष्णु और शिव। २. विष्णु और शिव की संयुक्त मूर्ति तथा चित्र। ३. एक नमस्कार पद।

हरि-हंस—(न०) १. सूर्य। हरिहंसळ। २. बालसूर्य।

हरि-हंसळ—(न०) सूर्य। हरिहंस। सूरज।

हरी—(ना०) १. ताजी घास। घास। २. हरियाली। (न०) १. यमराज। २. श्री हरि। (वि०) हरे रंग की।

हरीकेन—(न०) लालटेन। फानस।

हरीत—(न०) १. हरितवर्ण। २. हारीत ऋषि।

हरीतकी—(ना०) हरें। अभया। अमृता। हरड़े।

हरी-पुरुषजी-री-वाणी—(ना०) निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री हरि-पुरुषजी द्वारा रचित भजन और वाणी संग्रह का ग्रंथ।

हरीफ—(न०) १. प्रतिस्पर्धी। २. स्पर्धक। ३. विरोधी। दुश्मन।

हरी-बुरी—(ना०) १. स्तुति और निंदा। २. चर्चा।

हरि-भरी—(ना०) १. समृद्ध। ऐश्वर्यशाली। २. बड़ा कुटुम्ब। ३. पक्षपात रहित। (अव्य०) १. हाँ-ना। २. 'हाँ' में न 'ना' में।

हरीलो—दे० हठीलो।

हरूबरू—दे० हरूभरू। दे० अरूबरू।

हरूभरू—दे० अरूबरू।

हरे—(अव्य०) हरि का संबोधन रूप।

हरेक—(वि०) प्रत्येक। हर एक।

हरे कृष्ण—(पद०) १. हरि का एक नाम। २. हे कृष्ण।

हरे राम—(पद०) १. हे राम। २. हरि का एक नाम।

हरेल—(ना०) एक पक्षी ।

हरो—(न०) १. पौत्र । पोता । पोतरो । २. वंशज । वंशधर । ३. औलाद । संतान । ४. घास । चारा । खड़ । ५. हरियाली । ६. हरा रंग । (वि०) १. हरे रंग का । सब्ज । नीला । लीलो । २. प्रसन्न । प्रफुल्ल ।

हरो-भरो—दे० हरियो भरियो ।

हरोळ—(न०) १. सेना का अगला भाग । हरावळ । २. पंक्ति ।

हरोली—(अव्य०) १. आगे होकर । २. हरावल में । हरावळ । हरोळ ।

हरयो—दे० हरो ।

हरयो-भरयो—दे० हरियो भरियो ।

हर्यो-भर्यो—दे० हरियो भरियो ।

हर्ज—दे० हरज ।

हर्ता—(वि०) १. हरण, दूर या नष्ट करने वाला । २. एक प्रत्यय ।

हर्ष—(न०) १. प्रसन्न । खुशी । हरख । २. एक चक्रवर्ती राजा । हर्षवर्धन । ३. हर्षगिरि । ४. हर्षगिरि के पास की प्राचीन खंडर नगरी । हरस ।

हर्षगिरि—(न०) शेखावाटी का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक पर्वत ।

हर्षदेव—(न०) शेखावाटी के हर्षगिरि पर्वत के भगवान शंकर का नाम तथा उनका पुरातन शिवालय ।

हर्षनाथ—दे० हर्षदेव ।

हर्षाश्रु—(न०) हर्ष के आंसू ।

हर्षित—(वि०) १. प्रसन्न । २. [illegible]

हल—(अव्य०) शीघ्रता से । [illegible] निराकरण । समाधान । २. [illegible]

हळ—(न०) जमीन [illegible] उपकरण । हल ।

हलक—(न०) १. एक पुष्प । २. आनंद । मजा । ३. शोभा । ४. कंठ । गळो । ५. पल । क्षण । पळ ।

हळकट—(वि०) १. नीच । हलका । हळको । २. रद्दी । निम्न कोटि का ।

हलकणो—(क्रि०) हिलना । हिलकणो । (वि०) हिलने वाला ।

हळकाई—(ना०) १. बदनामी । २. अप्रतिष्ठा । ३. तोल में हलकापन । ४. नीचता । ओछापणो ।

हलकाणो—(क्रि०) हिलाना । हिलकाणो । हलकावणो ।

हळकापण—(न०) नीचता । हलकापन । हळकाई । (वि०) १. कम वजन का । २. लघुता । ३. गुण में कम । निम्नावट वाला ।

हळकापणो—दे० हळकापण ।

हलकार—(न०) १. समूह का प्रस्थान । २. समूह के प्रस्थान या गति का कोलाहल । ३. [illegible] । (ना०) ४. प्रोत्साहन । ५. हूंक । ६. आवाज । पुकार । ७. [illegible] । ८. आक्रमण ।

[illegible]—(क्रि०) १. प्रोत्साहन देना । २. [illegible] । ३. आवाज देना । ४. [illegible] । ५. [illegible]

[illegible]—(न०) १. [illegible] । [illegible]

[illegible]—दे० [illegible]

[illegible]—(न०) [illegible] । ३. [illegible]

[illegible]—दे० [illegible]

[illegible]—(क्रि० [illegible]

की। ३. नीच (स्त्री)। ४. उच्छृंखल। ५. जो गरिष्ट न हो। *(ना०)* १. बद-नामी। २. निंदा। अप्रतिष्ठा। ३. तुच्छ। श्रोछी। ४. अप्रचलित। ५. अशुभ। ६. कम परिश्रम का।

हळकी लागणी—*(मुहा०)* बदनामी होना।

हळको—*(वि०)* १. कम भार वाला। २. मान, मूल्य या शक्ति इत्यादि में अपेक्षा-कृत सामान्य से कम या घट कर। ३. खाली। ४. नीच। तुच्छ। श्रोछो (स्वभाव)। ५. घटिया (माल)। ६. सुगम (काम)। ७. जल्दी पकने वाला (भोजन)। ८. अशुभ। ९. थोड़ा। अल्प। १०. जो गरिष्ठ न हो। ११. फीके रंग का। १२. जो गुण और स्वाद में उतरता हो। *(न०)* एक शस्त्र। भळको।

हलको—*(न०)* १. स्वल्प धक्का। हिलको। २. थोड़ा हिलना या हिलाना। ३. शासन इत्यादि की दृष्टि से निर्धारित भूभाग या सीमित प्रदेश। हलका। इलाका। अलाको। ४. प्रभाव क्षेत्र। ५. घोड़े का जड़ाऊ साज। ६. अमुक परिमाण में सजे हुए हाथियों या घोड़ों का समूह।

हळको फूल—*(वि०)* फूल के समान हलका। वजन में बहुत कम।

हळको-भारी—*(न०)* १. हलका और भारी। २. निम्न श्रेणी का और बढ़िया। उतरता हुआ और ऊंचे दर्जे का।

हळ-खड़ियो—*(न०)* १. पारिश्रमिक लेकर के किसी के खेत को खड़ने वाला। २. कृषक। किसान। करसणो।

हलचल—*(ना०)* १. घबराहट। २. हिलना-डोलना। ३. भय।

हलचलो—*(न०)* १. हलचल। २ भय। ३. भय का वातावरण। ४. घबराहट।

हलण-चलण—*(न०)* १. अधिकार। शासन। सारो। २. हिलना और चलना। ३. हिलने चलने की क्रिया। ४. आज्ञा का पालन। ५. देख-रेख। ६. सेना की होलचाल। ७. गुप्तचरी का कार्य।

हलणी-चलणी—दे० हाली-चाली।

हळणो—*(क्रि०)* १. मन लगना। २. अभ्यस्त होना। हिळणो।

हलणो—*(क्रि०)* १. चलना। हालणो। २. हिलना। हिलणो।

हळद—*(ना०)* हलदी। हळदर।

हळदर—*(ना०)* हल्दी। हरिद्रा।

हळदी—*(ना०)* हल्दी। हळदर।

हळदी-घाटी—*(ना०)* मेवाड़ का वह इति-हास-प्रसिद्ध पहाड़ी स्थान जहां महाराणा प्रताप और अकबर की सेना में घोर संग्राम हुआ था। हल्दीघाटी।

हलदेश्वर—*(न०)* सिवाना (मारवाड़) के 'छप्पन रा पहाड़' का एक दुर्गम पर्वत-शिखर जहां जोधपुर के राव मालदेव और उनके बाद राठौड़ वीर दुर्गादास के संरक्षण में जोधपुर के बालक महा-राजा अजीतसिंह बिखे में (संकटकाल में) रहे थे। जहां अनाज के कोठार, परकोटा और 'गुढे री नाळ' में घुड़-शालाओं आदि के खंडहर स्थित हैं। २. उक्त पहाड़ में स्थित हलदेश्वर महादेव और उनका मंदिर। ३. मारवाड़ के छप्पन के पहाड़ों का एक अन्य नाम।

हलदेश्वर महादेव—*(न०)* हलदेश्वर पहाड़ के महादेव तथा उनका ऐतिहासिक

मंदिर। (मारवाड़ के छप्पन के पहाड़ों के एक शिखर स्थित)।

हलदेसर—दे० हलदेश्वर।

हळधर—(न०) १. हल को शस्त्र के रूप मे धारण करने वाले श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम। बलिभद्र। २. बैल। बळद। ३. कृषक।

हलपती—(अव्य०) प्रति हल के हिसाब से। (न०) १. हलवाला। कृषक। २. हलधर। बलराम।

हलफ—(न०) शपथ। सौंगध।

हलफनामो—(न०) शपथपत्र। एफेडेविट।

हळफळ—(ना०) १. घबराट। २. सभ्रम। ३. हड़बड़ी।

हळफळणो—(क्रि०) १. घबराना। हड़-बड़ाना। २. भ्रमित होना।

हळफळाट—(ना०) १. घबराहट। २. हड़बड़ी। ३. जी ऊबना। ४. चौकना। ५. त्वरा।

हळफळीजणो—(क्रि०) घबराना। हळ-फळणो।

हलफिया—(अव्य०) १. ईश्वर को साक्षी रख कर। २. सौगंध खाकर। शपथ से। (वि०) हलफपूर्वक कहा हुआ या किया हुआ। हलफी।

हलफिया बयान—(न०) सौगंधपूर्वक दिया गया बयान।

हळवळ—(ना०) १. शोरगुल। हा-हू। २. भागदौड़। हड़बड़ी। भगदड़। ३. धामधूम। ४. किसी काम की जरूरत से ज्यादा हलचल। हळवळाट।

हळवळणो—(क्रि०) घबराना। खलबली मचना।

हळवळाट—दे० हळवळ।

हळवळो—(न०) शोरगुल। कोलाहल। हा हू।

हळभळ—(ना०) १. खलबली। २. तैयार होने मे सलग्न। ३. घबराहट। हळ-फळाट। ४. झूठी प्रशसा। चापलूसी। खुशामद।

हलमि—(न०) इन्द्र।

हलर-फलर—(क्रि० वि०) जल्दी-जल्दी। (न०) जल्दी-जल्दी हिलना-डुलना या नाचने की क्रिया या भाव।

हळवट—(न०) १. कृषि। खेती। २. कृषि कार्य। ३. हल चलाने का काम।

हळवद—(न०) १. सौराष्ट्र का एक ऐति-हासिक नगर। २. सौराष्ट्र का एक जिला।

हळवहण—(न०) १. बैल। २. खेत। खेतर।

हळवा—(ना०) १. उतनी भूमि जो एक बैल जोड़ी से खेडी जाय। २. उतनी वर्षा का होना, जिससे हल चलाकर बोवाई की जा सके। ३. हल जोतने व चलाने का काम। ग्ळवाह।

हलवाई—(न०) मिठाई बनाने तथा बेचने वाला। कंदोई। कनोई।

हळवाणी—(ना०) १. हल में लोहे का नीचे का वह प्रमुख भाग, जिससे खेत जोता जाता है। फाल। २. एक ग्रोजार। खड्डे आदि खोदने की लोहे की मोटी छड़।

हलवायण—(ना०) हलवाई की स्त्री। कंदोयण। कनोयण।

हळवाळो—(न०) १. हल रखने वा ... वाला। हल चला कर खेत बोने वा...

खेती करने वाला। कृषक। २. बलराम।

हळवास—*(ना०)* १. किसी बात, काम या चीज का कम या हलका होना। हलकापन। २. स्वास्थ्य लाभ। शान्ति। ३. धैर्य। धीरज।

हळवाह—दे० हळवा।

हळवाहरा—*(न०)* १. बैल। २. खेत। हळवहरा।

हळवा—*(क्रि०वि०)* धीरे। होले। हळवे।

हळवी—*(वि०)* १. हलकी। फोरी। २. छोटी। हवळी।

हळवै—*(क्रि०वि०)* १. धीमे। २. आहिस्ता। 'हवळै' का विपर्यय।

हलवो—*(न०)* एक मिष्ठान्न। हलवा। सीरो।

हळवो—*(वि०)* १. हलका। फोरो। २. जो वजन में कम हो। ३. अप्रतिष्ठित। हळको।

हळसार—*(न०)* एक मछली जाति।

हलंत—*(वि०)* १. जिस अक्षर के अन्त में हल (्) चिन्ह लगा हो। २. ऐसा निशान लगा कर अक्षर को स्वररहित करने की क्रिया या भाव।

हलाक—*(वि०)* वध किया हुआ। हत। *(न०)* नाश।

हलाकरणो—*(क्रि०)* वध करना। मारना।

हलाकी—दे० हलाकू।

हलाकू—*(वि०)* हलाक करने वाला।

हलाड़णो—दे० हलावणो।

हलाण—*(न०)* प्रस्थान।

हलाणो—*(न०)* १. दूसरी बार ससुराल भेजने के समय कन्या को दिये जाने वाले आभूषण वस्त्रादि। मुकळावो। भोळणो। २. प्रस्थान। रवानगी। ३. दहेज। *(क्रि०)* १. चलाना। २. हिलाना।

हळावोळ—*(वि०)* अति तेज। अतिशय (ताप बीमारी आदि)।

हलायुध—*(न०)* १. बलिभद्र। बलराम। २. हल नामक शस्त्र।

हलाल—*(न०)* १. जो इस्लाम के अनुसार हो। २. उचित। जायज। ३. वह पशु, जिसका मांस इस्लाम के अनुसार खाने की आज्ञा है।

हलालखोर—*(वि०)* १. हलाल की कमाई खाने वाला। व्यवहार का सच्चा। ईमानदार। २. भंगी। महतर। ३. विश्वासपात्र। ४. कसाई।

हलालखोर-खासो—*(न०)* १. नवाब-बादशाहों का एक अंतरंग सेवक। २. विश्वासपात्र सेवक। ईमानदार नौकर।

हलालखोरी—*(ना०)* १. हलालखोर की स्त्री। २. हलालखोर का काम। ३. वफादारी। ४. ईमानदारी।

हलावणो—*(क्रि०)* १. चलाना। २. हिलाना। झकझोरना। ३. हलचल मचाना। ४. निभाना। ५. जारी रखना।

हळाहळ—*(न०)* भयंकर विष। *(वि०)* १. भयंकर। २. बिलकुल। सर्वथा। ३. अतिशय। ४. अति तीव्र।

हलिप्रिय—*(न०)* कदंब वृक्ष।

हलिप्रिया—*(ना०)* शराब। मदिरा। दारू।

हळियो—*(न०)* १. छोटा हल। २. सोने चांदी पर नक्काशी करने का औजार।

हळी—*(न०)* १. बलिभद्र । २. कृषक । किसान । खेतीखड़ ।

हलीजणो—(क्रि०) १. चला जा सकना । चलने की शक्ति होना । चलने में समर्थ होना ।

हळीमूसळी—*(न०)* हल और मूसल नामक शस्त्र धारण करने वाले श्री बलराम।

हलील—*(ना०)* लहर । तरंग ।

हलीलो—*(न०)* १. जरिया । स्रोत । २. आजीविका का साधन । ३. व्यवहार । कारोबार । धंधा ।

हळू करमो—*(वि०)* १. निर्मल कर्मों वाला । २. निष्पाप । ३. उदार । ४. सरल प्रकृति । ५. मौजी । मानंदी । ६. निष्पक्ष । ७. परिश्रमी । ८. उपकारी ।

हलूर—*(ना०)* सतत होती रहने वाली सावन-भादों की वर्षा । झड़झड़ी।

हळोतियो—*(न०)* १. उतनी वर्षा का हो जाना, जिससे खेत में हल चलाकर बोवाई की जा सके। बुवाई लायक वर्षा । २. छोटा हल ।

हलोर—*(न०)* एक अछूत जाति ।

हल्दीघाटी—दे० हळदीघाटी ।

हल्ल—*(न०)* १. हलचल । २. चलने की तैयारी । ३. गमन । प्रस्थान ।

हल्लो—*(न०)* १. शोरगुल । हल्ला । २. धावा । हमला ।

हव—(अव्य०) अब । हिव । अबै । *(न०)* हव्य ।

हवकव—दे० हव्यकव्य ।

हवद—*(न०)* हौज ।

हवन—*(न०)* मंत्र पढ़ कर अग्नि में आहुति देना, होम ।

हवन करतां हाथ वळणो—*(मुहा०)* १. भला करने पर भी बुराई मिलना । २. उपकार का बदला अपकार ।

हवन-कुंड—*(न०)* यज्ञकुंड ।

हवन भस्म—*(ना०)* हवन की भस्म । यज्ञभस्म ।

हवळै—*(क्रि०वि०)* धीमे । आहिस्ता । होले । होळै । हळवै ।

हवळो—*(वि०)* १. हलका । २. कम भारी। भारी नहीं । ३. धीमा । ४. सुस्त ।

हववाहण —*(न०)* अग्नि ।

हवस—*(ना०)* हविश । कामना । वासना ।

हवा—*(ना०)* १. वायु । पवन । २. साँस । ३. वातावरण । ४. कीर्त्ति । यश । ५. महत्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास । साख । प्रतिष्ठा । ६. आडम्बर । ७. प्राण । ८. भूत । प्रेत । बायरो ।

हवाई—*(न०)* १. प्राचीनकाल का एक आग्नेयास्त्र । २. बंदूक । ३. तोप । ४. पटाखा । (वि०) १. हवा में रहने वाला । २ हवा द्वारा चलने वाला । ३. हवा मे उड़ने वाला । ४. बहुत ऊँचा बना हुआ । ५. हवा से संबंधित। ६ कल्पित । झूठा । ७. निर्मूल । निराधार।

हवाई किलो—*(न०)* १. अव्यावहारिक । २. असंभव मनसूबा ।

हवाई जहाज—*(न०)* हवा में उड़ने वाला यान । वायुयान । उड़नखटोला ।

हवाई-बाण—*(न०)* प्राचीन समय का एक आग्नेयास्त्र ।

हवा एक—दे० हवा भर ।

हवा एक भर—दे० हवा भर ।

हवा खाणो—*(मुहा०)* १. वायु सेवन करना। २. निश्चित होकर घूमना। ३. भुगतना। भोगना। ४. प्रभाव की स्थिति होना।

हवाखोरी—*(ना०)* १ खुली वायु में घूमना। वायु सेवन। २. स्वास्थ्य लाभ।

हवा-गाँठ—दे० हवा गोट।

हवा-गोट—*(न०)* १. वात चक्र। भूतेळो। भतूळियो। २. आँधी।

हवा-घर—*(न०)* वह ऊँचा घर जिसमें हवा के आने जाने के लिये अनेक छोटे-मोटे द्वार बने हुए हों।

हवा-घालणो—*(मुहा०)* पता भलना। हवा नाखणो।

हवाड़ो—दे० अवाड़ो। उवाड़ा।

हवादार—*(वि०)* १. हवावाला। २. हवा से संबंधित।

हवा-नाखणो—दे० हवा घालणो।

हवा निकळणो—*(मुहा०)* १. पोल खुल जाना। २. रहस्य खुल जाना। ३. बेइज्जत होना।

हवानी—*(ना०)* १. मस्ती। २. नशा। ३. नशे की तरंग। ४. सुधबुध रहित। होशहवास बगैर।

हवा-पाणी—*(न०)* किसी प्रदेश की सर्दी, गरमी, बरसात आदि की कुल स्थिति। जलवायु। आबहवा।

हवा-फूटणो—*(मुहा०)* १. निंदा होना। अपकीर्ति होना। २. बेइज्जत होना। ३. बात फैलनी। ४. पोल खुलना।

हवा-फेर—*(न०)* १. स्वास्थ्य के लिये स्थान बदलना। २. (तोल, माप आदि में) अति सूक्ष्म फर्क।

हवाभर—*(अव्य०)* १. अति सूक्ष्म। २. वातावरण। ३. हलचल। ४. बहुत ही न्यूनातिन्यून रूप में।

हवा भरणो—*(मुहा०)* १. उकसाना। २. बहकाना। ३. किसी पात्र में हवा भरना (फुटबाल आदि में)।

हवामहल—*(न०)* १. जयपुर का एक प्रसिद्ध भवन। २. हवादार ऊँचा महल। हवाघर। ३. ऊँची कल्पना।

हवा-मान—*(न०)* तापमान। वातावरण।

हवाल—*(न०)* १. अवस्था। हालत। दशा। २. अहवाल। वृतान्त। ३. अवदशा। ४. परिणाम। हाल। नतीजा।

हवाल करणो—*(मुहा०)* सताना। दुख देना।

हवालदार—*(न०)* १. पुलिस, सेना आदि का एक छोटा अफसर। २. राजाशाही जमाने का मालगुजारी वसूल करने वाला कर्मचारी।

हवालदारी—*(ना०)* हवालदार का काम या पद।

हवा लागणो—*(मुहा०)* १. संगति का प्रभाव होना। २. भूतप्रेतादि का प्रभाव या आवेश होना।

हवालात—*(ना०)* १. मुकदमे के दरम्यान व पकड़े जाने पर अभियुक्त को कैद में रखने की जगह। २. कच्ची कैद। ३. कैद।

हवाले—*(अव्य०)* १. सुपुर्द। २. देखरेख में। ३. सारसँभाल में। अधिकार में।

हवाले करणो—*(मुहा०)* १. सुपुर्द करना। २. कब्जे करना। ३. कब्जे में देना। ४. कब्जा देना।

हवालै जाणो—*(मुहा०)* १. हवाले मे शिकायत करने जाना। २. लेनदेन का हिसाब हो जाने पर रकम का अमुक व्यक्ति के खाते मे जमा-उधार करना। ३. किसी रकम का अपने विभाग के खाते में लिया जाना।

हवालो—*(न०)* १. लेन-देन की कोई ऐसी रकम जिसका जमा-खर्च किसी कारण-वश लेन-देन करने से पहिले करने का नियम हो अथवा करना पड़ता हो तो उसके संबंध मे जमा या खर्च के साथ बताया जाने वाला कारण। परस्पर के खाते मे जमा-उधार करना। स्थानातरित प्रविष्टि। २ राजाशाही समय का कर और मालगुजारी आदि वसूल करने वाला दफ्तर या थाना। ३. अधिकार। अख्तियार। ४. सुपुर्दगी। हवाला। ५. दृष्टान्त। मिसाल। ६. प्रमाण का उल्लेख। ७. जिम्मेवारी। ८ विवरण।

हवालो देणो—*(मुहा०)* १.पत्र, लेख आदि मे किसी उदाहरण को उद्धृत करना।

हवालो पड़णो—*(मुहा०)* उद्धरण लिया जाना या किसी बात का उल्लेख होना।

हवालो भरणो— *(मुहा०)* १. उद्धरण लेकर लेख या पत्र की पूर्ति करना। २. किसी आवश्यक बात या लेख का पत्र मे उल्लेख करना।

हवालो लेणो—*(मुहा०)* उद्धृत करना। दे० हवालो देणो।

हवास—*(न०)* १. होश। चेतना। २. संवेदना।

हवासील—*(न०)* एक पक्षी।

हवि—*(न०)* १ घृत। २. यज्ञकुंड में आहुति देने की सामग्री। ३. आहुति। बलि।

हविष्य—*(ना०)* होमने की सामग्री।

हवेजी—*(ना०)* १. छिलके रहित चने की दाल। २. चनो की दाल का तीवना।

हवेली—*(ना०)* १ बड़ा, पक्का और सुन्दर मकान। हेलो। २. पुष्टिमार्गीय मंदिर। बैठक। ३. अंतःपुर। जनानखाना।

हवै—*(अव्य०)* १ समर्थनादि का सूचक शब्द। हां। होवै। २. स्वीकृति।

हवैसा—दे० हां सा।

हव्य—*(न०)* यज्ञ में होमने की सामग्री।

हव्य-कव्य—*(न०)* देवता तथा पितरों को दी जाने वाली बलि।

हसण—*(न०)* १. हंसी। २. मजाक।

हसणो—*(क्रि०)* १ खुले मुंह से हर्षध्वनि निकालना। हंसना। २. उपहास करना। हंसी उड़ाना। निंदा करना। ३. मजाक करना। दिल्लगी करना।

हसत—*(न०)* १ हाथी। हाथ। ३. एक नक्षत्र। हस्त। ४ हाथी की सूंड। ५. समूह।

हसब—दे० हिसाब।

हसम—*(ना०)* सेना। फौज।

हसमुखो—*(वि०)* १. हंसमुख। प्रसन्न। २ विनोदशील। ३. सदा प्रसन्न रहने वाला। आनंदी।

हसर—*(ना०)* १ कयामत। प्रलय। द्वन्द्व। २. हैसियत। ३. परिणाम। दे० असर।

हसरत—*(ना०)* १. अभिलाषा। इच्छा। २. दुख। अफसोस।

हसली—दे० हँसली ।
हसाई—(ना०) १. हँसी । ठट्टा । मजाक । २. अपकीर्ति । बदनामी । ३. हँसने की क्रिया । हँसना । हँसी ।
हसाड़णो—दे० हसावणो ।
हसाणो—दे० हसावणो ।
हसामणो—(वि०) १. प्रसन्न । प्रफुल्ल । मुदित । २ हँसमुख । हसमुखो ।
हसाळू—(वि०) १. हँसानेवाला । २. हँसमुख । ३. आनंदी । हसमुखो ।
हसावणो—(क्रि०) हसाना ।
हकाहस—(अव्य०) १. हँसी ऊपर हँसी । २. बहुत जनों का एक साथ जोर-जोर से हँसना । ३. ठट्टा मसकरी ।
हसी—(ना०) १. हँसना । हँसी । २. हाँसी । मजाक । हँसी । ३. उपहास । ४. निंदा । बदनामी ।
हसी उड़ावणो—(मुहा०) १. दिल्लगी करना । २. बदनाम करना । ३. अपमानित करना ।
हसी-खुशी—(ना०) १. कुशलतापूर्वक । २. प्रसन्नता से ।
हसीन—(वि०) १. सुंदर । रूपाळो । फूटरो । २. दृढ़ । स्थिर ।
हसीस—(ना०) एक मादक पदार्थ ।
हसेब—(न०) हिसाब ।
हसो—(न०) हँसी ।
हस्त—(न०) १. हाथ । २. तेरहवां नक्षत्र ।
हस्तक—(अव्य०) १. अधिकार में । हक में । २. तांबे । तांबे में । कब्जे में । ३. के द्वारा । के जरिये ।
हस्त उद्योग—(न०) हाथ से किया जाने वाला उद्योग (यंत्र से नहीं) । हाथ का बना हुआ ।
हस्तकला—(ना०) हाथ की कला । दस्तकारी ।
हस्त-कौशल—(न०) हाथ के काम की दक्षता ।
हस्तक्षेप—(न०) दस्तंदाजी । दस्तंदाजी । दखल ।
हस्तगत—(भू०कृ०) १. प्राप्त । २. अधिकार में हुआ । ३. अधिकार में आया हुआ ।
हस्तप्रत—(ना०) हाथ से लिखा हुआ ग्रंथ । हाथप्रत । मेनुस्क्रिप्ट । हस्तलिखित प्रति ।
हस्तमिलाप—दे० हथळेवो ।
हस्तरेखा—(ना०) हथेली की रेखा ।
हस्त-रेखा-शास्त्र—(न०) हथेली की रेखाओं के माध्यम से मनुष्य के भविष्य को बतलाने वाली विद्या । सामुद्रिक ।
हस्त-लिखित—(भू० कृ०) १. हाथ से लिखा हुआ । (लेख, पाडुलिपि आदि) २. हाथ की लिखावट या लिपि ।
हस्ताक्षर—(न०) दस्तखत । सही । दसखत ।
हस्तामलक—(न०) १. वह वस्तु या बात जिसके सामने आते ही सारे अंग स्पष्ट हो जाते हैं । २. हथेली पर रखा हुआ आंवला ।
हस्तांतरण—(न०) सत्ता या संपत्ति का एक से दूसरे के पास जाना ।
हस्ति—(न०) हाथी । गज ।
हस्तिनी—(ना०) १. मादा हाथी । हथिनी । २. एक नायिका ।
हस्तिनापुर—(न०) दिल्ली का प्राचीन नाम ।

हस्तिमार—(न०) १. कहरकोह नामक शाही हाथी को मार देने वाले रतलाम के राजा रतनसिंह का विशेषण। कहरकोह हंता। २. सिंह।

हस्ती—(ना०) १. हैसियत। २. हाथी। ३. अस्तित्व।

हस्तीदंत—(न०) हाथी दाँत।

हस्ते—(अव्य०) के द्वारा। के जरिये। मारफत।

हस्ते खुद—(अव्य०) १. खुद ने लिया अथवा किया है। (प्रायः हिसाब और लेनदेन में इस अर्थ को सूचित करने वाला पद) खुद के द्वारा। उल्लिखित व्यक्ति के द्वारा। २. यह तात्पर्य कि जिस व्यक्ति के नाम वस्तु या रकम उधार चढ़ाई गई है, खुद उसी को हाथोंहाथ दी गई है।

हस्तेवार—(अव्य०) जिसके हाथ में (वस्तु या रकम) दी गई है उसके नाम के साथ (उधार या लेखे मंडी हुई है)। जिसको दी गई है, बही में उसके नाम के साथ दर्ज है।

हस्ब—(अव्य०) के अनुसार। बामुजिब।

हस्ब कानून—(न०) कानून के अनुसार।

हस्ब जावता—(अव्य०) कानून के अनुसार। यथानियम।

हस्ब जेल—(अव्य०) नीचे लिखे अनुसार।

हस्ब तहरीर—(अव्य०) सरकारी तहरीर के अनुसार।

हस्ब मामूल—(अव्य०) साधारण तौर से। साधारणतः।

हस्ब रिवाज—(अव्य०) रिवाज के अनुसार।

हस्ब हुकम—(अव्य०) आज्ञानुसार। हुकम के मुताबिक।

हँ आँ—(न०) हाँ।

हँकणो—(क्रि०) १. चलना। २. चलाना।

हँकरावणो—दे० हँकराणो।

हंकार—(न०) अहंकार। अभिमान। घमंड। ऐंकार।

हंकारणो—(क्रि०) १. चलाना। २. हाँकना। ३. स्वीकार करना या कराना। ३. अहंकार करना।

हंकारी—(वि०) अहंकारी। अभिमानी।

हंग—(ना०) विष्टा। टट्टी। गू।

हंगण—(ना०) १ हगने का काम। २. विष्टा। टट्टी। ३ गुदा। (वि०) १. बारम्बार हगने वाला। हंगणियो। २. कायर।

हंगणियो—(वि०) १. बार-बार हगने वाला। हगोड़ा। हग्गू। हंगण। २. कायर। कापुरुष।

हंगणो—(क्रि०) टट्टी फिरना। शौच जाना। हँगना।

हंगमूत—(न०) १. टट्टी और पिशाब। गू-मूत। २. हगना और मूतना।

हंगरी—(न०) यूरोप खंड का एक देश।

हंगाणो—दे० हगावणो।

हंगाम—(न०) १. उत्सव। २. तैयारी। सजावट। ३. सेना। ४. समूह। ५. अवसर। ६. समय।

हंगामी—(वि०) १. आक्रमण करने वाला। (न०) १. कामचलाऊ। २. थोड़े समय का। अस्थायी।

हंगामो—(न०) १. युद्ध। २. आक्रमण। ३. हुल्लड़। ४. उपद्रव। फसाद। ५. भीड़भाड़। ६. धूमधाम। ७. उत्सव। ८. तैयारी।

हंगार—(न०) १. पक्षियों या मक्खियों की विष्टा। २. विष्टा। गू।

हंगावणो—*(क्रि०)* १.बच्चे को हुँगाने के लिए बिठाना। २. हैरान करना।
हंचाकळो—दे० हुंचाकळो।
हुंज—*(न०)* हंस। मराल। हुंजो।
हुंजर-पंजर— *(वि०)* पतला-दुबला। (शरीर)।
हुंजामारू—*(न०)* १. विवाह के लोकगीतों का एक नायक। २. प्रियतम। पति। ३. दुलहा। बींद।
हुंजारो—*(न०)* १. मेदे का पुष्प। गेंदा। २. दुलहा। बींद।
हुंजारोगुल—*(न०)* १. हजारे का पुष्प। २. दुलहा।
हुंजारी (गुल) रो फूल—*(न०)* १. दूल्हे का एक विशेषण। २. हजारे का पुष्प।
हुंजारी ढोलो—*(न०)* वैवाहिक लोक गीतों का एक नायक। हंस के समान सुन्दर और गुण वाला दुलहा। हजारे फूल के समान सुंदर दुलहा
हुंजी—*(ना०)* हंसिनी। हंसणी।
हुंजीर—*(ना०)* १. हाथी की सांकल। २. नशा ३. हानि। नुकसान। ४. बिगाड़। बरबादी।
हुंजीरो—दे० हुंजीर।
हुंजो—*(न०)* १. हंस। २. पति। प्रियतम। ३. विवाह के लोकगीतों और काव्य का एक नायक। *(वि०)* सुन्दर।
हंटर—*(न०)* १.चाबुक। कोड़ा। फोडड़ो। २. एक आतिशबाजी।
हंड—*(न०)* लटकाया जाने वाला केरोसीन से जलने वाला एक प्रकार का कंदील।
हंडरवेट—*(न०)* एक अंग्रेजी तोल जो एक मन और १४ सेर का होता है।
हंडियो—*(न०)* अफीम रखने की एक छोटी जेबी डिबिया।
हुंडो—*(न०)* दे० हांडो।
हुंत—*(न०)* १. दुख सूचक शब्द या उद्‌गार। २. खेद। उद्वेग। ३. मृत्यु। मौत। *(क्रि०)* 'होना' क्रिया का एक रूप। 'होणो' या 'होवणो' का भू० का० विपर्यय। होत। होतो। होयतो।
हुंता—*(क्रि०भू०)* 'होना' या 'है' क्रिया का भूतकालिक बहुवचन रूप। थे। *(वि०)* वध करने वाला। हत्यारा।
हुंती—*(क्रि०भू०)* 'है' क्रिया के भूतकाल का नारी जाति रूप। थी। *(वि०)* वध करने वाली। हत्यारी।
हुंतो—*(क्रि०भू०)* 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था। हतो। हो। थो। धो। *(वि०)* वध करने वाला। हत्यारा। हुंता।
हुंद—*(प्रत्य०)* 'का, की, के' अर्थसूचक विभक्ति। २. 'हुंदो' या 'हुंदी' विभक्ति का एक (छोटा) रूप।
हुंदियां—*(प्रत्य०)* काव्य में (नारी जाति) प्रयुक्त दोनो वचनों मे 'हुंदी' विभक्ति का एक अन्य बहुवचन रूप। यथा— 'लहरा सायर हुंदियां'। की। हुंदी। संदियां। तणी।
हुंदियो—*(प्रत्य०)* 'हुंदो' विभक्ति का एक अन्य रूप। का। संदियो। केरो। तणो। रो।
हुंदी—*(प्रत्य०)* सबंधकारक विभक्ति 'हुंदो'। 'की' अर्थक का स्त्रीलिंग। शब्द। री। ची। केरी।
हुंदै—*(प्रत्य०)* 'के' विभक्ति।
हुंदो—*(प्रत्य०)* संबंधकारक की 'का' अर्थ-सूचक विभक्ति। सबो।

हंफणो—दे० हांफणो।

हंफारी—(ना०) १. हांफना। २. श्वास रोग।

हंफारो—दे० हंफारी।

हंभा—(ना०) १. गाय का रंभाना। रंभाने का शब्द। २. गाय। गो।

हंभारव—(न०) गाय के रंभाने की श्रावाज। हंभा।

हंस—(न०) १. ब्रह्मा। सूर्य। ३. चांदी। ४. मराल। ५. एक प्रकार का घोडा। ६. जीव। प्राण। हंसो। ७. विष्णु। ८. शिव। ९ भैंसा। १०. कामदेव। ईर्ष्या। १२. तपस्वी। १३ विवेकशील। १४. एक छंद।

हंसक—(न०) १. नूपुर। २. घुंघरू। ३, बिछिया। बीछूड़ी। ४. हंस। घूघरो।

हंसगत नीसाणी—(ना०) नीसाणी छंद का एक भेद। रूपमाळा छंद।

हंसगति—(ना०) १. हंस जैसी मंथर चाल। २. ब्रह्म पद की प्राप्ति। ३. एक छंद।

हंसगामणी—(वि०) हंस जैसी मंथर-गति से चलने वाली। हंसगामिनी।

हंसण—(ना०) हंसी। हंसिनी।

हंसणी—(ना०) हंस की मादा। हंसिनी। हंसी। हंजी।

हंस-पद—(न०) लिखे हुये में और कुछ की हुई वृद्धि को दर्शाने वाला '‸' ऐसा चिन्ह। काकपद। २. ब्रह्मपद। ३. हंस का पैर।

हंस-पाद—(न०) १. हींगुल। ईंगुर। हींगळू। २. हंस पद।

हंसभख—(न०) मोती। मुक्ताफल।

हसँ-मुख—(वि०) १. प्रसन्नमुख। २. विनोदी।

हँस-मुखी—(वि०) १. प्रसन्नवदना। २. विनोदिनी।

हँस-मुखो—दे० हंसमुख।

हँसराज—(न०) १. हंसों का राजा। बड़ा हंस। २. एक वनस्पति।

हसली—(ना०) १. हंस की मादा। हंसी। २. गले का एक श्राभूषण। हाँसळी। ३. गले के नीचे की दो धन्वाकार हड्डियाँ। हाँसली।

हँसळी—दे० हंसली सं २, ३.

हंसलो—(न०) १. प्राण। हंसो। २. हंस। हंज। ३. श्रात्मा। हंसो।

हंसवाहण—(न०) १. ब्रह्मा। २. सरस्वती।

हंसवाहणी—(ना०) सरस्वती। शारदा। वागेसरी। सरसती।

हँसाई—(ना०) १. बदनामी। निंदा। २. हंसी-ठट्ठा। ३. अपमान। अनादर।

हंसाउलि—(ना०) सिद्धपुर के कवि असाइत द्वारा लिखित काव्य ग्रंथ।

हँसाइणो—दे० हँसाणो।

हँसाणो—(क्रि०) १. हंसने को मजबूर करना। हँसी श्रावे ऐसी बात करना। २. खुश करना। राजी करना।

हंसारूढ़ा—(न०) सरस्वती।

हँसाळ—(न०) १. एक प्रकार का घोडा। २ घोड़े की एक जाति। ३. घोड़ा। ४. हंस-पंक्ति। (वि०) मजाकी। मजाकियो। जोकर।

हँसाळू—(वि०) १. हँसाने वाला। हँसोड़। २. हँसमुख। प्रसन्नमुख।

हँसावणो—दे० हँसाणो ।
हंसावळी—(ना०) हंसों की पंक्ति ।
हंसासणी—(ना०) सरस्वती ।
हँसियो—(न०) घास आदि की कटाई में काम आने वाला एक औजार । हँसिया । दातरड़ो । दातलो ।
हंसी—(ना०) १. हंस की मादा । हंसिनी । २. हँसी । मजाक ।
हँसी करणो—(मुहा०) १. मजाक करना । मश्करी करना । २ मनोरंजन करना ।
हँसी मजाक—(न०) मजाक । मश्करी ।
हँसुग्रो—(न०) १. एक शस्त्र । २. हँसिया । दातरड़ो । दातलो ।
हंसो—(न०) १. प्राण । २. आत्मा । हंसलो । ३. प्राणवायु । ४. साँस । ५. हंस ।
हंसो उड़णो—(मुहा०) प्राण निकल जाना । मर जाना ।
हँसोड़—(वि०) हँसी मजाक करने वाला । मजाकी । मजाकियो ।
हा—(अव्य०) १. दुख, शोक, भय का सूचक शब्द । अरे, अहा । २. आश्चर्य या खुशी का सूचक शब्द । अरे । हाय, हा इत्यादि । (क्रि०भू०) भूतकालिक क्रिया 'हो' का बहुवचन रूप । थे । था । जैसे—'वे आया हा' । ४. स्वीकृति सूचक शब्द । हाँ ।
हाइ—(न०) १. भाव । २. दशा । हालत ।
हाइफन—(न०) यौगिक शब्दों के बीच में लगने वाला संबंध सूचक चिन्ह । '-' ऐसा चिन्ह ।
हाइ-कमिश्नर—(न०) कॉमनवेल्थ (राष्ट्र समूह) में प्रतिनिधि के तौर पर रखा जाने वाला राष्ट्र का सर्वोच्च अधिकारी ।
हाईकोर्ट—(न०) किसी राज्य या प्रान्त की फौजदारी या दीवानी की सबसे बड़ी अदालत । उच्च न्यायालय ।
हाई-स्कूल—(ना०) मेट्रिक तक पढ़ाये जाने की पाठशाला । माध्यमिक शिक्षण की स्कूल ।
हाउ—(न०) बालक को डर उपजाने वाला एक काल्पनिक डरावना जीव । हौआ । हौवा ।
हाउ जंगो—दे० हाडुजंगो ।
हाउलो—दे० हावलो ।
हाउ-हाउ—(अव्य०) १. कुत्ते के भौंकने का शब्द । २. अधिक और व्यर्थ बोलने की क्रिया या भाव ।
हाउ-हाउ करणो—(मुहा०) १. बक-बक करना । २. भौंकना ।
हा ओ—(अव्य०) पति-पत्नी का परस्पर का संबोधन । अजी । हेजी ।
हाक—(ना०) १. आतंक । धाक । रोब । २. शोर । कोलाहल । ३. भय । ४. जोर की आवाज । चिल्लाहट । ५. डाँट । धमकी ।
हाक करणो—(क्रि०) १. डाँटना । २. पुकारना ।
हाकड़ो—(न०) समुद्र का नाम जिसके संबंध मे यह कहा जाता है कि यह कभी मारवाड़ के पश्चिमी भाग में अवस्थित था ।
हाकणवाळो—दे० हाकणाळो ।
हाकणहाळो—दे० हाकणाळो ।
हाकणारो—दे० हाकणाळो ।
हाकणाळो—(क्रि०) १. हाँकने वाला । चलाने वाला । २. रास्ते पर लाने वाला । ३ वश में करने वाला । हाकणारो ।

हाकणियो—दे० हाकणाळो ।

हाकणो—दे० हाँकणो ।

हाक-वाक—*(वि०)* १. किंकर्त्तव्यविमूढ़ । व्याकुल । भौंचक्का । २. हैरान-परेशान । हक्का-बक्का ।

हाक-वाक होणो—*(मुहा०)* घबराना । हक्का-बक्का होना ।

हाकम—*(न०)* १. शासक । २. बड़ा अधिकारी । ३. परगने की हुकूमत का शासक । मैजिस्ट्रेट । हाकिम ।

हाकमाई—दे० हाकमी ।

हाक मारणो—*(मुहा०)* १. पुकारना । आवाज देना । २. मृतक के पीछे संबंधियों का उसका नाम लेकर रोना ।

हाकमी—*(ना०)* १. हाकिम का पद । २. हाकिम संबंधी । हाकमाई ।

हाकमी उतरणो—*(मुहा०)* १. हाकिम के पद से निरस्त होना । हाकिमी टूट जाना ।

हाकमी मिलणो—*(मुहा०)* हाकिम की नौकरी या पद मिलना ।

हाकरणो—दे० हाँ करणो । स्वीकार करना ।

हाकल—*(न०)* १. धौंस । २. पुकार । ३. डराने के लिये जोर से बोलना । जोर की आवाज । ४. डर । ५. वीर-हाक । ललकार । ६. डाँट-डपट ।

हाकलणो—*(क्रि०)* १. हाक मार कर बुलाना । पुकारना । २. हाक मार कर भगाना । ३. हाक मार कर बैल आदि को हाँकना । हाँकना । चलाना । ४. ऊधम करते हुये बच्चों को डाँटना । धमकाना । डराना । ५. ललकारना ।

हाका करणो—*(मुहा०)* शोर मचाना । कूकणो ।

हाकाणो—*(न०)* दुष्काल के कारण गाय भैंस आदि पशुओं को अन्यत्र सुकाल प्रदेश में (हाँक कर) ले जाना ।

हाका-हूक—*(न०)* भारी शोरगुल । कूका-कूक । होहल्ला ।

हाका-हूको—*(न०)* शोरगुल । कोलाहल । होहल्ला ।

हाकिम—दे० हाकम ।

हाकिमपणो—दे० हाकमी ।

हाकी-वाकी—*(वि०)* घबराई हुई । हड़बड़ाई हुई । उद्विग्न ।

हाको—*(न०)* १. शोर । हल्ला । २. पुकार । बुलावा । ३. धमकी । ४. भय । ५. शिकार के लिये जानवर को घेरने के लिये मनुष्यों द्वारा मचाया जाने वाला शोर । ६. शिकार के लिये आवाज करने वाले लोगों का समूह ।

हाको करणो—*(मुहा०)* १. डाँटना । धमकाना । २. पुकारना । आवाज करना । ३. बुलाना । आवाज देना ।

हाकोट—*(न०)* १. भय । धमकी । २. पुकार । ३. जोर की आवाज । ४. ललकार । ५. शाबासी ।

हाकोटणो—*(क्रि०)* १. हाँकना । चलाना । २. डराना । धमकाना । ३. पुकारना । ४. शाबासी देना । धन्यवाद देना । ५. ललकारना । ६. लड़ना-भिड़ना ।

हाकोटा—*(वि०)* १. गूंजते हुए । २. प्रसन्न । खुशहाल । ३. आनंद । मौज ।

हाकोटा में—(अव्य) प्रसन्न हो ! [illegible] हो ! [illegible] को पूरा आगे [illegible] [illegible] । खूब [illegible] !

हाकोटो—दे० हाकोट ।

हाको पड़णो—(मुहा०) शोर होना।
हाको फूटणो—दे० हलो फूटणो।
हाको-वाको—(वि०) घबराया हुआ। हड़बड़ाया हुआ। उद्विग्न।
हाको-हाक—(ना०) १. आवाज पर आवाज। २. शोरमशोर। २. पुकार पर पुकार। ३. होहल्ला। शोर।
हाजती—(वि०) १. जरूरत वाला। २. हवालात में बंद। ३. अभिलाषी।
हाजत—(न०) १. शौच आदि का वेग। २. मलमूत्र करने की इच्छा। ३. जरूरत। आवश्यकता। ४. इच्छा। अभिलाषा। ५. हवालात। काची जेल।
हाजमो—(न०) पाचन शक्ति। हाजमा।
हाजर—(न०) १. उपस्थित। मौजूद। हाजिर। २. प्रस्तुत।
हाजर करणो—(मुहा०) उपस्थित करना। पेश करना।
हाजरजवाबी—(वि०) समयानुसार योग्य जवाब शीघ्र दे सके ऐसा। (ना०) तुरत उत्तर देने की क्रिया या स्थिति।
हाजर-नाजर—(वि०) १. सब कुछ देखने वाला। २. जब जगह उपस्थित रहने वाला। (न०) ईश्वर।
हाजरात—(ना०) एक प्रक्रिया जिसमें किसी व्यक्ति की आत्मा को बुला कर उससे छुपी-अनजानी बातें पूछी जाती हैं।
हाजरा-हजूर—(वि०) १. प्रत्यक्ष। साक्षात्। २. सामने।
हाजरिआळो—दे० हाजरियो।
हाजरियो—(न०) १. सेवक। २. दास। (वि०) हर समय हाजिर रहने वाला।
हाजरी—(ना०) १. उपस्थिति। मौजूदगी। २. हाजिर होने की क्रिया या भाव। ३. भोजन। यथा-छोटी हाजरी। बड़ी हाजरी। हाजिरी।
हाजरी गिणावणी—(मुहा०) १. उपस्थित होना। २. उपस्थिति गिनवाना।
हाजरी चाढणी—(मुहा०) हाजिरी रजिस्टर में हाजिरी लिखना।
हाजरी देणी—(मुहा०) १. उपस्थित रहना। २. सेवा में उपस्थित रहना।
हाजरी नूंधणी—(मुहा०) हाजिरी लिखना। हाजिरी दर्ज करना।
हाजरी नूंधाणी—(मुहा०) हाजिरी दर्ज करवाना।
हाजरी पूरणी—दे० हाजरी नूंधणी।
हाजरी बजावणी—(मुहा०) १. सेवा करना। २. सेवा में उपस्थित होना। ३. खुशामद करना।
हाजरी भरणी—दे० हाजरी नूंधणी तथा हाजरी बजावणी।
हाजरी मंडावणी—दे० हाजरी नूंधाणी।
हाजरी मांडणी—दे० हाजरी नूंधणी।
हाजरी लेणी—दे० हाजरी नूंधणी।
हाजरी साजणी—(मुहा०) १. सेवामें उपस्थित रहना। २. खुशामद करना।
हाजियाणी—(ना०) १. हज करके आई हुई मुसलमान स्त्री। २. हाजी की पत्नी।
हाजी—(न०) १. हज करके आया हुआ मुसलमान। २. मक्के मदीने का यात्री। दे० हांजी।
हाट—(ना०) १. दुकान। २. बाजार।
हाटक—(न०) सोना।
हाटकपुर—(न०) १. लंका। २. स्वर्ण नगरी।
हाटकी—(न०) एक डिंगल छंद।

हाटकेसर—(न०) महादेव। हाटकेश्वर।

हाटड़ी—(ना०) हाट। दुकान। दे० हटड़ी।

हाट डोढी करणी—(मुहा०) १. संध्या या व्याळू के समय घर को जाने के लिये दूकान बंद करना। २. दुकान बंद करना।

हाट मांडणी—(मुहा०) माल-सामान का क्रय-विक्रय करने के लिये दुकान लगाना।

हाट-हाट—(अव्य०) प्रत्येक हाट। एक-एक दुकान। प्रतिहाट।

हाटाँ—(ना०ब०व०) १. बाजार। २. दुकानें।

हाटो-हाट—(अव्य०) हाट प्रति हाट। प्रत्येक हाट। हाट-हाट।

हाड—(न०) १. हड्डी। अस्थि। २. अस्थि संबंध। ३. रक्त संबंध। एक वंश। एक ही वंश से उत्पन्न। ४. भाई। ५. भाई, पुत्र पौत्र इत्यादि कुटुम्बीजन।

हाडक—(न०) १. हड्डी। अस्थि। (रोष या व्यंग में) २. हड्डियाँ।

हाडकी—(ना०) १. छोटी और पतली हड्डी २. हड्डी।

हाडको—(न०) १. बड़ी व मोटी हड्डी। २. हड्डी।

हाडजाळ—(ना०) अग्नि। हाडबाळ।

हाडजुर—दे० हाडज्वर।

हाडजोड़ो—दे० हाडवैद।

हाडज्वर—(न०) १. जीर्ण ज्वर। २. मंद ज्वर। ३. अस्थि ज्वर।

हाडदुसमणी—दे० हाडवैर।

हाड-पिंजर—(न०) अस्थि पिंजर।

हाड-बाळ—(ना०) अग्नि। आग।

हाड भांगणा—(मुहा०) १. कठिन परिश्रम करना। २. सख्त मार मारना।

हाड-मजूरी—(ना०) कठिन परिश्रम। सख्त मजूरी।

हाड-महनत—दे० हाडमजूरी।

हाडभारी—(ना०) १. कठिनता। मुश्किली। २. अर्थाभाव। ३. हैरानी। हैरानगति। ४ तिरस्कार।

हाड-मांस—(न०) हड्डी और मांस।

हाडल—(न०ब०व०) हड्डियाँ। हाडक।

हाड वढी—दे० पिंड वढी।

हाडवैद—(न०) टूटी हुई हड्डी को जोड़ने वाला वैद्य। हड्डी जोड़ने-बिठाने वाला विशेषज्ञ। हडजोड़ो।

हाड वैर—(न०) १. कुटुम्बीजनों में शत्रुता। २. पुश्तैनी शत्रुता। ३. गहरी दुश्मनी। ४. नैसर्गिक शत्रुता। यथा—बिल्ली-चूहा। ५. हत्या की शत्रुता। हाड-दुसमणी।

हाड-वैरी—(न०) १. पक्का दुश्मन। २. कुटुम्बी शत्रु।

हाड-हाड—(अव्य०) १. शरीर की प्रत्येक हड्डी। २. शरीर की हड्डी का प्रत्येक भाग। ३. एक-एक हड्डी।

हाडियो—(न०) बड़ा कौआ। हाडो।

हाडी—(वि०) १. हाड़ा (राजपूत) कुल की। २. मजबूत हड्डियों की।—(ना०) १. हाडा कुल। २. बड़े कौवे की मादा। ३. एक अछूत जाति। ४. हाडा राजपूत।

हाडे-गोडे—(अव्य०) हड्डियों और घुटनों से (दृढ)।

हाडे-गोडे सैंठो—(वि०) १. हड्डियों और घुटनों से मजबूत। [illegible] मजबूत। अति दृढ। ३. [illegible] का।

हाको पड़णो—(मुहा०) शोर होना।

हाको फूटणो—दे० हेलो फूटणो ।

हाको-वाको—*(वि०)* घबराया हुआ। हड़बड़ाया हुआ। उद्विग्न ।

हाको-हाक—*(ना०)* १. आवाज पर आवाज। २. शोरमशोर। २. पुकार पर पुकार। ३. होहल्ला। शोर।

हाजती—*(वि०)* १. जरूरत वाला । २. हवालात मे बंद। ३. अभिलाषी।

हाजत—*(ना०)* १. शौच आदि का वेग । २. मलमूत्र करने की इच्छा । ३. जरूरत। आवश्यकता। ४. इच्छा । अभिलाषा ५. हवालात। काची जेल ।

हाजमो—*(न०)* पाचन शक्ति । हाजमा।

हाजर—*(न०)* १. उपस्थित । मौजूद । हाजिर। २. प्रस्तुत।

हाजर करणो—*(मुहा०)* उपस्थित करना। पेश करना।

हाजरजवाबी—*(वि०)* समयानुसार योग्य जवाब शीघ्र दे सके ऐसा। *(ना०)* तुरत उत्तर देने की क्रिया या स्थिति।

हाजर-नाजर—*(वि०)* १. सब कुछ देखने वाला। २. जब जगह उपस्थित रहने वाला। *(न०)* ईश्वर।

हाजरात—*(ना०)* एक प्रक्रिया जिसमे किसी व्यक्ति की आत्मा को बुला कर उससे छुपी-अनजानी बातें पूछी जाती है।

हाजरा-हजूर—*(वि०)* १. प्रत्यक्ष। साक्षात्। २. सामने।

हाजरिआळो—दे० हाजरियो।

हाजरियो—*(न०)* १. सेवक। २. दास। *(वि०)* हर समय हाजिर रहने वाला।

हाजरी—*(ना०)* १. उपस्थिति। मौजूदगी। २. हाजिर होने की क्रिया या भाव। ३. भोजन। यथा-छोटी हाज़री। बड़ी हाजरी। हाजिरी।

हाजरी गिणावणी—*(मुहा०)* १. उपस्थित होना। २. उपस्थिति गिनवाना।

हाजरी चाढणी—*(मुहा०)* हाज़िरी रजिस्टर में हाजिरी लिखना।

हाजरी देणी—*(मुहा०)* १. उपस्थित रहना। २. सेवा मे उपस्थित रहना।

हाजरी नूंधणी—*(मुहा०)* हाजिरी लिखना। हाजिरी दर्ज करना।

हाजरी नूंधाणी—*(मुहा०)* हाजिरी दर्ज करवाना।

हाजरी पूरणी—दे० हाजरी नूंधणी।

हाजरी बजावणी—*(मुहा०)* १. सेवा करना। २. सेवा मे उपस्थित होना। ३. खुशामद करना।

हाजरी भरणी—दे० हाजरी नूंधणी तथा हाजरी बजावणी।

हाजरी मंडावणी—दे० हाजरी नूंधाणी।

हाजरी मांडणी—दे० हाजरी नूंधणी।

हाजरी लेणी—दे० हाजरी नूंधणी।

हाजरी साजणी—*(मुहा०)* १. सेवामें उपस्थित रहना। २. खुशामद करना।

हाजियाणी—*(ना०)* १. हज करके आई हुई मुसलमान स्त्री। २. हाजी की पत्नी।

हाजी—*(न०)* १. हज करके आया हुआ मुसलमान। २. मक्के मदीने का यात्री। दे० हांजी।

हाट—*(ना०)* १. दुकान। २. बाजार।

हाटक—*(न०)* सोना।

हाटकपुर—*(न०)* १. लंका। २. स्वर्ण नगरी।

हाटकी—*(न०)* एक डिंगल छंद।

हाटकेसर—*(न०)* महादेव । हाटकेश्वर ।
हाटड़ी—*(ना०)* हाट । दुकान । दे० हटड़ी ।
हाट डोढी करणी—*(मुहा०)* १. सन्ध्या या ब्याळू के समय घर को जाने के लिये दूकान बंद करना । २. दुकान बंद करना ।
हाट मांडणी—*(मुहा०)* माल-सामान का क्रय-विक्रय करने के लिये दुकान लगाना ।
हाट-हाट—*(अव्य०)* प्रत्येक हाट । एक-एक दुकान । प्रतिहाट ।
हाटाँ—*(ना०ब०व०)* १. बाजार । २. दुकानें ।
हाटो-हाट—*(अव्य०)* हाट प्रति हाट । प्रत्येक हाट । हाट-हाट ।
हाड—*(न०)* १. हड्डी । अस्थि । २. अस्थि संबंध । ३. रक्त संबंध । एक वंश । एक ही वंश में उत्पन्न । ४. भाई । ५. भाई, पुत्र पौत्र इत्यादि कुटुम्बीजन ।
हाडक—*(न०)* १. हड्डी । अस्थि । (रोष या व्यंग में) २. हड्डियाँ ।
हाडकी—*(ना०)* १. छोटी और पतली हड्डी २. हड्डी ।
हाडको—*(न०)* १. बड़ी व मोटी हड्डी । २. हड्डी ।
हाडजाळ—*(ना०)* अग्नि । हाडबाळ ।
हाडजुर—दे० हाडज्वर ।
हाडजोड़ो—दे० हाडवैद ।
हाडज्वर—*(न०)* १. जीर्ण ज्वर । २. मंद ज्वर । ३. अस्थि ज्वर ।
हाडदुसमणी—दे० हाडवैर ।
हाड-पिंजर—*(न०)* अस्थि पिंजर ।
हाड-बाळ—*(ना०)* अग्नि । आग ।
हाड भांगणा—*(मुहा०)* १. कठिन परिश्रम करना । २. सख्त मार मारना ।
हाड-मजूरी—*(ना०)* कठिन परिश्रम । सख्त मजूरी ।
हाड-महनत—दे० हाडमजूरी ।
हाडमारी—*(ना०)* १. कठिनता । मुश्किली । २. अर्थाभाव । ३. हैरानी । हैरानगति । ४ तिरस्कार ।
हाड-मांस—*(न०)* हड्डी और मांस ।
हाडल—*(न०ब०व०)* हड्डियाँ । हाडक ।
हाड वढी—दे० पिंड वढी ।
हाडवैद—*(न०)* टूटी हुई हड्डी को जोड़ने वाला वैद्य । हड्डी जोड़ने-बिठाने वाला विशेषज्ञ । हडजोड़ो ।
हाड वैर—*(न०)* १. कुटुम्बीजनों में शत्रुता । २. पुश्तैनी शत्रुता । ३. गहरी दुश्मनी । ४. नैसर्गिक शत्रुता । यथा—बिल्ली-चूहा । ५. हत्या की शत्रुता । हाड-दुसमणी ।
हाड-वैरी—*(न०)* १. पक्का दुश्मन । २. कुटुम्बी शत्रु ।
हाड-हाड—*(अव्य०)* १. शरीर की प्रत्येक हड्डी । २. शरीर की हड्डी का प्रत्येक भाग । ३. एक-एक हड्डी ।
हाडियो—*(न०)* बड़ा कौआ । हाडो ।
हाडी—*(वि०)* १. हाडा (राजपूत) कुल की । २. मजबूत हड्डियों की ।—*(ना०)* १. हाडा कुल । २. बड़े कौवे की मादा । ३. एक अछूत जाति । ४. हाडा राजपूत ।
हाडै-गोडै—*(अव्य०)* हड्डियों और घुटनों से (दृढ़) ।
हाडै-गोडै सैठो—*(वि०)* १. हड्डियों और घुटनों से मजबूत । २. बहुत मजबूत । अति दृढ़ । ३. शरीर की मजबूत गठन का ।

हाडो—(न०) १. एक राजपूत जाति। २. कौमा। कागलो। ३. बड़ी जाति का कौमा।

हाडोटी—दे० हाडोती।

हाडोती—(ना०) १. हाडा राजपूतों के अधिकार का देश (कोटा-बूंदी आदि)। हाडावाडो। २. इस देश की बोली। राजस्थानी की एक बोली। (वि०) १. हाडोती प्रदेश का। २. हाडोती संबंधी।

हाडोतो—(वि०) हाडोती का रहने वाला। हाडोती प्रदेश का।

हाडोहाड—(अव्य०) १. ठेठ हड्डियों तक। २. हड्डी-हड्डी में। ३. खूब गहराई तक। ४. अंग-प्रत्यंग में। ५. पूर्णतया। ६. हृदय में ७. असंदिग्ध रूप से।

हाण—(ना०) १. काम करने की शक्ति। चलने-फिरने की शक्ति। हानि। नुकसान घाटो।

हाणक—(न०) शत्रु। (वि०) १. हानि पहुंचाने वाला। २. हानिकारक।

हाणाप—दे० हाणी।

हाणी—(ना०) हानि। नुकसान। घाटो। हाणप।

हातलो—(न०) बैलगाड़ी का एक उपकरण।

हातो—दे० हाथो।

हाथ—(न०) १. हस्त। कर। २. कोहनी से मध्यमा अंगुली के सिरे तक की लंबाई का माप। ३. कंधे से पंजे तक का भाग। ४. ताश के खेल में जीता हुआ दांव। ५. दीवाल पर चित्रित या मंडित हाथ। ६. मदद। ७. प्रेरणा। ८. सम्मिलित। ९. सहायक। १०. अधिकार। वश। ११. कृपा। रहम। १२. कब्जा। (अव्य०) द्वारा। से।

हाथ अजमावणो—(मुहा०) १. मारपीट करना। २. काम का अभ्यास करना। ३. काम सीखना। ४. काम में प्रवृत्त होना।

हाथ अटकणो—(मुहा०) १. पैसा बीत जाना। २. आमदनी नहीं होना। ३. काम नहीं मिलना।

हाथ अड़कणो—(मुहा०) स्पर्श होना। हाथ लगाना।

हाथ अड़कावणो—(मुहा०) स्पर्श करना। छूना।

हाथ अहलो जाणो—(मुहा०) वार खाली जाना।

हाथ आगे करणो—(मुहा०) १. किसी से किसी वस्तु की याचना करना। २. भीख मांगना। ३. सहायता करना। ४. सहायता मांगना।

हाथ आडो करणो—(मुहा०) मना करना।

हाथ आणो—दे० हाथ आवणो।

हाथ आयो मोको खोणो—(मुहा०) उपलब्ध अवसर का लाभ नहीं उठाना।

हाथ-आरी दे० हाथ करवत।

हाथ आवणो—(मुहा०) १. मिलना। प्राप्त होना। २. पकड़ा जाना। ३. लाभ होना।

हाथ उगामणो—(मुहा०) मारने के लिये हाथ उठाना।

हाथ उठाऊ—(वि०) १. अप्रामाणिक। २. बेईमान। ३. चोर। ४. मार-पीट करने की आदत वाला।

हाथ उठाणो—(मुहा०) १. प्रहार करने के लिए हाथ को ऊंचा उठाना। २.

२. प्रहार करना । ३. अधिकार छोड़ना । ४. सहायता नहीं करना ।

हाथ उठावणो—दे० हाथ उठाणो ।

हाथ उतरणो—(मु.हा०) हाथ की जोड़ की किसी हड्डी का अपने स्थान से खिसक जाना ।

हाथ उतारणो—(मु.हा०) १. हाथ की हड्डी को तोड़ना । २. हाडवैद्य द्वारा हाथ की हड्डी के ठीक नहीं जुड़ने से वापस तोड़ना ।

हाथ उधार—(ना०) बिना लिखापढ़ी करवाये और बिना एवजाना लिये थोड़े समय के लिये दिया हुआ कर्ज ।

हाथ उपाड़णो—दे० हाथ उठाणो ।

हाथ उवांगणो—(मु.हा०) थप्पड़ या लाठी मारना ।

हाथ ऊपर करणो—(मु.हा०) १. दान देना । २. सहायता देना । ३. प्रतिस्पर्द्धा में जीतना । ४. यश प्राप्त करना ।

हाथ ऊपर राखणो—(मु.हा०) १. अपनी बात ऊपर रखना । २. सहायता करना । ३. जिद को कायम रखना ।

हाथ ऊपर लेणो—(मु.हा०) काम शुरू करना । प्रारंभ करना ।

हाथ ऊपर हाथ धर नै बैठणो—(मु.हा०) १. निकम्मा बैठा रहना । २. निष्क्रिय होना ।

हाथ ऊंचो करणो—(मु.हा०) १. दान देना । २. सहायता देना । ३. प्रतिस्पर्धा में जीतना ।

हाथ ऊंचो रहणो—(मु.हा०) १. विवाद मे जीत रहना । बात रहना । २. किसी के फंदे मे न फंस कर दोषमुक्त रहना ।

हाथ ऊंचो होणो—(मु.हा०) दानशील वृत्ति का होना ।

हाथ कट जाणो—(मु.हा०) अपने लिखे से बंध जाना ।

हाथकड़ी—दे० हथकड़ी ।

हाथ-कताई—(ना०) हाथ से सूत कातने का काम ।

हाथ कतियो—(वि०) (चरखे से) हाथ से काता हुआ (सूत) ।

हाथ करणो—(मु.हा०) १. कब्जे करना । २. ताश के खेल में दांव जीतना । ३. वश में करना ।

हाथ करवत—(ना०) हाथ से चलाई जाने वाली छोटी करवत । हाथआरी ।

हाथ कराणो—(मुहा०) १. वश में करना । २. प्राप्त करना ।

हाथ करोत—दे० हाथ करवत ।

हाथ कलम करणो—(मुहा०) पहुंचे में से हाथ काट देना ।

हाथ काटनै देणा—(मुहा०) १. लिख कर देना । लिख कर बंध जाना ।

हाथ काटनै लेणा—(मुहा०) लिखवा कर लेना ।

हाथ काठो करणो—(मुहा०) कंजूसी करना ।

हाथ काठो (घणो)—(वि०) अति कंजूस ।

हाथ काढणो—(मुहा०) १. अपना काम बना लेना । २. किसी को उधार दिये हुए पैसे हर प्रयत्न से प्राप्त करने मे सफल होना ।

हाथ कापै नै देणा—(मुहा०) खत, दस्तावेज आदि पर दस्तखत करके बंध जाना ।

हाथ-काम—(न०) १. विवाह काम का प्रारंभ । २. विवाह काम के प्रारंभ का (प्रथम) दिन । ३. हाथ की कारीगरी

या कला । ४. हाथ की कारीगरी का काम । ५. शोक, अशौच आदि की निवृत्ति करके मांगलिक कार्य हाथ मे लेना ।

हाथ काम-रो-तेड़ो—(मुहा०) १ विवाह आदि मांगलिक कार्य को शुरू करने के समय संबंधियों को दिया जाने वाला निमंत्रण । २. सर्वसाधारण स्वजाति वालों को उक्त काम की सूचना ।

हाथ काम लेणो—(मुहा०) १. विवाह का काम शुरू करना । २. काम शुरू करना ।

हाथ कारीगरी—(ना०) हाथ की कारीगरी । हस्तकला ।

हाथ काळा करणा—(मुहा०) १. कलंकित काम में सम्मिलित होना । २ कलंकित हो ऐसा काम करना । ३. रिश्वत लेना ।

हाथ कुळणो—(मुहा०) १. हाथ मे पीड़ा होना । २. मारपीट करना ।

हाथ कोनी देणो—(मुहा०) रजस्वला होना ।

हाथ कोनी लगाणो—दे० हाथ कोनी देणो ।

हाथ खर्ची—(ना०) १. छोटी मोटी चीजों तथा आवश्यकता के लिये परचून खर्चने की रकम । २. फुटकर खर्चने की क्रिया ।

हाथखर्च—(न०) फुटकर खर्च ।

हाथ खरड़णो—(मुहा०) १. अनुचित काम करना । २. मल आदि से हाथ भरना ।

हाथ खंखेरणो—(मुहा०) १. जोखिमदारी से दूर होना । २. काम से निबटना । ३. आशा छोड़ना ।

हाथ खाणो—दे० हाथ खावणो ।

हाथ खाली जाणो—(मुहा०) १. दांव चूक जाना । २. वार चूक जाना । ३. असफल होना ।

हाथ खाली होणो—(मुहा०) १. पास मे रुपया पैसा नहीं होना या नहीं रहना । २. करने लायक कोई काम पास मे नहीं होना ।

हाथ खावणो—(मुहा०) खूब क्रोध करना ।

हाथ खांचणो—(मुहा०) १. खर्च पर अंकुश रखना । २. मदद देना बंद करना । ३. किसी को देने में कंजूसी करना ।

हाथ खींचणो—(मुहा०) १. किसी काम से अलग हो जाना । २. कृपा भाव नहीं रखना । ३. खर्च में कमी करना । ४. (देने में) कंजूसी करना ।

हाथ खुजलाणो—(मुहा०) १. किसी को मारने का जी करना । २. आर्थिक लाभ होने के लक्षण दिखाई देना ।

हाथ खुलणो—(मुहा०) खर्च करने या दान देने मे अधिक उदार होना ।

हाथ खोलणो—(मुहा०) उदार होना ।

हाथ गरणो—(न०) १. स्त्री का किसी पुरुष को पति करना या पुरुष का किसी स्त्री को पत्नी बनाना । (बिना विवाह के) । (न०) पुनर्विवाह । नातो । (क्रि०) पुनर्विवाह करना । नातो करणो ।

हाथ गरम करणा—(मुहा०) १. रिश्वत देना । २. सर्दियों मे अग्नि से हाथ गरम करना । ३. रिश्वत लेना ।

हाथ गरेणो—(न०) किसी स्त्री से पुनर्विवाह करना । (न०) पुनर्विवाह । नातरो । नातो ।

हाथ गरेणो करणो—*(मुहा०)* पुनर्विवाह करना। नातरो करणो।

हाथ गाडो—*(न०)* हाथ से चलाया जाने वाला गाडा या ठेला।

हाथ घड़ी—*(ना०)* कलाई में बांधी जाने वाली घड़ी।

हाथ घालणो—*(मुहा०)* १. बीच में पड़ना। २. सामिल होना। ३. किसी काम को प्रारंभ करना।

हाथ घिसणा—*(मुहा०)* १. पछताना। २. कड़ी मेहनत करना। ३. सताप करना। मनस्ताप होना। बळापो करणो।

हाथ घिसाई—*(ना०)* १. परिश्रम। २. मेहनत। ३. पारिश्रमिक। मेहनताना। काम की उजरत। हाथ घिसामणी।

हाथ घिसामणी—दे० हाथ घिसाई।

हाथ घुसेड़णो—*(मुहा०)* हस्तक्षेप करना। दखल करना।

हाथ चडावणो—*(मुहा०)* टूटे हुये हाथ की हड्डी को जोड़ना या बिठाना।

हाथ चढणो—*(मुहा०)* १. कब्जे में आना। २. अकस्मात मिल जाना (शत्रु का)। ३. हाथ की टूटी हुई हड्डी का जुड़ना।

हाथ चलणो—*(मुहा०)* १. मारना। २. मारना शुरू करना। ३. काम चले इतना रुपया मिलना।

हाथ चलाणो—*(मुहा०)* १. काम करना। २. झपाटे बंध काम करना। ३. मारने के लिये हाथ उठाना। ४. झपाटाबंध खाना शुरू करना।

हाथ चाटणो—*(मुहा०)* १. इधर-उधर भटकना। फांका मारणो। २. पश्चात्ताप करना। ३. खाते समय शाक इत्यादि से भरे हुए हाथ को चाटना।

हाथ चाढणो—*(मुहा०)* हाथ की टूटी हुई हड्डी को जोड़ना।

हाथ चालणो—*(मुहा०)* १. खर्च योग्य आमदनी हो जाना। २. स्वस्थ रहना। ३. ऐसा स्वास्थ्य बना रहना जिससे दूसरों की सहायता के बिना अपना काम अपने आप करना।

हाथ चालाकी—*(ना०)* हाथ की चालाकी (जादूगर या मदारी के खेल में)।

हाथ चाळो—*(न०)* मारपीट।

हाथ चाळो करणो—*(मुहा०)* हाथापाई करना।

हाथ चुराणो—*(मुहा०)* १. काम से जी चुराना। २. ठीक ढंग से काम नहीं करना। काम से मन चुराना।

हाथ चोखा कोनी—*(मुहा०)* रजस्वला होना।

हाथ चोखा नी होणा—*(मुहा०)* स्त्री का रजस्वळा होना।

हाथ चोपड़णा—*(मुहा०)* १. रिश्वत देना। २. राजी करना।

हाथ छूटो होणो—*(मुहा०)* १. उदार होना। २. खर्चीला होना। ३. मारने की आदत होना।

हाथ छोड़णा—दे० हाथ नाखणा।

हाथ छोड़णो—*(मुहा०)* १. किसी के पकड़े हुये हाथ को छोड़ना। २. आश्रित व्यक्ति को और आश्रय नही देना। ३. प्रोत्साहन नही देना। ४. धोखा देना।

हाथ जमणो—*(मुहा०)* किसी काम में निपुण होना। अभ्यस्त होना।

हाथ जमावणो—*(मुहा०)* १. सुन्दर अक्षर लिखने के लिये किसी सुलेख पर पतला

कागज लगा कर लिखना । २. बोळ की पट्टी लिखना । ३. थप्पड़ मारना ।

हाथजळ—दे० हाथपाणी ।

हाथ जळ लेणो—(मुहा०) प्रतिज्ञा करना।

हाथ जोडणा—(मुहा०) १. करबद्ध होकर नमस्कार कहना । २. प्रार्थना करना । ३. हैरान होना । ४. विनती करना । ५. वास्ता नहीं माफी मांगना । ५. वास्ता नहीं रखना ।

हाथ जोड़णो—(मुहा०) १. नमस्कार करना । २. प्रार्थना करना । ४. विनती करना । ३. माफी मांगना । ४. टूटे हुये हाथ को जोड़ना । ५. मतलब नही रखना ।

हाथ जोवणो—(मुहा०) १. हस्त रेखायें देख कर भविष्य कहना । २. सामर्थ्य का परिचय देना । ३. हस्तकोशल दिखाना (शस्त्रादि चलाना) ।

हाथ झटकणो—(मुहा०) १. निराशोत्पा दाक उत्तर देना । २. किसी बीमार का इलाज नहीं लगने से निराश होकर डाक्टर की ओर से इलाज बंद कर देना ।

हाथ झाटकणा—दे० हाथ झटकणो ।

हाथ झाड़णा—(मुहा०) १. मदद देना बंद कर देना । २. पीटना । मारना ।

हाथ झालणो—(मुहा०) १. मदद करना। २. पत्नी बनाना । शादी करना । ३. हाथ पकड़ना । ४. रोकना ।

हाथ झेलणो—दे० हाथ झालणो ।

हाथ टाळणो—(मुहा०) १. बचाव करना। २. सहायता देना बंद करना ।

हाथ टेकणो—(मुहा०) १. हार जाना । २. हिम्मत हार जाना । पस्तहिम्मत होना ।

हाथ टूंटिया वळणो—(मुहा०) कंजूसी करना ।

हाथ ठरणा—(मुहा०) १. मरणासन्न होना । २. हाथों का ठंडा होना ।

हाथ-ठेलो—दे० हाथ गाडो ।

हाथ डालणो—(मुहा०) १. किसी काम में दखल देना । २. काम को प्रारंभ करना । ३. सहायता करना ।

हाथ डोरणो बांधणो—(मुहा०) १.विवाह का हाथ कंगन बांधना । २. विवाह करना ।

हाथ डोरो बांधणो—(मुहा०) किसी से बहिन या भाई का धर्म संबंध स्थापित करना ।

हाथ ढावणो—(मुहा०) १. सहायता बंद करना । २. सहायता करना ।

हाथ ढीलो करणो—(मुहा०) १. उदार होना । २. खर्च करना ।

हाथ ढीलो घणो—(मुहा०) १. खूब उदार । २. खर्चीला ।

हाथण—(ना०) हथिनी । हथणी । हाथी की मादा ।

हाथणी—(ना०) १. कपड़े वगैरह टांगने की खूंटी । दे० बील । २. हथिनी ।

हाथ तपावणा—दे० हाथ तपाणा ।

हाथ-तळे—दे० हाथ नीचे ।

हाथ तंग—(न०) रुपये-पैसों का प्रभाव ।

हाथ तंग होणो—(मुहा०) रुपयों-पैसों की दृष्टि से प्रभाव में होना ।

हाथ तापणा—(मुहा०) १. ठंड दूर करने के लिये अग्नि से हाथ तापना । २. स्वयं झगड़ा लगवा कर दूर खड़े तमाशा देखना ।

हाथताळो—(अव्य०) हाथ तालो दे इतनी देर में । अतिशीघ्र ।

हाथताळी देणी—(मुहा०) १. सफाई से छूट जाना या भाग जाना। २. छल करके भाग जाना।

हाथ थी जाणो—(मुहा०) १. कब्जे में से निकल जाना। २. बिगड़ जाना। भ्रष्ट होना।

हाथ दबणो—(मुहा०) १. असुविधाजनक स्थिति में फँस जाना। २. चरित्र अथवा किसी अन्य कमजोरी के कारण।

हाथ दबाय नैं खरच करणो—(मुहा०) मितव्ययिता से खर्च करना।

हाथ दाबणो—(मुहा०) १. पकड़ रखना। २. रिश्वत देना। ३. (गुप्त) इशारा करना। ४. मना करना। ५. हाथ की चंपी करना।

हाथ दिखाणो—(मुहा०) १. ताकत का परिचय देना। २. भविष्य जानने के लिये हाथ की रेखायें किसी को दिखाना। ३. होशियारी बताना। ४. बहादुरी बताना।

हाथ दिराणो—दे० हाथ दिरावणो।

हाथ दिरावणो—(मुहा०) १. सहारा देना। २. सहायता देना।

हाथ देखणो—दे० हाथ जोवणो।

हाथ देणो—(मुहा०) १. सहारा देना। २. सहायता करना। ३. प्रतिज्ञा करना।

हाथ देणो कोनी—दे० हाथ लगावणो कोनी।

हाथ देणो, माथै—(मुहा०) १. अफसोस करना। २. सहारा देना। ३. आश्वासन देना।

हाथ देरावणो—(मुहा०) मदद करना।

हाथ धरणो—(मुहा०) १. काम हाथ में लेना। शुरू करना। २. जिम्मेवारी लेना।

हाथ धूजणो—(मुहा०) १. देने की कंजूसी करना। हाथ काँपना।

हाथ धो नांखणा—(मुहा०) १. आशा छोड़ देना। २. दिवाला निकालना या दिवालिया होना। ३. जिम्मेवारी से दूर होना।

हाथ धोणा—दे० हाथ धोवणा।

हाथ धोय नैं बैठणो—(मुहा०) १. किसी वस्तु को गँवा बैठना। २. किसी बात की आशा छोड़ बैठना।

हाथ धोय नैं लारै पड़णो—(मुहा०) १. किसी बात के पीछे पूरी लगन से लग जाना। २. किसी का अनिष्ट करने के लिये पूरी शक्ति से पीछे पड़ना।

हाथ धोवणा—(मुहा०) १. निराश होना। २. भोजन करके आचमन करना।

हाथ नी अड़ावणो—(मुहा०) १. ऋतुमती होना। २. नहीं छूना।

हाथ नहीं धरवा देणो—(मुहा०) १. बात में या बहस में टिकने नहीं देना। २. किसी बात को जानते हुए भी अज्ञानता प्रकट करना। ३. उत्तरदायित्व नहीं लेना। ४. जानकारी को स्वीकार नहीं करना।

हाथ नांखणा—(मुहा०) १. निराश होना। २. बीमारी में इलाज न लग सकने के कारण डाक्टर की ओर से इलाज करना छोड़ देना।

हाथ नीचे—(अव्य०) १. अधीनता में। मातहती में। २. आश्रय में। ३. देखरेख में।

हाथ नीं हालणो—(मुहा०) १. आर्थिक संकट होना। रुपये-पैसों की तंगी

होना। २. रुपये-पैसे की तंगी के कारण किसी काम का समय सर नहीं होना।

हाथ नै हाथ नीं सूझणो—*(मुहा०)* बहुत अधिक अंधेरा होना।

हाथ पकड़णो—*(मुहा०)* १. सहारा देना। मदद करना।

हाथ पग—*(न०व०व०)* १. मुख्य आधार। २ हाथ और पग। हाथ-पैर।

हाथ-पग चलाणा—दे० हाथ पग हलावणो।

हाथ पग चालणा—*(मुहा०)* शक्तिमान होना।

हाथ पग जोड़णा—*(मुहा०)* बहुत अनुनय विनय करना।

हाथ पग टूटणा—*(मुहा०)* १. बुखार के पूर्व शरीर में दर्द होना। २. आधार रहित होना।

हाथ पग ठंडा होणो—*(मुहा०)* १. मरने की स्थिति मे होना। २ बहुत चिंता करने योग्य समाचार मिलना।

हाथ पग दाबणो—*(मुहा०)* १. खुशामद करना। २. हाथ-पैरों की चंपी करना।

हाथ पग नांखणा—*(मुहा०)* १. रोगी का कष्ट से हाथ पाँव पछाड़ना। २. कोशिश के बावजूद सफल न होना। ३. निराश हो जाना।

हाथ पग नांख देणा—*(मुहा०)* १. मरणासन्न हो जाना। २. मर जाना। ३. इलाज नहीं लगने से इलाजी का निराश होना।

हाथ पग पछाड़ना—*(मुहा०)* १. खूब प्रयत्न करना। २. खूब क्रोध करना।

हाथ पग पटकणा—*(मुहा०)* १. व्यर्थ का परिश्रम करना। २. बहुत क्रोध करना। ३. उछलकूद करना। ४. क्रोध में बड़बड़ाना। ५. जोर करना।

हाथ पग पाछा पड़णा—*(मुहा०)* १. निराश होना।

हाथ पग फूलणा—दे० हाथ पग फूलीजणो।

हाथ पग फूलीजणो—*(मुहा०)* १. घबराहट के कारण निस्तब्ध हो जाना। २. अत्यन्त घबराना।

हाथ पग फैलावणा—*(मुहा०)* १. अपने काम धंधे का अनेक स्थानों में खोलना, जमाना या विस्तृत करना।

हाथ पग भागणा—*(मुहा०)* १. अशक्त हो जाना। २. होशहवास उड़ जाना। ३. हिम्मत नहीं रहना। ४. पैसा बीत जाना। निर्धन होना।

हाथ पग मारणा—*(मुहा०)* १. कठिन परिश्रम करना। २. किसी के विरोध मे खूब उछलना कूदना। विरोध मे प्रचार करना। ३. क्रुद्ध होना।

हाथ पग समेट नै बैठ जाणो—*(मुहा०)* १. काम धंधा नहीं करना। २. आलसी होकर बैठ जाना।

हाथ पग सूजणा—*(मुहा०)* १. घबराना। २. हाथों पांवों पर सूजन आना।

हाथ पग हलावणो—*(मुहा०)* १. कोई भी काम धंधा करना। २. निकम्मा नहीं बैठे रहना। ३. परिश्रम करना।

हाथ पग हालणा—*(मुहा०)* १. उपाय सूझना। २. परिश्रम करने की शक्ति होना। ३. आजीविका चलाने की शक्ति होना। ४. स्वस्थ रहना। ५. अपना काम अपने आप कर लेना।

हाथ पग हिलावणो—दे० हाथ पग हलावणो।

हाथ पटकणो—(मुहा०) गर्व करना।

हाथ पड़णो—(मुहा०) १. किसी वस्तु का मिलना। २. जो हाथ में आये।

हाथ पसारणो—(मुहा०) १. भीख मांगना। २ असमर्थता प्रगट करना। ३. मरना। मृत्यु होना।

हाथ पसारियां जाणो—(मुहा०) मरना। मृत्यु होना।

हाथ पंखो—(न०) हाथ से चलाकर हवा डाला जाने वाला पंखा। वींजणो।

हाथ पाछो ठेलणो—(मुहा०) १. मना करना। रोकना। २. स्वीकार नहीं करना।

हाथ पाछो पड़णो—(मुहा०) काम करने में मन नहीं लगना।

हाथ पाणी—(अव्य०) १. प्रतिज्ञा। २. सौगंध। हाथ जळ। शपथ।

हाथ पाणी देणो—(मुहा०) १. प्रतिज्ञा करवाना। २. सौगंध दिलवाना।

हाथ पाणी लेणो—(मुहा०) १. निश्चय करना। २. प्रतिज्ञा करना। ३. किसी बात या काम को नहीं करने के लिये हाथ में पानी लेकर सौगंध खाना। शपथ लेना।

हाथ पाणी लेराणो- दे० हाथ पाणी देणो।

हाथ पाधरा रहवणो—(मुहा०) १. चुपचाप बैठे रहना। २. चंचलता न करना। छेड़खानी नहीं करना।

हाथ पाधरा राखणो—दे० हाथ पाधरा रहवणो।

हाथपान—(न०) हथेली के ऊपरी भाग पर पहिनने का स्त्रियों का एक आभूषण। हथफूल। हथांकळो।

हाथ पिसाई करणी—(मुहा०) कठिन परिश्रम करना।

हाथ पीळा—(न०) कन्या के विवाह का नाम। पीला हाथ।

हाथ पीळा करणा—(मुहा०) कन्या का विवाह करना। पीळा हाथ करणा।

हाथ पोलो करणो—(मुहा०) उदारता से खर्च करना या दान देना।

हाथ प्रत—(ना०) ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति। हस्तप्रति।

हाथ फिरणो—(मुहा०) १ उपाय सूझना। २. खर्च करने को पैसा मिलना।

हाथ फिराणो—दे० हाथ फिरावणो।

हाथ फिरावणो—(मुहा०) १. आशीर्वाद लेना। २. झाड़ा फूंका करवाना। सिर पर हाथ फिरा कर आशीर्वाद लेना।

हाथ फेरणो—(मुहा०) १ सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देना। माथै हाथ फेरणो। २. चोरी करना। ३. चापलूसी से धन हड़प करना।

हाथ फैलाणो—(मुहा०) १. सहायता की याचना करना। २. भीख मांगना। ३. व्यापार उद्योगों का एक से अधिक स्थानों में विस्तार करना।

हाथ फैलावणो—दे० हाथ फैलाणो।

हाथ फेंकणो—(मुहा०) १. कोशिश करना। २. चोपड़ ताश आदि में पासा या दांव फेंकना।

हाथ बणाणो—(मुहा०) ताश के खेल में अपना हाथ बनाना।

हाथ बतावणो—दे० हाथ दिखाणो।

हाथ वळणो—(मुहा०) १. असफल होना। २. परिश्रम व्यर्थ होना। ३. हाथ का जलना।

हाथ वँटाणो—(मुहा०) किसी के काम या जिम्मेवारी में भाग लेना।

हाथ वँध जाणो—(मुहा०) १. करते हुए को रुकना पड़े ऐसी स्थिति उत्पन्न होना। २. लिख कर देना। ३. लिखे हुए पर हस्ताक्षर करना।

हाथ-वाथ—दे० हाथवाथ।

हाथ-वारै—(अव्य०) अधिकार में नहीं। वश में नहीं। हाथ में नहीं।

हाथ-वारै करणो—(मुहा०) १. अपना अंकुश छोड़ना। २. देखरेख नहीं रखना।

हाथ-वारै होणो—(मुहा०) बेकाबू होना।

हाथ वाळणो—(मुहा०) १. खुद भोजन बनाना। २. अपना काम दूसरों से नहीं करवाना। ३. दस्तखत करके बंद जाना। ४. व्यर्थ का परिश्रम करना।

हाथ वाळो—(न०) व्यर्थ का परिश्रम। हाथ घिसाई। हाथ सिकाई।

हाथ वांधणा—(मुहा०) १. करना बंध हो जाय, ऐसा करना। २. लिखवा कर लेना। ३. हस्ताक्षर करवा देना।

हाथ विकणो—(मुहा०) १. पूरी तरह से वश में हो जाना। २. पूरी तरह से अनुयायी, भक्त या अनुरागी बनना।

हाथ-वुणाई—दे० हाथ-वुणावट।

हाथ वुणावट—(ना०) हाथ से की गई कपड़े की बुनाई।

हाथ वैठणो—(मुहा०) १. किसी काम पर हाथ जम जाना। २. अनुभव होना। अनुभव से सीखना। अनुभव से प्राप्त करना। ३. कुशलता प्राप्त होना। ४. दे० हाथ जमणो।

हाथ भरणा—(मुहा०) १. बुरा काम करना। २. रिश्वत लेना। ३. कपड़े को हाथ से मापना। ४. कलंकित होना।

हाथ भरणा, काळख थी (काळख थी हाथ भरणा)—(मुहा०) १. गर्हित काम करना। २. कलंकित होना।

हाथ भरणा काळख सूं (काळख सूं हाथ भरणा)—दे० हाथ भरणा, काळख थी।

हाथ भरी जणो—(मुहा०) १. मल आदि से हाथ भर जाना। २. पापकर्म में फँसा होना।

हाथ भाटा हेटै आणो - (मुहा०) १. किसी के दबाव में आना। २. विवश होना।

हाथ भाळणो—दे० हाथ जोवणो।

हाथ भीड़ से होणो—(मुहा०) रुपये-पैसे की तंगी होना।

हाथ मसळणो—(मुहा०) १. असफलता के बाद पछताना। २. पश्चाताप करना।

हाथ मँजणो—दे० हाथ जमणो।

हाथ माथै हाथ धरनै बैठो रहणो—(मुहा०) बिल्कुल कुछ न करते हुए बैठा रहना। निरुद्यम होना।

हाथ माथो कूटणो—(मुहा०) १. रोना। २. बकवाद करना। ३. विरुद्ध प्रचार करना। निंदा करना।

हाथ मार—(न०) चोर। तस्कर।

हाथ मारणो—(मुहा०) १. चोरी करना। २. बेईमानी से प्राप्त करना। ३. दीवाल पर सफेदी का हाथ फेरना। ४. किवाड़ आदि पर रंग रोगन चुपड़ना।

५. पेट भर कर खाना। ६. जीत जाना। ७. चालाकी से या फुर्ती से प्राप्त करना। ८. किसी की मौजूदगी में आँख बचा कर वस्तु उड़ा लेना। ६. बचने के लिये संपूर्ण प्रयत्न करना।

हाथ मारी—*(ना०)* तस्करी। चोरी।

हाथ माँजणो—*(मुहा०)* १. पश्चात्ताप करना। २. शौच जाकर हाथों को मिट्टी-पानी से धोना या साफ करना।

हाथ माँडणो—*(मुहा०)* १. भिक्षा माँगना। २. विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर हथेली में कुंकुम लगा कर छापा मारना। ३. हाथ मे महावर या मेंहदी लगाना। ४. किसी वस्तु को ग्रहण करने के लिए हाथ पसारना। ५. हाथ का चित्र बनाना। कागज, कपड़े आदि पर हाथ चित्रित करना।

हाथ मिलाणो—*(मुहा०)* १. मित्रता करना। २ प्रेम प्रगट करना। ३. रिश्वत देना। ४ किसी से मिलने समय परस्पर हाथ मे हाथ देकर नमस्कार (की आधुनिक विधि का संपादन) करना।

हाथ मिलावणो—दे० हाथ मिलाणो।

हाथ मुकावण—*(न०)* पाणिग्रहण। हथलेवो।

हाथ मूंडो धोवणो—*(मुहा०)* स्वस्थ होना।

हाथ मेळावो—*(न०)* हस्तमिलाप। हाथ मुकावण।

हाथ मेहनत—*(ना०)* १. हाथ की मेहनत। २. निज का परिश्रम।

हाथ में—*(अव्य०)* अधिकार में। तावे मे।

हाथ में आणो—*(मुहा०)* १ (बच्चे की) मृत्यु होना। २. प्राप्त होना।

हाथ में आयोड़ो हीरो गमायो—*(पद)* अवसर चूक जाना।

हाथ में करणो—*(मुहा०)* १. अधिकार या कब्जे में करना। २. वश में करना।

हाथ में खाज आणी—*(मुहा०)* पैसा मिलने की कल्पना या संभावना होना।

हाथ में खाज हालणी—*(मुहा०)* १. धन-प्राप्ति (के योग) की संभावना होना। २ अपने हाथ से सब कुछ खो देना।

हाथ में गंगाजळ देणो—*(मुहा०)* १. सौगंध खिलाना। २. प्रतिज्ञा करवाना।

हाथ मेंगंगा जळ लेणो—*(मुहा०)* १. सौगंध खाना। २. प्रतिज्ञा करना।

हाथ में चूड़ी पहरणी—*(मुहा०)* १. नामर्द होना। २ कायर होना। बेहिम्मत होना।

हाथ में जळ लेणो *(मुहा०)* १. संकल्प करना। २. प्रतिज्ञा करना।

हाथ मे जळ लेराणो *(मुहा०)* १. प्रतिज्ञा करवाना। २. सकल्प कराना।

हाथ में जस—*(मुहा०)* १. काम मे सफलता। २. ऐसा भाग्य या भोग की प्राप्ति जो हरेक काम मे हमेशा सफलता देता है।

हाथ में जस होणो—*(मुहा०)* १. काम में सफलता मिलना। २. हरेक काम में हमेशा सफलता मिलना।

हाथ में जस होवणो—दे० हाथ में जस होणो।

हाथ में ठीकरो लेणो—*(मुहा०)* भीख माँगना।

हाथ मे तिल ऊगरणा —(मुहा०) चमत्कार होना।

हाथ में नी होरणो—(मुहा०) १. अधिकार मे नही होना। २. वश के बाहर की बात होना।

हाथ में पड़रणो—(मुहा०) १. वश में होना २. कब्जे मे आना।

हाथ में पोतड़ी लेनै नाठरणो—(मुहा०) घबराकर या डर कर भाग जाना।

हाथ में रहरणो—(मुहा०) १. वश में रहना। २. कब्जे मे रहना।

हाथ मे वांइटा आवरणा—(मुहा०) १. देते समय दुख होना। २. दिया नही जाना। ३. हाथ मे वातरोग से दर्द होना।

हाथ में हाथ देरणो—(मुहा०) १ पारिण-ग्रहण करना। २. कन्यादान करना। ३. प्रतिज्ञा करना। वचन देना।

हाथ में हीरो आरणो—(मुहा०) १ बड़ा लाभ होना। २. श्रेष्ठ या मनोवांछित वस्तु का प्राप्त होना।

हाथ में हुनर होरणो—(मुहा०) किसी कला या उद्योग का ज्ञान होना।

हाथ में है—(पद) अधिकार मे है।

हाथ में होरणो—(मुहा०) १. अधिकार में होना। अधिकार की बात होना। २. कब्जे मे होना।

हाथ मोकळो करणो—(मुहा०) १. दान देना। २. पिटाई करना। ३. उदारता दिखाना।

हाथ रखारणो—(मुहा०) दे० हाथ रखावरणो।

हाथ रखावरणो—(मुहा०) १. सहायता देना। २. सहारा देना।

हाथ रगड़रणो—(मुहा०) पछताना।

हाथ रंगरणो—(मुहा०) १. कलंक लगे जैसा काम करना। गर्हित काम करना। खून से हाथ रंगना। २. किसी के सुपुर्द किये हुये काम में अपना मतलब बनाना।

हाथ रा किया हीये वळगै—(मुहा०) किये हुये कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

हाथ रा कोई वे वोर ही नीं ले—(मुहा०) १. गदा। २. बदसूरत। ३. गरीब। दीन। ४. घृणा करते है।

हाथ राखरणो—(मुहा०) १. सहारा देना। २. मदद करना।

हाथ री—(अव्य०) अपने वश की। अपने अधिकार की।

हाथ री आंगळियां ही सीरीसी कोनी—(मुहा०) सबका एक समान न होना। सब के गुरण, स्वभाव, रंग इत्यादि एक समान नही होते।

हाथ री खाज भांगरणी—(मुहा०) १. पीटने की इच्छा पूरी करना। २. बिना काररण मारना।

हाथ री वात—(मुहा०) १. अधिकार की बात। २. शक्ति की बात।

हाथ री सफाई देखावरणो—(मुहा०) १. चमत्कार दिखाना। २. कारीगरी दिखाना।

हाथ रुकरणो—(मुहा०) १. खर्च से तंग आजाना। २. खर्च करने को पैसा नहीं मिल सकना। ३. अड़चन पैदा होना। रुकावट होना।

हाथ रै नीचे—(अव्य०) १. मातहत। २. अधिकार में। मातहती में।

हाथ रै नीचे ग्रावणो—(मुहा०) १. किसी के काम में ग्राना। २. दूसरे के लिए हानि या कष्ट उठाना। ३. ग्रधीन बनना।

हाथ रो—(वि०) १. हाथ का बनाया हुग्रा। खुद का बनाया हुग्रा।

हाथ रो उत्तर देणो—(मुहा०) १. भीख माँगने वाले को मना न कर कुछ देना। २. भिक्षा देना। ३. दान देना।

हाथरो कस काढणो—(मुहा०) खूब मार मारना।

हाथ रो काचो—(पद०) चोर। तस्कर।

हाथ रो कियोड़ो—(मुहा०) खुद का किया हुग्रा।

हाथ रो कुरब—(पद०) सम्मान के पन्द्रह प्रकारों में से एक प्रकार जो राजा द्वारा किसी सामंत,जागीरदार ग्रादि को राजा की सेवा में जाने पर दिया जाया करता था। हाथ रा कुरब के दो भेद होते थे। किसी से एक हाथ मिलाने ग्रौर किसी से दोनों हाथ मिलाकर सम्मान देने की परंपरा निश्चित कर दी जाती थी। एक हाथ मिलाने का सम्मान इकेवड़ी ताजीम ग्रौर दोनों हाथ मिलाने सम्मान का दोवड़ी ताजीम कहा जाता था।

हाथ रो खरो—(पद०) १. ईमानदार। प्रामाणिक।

हाथ रो छूटो—(मुहा०) १. हाथ में ग्रावे उतना ही खर्च कर देने वाला। उडाऊ। २. मारने की ग्रादत वाला। ३. उदार।

हाथ रो ठंडो—(मुहा०) काम करने मे धीमा या ग्रालसी।

हाथ रो ठाडो—दे० हाथ रो ठंडो।

हाथ रो ढीलो—(मुहा०) ग्रधिक खर्च करने वाला।

हाथ रो धीमो—(मुहा०) दे० हाथ रो ठंडो।

हाथ रो पोलो (मुहा०) १. उदार। २. खर्चीला।

हाथ रो फोरो होणो—(मुहा०) १. कंजूस होना। २. लेकर वापस नहीं देना।

हाथ रो माठो—(मुहा०) १. ग्रालसी। २. कंजूस। कृपण।

हाथ रो मैल—(मुहा०) १. जिसको देने मे हिचक न हो। २. तुच्छ वस्तु। ३. परिश्रम करके कमाया हुग्रा पैसा। ४. पैसा कमाने का साहस।

हाथ रो मैलो—(मुहा०) १. ग्रप्रामाणिक। २. कृपण। कंजूस।

हाथ रो मोकळो—(मुहा०) उदार।

हाथ रो साचो—(मुहा०) १. ईमानदार। २. निपुण। कुशल।

हाथ रो साचो होणो—(मुहा०) १. प्रामाणिक होना। २ ग्रपने ग्रधिकार मे ग्राई हुई या कही से मिली हुई वस्तु को सम्हाल कर मालिक को वापस करना। ३. चोरी नही करना।

हाथळ—(ना०) १. हाथ के पंजे के समान एक शस्त्र। २. हथेली। हत्थल। ३. सिंह ग्रादि हिंसक पशुग्रो के ग्रगले पाँव का पंजा।

हाथ लगाणो—(मुहा०) १. हाथ से स्पर्श करना। छूना। २. सहारा देना। ३. ऋतुमती का शुद्ध होना।

हाथ लगावणो कोनी—(मुहा०) रजस्वला स्त्री का घर के कामकाज को ग्रशौच के कारण नहीं किया जा सकना।

हाथळचेरी—(ना०) दासी।

हाथ लंबावणो—(मुहा०) १. भीख मांगना। २. मदद मांगना। ३. मदद करना।

हाथ लागणो—(मुहा०) १ हाथ से स्पर्श होना। २. मिलना। प्राप्त होना। ३. जोड़ लगाते समय दहाई की संख्या जो आगे जोड़ी जाती है।

हाथ लागो—(न०) जोड़ लगाते समय दहाई की सख्या जो आगे जोडी जाती है।

हाथ लांबो करणो—दे० हाथ लंबावणो।

हाथळियो हळ—दे० हाथळियो हळियो।

हाथळियो-हळियो— (न०) वह छोटा हल जिसको मनुष्य खींचकर खेत खडता है।

हाथळो—(न०) १. हाथ का कवच। २. चक्की का हत्था। हाथो।

हाथ वढाणो—(मुहा०) १ लिख कर देने से बँध जाना।

हाथ-वणाट—दे० हाथ बुणाई।

हाथ-वणावट—दे० हाथ-वणाट।

हाथ वाळणो—(मुहा०) १. काम करना। २. पूरी तरह और ढंग से परोसना। परोसने में कोताई न करना। ३. काम का अभ्यस्त होना।

हाथवसु—(वि०) १. हाथ की रखी हुई। खुद की रखी हुई। २. निकट। पास। ३. हाथ डालते ही मिल जाने वाली। ४. अधिकार की। हाथवंत।

हाथ वसु कोनो—(मुहा०) १. सहज ही मे किसी वस्तु का न मिल सकना। २. अधिकार मे नही होना।

हाथ वहणो—(मुहा०) १. थप्पड़, लाठी आदि मारने को हाथ उठाना। २. काम मे हाथो को फुरती से चलाना। (न०) हाथ से चलाई जाने वाली करवत।

हाथवाई करणो—(मुहा०) १. मारामारी करना। २ अभ्यास करना।

हाथ वाढणो—(मुहा०) १. लिख कर लेना। लिख करके बंधन मे डालना। फँसा देना।

हाथ वाढ़नै देणा—(मुहा०) हाथ से लिख कर देना तथा बँध जाना।

हाथ वाढनै लेणा—(मुहा०) १. किसी से लिखवा कर लेना। २. लिखावट द्वारा बाँध लेना। ३. लिखावट पर हस्ताक्षर कराना।

हाथवाय—दे० हथवाह।

हाथ वाळणो—(मुहा०) १. उदार होना। २. हाथ से देना। देने के लिए हाथ झुकाना। ३. ठीक तरह से परोसना। परोसने मे न्यूनता न दिखाना।

हाथवाही—(ना०) १. मारामारी। हाथापाई। २. हथोटी।

हाथवेंत—(अव्य०) १. अधिकार में। वश में। २. पास। निकट। हाथवसु।

हाथ समेटणो— (मुहा०) १. कंजूसी करना। २. खर्च कम करना। ३. काम नही करना। ४. काम करना बंद कर देना।

हाथ समेट नै बैठणो—(मुहा०) १. काम नही करना। २. काम करना बंद कर देना।

हाथ सरकणो—(मुहा०) रुपये-पैसे की सुविधा होना।

हाथ सकड़ाई मे आणो—(मुहा०) पैसे की तगी होना।

हाथ सकड़ीजणो—(मुहा०) १. आमदनी

नही होना । २. पास में पैसा नही होना ।

हाथ साफ करणो —*(मुहा०)* चालाकी से उड़ा लेना या हथिया लेना ।

हाथ साफ कर देणो—*(मुहा०)* सफाया कर देना ।

हाथ साकड़ में होणो—*(मुहा०)* पैसे की तगी होना ।

हाथ सांकळो —दे० हथपान ।

हाथ सांधणो—*(मुहा०)* हाथ की टूटी हुई हड्डी को जोड़ना ।

हाथ सिकाई—*(ना०)* १. व्यर्थ का परिश्रम । २ हाथ सेकने का काम ।

हाथ-सिलाई—*(ना०)* हाथ से (मशीन की नही) की जाने वाली सिलाई ।

हाथ-सिवाई— दे० हाथ-सिलाई ।

हाथ सूजणो—*(मुहा०)* १. किसी को मारने के लिए हाथो का मजबूत होना (व्यंग्य मे) २. किसी बीमारी के कारण हाथों का सूजना ।

हाथ सूं—*(प्रव्य०)* द्वारा । मारफत । हाथ से ।

हाथ सूं काम निकाळणो—*(मुहा०)* १. निरुद्यम होना। पास मे काम नही होना। २. बरखास्त होना ।

हाथ सूं जाणो—दे० हाथ सूं निकळ जाणो ।

हाथ सूं निकळ जाणो—*(मुहा०)* किसी वस्तु, बात, काम या व्यक्ति का नियंत्रण के बाहर चले जाना ।

हाथ सूं निकळणो—दे० हाथ सूं जाणो।

हाथ सूं पालणो—*(मुहा०)* १. मना करना। २. मना करने का इशारा करना ।

हाथ सूं राख उड़ावणो—*(मुहा०)* अपनी प्रतिष्ठा स्वयं खोना ।

हाथ सूं राख नांखणो—दे० हाथ सूं राख उड़ावणो ।

हाथ सूं वरजणो—दे० हाथ सूं पालणो।

हाथ सूं हाथ नही वढै—*(मुहा०)* अपने अपराध का फैसला अपने आप से नही होता ।

हाथ सूं हाथ नही सूझणो—*(मुहा०)* बहुत अधिक अंधेरा होना ।

हाथ सोरो चालणो—*(मुहा०)* खर्च मुताबिक आमदनी होना ।

हाथ सोरो फिरणो—दे० हाथ सोरो चालणो ।

हाथ सोरो हालणो—दे० हाथ सोरो चालणो ।

हाथ हजारां—*(न०)* १. हजार हाथो वाला । परमेश्वर । २. सहस्रबाहु ।

हाथ-हळ—दे० हाथळियो-हळियो या हाथहळियो ।

हाथ हळको होणो—*(मुहा०)* १. हाथ से काम करते समय कोई बिगाड़ या चोट न लगे, ऐसी सहजता से काम करना। २. विधवा होना ।

हाथ हलावता आवणो—*(मुहा०)* १. खाली हाथ वापस आना । २. काम सिद्ध किये बिना वापस लौट आना । ३. खाली हाथ आना ।

हाथ-हळियो—(न०) बैलों के स्थान पर स्त्री या पुरुष द्वारा चलाया जाने वाला छोटा हल । हाथळियो-हळियो । हाथळियो ।

हाथ-हाथ भर— *(प्रव्य०)* १. नाप में एक-एक हाथ । २. एक-एक हाथ के नाप से। ३. एक-एक हाथ के (लंबे टुकड़े) ।

हाथ हालणो—(मुहा०) पीटना । मारना ।

हाथहेटो—दे० हाथ नीचे ।

हाथ हेटैं पड़णो—(मुहा०) १. कोई उपाय न होना । २. निराशा मिलनी । ३. हिम्मत हारना । हिम्मतहार होना ।

हाथ हेठै—दे० हाथ हेटै ।

हाथ होणो—(मुहा०) १. अधिकार मे होना । २. षड़यंत्र मे शामिल होना ।

हाथा-जोड़ी—(ना०) १. खुशामद । २. विनय । ३. मनाने का प्रयत्न ।

हाथा-पाई—(ना०) १. हाथों से ठोका-पीटी करना । हाथों से ठोका-पीटी की लड़ाई । २. परस्पर मारपीट होना । ३. भिड़न्त ।

हाथाळ—(वि०) १. वीर । बहादुर । हाथाळो । २. दृढ़ हाथों वाला । (न०) सिंह ।

हाथाळी—(ना०) १. हथेली । २. वीर स्त्री । बाहुड़ी । ३. सिंहिनी ।

हाथाळो—(वि०) १. वीर । बहादुर । हाथाळ । २. दृढ़ हाथो वाला । (न०) सिंहिनी ।

हाथावाई—(ना०) मारा-मारी । मार-पीट । हाथा-पाई ।

हाथांकळो—दे० हाथपान ।

हाथां-पगां—दे० हाथे-पगे ।

हाथां-पगां पड़णो—दे० हाथे-पगे पड़णो ।

हाथां-पगां लागणो—दे० हाथे-पगे लागणो ।

हाथां-पगां सैंठो—(वि०) जिसके हाथ-पाँव मजबूत हैं । अत्यन्त दृढ़ । जोरावर ।

हाथां-पगां होणो—दे० हाथे-पगे होणो ।

हाथां वळणो—दे० हाथे वळणो ।

हाथां भरणो—(मुहा०) किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई को हाथ से (कोहनी से हथेली के बीच को अंगुली तक) नाप करना । हाथ से नाप कर परिमाण निकालना ।

हाथां मरणो—दे० हाथे मरणो ।

हाथां में अधर राखणो—(मुहा०) खूब लाड़ से रखना ।

हाथ में आवणो—(मुहा०) बच्चे का (बीमारी से) मरणासन्न होना ।

हाथां री मेंहदी उतरणी—(मुहा०) काम करना । (काम नहीं करने की स्थिति मे व्यंग्य मे कहना) ।

हाथी—(न०) १. हस्ती । गज । २. शत-रंज की एक गोट । ३. महतर । भंगी (जोधपुर मे) ।

हाथीखानो—(न०) गजशाला । फील-खाना । फीलखाणो ।

हाथी दांत—(न०ब०व०) हाथी के मुँह के दोनों ओर निकले हुये दो लंबे दांत । २. हाथी का (बाहर निकला रहने वाला) दांत ।

हाथी-दांत-रो-चूड़ो—(न०) हाथी-दांत को चीर कर बनाया हुआ स्त्रियों के हाथो मे पहनने की चूड़ियों का सैट ।

हाथीपगो—(न०) १. घुटने के नीचे पांव के मोटा हो जाने की बीमारी । फील-पांव । हाथीपांव । २. एक प्रकार का बढ़िया कत्था । (वि०) वह जिसको फीलपांव की बीमारी हो ।

हाथीभाटो—(न०) अजमेर का एक प्रसिद्ध स्थान, जिसके संबंध में कहा जाता है कि मारवाड़ के निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री हरिपुरुषजी ने एक शराब पिये हुये हाथी को शाप देकर पत्थर बना दिया था ।

हाथीवान—*(न०)* पीलवान ।

हाथे—*(ग्रव्य०)* १. हाथ से । २. हाथ में । ३. अपने ग्राप । ४. खुद ने । ५. हाथ पर ।

हाथे ग्राणो—दे० हाथे ग्रावणो ।

हाथे ग्रावणो—*(मुहा०)* १. खोई हुई वस्तु का मिल जाना । २. छिपे हुये ग्रथवा छिपाये हुये का मिल जाना । ३. हाथ मे ले सकना । ४. मिलना । प्राप्त होना । ४. पकड़ा जाना ।

हाथे करणो—*(मुहा०)* किसी से नही करवा कर अपने ग्राप करना । स्वय करना ।

हाथे करनै—*(मुहा०)* स्वेच्छा से । इरादा-पूर्वक ।

हाथे करम फोड़णो—*(मुहा०)* ग्रपने ग्राप ग्रापत्ति को बुलाना ।

हाथे चढणो—*(मुहा०)* १. काम हाथ लगना । २. काम करना ग्रा जाना । ३. काम में मन लगना । ४. बहुत ढूंढने के बाद मिलना । ५. भेंट हो जाना । ६. पकड़ मे ग्राना ।

हाथे डूबणो—*(मुहा०)* ग्रपने ग्राप ऐसा काम करना, जिससे हानि उठानी पड़े ।

हाथे दुख में पड़णो—*(मुहा०)* ग्रपने ग्राप ऐसा काम करना, जिससे दुख उठाना पड़े ।

हाथे-पगे—*(ग्रव्य०)* १. हाथों ग्रौर पांवों से (स्वस्थ) । २. सब प्रकार से (दृढ़)।

हाथे-पगे पड़णो—*(मुहा०)* खुशामद करना ।

हाथे-पगे लागणो—दे० हाथेपगे पड़णो ।

हाथे-पगे होणो—*(मुहा०)* १. चलने-फिरने लायक होना । २. स्थिति सुधरना । ३. स्थिति बिगड़ना । ४. ग्रसहाय होना ।

हाथे वळणो—*(मुहा०)* १. परिश्रम का फल नही मिलना । २. व्यर्थ का परिश्रम करना । ३. ग्रपने हाथो से जलना ।

हाथे भरणो *(मुहा०)* किसी वस्तु को लबाई-चौड़ाई को हाथ से (कोहनी से हथेली की बीच की ग्रंगुली तक) नाप कर परिमाण निकालना ।

हाथे मरणो—दे० हाथे डूबणो ।

हाथे लागणो—*(मुहा०)* १. मिलना प्राप्त होना । २. हाथ लागणो ।

हाथो—*(न०)* १ बलिदान या सती होने के समय जूझार या सती के द्वारा दीवार पर कुंकुम से हाथ का लगाया हुग्रा छापा । २. चक्की, मशीन ग्रादि को चलाने के लिए पकड़ने का डंडा । हत्था । जैसे—हाथोड़ा रो हाथो । ३. षड़यन्त्र का कारण । ४. ग्रस्त्र, ग्रौजार ग्रादि का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है । मूठ । हत्था । ५. पक्ष । ६. ग्रहाता । घेरा । बाड़ो ।

हाथोटी—*(ना०)* १. हाथ से बनाई जाने वाली वस्तु । २. हाथ से बनाई हुई वस्तु की शिल्पकला । ३. हाथ की कारीगरी । ४. किसी वस्तु को हाथ से बनाने का ग्रपना ढग ।

हाथोड़ी—*(न०)* छोटा हथोड़ा । हथोड़ी।

हाथोड़ो—दे० हथोड़ो ।

हाथो वणणो—*(मुहा०)* षड़यंत्र का कारण बनना ।

हाथोहाथ—*(ग्रव्य०)* १. सब मिल कर । २. साथ का साथ । एक साथ मे । ३. ग्रपने ही हाथ से दूसरे के हाथ में (किसी वस्तु को देना) । ४. खुद को ।

५ जिसको देने का हो उसी के हाथ मे या उसी को। खुद व खुद । ६. एक दूसरे की मदद से। परस्पर की सहायता से। ७. प्रत्यक्ष। स्वरू। ८. तुरत। तत्काल।

हाथो हाथ करणो—(मुहा०) १. सबके साथ खुद भी काम मे जुट जाना। २. सबके साथ काम में लग जाना।

हाथो हाथ दिखावणो—(मुहा०) तत्काल बदला लेना।

हाथो हाथ देणो—(मुहा०) अपने हाथ से सही व्यक्ति को वस्तु सोपना।

हाथो हाथ लावणो—(मुहा०) १. खुद ले आना। २. किसी की दी हुई वस्तु स्वयं वापस लाना।

हाथोहाथां—दे० हाथोहाथ।

हान—(ना०) हानि। नुकसान। घाटो। दे० हानो।

हानरणो—(क्रि०) स्वीकार करना। हांकरणो।

हा-ना—(अव्य०) १ स्वीकृति या अस्वीकृति। २. आनाकानी।

हानी—(ना०) नुकसान। हानि।

हानै—(अव्य०) १. सर्वथा निकट। पास मे रखी हुई (कोई वस्तु)। २. उपलब्ध। ३. जरूरत पड़ने पर ढूंढना नही पड़े ऐसी जगह या स्थिति मे।

हानो—(न०) ऊंट के पलान की अगली बैठक का उठा हुआ भाग जिसमे पानी का बादला आदि टंगा रहता है।

हापुस—(न०) १. आम की एक जाति। २. बढ़िया जाति का आम्र फल।

हांपू—(ना०) १. बच्चों को डराने का एक काल्पनिक जानवर। २. अक-डोडिये का हवा में उड़ता रेशा।

हाफिज—(न०) रक्षक। (वि०) जिसको समस्त कुरान कंठस्थ हो।

हाफी—(अव्य०) 'आप ही' का अपभ्रंश रूप। अपने आप। स्वतः।

हाबो—(न०) १. चिल्लाहट। २. शोर। हाहू। हाहो।

हाम—(ना०) १. हिम्मत। २. इच्छा। ३ साहस। ४. बाहुपाश।

हामकामलोचणी—(ना०) साहसी व कामपूर्ण नेत्रो वाली।

हामठाम—(न०) १. वैभव। ऐश्वर्य। २. भू-सम्पत्ति।

हाम ठाम नै दाम—(न०) १. वैभव। २. भू-सम्पत्ति। (वि०) स्वास्थ्य और हिम्मत वाला।

हाम भीड़णो—(मुहा०) १. साहस करना। २. कठिन से कठिन काम को कर गुजरना। ३. कठिन से कठिन काम करने के लिए तत्पर रहना। ४. बहुत भारी साहस का काम करना।

हामळ—(ना०) १. स्वीकृति। २. 'हां' करने की क्रिया या भाव। ३. प्रेम। ४. मिलनसारी।

हामळणो—(क्रि०) १. मिलना। २. मिलजुल कर रहना या काम करना। ३. खुश होना। ४. खुश करना। ५. मजूर करना।

हामळ भरणो—(मुहा०) स्वीकार करना। हां कहना।

हामळो—(वि०) १. घर वालो से प्रेमपूर्वक बर्ताव रखने वाली। २. मधुरभाषिणी।

हामळो—(वि०) १. मेल-मिलाप रखने वाला। मिलनशील। २. प्रेम। ३. खुशमिजाज। ४. मधुरभाषी।

हामी—(ना०) १. स्वीकृति। २. सहायता। मदद। (वि०) १. साहसी। हिम्मत वाला। हौमती। २. सहायता करने वाला। मददगार। ३. हाम भरने वाला।

हामी भरणो—(मुहा०) स्वीकार करना।

हामू—(वि०) १. हिम्मत वाला। २. युद्धार्थी। ३. इच्छा रखने वाला। (न०) महाराणा हमीर का काव्य नाम।

हाय—(ना०) १. दर्द, पीड़ा, शोक आदि का सूचक शब्द। २. दुराशीष।

हाय जंपो—(न०) १. हाय हाय। २. बीमारी में हाय-हाय उद्गार। ३. पश्चात्ताप। ४. उतावली। दौड़ादौड़। ५. लोभवृत्ति।

हायण—(न०) वर्ष। साल। बरस।

हायतोबा—(अव्य०) १. व्यर्थ का शोरगुल। २. व्यग्रता।

हाय तोबा करणो—(मुहा०) १. व्यर्थ का शोरगुल मचाना। २. दुःख या दर्द से व्यग्र होना।

हाय-थू—(न०) घृणासूचक शब्द।

हायन—दे० हायण।

हाय वो—(न०) १. शोर। कूको। २. लोभवृत्ति। ३. दौड़ा-दौड़। ४. अशांति।

हाय लागणी—(मुहा०) शाप लगना। दुराशीष लगना।

हाय हाय—(अव्य०) १. शोक, दुख आदि प्रकट करने का शब्द। २. अशांति।

हाय हाय करणो—(मुहा०) कुछ प्राप्त करने की तीव्र लालसा के कारण भाग-दौड़ करना या व्यग्र होना। २. दुखा-वेश मे तड़फना।

हायो—दे० हाथलो।

हार—(न०) १. पंक्ति। श्रेणी। कतार। श्रोळ। २. पराजय। ३. थकावट। शिथिलता। ४. गले में पहनने की फूलों की माला। ५. गले का एक आभूषण। ६. हानि। क्षति। ७. कर्तासूचक एक प्रत्यय। यथा—तारण-हार।

हार खाणी-खाणो—(मुहा०) १. हारना। हार जाना। २. हार स्वीकार करना। ३. हैरान होना।

हार जाणो—(मुहा०) हारना। पराजित होना।

हार-जीत—(ना०) जय-पराजय।

हारड़ो—दे० हारलो।

हारण—(वि०) १. जो थकावट के कारण धीमा पड़ गया हो। धीमो। २. शिथिल। ढीलो। ३ कमजोर दिल का। ४. हिम्मतपस्त। ५. बीमारी की पीड़ सहन करने मे असमर्थ। ६. अधीर। ७. कमजोर मन का। ८. अशक्त।

हारणारो—दे० हारणियो।

हारणियो—(वि०) १. हारने वाला। पराजित। २. थकने वाला। ३. अशक्त। ४. असफल। ५. बाजी नहीं जीतने वाला।

हारणो—(क्रि०) १. हारना। पराजित होना। २. थक जाना। ३. खोना। गंवाना। ४. प्रयत्न में असफल होना।

५. वितलाना। खतम करना। ६. भय खाना। हिम्मत छोड़ देना। ७. बाजी गँवाना। ८. अपनी चीज को मजबूरन गँवा देना।

हारद—(न०) स्नेह

हारबंद—(न०) पंक्तिबद्ध।

हारमोनियम—(न०) संदूक के आकार का एक वाद्ययंत्र।

हार-मोर—(क्रि०वि०) गायब।

हार-मोर होणो—गायब होना।

हारल—(वि०) १. हारा हुआ। पराजित। २. अशक्त। कमजोर।

हार-लीला—(ना०) श्री राधा के हार चुराये जाने का एक सुन्दर आख्यान।

हारवणो—(क्रि०) १. हारना। पराजित होना। २. हराना। पराजित होना।

हारहूर—(न०) शराब। मद्य। दारू।

हारहूरा—(ना०) द्राक्षा। दाख।

हारियोड़ो—(भू०कृ०) हारा हुआ। दे० हारल।

हारिल—(न०) एक पक्षी जिसके पैरों में सदैव तृण या छोटी लकड़ी होती है।

हारी—(वि०) हारने वाला या वाली। (प्रत्य०) वाला या वाली अर्थ का सूचक प्रत्यय। दे० माहरी।

हारीत—(न०) १. कबूतर। २. चोर। डाकू। ३. एक ऋषि।

हा रे—(अव्य०) तुच्छता, छोटापन या समानता सूचक एक संबोधन। अरे। हरे।

हारो—(वि०) हारने वाला। (प्रत्य०) 'वाला' अर्थ का सूचक प्रत्यय।

हारोड़ी—(ना०) पंक्ति। ओळ। (ऊनता सूचक)।

हारोहार—(अव्य०) १. पंक्तिबद्ध। कतारबंद। हारबंद। २. अनेक पंक्तियों में। कतारों की कतारें। ३. अनेक समूहों में। (वि०) १. अनेक समूह। २. अनेक पंक्तियाँ।

हार्द—(न०) १. हृदय। २. रहस्य। मर्म। ३. भावार्थ।

हार्दिक—(वि०) १. हृदय से निकला हुआ। २. हृदय संबंधी। ३. निष्कपट।

हाल—(न०) १. दशा। स्थिति। २. बुरी या शोचनीय दशा। ३. समाचार। वृत्तान्त। ४. विवरण। ५. ढंग। ६. भक्ति का आवेश। (क्रि०वि०) १. अभी। अबे। २. अब तक। अबार-ताई।

हॉल—(न०) सभा आदि के लिये बहुत बड़ा कमरा।

हाल करणा—(मुहा०) १. दुख पहुँचाना। २. दुर्दशा करना।

हालघड़ी—(अव्य०) १. अभी तक। इस वक्त तक। २. अभी। अबै ताईं। हणै ताईं।

हालचाल—(न०) १. चालचलन। २. हकीकत। वृत्तान्त। ३. समाचार। खबर। ४. दशा। ५. रीति-रिवाज।

हालणो—(क्रि०) १. चलना। २. रवाना होना। ३. हिलना। ४. मरना। ५. बने रहना। टिकना।

हालणो-चालणो—(क्रि०) चलना-फिरना। हालणो-फिरणो।

हालणो-फिरणो—दे० हालणो-चालणो।

हालत—(ना०) १. दशा। अवस्था। २. परिस्थिति। ३. वृत्तान्त।

हालतक—दे० हालताईं।

हालताणी—दे० हालतांई।
हाल-ताल—दे० हालचाल।
हालतांई—(क्रि०वि०) अभी तक। हालताणी। अजे तांई। हणे तोड़ी।
हालतो—(भू०कृ०) १. चलता हुआ। २. हिलता हुआ।
हाल-तो—(अव्य०) १. अभी तक तो। २. अभी तो। ३. अभी ही।
हालतो-चालतो—दे० हालतो-फिरतो।
हालतोड़ी—(ना०) चलती-फिरती। दे० हालतांई।
हालतोड़ो—(भू०कृ०) १. चलता हुआ। (न०) चलता-फिरता।
हालतो-फिरतो-(भू०कृ०) चलता-फिरता। चलता-फिरता हुआ।
हाळदी—(न०) जिसकी जीविका हल पर है। कृषक। खेड़त। काश्तकार।
हाळदी-वाळदी—(न०) १. जिसकी आजीविका हल और बैलों पर निर्भर है वह कृषक। २. नौकर। (वि०) गंवार।
हालरड़ो—(न०) १. गले का आभूषण। हार। हालरो। २. बच्चे को पलने में झुलाते समय गाया जाने वाला लोकगीत। लोरी। ४. पलना। पालणो।
हालरियो—(न०) १. पलने में झूलने वाला शिशु। २. बच्चे को पालने में झुलाते समय गाया जाने वाला गीत। लोरी। ३. स्त्रियों के गले का एक गहना। हालरड़ो। ४. पलना। पालना। घोड़ियो। पालणो। ५. 'हालरियो' नामक लोकगीत।
हालरो—(न०) १. स्त्रियों के गले का एक हार। हालरियो। २. पलने में झूलने वाला बच्चा। शिशु। ३. लोरी। ४. समूह। टोळो।
हालसूधी—दे० हालतांई।
हाल हकीकत—(न०) १. वृत्तान्त। विवरण। २. संदेश। ३. वातावरण।
हालहवाल—(न०) १. समाचार। खबर। २. वृत्तान्त। विवरण। ३. प्रक्रिया। चाल-ढाल। ४. दशा। स्थिति। ५. अवदशा। ६. बरबादी।
हाला—(ना०) १. शराब। मद्य। २. एक राजपूत जाति।
हालाडोई—(ना०) १. अधिकार। चलन। २. रसोई का सामान जुटाने, बनाने आदि की देखरेख अथवा अधिकार। ३. सेवा-शुश्रूषा। टहल। ४. खुशामद।
हाला-डोली—(ना०) फिरना। चलना। दे० हालाडोई।
हालात—(ना०) १. परिस्थिति। २. समाचार। ३. 'हाल' का बहुवचन।
हालार—(न०) सौराष्ट्र में जामनगर के आसपास का जनपद।
हालारी—(वि०) १. हालार संबंधी। २. हालार का।
हालारी संवत—(न०) सौराष्ट्र के हालार विभाग का विक्रम संवत् जो आषाढ मास से प्रारंभ होता है।
हालां-झालां रा कुंडळिया—(न०ब०व०) बारहठ ईसरदास रचित एक ऐतिहासिक एवं वीररसपूर्ण काव्य-कृति।
हाली—(ना०) १. चाल चलने की क्रिया। २. चाल-चलन।
हाळी—(न०) १. हल चलाने वाला व्यक्ति। २. कृषक। ३. कृषक के य

के काम को नौकरी करने वाला व्यक्ति। (प्रत्यय) 'वाली' प्रत्यय का पर्याय।

हाली-चाली—(ना०) १. चाल-चलन। २. व्यवहार। बरताव।

हाळी-वाळदी—(न०) १. कृषक। २. कृषक के लिये तुच्छार्थक शब्द। ३. गँवार। मूर्ख। ४. अपढ। ५ हल और बैल द्वारा खेती करने का धंधा हलका समझा जाने का परिचायक शब्द। (अव्य०) तुच्छ। ना-कुछ।

हाळी लोग—(न०) कृषक।

हाळो—(प्रत्य०) १. वाला। वाळो। २. का।

हाव—(ना०) १. नायिका की मोहक शृंगारिक चेष्टाएँ। २. पास बुलाने की क्रिया या भाव। ३. नखरा। ४. प्रेम। ५. हृदय। ६. कुम्हार का निहाय। नेवो। ७. वेप। ८. शृंगार।

हाव-भाव—(न०) १. पुरुषों को आकर्षित करने वाली स्त्रियों की मोहक चेष्टाएँ। २. नाज-नखरा। ३. रहन-सहन। ४. मनोदशा। ५. व्यवहार। वर्तन।

हावलो—(न०) 'ह' अक्षर। हकार।

हावी—(वि०) १. दबा कर रखने वाली। २. रोब। प्रभाव। ३. छाया हुआ।

हावी होणो—(मुहा०) दूसरों पर वर्चस्व जमाना।

हावे—(क्रि०वि०) १. तैयार। २. पास। निकट।

हावो—दे० हावलो।

हास—(न०) १. हँसी। २. मजाक। ठट्ठा। ३. हँसाई। बदनामी। ४. उपहास। ५. गले का एक आभूषण। हाँस।

हासल—(न०) १. जमीन का लगान। हासिल। २. जोड़ में हाथ का बचा हुआ अंक। हाथ लागो। ३. पैदावार। उपज। ४. लाभ। (वि०) मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। ६. कर। टैक्स।

हासल करणो—(मुहा०) प्राप्त करना।

हासल होणो—(मुहा०) मिलना।

हासली—(वि०) जमीन या खेत का हासल भरने वाला। (न०) कृषक।

हासली लोग—(न०) कृषक।

हास-विलास—(न०) राग-रंग।

हासियो—(न०) १. गोट। मगजी। २. किनारा। ३. लिखते समय कागज के बाँई ओर छोड़ी जाने वाली खाली जगह। उपान्त। हाशिया।

हासी—दे० हँसी।

हासो—(न०) १. हँसी। दिल्लगी। हास। २. बदनामी।

हॉस्टल—(न०) छात्रावास। छात्रालय।

हॉस्पिटल—(न०) अस्पताल। दवाखाना। रुग्णालय।

हास्य—(न०) १. नौ रसों में के एक रस (साहित्य)। २. हँसी। ३. उपहास। ४. दिल्लगी। मजाक।

हास्यजनक—(वि०) हास्य उत्पन्न करने वाला।

हास्य रसाळ—दे० हास्य रसिक।

हास्यरसिक—(वि०) १. हास्य रसवाला। २. मजाकी। हास्य-रसाळ। ३. हास्य प्रेमी।

हा-हत—(न०) १. प्राणान्त। मृत्यु। २. मृत्यु की दुखपूर्ण खबर। मृत्यु की सूचक। ३. मृत्यु शोक।

हा-हा—(अव्य०) १. हँसने का शब्द। २. जोर से हँसने की क्रिया।

हाहाकार—*(न०)* घबराहट के समय बहुत से लोगों के मुंह से निकलने वाली चिल्लाहट। कुहराम। २. शोकोद्गार।

हाहा-हीही—*(ना०)* १. ठट्ठा-मस्करी। २. हास्यविनोद। ३. शोरगुल।

हाहुजंपो—दे० हाथ जंपो।

हा-हू—*(ग्रव्य०)* १ शोरगुल। कोलाहल। २. हँसी-मजाक।

हा-हू करणो— *(मुहा०)* १. शोरगुल मचाना। २. हँसी-मजाक करना। ३. ऊधम करना।

हा-हो—दे० हा-हू।

हाँ—*(न०)* स्वीकृति। हुंकारो। *(क्रि०)* प्रथम पुरुष वर्तमान क्रिया 'हूँ' का बहुवचन रूप। हैं। छां। *(ग्रव्य०)* १. समर्थन। स्वीकृति आदि का सूचक शब्द। स्वीकृति सूचक सकारात्मक अव्यय। २. हुंकारा देने का उद्गार।

हाँऊँ – (ग्रव्य०) १ हुंकारा देने का उद्गार। २. स्वीकृति सूचक सकारात्मक अव्यय। *(न०)* हुंकारा। स्वीकृति। हुंकारो।

हाँक—दे० हाक।

हाँकणी—*(ना०)* गाड़ी, ऊँट आदि किसी वाहन को चलाने की रीति।

हाँकणो—*(क्रि०)* १. किसी को चलने के लिये प्रेरित करना। हांकना। चलाना। २ ऊँट, बैलगाड़ी आदि को चलाना। ३. गप्प मारना।

हाँकरणो—*(क्रि०)* १. हाँ कहना। २. स्वीकार करना। स्वीकारणो।

हाँकलणो—*(क्रि०)* १. धमकाना। २. डराना। ३. हांकना। चलाना। हांकणो।

हाँकळणो—*(क्रि०)* संकेत करना। सानी करणी।

हाँकारो—*(न०)* स्वीकृति। समर्थनादि सूचक पद। हाँ। *(ग्रव्य०)* १. वार्ता कहने वाले के वाक्य विराम पर उसके उत्साह-वर्द्धन के लिये श्रोताओं द्वारा कहे जाने वाले 'भले राज भले', 'खूब कही सा, 'जीवो घणा' इत्यादि कहे जाने वाले स्वीकृतिसूचक पद या शब्द। २ हाँ। ३. समर्थन। ४. स्वीकार।

हाँकारो देणो—*(मुहा०)* १. स्वीकृति प्रदान करना। २. वार्ता के बीच में श्रोताओं द्वारा उत्साहवर्धक 'हाँ' शब्द।

हाँकारो भरणो—*(मुहा०)* स्वीकृत करना। मंजूर करना।

हांगो—*(न०)* १. हाथ-पाँवों की शक्ति। २. उपाग शक्ति। ३. साथ। संगत।

हांच—*(न०)* ओढनी का पल्ला। अंचल।

हांचळ—*(न०)* १. स्तन। बोबो। २. स्तन प्रदेश। ३. गाय-भैंस आदि का स्तन। थन। थण।

हांचळियो—*(वि०)* स्तन पान करने वाला (बच्चा)।

हाँजा—*(न०)* १. हिम्मत। शक्ति। २. शरीर के संधि-स्थल।

हाँजी—(ग्रव्य०) १. आदर सूचक प्रत्युत्तर। २. आदरसूचक प्रत्युत्तर का शब्द। जीहाँ। ३. स्वीकृति या समर्थन का शब्द।

हाँजी-हाँजी—*(ग्रव्य०)* खुशामद। चापलूसी।

हाँजी-हाँजी करणो—*(मुहा०)* चापलूसी करना। खुशामद करना।

हाँडणो—दे० हाँडो।

हाँडा-डोई—(ना०) १. रसोई का काम। २. अधिकार। अखत्यार। ३. अनधिकार चेष्टा।

हाँडा-डोई करणो—(मुहा०) १. अधिकार चलाना। २. स्त्रियों मे बैठना और बातें करना। ३. स्त्रियों के साथ रसोड़े का काम करना। ४. स्त्रियों के कार्यों को करने की अधिक रुचि होना। ५. अनधिकार चेष्टा करना।

हाँडाळो—(वि०) बहुत खाने वाला।

हाँडी—(ना०) १. शाक आदि बनाने का मिट्टी या धातु का पात्र। हँडिया। २. छत में लटकाया जाने वाला कांच का वह पात्र, जिसमें दीपक जलाया जाता है।

हाँडी चाटू—(वि०) १. बहुत अधिक खाने वाला। पेटू। भुक्खड़। भूखियो। २. निकम्मा।

हाँडी रो हमीर—(न०) १. हर समय रसोई मे बैठा रह कर खाने में ही जी रखने वाला। (खाऊ)। दे० हांडी चाटू।

हाँडो—(न०) १. बड़ी हँडिया। २. बड़ा जल पात्र। ३. बड़ा पेट। (वि०) बहुत खाने वाला। खाऊ।

हाँती—(ना०) विवाहादि पर संबंधियों और पड़ोसियों को बाँटी जाने वाली मिष्ठान्न की भेंट। हाँथी।

हाँ तो—(अव्य०) १. यदि ऐसा है। २. ठीक है।

हाँथर—(न०) मरे हुए के पीछे अमावस्या को दिया जाने वाला दान या कराया जाने वाला भोजन।

हाँथी—दे० हाँती।

हाँफ—(ना०) १. हाँफने की क्रिया या भाव। अमूझरण। २ दम। साँस। ३. दम रोग।

हाँफ चढणो—(मुहा०) श्वास उठना। दम फूलना।

हाँफणी—दे० हुंफारी।

हाँफणो—(क्रि०) परिश्रम व दौड़ने के कारण जोर-जोर से साँस लेना।

हाँफळणी—(ना०) १. साँस उठना। २. दम उठना। ३. घबराहट।

हाँफळणो—(क्रि०) १. श्वास चढ़ना। २. घबराना. ३. दम उठना।

हाँफळीजणो—दे० हाँफळणो।

हाँफळो—(वि०) घबराया हुआ।

हाँफळो-फाँफळो—(वि०) घबराया हुआ। हाँफळो-साँफळो।

हाँफळो-साँफळो—दे० हाँफळो-फाँफळो।

हाँफीजणो—दे० हाँफळणो।

हाँ भरणो—(मुहा०) १ स्वीकार करना। २. स्वीकृति देना।

हाँ भेळी हाँ—(अव्य०) खुशामद। हाँ में हाँ।

हाँ में हाँ—दे० हाँ भेळी हाँ।

हाँ में हाँ मिलावणी—(मुहा०) खुशामद करना।

हाँस—(न०) १. स्त्रियों के गले में पहिनने का एक गहना। २. हांसुली। हाँसळो। ३. एक प्रकार का हार।

हाँसड़ी—दे० हाँसली।

हाँसली—(ना०) १. एक कंठाभूषण। हाँसळो। २. गले के नीचे की ओर, दोनों पसलियों के ऊपर की दोनों हड्डियां।

हाँसळी—दे० हांसली ।
हाँ सा—(अव्य०) १. स्वीकृति सूचक शब्द। २. 'हां साहब' का संक्षिप्त रूप ।
हांसी—(ना०) १. ठट्ठा । २. मजाक । हांसो ।
हांसो—दे० हांसी ।
हाँहड़ी—दे० हांसळी ।
हाँहळी—दे० हांसली ।
हि—(अव्य०) १. एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय या स्वीकृति आदि सूचित करने या किसी बात पर जोर देने के लिए होता है । हिज । २. एक प्राचीन विभक्ति ।
हिग्र—(न०) १. हृदय । दिल । २. छाती । हिग्रो ।
हिग्राव—(न०) साहस । हिम्मत ।
हिग्रो—दे० हिग्र ।
हिक—(वि०) एक ।
हिकडंकी—(ना०) इकहथ्था अधिकार । तानाशाही । एक छत्र शासन । सर-मुख्त्यारी ।
हिकडंकी वजावणो—(मुहा०) १. अधिकार या वर्चस्व जमाना । २. एक छत्र शासन करना ।
हिकड़ो—(न०) एक का अंक । '१' ।
हिकमत—(ना०) १. युक्ति । चाल । २. हकीम का काम । हकीमी । ३. कला । विद्या । ४. कला-कौशल । ५. उपाय ।
हिकमतबाज—(वि०) १. चालबाज । २. कलाबाज । ३. कुशल ।
हिकमती—(वि०) १. चालाक । २. चतुर । ३. कार्यकुशल । ४. हिकमत संबंधी ।
हिकराण—(न०) १. कोलाहल । शोर । (अव्य०) एक बार । एक बार ।
हिकहत्थू—(अव्य०) अकेले ही । हिक-हथ्थू । एक हत्थो ।
हिकहथ्थू—दे० हिकहत्थू ।
हिकायत—(ना०) कहानी । वार्ता । बात ।
हिकारत—(ना०) १. नफरत । उपेक्षा । २. घृणा । ३. अपमान ।
हिच—(ना०) भिड़ंत । हुचक ।
हिचक—(ना०) १. घृणा । सूग । २. उपेक्षा । ३ मन को लगने वाला धक्का । मनाघात । ४. शंका । ५. डर । भय । ६. पीछे हटने की क्रिया या भाव । ७. दया । ८. नुकसान । हानि । ९. भिड़न्त । टक्कर । १०. हिचकने की क्रिया या भाव । किसी काम को करने के पूर्व मन मे उठने वाली रुका-वट ।
हिचकणो—(क्रि०) १. संकोच करना । २. पीछे हटना । ३ भिड़ना । जूझना । टकराना । ४. डरना । ५ घृणा करना । ६. दया करना ।
हिचकाणो—दे० हिचकणो ।
हिचकारी—(ना०) १. संकोच । २. घृणा । सूग । दे० हिचक ।
हिचकारो—(वि०) १ अधम । २. कायर । स्त्रैण । बायलो । (ना०) १. घृणा । सूग । २. संकोच । हिचक ।
हिचकिच—(ना०) किसी कार्य को करने के पूर्व आशंका, असमर्थता आदि के कारण कुछ रुकना ।
हिचकिचाट—(ना०) हिचकिचाहट ।
हिचकी—(ना०) १ ठोड़ी । चिबुक । हनु । २. हिक्का रोग । ३. हिक्का । हचकी ।
हिचको—(न०) १. धक्का । टक्कर । २. भिड़न्त । ३. संकोच । ४. घृणा । हिचक ।

हिचणो—(क्रि०) १. भिड़ना। टक्कर लेना। २. युद्ध करना। ३. कोई काम करने से पहिले मन में रुकावट पैदा होना। हिचकना।

हिज—(अव्य०) १. जोर देने के लिए अथवा दृढ़ता या निश्चय इत्यादि को सूचित करने के लिए प्रयुक्त अव्यय। २. केवल। ३. लगभग। प्रायः। ४. अवश्य।

हिजड़ो—दे० हीजड़ो।

हिजमत—(ना०) हजामत।

हिजरत—(न०) एक स्थान को छोड़ या भाग कर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या भाव।

हिजरती—(वि०) हिजरत करने वाला।

हिजरी सन—(न०) मुसलमानी संवत्। (यह सन् १६ जुलाई ६२२ ई० से चला है, जब महम्मद पैगम्बर मक्का छोड़कर मदीना गये थे।)

हिज हाइनेस—(न०) अंग्रेजों द्वारा राजाओं को दी जाने वाली उपाधि।

हिज होलीनेस—(न०) अंग्रेजों द्वारा धर्म गुरुओं को दी जाने वाली उपाधि।

हिज्जे—(न०) किसी शब्द में आये हुये अक्षरों के सौकर्य की दृष्टि से अलग-अलग टुकड़े। शब्द के अक्षरों का क्रम। वर्तनी। जोड़णी। स्पेलिंग।

हिटलर—(न०) संयुक्त जर्मनी का एक-छत्र शासक। द्वितीय विश्वयुद्ध का जनक।

हिटलरसाही—(ना०) हिटलर जैसी सर-मुख्त्यारी। सामंतवाद। एक छत्र-शासन। तानाशाही। डिक्टेटरशिप।

हिड़क—(ना०) पागलपन।

हिड़कणो—(वि०) पागल। (ना०) कलह-कारिणी।

हिड़कणो—(क्रि०) कुत्ते के काटने से पागल होना। (वि०) झगड़ालू।

हिड़कवा—(न०) १. कुत्ते और सियार आदि के काटने से होने वाला एक चेपी रोग। हड़क। २. पागलपन।

हिड़कायो—दे० हिड़कियो सं० १.

हिड़कियो—(वि०) १. वह जिसको हिड़क का रोग हो गया हो। २. झगड़ालू। कजियाखोर।

हिड़मच—(ना०) एक प्रकार की लाल मिट्टी। राती। हिड़मिच।

हिड़मिच—(ना०) दीवाल आदि रँगने की लाल मिट्टी। हिरमजी।

हिड़ंब—(न०) १. भैंसा। २. महाभारत-कालीन एक राक्षस।

हिड़ंबा—(ना०) हिड़ंब राक्षस की पत्नी। भीम की पत्नी। (वि०) काली कुरूप (स्त्री)।

हिड़ंबी—(ना०) भैंस।

हिडोकै—(अव्य०) इस बार। अब की बार। हमकै। अबकै।

हित—(न०) १. स्नेह। २. कल्याण। मंगल। ३. लाभ। (अव्य०) के लिये। लिये। हेतु।

हितकर—(वि०) उपयोगी। लाभकारी। हितकारी।

हित करणो—(मुहा०) १. भला करना। २. उपकार करना।

हितकारक—(वि०) भलाई करने वाला। उपकारी।

हितकारणी—(वि०) भलाई करने वाली। हितकारिणी। उपकारिणी।

हितकारी—*(वि०)* हितकारक। उपकारी। *(न०)* मित्र। दोस्त।
हित-चाहू—*(वि०)* शुभेच्छु।
हितचिंतक—*(वि०)* हितैषी। भला चाहने वाला। हितवाळो।
हितवाद—*(न०)* १. हितकारी बाद। २. स्वार्थ। मतलब।
हितवाळो—दे० हितचिंतक।
हित-विरोधी—दे० हितशत्रु।
हितारथ—*(न०)* १. प्रेम। स्नेह। *(अव्य०)* १. हित के लिये। हितार्थ। २. के लिये। लिये।
हितार्थ—दे० हितारथ।
हितु—*(वि०)* १. स्नेही। २. हितैषी। हितू।
हितू—दे० हितु।
हितेच्छु—*(वि०)* हितचिंतक। हितू।
हितैषी—*(वि०)* हितचिंतक। हितू।
हितोपदेश—*(न०)* १ व्यवहार और नीति की कथाओं का एक विश्व-विख्यात संस्कृत ग्रंथ। २. हितकर उपदेश।
हिदायत—*(ना०)* १. आदेश। हुक्म। २. निर्देश। ३. सीख। सिखावण।
हिदायत करणो—*(मुहा०)* १. आदेश देना। २. सूचना। ३. सीख देना।
हिदायतनामो—*(न०)* हिदायतों का कागज या पत्र।
हिनहिनाणो—*(क्रि०)* घोड़े का हिनहिनाना। हींजरणो। हींसणो।
हिफाजत—*(ना०)* १. सावधानी। होशियारी। २. देखभाल। सतर्कता। ३. सुरक्षा। संभाळ।
हिव—*(क्रि०वि०)* १. इस समय। अब। अबार। २. इसके बाद।
हिवणो—*(क्रि०)* आग में डालना। होमना। होमणो। दे० हिवणो।
हिब्रू—*(ना०)* १. यहूदियों की मूलभाषा। एक प्राचीन भाषा। २. इजरायल की राष्ट्रभाषा।
हिम—*(ना०)* १. ठंड। २ पाला। तुषार। ३. कपूर। ४. मोती। ५. चंद्रमा। ६. ओस। झाकळ। ओह।
हिमइ—*(क्रि०वि०)* १. अब। इसी समय। अबार। २. अब भी।
हिमकण—*(न०)* बर्फ का छोटा टुकड़ा।
हिमकर—*(न०)* १. चंद्रमा। २. कपूर।
हिमगिर—हिमालय पर्वत। हिमाळो।
हिमगिरि—दे० हिमगिर।
हिमज—*(ना०)* हर्रे।
हिमजा—*(ना०)* पार्वती। उमा।
हिम-प्रकाश—*(ना०)* चांदनी। चंद्रिका।
हिमवारज—*(न०)* सूर्य।
हिमहित—*(न०)* चंद्रमा। हिमकर।
हिमंस—*(न०)* चंद्रमा। हिमांशु। हिमहित।
हिमाकत—*(ना०)* मूर्खता। नासमझी।
हिमाचळ—*(न०)* १. हिमालय पर्वत। २. भारत का एक राज्य।
हिमायत—*(न०)* १. पक्षपात। तरफदारी। २. मदद। ३. किसी पक्ष का समर्थन।
हिमायत करणो—*(मुहा०)* पक्ष लेना। तरफदारी करणो।
हिमायती—*(वि०)* हिमायत वाला।
हिमारू—*(क्रि०वि०)* अभी। इसी वक्त।
हिमाळो—*(न०)* १. हिमालय। २. तीव्र ठंड। ३. जाड़ा। शीतकाल।
हिमै—दे० हिवै।
हिम्मत—*(ना०)* १. साहस। हीमत। २. हौसला। ३. कुव्वत।

हिम्मत करणी-करणो—(मुहा०) साहस करना।

हिम्मत राखणी-णो—(मुहा०) १. साहस रखना। २. धीरज रखना।

हिम्मतवान—(वि०) १. हिम्मती। साहसी। २. बुलंद हौसला।

हिम्मतहार—(वि०) १. कायर। २. हौसला-टूट। ३ निर्बल।

हिम्मत हारणी-णो—(मुहा०) १ हौसला टूट जाना। २. धीरज खोना।

हिय—(न०) १ हृदय। २. छाती। हिया। ३. पुत्र। हीय। बेटो।

हिया-फूट—(वि०) १. अविचारी। २. हृदय शून्य। हृदयहीन। निष्ठुर।

हिया-फूटो—दे० हियाफूट।

हियाव—(न०) १ बालक के प्रति रखा जाने वाला प्रेम। २ प्रेम। स्नेह। ३. हृदय का भाव।

हियो—(न०) १. हृदय। २. छाती। ३. हिम्मत। साहस।

हियो फूटणो—(मुहा०) १. अविचारी होना। २. निष्ठुर होना।

हिरण—(न०) १. हरिण। मृग। २. सोना। स्वर्ण। हिरण्य।

हिरण उपवन—(न०) ब्रह्मा।

हिरणकी—(ना०) हरिनी। मृगी।

हिरणको—(न०) मृग। हरिण।

हिरणख—(न०) हिरण्याक्ष।

हिरणगरभ—(न०) १ ब्रह्मा। हिरण्य-गर्भ। २. विष्णु।

हिरणचरो—(न०) एक घास।

हिरणनैण—(ना०) पृथ्वी।

हिरणरेता—(न०) १. हिरण्यरेता। सूर्य। २. अग्नि। ३ शिव।

हिरणहट—(न०) शेखावाटी (राजस्थान) का प्रदेश या तीर्थ। (?)

हिरणाकुस—(न०) भक्त प्रह्लाद के पिता, एक दैत्य। हिरण्यकशिपु।

हिरणाख—(न०) हिरण्याक्ष दैत्य।

हिरणाखी—(वि०) हरिणाक्षी। मृगाक्षी। मिरगानैणी।

हिरणियो—(न०) १. हरिण। २. छोटा हरिण।

हिरणी—(ना०) मृगी। हरिनी।

हिरणो—(न०) एक क्षुप।

हिरणो-फिरणो—(क्रि०) चलना-फिरना।

हिरण्य—(न०) १. सोना। स्वर्ण। २. ज्योति। प्रकाश।

हिरण्यकशिपु—दे० हिरणाकुस।

हिरण्याक्ष (न०) हिरण्यकशिपु का भाई।

हिरण्यां—(ना०) मृगशिर नक्षत्र समूह।

हिरदो - दे० हृदय।

हिरदो चीरीजणो - (मुहा०) अत्यन्त दुखी होना।

हिरदो फाटणो—(मुहा०) हृदय फटना। अति कष्ट होना।

हिरदो भरीजणो—(मुहा०) आवेग या क्षोभ से युक्त होना।

हिरस—(न०) १ लोभ। २. वासना।

हिरासत—(ना०) १. किसी व्यक्ति पर रखा जाने वाला पहरा। २ कैद। हवालात।

हिरासत में राखणो—(मुहा०) कैद मे रखना।

हिलको—(न०) धक्का। टक्कर। भहळ। हिलका।

हिलको लागणो—(मुहा०) धक्का लगना।

हिलकोर—(ना०) लहर। हिलोर।

हिलकोरणो—(क्रि०) लहरें उठना। हिलोर उत्पन्न करना या होना।
हिलणो—(क्रि०) हिलना।
हिळणो—(क्रि०) १. परिचित होना। २. अभ्यस्त होना। आदी होना। ३. हेल-मेल होना।
हिळणो-जुळणो—दे० हिळणो-मिळणो।
हिलणो-डुलणो—(क्रि०) हिलना-डुलना। इधर-उधर होना।
हिळणो-मिळणो—(क्रि०) १. मेलजोल रखना। हेल मेल रखना। २ प्रेम-संबंध बनाये रखने के लिये आने-जाने या मिलने-जुलने का व्यवहार रखना।
हिळ-मिळनै—(अव्य०) हिलमिल करके। प्रेम से।
हिलमो—(वि०) हिलता रहने वाला।
हिळवळणो—(क्रि०) हड़बड़ाते हुए इधर-उधर फैलना।
हिलाणो—(क्रि०) हिलाना।
हिलारिया—दे० हेलारिया।
हिलारो—(न०) किसी वस्तु को कहीं से लाने के लिये किसी वाहन पर लाद कर उसकी पूर्ति होने तक लाने की क्रिया। हेलारो। गेड़ो।
हिलावणो—(क्रि०) चलायमान करना। हिलाना। हिलाणो।
हिळावणो—(क्रि०) १. आदत डलवाना। २. आदत डलवाने का प्रयत्न करना।
हिळियोड़ो—(भू० कृ०) जिसकी आदत पड़ गई हो।
हिळियो-मिळियो—(भू० कृ०) हिला-मिला।
हिलोड़—दे० हिलोळ।
हिलोड़ो—(न०) लहर। हिलोळो।
हिलोर—(ना०) १. पानी की लहर। तरंग। हिलोळ। २. झूले का पेंग।
हिलोरणो—(क्रि०) १. झुलाना। पेंग देना। २. लोरी गाते हुए पेंग देना।
हिलोळ—(ना०) १. लहर। २. आनंद की तरंग।
हिलोळणो—(क्रि०) १. आंदोलित करना। २. हिलाना। ३. विलोड़ना। ४. धक्का देना। ५. झुलाना। झुलावणो। ६. आनंदित करना। ७ जल को तरंगित करना। लहरावणो।
हिलोळो—(न०) १. पानी का धक्का। २. पानी की लंबी व तेज लहर। ३. तरंग। लहर। ४ मौज। आनंद। ५. झूले की पेंग। ६. उदारता। ७. भीड़ का धक्का। ८. उमंग।
हिलोहळ—(न०) समुद्र।
हिव—दे० हव।
हिवइ—दे० हिमइ।
हिवड़ो—(न०) हृदय। हीयो। हिरदो। दे० अवड़ो या इतरो।
हिवा—(सर्व०ना०) यह (नारी जाति)।
हिवारू—(अव्य०) १. अभी। हमार। अबार। २. अभी का अभी।
हिवै—(अव्य०) अब। अबार। (सर्व०बहु०) वे। वे लोग।
हिवो—(सर्व०) वह।
हिसाब—(न०) १. आय-व्यय, लेन-देन आदि का लिखा हुआ वर्णन। २. गिन कर लेखा तैयार करने का काम या विद्या। ३. गणित। ४. दर। भाव। ५. व्यवस्था। ६. मर्यादा। नियम। ७. गणित का प्रश्न। ८. दशा।

हिसाव करणो—*(मुहा०)* १. रुपये-पैसे आदि का हिसाब तय करना। २. प्रश्न को हल करना। ३. नौकरी से अलग करना।

हिसाव-किताव—*(न०)* १. आय-व्यय का ब्यौरा। २. गणित की पुस्तक। ३. व्यवहार। ४. व्यवस्था। ५ गणित। लेखा।

हिसाव चुकावणो—*(मुहा०)* १. लेन-देन साफ करना। २. बदला लेना। ३. कर्ज अदा करना।

हिसाव तपासणो—*(मुहा०)* जमा-खर्च के हिसाब की जाँच करना। आय-व्यय की जांच करना।

हिसाव-नवीस—*(न०)* मुनीम।

हिसाव वैठणो—*(मुहा०)* १. हिसाब का मिलना। २. ठीक व्यवस्था होना। ३. कार्य सिद्धि के लिये तरकीब भिड़ना।

हिसाव मिळणो—*(मुहा०)* १. रोकड़ बही और पोते की रोकड़ का बराबर मिलना। २. जमा-उधार का बराबर होना।

हिसावी—*(वि०)* १. हिसाब संबंधी। *(वि०)* २. हिसाब का जानकार। ३. हिसाब रखने वाला। ३. गणितज्ञ। ५. व्यवहार कुशल। *(अव्य०)* हिसाब के संबंध में।

हिस्टीरिया—*(न०)* १. मूर्च्छा लाने वाला एक वायु रोग। उन्माद रोग।

हिस्सेदार—*(न०)* भागीदार। साझेदार।

हिस्सेदारी—*(ना०)* भागीदारी। साझेदारी।

हिस्सो—*(न०)* १. भाग। हिस्सा। २. खंड। अंश।

हिंग—दे० हींग।

हिंगळाज—*(ना०)* १. एक प्रसिद्ध देवीपीठ जो बलुचिस्तान (पाकिस्तान) में है। २. एक देवी। हींगोळ।

हिंगळाट—*(न०)* १. वह पलंग जिसके पाये और चौखट प्रवाल के बने हो। हिंगलू-ढोलियो। बढ़िया-पलंग। २. पति-पत्नी के सोने का पलंग। रमण-शैया। ३. लोकगीतों की अन्यतम शैया।

हिंगळू—दे० हींगळू।

हिंगळू-ढोलियो—दे० हिंगळाट। एक लोकगीत।

हिंगळोट—दे० हिंगळू ढोलियो।

हिंगाष्टक—*(न०)* आठ वस्तुओं से बनी एक औषधि। हिंगाष्टक। एक पाचक चूर्ण।

हिंगोळपुराण—*(न०)* भक्त कवि ईसर-दास कृत देवियाण का अपर नाम।

हिंजर—*(वि०)* १. निर्बल। २. दुबला-पतला।

हिंजर-पिंजर—*(वि०)* १. अत्यन्त दुर्बल। २. जिसके शरीर में रक्त, मांस, चर्बी की कमी हो। *(न०)* हाड-पिंजर। अस्थि-पिंजर।

हिंडोल—*(न०)* झूला। हिंडोला। *(ना०)* एक राग।

हिंडोळणो—*(न०)* हींडोला। झूला। *(क्रि०)* झुलाना। पेंग देना। हींडा देणा।

हिंडोळा—*(न०)* १. उत्सव विशेष। *(न०ब०व०)* २. बहुत सारे झूले। ३. वैष्णव मंदिरों में सावन-भादों में मनाया जाने वाला हिंडोला-उत्सव। होलो-त्सव।

हिंडोळौ—(न०) १. झूला । २. पालना । (वि०) १. मूर्ख । २. पागल ।
हिंडोलो—दे० हिंडोल ।
हिंडोळौ-खाट—(न०) खाट का झूला ।
हिंडोवलो—दे० हिंडोलो ।
हिंद—(न०) हिन्दुस्तान । भारत ।
हिंदगी—(ना०) हिंदी (भाषा) ।
हिंद महासागर—(न०) भारत के दक्षिण का महासागर ।
हिंदवाण—(न०) १. हिन्दुस्तान । भारत । २ हिन्दू लोग । हिन्दू । ३. तरबूज । मतीरो । काळींगो ।
हिंदवाणी—(ना०) १. हिन्दुत्व । २. हिन्दू राज्य । ३. हिन्दू शक्ति । ४. हिंदी भाषा । ५. राजस्थानी भाषा । (न०) तरबूज । मतीरो । (वि०) १. हिन्दू का । २. हिन्दुस्थान का । भारतीय ।
हिंदवा सूरज—दे० हिंदवां-सूरज ।
हिंदवां छात—(न०) १. हिन्दुओं का छत्र । २. हिन्दू छत्रपति । ३. हिन्दू सम्राट । ४. हिन्दुस्थान का सम्राट ।
हिंदवांनाथ—(न०) हिन्दूपति । हिन्दू सम्राट । हिंदू राजा । हिंदवै ।
हिंदवां-भाण—दे० हिंदवां-सूरज ।
हिंदवां राव—(न०) दे० हिंदवां छात ।
हिंदवां सूरज—(न०) हिन्दुओं में सूर्य रूप । २. सर्वश्रेष्ठ हिन्दू राजा । ३. मेवाड़ के महाराणा की उपाधि ।
हिंदवी—(ना०) हिंदी का पुराना नाम । हिंदी भाषा ।
हिंदवै—(न०) १. हिन्दुपति । २. भारतवर्ष का राजा । ३. हिन्दुस्थान । ४. हिंदू सम्राट ।
हिंदवो—(न०) १. भारतवर्ष । २. हिन्दू । (वि०) १. हिंदु का । २. हिन्दुस्थान का ।
हिंदवो-छात—दे० हिंदुवां छात ।
हिंदसो—(न०) अंक । आंक । संख्या । हिंदसा ।
हिंदी—(ना०) १. भारत की राज्य-भाषा । २. भारत की राष्ट्र-भाषा । नागरी भाषा । (न०) भारतवासी । (वि०) हिंद से सबंधित । हिन्दुस्थान का ।
हिंदु—(न०) १. वेद-पुराणावलंबी एक भारतीय धर्म के अनुयायी । हिंदू धर्म का अनुयायी । २. हिंदुस्तान का निवासी ।
हिंदुआण—(न०) १. हिंदू जाति । २. हिंदू राज्य । ३. हिन्दुस्थान ।
हिंदुओ राव—दे० हिंदवां राव ।
हिंदुओ सूरज—दे० हिंदुवां सूरज ।
हिंदुकार—(न०) १. हिंदू समाज । २. हिन्दुस्तान निवासी । ३. हिंदूपन ।
हिंदुत्व—(न०) १. हिंदु होने के गुण धर्म या भाव । २. हिंदुओं के आचार-विचार, मान्यता और संस्कार इत्यादि ।
हिंदुपणो—(न०) हिन्दुत्व । हिन्दू होने का स्वाभिमान । हिंदूपन ।
हिंदुस्तान—(न०) १. हिन्दुओं का देश । २. भारतवर्ष ।
हिन्दुस्तानी—(ना०) १. हिन्दुस्थान का निवासी । भारतीय । २. भारतीय संस्कृति में पला-पोषा । ३. हिन्दुस्थान की भाषा । साधारण बोल चाल की भाषा ।
हिंदुस्थान—दे० हिंदुस्तान ।
हिंदुस्थानी—दे० हिंदुस्तानी ।
हिंदू—दे० हिंदु ।

हिंदूथान—दे० हिंदुस्तान ।

हिंदू धर्म—(न०) १. वेद पुराण आदि शास्त्रों की मान्यता का धर्म। २. सनातन धर्म ।

हिंदूपत—(न०) १. हिंदुओं का पति । २. हिन्दुस्तान का मालिक ।

हिंदूपत पातसा—(न०) १. हिन्दूपति, हिंदुस्थान का बादशाह । २. उदयपुर के महाराणा की उपाधि या विरुद ।

हिंवार—(क्रि०वि०) अभी । इसी समय । हमणां । अबार । हमार ।

हिंवारू—दे० हिवार ।

हिंवाळो—दे० हिमाळो ।

हिंसक—(वि०) हिंसा करने वाला ।

हिंसा—(ना०) जीव-हत्या ।

हिंसा कर्म—(न०) वध करने का काम । जीव-हिंसा का कार्य ।

ही—(न०) १. पुत्र। २. हृदय । (क्रि०) भूतकालिक क्रिया पुल्लिंग एक वचन 'हो' तथा बहुवचन 'हा' का स्त्रीलिंग रूप । जैसे—लुग ई आयी ही । लुग यां आयी ही ।

हीक—(ना०) १. अप्रिय, बुरी तथा सड़ी गंध । २. दर्द । पीड़ा । ३. उत्साह । ४. अरुचि । करांटी । ५. अरुचिकर स्वाद । ६. इरंडी के तेल की गंध तथा स्वाद । ७. मिचलाहट उत्पन्न करने वाली गंध । ८. मिचलाहट । मिचली ।

हीच—(ना०) भिड़त । टक्कर ।

हीचण—(न०) युद्ध ।

हीचणो—(क्रि०) १. युद्ध करना । २. भूलना ।

हीज—दे० हिज ।

हीटर—(न०) बिजली से गर्म करने का एक साधन ।

हीटा—(अव्य०) रहित ।

हीड़ा—(ना०) १. सेवा । चाकरी । २. आदर सत्कार । आवभगत । ३. मजदूरी ।

हीड़ा काढणो—(मुहा०) १. सेवा करना। २. संदेश ले जाना । ३. स्वागत करना ।

हीड़ागर—(न०) १. 'सरगरा' नाम की एक निम्न जाति । सरगरो । २. सरगरा जाति का मनुष्य । ३. सेवा करने वाला । सेवक । चाकर । ४. नौकर । ५. कासिद । पत्रवाहक । ६. मजदूर । ७. बांस की टोकरियां आदि बनाने वाली जाति या उस जाति का व्यक्ति । गांछो ।

हीड़ागरण—(ना०) १. हीड़ागर की पत्नी । २. हीड़ागर जाति की स्त्री ।

हीड़ागरणी—दे० हीड़ागरण ।

हीड़ागरी—(ना०) १. चाकरी । सेवा । २. हीड़ागर की पत्नी या हीड़ागर जाति की स्त्री । सरगरी । हीड़ागरण। ३. दासी । सेविका ।

हीड़ो—(न०) १. सहायता । मदद। २. चाकरी । ३. बेगार । वेठ । ४. कामधंधा । ५. ग्रामान्तर संदेश पहुँचाने या सामान ले जाने का काम । ६. पैदल यात्रियों की लूटखसोट से रक्षा करने के लिए साथ में रहने वाले रक्षक की मजदूरी ।

हीण—(न०) सत्व । सारभाग । (वि०) १. हीन । नीच । ओछो । २. रहित । शून्य । ३. तुच्छ । हलको । ४. पथ-

भ्रष्ट । ५. एक प्रत्यय—जैसे करम-हीण ।

हीण-ग्रंत—(वि०) ग्रंतहीन । ग्रनन्त ।

हीण-करम—(न०) नीच कर्म ।

हीण करमी—(वि०) १. नीच कर्म करने वाला । कुकर्मी । २. निर्भागी । ग्रभागियो ।

हीणकरमो—(वि०) १. नीच कर्मी । कुकर्मी । २. निर्भागी । ग्रभागियो ।

हीणकुळ—(न०) १. नीच कुल । २. बुरा कुल । (वि०) बुरे या नीच कुल का ।

हीणक्रीत—(वि०) १. कीर्तिहीन । २. जिसकी कीर्ति नष्ट हो गई हो ।

हीण ग्रंथि—(ना०) ग्रपने को दूसरों से हीन समझने की धारणा । हीण-भावना । लघुग्रंथि ।

हीण चक्ष—(वि०) चक्षुहीन । ग्रधा ।

हीणजात—(ना०) १. नीच जाति । २. जाति-पांति रहित । जातिहीन ।

हीणजोर—(वि०) ग्रशक्त । कमजोर ।

हीणता—(ना०) १. हीण होने की ग्रवस्था, भाव या ग्राचरण । २ कमी । ग्रभाव । ३. ग्रोछापन ।

हीणप—(ना०) १. हीनता । ग्रोछापन । ग्रोछापणो । २. मानसिक दुर्बलता । कमजोरी । ३. कमी । न्यूनता । ऊणप ।

हीणपणो—(न०) १. हीनपना । ग्रोछाई । २. नीचता । दे० हीणप ।

हीणपत—(न०) लांछन । (वि०) प्रतिष्ठाहीन ।

हीणबळ—(वि०) बलहीन । ग्रशक्त ।

हीणमाग—(न०) कुमार्ग ।

हीणमाण—(वि०) मान रहित । (ग्रव्य०) ग्रपमानित होकर ।

हीणवर—(वि०) कन्या के मुकाबिले में निम्न कोटि का वर (पति) कजोड़ो ।

हीणवरण—(वि०) १. नीच वर्ण का । हीनवर्ण । (न०) शूद्र वर्ण ।

हीणो—(वि०) १. नीच स्वभाव का । २. हीन वृत्ति वाला । हीन । ३. ग्रशक्त । ४. कुटिल । ५. डरपोक । ६. तुच्छ । ग्रोछो । ७. रहित । बिना । विण ।

हीणोदाव—(न०) १. मन की कमजोरी । २. मन की कमजोर स्थिति । ३. मन का पीछे हटना । ३. धीरज छोड़ कर काम बंद करना । ४. हिचकिचाहट । ५. विचार-मंथन ।

हीन—(वि०) १. रहित । विहीन । हीण । विण ।

हीनता—(ना०) हीन होने का भाव । हीणता ।

हीनो—(न०) एक प्रकार का पत्थर । हीना ।

हीवणो—(क्रि०) १. जबरदस्ती करना । २. ग्राग में लकड़ी देना । ३. खूब मारना ।

हीम—(न०) हिम । बरफ ।

हीमज—(ना०) छोटी हर्रे ।

हीम जमणो—(मुहा०) ग्रति ठंड के कारण पानी का जम जाना ।

हीमत—दे० हिम्मत ।

हीमतवान—दे० हिम्मतवान ।

हीमतहार—दे० हिम्मतहार ।

हीमती—दे० हिम्मतवान ।

हीमाणी—दे० हेमाणी ।

हीमाळो—(न०) १. हिमालय । २. बहुत कड़ी ठंड ।

हीय—(न०) १. पुत्र । २. हृदय ।

हीया टूट—(वि०) निराश।

हीया-फूट—(वि०) १. मूर्ख। अबूझ। २. हृदयहीन।

हीया-फूटी—(वि०) मूर्खा। बेसमझ। अबूझ।

हीया-फूटो—(वि०) मूर्ख। अबूझ। बेसमझ। हीयाफूट।

हीया फूटोड़ी—दे० हीया फूटी।

हीया फूटोड़ो—दे० हीया फूटो।

हीया-रो-हार—(न०) अत्यन्त प्रिय वस्तु या व्यक्ति। (वि०) अत्यन्त प्रिय।

हीयाळी—(ना०) १. हृदय का प्रेम। अंतर का स्नेह। २. हृदय से लगाने का भाव। ३. लोक साहित्य की उपदेशात्मक और हृदय को प्रफुल्लित करने वाली प्रश्नोत्तरी, अंत्याक्षरी आदि। ४. पहेली। आडी। ५. गूढार्थ। ६. उपदेशात्मक पहेली। ७. गूढ़ वाक्य। ८. धीरज। ढाढ़स।

हीया-वराळ—(ना०) १. दिल की बात। २. हृदय की भाप। ३. क्रोध। रीस। ४. क्रोध से अंट-संट बोलना। ५. नहीं कहने योग्य कह देना।

हीया हीण—दे० हृदयहीन।

हीयो—(न०) १. हृदय। हिय। २. मन। ३. साहस। हिम्मत। हियाव। ४. बुद्धि। ५. वक्षस्थल। छाती।

हीयो जळावण—(वि०) हृदय को जलाने वाला।

हीयो फूटणो—(मुहा०) १. अक्ल मारी जाना। २. बुद्धि नष्ट होना।

हीयो सीळावण—(वि०) हृदय को शीतल बनाने वाला। शांति देने वाला।

हीर—(न०) १. किसी वस्तु का सार भाग। २. सार। तत्व। तत। ३. शक्ति। बल। ४. वीर्य। ५. हीरा। ६. मन। ७. आत्मा। ८. रेशम। ९. कांति। तेज। १०. एक मात्रिक छंद।

हीरक—(न०) एक मूल्यवान रत्न। हीरा। हीरो।

हीरक जयंती—(ना०) १. संस्थान व व्यक्ति की साठवीं वर्षगांठ। २. उक्त समारोह।

हीरकणी—(ना०) १. हीरे का छोटा टुकड़ा। २. हीरे का कन।

हीरकणी खाणी—(मुहा०) आत्महत्या करना। आपघात करणो।

हीर चीर—(न०) १. रेशमी वस्त्र। २. कीमती वस्त्र।

हीर पटोळो—(न०) एक प्रकार का बढ़िया रेशमी वस्त्र। रेशमी सिल्क।

हीर पट्ट—दे० हीर पटोळो।

हीर-रांजा—(न०) एक प्रसिद्ध प्रेमी-प्रेमिका जिन पर अनेक ख्याल रचे हुए हैं तथा राजस्थान में खेले जाते हैं।

हीरकशी—(ना०) गंधक के योग से बनाया हुआ लोहे का विकार। दवा तथा स्याही बनाने के काम में आने वाला एक पदार्थ। कसीस। कासीस।

हीराकंठी—(ना०) एक कंठाभूषण।

हीरागळ—(वि०) रेशमी।

हीरागांठ—(ना०) १. रेशम में लगी गांठ। २. मुश्किल से खुलने वाली गांठ। ३. बहुत मजबूत गांठ।

हीरानामी—(ना०) एक आभूषण।

हीरावोळ—(न०) एक प्रकार का गोंद।

हीरामण—(न०) एक जाति का तोता। हीरामन।
हीरामणी—(ना०) हीरा रत्न। हीरक मणि। हीरा।
हीरावेध—(वि०) चालाक। होशियार।
हीरावेधी—(ना०) चालाकी। होशियारी। चतुरता।
हीराजड़—(वि०) हीरों से जड़ा हुआ। हीरा-जड़ित।
हीरांजड़ी—(वि०) हीरों से जड़ी हुई। हीरा-जड़ित।
हीरांतोल—(वि०) बहुमूल्य।
हीरो—(न०) एक प्रसिद्ध रत्न। हीरा।
हील—(ना०) पोष, माघ में चलने वाला प्रति ठंडा पवन। २. ठंडी हवा की लहर। ३. दीवाल आदि मे लगने वाली पानी की नमी। सील। संद। भेज। ४. मावठा। (पोष, माघ की वृष्टि) के समय चलने वाली ठंडी हवा। ५. सुनहरा रंग।
हीलवाजणी—(मुहा०) सर्दियों की ऋतु मे तेज ठंडा पवन चलना।
हीलो—(न०) १. छोटे बच्चे का पालना। झूला। २. पालने में झुलाया जाने वाला बच्चा। ३. बच्चे को पलने में पेंग देते समय माता द्वारा गाया जाने वाला गीत। लोरी। हालरियो। ४. उपाय। मार्ग। युक्ति। ५. सहायता।
हीलोग्रळ—दे० हीलोहळ।
हीलोर—(न०) १. लोरी। २. पेंग। ३. लहर। तरंग। ४. भीड़ का धक्का।
हीलोळणो—(क्रि०) १. हिलाना। हिलोरना। २. मंथन करना।
हीलोळो—(न०) १. पानी का धक्का। २. लहर। तरंग।
हीलोवळ—दे० हीलोहळ।
हीलोहळ—(न०) १. समुद्र। हीलोग्रळ। २. लहरों का शब्द।
हीव—(न०) १. पुत्र। हीय। २. हृदय। हीय।
हीस—(ना०) १. उत्पात। २. ऊधम।
हीस खाणो—(मुहा०) ऊधम करना।
ही ही—हँसने की आवाज।
हींग—(ना०) हिंग।
हींगण—(न०) एक वृक्ष।
हींगणो—हगणो।
हींगळाज—दे० हिंगळाज।
हींगळू—(न०) ईंगुर।
हींगळू-ढोलियो—दे० हिंगळू-ढोलियो।
हींगातेली—(ना०) १. खाने-पीने की छोटी-मोटी चीजों का बेचना। २. छोटा धधा। गुजरान चले जैसा धंधा।
हींगोळ—(ना०) हिंगुलाज देवी।
हींगोळ पुराण—(न०) भक्त ईसरदास कृत देवियाण ग्रंथ का एक अन्य नाम।
हींच—(न०) पेंग। हींचो। हींडो।
हींचण—(न०) झूला। हींडो।
हींचणो—(क्रि०) झूलना। पेंग लेना। हींडणो। हींसणो।
हींचो—दे० हींच।
हींचोळणो—(न०) झूला। पलना। हिंडोला। (क्रि०) झूले में झुलाना।
हींचोळो—(न०) झूला।
हीजड़ो—(न०) नपुंसक।
हीजरणो—(क्रि०) १. हींसना। हिनहिनाना। २. विलाप करना। रोना।
हींड—(ना०) मामाजी आदि किसी लोक देवता का अंधेरी रात मे घोड़े पर

सवारी किये हुये और हाथ मे दीपक लिये हुये भागते हुये का काल्पनिक दृश्य ।

हींडण—(न०) झूला ।

हींडणो—(क्रि०) १. झूलना । हींडा खाणा । २. चलना । जाना ।

हींडळणो—(क्रि०) हाथी का झूमना ।

हींडा खाणा—(मुहा०) झूलना ।

हींडो—(न०) झूला । हींसो ।

हींडो चढावणो—(मुहा०) खूब जोर से झूले खाना । वृक्ष की शाखा से बंधे हुये झूले को जोर से पेंग देकर ऊपर चढ़ाना ।

हींडोळणो—(क्रि०) झुलाना । पेंग देना । (न०) झूला । हींडोळो ।

हींडोळो—(न०) १. झूला । हींडो । २. हिंडोला । झूलना । ३. बेसमझ और पागल (बनिया) । (वि०) १. पागल । २. मूर्ख । ३. व्यर्थ इधर-उधर भटकने वाला । ४. अयोग्य । ५. निकम्मा । ६. अविश्वासी । ७. मूर्ख ।

हींडोलो—दे० हींडोळो ।

हींडोळो खाट—(न०) १. पलना । झूला । २. हींडे की भांति का खाट । ३. बड़ा झूला । ४. एक विशेष प्रकार का हिंडोला ।

हींस—(ना०) १. घोड़े की हिनहिनाहट । २. शरारत । ऊधम । ३. बार-बार व्यर्थ आना जाना ।

हींसणो—(क्रि०) १. घोड़े का हिनहिनाना । २. झूलना । पेंग लेना । हींडणो । २. शोर करना । ऊधम करना ।

हींसारव—(न०) हिनहिनाहट । हेंसारव । हींसणो ।

हींसी—(न०) घोड़ा । अश्व ।

हींसो—(न०) झूला । हींडो ।

हींसोळणो—दे० हींडोळणो ।

हुआ-हुआ—(अव्य०) सद्यजात शिशु के रोने का शब्द ।

हुओ—(अव्य०) १. बस । २. पर्याप्त । (भू०क्रि०) 'होणो' या 'होवणो' क्रिया का एक वचन भूतकालिक रूप । हुआ । हो गया ।

हुक—(न०) १. टेढी कील । २. अंकोड़ा । अंकोड़ो ।

हुकम—(न०) १. आज्ञा । हुक्म । २. सरकारी आदेश । ३. ताश के खेल में सब के पत्तों को सर करने वाला (जीतने वाला) पत्ता, सर का पत्ता । ४. ताश के खेल में सर्वोपरि जाहिर किया हुआ रंग और उसका पत्ता । ५. ताश खेल में काले रंग और उसका पत्ता । ६. बड़ों से बातचीत करते समय उनसे सहमति जतलाने का शब्द ।

हुकम अदूली(ना०) १. हुक्म नहीं मानना । २. हुक्म का विरोध करना ।

हुकम उठावणो—(मुहा०) आज्ञा पालन करना ।

हुकम काढणो—(मुहा०) १. फरमान निकालना । २. आदेश निकालना या हुक्म जारी करना । ३. ताश के खेल में रंग जाहिर करना ।

हुकम चलणो—(मुहा०) १. आज्ञा का पालन या माना जाना । २. अधिकार जमना ।

हुकम चलावणो—(मुहा०) १. आज्ञा देना । २. आज्ञा करना ।

हुकमनामो—(न०) १. एक राज्य कर । २. आज्ञापत्र ।

हुकम पालणो—*(मुहा०)* आज्ञा पालन करना। हुकम मानणो।
हुकम बरदार—*(न०)* सेवक।
हुकम बरदारी—*(ना०)* १. सेवकाई। २. आज्ञा पालन।
हुकम मानणो—दे० हुकम पालणो।
हुकम राखणो—*(मुहा०)* अनुरोध या आग्रह मान्य रखना।
हुकम हासल—*(न०)* आज्ञा।
हुकमी—*(वि०)* १. हुक्म उठाने वाला। आज्ञाकारी। २ आज्ञावश।
हुकमी-चाकर—*(न०)* आज्ञाकारी सेवक।
हुकूमत लाग—*(ना०)* जागीरदार से लिया जाने वाला एक राज्य कर।
हुचक—*(ना०)* भिड़ंत। हिच।
हुचकारणो—*(क्रि०)* १. भिड़ना। २. युद्ध करना। लड़ना।
हुचको—*(न०)* पतंग की डोरी लपेटने का एक उपकरण। गिड़गिड़ी।
हुचणो—*(क्रि०)* १. युद्ध में भिड़ना। लड़ना। २. आक्रमण करना।
हुजत—दे० हुज्जत।
हुजदार—*(न०)* १. (राजा का) सलाहकार। २. वजीर। ३. हर समय सेवा में रहने वाला।
हुज्जत—*(ना०)* १. व्यर्थ का विवाद। तकरार। २. हठ। जिद।
हुज्जतबाज—*(वि०)* १. तकरार करने वाला। विवादी। २. हठी। जिद्दी।
हुज्जती—*(वि०)* हुज्जत करने वाला।
हुड—*(न०)* मेढ़ा। मेष। घेटो। *(ना०)* भेड़। गाडर। हुड़।
हुड़—*(ना०)* भेड़। गाडर।
हुड़कली—*(ना०)* पंडुक। फाख्ता।
हुड़कारणो—*(क्रि०)* १. अपमानित करना। २. दुत्कारना। ३. तुच्छाकारना।
हुड़तपो—*(न०)* सूर्यातप (धूप) या अग्नि के निकट की छाया में लगने वाली गरमी। निकटस्थ के सूर्यताप अथवा अग्नि की उमस। सूर्य ताप या अग्नि ज्वाला के कारण होने वाला निकटस्थ तप्त वातावरण।
हुड़दंग—*(न०)* १ होली के दूसरे दिन (धुळेटी) एक दूसरे पर मस्ती से रंग, अबीर डालने की क्रिया। २. उपद्रव-युक्त उछल-कूद। ३. नागा साधुओं की एक जमात। *(वि०)* १. अशिष्ट। २. डरावना। ३. बदमाश।
हुड़दंगो—*(न०)* १. शोरगुल। ऊधम। उत्पात। २. एक नागा साधु।
हुड़दो—दे० हड़दो।
हुडंबी—*(न०)* गणेश। गजानन। हुडंबो।
हुडंबी—दे० हुडंबी।
हुड़ाव—*(ना०)* १. सूर्य की प्रखरता से तपी हुई भूमि की गरमी। २. तपी हुई भूमि के बाद वर्षा होने के कारण उसमें से निकलने वाली गरमी। हुड़-तापो।
हुड़ियो—*(न०)* मेष। घेटो। भेड़ा।
हुड़ी—*(ना०)* १. शीघ्रता। २. तेज दौड़।
हुडो—*(ना०)* भेड़।
हुड़ी करणो—*(क्रि०)* १. दौड़ना। भाग जाना। *(मुहा०)* जल्दी करना।
हुड़ीजणो—*(क्रि०)* भेड़ को कामेच्छा होना।
हुड़ो—*(न०)* १. रोक। रुकावट। अवरोध। २. उलझन। बाधा। ३. रोकने या बाधा डालने की कोई वस्तु। ४. किंवाड़

आदि को रोक रखने के लिये उसके सामने टेढी करके (झुकी हुई) खड़ी की जाने वाली लकड़ी । ५. सांस लेने मे होने वाली रुकावट ।

हुणार—दे० होणहार ।

हुणियार—(न०) १. होनहार । होनी । भावी । २. भाग्य । (वि०) भाग्य-शाली ।

हुणो—(क्रि०) होना । दे० होणो । होवणो ।

हुत—(भू०कृ०) १. बलि दी गई । मारा गया । (न०) हवन मे होमी जाने वाली या आहुति के रूप में दी जाने वाली वस्तु ।

हुतव—(न०) १. होनहार । भवितव्यता । होनी । होतव्य । भावी ।

हुतभुक—(ना०) अग्नि । हुतवह ।

हुतवह—(ना०) अग्नि । वासदें ।

हुतात्मा—(न०) अपने आपको होम देने वाला । बलिदान होने वाला । शहीद ।

हुतास—(ना०) अग्नि । हुताशन ।

हुतासण—(न०) हुताशन । अग्नि । हुतास ।

हुतासणी—(ना०) होली । हुताशिनी । होळी ।

हुतासन—(न०) अग्नि । हुताशन ।

हुती—(वि०ना०) १. उचित । २. होने योग्य । (भू०क्रि०) पुंलिंग भूतकालिक क्रिया 'हुतो' (था) का स्त्रीलिंग रूप ।

हुतै—(अव्य०) जो हो रहा है । (वि०) उचित ।

हुतो—(वि०) १. करने लायक । उचित । २. हो सकने योग्य । (भू०क्रि०) था । हतो । हंतो ।

हुतोज—(अव्य०) १. था ही । २. जो निश्चय ही था । ३. अवश्य था । था ।

हुदहुद—(न०) एक पक्षी ।

हुनर—(न०) १. कला । कारीगरी । २. किसी कार्य को करने का कौशल । ३. हाथ की निपुणता । चतुराई । ४. गुण । खूबी ।

हुनरमंद—(वि०) १. कलाकुशल । २. निपुण । ३. कारीगरी । ४. करामती ।

हुनरी—(वि०) हुनर जानने वाला । कारीगर । २. करामती ।

हुवणो—(क्रि०) १. भिड़ना । लड़ना । २. मारामारी करना । कटाकटी करना । ३. मारामारी या कटाकटी होना । ४. एकदम अत्यधिक अस्त्र-शस्त्रों का चलना । ५. आग में पड़ कर जलना । ६. अग्नि का अधिक प्रज्वलित होना ।

हुवास—(न०) घोड़ा । अश्व ।

हुवाह—दे० हुवास ।

हुमलो—दे० हमलो ।

हुमायु—(न०) एक मुगल बादशाह जो बाबर का पुत्र और अकबर का पिता था ।

हुमायो—(भू०कृ०) १. उत्साहित होकर । २. उत्साहित । उमंगित । ऊमायो ।

हुमाव—(न०) एक कल्पित पक्षी, जिसकी छाया पड़ने पर व्यक्ति राजा हो जाता है । हमाव ।

हुमावो—दे० ऊमावो ।

हुयर—(क्रि०वि०) होकर । होयनें । हुयनें ।

हुयो—दे० हुवो ।

हुरकणी—(ना०) १. स्त्री । नारी । २. प्रेतनी । भूतनी । ३. डायन । डाकण । ३. क्रूर स्त्री । चुड़ैल । ४. वेश्या । पातर ।

हुरड़ाई—(ना०) १. जिद। हठ। २. खोटी हिम्मत। दुस्साहस।

हुरम—(न०) १. बेगम। २. दासी। सेविका। हरम।

हुरम खानो—(न०) अन्तःपुर। हरम।

हुरळ—(न०) १. एक शस्त्र। २. घाव। ३. शरम।

हुराट—(ना०ब०व०) हूरें। अप्सराएँ।

हुराण—(ना०ब०व०) 'हूर' का बहुवचन। हूरां।

हुरियो—दे० हुरें।

हुरें—(न०) १. धिक्कार। २. तिरस्कार।

हुल—(न०) १. एक शस्त्र। २. एक क्षत्रिय जाति।

हुलराणो—दे० हुलरावणो।

हुलरावणो—(क्रि०) १. लोरी गाते हुये बच्चे को पालने में झुलाना। २. पालने में झुलाते हुए लोरी गाना। ३. शिशु को रमाना। ४. शिशु को हाथ मे लेकर झुलाना। ५. प्यार करना। ६ बच्चे को खिलाना। रमाना। रमावणो।

हुलस—(न०) १. इच्छा। कामना। २. उल्लास। ३. प्रसन्नता। खुशी। ४. उत्साह। उमंग। उछाव।

हुलसणो—(क्रि०) १. प्रसन्न होना। राजी होणो। २. आनंद से फूलना। उमावणो। ३. प्रसन्नता से तैयारी करना। ४. उत्साह से तैयार होना। ५. उमंग से आना। ६. इच्छा करना।

हुलसाणो—(क्रि०) प्रसन्न करना। राजी करणो।

हुलस-म्रित—(ना०) मृत्यु का सुख। मृत्यु का उल्लास।

हुळाक—दे० हुड़ाक।

हुलास—(न०) १ उल्लास। २. उत्साह। (ना०) ३. सुंघनी। तपकीर। नासका। ४. प्रसन्नता। खुशी।

हुलासणो—(क्रि०) १. उल्लसित होना। २. विनोद करना। ३. प्रसन्न होना। राजी होना।

हुळियार—(वि०) १. होली खेलने वाला। २. हुड़दंगी।

हुलियो—(न०) १. आकृति। रूप। सूरत। २. किसी के रूप रंग का विवरण जिससे वह पहिचाना जाता हो।

हुल्लड़—(न०) १. दंगा। २. कोलाहल। ३. उत्पात। बखेड़ो।

हुवणो—दे० होवणो।

हुवंत—(क्रि०) १. होता है। २. होता रहता है। ३. होता होगा।

हुवा-हुवा—(न०) गीदड की बोली।

हुवै-तो—दे० होवै-तो।

हुवैला—दे० होवैला।

हुवैली—(भ०क्रि०) होगी। हुसी। होवसी।

हुवो—दे० हुवो।

हुसन—(न०) रूप। सौंदर्य। हुस्न।

हुसनाक—(वि०) हुस्नवाला। सुन्दर।

हुसियारक—(न०) छड़ीदार। चोबदार।

हुसी—(भ०क्रि०) १. होगा। हुवैला। २. होगी। हुवैली। होवैली।

हुसेन—(न०) मुहम्मद का दामाद, जो कर्बला के मैदान मे मारा गया था। मुहर्रम इसी के शोक मे मनाया जाता है।

हुसै—(भ०क्रि०) होगा।

हुस्टंड—(वि०) १. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। २. निडर। निर्भय। ३. लुच्चा। बदमाश।

हुस्न—दे० हुसन ।

हुंकार—(न०) १. सिंहनाद । गर्जन । २. ललकारने का शब्द । हुंकृति । ३. ललकार । ४. गर्वोक्ति ।

हुंकारणो—(क्रि०) १. ललकारना । चकारणो । २. गर्जना ।

हुंगरड़ाई—(ना०) जिद । हठ । हुमरड़ाई ।

हुंगरड़ो—(वि०) जिद्दी । हठी ।

हुंडामण—(ना०) १. हुंडी से रुपये भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी । हुंडावण । २. हुंडी का भाव या बटाव । ३. हुंडी के बटाव की दर । ४. हुंडी द्वारा आयात-निर्यात से होने वाला लाभ । हुंडियामण । फॉरेन एक्सचेंज ।

हुंडावण—दे० हुंडामण ।

हुंडियामण—दे० हुंडामण ।

हुंडी—(ना०) १. वह पत्र विशेष जो ग्रामान्तर या परदेश में रुपयों की साहूकारी लेन-देन पर स्थानिक भुगतान करने के लिए लिखा जाता है । देश-विदेश में रकम की लेन-देन करने के लिये स्थानिक लेन-देन की एक साहूकारी चिट्ठी । २. अमुक निश्चित रकम चलनी सिक्के (नाणे) में देने का एक लिखित (व्यापारिक) फरमान ।

हुंडीवाळ—(न०) १. हुंडी लिखने वाला तथा सिकारने वाला धनी । २. हुंडी लिखने-सिकारने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति ।

हुंडी पटणो—(मुहा०) हुंडी के रुपये मिलना । हुंडी सिकरणो ।

हुंडी लिखणो—(मुहा०) जिससे रुपये मांगते हों, उसके नाम हुंडी लिखना ।

हुंडी वही—(ना०) आई-गई हुंडियों के नोंधने की वही ।

हुंडी सिकरणो—(मुहा०) हुंडी पटणो ।

हुंडी सिकारणो—(मुहा०) हुंडी के रुपये भरना ।

हुंती—(भू०क्रि०) १. होती । हो जाती । २. थी । ३. था । ४. 'होना' क्रिया का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप । थी । हुती । ५. उचित । ठीक । हुती ।

हुंतो—(क्रि०) 'होना' या 'है' का भूतकालिक रूप । था । हतो । हुयो । २. होता । हो जाता । ३. था । हुतो । (वि०) उचित । हुतो ।

हुंदा—दे० हुंया ।

हुंदी—दे० हुंती ।

हुंदो—दे० हुंतो ।

हुंसियार—(वि०) १. समझदार । २. बुद्धिमान । होशियार । ३. वय से अधिक बुद्धिमान । ४. चालाक ।

हुंसियारी—(ना०) १. होशियारी । समझदारी । चतुराई । २. चालाकी । बदमाशी ।

हुओ—(क्रि०) व्हेणो, हुणो, हुतो क्रियाओं का भूतकालिक पुंलिंग एकवचन रूप ।

हूक—(ना०) १. आश्चर्यजनक घटना । २. आकस्मिक दुर्घटना । ३. शोक । दुख । ४. अचानक घबराहट । ५. बदर की आवाज । ६. बंदर (बालभाषा में) । ७. दर्द ।

हूक उठणो—(मुहा०) १. शूल उठना । २. तीव्र वेदना के कारण तड़पना ।

हूक फूटणो—(मुहा०) किसी महान, पूज्य, प्रतिष्ठित, निकटस्थ संबंधी, प्यारे या

युवा की एवं अकाल मृत्यु के कारण भारी शोक तथा हाहाकार छा जाना।

हूकळ—(ना०) १. युद्ध का कोलाहल। २. घायलों की चिल्लाहट। ३. हल्ला। शोरगुल्ला। हूकवळ। ४. युद्ध। ५. युद्धघोष। ललकार। ६. हुंकार।

हूकळ-कळळ—दे० हूकळ।

हूकळणो—(क्रि०) १. हिनहिनाना। २. जोर से बोलना। ३. अंडबंड बोलना। ४. शोर मचाना। ५. व्याकुल होना। दुखी होना।

हूकवळ—दे० हूकळ।

हूकाहूक—(न०) शोरगुल। तोफान।

हूचक—दे० हुचक।

हूचकणो—(क्रि०) १. लड़ना। २. युद्ध में भिड़ना। ३. उठाना। ४. उचकना।

हूट—दे० हूंट।

हूण—(न०) १. एक प्राचीन मंगोल जाति। २. एक प्राचीन बर्बर कबीला। ३. बर्बर कबीले का व्यक्ति।

हूणी—दे० होणी। होणारत।

हूणो—दे० हुवणो।

हूता—(भू०क्रि०व०व०) 'हूतो' क्रिया का बहुवचन। थे।

हूती—(वि०) १. होने योग्य। २. करने योग्य। ३. उचित। ४. होती हुई। (क्रि०भू०) 'है' क्रिया का भूतकाल। थी।

हूतो—(वि०) १. करने योग्य। २ होने योग्य। ३. उचित। (क्रि०भू०) 'है' क्रिया का भूतकाल। था।

हूनर—दे० हुनर।

हूनरी—दे० हुनरी।

हूबहू—(वि०) ज्यों का त्यों। बिलकुल एक जैसा। अनुरूप। तादृश।

हूमरड़ाई—दे० हुंगरडाई।

हूर—(ना०) १. कुरान में वर्णित अप्सरा जो नेक इन्सानों को जन्नत में मिलती है। २. बेगम। ३. सुन्दर स्त्री।

हूराण—(न०व०व०) 'हूर' शब्द का बहुवचन। हूर समूह।

हूल—(ना०) १. तीव्र पीड़ा। २. एक प्रकार की तेज शराब। ३. हुलक्षत्री।

हूलरियो—दे० हूलरो।

हूलरो—दे० झूलरियो।

हूलसणो—दे० हुलसणो।

हूस—(ना०) १. शोक। २. उत्साह।

हूसी—(क्रि०भू०) 'होणो' (हुणो) क्रिया का भविष्यत्काल रूप। होगा। होवेला। होसी।

हूं—(सर्व०) हों। अहम्। मैं। (न०) स्वीकृति। हूंकारा। हूंकारो। (प्रत्य०) १. में। २. से। (क्रि०) 'होणो', 'होवणो' (हिंदी) 'होना' क्रिया का उत्तम पुरुषी एक वचनी वर्तमान कालिक रूप। हूं।

हूं इज—(अव्य०) मैं ही।

हूंकणो—(क्रि०) गीदड़ का हूंकी-हूंकी शब्द करना। गीदड़ का बोलना।

हूंकळ—दे० हूकळ।

हूंकळ-कळळ—दे० हूकळ-कळळ।

हूंकारो—(न०) १. हां। स्वीकृति। हांकारो। २. समर्थन सूचक शब्द। ३. स्वीकृति सूचक कहा जाने वाला 'हूं' शब्द।

हूंकी-हूंकी—(ना०) गीदड़ की बोली।

हूंच—(न०) एक कांटों वाली घास और उसका बीज। भुरट। मुंट। हूंछ।

हूंघ—दे० हूंच।
हूंट—दे० हूंटो।
हूंटो—(न०) १. साढे तीन का अंक। '३॥'. २. साढे तीन का पहाड़ा। (वि०) साढ़े तीन। हूंठा।
हूंठ— दे० हूंटो।
हूंठा—साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूंणी—(ना०) होनहार।
हूंत—(अव्य०) १. करण तथा अपादान कारक की विभक्ति। से। २. ओर से। तरफ से। के जरिये। (वि०) होने जैसी। करने जैसी। उचित।
हूंतगारो—(वि०) १. सुंदर। २. योग्य। ३. विवेकी।
हूंतां—(न०) अपेक्षा। तुलना। (अव्य०) बनिस्बत। अपेक्षाकृत। तुलना में। (प्रत्यय०) करण और अपादान कारक की विभक्ति। से। हूंत।
हूंती—(वि०) १. करने जैसी। २. उचित। योग्य। ३. होने योग्य। हुती। दे० हुंती।
हूं-तूं—(अव्य०) १. मैं और तूं की भावना। २. भेदभाव। ३. मैं और तूं। मेरा और तेरा। मैं-तूं।
हूंतो—दे० हुंतो।
हूंफ—(ना०) १. उत्साह। २. पीठबळ। ३. सहायता। ४ आश्रय। ५. आश्वासन। ६. प्रोत्साहन।
हूंफ मिलणी—(मुहा०) १. सहायता मिलना। २. पीठबल मिलना। ३. आश्वासन मिलना। आश्वासन।
हूंफाळी—(ना०) १. मदद। सहायता। २. आश्वासन।
हूंस—(न०) १. कामना। इच्छा। चाह। २. उमंग। हौंस। ३. उत्साह। कोड। ४. उम्मीद। ५. शौक। रुचि। लालसा।
हूंसणो—(क्रि०) १. उत्साहित होना। २. उमंगना।
हूंसीलो—(वि०) उत्साही। कोडीलो।
हृदय—(न०) १. दिल। हिरदो। २. मन। ३. छाती। ४. विवेक। ५. मर्म। रहस्य। ६. तत्व। ७. सारांश। ८. बहुत प्रिय व्यक्ति या वस्तु।
हृदय उमड़णो—(मुहा०) प्यार, शोक या करुणा की भावना से मन भर जाना।
हृदयग्राही—(वि०) मन को वश में करले ऐसा।
हृदयनाथ—(न०) पति। स्वामी। खाविंद। घरधणी।
हृदय फाटणो—(मुहा०) अत्यन्त दुख होना।
हृदय भरीजणो—(मुहा०) १. गद्‌गद होना। २. शोकयुक्त होना। ३. क्षोभ-युक्त होना।
हृदय री गांठ—(ना०) १. दुर्भावना। वैर। शत्रुता। २. कपट। छल।
हृदय लगाणो—दे० हृदय लगावणो।
हृदय लगावणो—(मुहा०) १. आत्मीय या प्रिय बनाना। २. गले से लगाना। ३. छाती से लगाना। आलिंगन करना।
हृदय विदारक—(वि०) मन को घायल करने वाला। आघात जनक। हृदय चीरने वाली (बात या काम)।
हृदयहीन—(वि०) १. हृदयविहीन। २. कठोर। ३. क्रूर। हीयाहीण।
हृदयेश्वरी—(ना०) १. पत्नी। २. प्रिय पत्नी।

हृषीकेश—(न०) १. इंद्रियों का स्वामी। २. विष्णु। ३. श्रीकृष्ण। ४. गंगा के किनारे का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान। ऋषिकेश। ५. आबू पर्वत पर एक तीर्थ स्थान। रिखीकेस।

हृष्ट—(वि०) प्रसन्न। राजी।

हृष्ट-पुष्ट—(वि०) मोटा-ताजा। तगड़ा।

हे—(अव्य०) एक संबोधन। अरे। ओजी। अे।

हे ओ—(अव्य०) अजी। होजी। ओजी। (आदरार्थ)।

हेक—दे० अेक।

हेकज—(वि०) एक ही।

हेकट—(वि०) १. इकट्ठा। एकत्रित। २. अभिन्न।

हेकठां—(अव्य०) १. एक जगह पर। २. एक साथ। एकठ।

हेकड़—(न०) हठ। जिद।

हेकड़ली—दे० हेकलडी।

हेकड़लो—दे० हेकलड़ो।

हेकड़ी—(ना०) जिद। हठ।

हेकड़ीबाज—(वि०) जिद्दी। हठी।

हेकण—(वि०) १. एक। अेकण। २. एक ही। ३. एक किसी।

हेकण मल्ल—(न०) अनेकों से इकल्ला युद्ध करने वाला वीर पुरुष।

हेक-पुरखी—(वि०) एक ही पुरुष से संबंध रखने वाली। एक ही पुरुष से संतोष करने वाली। (ना०) १. एक ही पुरुष की स्त्री। दूसरे पुरुष से अनुचित संबंध को कभी ख्याल में ही नहीं लाने वाली स्त्री। २. सती स्त्री।

हेकमन—(क्रि०वि०) एक मन लगा कर।

हेकमना—(वि०) १. संगठित। २. एक मत वाले।

हेकर (क्रि०वि०) एक बार। एकाध।

हेकर नैं—(अव्य०) १. एक बार तो। २. एक बार और। ३. एक बार।

हेकरसां—(क्रि०वि०) एक बार। हेकर।

हेकर-सूं—दे० हेकर नैं।

हेकल—(वि०) अकेला। अेकलो।

हेकलडी—(वि०) अकेली। अेकली। हेकली।

हेकलड़ो—(वि०) अकेला। अेकलो। हेकल।

हेकल-दोकल—(अव्य०) इकल्ला-दुकल्ला।

हेकलपणो—(न०) अकेलापन। हेकल-पीणो।

हेकलपीणो—दे० हेकलपणो।

हेकलमल—(न०) अनेकों से इकल्ला लड़ने वाला शूरवीर।

हेकलवाई—दे० अेकलवाई।

हेकलवीर—दे० अेकलवीर।

हेकलियो—(वि०) इकल्ला। अकेला। अेकलो।

हेकली—दे० अेकली।

हेकलो—दे० अेकलो।

हेकसार—(अव्य०) एक समान। इकसार।

हेक हट्टो—(वि०) जहां पर एक ही दुकान वाला हो।

हेकहथ्थो—(वि०) १. एक ही व्यक्ति में केन्द्रित। २. एक हाथ वाला।

हेका—(अव्य०) एक ओर। अेक कांनी। (न०) पुकार। पुकार पर पुकार।

हेकाकार—दे० अेकाकार।

हेकागर—(क्रि०वि०) १. एक बार। हेकर। एक समय। २. एकाग्र। एक से आगे। हेकागळ।

हेकागळ—दे० हेकागर।

हेकार—दे० हेकर।

हेकारूं—(अव्य०) एक बार। हेकरसां।

हेकांहेक—(क्रि०वि०) एकाएक। (वि०) एक एक को। अेक अेक ने। प्रत्येक को।

हेकी—दे० अेकी।

हेकी-वेकी—(न०) बच्चों का एक खेल।

हेकै—(वि०) एक ही।

हेको—(न०) १. आवाज। पुकार। २. संगठन। अेको। ३. एक की संख्या। (वि०) एक। (अव्य०) एक ही।

हेकोज—(वि०) १. एक ही। २. एक वही।

हेज—(न०) १. माता का बालक के प्रति प्रेम। वात्सल्य। २. प्रेम। हेत।

हेजणो—(क्रि०) १. प्यार देना। २. प्यार देकर किसी बात या काम मे प्रवर्त करना। ३. प्रेम मे अपने पास रहने की आदत डालना (बच्चे के लिये)।

हेजळो—(वि०) हेजवाला। हेजाळ।

हेजाळ—दे० हेजाळू।

हेजाळू—(वि०) प्रेमी। अनुरागी। हेजाळू। हेजळो।

हेजो—(अव्य०) आदर सूचक एक संबोधन। पति, पिता, गुरु आदि जिनका नाम लेकर पुकारा नहीं जाता, उनके लिये अेक संबोधन (प्रायः पति के लिये। अजी। हाओ।

हेजो—(न०) प्रेम। हेत। हेज।

हेटवाण—(वि०) नीचे दर्जे का।

हेटवाणियो—(वि०) १. किसी अधिकारी के नीचे काम करने वाला। मातहत। अधीनस्थ कर्मचारी। २. निम्न स्तर का। ३. आज्ञानुवर्ती। (न०) १. गुलाम। २. नौकर।

हेटी—दे० हेठी।

हेटै—(क्रि०वि०) नीचे।

हेटै वैटणो—(मुहा०) १. बैठना। २. नट जाना। ३. बराबर होना।

हेटो—(क्रि०वि०) नीचे।

हेटो पड़णो—(मुहा०) १. गिरना। पड़ना। २. अवनत होना।

हेठलो—(वि०) नीचे का। नीचे वाला। अधीनस्थ।

हेठवाणियो—दे० हेटवाणियो।

हेठवाणी—दे० हेठवाणियो।

हेठांण—(न०) नीचे का भाग। निचाई। (वि०) १. हलका। २. नीचे।

हेठी—(ना०) १. अपकीर्ति। बदनामी। २. ओछापन। ३. अप्रतिष्ठा। (क्रि०वि०) नीचे। (वि०) १. नीची। २. ओछी। तुच्छ।

हेठी नांखणी—(मुहा०) १. सब करना। २. बात को आगे नहीं बढ़ाना।

हेठी लागणी—(मुहा०) बदनामी होना।

हेठै—(वि०) जो गुण, पद आदि में नीचा हो। अधीन। (क्रि०वि०) नीचे।

हेठै हाथ मांडणो—(मुहा०) १. याचना करना। २. भीख मांगना। ३. जी हजूरी करना।

हेठै रो—दे० हेठलो।

हेठैवाळो—(वि०) नीचे वाला। नीचे का।

हेठै वंठणो—(क्रि०) १. नीचे बैठना । २. द्रव पदार्थ मे मिले हुए किसी पदार्थ का तले में जमना । ३. निराश होना । ४. हतोत्साह होना ।

हेठो—(वि०) १. नीचा । २. कम दर्जे का। ३. ग्रोछा । (क्रि०वि०) नीचे ।

हेठो वैठणो—(क्रि०) १. नीचे बैठना । २ बैठना ।

हेड—(न०) १. अध्यक्ष । २. अफसर । (वि०) १. ऊपरी । २. बड़ा ।

हेड़—(ना०) १. अकाल आदि के कारण किसी दूसरे प्रांत से आया हुआ तथा किसी मेले आदि में बिकने को आया हुआ पशु समूह । २. किसी एक जाति के पशुओं का झुंड । ३. भेड़ों का झुंड। ४. झुंड । समूह। संघ । ५. आक्रमण। साको । ६. अनुशासन । ७. प्रतिबंध ।

हेड क्लर्क—(न०) किसी कार्यालय के कार्यकर्त्ताओं (अहलमदो) का ऊपरी अहलमंद । बड़ा मुंशी या अहलकार ।

हेड क्वार्टर—(न०) मुख्यालय ।

हेड़णो—(क्रि०) १. आगे बढ़ाना । धक्का मारना । २. प्रोत्साहित करना । ३. ले जाना । ४. खींचना । ५. समूह मे मिलाना । ६. हांकना । चलाना ।

हेडमास्टर—(न०) प्रधानाध्यापक ।

हेडमास्टरणी—(ना०) प्रधानाध्यापिका।

हेडमिस्ट्रेस—दे० हेडमास्टरणी ।

हेडमुंशी—दे० हेड क्लर्क ।

हेड़वणहार—(वि०) १. बड़े समूह (सेना) का संचालन करने वाला । २. आगे बढ़ाने वाला । आगे बढ़ने मे प्रोत्साहित करने वाला । ३. धक्का मारने वाला। ४. खींचने वाला । ५. हांकने वाला ।

हेड़वणो—(क्रि०) १. ललकारना । २. हांकना । ३. प्रतिबंध में रखना । ४. अनुशासन मे रखना । ५. किसी समूह को घेर कर ले जाना ।

हेड़ाऊ—(न०) १. वीर पुरुष । २. बहुत बड़े समूह का संचालन करने वाला । नेता। ३. बहुत बड़े समूह का अधिपति। ४. गाय, भैंस, ऊँट, भेड़ आदि पशुओं के बहुत बड़े समूह का स्वामी । ५. ब्राह्मणों और राजपूतों का एक उपगोत्र । ६. आक्रमणकारी । ६. संघपति । ८. संचालक ।

हेडो—(ना०) सेही ।

हेड़ो—(न०) पीछा । दे० हेरो ।

हेणां—(अव्य०) अब । अभी ।

हेत—(न०) १. स्नेह। प्रीति । २. मित्रता । (अव्य०) लिये । वास्ते । कारण ।

हेत-इकळास—(न०) प्रेम और एकता । स्नेह और संगठन ।

हेत-प्रीत—(ना०) १. हेत और प्रीति । स्नेह । २. मित्रता और स्नेह । ३. कृपा ।

हेत-मोहवत—(ना०) १. हेत और मुहब्बत। २. मित्रता । ३. स्नेह । प्यार ।

हेतरस—(न०) हेत रूपी रस । प्रेम रस । प्रीति । आनंद ।

हेत राखणो—(मुहा०) १. प्रीति रखना । २. मेल रखना । ३. कृपा रखना ।

हेतल—(न०) हेत । प्रेम ।

हेतव—(न०) १. चारण । २. कवि ।

हेतवाळो—(न०) मित्र । दोस्त । हेत रखने वाला । स्नेही ।

हेतविहूणो—(वि०) स्नेह रहित।
हेतारथो—(वि०) प्रेमी। हितार्थी। (न०) मित्र। दोस्त।
हेताळ—दे० हेताळू।
हेताळवो—दे० हेताळू।
हेताळू—(वि०) हेत-प्रीति रखने वाला। स्नेही। हितैषी।
हेतियाळ—दे० हेताळ।
हेतु—(अव्य०) १. कारण। के लिये। वास्ते। २. प्राशय। ३. उद्देश्य। लक्ष्य।
हेतुवाद—(न०) १. तर्कविद्या। २. नास्तिकता।
हेतुविद्या—(ना०) तर्कशास्त्र। तर्कविद्या।
हेत्वाभास—(न०) १. खराब हेतु। २. हेतु का आभास।
हेम—(न०) १. ठंडा। शीत। २. सोना। ३. बर्फ।
हेमकार—(न०) स्वर्णकार। सोनी।
हेमखेम—(वि०) हेमखेम। कुशल। सही सलामत।
हेमगिर—(न०) १. हिमालय पर्वत। २. स्वर्णगिरि। ३. जालोर का पर्वत। सोनगिरि।
हेमगिरि—दे० हेमगिर।
हेमचंद्राचार्य—(न०) सिद्धराज जयसिंह के समय के संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के प्रख्यात जैनाचार्य।
हेमपुष्प—(न०) चंपा।
हेमरतन—(न०) 'गोरा-बादल-पदमणी चोपई' का रचयिता कवि।
हेमवती—(ना०) १. गंगा। २. हर्रे।
हेमंग—(वि०) सुवर्ण के सदृश सुंदर रंग वाला। हेमांग। (न०) सोना।
हेमंत—(न०) हेमंत ऋतु।
हेमंसू—(ना०) चाँदी। रजत।
हेमा—(ना०) १. सुंदर स्त्री। २. पृथ्वी।
हेमाचळ—(न०) हिमालय पर्वत।
हेमाणी—(ना०) १. स्वर्ण राशि। २. सोने की खान।
हेमाद्रि—(न०) हिमालय पर्वत। हिमाचल पर्वत।
हेमाळो—(न०) १. हिमालय। २. सुमेरु। ३. बहुत अधिक ठंड। ४. बहुत अधिक ठंड के कारण बर्फ का बरसना या बर्फ जैसी ठंड पड़ना।
हेय—(ना०) १. घृणा। उपेक्षा। २. तिरस्कार। (वि०) छोड़ने योग्य। त्याज्य।
हेर—(ना०) १. घेरा। २. तलाश। खोज। ३. मदद। सहायता।
हेरक—(न०) १. दूत। २. गुप्तदूत। (वि०) १. हेरा करने वाला। पीछा करने वाला। २. ढूंढने वाला। तलाश करने वाला।
हेरणार—दे० हेरणियो।
हेरणियो—(वि०) १ तलाश करने वाला। २. देखने वाला। ३. घेरने वाला।
हेरणो—(क्रि०) १. तलाश करना। खोजना। २. देखना। ३. घेरना। ४. ताकना। ५. गवेषणा करना। ६. ललकारना।
हेर-फेर—(न०) १. परिवर्तन। २. इधर-उधर। ३. तफावत। फर्क।
हेरफेर करणो—(मुहा०) १. रद्दोबदल करना। परिवर्तन करना। २. इधर का उधर रखना।
हेरंब—(न०) गणेश। गजानन

हेराफेरी—(न०) १. वस्तु तथा वस्तुओं को उलटने-पलटने की क्रिया। २. हिलना-फिरना। ३. बार बार आना जाना। ४. अनधिकार रूप से किसी के यहाँ वस्तुओं को रहन रखना। ५. अदला-बदला।

हेरा-फेरो—दे० हेराफेरी।

हे राम—(पद०) सुख-दुख के किसी भी समय में शांति-लाभ और परित्राण करने वाले राम का पुण्यश्लोक नाम।

हेरू—(वि०) खोज करने वाला। (न०) १. छिपी तौर से तलाश करने वाला, जासूस। गुप्तचर। २. दूत। हेरक।

हेरो—(न०) १. खोज। तलाश। जाँच। २. गुप्त जाँच। ३. घेरा। अवरोध। ४. पीछा। ५. दूत। ६. खोज करने वालों का दल। ७. जासूस। गुप्तचर। ८. आक्रमण। ९. दौड़ा। (वि०) खोज करने वाला। खोजी।

हेरो करणो—(मुहा०) १. तलाश करना। २. पीछा करना। ३. आक्रमण करना।

हेरो लागणो—(मुहा०) शत्रु द्वारा पीछा किया जाना। पीछे लगना।

हेळ—(ना०) १. उमंग। २. उदारता। ३. उन्माद। ४. समुद्र। ५. समुद्र की लहर। ६. लहर की भाँति पेट में उत्पन्न होने वाली एक तीव्र पीड़ा। ६. कष्ट। पीड़ा। ७. तरंग। ८. दुर्गति। ९. आक्रमण।

हेल—(ना०) १. फोड़ा। २. दाम। ३. दान की लहर। ४. तरंग। ५. युद्ध। ६. स्नेह। ७. समुद्र। ८. बार। समय।

हेळणो—दे० हेळवणो।

हेलन—(न०) अपराध।

हेळवणो—(क्रि०) १. अभ्यस्त करना। आदी करना। २. अपना बनाना। ३ प्रेमपूर्वक घनिष्ठता बढ़ाना। ४. परिचय बढ़ाना। ५. प्रवर्त करना।

हेला—(न०) १. डाँट। डपट। झिड़की। २. तिरस्कार। ३. तरंग। लहर। ४. शृंगारिक प्रेमक्रीड़ा।

हेला करणो—(मुहा०) १. आवाज देना। बुलाना। २. डाँटना। डपटना। धमकाना।

हेला पाड़णो—(मुहा०) १. बुलाना। आवाज देना। २. मृतक का नाम लेकर रोना।

हेला मारणो—(मुहा०) १. बुलाना। पुकारना। २. एक गाली।

हेलारिया—(न०) १. बबूल की फलियाँ। पातड़ा। २. बबूल की फलियों का साग।

हेलारो—दे० हिलारो।

हेली—(ना०) १. हवेली। बड़ा मकान। रईसी ठाठ का मकान। २. सखी। सहेली। ३. सुरता-सुंदरी को संबोधन करके कहे गये गूढ़भाषा के अध्यात्म पद। ४. हेली नाम के वाणी-पद। वाणी।

हेलो—(न०) १. आवाज। पुकार। २. बुलावा। निमंत्रण। ३. पुकार। प्रार्थना।

हेलो करणो—(मुहा०) पुकारना। बुलाना।

हेलो पड़णो—(मुहा०) डूंडी पीटनी। जोर से बोल कर मुनादी

हेलो पाड़णो—*(मुहा०)* १. पुकारना। बुलाना। २. आवाज देकर अपने पास बुलाना। हेलो मारणो।

हेलो पाळणो—*(मुहा०)* मुनादी का पालन करना।

हेलो फिरणो—*(मुहा०)* डूँडी पिटवा कर सामूहिक निमंत्रण देना।

हेलो फूटणो—*(मुहा०)* रहस्य उद्घाटित होना।

हेलो मारणो—दे० हेलो पाड़णो।

हेलो होणो—दे० हेलो फिरणो।

हेवा—*(ना०)* स्वभाव। आदत। *(सर्व०)* वह (स्त्री)।

हेवा करणो—*(मुहा०)* आदत डालना। खराब आदत डालना।

हेवा पड़णो—*(मुहा०)* स्वभाव बनाना। आदत पड़ना।

हेवाल—दे० हवाल।

हेंवे—*(सर्व०ब०व०)* १. वे। वे लोग। अं वे। २. स्त्री के द्वारा पति के लिये प्रयुक्त शब्द। हे वै।

हे वै—दे० हे वे।

हेंवो—*(सर्व०)* १. वाक्य मे पूर्वगामी संदर्भ मे सूचित संज्ञा शब्द के लिये प्रयुक्त सर्वनाम। २. दूरस्थ या परोक्ष पदार्थ अथवा व्यक्ति का संकेत शब्द। वह। वो। अंवो।

हेसा—*(ना०)* हिनहिनाहट। हेषा।

हेसाणो—*(क्रि०)* हिनहिनाना।

हेसाब—दे० हिसाब।

हेसाबी—दे० हिसाबी।

हैं—*(अव्य०)* विस्मय, धमकी और असम्मति आदि का सूचक एक अव्यय। २. पुनः प्रश्न करने का उद्गार।

हैंकारो—दे० हूंकारो।

हैंडल—*(न०)* हथ्था। हाथो।

हेसाव—दे० हिसाब।

हेसावी—दे० हिसावी।

हेंसारव—*(न०)* घोड़े की हिनहिनाहट का शब्द। हींसारव।

हेसावाळ—*(वि०)* भागीदार। हिस्सेदार।

हेसावाळी—*(ना०)* हिस्सेदारी। भागीदारी।

हेंसो—दे० हिस्सो।

है—*(क्रि०)* १. वर्तमानकाल की क्रिया को दर्शाने वाला मुख्य शब्द जो कार्य की विविधता को बताने वाली क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। २. 'होणो' या 'होवणो' (हिंदी 'होना') क्रिया का वर्तमान कालिक अन्य पुरुष एक वचनी और बहुवचनी रूप। *(न०)* हय। घोड़ा। अश्व। *(अव्य०)* हाय। हा।

हैकंप—*(वि०)* भयभीत। *(ना०)* १. कँपकँपी। कंपन। २. हृदय-कंपन। ३. भय। डर। भौ।

हैजम—*(ना०)* १. तलवार। २. सेना। *(न०)* घोड़ा।

हैजमप—*(न०)* सेनापति।

हैजमपत—*(न०)* सेनापति। हैजमप।

हैजो—*(न०)* दस्त और कै की घातक संक्रामक बीमारी। हैजा।

हैणां—*(क्रि०वि०)* १. अभी। इसी समय। २ तुरन्त। हमार। अबार।

हैणं—दे० हैणां। दे० हणें।

हैथंड—*(ना०)* अश्वसेना। हैथाट।

हैथाट—*(न०)* अश्वसेना। हैथंड।

हैदर—(न०) दीवाल में लगने वाला एक लंबा पत्थर।

हैदराबाद—(न०) १. आंध्र प्रदेश की राजधानी का नगर। २. भूतपूर्व रियासत जो भारत के स्वतन्त्र होने पर उसमें विलीन हो गई। ३. सिन्धु नदी के तट पर सिंध प्रदेश का एक नगर जो अब पाकिस्तान में है।

हैदळ—(न०) अश्वसेना। घुड़सेना। हैथाट।

हैमर—(न०) १. घोड़ा। अश्व। हयवर। २. हाथी।

हैमवती—(न०) १. पार्वती। उमा। २. गंगा।

हैरत—(न०) आश्चर्य। चकित। अचंभो।

हैरव—(न०) घोड़े की हिनहिनाहट।

हैराण—(वि०) १. परेशान। हैरान। व्यग्र। २. चकित। हक्का-बक्का।

हैरान—दे० हैराण।

हैरान करणो—(मुहा०) १. दुख देना। २. परेशान करना। ३. थका देना।

हैरान गति—(ना०) १. हैरानी। परेशानी। २. कठिनाई। मुश्किली। ३. दुख। पीड़ा।

हैरान व्हेणो—(मुहा०) १. परेशान होना। २. दुख देखना। ३. थक जाना।

हैरान होणो—दे० हैरान व्हेणो।

हैरानी—(ना०) १. परेशानी। व्यग्रता। १. तकलीफ। पीड़ा।

हैराव—(न०) १. घोड़ा। अश्व। हैमर। २. श्रेष्ठ जाति का घोड़ा।

हैरूढ—(वि०) अश्वारूढ़। घुड़सवार। घोड़ेसवार। (न०) घोड़ा सवार। घुड़सवार। घोड़ा असवार।

हैवर—(न०) घोड़ा। हय। होबास।

हैवान—(न०) पशु। (वि०) मूर्ख। गँवार।

हैवानियत—(ना०) १. मूर्खता। २. पशुत्व। ३. विवेक रहित क्रूर आचरण।

हैवानी—(वि०) हैवान जैसा। पशु सम।

हैवै—(न०) १. राजा। २. बादशाह। ३. अश्वपति।

हैवैघड़—(ना०) बादशाही सेना।

हैसियत—(ना०) १. सामर्थ्य। शक्ति। २. आर्थिक शक्ति। ३. बिसात। ४. इज्जत। प्रतिष्ठा।

हैसियतदार (वि०) प्रतिष्ठावाला। सामर्थ्यवान।

हैहय—(न०) १. सहस्रबाहु। २. एक क्षत्री वंश।

हैहयराज—(न०) सहस्रबाहु। कार्त्तवीर्य। कार्तवीर्यार्जुन।

हैंकारो—(न०) स्वीकृति।

हो—(क्रि०) हिंदी की 'होना' क्रिया के भूतकालिक 'था' क्रिया का एकवचनी रूप। जैसे—'राम आयो हो।' था। (अव्य०) आश्वासनोद्गार। सांत्वना सूचक शब्द हाँ। २. काव्य में टेक में प्रयुक्त निरर्थक उद्गार।

होकवा—(न०) १. उत्साह। २. ठाठवाठ। ३. अत्यन्त प्रसन्नता। ४. आनंदोल्लास। मोज-मजा।

होकर—दे० होकार।

होकलियो—(न०) १. छोटा हुक्का होकलो। २. हुक्का।

होकली—(ना०) छोटा हु

होकलो—(न०) हुक्का।

होकायंत्र—*(न०)* समुद्र मे दिशा मालूम करने का यन्त्र।

होकार—*(न०)* १. होकार शब्द। गर्जन। २. मन की उमंग। सुखदायक मनोवेग। ३. आनंद की लहर। प्रसन्नता का वेग। ४. उमंग। जोश। उत्साह। ५. अतिथि आगमन के समय पूछा जाने वाला कुशलता सूचक प्रश्नवाचक शब्द। उस समय इसका प्रयोग बहुवचन 'होकारां में ?' के रूप में होता है। ६. कोलाहल। ७. गुर्राटा।

होकार करणो—*(मुहा०)* जोर से बोलना। गर्जन करना।

होकारां में—*(अव्य०)* अतिथि के आगमन पर उससे पूछा जाने वाला उसकी कुशलता को सूचित करने वाला एक प्रश्न शब्द।

होको—*(न०)* १. एक खेल। २. इस खेल को खेलने के लिये काम में लाई जाने वाली स्टिक।

होको—*(न०)* हुक्का।

होको चिलम—*(न०)* हुक्का और चिलम।

होको चिलम बंद करणो—*(मुहा०)* किसी व्यक्ति के साथ होका-चिलम नहीं पीने की सजा करना।

होको झारणो—*(मुहा०)* हुक्के की चिलम मे से राख बाहर डालना।

होको ठारणो—*(मुहा०)* हुक्के की चिलम और पानी को ठंडा होने देना।

होको-पाणी—*(न०)* १. हुक्का और पानी। २. हुक्का और उसमे भरा जाने वाला पानी।

होको पाणी बंद करणो—*(मुहा०)* १. किसी के साथ हुक्का पानी बंद करना। २. जाति के किसी व्यक्ति के साथ सजा के रूप में हुक्का पीना बंद करना। जाति तिरस्कृत।

होको पावणो—*(मुहा०)* अतिथि को हुक्का भर कर पिलाना।

होको भरणो—*(मुहा०)* १. हुक्के में पानी और उसकी चिलम में आग तथा तमाखू भरना। २. चापलूसी करना।

होजरी—दे० ओझरी।

होट—दे० होठ।

होट चाटणो—*(मुहा०)* पश्चात्ताप करना।

होट रो फटकारो—*(न०)* १. थोड़ा उलाहना भी। किंचित उपालम भी। किसी भी प्रकार का उलाहना। २. बोलने का संकेत। आज्ञा देने का संकेत। मात्र होंठ हिलाने का संकेत।

होटल—*(ना०)* १. नाश्ता-पानी की दूकान। २. मूल्य देकर खाने-पीने और ठहरने का स्थान।

होट हलावणो—*(मुहा०)* बोलना।

होठ—*(न०)* होठ। ओष्ठ।

होड—*(ना०)* १. शर्त। बाजी। २. हठ। जिद। ३. प्रतियोगिता। ४. स्पर्धा। ५. बराबरी।

होड करणी—*(मुहा०)* १. प्रतिस्पर्धा करना। १. बराबरी करना।

होडको—*(न०)* नाव। डूंडको।

होड मारणी—*(मुहा०)* शर्त करना या लगाना। होड लगावणी।

होड लगावणी—दे० होड मारणी।

होड बदणी—दे० होड करणी।

होडायती—*(वि०)* होड करने वाली। बराबरी करने वाली।

हौडायतो—(वि०) १. हैसियत के उपरांत दूसरों की होड करने वाला। २. बराबरी करने वाला।

होडा-होड—(ना०) १. एक दूसरे को मात करने की क्रिया। प्रतियोगिता। २. शर्त। बाजी।

होड-होडी—(ना०) दूसरों की होड करके आगे बढ़ने का भाव।

होडी—(ना०) नाव। डूंडको। होडको।

होणहार—(वि०) १. भविष्य में होने वाली घटना या बात। २. आशास्पद। ३. सुलक्षण वाला। (न०) भवितव्यता। भावी।

होणार—दे० होणहार। होणहार का छोटा रूप।

होणारत—(ना०) १. घटना। बनाव। २. दुर्घटना। ३. होनहार। ४. भवितव्यता। भावी। होनारत।

होणारी—(वि०) होने वाली। भवितव्यता। (ना०) १. होने वाली घटना या बात। हुतव। २. भाग्य।

होणारो—(वि०) होने वाला। दे० होणारी। (ना०) सं० १ और २.

होणियो—दे० होणहार।

होणी—(ना०) १. अवश्य होकर रहने वाली बात। होनहार। २. प्रारब्ध। भाग्य।

होणो—दे० होवणा।

होत—दे० होवतो।

होतव—दे० हुतव।

होतल पदमणी—(ना०) सौराष्ट्र की एक नायिका।

होता—(न०) १. ~१ कराने वाला या करने वाला पुरोहित। २. यज्ञ में आहुति देने वाला।

होती—(वि०) १. उचित। २. होने योग्य। ३. करने योग्य। (क्रि०भू०) हुती। थी।

होतो—दे० होवतो। (वि०) उचित। जो होने योग्य है। हुतो।

होथल पदमणी—दे० होतल पदमणी।

होदी—(ना०) १. छोटा हौज। २. अंबाड़ी। हौदा।

होदेदार—(न०) पदाधिकारी। अधिकारी। ओहदेदार।

होदेदारी—(ना०) १. अधिकार। २. पद। ओहदेदारी।

होदो—(न०) १. पद। ओहदा। २. अंबारी। ३. अधिकार।

होनहार—दे० होणहार।

होनारत—दे० होणारत।

होफर—(ना०) सिंहनाद। गर्जना।

होवड़—(न०) १. होंठ। २. मुंह।

होवड़ो—दे० होवड़।

होवर—(ना०) उलटी। कै।

होवाळो—(न०) १. हो हा। शोरगुल। २. अप्रतिष्ठा। फजीती।

होवास—(न०) घोड़ा। हैवर।

होम—(न०) यज्ञ। हवन।

होम आठम—दे० होमाठम।

होम करणो—(क्रि०) १. यज्ञ करना। २. आहुति देना।

होमकुंड—(न०) यज्ञकुंड। होम की अग्नि का आधान। हवन पात्र या कुंड।

होमणो—(क्रि०) १. आहुति देना। हवन करना। होमना। २. बलिदान देना। ३. बलिदान होना। ४. नष्ट करना।

५ युद्ध में प्रवर्त होना । युद्ध में घुसना । ६. अग्नि में लकड़ी देना । ७. झगड़ा लगना ।

होमाग्नि—(ना०) हवन की अग्नि । होम की प्रज्वलित अग्नि ।

होमाठम—दे० होमाष्टमी ।

होमाणो—(क्रि०) १. आहुति दिलवाना । २. हवन करवाना । ३. बलिदान दिलवाना । ४. युद्ध में प्रवर्त कराना । ५. झगड़ा लगवाना । होमावणो ।

होमावणो—दे० होमाणो ।

होमाष्टमी—(ना०) चैत शुक्ल और आसोज शुक्ल अष्टमी के दिन नवरात्रि पर्व सूचक हवन किया जाता है । होमाठम । होम आठम ।

होमियोड़ो—(भू०कृ०) १. होमा हुआ । २. बलिदान किया हुआ । ३. बलिदान हुआ हुआ ।

होमियोपैथी—(ना०) एक पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति ।

होमीजणो—(क्रि०) १ युद्ध में वीर गति प्राप्त करना । २. बरबाद होना । ३. भारी संकट में पड़ना । ४. किसी के लिए काम आ जाना ।

होय—(क्रि०वि०) १. हो जाता है । २. होता है । (अव्य०) हाँ ।

होयो—(क्रि०) 'होणो' क्रिया का भूतकाल । हुआ । हो गया । हुवो । हुयो ।

होरा—(न०) १. ढाई घड़ी का समय । एक घंटा । २. जन्म कुंडली । ३. जन्म कुंडली से भविष्य बतलाने की विद्या । ४. लग्नांश (ज्योतिष) ।

होर्न—(न०) मोटर का भोंपू ।

होळका—(ना०) १. हिरण्यकशिपु की बहन । २. होली का त्योहार । (वि०) १. झगड़ालू (स्त्री) । २. क्रोधी (स्त्री) । ३. कामांध (स्त्री) ।

होलड़—दे० होळी । दे० हुल्लड़ ।

होळा—(न०ब०व०) १. आग में भुने हुए हरे चने या गेहूँ । हो रहा । २. कोश-युक्त चना । हो रहा । फोफलिया ।

होला—(ना०) फाख्ता । कमेड़ी । हड़कली ।

होळिका—दे० होळका ।

होली—(क्रि०भू०) 'होणो' का एक भूतकालिक रूप । हो गई । (ना०) फाख्ता । कमेड़ी ।

होळी—(ना०) १. हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध बासंतिक व सास्कृतिक त्योहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है । होलिका । २. एक रागिनी । ३. होली के विशिष्ट गीत । (वि०) कमजोर ।

होळी करणो—(मुहा०) १. जला देना । २. नाश करना ।

होळी खेलणो—(मुहा०) होली के दिनों में परस्पर रंग आदि डालना ।

होळी गाणो—(मुहा०) होली पर्व पर होली के गीत गाना ।

होळी चौक—(न०) वह स्थान जहाँ होली प्रज्वलित कर उत्सव मनाया जाता है ।

होळी मंगळावणो—(मुहा०) १. होलिका दहन करना । २. होली पर्व के दिन एकत्रित लकड़ियों और कंडों के ढेर में आग लगाना (निश्चित मुहूर्त पर) ।

होळी रमणो—दे० होळी खेलणो ।

होळी रो-नाळेर—(पद०) १. किसी को संकट में डालना या आगे करना । २.

किसी को नेतृत्व देकर संकट में डालना। ३. होली में डाला जाने वाला नारियल।

होळी वाळी-गाळ—(पद०) किसी की निंदा सूचक उड़ती खबर।

होळी सिळगावणो—(मुहा०) कलह उत्पन्न करना। झगड़ा लगाना।

होलेर—(न०) एक अछूत जाति।

होळै—(क्रि०वि०) धीमे। आहिस्ता। हवले।

होलैंड—(न०) यूरोप का एक देश।

होल्कर—(न०) ग्वालियर के राजा की पदवी।

होल्डर—(न०) कलम। लेखनी। निब वाली लेखनी।

होवणहार—(वि०) होने वाला। (न०) होनहार। भावी।

होवणो—(क्रि०) १. किसी क्रिया का किया जाना, चलना, जारी रहना या समाप्त होना। २. सृजन करना। पैदा करना। विद्यमान रहना। ४. घटना। ५. बीतना। गुजारना।

होवतां- (भू०कृ०) १. होने से। २. हो जाने पर। ३. बनने में।

होवती—दे० होती।

होवतो—(भू०क्रि०) 'होणो' या 'होवणो' का अनिश्चित भूतकालिक रूप। होता। (भू०कृ०) १. होता हुआ। २. होता रहने वाला।

होवै—(अव्य०) हां। हवं। (क्रि०) १. होता है। २. हो रहा।

होवै तो—(अव्य०) हो तो।

होवैला—क्रि०भ०) होगा। होसी। हुवैला।

होश—(न०) १. चेतना। संज्ञा। भान। सुध। २. अक्ल। विवेक। ३. समझदारी। ४ हिम्मत।

होश आवणो—(मुहा०) बेहोशी का दूर होना।

होश उड़णो- (मुहा०) १. बेहद घबराना। २. सुधबुध खो बैठना।

होश ठिकाणे होणो—(मुहा०) मोह, भ्रम या घमण्ड दूर होना।

होश में आवणो—(मुहा०; १. बेहोशी का दूर होना। २. चेतना होना। ३. विवेक से व्यवहार करना।

होश संभाळणो—(मुहा०) समझने-बूझने की या जिम्मेवारी संभालने की स्थिति मे होना।

होशहवास—(न०) चेतनावस्था। २. बुद्धि। ३. समझ।

होस—दे० होश।

होसनाक—(वि०) छैला।

होसियार—(वि०) १. समझदार। बुद्धिमान। २. दक्ष। कुशल। ३. धूर्त। चालाक। ४. वयस्क। हुसियार।

होसियारी—(ना०) १ धूर्तता। चालाकी। २. दक्षता। ३. बुद्धिमानी। समझदारी। हुसियारी।

होसी—(क्रि०भ०) 'होणो' क्रिया का भविष्य रूप। होगा। होसी। होवैला।

होस्टल—(न०) १. छात्रावास। २. प्रमुख व्यक्तियों के लिए ठहरने का स्थान।

हो हा—(ना०) १. कोलाहल। शोरगुल। २. निंदा। फजीतो। ३. चर्चा। हो हो।

हो ही—दे० होसी ।

हो हो—दे० हो हा ।

हों—दे० हूं ।

होज—(न०) पानी का कुण्ड । हौज । होव ।

होद—(न०) होज ।

होदो—(न०) १. हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला आसन । अंबारी । हौदा । २. ओहदा । पद । ओहदो ।

हौसलो—(न०) १. साहस । हिम्मत । २. धृष्टता । ३. इच्छा । लालसा ।

हौसलो करणो—(न०) १. साहस करना । हिम्मत करना । २. इच्छा या लालसा करना ।

हौसलो वधारणो—(न०) साहस बढ़ाना । हिम्मत बढ़ाना ।

ह्रस्व—(वि०) १. छोटा । २. थोड़ा । ३. ऊन । ४. जिसे बोलने में अल्प प्रयत्न लगता हो । (न०) लघु स्वर । एक न्यून मात्रिक स्वर ।

ह्रीं—एक बीज मंत्र ।

—:०:—